

হেম্চন্দ্রের গ্রন্থাবলী

হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় প্রশীত



ডপেন্দ্ৰনাথ মুখোপীয়্যায় প্ৰতিষ্ঠিত লংস্ক্ৰমতী-সাহিত্য-সন্দিল হ**ই**তে শ্ৰীসতীশচন্দ্ৰ মুখোপাধ্যায় প্ৰকাশিত

[शक्तमं मरस्यतः]

কাজা, ১৬৬ নং বহুবাজার খ্রীট, "বস্থযতী-বৈত্যতিক-মোটারী-মুক্র' শ্রীপূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যার দারা মুক্তিত

[युगा अध्योषीर अप हार्थ

্ত্তীপত্ত

> 1	হিছেতি রবিশী · · ·	*	* * * *	>
રા	বীরধার কাব্য ···			
• i	'বুৱসংহার [১ম]			• ૯
8 i	বৃত্তসংহার (২য়)		•••	96
e 1	আশাক্ষিক …	, ,	***	208
91	हात्रामधी		***	>99
9 1	চিত্ৰবিকাশ	**	***	₹•७
b 1	দশমহাবিভা ···	• • • • •	***	₹\$₩
3 (ক্বিভাৰলী [জান্নত বিষয়ক]		48>
) • I	বহস্তৰিষয়ক ক্ৰিডাৰ্ণী	**		266
551	অ-পূর্ব প্ল াশিত কবিতা		***	395
	বিবিধ কবিতা	•	••	७३२
21	নানা বিময়ক কবিতা 📈 🔏	 		૭ ૨૯

চিন্তা তরঙ্গিণী

লৈ বাভাস বহু জলের কলোল। क्ष उवि-छवि गर्म (बनाइ हिस्सान ॥ র বীবে পাতা কালে, গাখী করে গান। শভিত্ত বরণ ভারু অন্তাচলে ।।। চিত্র গগনময় কিরণের ঘটা। তা, পাটল, শীল, লোহিতের ছটা। বিধা ভাৰের শোভা জড়ায় নয়ন লে শরার সেবি মলয়-পবন t म मन्त्राकारण युवा श्रव नवीन। য়ে মদীৰ কলে একা এক দিন। টের আয়তন স্থচার বরণ। চনের আভা ভার মুখের কিবণ। থলে মানুষ ধলি মনে নাহি লয়। গুরবাসী বলি মনে ভ্রমে হয়। পতে পডি**খা বেন ধরাব ভিতরে** । i-কথা আলোচনা করিছে কাতবে।। भुटि क्य मिर्क अहि कडका। হতে কাগিল যুৱা প্ৰকাৰি ভখন u বের অসাধ্য হোগ চিন্ধার বিকার। নীকার নাহি ভার ব্যিলাম সার। ্লে এখনো কেন অস্তর আমার। থত হতেছে এত দহনে ভাষার। রদিকে এই সব কগতের পোডা। চুট আমার কাছে নহে মনোলোভা। বে অলক্তমর ভাতর মওল। স্ব সেব যেন অবস্ত অনল । - (वं र्याप्तव गार्थ पिराक्तक्**ष**े) । नाथ भाषांच त्यन मिंगूटतत चंडा । क्रांच मुक्तावन करे नवी जन ; 🤋 द्वादिक दिनि कियाँ व नक्य । TAN BARN BAIN CANS I

मानव कामान करे शाबी करत शान। লানায় জগত-কনে ববি অভ থান a উদ্ধপক্ষ গাভী ওই পাইক গোৰ্থল। যাইতেচে ঘরমথে উডাইগা খলি । ক্যক, রাখাল, আর গহী বত জন। সেবিয়া শীতল বায় পুলকিত মন। পৃথিবীর যত জীব প্রকৃষ্ণ সকল। অভাগা ধানব আনি অপুণী কেবল। তাজি গৃহ-কারাগার এম নদীভটে। দেখিতে ভবের শোভা আকাৰের পটে u ভাবিছ শীতৰ বাৰ প্ৰশিলে গায়। চিন্তার ভিষের জাল। নিবারিকে ভাষা। চিন্তা-বিধে মন গার জরে একবার। নিকপায় সেই ভন ব্যিলাম সার ॥ এ ছার"-এমন কালে, প্রিয়দথা তার। মাদি, পালে দাড়াইয়া করে নম্ভার। 'একাকা এখনো হেখা কিসেব কারণ 🕬 বলিয়া স্থায় তায়, সেই বদক্ষন।। "এम ध्यम ध्यम पारे खार्यद क्रमन। (भथ वरक का अभिता करना कि नीखन ॥ ভেবেছি আমি হে সার নরক সংসার। 🐎 প্ৰাণী ধবিবাৰ খোৰ কল বিধাভাৰ। লাধু পুৰুষেৰ নয় খহিবার স্থান। क्षीबन नदक-कुछ करभन्न प्रशास ॥ मोत्राचा, निक्कारात्र, ध्या-व्यवकात्र । प्य. श्वरिश्मा, भात उत्तरम भागात ॥ नक, अन्दाद, मिथा।, इति, शहमात्र । व्याकात्रमा, आखिदिश्मा, दकान व्यामिनांत्र নরহত্যা, শনিবার্যা সংগ্রাম চুর্ক্ত ্ কত পুর নাম তার নাহি বার স্থানী। निवास अनुसन्ति **धरे अने ना**र्य

क्रीकार्त किएन कोइ यम स्मिक्टिश कि तथ नभीकरम औन मिटक बारे ॥" धहे क्या विन छोट्ड आनिकन करि। टक्टल ह्यूब मनम्बा, मधा बाटब धनि ॥ "ছি ছি ভাই পাগলের মত কত বল। कां शूक्य नेथा दकन गृत्य क मयन । জ কথা শুনিলে তব পিডা কি জাবিবে। े के कथा ওনিলে 'কগভারা' কি বলিবে।। ্রিল যে এ জগত ভার। বমনীর মণি। ্ৰভোষা বই স্কানে ন। বেং, সৱলা কামিনী ॥ मान कर त्रहे निनि धहे नहींबाल। স্ভাদে ভরী, ভার'পরি ঘুমার সকলে। ় প্রথত ভটিনী করে শূলী জালিখন। তারকা-মালায় ঘেরা বিমল গগন ৷ व भू करत ठातिनिक् बन्द करब क्यान। নার পারে নাবিকেরা করে গারিগান। ভূতন আকাৰ আর তর্ষিণী-মন। खक, वायू, जाबाबाओ, ठीटमब बखन ॥ हरक दिशा यात्र कात काटन खना यात्र। Late स्त्र ८ श्रम- यथा-भाषा मम्लास ॥ कृषि कारह ७८%, वन नाहि नाहि रत्। অঞ্জলে ভিজি রামা এইরূপে বঙ্গে। পতিকোলে বিশ্বহিণী. আমি নারা অভাগিনী. ना सामि कर्दा इ कछ भाभ। ত্যজিলাম তার তরে, ८म ८७८म हत्रत्व करत. স্বনী ভগিনী ভাই বাপ। মূল ৰাৱ প্ৰেমালয়, क्या यात्र मध्यत्. সে কেন আমারে করে হেলা। 🛊 কি সে দেৰে না, ভেৰেও কি সেঁ ভাবে না, चाडुक श्रूकत्वत्र (थना । পুৰুষের শত টান. ৰা হইবে আন. শস্ত্ৰ, শাস্ত্ৰ, সংগ্ৰাম, ত্ৰমণ । आवगा, क्वि, विठात, मीडि, बाक्यांत्र, ুৰুত্তীক। ব্ৰব্যুক্তন । गरक मिथि अपूर्णा विकेश

GAL MARKETA . 1 a 822 98. ्वाक कर् प्राप्त स्वाचनन NO CACE WEEK দাক্ষী করে চক্র তারা. মর-দর বিগলিত হয়। वटना नदव व्यादनेशा "অভাগী পরাবে মরে. এ ৰাতনা আর নাহি সন্ন ॥" পূर्व मृष्टि दोना हो। এত বৃগি তোমা পানে. খাস তাজি খাঁপ দিতে বার। **ट्यांबाद्य स्मार्थेह** मि ভাড়াভাড়ি ছুটে গিয়ে. কত ক'রে নিবারিম তার। এখনো নয়নে বারি ঝরে বুঝি তাব। এই সে কাঁদিতেছিল নিকটে আমার। पूरे कर करत धित मध्य नम्रत्न। · বলে মোরে ধীরে ধীরে করুণ-বচনে॥ 'সুধাইও, ওছে ভাই জোমার স্থারে। কি কারণ অ্যতন করেন আমারে॥ দানী প্ৰতি প্ৰতিকৃল এত কেন হন ? বাবেক তুলিয়া মূধ কথা নাহি কন # কোন অপরাধে আনি আছি অপরাধী। जहतर ভাবি छोड़े, भिवानिमि कामि॥ বল তিনি কোন দোস দেখেন আমার। কি করিলে পরিভোষ হইবে ভাঁহার ?' ভেবে দেখ, ভারে তুমি কত ছাথ দাঁও ভাল ক'রে সালা বুঝি এবে দিতে চাও महाम-विशैना, अहि, त्रमनी व्यवना । সংসার-সাগর-মাথে খানী মাত্র ভেলা। একে জ নারীর স্বাতি পরেয় অধীনা। তাহাতে অভাগা দেশে দানী-মত কেন পৃথিবী-ভিতরে জানে পরিবার অন। রন্ধনশালার সীমা ভিতরে শ্রমণ। সে বদি পতির প্রেমে হইল বিমূপঃ এর চেয়ে তার ভবে আছে কি অসুৰ वन प्रमाठाव-द्माद्य भटक्क निवनी কি কাৰণ অকাৰণ হুঃখের ভাগিনী गठा वर्ते, रकामा स्मार विश्वन व्यार मका कांत्र गरन गांचा सकारना देश प्रिय पर त्मरे तमा तमा तमा हिंग स्थारिय went divis cuts will co freight ent w

for which the elite cut midais अधिकति सर्वश्रम सम् दर्गन सन । क्रिके निक्षित्य कविश राजन । कार्यान्य (र त्यादा जार। (क के असी बदन जीत को बरनत नोड ।" अक्षा गर्थ कि बनिरत वृक्ति रह गक्न। वृक्षिहरू मात्रि छोड़े मरनदेव दक्वन ॥ (क्सरेन अपन दशक् बोद्रश कतिन। ক্ষেত্ৰ সংসাত্ৰ-পাৰ্ট ভূবিয়া রচিব এ 'অ্মার আমার' করি সকলে পাগল। গার রে আপন পর জানে না কমল । মনের মতন লোক মেলে নারে ভাই। বল বল সাধুক্তন কোথা গেলে পাই 🏽 ধর্মশীকু অকৃটিল আছে কয় জনা। त्क मा विशा रहन दक मा करत खेकांत्रण । रेक्श करत्र अक्रवात পृथियी पृष्टिया। ন্তন মানৰ-ছাতি আননি হে গড়িরা। কেন জগবান হেন পৃথিবী রচিল। कन्त्र-भः बादत भदत दक्त प्याहेण ॥ সাটীর শিকলে কেন আত্মা মন বাঁধা। আলো আধাবিধা কবি কেন দেন ধাঁধা। मत्म इब्र (क्षत्र कवि (शहर विश्वत्र । বিভু-পাশে গিমে ঘোড় কবি দুই কব। प्रशहे अ नवरमां क स्थम कांद्रन : আর আহ লোক সৰ করি দরশন # দৃষ্টিক বলেছি ভোষা না করি গোপন। **এफ निम क्यान कारण क्**तारेख उन ॥ ভগুদেই অভাগিনী তোষাকর জন। প**র্কাল**-ভর ভাবি, পিতার কারণ ॥" া বলিতে বলিতে দোহে কথায় ভূনিয়া। নদী হ'তে কত দূরে আইলা চলিয়া ট বম্বীয় রাপ্ধরে ভূতল গমন। 'तिका भारत-भनी स्थात-स्वन ॥' बादका द्रनंदक कारु जादक नियम छावित्रा ।

वसनी-क्रम्प होटन वहंक दायिया।

विक्रम श्रम्पतम होत्म होत्मत मथन । नीम श्रद्धम् (देव त्यंत्र बहात्मद नम ह शिक्षिक व्यक्तिक त्यांत्र) सम्मन्म ।

त्वाक करकार खरू वरन प्रिण मंद्रन । जबनि आधिक महित्र राजि । वृश्विम् । लाक रहत सबनेना कमरन प्रश्नित "এখন কিলের তবে বাজনা বাজার 🖹 क्षन रिवत 'आदि मुख्यी बननी हैं। অধীর চ্ট্রানর কহিছে তথনি চ "पुर्वत मानव-मन लिंगे तम कात्र"। প्रक उरदार कवि अधिकमा शर्म ॥ সাকার-মরতে তাই নিরাকার ভাবে। মাটী পুৰা করি ভাবে মোক্ষ্মী পাবে : अकवात अज्ञा वाने खङ्गाँठ बिन्ना तु । প্রবেশি ডাকিতে পারে কগজ-বনুরে ৷ भित पूर्वा कांशी नाय ज़ानत्व मकला প্রব্রক নাম মাজ বাপিবে কেবল। কি ছার **অম**র পুর কীৰে পুর-কাঞ্ Cकाशांत्र (प्रत्यंत्र कुल औत भारह कार्य কি প্রতিষা দশভুকা করেছে গঠন। দে কি জীর রূপ গার এলাত ক্ষন । হৃত । র তার ক্রার ক্রার প্রশাস । प्रयासका अञ्चलका कि मान्यका কিবা কবা বিশ্বনতে তৃষিবে ুন চানে ১ই त्या भूर्व करल करण करण करण ह (व काम L किया मृश्मी । शक्त, जीत (याशा माम। ८गइ नन मृत्रमनान्यस् बीर्ननमान ॥ कि भौनता छात्र पृष्टि कतिरव शांत्रण। স্বাগ্রা কি ভি ব্যোম মীভার ক্রম সংব মন্ত্ৰানি এক পর্জন নাম। মৃক্তিপদ জানি সেই পরব্রদাম ^গ এक नीन शीरत शीरत कुलिया नहाम কুতৃহলে বাংহ মিলে করে বিভূগান্য গাও বে বিভার আননে মিলাও তান. ক্ষ জগৰীশ বল নল (ত্যন্ধ রে অনিত্য ধেলা. ভঙ্ৱে তাঁহ।র শ্রীচরণ। विश्वारन विश्व ক্রিয়ার ধ্বলা লয়ে, চারিদিকে ভাঁহাগ नोक्ति देवांच्य नार्क

ঁ ব্যোম, বার, মহীওল, क्षीरेय समय सग. 'তাৰ গুণ গাহিছে কেবল ঃ খোঁজ রে তাঁহার ধাম. ভ্ৰম বে ভাঁচাৰ নাম. সেই ফন ভবের ভাঙারী। সেই প্রভ ভরত্বর. यत्य योद्य कृद्य खत्र. সেই জন ভবের কাণ্ডারী। करतिक जानक भाभ. সহিব অনেক তাপ. मस्याभव नश्च करवा नरव । ্ঠেশ না চরুণে ক'রে. দেখা বেন পাই পরে. এই নিবেদন পাপী করে।" পাল করি সমাপন, প্রিয়স্থা ছই জন. किছ পরে হরে দেখা দিল। मधाकत करत शति. কমল বিনয় করি. এট কথা তথন বলিল। "ৰুখা চিন্তা কর দূব, কি কারণে এত ভয় পাও। বিশদে বে ভয় পায়. লোকে দেখে হাসে ভার. পুরুষের প্রভাপ দেখাও॥ (वात निमि चरत वाहे. এখন বিদার চাই. দেখো ভাই থাকে যেন মনে। পাধী না কাকলী গায়, चक्रम ना (मश्र) यात्र,

> ভোৱে উঠি গুটি গুটি চলিল কমল। লব লব পাড়াসব করে দলমল। ছুই চারি ভারা ধরি প্রহরীর বেশ। ধিকি-ধিকি ঝিকি-মিকি, করে নিশি শেষ॥ भाव भाव, ज्या यांव, नवज्यावारम । মনোহরা, জগতারা, দেখে পতিপাশে। भाश हाएड. खाननारम, कविरह स्ववन। পারা নিশি, কাছে বসি, অলস নয়ন । देश बद्धन, दश वहन, दश नम्रम हुन । সে বলন, সে চরণ, বরণ হিন্দুল। किन किन, विभनित, एकारेश योत्र। चार्वद्रम, यदामरम, वितम स्वराय । ভৰ ভাৰ, ৰূপ-ছার, হেরিলে নহন। ক্ষিত্র ক্লার, ভোলা ভার, জনম মতন। शिक्षानात, काटक यात्र, कवन ख्वीते । क्षेप्रकृत, दंशरथ क्रथ, भीरक स्व क्रिय ॥ ्राम् अन, करन नविकास ।

হেলকালে মিলিব তুলনে B"

मुथकांकि दिश्रकांकि, जमन उच्छा । প্রসারিত, সৃষ্ঠিত, गुनाটের হুল ॥ 🔧 ওঠাধর গর-গর, কাঁপে খন-খন। (यन (कान, अवशन, कात प्रत्रमन ह (थरक रथरक, এरक धरक, श्रम्म नक्तः) ৰাসা কৰ্, গণ্ড-বৰ্ণ হয় সমুদ্দলৈ। অপরূপ, দেই রূপ, ছেরি পতিরতা। खारव एवव. (कान क्षित्रात कन कथा f मर्थ पृष्टे, कान वरे, नदम्था कार्रा। एएटथ मछी. এकमाडि. व'रम भिरताखारम । ছাইমতি, ক্রতগতি, প্রিয়া-কর ধরে। চমকিত, পুল্কিত, কয় জ্রুতম্বরে। 'মরি কি দেখিত্য, কোনখানে ছি এখন কোথায় রই। কোথা নির্মণ, সে মোহন পুরী কই।। ममभिक-त्मा কোপাশ্মনোলোডা. অতুলিত আভা কই। এ আলো দে নয়. এ বাভাস এ যে পাৰী ডাকে অই। श्रुती बटमां (मक्तर युन्दव. নাজি ভ্ৰমণ্ডল-মানে। বিষল কি विश्व-विदनामन. ভাগহীন শোভা সাকে। तमका नी ভাত মহাবল. मृद्र्तिकृष्क्कन द्रम् । শোভিতেছে ভ বোর ঘটা আল. ভাহে পুরীশোভা হর। গীত সুমধুহ, তালুশ নাহিক আরে। वस्ती किनिश्रा, ভবন প বহে গদ্ধ চমৎকার। জরায়ুত্য নাই. চির-আনন্দিত লোক। रेवत्रि नाहि ৰাহি অনাচার, নাহি ছানে কেহ শোক। মোহন ম্রতি. व्यानीनं दवनीत्र शहर ।

চিন্তাভরকিণী

সাধু যত জন. থাত *মাৰে প্ৰ*পিপাত । দেহ স্তকম্পিত. ক্রেম-রোমাজিত গংজিল ভকত কন। দলীত ভনিল, ভক্তি প্রিল, পাৰৰ মানব-মন দ কি দেখিত আহা. পুন কি নে তাহা, কভ দেখিবারে পাব। ७ शार्थ मा इव. ত্বায় সেধানে বাব # তাহে পাপ নাই. নির্মণ ঠাই. त्म त्य मात्सन-शाम । অই গীত গায়, অই শনা লাছ, ভাকে মহাপ্রভ-নাম ॥ 'লৱে যাব ভোৱে' যেন কেহ মোরে. বলিছে কানেব কাছে। স্থানাম পাব. जांद्र भटन गांव. আবে কি তেমন আছে ?" বলিতে বলিতে. কথানা থামিতে, দংবিৎ হারার তেই। ছৱা বারি আমি কমলক মিন্তী, স্থাীতল করে দেহ। চেতন পাইয়া যুবা কাঁপিতে লাগিল। আঁথিজলে যুবতীর বদন ভাসিল। ত্তৰন কমল একা বিপাকে পড়িয়া। কহিতে লাগিল তারে সান্তনা করিয়া। "সুবোধ হইয়া কেন অবোধ হইলে। কি দেখি এতেক সৃথি আত্ত্ব ভাবিলে। দামাক হয়েছে জর কত দিন ববে। তার ভরে এত বল ভাবিলে कি হবে। ব্যাশু যাতে বোগ যায় করহ উপার। আমি সদা কাছে বব ভব কিবা তার।" छमिया चुलवी वाविधावा मिवातिन। ু একমনে সামিসেবা করিতে লাগিল। ভালম ভালম রোগী নীরোগ হইল। हर्सन नहीं प्र उत् नदन नहिन ॥ ज्ञात्मरं इक्षामत्न-वाष्ट्रिय हर्णाय । প্রতি নালি পতিওতা হইল হতাপ।

निरस्ता अर्ड प्रिम छाविद्य क्यारन। চল-চল নেত্রে কল কগতারা বলে । "কপানে কি আছে মোর বৃষিতে না পার্টির্ন टक्ट च्यांत्र नांदे स्थात च्यांमि अका नांदी ॥ प्रि দেখি দিন দিন তিনি ওকটিয়া থান। উদাসীনভাব সদা অল্স নয়ান॥ হয় হ'ল নয় নেই, খেতে নাহি চান। বখন তথন দেখি বিহল্প বয়ান ৷ চুই চারি কথা কন স্নাই নীরব। বল কিছু স্থির হয়ে শুনিবেন সব॥ বুঝেছি অভাগী আমি বিধাতা বিমুখ! কত স্থা **আশে আ**গো নাচিত হে বুক।। কত দিন কতমত স্তেবেছি হে ভাই। এবে বৃদ্ধি হ'ল ভোৱ আর আশা নাই। এমন কি মহাপাপ কবেছি হে আমি। কে দিন আমারে শাপ তাই হেন **যামী**। चेत्रकथा (छत्मरका **क**रन्छित्र छोटे। ক্ৰমাগত দিবানিশি মনে পড়ে তাই॥ অপরূপ পাথী পেয়ে নারী এক জন। সোনার খাঁচাল গ্রে করিচ বতন। ভাবি সেবা আট প্র সঙ্জ করিত। পদাত ৰাওয়াত, হাতে এলিত পাড়িত। এক দিন কাঁকি দিয়া পাথী উদ্দি যার। কেই কোথা ভাৱে আর যু'দ্বিয়া না পার । অঞ্জ বোগ নছে: ৩ যে চিন্তারোগ কাল ৷ कि इत्त दल ८३ मर्थ विश्रम स्थाल ॥ একবার তাঁরে তুমি বল ভাল ক'রে। অই দেখ আসিছেন, ঘাড় টেট ক'রে 1" "কেমন অ।ছুহে আজি ? নিক্তর কেন 📍 অভিশয় মান ভাব দেখি কেন হেন দু "আমার সংসাবে আর থাকি কিবা দল। कि इत्व बाकिस (इवा क्षांत्वत कश्या। দেশাচার রাক্ষ্মীতে বধিতে নারিম্ন। খদেশের ছঃখভার ঘুচাতে নারি**ছ**া ু · জনমদাভার ধার শোধিতে নারিস্থ । দিন দিন মলাপালে ভূবিতে কালিছা মনের বাসনা কই প্রাতে পারিছ। मानव-मधनौ कहे भवित कतिए। शीिवनित नमारबट्ड देन्हे हिन्देन करें। चार्व, ८६व, शहरिस्ता मालियाम सर्वे 📸

वॉर्भनाव पम नित्रम्स क्लिन श्यान्त्राच मन दित्र देश निर्मात 📆 🗓 এ ব্যুসে চত পাপ করিবাম। **ভি-ছালি**লাম কত মিখ্যা **বলিলাম**।। **ब्रोट्डे** सि. शिम क्येन इब द्कि-रूग। ইমিবীর তাও দিল বাড়াই কেবশ । শিক্ত গলগত হবে কত কাল বৰ ? হিন্দাপ-শিশা জার কত কাল সব। শাহা কি স্থবেতে কাল শিশুরা কাটায়। আই দেখ নাতি নাচি কর জনা ধার। देशके नारमण्ड (थना कर वह दिना। **এমি হই**তে সন্ধা ভাসাইবে ভেলা। প্রিক ক্ষত থাক আরি জানিবে তথন। হৈছেদর ধাম এই পৃথিবী কেমন। 诸 বেলা কত থেলা সাসিও থেলেছি। ক্তি খেল। কত আশা নামিও করেছি॥ क्षेत्र बुटबाह्य मात्र क्यांन भःभाव। क्रिक हरे चाटना नदद द्यार अक्रकांब ।। 🛍 ভাৰের নাট্যশালা ছারাবাদী প্রায়। शिसं कुई शुम्याम लटबट्ड क्वांब । বিশ্বয় শিশুকাল কত দিন রয় : क्तेंबस-८भोवाक मिन हावि वह नव । বিহার লোকের মান, আজি আর কালি। ক্ষাৰ প্ৰনে খেন উত্তে মক্ত-বালি।। বৈষ্ণ শীর্ম্বতণ প্রেপম প্রেথম। ব্ৰিড়াবিভ দৰ্শদৈকে টাপাগদ্ধ সম। 💐 হৈন খগাফের প্রথর হিছিব। ৰিষ্ঠানে দুকার আডে মেব স্থগভী ৷ 🚲 হৈখার আধারময় এ ভব-ভিতরে। पूर्व गोर्श दलन कोटा मूहदर्खन खदन ॥ ∰্র√নশ্, ডাতে,∠ম্ব, কালিম বর্ণ क्षेत्र कार्य (यम मिलामिनी प्रवर्गन ॥ প্রীমার নিলাতে বেন ভাতার পতন। শ্ৰিম্ব ক্লাণে যেন জনেতে মগন। किह द्वार दान चन शन फ्रांटन। লিভিবর উড়ে বার কাঁকে টাকে। ভিট্ৰটেড,বেন বালিয় নিশাণ। ত কৰি পৰে লা বাকে নিশান।"

मांशदश्च मारिश देवन चक्रव चाहन বুথার প্রেছারে এড় ভরকের দল।। **ट्यारेक्स गांधुक्यन मध्याय-छिक्टतः।** বন্ধনৰ স্থিৰ-ভাব আপনার ভৱে ৷ কিছুকাত্র কট পাৰ বার্ণিক প্রজন। অনন্ত কালের তবে স্থাপর ভাজন ॥, কে ভোগারে ২লিল হে অকর্মণ্য তমি। তোমা মত লোক আছে তাই আছে ভ্ৰি। সাধু মহাক্ষৰ-গুণে আছে ধরাত্য। **নহিলে সে কোনু কালে** যেত রসাত্ল ।" "কি করিব আর আমি সদা বল ভাই। দেখ দেখি মনে ভেবে কিছু কর নাই। এত জ্বে নহৈতি শিকা কে করিল দান। পাপ হ'তে এত জনে কে কবিল জাণ !!" "সভা বটে, যা বলিলে যৃত্তিম্ব কমল। আজি আর থাক কালি বলিব সকল » িদ্ৰা ইচ্ছা আতি কিছু হতেছে স্কালে : ৰত পার বলো, সধে, কাল প্রাক্তঃকালে ॥" नमन हिन्दा बाद, नद-मथा क्दा। ভার দেবী করা মোর প্রামর্শ নর। क्षार्थित क्यन स्वीत मकरण कि करव। কি করি থাকিতে আর নাছি পারি ভবে। হাট দেখি একবার শাহিত্র বাডালে। (अरथ क्यांत्रि कमल किविया नांकि क्यांत्र ॥" এত বলি অবিবাদে বাছিরে মাদিল। निव्यवि श्रान-(माजा कहिएक माशिम ॥ "थाक, बांक भन्धत, विदास बाकारम। ্ৰন্তমি না খাকিলে কেবা তিনিয়ে বিনাশে॥ মানে মানে তুমি ত হে কত বেশে বাও। ভাল মূৰ কত লোক দেবিবারে পাঞ #. অপট আমার মত দেখেছ কি কারে। আন্ত্র আরু সাক দ্ব বলে কিবা ভারে।। ষ্মহে ও ভারকারক, আকান্দের রাজি। লক লক বোজনেডে প্রকাশিছ ভারিএ द्रकाषां व का औ दरन हमदशक कि कार्क (अरथ बाक वक्ष फरन किया नाम जोड़ ह थ्यां कर्ग, ८का वे अपने नाम करने अन्त

Delivated.

देकीया बाल नेनेयब बर वक्क नर्जन বারেক মনের সাধে হেরিফ জ্ঞান ॥" বলিতে ৰলিতে শ্লী প্ৰক্ৰিমে ভূবিল। শ্বাস ত্যক্তি নরস্থা গেছেতে পশিল। ষেরি নিত্রা অভিভত দেখিল সকলে। আপন মন্দিরে তবে ধীরে বীরে চলে u लिए कार्य बाटि खंब मानांत्र भूजुनी। মানভাঁৰে যেন তব হাসিছে বিজ্লী। · জাগরণে অচৈত্র নিদা যায় সতী। একদুরৌ দাওাইয়া রহে তার পতি।। श्रृष्टिक्यना-मूथ ८६८४ वात वात । কড় বারু, কড় আনে, কড় পাশে ভার॥ কড় পুত্রের মত ভিরত্ব রয়। ष्परान्ध्य शीर्त्र भीरत मृज्यस्य क्या। "विनाय कनवटमाव माञ् खगदिनि । কাণিতে না পারি আর এ পাপ পরাণী। এই বেলা সকালে সকালে ভল দিব। পলাব ভবের বৃহ্নে আব না রহিব ৷ অভেদ পাবাণে মোর মন বাঁধা প্রিয়ে। আগে চ'লে ঘাই আমি ভোমারে ফেলিরে। আমাবই জান নাবে তমি বে অবলা। ভেবেছ উন্মান পতি হার রে সর্বা ॥ ক্ষাকর প্রেম্মরি। আমি অভার্মন। কপালে থাকে ভ হবে পরেতে মিলন #

এত বাল খন ঘন করি দরশন।
নিশেষ-চরণে ত্বা করিল গমন ॥
চকিত-নমনে সদা চারিদিকে চার।
সদা ভর, জাগি পাছে কেছ টের পার।
পার পার উপনীত নিরূপিত অরৈ।
ধক্ত ধক্ত পড়ে বৃক ঘরের ত্রারে ॥
শাহসে করির। ভর প্রবেশিল তার।
নাংঘাতিক রক্ত ঝোলে দেখিবারে পার ॥
জাগাদ-মত্তক দেখি অমনি শিহরে।
পরকাল-ভর জাক্রমণ তবে করে ॥
শার্মা, করিব, কি জানি কি করে পরে।
শার্মা, এ ভবে আর রহিব কি করে ছব।
দারীর ভালিয়া ভালিয়া মিলিবে কুল।
দারীর বাবে ভুবে বাই তবে ত প্রত্ন ॥
বিক্রিয়া জালিয়া সিরিবাছি সবে।

এত বাল গাঁৱে গাঁবে কান লড়াইল।

গালে তুলি কাৰার ডয়ে ছার্জি দিল।

ততাৰ কগভারা মনেতে গড়িল।

কতবার বৃদ্ধ পিতা অবল ছইল।

অবশেব প্রবল নিধান ভাগে করি।

ক্মা কর ক্রপাসিড় পাতকীর স্থা।

বিদ্যেত বলিতে প্রান্ত ভালে নরস্থা।

বাক হয়ে আহে নর কুমার্লে পশিলে।
কেমন ক্রাল পরকাল না ব্যিলে।
থাতনা এডাব ব'লে পরাণ করিলে।
থার কি হইবে দেই আশা না প্রিলে।
ভার চগবান ডোলা প্রতি ক্ষমারান।
না ব্যিলে জ্ঞানতভ্য নিগৃত সন্ধান।
কোটি কোটি পালী ভবা, কুডাম্বলি করে।
ক্রাট কোটি বালী ভবা, কুডাম্বলি করে।
ক্রাট কোটি বালী করে।
ক্রাটের বালীনাত্র নিক্রে কাডারে।
ক্রাপ্রে চিনের সে বাতনা বেলী ক্রিক্রের্
ভবে ত বিকল তব আশা সমুল্য ক্রি

পরদিন মহা গোল করে, গরিজত্ব। লগতারা উৰ্কৃতারা জ্বন্তুলে গতন । কমল আসিয়া দেখি জানি আবিজনে। জধীর বইবা ধরি কানি কানি মলে।

(इमहासंत वाषापती

দ কাঁদিৰা কল, - ধুলাৰ পভিনা বৰ,	এरव दकन अका जारिक लगिष्टरन निवा कांकि.
হোগ্র হার্	কে তোমারে দিল হেন মডি ৷
अ र्दश्टिक दोन, वहत्त ना मद्य छोत्र,	এ পাপ করিলে কেন, কুমতি ২ইল হেন,
क्यांटन ल्ब्हाद्र-हिक् क्छ ॥	বৃদ্ধ পিতা কেন হে কাদালে।
পল হিব নয়, কভু আঁখি খুদি রয়,	প্তিপ্রাণ দতী নারী, গরাণে মারিলে ভারি,
कच्च दूरे शं७ योष्टारेग्ना।	বনুষ্ঠনে শোকেতে ভাষালে।"
श्य वंभटन कांब्र, द्वन कांब्र दिया शाब,	
মাদ্য কৰে এথিৰ ধৰিয়াঃ	धौरत कांधिभाका म्मिग।
क दक्ष का अनुसार अनुसार अनुसार (मृष्ट्)	রাজায় ভবন, বিজন কানন,
এবে তুমি ছান্তিলে কেমন।	পিতা পুত্ৰ বধু মরিল।
ज्याप पूर्ण स्थाउ टन सम्बद्धाः क्रिक्टन द्वाराम् द्वाराम् द्वाराम् द्वाराम् द्वाराम् द्वाराम् द्वाराम् द्वाराम्	
ਜਿਵ ਅਮਰਿਆ। ਕਰਾਮਿਟ ਨੂੰ ਗਏ ਹੈ। ਜਿਵ	चामि-मुक गृह काकिल ।
্তি ভাষিত্ৰ বিভাগ কলে কলে ভাষিত্ৰীয়	तक्षुक्रमणस्य, मिवासन्त अस्त,
a was co-Carrier on y great	का का बदर पिक श्रीविण ।
्रक्त क्षावाम ७५ वटन। जन्मकार वर्षा	ছাভিন্না নিশাস, তালি রিপুরাস,
ু আৰু রাখি আংগ গেলে চ'লে ॥	, প্ৰজিবেশিগ্ৰহণ চেতিব।
विका द्वार जारन रंगरन है दिन्ही	निम इहे थनि, प्लाङ: श्लाङ करि.
स्त भागरक लाज, व्याप्त वाच कित्रकाण,	पून दमश्यारण अनिया।
সনকথা ব লিতে ধু লিখা।	पूर्व देवर गाउँ । वह स्थान वह
ৰ কৰিডা-ধার, হাললাম কডৰার,	হাসি-কাল ভ্রা, এই ব্যুদ্ধা.
একাদনে ত্ৰুনে ব্ৰিয়া।	্ব্যাবর্চক স্থান্ত । জন্মজ্য সংসাব
ভবার একাসনে, ট্রাহে মিল সলোপনে,	স্ত্য নাম জার, জনিত্য সংসার,
পুশিলাম জগতের পতি।	ৰুচ্ছিতা সাব ভাবি ল দ

বীরবাহু কাব্য

आत कि तम मिन इरत, खनाद जुडिरत गात. करव कवि काकिमाम. यद्य देवह-अवेख्श्म. ভারতের পুনর্কার,

শুনায়ে মধ্ব ভাষ, র্ঘু-কুরু-পা গুবংশ, সে শোভা হবে কি আর.

ভারতের জয়কেতু ভারতবাদীর হন ষ্বনে ফ্রিয়াধ্বংস অযোধ্যা-হস্তিনাপাটে মহাতেকে উড়িত। নানার সে তুবিত ॥ ধরাতল শানিত ! विन्यू पट्य विभिन्न ।

ভ্যা পরি উরা ধার. वांशिनो (পाटांटब गांब. चार्य अर्ग इट्डे शिख शथ-मञ्जा कर्विष्ड । अक्टन कतित्व मदन. অবজ বেশিশ অকে. ছুই ধারে রাভা রাড! খন গুলি খুইছে । ধেত সাটী দিয়াধীরি, রধাকরে কোলে করি. মধুমাথ। মূথ ভার ভাল ক'রে ঢাকিছে। চন্দ্রের খেলনাতান. তারাপুঞ্জ ডলি গুলি, অঞ্জের শেষভাবের একে একে বাঁধিছে॥ ভাল ভাল মূকা মালা, তবিতে দিবাব রাজা. भा°म भवां कन-वृद्धः नाति नाति नांशिट्छ । রঞ্জিতে তীগারি মন, প্রমোধিত পুপার্বন, তরুপরে থারে থারে ফুলমালা বাধিছে। निदांकत्र-छन शाय. বিহুগ গায়ক তার. তার সমে তালে তালে সমীরণ নাডিছে। 'अब मियांकत्र' विन. উर्क्षपुरुष भूठेशिकालि. भूकीनाम विवशन खरधान कविए ॥ হেন গ্রীম প্রাতঃকালে. কান্তকুজ মহীপালে, करनारकत गुरदाक चानि शरम निमन। शीय-छे नवदन बाहे", 'াদি অন্তৰ্মতি পাই, **এই कथा वीत्रवां इ जगञ्जल करिन ॥** अनि चालिश्रम मिरह. (श्रद्ध निर्द्धांशान निर्देश, द्रभवीत म्हाताल स्थानीस्तान कविथा। कत्रांत्र चानिया त्थरम, निजान जारमन भारत, **८ इम्म छ - महिसारम छ नमी छ ६ हेन्।** ं शिक्ष शीय-छेशवरन, 'थन क्षिद्ध हुई करन, , মিৰুক্ত ক্লাভি সম বলে বুলে অনিব।

মালভীর মালা পরি, প্ৰপাতে ছত্ত কৰি. ্দ।তে মিলি ্লক্ল-পরিমল লুটিব॥ প্রোত্যক্রে ধ্বেহে মিলি... করিব সলিল-কেলি, বালতে বাহতে বাধি স্রোলোধারা ধরিব। -बोकहःम शिष्ट शिर्ह. याव वाजि मिंटि मिंटि. পঁলংক-মাকে গিয়া সকোষৰে জাসিব। মূণাল ভানিরা ড্লে. ব্দিরা তক্তর মূলে. इविनी मानरक रकारम क'रव स्मारह थां अझाव। যারদে আনিন ধরে. त्रकंक क्यांना करत्. फुठे अन भगकत्न भगतिमा भ**दाव।** अक लिएक क्यानिमी. এক দিকে কেত্ৰিনী, ছুই থারে থাশি কবি ভ্রমরায়ে কেপার। তোমার জ্ঞল দিয়ে. (कंकिलारत नुकारेरत. ব্যাকুল কৰিয়া পিকে ভালে ভালে ভাকাৰ। গত গ্রীম্মে কড ধেলা. ক্ৰিমা কেটেছে বেলা, সে সৰু অৰণ প্ৰিষ্টেম হয় কি তে মনেতে। বিহরিব খুজনার. চল গিমে পুনরায়, বিষম গ্রীখের ভাগ জড়াইব ধনেতে 🔭 अभिना भागीत दवा, হর্ষিতা হেম্লুজা. থ্রীতিভবে পতিকর করতলে চাপিয়া। বলে "এ কি নররায় त्म कि कड़ छुना बाब. এ জগতে এই প্রাণ এ গেহেতে ধরিয়া। (म म्द इहेटल माज. ভূগি স্বৰ্গ-সিংহাসনে: डिटनक थालिएड दर्वा हिएक **कांत्र** गर्बे ना । तो ্ৰেই সৰ দীম্মিট উপবন-বিশাসিনী, नर विरुद्धिक वटन स्थाब द्वारी नव ना

भागविद: मन्त्रांश. মুন দেই বলে ধার. ভাবি সেই ভাবে আছি জ্তুলে বসিয়া। ক্ষেকালে ব্ৰৱালা, ... नवकृत्व शीचि यांचा. कृति शिमि अन्यतम् द्वय द्यन व्यक्तिया॥ त्महे **छ**।दव कन्न खटन. বৃদিয়া কুমুমাদনে, कामिनी हरू इ छाटल भभरशंला दलालात्य। কেশে ফল সাজাইয়ে कटत कराजानि मिरम. नीरत थीरच रक्षारण नरन अनुरवः न वाकारम । প্রতিক্ষে করে ধরে. কভ ভ্ৰহ্ম করে. চাপিয়া হবিশীপরে বনহাবের বিহরে। কভ মোবা রূথি মাজে, সাজ করি নানা সাজে, ৰাচি ৰাচি ক্রজনে চারিদিকে বিচরে॥ চল নাথ সেই স্থানে विवय भट्ट मा श्रांदन. বিষা বনক্সাগণে আ**লিখনে তৃথি**ব। ভবিতে ভোমার খন, नानाविव वाद्याकन. मार्ग छ (८२ वाम अलग मामा (यहा) (अलिय 🗗 खनि इक्षत्रभीव छ।वः বীরবার মনোলাস, লেহতবৈ প্রামদানে আবিধন করিল। चारशिका शैवरव. পত্নে তাকি জন্তচন, काम नागौ कानि मान कात्नाखान माखिल ॥ मगरत हैं कि (जान. ्नमादम वादश्य द्वाल. एटर्ग एटर्ग भग्नदर्गीट्य मटलाट-४ कविन। वर्गन्छ निर्द्धांभरत. রজনীল বর্ণ ধরে. থারে খবে মবে হবে পতাকার ছাইল। চলিল নুপাত-স্থত, शक्त की भूरण यूथ, বাজেজন কোণ হলে জিভ্ৰন প্ৰিয়া: शर्काम (मिनिनी हैटन. हिशादिन दश्म वर्ण. ভীষণ কোমগু ছিলা রল রণ করিয়া। পুরোভাগে ব্ররাক, শিরে পরি বীরদাল. এইরূপ প্রথা দেই কালে ওথা আছিল। শাণিত গৌহের তাব, नानिक द्वीट्ड मान, वाह छेक निर्वावकः शृहेत्सम हाकित ॥ সি হগ্ৰীৰ লাজ পাৰ, क्रीचं नवनकात्र. আহাত্ৰখিত বাত বিপ্ৰগ্ৰালন । মুখল্যাত রবি বৈথা, লগাটে অভর লেখা. গভীর বৃদ্ধির চিহ্নধরা ছুই নধন। . বেন ডড়িডের লডা, ৰামে লাণ হেমলতা. ইব্ল-ভয়ে আসি পাৰে অন্তগতা হইল। क्रांतिसिटक क्यांगांश्य, न'रव निस् मनदन, 🎇 करमान प्रानीत श्रेष्ठ जेल्द्रास इक्तिता 🗀 😘 💉

शंबदन शंवन. রথবাজিগ পলকে বোজন পঁথ এডার। धर्वी विश्वादन. **ठटल कानवादन** क्लाटन कथन् क्लांबांत्र यात्र॥ কেত মাঠ মজ. গিরি বারি তর বোভোধারা-মত বহিয়া যায়। গ্রহর-ভিত্তরে, নানা শোভা ধরে গ্ৰীম-উপবন প্ৰক:শ পাৰ্য। বিশাল ভমাল. প্রসারিল ভার জানাইছে নাম বিপিন-মাঝে। তারা দলে দলে, উঠি নান: বংগ তাল নারিকেল গুরাক সাকে। কোন ভাগে জাব, শিহরে কদম দাভিম পাশে। অংশাক দেখিয়া. কোৰ। া বেহায়। শিমূল হাদে। মুক্লে পুরিত. শাপ: ভারম্ব কোণা বহে চত গ্রবে ভবা। কোথা তরুর)জ वाउँव विद्राह দেখেতে প্রাচীন পল্লবপর। II কোথা মুখ তুলে, তেজে বৃক্ খুলে प्राम्थी हात्र हालूत करता কামিনীর বন কোণা মুৰোডন, पुरम रम्ब यस रमोश्रज-छर्द ॥ (कांधा वा त्यकांकि. त्रद्ध दम्ब छा আবেশে ধরণী-উরদে পড়ে। Cकाषी वा श्लीवान. করিতে আলা প্ৰফুল মাৰ্কা-শাখীতে চড়ে ॥ কোণা কেডকিনী. আল-থাল বেশে পড়িয়া বয়। অবকাশ পেয়ে, धीरत धीरत दथर সেইখানে আসি সমীর বর। ক্রমে সরিধান. इतिरा प्रकान आवर्ण वान। যত ভক্পল, 45/350 कुञ्चम वित्रिष इतिय मत्न ॥ যত পাৰীগণ, করিয়া শ্বা ্ নুপত্মতা ৰঙ বাদেন ভাল। কুলার ত্যজিয়া, कांक्जी किश्रा एकिन कांग ह

तन मात्रमा. मिहारते भवनि. পশ্চাতে চলিল মনালদরে ! াপরিছবি: ' वश्लको कहि. হরিণী ধাইল হরিব মনে 🛊 উরূপে ঘত, যত আছগাল থতে ক্যাগত ছাটল আসি। . नम् नमरत्र. ফ্ৰমাল: লয়ে. বৰবালা-দল আমসিল হাসি # ी शहरायान. প্রতিজনে জনে. व्यानिश्रम नात्म ुवि भवात्र । শাশ বাব হা নিক্র ভিতরে স্করে ঘ্রা ভোরমা প্র-শোভা বস্তব্যবাসারে। भ इंग्रेट्रेड्स्ट्रेट श्रुट्य दोशोलन मारक। গ্ৰাজবাৰ। বনমাল। স্থী কয় জন। पटव देरुल असद्भाष चम्ब-७४न॥ েড্ছানি নেডের বাম র হলের দাম। অরণ্য ক্রওমে বেশ কৈল আছিব্যা নরীন বরুর পরি আজু সংব্রিপা। বানিল বিভিত্ত বেশ সভাম পৰিছা ॥ মক্তামাণ বৈনিময়ে সন্মালা-দলে। मय-उदन कर्षः दि लिविदन भटन ॥ কর্ণবাল করবালা করি তিবোটিত। क्षेत्रिम्द्रम कृष्यका-कृत्र देहल विवाहित्र ॥ কপালেব সীতি শোগ আভাল্কাইল। কুঞ্চড ফেলমূলে আদি নেখা দিল 1 নিত্তা মেবলা ঘটে লোহিভ লোলাপ। নাভিপদ্ম মনে আসি করি**ই আ**লাগ ॥ **७**तरण मु**ण्**तभतनि आति नां राक्तिण । বক্তজবা অফণের আভা প্রকাশিল। এইরপে ব্রবাদ পূপ্র-আভরণ। एरत वीना टांनी जानि कतिश शावन ॥ গলিল যথাৰ চত কাঙৰ-কদৰ। মাণবী তুলিতে কোলে অধ্যেদ্ধে রয়। निकटि व्यामिश्रा वीना तानी वाकारेश। মাধ্বী-লভার চ্যা চন্দন ঢালিয়া। পুকুলিত চুৱাশাখা লোগাইয়া করে। তত-মাধবীতে বিষ্ণা দিল সমাদরে॥ धरेक्टन कछ देवना द्विना का निम । ^{গঞ্জ} শুলী আদি দৰে ৰবিবে ভাগিল 🛭

शैभवत श्रामाकर अस्ताम इहेल । বিপ্রিন লমিঃ। তুপত্র। কিরিল। তুৰ সিমে কয়জনে ৰাদ্যা ভালা। ভোজন করিয়া ক্রণ, কবি নিবারণ॥ পুনরায় বনশীলা আরম্ভ করিল। বাছপুদ্র : ইবার সংহতি চলিল ৷ ৰেতটে নালীগণ আংসিয়া ভগন। বলৈ "চল বাবিপয়ে কৰি জে দুম্বঃ বলি প্ৰভূপে পাঁথা ভেনাৰ উপৰে। वाक्षाको वसवाता छैठ्ठ लटर भटर ॥ धादत्र धादत माति माति विनास स्व.म । अवदसद्य वेशववास नेक्स अन्तर्वाहरू । काषांत्रीय दनस्य शहक दक्षण पश्चिम् । **নীলফলে প**্ৰভেগা **চলিল ব**ংহিয়া॥ बीत नगोदरा वादि-हिरस्रांत विट्रह । ভেত্র-পাৰে আসি ধীতে কলোন করিছে।। বাবিবার হিলোলেন্ড গুল্ফিত কাব। বাৰী শ্ৰুবে বামায়ন শারিপান গ্রন্থ। ভাতে দে হণের শেক্ষা প্রথব লয়িত। চাবিদিকে ছয় খাট শটিক বঢ়িত। শেত-পাষ্ট্রেড ভার বান্ধা গবিষ্ক। धत्य **क्षाहर**ा त्यन अलान-मक्षाद । গশ্চিম জনেকে শোভে বন বাংলাম। বিশাল ভয়ান শাল দেখিতে সুঠাম চ প্রস্কৃতের সুর্বদাল ফলন্ডক্রা। माफिश श्रेकत आंश चांत्र समस्य। দক্ষিণে কুলুমবনে ফুলের সৌরভ। জানাইতে জীবলোকে কান্ম-বৈভব ॥ উত্তরেদে অটালিকা বিভিন্ন গঠন। दाव अमः रिया वायु करत आस्त्राहण॥ সমোৰর মধ্য লাগে জ্বতি মনোহর। কুরকার শ্বীপ এক রতে বারিপর। নবদুকা-পরিপূর্ণ জান্তবরণ। নিৰ্দাণ গণালে যেল ফেংখর ফলন ন ভাষাতে নিঝরিবারি নিম্বত নির্ণাও। যেন বিন্দু বিন্দু বুঠী গড়ে অবিরস্ত ।। নুপস্থত বিনোদিনী মহ ভাষে **ফলে**। হেৰি ভাছ খব। ববি নিজধানে চলে। বিশাল শ:লের অ:ডে গুরুইল রাব। क्रांस भूर्ट्स (मथ) मिन म्महक इदि ॥

(इमाउद्भाव आक्षांवली

देश्तिया क्रमृती कत्न प्रेयद शिना। ্টি ভাষালের ডালে ডালে কোফিল ডাফিল। वादिनदः मन्ता कार्ल्युव्यक्तम्यन्त्रभौदि । ্রসিল শরীর মন নেজারি স্মীতে॥ [ী] বিনোদ শয়নে ত**ত্ত** জুড়াবার তার। বীরশ্বন্ধ পদভেলা ফিরালেন হরে। (हमकारल (याधिनीय (याल अक कन) भारतेत्र केन्द्रियानि हिन एउनन । শ্রচর্ম পরিধান, মুখে শিবগুণশান, করতলে তিশুলের ফলা। মহাভোগিনীর বেশ. াধিত ছটিনকেশ, क्रजाटकात्र भागाभग्न गणा । **उथन** टिव्यवस्टर, लुब-द्योशत्मव स्टब्स् (मह छन अन कदब, 👸 . 🕝 অজমান ভাগ্নর তুলনা। রত ছীর্থ-দরশনে. क्ष्मशादा अकरतन, প্রিহরি বিষয়-বান্না ॥ ট'ট**ৰে স্**ম্পদ ৰল, চ্ৰিড নম্নতারা. त्यम भूती मूलहोता. ८६७२ श्वाद्य भाष हान। আগিনন করি ধীরে, था। मिद्रां इत्तद छीत्त. চবৰ কালন কৈল এলে ১৯৯১ भाषान-त्मात्रामः वि. दिनि व्यथ मृद्र करि, ष्यद्रशनि शनिश डेडिस् विकाम-शीविष्ट महन, कामिनीशन भरन. বোগিনীতে কুমার পুর্জিল। শ্ৰন্থতে বিনয়ৰাণী, 🙀 যুড়িরা বুগল পাবি, বীরবাহ অভয় সঞ্চিল ! इंद्रबन देवना जेनहान, कि लाख मुखिड नाम," ु धरे कथा विन स्थारेन। नि श्रोमी त्यांत्र त्रत्व, करह उर्द्ध अन मरन, "এ ভবে নাহিক মুখলেণ। भिक्षाभिक्ति सात्र दिना, किनि क्रांटनत (पना, . द्विष्टि थाटक मा विष्टु (न्या) व किंद्र अधित जाबि, সকলি সে ভোজবাজি. প্র'ল আর পাবে না দে সঞ্জের कि पदाशकि ८वरे, का'व मौनहीन (गरे, এই ভাবে যার দিন ভবে। ৰে স্থাহিত্মতা, কভক্প-গুণযুত্তা, ্ৰিপাকে পড়িয়া ভোগে কত।. विद्वान पाकि, वर प्रथ पादि गाणि, क्षरं बाद्ध वर्षि अविश्वक्र

(अम्छन नीह बद्दे, প্রথব ভাষ্কুর করে, শীতে দেহ কণ্টকিত নয়। কিবা কাটা পতা তক, এবে থোর দকলি ত সয়। उन्रक्त निजा बाँहै. শরনের রেশ নাই, 🕠 এकाकिनी विष्यंत्र श्रामिश्री। ভূগিয়াছি দৈশ খ্র, कीत नवनील मत् इ लिया कि स्तर खननी।" वर्श्वरम्दम् मान देवादम्, বলিষ্টেড বলিতে ক্রোধে, विक्रासम्म महाम खिला। দ্বিতে লাগ্নিল কটা. करवरल जिल्लाक्टी. धन धन वै जिल्ला के हिन्।। टेच्त्रदी निमास करत्र, **"শোন রে গালি**ই মুস্থ**ন্ধা**ন। ्य च ८० लि. बहे श्रीष्ट बारमा विवासिका पनि, मम बाकी मा हरेटन शाम ॥ 对荷、农民作为军门首时 राहि निर्ह्म यात्र मार्गित राज त्राद र्मा भुक्ता स्थ उट्ट विक कवार । हेकार कार सीहि बद्दा में १८ र क्लीयो प्रक्रिकार दिशि द्वार्थः सम्भागमः দে, ব রবে জ্লার ছাডিল। খনি সেই গ্রেম্ন, शामहोत् सार्वान ্ৰদেবি ধামা নীৱৰ ছইব।। কোপান্ধ চাশি বাহি श्रुर्वक भौद्रस्य धाकि, ছোন্নীয় বাৰ্-লোভ পুনঃ বেগে বহিন। আশ্ৰার প্রিছে, প্রাপর সমূদ व्यक्तिन्या अब दाशा विदियत क तिक्ता मर्नम्दा भूदी आए "হারকা নগরী কুচছ, তার অণীখন নাজা দর্শেখন প্রাটিল। তঃহাতেই অবতঃ নির্মাণ ক্ষান্তরবংশ, कुक्र (इ.) होता घटत मन दम दहेगा। ম্ম ম:নাম্ভ প্ৰ কুক্ষণে স্বর্ণেশ-পতি, थानिशास्त्र वहःवत्रां উপक्रम कतिन। করি তাঁরে বিলোফ কুক্ষণে অংমার মন, ব্দমবের ভূণতির প্রেমডোরে পড়িল। चप्रश्वता सद्ध तिहर, যাইতে পতির ধ্বে পविषेतिक छुडे येवरभन्न साट्ड पश्चिता। তুমুল সংখ্যাম করি, প্তি বান্ধ পর্যপু cell fountai ecc. Albinia affinial si

ने सहाक्ष्यां व

win card tinnit. wire mete ein, बन्द्राम प्रसादन ग्राह्म चाहि ताबिक। (बार्ड महा मिल्लीक, का निकास प्रधानांक, नीमा मण्ड नामा सूरण महास्त्र जुनिहा। त विस दर्भाग कति, (सरे शांदन कांग रति. শহরিত প্রথাইরা ভিগারিত হইছ। नदक्तिहरूदम् निश्ना. গেক্ষা বসন নিয়া, **এইল্লণ ধো**গিনীর বোগবেশ ধরিত ॥ ण्यवि^वरंपरन रमरन. ं के विदिर्द्ध और दरन. বারাণসী, বৃন্ধারন হরিপ্তার ভ্রমিস। मान-गटबावब होत. वानाम्थी शक्तम. কৈলাস: পর্কভোপরি অবশেষে উটিছ।। হেরিলাম বুবভেডে. निव-निवां जानस्मरक, পাৰাণ-মাকৃতি ধরি বিরাজিত রবে ছ । পুৰের কৈলাস-ধ্যে, क्तिन ब्रह्मदक नाम. ষ্ঠেবর বিভব খত সমূলেতে ভুচেছে। मगर्ड পবিত हाम. া 'গিয়াছে তাহায়ে' নাম, সে পুণীও মেজুপুদ অপবিত্র করেছে i বেখানৈ পিনাক্ষারী, পিনাকে সন্ধান করি. অসরের রিপুর্ল:অক্তিরে বধেছে॥ तिहेबाटन बेरहनटळ. चारवाश्त्रि श्मिनद्व. অভয়-জনরে পার্বভীয় অলা বধেছে। माबि तारे भूक्त्रह. কৈলাদ নীরব রব, ष्ट्रं ।शृंक मेड्ड ए४ माटब ,माटब काशिटह । रखराव क्य नाम. ় গালবাতে ভাকিলাম. আনীগাত তবু ভগা-নয়নে না দেখিছ। व्यम উरम्भ श्राह्म 🧦 💢 শিবমৃতি পূজা করি, वर्षमः जानीत्व चात्रि वाद्रांगरी ठनिछ ॥ नेवा चानरसङ्ख्यात्त्वः (१६विव चनानिधादः, श्राति विवर्णन पूर्व कैननी उ व्हेश । দৰি খুল্লি হত হারা, 🕠 চল্লে কলকের পারা, वाहीन अवस्थित किटल नवना ने वा स्मिक्त । गांपणस्य विरुद्धेश्वर, ः : (१विनाम श्रानास्त्र, पंक सूत्री निर्मारेवा अञ्चलित मानिए ॥ ारि त्य त्यानाम कानी, नाव रवत राजावती, गास्त्र क्षीतिक स्टाइ गाना सारक क्षानित्व। TOTAL BURNETER TEN STER TOTAL मित्रिक्षिक्ष्याम् स्थाना सरिक्षाः।

भागिक वर्ग नाम. FRCW MOLE পাতু পুত্ৰ নাম ধরি কঙই ধে কাঁৰিছ ট ना करिंग दकाम क्रम na ten weige. তুৰৈছে ভারতভাগ্য তবে সভা আজিছ 🕏 তখন বৃহিত্ব সার, কুতারতে কেছু আর क्षत्रक महाधर्ष माहि किङ्क नरस्ट 🕬 वानिनाम वीव्रवस्म. कुक्रकात है है से स्रोहे বীর নাম ৰম্মণোধ কুমগুলে মুচেট্টে 🛊 -चांचि रौतिनाम मर्ग, কোন ক্তিয়ের ধর্ম ভারত-ভিতরে আর দরশন হয় না। (कन वो ववनमन, शरत थक वास्त्र কেন হিন্দু-মহিলার কুলমান রয় না। ভারতৈ কনোৰধান, প্রসিদ্ধ পবিত্র নাম कृषि रगहे करमांद्वित दश्मधत हरेता। धरे जाद श्रकांत्र. वुथा कांग दरम स्टम, অপচয় করিতেছ রামাগ্রে লইরা ॥ আসিতেছে কত দু'র, রণবেশে তুণ পুরে পাঠান হুৱস্ত ধল মনে ডা ত ভাৰ না। কৃহিলীম স্মাচার, त्तरवा रवन शुमलीक षाडे काश्रिमीदा छःथी स्मात बंड करता मा 🕮 ভমি খোগিনীর কথা রোমাকিত কাছ र्विमाद स्टेबो श्रीव करनारंखरण बाह्य ॥ আনলপিখনে হেন-ধাতুর প্রবাহ । भगनज्याम (यन जाहन क्हाइ ! ভাবনা অনলে ত্রদি ভাবিত তেমনি। বনিতা, বিশিন 🗱 ভূলিক তথনি ॥ व्यक्ति विश्वान निया स्वत छिडरत । ভূত স্কুৰীৰ ভাৰ,কাগিল সভকে 🚉 **र्व अ**दिहरू:(मदान मामनगोनाइ 1 অরপুরী পরিহরি করিও আলয় 🛭 বে ভারতে মহ'বল দিছলের দল। । 🐡 অৱশাৰাঘাত আলা কবিত নীতন 🛭 হৈ ভারতে সৌরভুর-মহাবীরগণ। রাক্সভানবে রবে করিত দখন। मिनीत, नवत. वच्, मनत्रथ बीव । देश कांबरक विश्वतः स कवित्र कवित्र र्द कावटक -वीश्वम नम्बद्धिकार cefecu fance ce : Affa neen

এইরপ বিষমর চিজার মগন। বাহজান বীর্বাত হারায় তথন ॥ বিচিত্র স্বপনে দেখে গগন ভিতরে। বিপরীত নানা ছবি শৃষ্ঠ আলো করে॥ একধারে নারী এক রহে তরুতলে। ভারে হেরি রাক্ষদের। অধোম্থে চলে।। অফুপাশে এক জন ধ্বন-ভূপতি। শত হিন্দুনারী ধরি কররে তুর্গতি।। একপাশে আথগুল সহ বিজ্ঞাণ। গাঙীব-নিনাদে দূরে করে পলায়ন। আবে পাশে ডানি হাতে তরবারি ধরি। কোৱাণ ধবিষা বামে বতে এক পৰী॥ তাহারে হেরিয়া যত ক্ষপ্রিয়-তন্ম। করপুটে পদতলে হেঁটমূথে রয়॥ একধারে যথাতির পুত্র কয় জন। **इ**त्तर्रम पृत्र-८मर्थ तरक मःरशांश्रेन ॥ স্থানাম্বরে মেছদুত করিয়া গর্জন। হিন্দুরে সৎকারকার্য্যে করে নিবারণ। দেখিয়া চুৰ্জন্ন কোপ জলিয়া উঠিল। ঘন দেহ চমকিয়া উঠিতে লাগিল। অন্তরের কোপ ভবে অন্তরে চাপিয়া। থাকিয়া থাকিয়া বীর উঠিল কাঁপিয়া। যেন গগনের দর্প বাধর নিঃখন। শুনি ধরা ক্রোধভরে কররে কম্পন ॥ किरवा एम चात्र (यह मागत-गर्काम। জানায় আপন দৰ্প ডাকিয়া স্বনে। সেই ভাবে বীরবাছ ছত্ত্বার ধ্বনি। করি দেখা নিলা আসি যথা নরমণি॥ হেনকালে মহাবেগে দৃত এক জন। **ज्लिज-मगैर्ल जा**नि करत्र निरंत्रमन ॥ "মহারাজ সর্কাশ বৈরিপক এল। কর রকা নৈলে রাজ্য রসাতলে গেল। তুরস্ত পাঠান-দৈর চতুংক দলে। কালান্ত কালের দৃত সাঞ্জি এল বলে। সিন্ধুরাজ্য-শেষভাগে কাবুলের দেশ। তাহার নুপতি নাম স্থলতান বকেশ। তার সেনাপতি নাম আলি মহম্ম। দেখাইয়া দিল্লীরাজে নিল রাজপদ।। সুটিল মধুরাপুরী কুলী কলিঞ্র। কান্তর্ক স্টিবারে ভালে অভঃপর 🛭

এথনো সময় আছে রিপু আছে দুরে। অবিলয়ে ফ্রেড্সেনা দেখা দিবে পুরে॥

শুনি নরপতি মনে বিপদ গণিল।
বৃদ্ধিহারা মন্ত্রিগণ মন্ত্রণা শুলিল।
বুদ্ধিনেত কম্পিত দেহ যুবরান্ধ কর।
"এ কি কান্ধ মহারান্ধ কর হ'লে ভর॥
ক্রম সফল তার ধন্ত বীর সেই।
বিক্রমে বৈধির মুও ধণ্ড করে বেই॥
কিবা হবে মাংস্পিণ্ড এ দেহ ধবিরা।
বৈরি ব্দি যশোনিধি লইল হবিরা॥

व्यमी जि वत्रम व्यार्थ को स्व कि इहेरव। যুগে যুগে মহীতলে স্কীর্ত্তি ঘূরিবে ॥ ববনে করিব জয় রণে মহাশয়। সাহসে করুন ভর নাহিক সংশয়॥ মহাবলী রিপুদল সত্য বটে মানি। কালের কুটিল গতি তাও ভাল জানি॥ কিন্তু পুরাতন কথা গাঁথা আছে মনে। এক। বীর কত বৈরি বিনাশিল রণে॥ একা ইন্দ্র দৈত্যবংশ করিল দলন। একারঘুবসুদ্ধরা করিল শাসন। একা দশানন করে ত্রিভূবন জয়। একা রাম-বাবে দশানন-কুলকর।। একাকুর ভমগুলে একছেত কৈল। একা পার্থ লক্ষ্য-ভেদি পাঞ্চালী লভিল। বীৰ্য্য ৰাৱ ধরা ভাষ বিধির নিৰ্ণন্ধ। কালে হয় কালে বৃদ্ধি কালে পায় কর।। তুৰ্জন্ম পাঠান বড় ছুরম্ভ হইল। **অটল সৌ**ভাগ্য বলি অন্তবে ভাবি**ল**। হস্তিনামথুরা কুলী আংদি কলিজর। লুটিয়া কনোজ-লাভে আদে অভ:পর। (कन (इ क्रिम् म्छ इर्त नां थ मिन। বিপ্রহরে মেঘে সুষ্ঠা কথন্ মলিন।। कथन প্রবল নদ শুকাইয়া যায়। ৰুতু উচ্চ গিরিচুড়া ভূতলে লুটায়॥ শতগিরি অবলম্ব ভূমিকম্পে কভূ। শতমূল বটবুক ছিন্নমূল কভু॥ অলবিন্দু পাষাণে কথন করে ভেদ। মহাপরাক্রান্ত রাজ্য কথন উচ্ছেদ॥ পবিত্র কনোজপুরী ক্ষত্রিয়ের বাস। ভাছারে সুটিবি ৰলি করিলি বে আশ 🛭

তবে ত পুরুষ আমি বীরবাছ নাম। তবে ত প্রদিদ্ধ পুরী কনোলেতে ধাম। তবে মম রণবীর-ঔরসে জনম। তবে ধরি বাছবল বীর্যা পরাক্রম। महात्रांक बीहत्रत थहे निर्वान। পরিজ্ঞান সকলেতে করুন পালন ॥ রণক্ষেত্রে গিয়া শক্ত করিব নিধন। সতাসতা—এই সকাকরিলাম পণ্॥" হেরি বীরবাত দর্প প্রফল সকলে। ताक-च्यांका (शरा वीत त्रशरवर्ग तरना সেনাপতি পদে বীর হইল বছণ। শুনি 'জয় ধ্বরাজ' নাদে সেনাগণ॥ নাহিক ভরের লেখ. করিয়া সমর্বেশ, বাৰুত্বত হেমলতা-ববে গিয়া ভেটিল। "প্রেয়সি বিদায় চাই. সমর জিনিতে বাই." বলি বীরবর প্রমন্তার কর ধরিল 🛭 পতি রণমাঝে যান. আকলারমণী-প্রাণ, কতই বিষম ভাব উথলিল জদদ্ধে। শ্কাইল ভক্লভা. শোকভারে অবনতা, শশধর লীন যেন হয় রা**ত** উদয়ে॥ ধরিয়াপতির হাত, "কি কৰ হাল্য-নাথ, কঠিন ক্ষত্রিয়কুলে নারীজন্ম ধরেছি। মারা মোচ পরিণয়, উদ্যাপন সমুদর. ক্ষত্রিয়-ধর্মের লাগি জন্মশোধ করেছি । ষ্বনে নাশিতে যাবে. জগতে সুষ্প পাবে. এমন সময়ে নাথ কি বলিব তোমারে। মন বোঝে নাত তব. প্রাণ কেঁদে উঠে কড়. কভু তব সনে ধেতে বলিতেছে আমারে 👂 গত দিশি ডঃৰপন. করিয়াছি দরশন. তাই প্রাণনাথ, প্রাণ আকুলিত হয়েছে। তাই নাথ এতকণ, নাকরিয়া আলিখন, অবশ হইয়ামম বাহ্যুগরয়েছে॥ গত নিশি শেববাম, অলকণ দেখিলাম. ভাবিলে শোণিতবিন্দু দেহে আর রয় না ! **ि। मरेटन श्रुट्स म'र्स,** জলনিধি পার হ'রে. পলাতে বাসনা ধেন কেহ দেখা পার না॥ निविष्ट मधुत्री ट्टरत. मयुत्र (यमनि (करत्र. अभिन निषद्भ त्यां ध थत्र भत्र मात्रिल। টাইতে ফুগ-কলি, (तथा निम त्महे व्यक्ति, **মন্দি প্ৰলয়-বায়ুত্ত ক'রে** বহিল।

(यह 'बाति वाति' क'तत. চাতকী কাতরখরে. উঠিল গগনোপরে অমনি দে মারিল। বিনামেখে বজ্ঞাখাত, হ'রে শিরে অকন্মাৎ, সেই পাথী ভূমিতলে লুটাইয়া পড়িল # বিশাল তরুর পাশে, তরুলতা ধেয়ে আংসে. হেনকালে কাঠরিয়া সেই তক্ত কাটিল। कमिनी वादिशदत. त्वहे थारन त्रविकरत. অমনি সে কাল-মেখ আসি ভাতু ঢাকিল। আবো কত অলকণ, দেখিলাম অগণন. না জানি কপালে বিধি কিবা লিপি লিখেছে। বুঝি লীকা সমাপন, ত্ৰত হলো উদ্ধাপন. মোর প্রতি কোন দেব ব্রি কোপ করেছে। ৰা হবার হবে ভাই. আজা দেহ দকে বাই. তৰ অন্তৰ্গামী হয়ে রিপুকুলে নাশিব। অথবা তোমার সনে, মরিয়া সম্প্রবেশ, তুই জনে একেবারে গুরুলোকে পশিব॥" ভনি থেদে মহাবীর. ভাবিয়া করিয়া দ্বির. অ্বশেষে অঙ্গুলীব অঙ্গুৰীয় খুলিয়া। "কি জানি কি হবে রণে, দেখো প্রিয়ে রেখোমনে, পরাইল প্রমদারে এই কথা বলিয়া॥ সময় বহিয়া যায়. দিনের সংক্ষেপ ভার নিরুপায়ে যুবরাজ রণমুখে চলিল। কার্চপুতলীর ক্রায়, (यह मिटक चानी बाब. হেমলতা একদৃষ্টে সেই দিকে রহিল। সেনা ল'য়ে বীরধাত হ'য়ে অগ্রসর। নেপালের পথে আসি রহিল সত্তর॥ প্রদিন অপরাহে রিপু দেখা দিল। সমুখীন সমুদায় মেদিনী ঢাকিল ॥ অর্জ-চন্দ্র-শোভা নীল পতাকা উভিল। যোজন ব্যাপিয়া শক্ত শিবিরে ছাইল। क्रम पिरा अवमान स्र्रा नुकाहेन। আঁধার বিছারে নিশি আকাশে ব্যিল। अभव-आंगरब निका निका वित वरत । অমনি তারার আংলা ধিকি থিকি করে॥ বিতীয়ার চন্দ্রকা ঈবং হাসিল। क्यां क्यां कारणा (शर्म मर्ग पिक खकानिन। বীরবাছ বৈগী-পক্ষ করিতে বীক্ষণ। হিমগিরি শৃংদাপরে কৈল আরোহণ॥ প্রকাত্ত-প্রকৃতি দেখে যবনের সেনা। শিরেতে ধবল বাস বেন ভাসে ফেনা।

3	পরাণ ধরিতে,	ঠেকে শিক্ষা করে যেই,	সাব গ্রহ করে সেই
		তাদৃশ না পাব	
নারিব থাকিতে	, त्राथिव वर्ष ॥	কিবা শোভা দিল তায়,	
ওহে শশধর,	ভাবিয়া কাতর,		শ্তপদ ধেন।
বল হে সম্বর বে	ाषात्र वार ।	অথবা চপলা-ছাঁদ,	
	কিখা বহি খলে,	च्यप्ता होना होना च्यहना इहेब्रा	ব্যত্ত হোন ॥
(मह युक्ति व'तन, त		ত্টি ফুল কাছে কাছে,	
भार् निशिक्त्र.	मिटब वश्मेश्व,	থাত কুল কাছে কাছে; একটি উদ্ধ এক	दिखासां जारश
শেষে বিৰধর আৰ	क्ष भागाम।	ছায়া পড়ি হুটি কালো,	
অতি হুরাচার,	ধর্ম নাহি আর,	পড়িয়াছে একা	
হাতে দিয়ে ভার	खार्थ वायरण ।		এক কোলে অক্স জন
	शिरत्र मत्नीलीरम,	ক্তক্ষণ স্থ	
বসি পতিপাশে চঁ	रिम दमथाव।	दम्बन्धा है। एसन स्थन । दम्बन्धा है। इस्ति ।	
কোথা দিবা-নিশি.	একাসনে বসি,	८भप्राया गाम ६५न,	हे ज्वादय होत्र ॥
, লয়ে স্তশ্শী, টে	গতে থেকাব।।	८१मण ८१म ८मरथ हरक वरह वावि,	্ভাবে চার। অনুহতকরণ ক্রেক সারী
কোৰা অন্ন দিয়ে,			প্রনিষ্টের রয়।
পতি-কোলে থ্রে	হৃদি কুড়াব।	চিনিতে না পারি তারে,	
করি অভিবাদ,	ভাহে সাথে বাদ,	াচানতে না পারে ভারে, মন বুঝি সেই	
হান্ন সেই সাধ বি	কদে প্ৰাব॥ <u>,</u>		
ওরে প্রকাপতি,	তোরে করি নতি,	"স্থি, নাহি ভয়,	ज्यान । ज्या
আবার এ হর্গতি স	भोरत्र सिन् स्न ।		জনো আমারে। জিলী স্কীগ
डिमामिनी क'टब,	নে রৈ জ্ঞান হ'রে	পিতা রাজ্যেশ্র,	। महा-वशाय
আব এত ক'রে	জালাইস নে॥"		ল ভঞি ইহারে ।
এত বলি চিতহারা,	খাসা চাবখানি পারা,		মোরে ধরি গ
হ'য়ে হেমলতা	ভূমে পড়ে।		মারে ছলিল। করি জাতির
टह्नकांटन दशोनांश्रिनी,	শ্বরূপা কোন কামিনী,	ধৰ্ম কবি নষ্ট,	
কোড়ে করে অ	দি উভরড়ে॥	শেষে দাসীভা	বে খরে রাখেল।। রা জ্য করি ছ
	निषमात्य मत्रमम्,	শুনি আরবার,	
করি মণি স্ব	তনে শয়।		ভাপুনঃ হরিল।
ষেড়ে ফেলি ধ্লিগুলি,	বাদে বাধি রাথে তুলি,	मत्न राषा त्भवा,	তাই এম গে
খান্ন বান্ন পুন	: নির্থয় 🛚		গ্যুপ্ন:ভাকিল #
	মৃছায়ে নগদ-বারি,		विम्बिन र
खंनिस्यत पूर	পোনে চায়।	পূৰ্বাকথা য	তে মনে পড়িল।
नाहि नए नाहि हर्फ़,	ৰেতে ৰা পলক পড়ে,	ভাহে চমৎকার,	खत वावश
একভাবে ব'নে	বিহে ঠাৰ 🛭	দেখি কুতৃহল	আরো বাড়িল ৷
मिह नाती कान् बन,	কেন তথা কি কারণ,	তুমি যতকণ,	(भर ६%
কি ৰুম্ভ সে এ	ত শোক্ষর।		फ़ कति कांमित्न।
ভাবে বৃদ্ধি সেই ধনী,	হবে চুরি-করা মণি,	कंड निया निर्देश,	কত বুঝা
ঁ ইবে কিছু না	क्कि मश्मेत्र ॥		ক্ষ বলি বাচিলে॥
मा इ'रम इःरथत इथी,	এ ड रम मनिमम्थी,	আৰি ততকণ,	হয়ে ভাগ
হবে কি কারণ	ভার তরে।		क नव (मरथिष्टि ।
	the second second		41.0

বে ধোগ পেরে. আসিরাছি থেরে. অন্তরালে থাকি সব শুনেছি ॥ গ্যে কোলে করি. এই আছি ধরি. আজি হ'তে স্থি, তব হয়েছি। †মি ভাগাবতী, কারে বলে সভী. অহাবধি তাহা ভাল জেনেছি।" বিজ্ঞন অরণো ধেন স্বজ্ঞন মিলিল। বালুকাবিকীর্ণ ভ্রে সরসী জটিল ॥ তাদশ প্রসন্নমতি তেরাগি ভতল। উঠে देवटम टब्बलका टनटक ट्रिय वन ॥ জুডিয়া যুগলপাণি স্কল-নয়নে। হেমলতা কয় কথা কাতর-বচনে। "দরাময়ি, তব কাছে এই ডিকা চাই। কি উপায়ে বল তার কাছে রক্ষা পাই॥" ভানি দিল্লী-মহীপাল তন্য়া কহিল। অশ্রনীবে তনয়ন ভাগিতে লাগিল। বলে "স্থি. কল্মান গিয়াছে স্কল। ভৰিয়া ববন-রাজে থেয়েছি গবল ॥ আজি দেই তাপ. স্থি. শীতল করিব। দিয়াছি আমাব পর্ম তোমার রাখিব॥ মম বাক্যে অনাদ্ব বুঝি বা না হবে। চুরি-করাধন বলি বুঝি বাক্য ববে 🛭 যাই দেখি একবাব মেক্চবাজ-পাশে। বুঝিৰ আমাৰ ভালবাদে কি না বাদে॥" এত বলি দিল্লীপতি ছহিতা চলিল। আসি মেছ-মহাপতি-কাছে দেখা দিল। তে আদিছে হেবি. আৰু নাস্তিল দেৱী. শশব্যন্ত পাতশাহ পথিমধ্যে ভেটিল। কি ভাগ্য আজি মোর, নিজে ধরা দিল চোর", বলি বসবতী-হাত রসভাবে ধরিল। ।। टांब मांधु (यह, মনে মনে জানে সেই. क्ति भिर्छ नात्री जावि कब स्यादि हनना। া ভূমি অপরপ্র ওহে চতুরের ভূপ, পয়েছ নবীনা নারী মোরে না কি চাহ না! । (होक वल दम्बि. উমাজ হয়েছ হে কি. হেন মতি কি কারণ ভূলিতে কি পার না ? मिवामानी तथ. তব তাহে নাহি হয়, কেন পরনারী ভরে কর এত বাসনা 📍 পিতা-মাতা-মনে পীড়া দাও প্রিয়ঞ্জনে. कन এड मडी नांत्री मतन मां दवनना ?

কেন দাও এত তাপ. কেন কর এত পাপ. নারীৰণ কত পাপ মনে কি তা জান না গ হেম্বতা নামে বারে. রাবিয়াছ কারাগারে. বিষপানে মত্রে সেই মনেতে কি ভাব না গ একে অভি নতী নারী, তাতে গর্বভরে ভারী. তবু সে রমণী তরে কিছু দয়া হয় না ? বা পেষেছ রাথ তাই. অতি লোভে কাল নাই: पि**होताक्र**भारि व'रत क्रम्बना एखव ना । আমার বচন ধর, ভাহারে মোচন কর'. অভিশয় কোন কৰা কোন কালে ভাল না #" স্থপ্ত ব্যাদ্র বেন আমিষের গন্ধ পেলে। কালসর্প-শিরে যেন পদাঘাত দিলে॥ প্তঙ্গ বেমন শোডা করি দর্শন। ভোলাকথামনে হ'লে উন্নৱ বেমন ৷ শুনিহা পাঠানৱাজ চমকি তেম্ভি। আকল-নয়নে চার কামাত্রমতি॥ বলে "কোথা আন তারে দেখিবারে চাই। পেরেছি নবীনা নারী চাডি দিব নাই।। মক ক বাঁচক আনুষাইছোক কক। পেরেছি স্থার ভাও নিবারিব ভুক ॥ জানে না সুল্তান আমি বিজয়ী জগতে। তিলার্দ্ধ রাখিতে স্থান এই ভূভারতে । আমি ভাবে কত ক'রে আপনি সাধিছ। অবশেৰে হাতে ধরা স্বীকার করিছ ঃ মম বাকো অবহেলাকরে সেই জন। দেৰিব কেমনে তারে রাথে কোন জন॥" ष्यत्मक माधिशा (भटि माञ्चमा कविन। তথাপি **আসজি-কোপ** ঘচাতে নারিল ॥ বিস্তার কাঁদিয়া করি বিস্তব সাধনা। অবশেষে একমাত্র পূরিল কামনা। বে অবধি হেমলতা প্ৰদ্ৰ না হবে। সে অবধি দাসীভাবে প্রপোহানে রবে ॥ এ দিকেতে বীরবর. . • মহা অবণ্য-ভিতর. চেতৰা পাইয়া চকু চাৰ। অতিভীম-দর্শন. বিজ্ঞন গছন বন. **চারিদিকে দে**পিবারে পান ॥ শোণিতে লেপিত বাস. নয়নের জোভি: ব্রাস. শরাঘাতে দেহ অবসাদ। ভাতিয়া পড়েছে শল: अपरय वार्णत राजा. छत् बीज छाटव ना विवास ।

नाहिक खारमद रनन. ধরিয়া শরের শেষ. টান দিয়া তলিয়া ফেলিল। কোথার বিপক্ষল. কোথা আপনার বল, কেন তথা, ভাবিতে লাগিল। (इनकारन (मर्च ८५८४. निक अर्थ जारम (धरम. সংগ্রামের সাঞ্চ পরিধান। শরীরে শোণিত ধর্ম. হেরিয়া বুঝিল মর্থা, এই মোরে কৈলা পরিত্রাণ। রণ্ডুমি পরিহরি. আমাবে পঠেতে করি, অখবর আসিয়াছে বনে। এই কথাবীরবর. স্থির করি ভার পর. ভাবিতে লাগিলা মনে মনে॥ কোন পকা হৈল জয়, কোন পকে পরাজ্য, সমাচার কিছই না পাই। বলি অধে করি ভব. हिल्लिन व्यावित. দেখেন সংগ্ৰামে কেছ নাই। তখন কাত্ৰ মন. বেন জভ স্মীরণ. চলিলেন ধাইয়া নগরে। দেখে যত গৃহ-দার. व्हेबाटक 'कात्रथाब, অগ্নিকুও জলে ধৃ ধৃ স্থরে। অসহ্য শোকের ভাব. সহিতে না পারি আব. বীরবর কহিলা কুপিয়া। "ভাল আশা করিলাম, ভাল দেখা পাইলাম, বড দাধ মিটিল আদির। করিয়া বিপক্ষ-নাশ, আসিব প্রেরসী-পাশ, পুরাব পিতার মনসাম। যুচিল দে অভিলাব, লাভে হৈল বনবাস, লাভে হ'তে ভার্যা হারালাম। **এ** कि चंिन त्याय. প্রবেশিরা এই দেশে, मन পद्री गत्तन हतिन। করীতে হেলার শুও. উপাডিয়া তরুকাও, দশনেতে লভিকা ধরিল # সে জন কি করে তোর, त्म (य नात्री अवना ननना। দে যে অতি নির্মল, (क्रांचन क्यनहरू. তারে কেন দিলি রে বেদনা। দিলী কর ক'রে তোর, এত কি বাড়িল কোর, মোর প্রিয়া করিলি হরণ। ছবে ক্সন্ত হই. সূত্য সত্য সত্য কই, থবে তোর নিকট বরণ ।

অন্তি মাংস বভাগন, (मरह ब्रुट्व छछ मि-তোর মন্দ ক্লরিব সাধন। প্রমদার বিমোচন, য্বনকুল-নিগ্ অপজাবধি এই মম পণ। किया करन किया छटन. किया वटन कि दकीनटन. এই ব্রত দক্ষর আমার। আজি কিবা পরদিন, কিংবা অন্ত কোন দিন পরিচয় পাবি বে ভাহার ॥ খদেশ করিলি জয়. তাহে আর থাকা নয় তাহে প্রিয়া বদ্ধ তোর ধরে। এই দেখ অন্তাৰ্ধি, ভূমিৰ গিয়া জ্লা **দেশত্যাগী হব তোর তরে**॥ অল্ল দিনে পাবি টেব. কোন কৰ্মে কিবা ফেব্ कांनिवि (त्र भूक्ष (क्मन। থাক নিয়ে ধরাতল, আছে রে বারিধি-জন তাহে তথ্ৰী কবিব চালন। লক তবী ভাদাইব. <u>(अफ्रुट्सभ समारे</u> বাণিজ্য কবিব ভাবথার। তোর সিংহাসনপাত, (মুক্তকুল ভস্মা প্রের্মীরে করিব উদ্ধার ॥" থেদ করি বীববব উঠিলা ভরণী। কলিকরাকেব রাজ্যে চলিলা তথনি॥ শশুরের দৈল লবে পুনং যাব রণে। कनिक উদ্দেশে চলিলেন এই মনে ॥ গঙ্গানীরে তরীখানি ভাগিয়া ভাগিয়া। গঙ্গাদাগরের জনে পড়িল আসিয়া।। মোচা-খোলাখানি বেন ভাদে দেই ভরী। তাহে চাপি বীরবর নত শির করি॥ চৰ্কণা কৰা বেন ভগ্ৰচড়া শিখা। অবংশির হয়ে বীর তেমতি রহিলা॥ কভক্ষণে লুকাইয়া হৃদয়ের ভার। প্রকাশি কাতরে শেবে কছেন কুমার॥ "এই কি কপালে ছিল ৰুগমাক ভূমি। व्यामि देश्य (मन्डा) शे वन्ती देवतन जुमि । রত্বগর্ভা ভূমি তুমি জগতের সার। **কত নদ হুদ গি**রি তব **অল**ন্ধার॥ উচ্চ হিমগিরিচুড়া হিমানী-মণ্ডিত। গর্বা করি দ্বির বায় করিছে থাওিত। चक्रान्त तथरत्राधकात्री विकाशिति । অগত্য ৰবিবে শিব নোমাইছে বীরি।

বীরবাক্ত কাব্য

গোমুখী-বাহিনী গলা বমুনাতে মেল। দিবা-রাতি কলনাদে করিতেছে কেলি॥ নব-অংশে জনা যেই রাম নাভায়ণ। তোমারে জননী-ভাবে কবিল পালন। তোমার সেবার পঞ্চপাও ছিল বত। পঞ্জিল ভোমার রাজা বিক্রম-আদিতা। অমর বাল্মীকি ঋষি সুমধুব স্বরে। রাথিয়াছে তব বশ ত্রিভবন ভ'রে॥ বেদব্যাস মহাঋ্ষি ভারত রচিয়া। প্রচারিল তব নাম অবগৎ জডিয়া॥ সরস্থা-বরপত কবি কালিদাস। ত্ব য়শ ব্যবংশে কবিল প্রকাশ ॥ ভৰভতি তৰ নাম অনাগ্য অক্ষরে। পাঁথিয়া গ্রন্থা গেছে মানব-অন্তরে। এবে দেই দেশমান্ত ভারত বক্ষেতে। ম্রেক্সকল পদেদলে নির্থি চক্ষেতে। ঘচিল মনের সাধ জান্ম মতন। ভাঙ্গিল নিজার বোর ভাঙ্গিল স্থপন 🛊 ষবনে করিয়া ছিল্ল ভোমার মোচন। কত দিন মনে মনে করিতাম পণ॥ পুনশ্চ হিলার রাজা, ভাপন করিব। পুনর্কার অল্ভাবে তোমারে তবিব # পুৰ: নিৰ্মাইব পুৱী যত হৈল গত। গ**হ্ণা-ধ্যনার তীরে ছিল বত** যত ॥ विकाद-पृष्णु छि भूनः इदिद्व वाकाव। ভারত জাগিল বলি ভূতলে জানাব॥ হার আশা ফুরাইল জনম মতন। অদটে আছিল শেষে জলধি-ভ্ৰমণ॥ মনোহৰ নবদুৰ্কা-কোমল আসনে। বসি আহার না দেখিব শোভিত গগনে।। তরলতরকা কলনাদিনীর তীরে। আরুনাজভাব চক্ষুত্রমিব নাফিরে॥ নবীন পল্লৱ ছায়া-ডলেডে বসিয়া। আবে নাভনিব গান হরিবে ভাবিয়া। বিদায় জনমভমি জনম মতৰ। বিদায় ভারতবাসী ক্লাতীয়গণ ৷ বিলার জননী তাত পুরবাদী জন। विशास समय त्यांध প্रार्थत राजन ॥ জীবিত আছ কি প্রিরে ভাব কি আমারে। क्लान् कार्य कार्य कार्य द्वारथ कार्यात ।

धिक क्रमकरण धिक धिक सम नाम। পতি হয়ে নারী-রক্ষা কার্যা নারিলাম ॥ একে শক্র ভাবে মেস্ক ভাবে প্রাণপ্রিয়া। কেমনে ধৰিব কাষা জানিয়া ক্ৰিয়া ৷ তে বৰুণ কেন মোবে পাতালে নালহ। জীৰিত ৱাথিয়া কেন দহন কবছ ॥° কোথায় লকালে বজ্র অহে সুরপতি। নবাধম-শিবে হানি বিনাশ ছগডি॥ দেব জ রে মাংসপিও, চর্চ রে হাড। অথবাস্কাস দেহ হয়ে যা পাছাড ॥" বলিতে বলিতে বীর চলিয়া পডিল। যেন বজাবাতে দীৰ্ঘ তফ বিদাবিল। একাকী জলধি-জলে তরীতে শুইরা। জরক্ত-বেলেক জবী চলিল ভাসিয়া। সমক্তরজনী জলে ভাসিরা ভাসিরা। অংকণ-উদরে জলে লাগিল আসিয়া। কলে উঠি বীরবর পান সমাচার। সেই ত কলিসনেশ কলিক বাজার ॥ সমাচার পেয়ে তবে চলিলেন বীর। বেন রাভগ গভার ক্রোধেতে অধীর ৷৷ গিষা খালতের পদে করি নমস্কার। নিবেদিলা পুর্কাপর যত সমাচার ॥ ভনি কোধে কম্পনান কলিক-ভপাল। জলিয়া উঠিল যেন কালান্তের কাল। তেখনি অমাত্যগণে একত্ত কবিয়া। সমবে সাঞ্চ বলি কচেন ক্ৰিয়া ॥ সংগ্ৰামে সাজিল সেনা দেখিতে বিকট। जाकिन वांदन वांकी मःशोध-भक्ते॥ ছেরিয়া প্রফল্লমনে ভপতি-নন্দন। श्रंभटतत अपग्रदश कतियां वस्त्र ॥ করেন, "আমারে পান দেহ মহামতি। বিনাশিব রিপুনল ঘুচাব অখ্যাতি॥ मटेमरक रचनित पिल्लीबारक पिल्लीभूरत । यम बटन विश्वर्द्ध भनाहेत्व पृत्त ॥ निक्रवर्ण महात्राक थाकून चाल्र । • ক্রুন আশিদ রিপু যাবে খ্যালয়ে ॥" এজ বলি বীরবাত বন্দিয়ারাজায়। बिविट्य आमिश शद्य योज मिला जोत्र । রাজপুত্রে নেহারিয়া আনন্দিত মনে। মহাকোলাহলে ত্রারিল সৈস্থাণে। 106363

वीत्रवां द्राप शन, ছপতি দিলেন পান. কলিক-রাজার দৈক চতুরকে চলিল। একত্ৰেতে ষত বীর. গিয়া সাগরের তীব, সহস্র তর্ণী-পর্চে সকলেতে উঠিল। বেন জলে ভাগি যায়. ক্তবা শোড়া দিল তায়, স্থশোভিত একখানি দাক্ষয় নগরী। সুচঞ্চল চুনয়ন. মহাবাকৈলিত মন. উঠিলেন বীরবব শ্রেষ্ঠ-তরী উপরি॥ **हिंगल डेखत्रमृत्थ.** शक्तां शांत्र विदय. উৎকল প্রভৃতি দেশ বামভাগে রহিল। নিক্ৎপাতে হয় গত. এইরূপে দিন কত. এক দিন অকন্মাৎ বিদ্নপাত হইল। কালিমা অলদ-ত্রেথা. बांग्टकारन मिल दम्थां. ঢাকিল রবির কর নভোদেশ ব্যাপিল। ষেন প্রলম্বের কাল. शिक्ति क्रमकान. সহস্ৰ কেশরি-নাদে জলদ নাদিল। ছল হল কুলকুল. গতিল ভরক্কল, ডাক ছাড়ি লক্ষ্য দিয়া শৃক্তমার্গে উঠিল। ন্তৰ বসমতী কাঁপে. প্রলয়-পরন হাঁকে. ভক্ষতা গুলাল'য়ে দিগন্তর ছুটিল।। বাভাদের হনহনি, ৰজ্বে চিচিচড ধ্বনি. সমুদ্র মেথের নাদে ত্রিভূবন চমকে। · উন্ধাপাত শিলাব্য⁸. "বিনাশ করিতে সৃষ্টি. ष्वितिष्क्रित मृष्टलय शांचा वटर्ग समारक ॥ শৃক্ত জল একাকাব. দশদিক সন্ধকাব. হই হই রব মাত্র শুনা যায় প্রবণে। जारह मारक बाब (नथा, চমকে চিকুর-বেখা, জলধিতরক্ষ-রক্ষ চমকিত নয়নে। 'উथल हिल्लान डेफ. ধর্মত করিয়া তচ্ছ. হুলসুল চাবি কুল ব্ৰদ্ধিষ ফ্টিছে। কবি ভীম গরজন, য়েজ সহস্জন. আকাশমণ্ডল বেন হাতে হাতে সুফিছে। প্রসারি সহস্র ফণ. অথবা অনস্ত যেন. ভারা ক্র্য্য গ্রহগণে ধরি ধবি গিলিছে। অমৃত লভিতে মত্ত. किरवा देवन दमव देनछा. পুনর্বার বরুণের রাজ্য ছার করিছে। পৃথিবী সহে না ভব, দ্ব-কীর্তি ভয়কব, कि कतिदव जांत माद्य मास्ट्रियत नामर्था। সব গেল রসাতল. छ छत्री मन वन. देवतु तुन तामी हरत भारक द्वात अनर्व।

তরীকাঠে করি ভর. ভাগ্যবলে বীরবর. কিপ্ত বক্রেব করে প্রবিত্তাণ পাইন। পর্চে ধতুর্বাণ-রাশি, কোমরে বন্ধন অসি. चक्न वातिथ-करन जानि जानि हिनन ॥ তিলেক নাহিক স্থল. অকল অংগাধ জাল. তাহে পুন: বছবিধ জলচর খেলিছে। কি করি কোথায় যায়, দেখি ভাবি নিক্রপায়. বীরবাছ মনে মনে অই কথা তৃলিছে। (वना धृध् धृष् करत्र, ट्न काटन प्रत्थे मृद्य, হেরিয়া কুন্তিত মনে, সেই মুখে চলিল। ক্ৰমণ: নিকটে আসি. তরকে তরকে ভাসি. চক্ষু খেলে মনোহর দ্বীপ এক হেরিল। डेलवन गत्नात्रम. नक्त-क्रांनन ग्रम. তাহে শোভা করে হেবি তীবে গিয়া উঠিল। হারায়ে অমরাবতী. বেন অমরের পতি. ঘুণা লক্ষা ভয়ে অধোমূপে চলিল। যাহে মুনি মনোলোভা, লতা-পুষ্প--ফল-শোভা, না পাবে সে বনশোভা শোকানল নাশিতে। जुनात्म (म (भाक गांव, भिश्व वित (भाक शांव, জ্ঞানিচিত্তশোকানল নাহি ঘুচে বাঁচিতে॥ मा (बारल कननो-तकारल. যেই জন শিশুকালে. ছুটাছুটি করে আসি শুকু পান করেছে। নারীসনে অমুরাগে, দেই জন নিশিভাগে. नित्रमण পृर्वमानी भन्धरत ८ इटवर छ। প্ৰাণবামু ওষ্ঠাগত, পীড়াতুর শ্যাগত, **८**इटत दयवा श्रियक्त श्रियांचांचा स्टन्टह । প্রবাদেতে কি অসুথ, গুহবাদে কিবা সুখ, বনবাদে কি যাতনা দেই কন বুঝেছে। বহে বীর অমিবাব সেই বছণার ভার, তাহে অতি ব্যাকুলিত হারা পত্নী ভাবিয়ে। সেই জন বুঝে সার बौर्गा-विन् बाह्य योत्र, আছে বা না আছে শোক ঐ পোক লিনিয়ে। क्टकुरल अधिशीन তাহে মহাবীধ্যবান, তাহে বাজবংশধর বন্ধোগর্কে গব্বিত। প্ৰণয়িনী অপহত তাহে রণে পরাঞ্চিত. এমন সম্ভাপ কিলে হবে বল স্থিত 🛭 বুঝি বা সে শোকভবে शैनवीया इ'रन भरत, উন্মাদ পাইত কিংবা আগ্রহত্যা সাধিত। তাই আছিলেক খ্রি মহা-তেলোধারী বীর, শাল তক্ত রহে যেন হরে বল্প-দণ্ডিত।

গজার প্রেক্তি যার বাহে স্বল্প শোক ভার, किन करम निवर्वध हिन्छा-क्वी मः निर्ह । মেখের স্জন যেন. नर्र हरक प्रवर्गन. কিন্ত বাষ্পা নিরবধি শুক্ত ভেদি উঠিছে। বাহিরেতে নাহি আর. বীরবাছ-শোকভার. অন্ত:শিলাভাবে শেষে উথলিতে লাগিল। নয়নের জ্যোতিহার৷. शतिएव डिलामी शांता. জলশন্ত কাননেতে গীরে ধীরে চলিল **॥** যে পথ দেখিতে পায়. त्महे भए। ह'ता यांब, স্থপথ কুপথ কিছু নাহি কবে গণনা। শীত্র তক্র তলে. শীতল তডাগ-জলে, কভু বসে কভু ভাবে সমভাবে রয় না॥ নাহি সংখ্যা কতবার. অমিল নুপক্ষার. দীপখণ্ড-চতুর্ভাগ সমুদার ঘেরিয়া। দে কি ভাঁর বাসস্থান, যার দর্পে কম্পনান, ছিল মহা মহা বীব ভ-ভারত ব্যাপিয়া॥ এই ভাবে পর্যাটন. ইতন্ততঃ কডকণ. করি বীর তক্তলে অধোমুথে বসিল। रश्नकारण मिवाकत्र. লুকামে প্রথর কর. দরেতে সাগরগর্ভে ধীরে ধীরে পশিল॥ ক'দিনের ক**টভোগে আচ্ছন্ন প**রীর। ভাবিতে ভাবিতে ঢ'লে পডিলেন বীর॥ হেনকালে অকন্মাৎ সঙ্গীতের ধ্বনি। ভনা গেল বামান্তবে মধুর গাঁথনি 🛭 একবারে চারিদিক পুরিয়া উঠিল। নিদ্রা ভালি রাজপুত্র-শ্রবণ মোহিল। আড়ষ্ট হইয়া রায় কায়মন-চিতে। মোহিনী-স্কীত-স্থর লাগিল শুনিতে॥ मिव उपामित्री किश्ता अश्वता किन्नती। কে গাহিল এ মধুর সংগীত-লহরী দ কিছুই বৃঝিতে নারি ব্যাকুল অন্তর। কি **শুনিল রাজপুত্র** ভাবিয়া কাতর ॥ অনতিবিলম্বে হেরে নারী চর জনা। ধ্বল বসন-প্রা কনকবরণা।। করে বীণা স্থমগুর-হলে মতিমালা। তার পাশে হুই বেণী করিছে উঞ্জা। গণ্ড গ্রীবা নেত্রশোভা ঐতি দন্তপাতি। ওষ্ঠাধর পয়োধর নাসানন-ভাতি॥ মনোলোভা শোভা কিবা বাহু কটিদেশ। মুছগতি পুরদনী তরুপ-বরেস॥

আরক্ত অরণ পদ খাম ধ্রাত্তো ! (यन ভारে कोकनम नीलश्म-स्रात्त ॥ চপল-নয়নে চেয়ে দেখেন রাজন। মানবী-বেশেতে এরা এল কোন জন 🛭 ও দিকে মানবরূপ হেরিয়া সে বনে। বমণী কজনে দেখে চকিত-নয়নে ॥ • এ চাহে উহার মুখ না সবে ভাবতী , দাড়াইয়া বহে যেন পাষাণ-মুব্তি॥ নূপতি-তনন্ন তবে বিনম্ব-বচনে। কহিলেন মুছভাৰে প্ৰিয় আলাপনে॥ "কেৰা বট দেখা দিলে এমন সময়। কিবা জাতি কিবা নাম কোথা বা স্বালয় **।** মানৰ-সন্তান আমি বিধাতা বিমুখ। ধিপাকে পডিয়া তাই পাই বহু তথ। गांशांविनौ-दवत्भ दक्वा फिटल प्रम्म । ঘুচাও মনের ধাঁধা কহিয়া বচন ॥* বলিতে বলিতে কথা শশী দেখা দিল। বীণা বাজাইয়া কামা সবে লকাইল ॥ অপুর্ব রম্বী-কার্যা দেখিয়া ভ্রনিরা। যামিনী পোহান ভপ ভাবিয়া ভাবিয়া॥ ঘ্চিল নিশির ঘোর অরুণ উঠিল। তীরে আসি পূর্কমূথে চাহিয়ারহিল।

मिथिएक छेगात (थन! নূপশ্বত ভোরবেলা, লমিতে লাগিল বনে বনে। পশুপকী আদি মিলি. সকলেতে করে কেলি দেখি হর্ষিত হন মনে ॥ পরিমলভরে ভাবী. সে ভাব সহিতে নারি, পুষ্পপদ পতা পবে হেলি। অধবে ঈষৎ হাস. থুলিতে বুকের বাস, সমীরণ সহ করে কেলি। छनि উथिलिट्ड श्रान, পাখীতে ধরিছে তান. প্রন মাতিয়া ফিরে ঘুরে। হেনকালে রাজস্বত, . • মহা কুতৃহলযুত, नाबीभर्ग समिर्यान मृत्य ॥ গীরেতে নিকটে গিমে. তরুপাশে দাডাইয়ে, কৌতুকে দেখেন মহামতি। শেফালি বকুলকুল, আদি নানাজাতি ফুলু, শোভে উভে কদম্ব-দংছতি॥ তৃণ-শৈবালের দল. ঢাকিরাছে ধরাতস, লতিকা-বেষ্টিত চারিপাল।

দর্গার ফুলের মালা, বাছতে ফলের বালা, হদিপরে ফুলময় বাস। াকলি ফুলের সৃষ্টি, সদা হয় ফুল-বৃষ্টি, চারিদিকে ফুলে ঢাকা বন। ক্ষমতক্র মূলে. সাকাদ্ধ ক্ষল-ফুলে. कुनद्विभिद्य दिन वस ॥ अञ्जलि व्यञ्जलि कति. कृत्व ब्रांट्थ निर्द्धांशिव, কভ হলে কররে স্থাপন। স্নেহেতে আদর করে. नंबरन एक पान वारव. কত ভাবে করিছে বতন **।** বসি রহে মনোগ্রথ. इत्र करन मूर्ध मूर्थ, সদাহয় পুষ্প-বরিষণ। মিলানে বীণার তান. থেদ-হরে করে গান, ভ্ৰিরা বিভেদ হয় মন॥ भावी-कीषि मत्नावत. नित्रविद्या वीत्रवत्र, निकारे (शालन युवदाका দাড়ায়ে বিনীত ভাবে, कब्रभुटि प्रती-भाष्य. মুজ্ববে চান পরিচয়॥ নির্থিয়া চমকিয়া, গানেতে বিশ্রাম দিয়া. ্ নারীগণ উঠে যেতে চার। জনেক মিনতি করি. বুঝারে অনেক করি, নারীগণে বসাইলা রায়। **जञ्चत्राय-८७१ व वै**श्या. विमना नातिन शौधा. রমণীমগুলী পড়ে গোলে। "अन जरव मिन्ना मन," ক্ষিত্র পরে কোন জন, ব'লে আরম্ভিল মধুবোলে। "বৰুণতনয়া পাতালে ধাম। ভগিনীক'জনাভনহ নাম॥ মুকুতা-বিলাসী রতন-কান্তি। তরন-বাহিনী নয়ন-ভ্রান্তি॥ প্রবালমালিনী ক'লনা এই। নলিনীনয়না ভণিছে সেই॥ সাগরে সাগরে লমণ করি। মাণিক মুকুতা দেখিলে ধরি॥ এই উপবলে আসিয়া বসি। শ্ৰম নাশি পুনঃ সাগরে পশি 🛭 আগে ছিমু সবে শত সোদরা। গিয়াছে সকলি আছি আমরা। শাপেতে পড়িয়া গিয়াছে ভারা। আঁথিতারা মোরা হরেছি হারা।

হ'লো বছদিন প্রভাতকালে। সকলে পশিত্ব জলধি-জলে॥ সারাদিন কলে ধরিত্ব মণি। ভান্ন অন্ত ধান আন্সেরজনী॥ দেখিয়া তপন-মরতি শোভা। আমরাক্জনে হইছ লোভা॥ ধরিব বলিয়া বাইফু পাছে। ষত দুৱে বাই না পাই কাছে॥ ক্রমশঃ নামিছে দেখিতে পাই। না পারি ধরিতে কতই বাই॥ প'ডে অই ফেরে পোহায় রাতি। পাতালপুরেতে না জলে বাতি॥ আমাদের কাছে আছিল মণি। चाँधादा मकरन यारण ज्ञानी॥ পরদিন প্রাতে সরোধ মন। পিতৃশাপে যবে হ'ল নিধন । ক্রোধেতে কহেন, 'আমারে হেণা। আবার না সলিলে করিবি থেলা & ৰে ৰবিৰ তবে ভুলিলি বাপে। নিয়ত দহিবি ভাহার তাপে॥ भूष्मात्मरम द्रवि धद्रनीभद्र । নিয়ত পুড়িবি প্রথর করে॥' কত বে সাধিত ধরিয়া পায়। করুণা-উদয় না হ'লো ভার॥ কুমারী আছিত আমরাক'জন। তাই সে জীবনে আছি এখন। जाहे जेवाकारन चानि वशान। ফুল কেলি সবে করি বতনে॥ ৰিতীয় প্ৰহর সময়ে তাই। তৃদ্দুলে আসি জলে ভিজাই॥ **जाहे (म প্রদোধে তুলিয়া বনে।** क्रम थुरत्र कुन कांनि क'न्यन ॥ প্ৰহর ৰাড়িছে জাসি এখন।" বলি সুকাইণ নারী কলন॥ ৰ্যাকুলিভ ন নুপতি-নন্দন, চলিল সমুক্তটে। অভি কুলক্ষণ,

অবপূৰ্বে ঘটনা ঘটে॥

নারী হয় খন,

कवित्रा (वहें

হুলি বছন নানি। হুলি বছন নানে। সভেলে দাড়াবে, তুলি হুলি নানে। সলেহে জ্লিছে বাবে। সলেহে জ্লিছে বাবে। সলেহে জ্লিছে বাবে। চপলা বেষনা, তুলিছে জ্লিছে বাবে। চপলা বেষনা, তুলিছে জ্লিছে বাবে। বহুলিছে জ্লিছে বাবে। চপলা বেষনা, তুলিছে জ্লিছে বাবে। বহুলিছে জ্লিছে বাবে। বহুলিছে জ্লিছে বাবে। বহুলিছে জ্লিছে বাবে। বহুলিছে জ্লিছে বাবে। নানিজা-পানন ভালিছে বেষনন লাভা। বহুলি ব্যাবিল বাবে। নানিজা-পান লাভানে ভালিছে বেষনন লাভা বহুলিল কালা বহুলিল কালা বহুলিল কালা বাভানি আঁথি, সলভেল নিজেলে ভীব। বহুলিল কালা বাভানি আঁথি, সলভেল নিজেলে ভীব। বহুলিল কালা বহুল	ভিহৰা লক্ লক্,	শিরে ধাক্ধাক্,	•	স্থাগিল চেতন,
স্থান্ত কৰি নাগে। সংজ্যেক ৰাজাৰে, কৰা প্ৰসাৱিৰে, ্ছলিছে স্থান্ত বাবে। চপনা বেষন, থেলিছে তেষন, নুখনী কৰ লনে কয়। বহনৰ বাবু, শোৰিতেছে আবু, পতিতা কণাৱ তলে। নারী কয় জনা, ভানিছে জলাধ-জলে। ব্যান্ত কলাধ-জলে। ব্যান্ত কলাক কলা ব্যান কলাক কলা ব্যান্ত কলাক				
সতেকে লীড়াবে, হণ্ পাঞ্চাবিরে, হণ্ পাঞ্চাবিরে, হণ্ তিনিছ স্থানির রাধানির হণ তিনিছ বিনাম । ১০০লা বেমন, থেলিছে তেমন, স্থানিকা-পবন, তাকিছে বেমন লাভা। বহে মন বন, নাসিকা-পবন, ভাকিছে বেমন লাভা। বহমর বায়ু, লোবিতেছে আরু, পতিতা মণার তলে। নারী কয় জনা, মুশিত-নরনা, ভাসিছে জলধি-জলে। বেক অভীত, হণ্ডপি-হইত, একবারে টুবেতো প্রাণ। পতি-নলন, ল'বে শরাসন, ভণণেতে আঁটিল বাণ। বা ভানি আঁথি, নিরখি নিরখি, সতেজে নিক্ষেপে ভীর। রা ভানি আঁথি, নিরখি নিরখি, সতেজে নিক্ষেপে ভীর। রাভানি আঁথি, নিরখি নিরখি, কাথেন করে করি, ভানিয়া ছলিল ভীরে। হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, ভানিয়া ছলিল ভীরে। হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, ভানিয়া ছলিল ভীরে। বে অসিথান, ল'বে বান খান, করিয়া করি করে করি। বি বির বীবি, রাথে লারি লারি, ক'থানি রক্ত-দেহ। ব কেই কায়া, প্রাণে বরে মায়া, না কামি না রহে কেহ। ব হল ছল, তুলে আনি লল, তুল আনি লল, চালে পিরে ভীরবার। ব হলাহল, প্রাথ্বন করেছে। ব হলাহল, প্রাথ্বন করেছে। কি করে বে রাআিথিবা, প্রাণিন বনহ । বি করে বে রাআিথিবা, প্রাণিন ভাবে, কার লাছেছ ররেছেছ। কি করে বে রাআিথিবা, প্রাণে বঁচি ভাছে করা, প্রাণিক বিহর বিলে, বিনা আঁবি না হেছে করেছে। কিবা করেন, স্বাণিকা, কলা আর্বাক, বিনা আর্বাক লাছেছ ররেছেছ। বিক্রামান, কলিলা বিলে, কর্মনুল, বিলা ভাবে, কার লাছেছ ররেছেছ। কলাহল, করি বিলা নাল বিলে, কলাবানি নাল, বিলে কর্মনুল, কাল্লিকে করে বা বার্থিবা, প্রাণিক বিলা, বিলা ভাবে, কার বাছেছ ররেছেছ। কলাহল, করে বে রাআিথিবা, প্রাণিক বিলা, বিলা ভাবে, কার বাছেছ ররেছেছ। কলাহল, করে বে রাআিথিবা, প্রাণিক বিলা, বিলা ভাবে, কার বাছেছ ররেছেছ। কলাহল, করে বে রাআিথিবা, প্রাণিক বিলে কলাবল নাল, করে করে, কলি বিবা নলন, বিলা করে, কলি বিবা নলন, বিলা করে, কলি বিবা নলন, বিলা, বিলা ভাবে কার নাল, বিলা ভাবে করে, কলি বিবা বেম নাল, বিলা ভাবে করে, কলি বিবা নলন, বিকা ভাবের নাল, বিলা করেন, বিলা করেন, বিলা করেন, বলি করেন, বলি করেন, বলি করেন, বলি করেন, বলি করেন, বল করেবর, বল করেবর, বলি করেবন, বল করেবর, বল করেবর, বল করেবর, বল করেবর, বল করেবর, বল করেবর, বল		পুष्ट প্রদারিয়া,		
্তলিছে ফ্লিছে রালে । ১০পলা বেমন, থেলিছে তেমন, স্তলিছ বেলে । বংহ বন বন, নাসিকা-পবন, ভাকিছে হেমন লাভাল । বিষমর বাহু, পেলিছে আঁবু, পতিতা ফলার তলে। নারী কয় জনা, মৃদ্জি-নয়না, ভাসিছে জলমি-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-ললে। বাভানি জাঁথি, নিরধি নিরধি, স্তেলে লিকেপে তীর। রাভানি জাঁথি, নিরধি নিরধি, স্তলেজ নিকেপে তীর। রিল্লেছ কণ্ডল তীরে। বিরুদ্ধি বা নাম লাক্র স্থান কলি লাক্র লা	इरे मिटक इरे नी			क्ष्र व्यान क्ष
্তলিছে ফ্লিছে রালে । ১০পলা বেমন, থেলিছে তেমন, স্তলিছ বেলে । বংহ বন বন, নাসিকা-পবন, ভাকিছে হেমন লাভাল । বিষমর বাহু, পেলিছে আঁবু, পতিতা ফলার তলে। নারী কয় জনা, মৃদ্জি-নয়না, ভাসিছে জলমি-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-জলে। বেল অতীত, বছলিং-ললে। বাভানি জাঁথি, নিরধি নিরধি, স্তেলে লিকেপে তীর। রাভানি জাঁথি, নিরধি নিরধি, স্তলেজ নিকেপে তীর। রিল্লেছ কণ্ডল তীরে। বিরুদ্ধি বা নাম লাক্র স্থান কলি লাক্র লা		ফণা প্রসারিয়ে,	"তুমি মহাশয়,	অ তি দরামর,
ব্বহাৰ বন, নাসিকা-পবন, ভাকিছে বেমন জাঁডা । বিনম্ন বায়, পোৰিতেছে আয়, পতিতা লগাব তলে। নাৰী কয় জনা, মুকিত-নবনা, ভাসিছে অলধি-জলো। লক অতীত, বহুলি প্ৰাণ । বহুলি নামান, ভালি বাবাহ লাভ কৰা কৰে কৰি বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবহ বাবাহ কৰি বাবাহ বাবহ বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবহ বাবহ বাবহ বাবহ বাবহ বাবাহ বাবাহ বাবহ বা	়ছলিছে ফুলিছে র	হৈপ ■	মহুব	ুব্ঝিবানয় ॥
ব্বহাৰ বন, নাসিকা-পবন, ভাকিছে বেমন জাঁডা । বিনম্ন বায়, পোৰিতেছে আয়, পতিতা লগাব তলে। নাৰী কয় জনা, মুকিত-নবনা, ভাসিছে অলধি-জলো। লক অতীত, বহুলি প্ৰাণ । বহুলি নামান, ভালি বাবাহ লাভ কৰা কৰে কৰি বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবহ বাবাহ কৰি বাবাহ বাবহ বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবাহ বাবহ বাবহ বাবহ বাবহ বাবহ বাবাহ বাবাহ বাবহ বা	চপ লা বেমন ,	পেলিছে তেমন,	না হ'লে কেমনে,	मं शिरण की बरन,
ভাকিছে বেষন লাঁভা । বিষম বাযু, শোৰিতেছে আযু, পতিতা কণার তলে। নারী কয় জনা, মূদিত-নয়না, ভাসিছে জলধি-জলে॥ কেক অতীত, বুজনি হলৈ প্রাণ । পতি-নক্ষন, ল'বে শরাসন, ভলোতে আঁটিল বাল । বা জানি আঁথি, নিরখি নিরখি, সভেজ নিক্ষেণে তীর। সাজরে তথন, অনার বীর ॥ সাজরে তথন, আনে করে করি, ভানিরা ছুলিল তীরে ॥ বে অসিখান, ল'রে থান খান. করিরা ক্তন কাটে। তিকন তত্ত্ব, নুপ-অক্সত, বুলে নিলা পাটে পাটে ॥ । থীরি খীবি, রাব্ধে নারি নার ক্ত-দেহ। থ সেই কাষা, প্রাণে ধরে মায়া, না কাদি না রহে কেছে ॥ বিহল ছল, তুলে আনি ফল, চালে দিরে বীরবর। লে সিঞ্চিত, পুপা সুবাসিত, রাখিল চেতনাকর ॥ ব হলাহল, বেরে কঠবল, বেরে কঠবল, ত্বাংল নাল ভাব, বেরে কারি আছে কিবা, বা বিলা চেতনাকর ॥ ব হলাহল, বেরে কঠবল, ব্যাক-চিতানলে প্রভ তত্ত্ত্যার করেছে ॥ ব হলাহল, বেরে কঠবল, ব্যাক-চিতানলে প্রভ তত্ত্ত্ত্যার করেছে ॥ ব হলাহল, বেরে কঠবল, বেরে কঠবল, বাণক-চিতানলে প্রভ তত্ত্ত্যার করেছে ॥ ব হলাহল, বেরে কঠবল, বাণক-চিতানলে প্রভ তত্ত্ত্যার করেছে ॥ ব হলাহল, ব্যাক নাকে ব্যাক ব্যা	স্থতীক্ষ রসনা পা	তা।		
বিষমর বায়, শোহিতেছে আরু, পতিতা কণার তলে। নারী কয় জনা, মুর্বিড-নয়না, ভাগিছে জলধি-জলে॥ কেল অতীত, যুজপি হইও, একবারে 'ুবেতো প্রাণ। গতি-নলন, ল'বে শরাসন, ওল্লেত আঁচিল বাণ। বা ভানি আঁথি, নির্বিধি নির্বিধ, সাজিনে ভিতরে, ফণা ভেল করে, অহির্গে মারে বীর ॥ গিলিরা পডে নীরে। হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, ভানিয়া ছুলিল তীরে॥ বে অসিখান, ল'বে খান খান. করিরা কুজন কাটে। বিষরি বীরি, রাব্দে সারি সারি, ক'থানি রজভ-দেহ। থ সেই কায়া, প্রাণে বরে মায়া, না কাদি না রহে কেছে ॥ বিছলে, পুলা আনা জল, ভালে শিরে বীরবর। লি সিঞ্চিত, পুলা আনা জন, তালে শিরে বীরবর। লি সিঞ্চিত, পুলা আনাকর, রাখিল চেডনাকর ॥ ব হলাহল, বেরে কঠছল, বিশাক-চিভানলে পুডে ভছ্ডাার করেছে। বালিক-চিভানলে পুডে ভছ্ডাার করেছে। বালিক-চিভানলে পুডে ভছ্ডাার করেছে। বালিক-চিভানলে পুডে ভছ্ডাার করেছে। বালিক-চিভানলে পুডে ভছ্ডাার করেছে।	ब्राह चन चन,	নাসিকা-প্ৰন,	করুণা করিলে,	थानमान मिरन,
পতিতা ফণার তলে। নারী কর জনা, মৃদিত-নহনা, ভাসিছে জলধি-জলে ॥ বেক অতীত, বছলি ইউ, একবারে - বৈবেতা প্রাণ। পতি-নন্দন, ল'রে শরাসন, ভগতের উটাটিল বাণ ঃ রা ভানি আঁথি, নিরধি নিরধি, সতেজে নিক্ষেণে তীর । করির তিবা, কণা ভেদ করে, আহিন্তেগ মারে বীর ॥ সিজিরে তবন, অনি সারসন, বাঁপ দিয়া পডে নীরে । হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীরে ॥ বে অসিথান, ল'রে খান খান. করিরা কুগুন কাটে । হেচতন তন্তু, নুপ-অবজন্ত, ব্লে নিল পাটে পাটে ॥ বিধাজিছ করি তবে চিন্তাভার নালহ । বিধাজিছ করি তবে চিন্তাভার নালহ । বিধাজিছ করি তবে বিধাবে বরে মারা, না কাদি না রহে কেহ ॥ বিধাজিত, পুলা ন্রাসিত, রাধিল চেডনাকর ॥ র হলাহল, বেরে কঠবল, বিধাজিন করিবে, বারে কঠবল, বাবের কঠবল, বিধাজিন করিবে, বাবের বিরবর । করিরা ক্তেন করার । করিরা ক্রের করিরের । করিরা ক্রের করিবে, ক্রালিব চিডনাকর ॥ র হলাহল, বেরে কঠবল, বিধাজিন করিছে ॥ করির কিবা খন জন ॥ কলিব কিবা খন জন ॥ কলিবে কিবা খন জন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা বন কন, কলিবে কবা বন কন, কলেবে করিবের কন, কলিবে কবা বন কন, কলেবে কবা বন কন, কলেবে করিবের কন, কলিবে কবা বন কন, কলেবে করিবের কন, কলেবের কন, কলেবের কন নাবে কন, কলেবের কন নাবের কন, কলেবের কন, কল	ডাকিছে ধেমন জ ঁ	তা 🛮	বিনা	স্বার্থপর হ'রে॥
পতিতা ফণার তলে। নারী কর জনা, মৃদিত-নহনা, ভাসিছে জলধি-জলে ॥ বেক অতীত, বছলি ইউ, একবারে - বৈবেতা প্রাণ। পতি-নন্দন, ল'রে শরাসন, ভগতের উটাটিল বাণ ঃ রা ভানি আঁথি, নিরধি নিরধি, সতেজে নিক্ষেণে তীর । করির তিবা, কণা ভেদ করে, আহিন্তেগ মারে বীর ॥ সিজিরে তবন, অনি সারসন, বাঁপ দিয়া পডে নীরে । হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীরে ॥ বে অসিথান, ল'রে খান খান. করিরা কুগুন কাটে । হেচতন তন্তু, নুপ-অবজন্ত, ব্লে নিল পাটে পাটে ॥ বিধাজিছ করি তবে চিন্তাভার নালহ । বিধাজিছ করি তবে চিন্তাভার নালহ । বিধাজিছ করি তবে বিধাবে বরে মারা, না কাদি না রহে কেহ ॥ বিধাজিত, পুলা ন্রাসিত, রাধিল চেডনাকর ॥ র হলাহল, বেরে কঠবল, বিধাজিন করিবে, বারে কঠবল, বাবের কঠবল, বিধাজিন করিবে, বাবের বিরবর । করিরা ক্তেন করার । করিরা ক্রের করিরের । করিরা ক্রের করিবে, ক্রালিব চিডনাকর ॥ র হলাহল, বেরে কঠবল, বিধাজিন করিছে ॥ করির কিবা খন জন ॥ কলিব কিবা খন জন ॥ কলিবে কিবা খন জন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা খন জন ॥ কলিবে কবা বন কন ॥ কলিবে কবা বন কন, কলিবে কবা বন কন, কলেবে করিবের কন, কলিবে কবা বন কন, কলেবে কবা বন কন, কলেবে করিবের কন, কলিবে কবা বন কন, কলেবে করিবের কন, কলেবের কন, কলেবের কন নাবে কন, কলেবের কন নাবের কন, কলেবের কন, কল	বিষময় বায়ু,	শোবিতেছে আয়ু,	অহে নরবর,	বল অভঃপর
নারী কয় জনা, দ্বিভ-নয়না, তিবা উপকার, করিব ডোমার, ভাসিছে জলধি-জলে ॥ বিজ্ঞানি করিব বিনা খন জন ॥ বিজ্ঞানি করিব বিনা খন জন, ভালে করিব ভোমার, কর্মান করিব বিনা খন জন, ভালে করিব ভোমার, করিব করাবান ॥ তিনি করিব বিনা খন জন ॥ বিজ্ঞানি করিব বিনা খন জন, ভালে করিব ভোমার, কর্মান করিব বিব্রুব কন, বিজ্ঞানি করিব বিনা খন জন, ভালে করিব করিব বা খন জন ॥ বিজ্ঞানি করিব বিনা খন জন, ভালে করিব বিলা খন জন, ভালে করিব করিব বা খন জন ॥ বিজ্ঞানি করিব বিনা করিব করিব বা খন জন ॥ বিজ্ঞানি করিব করিব বা ভালে করেব করি, ভালি নার করেব করিব ভালি করিব করিব বা খন লাক্য । বিলা করিব করিব বা লাক্য ভালি বা লাক্য । বিলা করিব করিব বা খন জন ॥ বিলা করিব করাবা । ভালি বির্বুব কর্ম, বিলা করিব করা বা লাল্য । ভালি বির্বুব কর্ম, বিলা করিব করা বা লাক্য । বিলা করিব করা বা লাল্য লাল্য ভালি করিব করা লাক্য । বিলা করিব করা নাল্য ভালি করিব করা লাক্য । বিলা করিব করা নাল্য ভালি করা করিব করা লাক্য । বিলা করিব করা নাল্য ভালি করা করা করা করা করা করা লাক্য । বিলা করিব করার বা লাল্য নাল্য লাল্য লাল্য নাল্য লাল্য লাল্য নাল্য লাল্য লাল্য নাল্য লাল্য নাল্য লাল্য লাল্য লাল্য নাল্য লাল্য লাল্য লাল্য নাল্য লাল্য লাল্য নাল্য লাল্য ল				
ভাসিছে জলধি-জলে ॥ বেক অতীত, বভাপি হইত, একবারে ুবৈতো প্রাণ। পতি-নন্দন, ল'লে শরাসন, ভাবেতে জাঁটিল বাণ ॥ বা ভানি জাঁথি, নিরখি নিরখি, সতেজে নিক্ষেপে তীর। কাহিন্তিতরে, কণা ভেদ করে, আহিয়ুগে মারে বীর ॥ কাহিন্ত তথন, অসি শরাসন, কাঁপি দিরা পতে নীরে। হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীরে। বে অসিথান, ল'লে খান খান. করিয়া কুগল কাটে। বিভন্ন তছ্ন, লুপ-অলজ্ম, ব্লোনিল পাটে পাটে॥ বিষী ধীবি, রাপ্ শারি সারি, ক'থানি রক্ষত-দেহ। ব পেই কারা, প্রাণে ধরে মারা, না কাদি না রহে কেই ॥ ব ক্রাক্তন, তুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর। বিল স্থিত, রাখিল চেতনাকর॥ ব হলাহল, বেরে কঠছল, বিরের কঠছল, বাদে বিরের বারের কঠছল, বাদে কিনের প্রত্য কার কাছে ররেছে॥ বিরের কঠছল, বাদে বিরের কঠছল, বাদে বিরিবা, প্রাণ্ড ব্রানিত, বাদিলে কেনিল প্রের কঠছল, বিরের কঠছল, বিরের কঠছল, বিরের কঠছল, বাদে বিরের বাহেছে॥ বিরের কঠছল, বাদে বিরের কান, বিরের কবা, বিরের কর কন, লিবের কর বন, লিবের বার কর পালের করি করে কল, বিরের কর কন, লিবের কর বির বিরাধন জন, কলতের কর রহন ছে। বিরের কর কন, শিবে কিবা ধন জন, কলতের কুল কর কার কাছে লিবের কর কন, লিবের কর কল, বিরের কর কন, লিবের কর কল, লিবের বারবর কর, লিবের কর কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কল, লিবের কর কল, লিবের কর কর কল লিবের কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কর কল, লিবের কর কর কল লিবের কর বির বির কল, লিবের কর কর কল লিবের কর বির বির কল লিবের বির বির কল লিবের কর বির বির কল লিবের কর কল লিবের বির বির কল লিবের কর বির বির	নারী কর জনা,	মুদ্দিত-নয়না,	কিবা উপকার,	
প্রকারে বিবেভা প্রাণ। পতি-নন্দন, ল'লে শরাসন, প্রথনেত জাঁটিল বাণ। রা ডানি জাঁথি, নিরখি নিরখি, সতেজে নিক্ষেণে তীর। কোই-ভিতরে, কণা ভেদ করে, আইযুগে মারে বীর॥ জিরের তথন, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীরে। বৈ অসিথান, ল'লে থান খান. করিয়া কুগুল কাটে। করিয়া কুগুল কাটে। ইংনদেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীরে। বে অসিথান, ল'লে থান খান. করিয়া কুগুল কাটে। ইংলি নিল পাটে পাটে॥ ইংলি নিল পাট পাটে॥ ইংলি নিল পাট পাটে॥ ইংলি নিল করি তবে চিন্তাভার নালছ। ক্রিলা নিল রহে কেই॥ ইংলি করে বে স্থিনীয় বল আর, ক্রিলের পথ হবে স্থিনীয বলহ॥ বি লাল বিলে কোর কারেছ। ক্রিলা বিল চিতানলে প্রেড তহুতার করেছে॥ রাধিল চেতনাকর॥ রাধিল চিতনাকর। ব্রেরে কঠহুল, ব্রের কঠহুল, ব্রের কঠহুল, ব্রের কঠহুল, ক্রিলের করি, ক্রিলের করে, ক্রিলের করি, ক্রিলের করে, ক্রিলের করে, ক্রিলের করে, ক্রিলেন, ক্রিলের করে, ক্রিলের করে, ক্রিলের করে, ক্রিলেন, ক্রিলেন, ক্রেলির বিলা, ক্রিলেন, ক্রিলেভিতর, ক্রেলির বিলা, ক্রিলেলির বিলা, ক্রিলেলির কন, ক্রিলেলির করে, করিন করে, করিছেন, করে, করিন করে, করি, করে, করি, করে, করে, করি, করে, করে, করি, করে, করি, করে, করে, করে, করি, করে, করে, করে, করে, করে, করে, করে, করে				
প্রকারে নিবেলা প্রাণ। পতি-নন্দন, ল'লে শরাসন, প্রণেতে জাঁটিল বাণ ঃ ন্ধা জানি জাঁথি, নিরখি নিরখি, সতেজে নিক্ষেণে তীর। লোক্মিভিতরে, ফণা ভেদ করে, আহমুগে মারে বীর ॥ নির্মিজিরে তথন, আনে করের করি, টানিয়া ছুলিল তীরে ॥ করিয়া কুওন কাটে । করিয়া কুওন কাটে । বৈ অসিথান, ল'লে খান খান. করিয়া কুওন কাটে । বি মিরীর বি, রাপ্ সারি সারি, ক'থানি রজভ-দেহ । থ সেই কায়া, প্রাণে ধরে মায়া, না কাদি না রহে কেই ॥ বি হল ছল, জুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর । লোক্মিভত, পুন্দা স্বাসিত, রাখিল চেডনাকর ॥ র হলাহল, বেরে কঠমুল, বিরের কঠমুল, বিরের তিতানিলে পুন্চে তহুডাার করেছে ॥ করিরান্ত্র করির, বিরের কঠমুল, বিরের করির বন, বিরের কঠমুল, বিরের করির বন, বিরের কঠমুল, বিরের করির বন, বিরের করির বন, বিরের করির বন, বিরের করি, কণ্ডানি বা জল, কণ্ডানি বা কলে, বিরের কঠমুল, বিরের করির বন, বিরের করির বন, বিরের করির বন, বিরের করি, কল্পেন্টের কন, বিরের করির বন, বিরের কর, বিরের করির বন, বিরের কর, বিরের কর, বিরের কর, কলনের স্তর মুল-নিরে সভর বিরেছ । বিরের করির স্কণ করে কর, কলনের সভর প কোর কল, কলতের স্ব্রুব কল, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কোরে হি । বিরের কর স্ব্রুব কোরে বিরের কর, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কেন, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কোর হি । বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কেন, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কেন, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কোর কল, কলতের স্বর্জি বি বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কল, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কল, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কল, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কোর কল, কলতের স্ব্রুব কল, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কোর কল, কলতের স্ব্রুব কোনের হি । বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কল, বিরের কর, কলতের স্ব্রুব কল, বিরের কর কর কলের স্ব্রুব কল, বিরের কর কাল্ট বিরের কর কর কলের স্ব্রুব কল, বিরের কর করে, কলের স্বর্র কল, বিরের কর করে, কলের কর স্বর কল, বিরের কর কর কলের কর কর কলের স্বর কল, কলের কর কর কর কলের কর কর কর কলের কর কর কর কলের কর কর কর কলের কর কর কলের কর	ৰেক অভীত ,	ষ্ভাপি হইভ,		
পতি-নন্দন, ল'বে শ্বাসন, তথ্যতে উাটিল বাণ ঃ আ জানি আঁথি, নিবথি নিম্নধি, সত্যজ্ঞ নিক্ষেপে তীর । লেক্ষের্তি নাক্ষর নিক্ষেপে তীর । ক্রিন্তিভরে, ফণা ভেদ করে, আহিম্পে মারে বীর ॥ ক্রিন্তিভরে, অপি শ্বাসন, ক্রাপ দিয়া পডে নীরে । ক্রিন্তিভরে, অপি শ্বাসন, ক্রাপ দিয়া পডে নীরে । ক্রিন্তিভরে, অপি শ্বাসন, ক্রাপ দিয়া পডে নীরে । ক্রিন্তিভ্রাক তীরে ॥ করিয়া ভূলিল তীরে ॥ করিয়া লাল্বল, ভ্রালিলা, ক্রালিলা, ক্রালিলা	একবারে [ধেতো	প্ৰাণ।	ভূমি	वीववव कन.
জ্বগতে আঁটিল বাণ । বা ভানি আঁথি, নিরধি নিরধি, সাজকৈ নিক্ষেণে তীর। চলাই-ভিভরে, ফণা ভেদ করে, আহির্গে মারে বীর ॥ চিজরে তথন, আন শরাসন, বাঁপ দিরা পতে নীরে। হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিরা ছ্লিল তীরে ॥ করিরা কুগল কাটে। করিরা কুগল কাটে। করিরা কুগল কাটে। বিভন্ন তছু, নুপ-অবজন্ম, ব্লোন পাটে পাটে ॥ বিধাছেদ করি তবে চিন্তাভার নালহ। বিধারি ধীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। ব সেই কারা, প্রাণে ধরে মারা, না কাদি না রহে কেছ ॥ ব হল ছল, ডুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর। কেল স্পিজত, পুল্প স্বাসিত, রাবিল চেডনাকর ॥ ব হলাহল, বেরে কঠছল, বিধাছেদ করি তবে চিন্তাভার নালহ। কি করে সে রাত্রিদিবা, প্রাণে বীরি আছে হিবা, প্রাণে বীচি আছে হিবা, প্রাণ্ড তহুডাার করেছে ॥				
বা ভানি জাঁথি, নির্বাধ নির্বাধ, সতেজে নিক্ষেণ তীর। নির্বাধ নির্বাধ, সতেজে নিক্ষেণ তীর। নির্বাধনিত বিরু কণা ভেদ করে, অহিন্তে মারে বীর॥ মিটেছে সন্তেজাগ-লাধ, আপ্যশ অপবাদ, কাঁপ দিরা পতে নীরে। মিটেছে সন্তেজাগ-লাধ, আপ্যশ অপবাদ, কাঁপ দিরা পতে নীরে। কিনা জ্লিল তীরে। কিরার জ্লিল তীরে। কারিরা জ্লিল তীরে। কারিরা ক্লিল তীরে। করিরা ক্তন কাটে। কিরার ক্লেন কাটে। কিরার ক্লেন কাটে। কিরার ক্লেন কাটে। বিরি বীরি, রাবে সারি সারি, কাঁপনি রজত-দেহ। কাঁপনি রজত-দেহ। কাঁপনি রজত-দেহ। কাঁপনি রজত-দেহ। কাঁপনি না রহে কেছে। কাঁপনি না রহে কেছে। কাঁপনি কান কালি না রহে কেছে। কাঁপনি কালি কারে কালি কালি কালি কালি কালি কালি কালি কালি		9 0		
সতেকে নিক্ষেপে তীর। সগার্ক-ভিভরে, ফণা ভেদ করে, অহির্গে মারে বীর॥ সিজরে তথন, অসি শরাসন, কাঁপ দিরা পতে নীরে। কিনেদেহ ধরি, আনে করে করি, টানিরা জ্লিল তীরে॥ করিরা কুগল কাটে। করিরা কুগল কাটে। গীরি ধীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। থ সেই কারা, প্রাণে ধরে মায়া, না কাঁদি না রহে কেছ। বি ক্লিজত, পুন্প স্বাসিত, রাখিল চেডনাকর॥ র হলাহল, বেরে কঠহল, বিবের কঠহল, বিপাতে করে বিরেবির বিরেব। ক্লিকে কিনা কারে হারেছে। কি করে সে রাফিদিবা, রাপে বারিবর, বালে কিনা কার, বিধানের প্রাব্দিবা, প্রাণ্ণ বারিবর, বালে কিনা কার, বালে কিন কার, বালে কিনা কার,				
স্থাৰ্থন ভিতৰে, কণা ভেদ কৰে, অহিন্পে মাৰে বীর ॥ সিলিয়ে তথন, অদি শ্বাসন, ক্রাঁপ দিয়া পডে নীবে। ই-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া জ্লিল তীবে ॥ করিয়া ক্থন কাটে । চেতন তহু, নুপ-অকজহ, থলে নিল পাটে পাটে ॥ বিষিধীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। ব সেই কায়া, প্রাণে ধরে মায়া, না কাদি না রহে কেহ ॥ ব হল ছল, তুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর। তেল সিঞ্জিত, পুপা স্বাসিত, রাবিল চেডনাকর ॥ ব হলাহল, বেরে কঠহল, বিধাহেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ। বিধাহেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ। ক'লিনের পথ হবে সহিল্তান লৈ প্র, ক'লেনের পথ হবে স্থিনিব বলহ ॥ বিদ্যাল বিল্তা নাম তার, হেমণ্ডা নাম তার, প্রাণ্ডাবে চেডনাকর ॥ ব হলাহল, বেরে কঠহল, বিধাহেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ। ক'লিনের পথ হবে স্থিনিব বলহ ॥ বিদ্যাল বিলে কোন্ প্রান্তাবে কার কাছে রেয়েছে ॥ কি করে সে য়ায়িদিবা, প্রাণে বীচি আছে কিবা, শেক-চিতানলে প্ডে তহুতাগ করেছে ॥				
অহিন্পে মারে বীর ॥ মিটেছে সন্তোগ-সাধ, াজিরে তথন, অসি শরাসন, কাঁপে দিরা পডে নীরে । হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীরে ॥ করিয়া কুগল কাটে । চেতন তয়, নুপ-অবজ্ঞ, ব্লে নিল পাটে পাটে ॥ া ধীরি ধীবি, রাবে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ । ব দেই কায়া, প্রানে ধরে মায়া, না কাদি না রহে কেছ ॥ ব ছল ছল, তুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর । ালে সঞ্জিত, পুশ্ল স্বাসিত, রাবিল চেডনাকর ॥ ব হলাহল, বেরে কঠছল, বিধাছেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ । বিধাছেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ । ক'লিনের পথ হবে সহিল্ডান বলহ ॥ বিধাছেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ । ক'লিনের পথ হবে সহিল্ডান বলহ ॥ বিধাছেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ । ক'লিনের পথ হবে সহিল্ডান বলহ ॥ বিধাছেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ । ক'লিনের পথ হবে সহিল্ডান বলহ ॥ বিধাছেল করি তবে চিন্তাভার নাশহ । ক'লিনের পথ হবে সহিল্ডান বলহ ॥ বিধাছেল করি তবে চিন্তাভাবে কার কাছে রেছে । ক'লেনের পথ হবে সহিল্ডান করেছে । কি করে সে য়ায়িদিবা, প্রাণে বীচি আছে কিবা, শেক-চিতানলে পুডে তম্ভাগে করেছে ॥				
াজিরে তথন, অনি শরাসন, বাঁপ দিয়া পডে নীরে। ইং-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীবে। করিরা কুওন কাটে। করিরা কুওন কাটে। করিরা কুওন কাটে। করিরা কুওন কাটে। বিধাচ্ছেদ করি তবে চিন্তাভার নালহ। থিরি থীবি, রাবে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। থ সেই কারা, প্রাণে ধরে মায়া, না কাদি না রহে কেহ। বি ছল ছল, তুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর। কেলিক্তিড, পুশ্ল স্বাসিত, রাবিল চেডনাকর। ব হলাহল, বেরে কঠছল, বিধাচ্ছেদ করি তবে চিন্তাভার নালহ। ক'লিনের পথ হবে সহিল্ডাবিল বলহ। বিদ্যালয় বিশ্ব বলহ। ক'লিনের পথ হবে স্থিনিষ বলহ। বিদ্যালয় বিশ্ব বার্বির, প্রাণে বীচি আছে বিবা, প্রাণ্ড তহুতার করেছে।				
কাঁপ দিয়া পডে নীরে। হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীবে। করিরা কুওন কাটে। চেতন তন্তু, নুপ-অকজহু, থুলে নিল পাটে পাটে। । ধীরি ধীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। ব দেই কারা, প্রাণে বরে মায়া, না কাদি না রহে কেহ। ব চল ছল, তুলে আনি অল, টালে দিরে বীরবর। ালে সঞ্জিত, পুলা অ্বাসিত, রাবিল চেডনাকর। র হলাহল, বেরে কঠছল, ব ধেকে বীধা বাহবল, ভাগাদোৰে অবে বাধা পোড়েছি। থেকে বীধা বাহবল, ভাগাদোৰে অবে বাধা লাকা, ভাগাদোৰে অবে বাহবল, ভাগাদোৰে অবে বাহবল, ভাগাদোৰে অবে বাধা লাকা, ভাগাদোৰে অবে বাহবল, ভাগাদোৰে অবে বাহবল, ভাগাদোৰে অবে বাধা লাক্তন, ভাগাদোৰে অবে বাহবল, ভাগাদোৰে অবে বাধা লাক্তন, ভাগাদোৰে অবে বাধা লাক্তন, ভাগাদোৰে অবে বাহবল, ভাগাদোৰে অব্যক্তন, ভাগাদোৰ অব্যক্তন, ভাগাদোৰ অব্যক্তন, ভাগাদালৰ অব্যক্তন, ভাগাদ্বন অব্যক্তন, ভা				·
হি-দেহ ধরি, আনে করে করি, টানিয়া ছুলিল তীবে। ব অসিথান, ল'ষে থান থান. করিয়া ক্তন কাটে। করিয়া ক্তন কাটে। থাতি-উপকার মন, ব্লে নিল পাটে পাটে। থারীর থীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। ব সেই কারা, প্রাণে বরে মায়া, না কালি না রহে কেহ। ব চল ছল, তুলে আনি জল, টালে শিরে বীরবর। ব স্থান কিড, স্থান করে কর্ম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ক্লেম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ক্লেম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব লাকা বিল বাহ্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ব্লের ক্লিম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ব্লের ক্লিম্বল, ব ব্লের ক্লিম্বল, ব ব্লের কর্ম্ম্বল, ব ব্লের ক্লিম্বল, ব ব্লের বিল্বল, ব ব্লের ক্লিম্বল, ব ব্লের বিল্বল, ব ব্লের ব্ল				
টানিয়া ছুলিল তীবে ॥ বে অসিথান, ল'লে থান থান. করিয়া ক্তন কাটে। করিয়া ক্তন কাটে লালিয়ে ক্লোলিন পাটে পাটে ॥ কর্মান কালিন রজত-দেহ। কর্মান কালিন রহে কেহ ॥ বি লালিন রহে কেহ ॥ কর্মান কালিন রহে কেই ॥ কর্মান কালিন রহে কেই ॥ কর্মান কালিন রহে কেই ॥ কর্মান কালিক করে ক্লাম কার, ক্লোক লালিক করে ক্লাম কার, ক্লোক লালিক করে ক্লাম কার কাছে রলেছে। কর্মান কালিন ক্লোম কার কাছে রলেছে। কর্মান কালিন ক্লোম কার কাছে রলেছে। কর্মান কর্মান কর্মান করেছে। কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান করেছে। কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান করেছে। কর্মান ক্লাম কর্মান ক				
বে অসিথান, ল'ছে থান থান. হ'ছে শৈল্খলচাপা সিংহমত রয়েছি ॥" করিয়া ক্তান লাটে। প্রতি-উপকার মন, বৈচন তন্ত, নুপ-অলজহ, বুলে নিল পাটে পাটে ॥ বিধাছেদ করি তবে চিন্তাভার নাশহ। । বীরি বীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রক্ত-দেহ। কোন্দিকে কোন্পুর, ক'থানি রক্ত-দেহ। কোন্দিকে কোন্পুর, কান্তক্ক কত দ্র, থাণে বরে মায়া, না কাদি না রহে কেহ ॥ বদি আন বল আর, চালে শিরে বীরবর। হেম্লভা নাম তার, চালে শিরে বীরবর। হেম্লভা নাম তার, চালে শিরে বীরবর। কেই দল্ভা নাম তার, বালিল চেডনাকর ॥ প্রাণিত বালে কাহ কাছে রয়েছে। র হলাহল, বেরে কঠছল, শোক-চিতানলে পুড়ে তহুতার করেছে ॥				•
করিয়া কুণ্ডন কাটে। হৈচন তছ্, নুপ-অলজহ, থুলে নিল পাটে পাটে । বিধাজেদ করি তবে চিন্তাভার নালহ। ! ধীরি ধীবি, রাথে সারি সারি, ক'থানি রক্ষত-দেহ। থ সেই কারা, প্রাণে ধরে মায়া, না কাদি না রহে কেছ । বি ছল ছল, তুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর। হৈদলভা নাম তার, কালে কিছে, পুল্ম ম্বাসিত, রাধিল চেডনাকর ॥ র হলাহল, বেরে কঠছল, বিভেড প্রকার মন, বিধাজেদ করি তবে চিন্তাভার নালহ। কোল্ দিনের পথি হবে সিন্তাভার বলহ ॥ বি জান বল আার, কোল নারী কোন্ভাবে কার কাছে রয়েছে। বি লাকে তিডনাকর ॥ প্রাণি বিচি আছে কিবা, বাংল-চিডানলে পুডে তহুতাগ করেছে ॥	রে অসিখান.	ল'য়ে থান থান.	হ'য়ে শৈলশঙ্গচাপ	
হৈতন তহু, নুপ-অজনহ, বৃদ্ধ-অজনহ, বৃদ্ধ-অজনহ, বৃদ্ধ-অজনহ, বৃদ্ধে নিল পাটে পাটে । । বীরি বীরি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রক্ত-দেহ। কেন্দুক্ত কত দ্র, ব সেই কারা, প্রাণে বরে মারা, না কাদি না রহে কেহ । বিষ্ণাজন বিষ্ণাজন ক'দিনের পথ হবে সহিশ্বৈ বলহ ॥ বদি জান বল আর, হালে পিকে বীরবর। হেন্দুল্ভান কার কাছে র্লেছে। ালে সিঞ্চিত, পুন্ধ স্বাসিত, রাধিল চেডনাকর ॥ র হলাহল, বেরে কঠছল, ব্যাকি-চিডানলে পুড়ে তহুতার করেছে।	করিয়া কুণ্ডন কার	े ।		
ব্লে নিল পাটে পাটে ॥ । ধীরি ধীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। থ সেই কালা, প্রাণে ধরে মালা, না কাদি না রহে কেছ ॥ বি ছল ছল, তুলে আনি জল, চালে শিরে বীরবর। লে সিঞ্চিত, পুন্দা স্বাসিত, রাধিল চেডনাকর ॥ বি ধাচ্ছেদ করি তবে চিন্তাভার নাশহ। ক'দিনের পথ হবে সহিশেষ বলহ ॥ বিদ জাল বল আবার, হেমলভা নাম তার, সেই নারী কোন্ ভাবে কার কাছে ললেছে। কি করে সে রাআিদিবা, প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, বি হলাহল, বেরে কর্মছল,	·			
। থীরি থীবি, রাধে সারি সারি, ক'থানি রজত-দেহ। কান্তক্স কত দ্র, থ সেই কারা, প্রাণে ধরে মায়া, ক'লিনের পথ হবে স্বিশ্বৈ বলহ ॥ না কালি না রহে কেহ ॥ বদি জাল বিল আার, চালে শিরে বীরবর। হেম্লভা নাম তার, দেই নারী কোন্ ভাবে কার কাছে রয়েছে। লৈ সিঞ্চিত, পুশ্ব স্বাসিত, রাধিল চেডনাকর ॥ প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, র হলাহল, বেরে কঠছল, শোক-চিডানলে পুড়ে তহুভাগি করেছে ॥	· ·	रहे ॥		
ক'থানি রজত-দেহ। কান্তর্জ কও দ্র, থ সেই কারা, প্রাণে ধরে মায়া, ক'লিনের পথ হবে স্থিশৈষ বলহ ॥ না কালি না রহে কেই ॥ বদি জাল'বল আার, হেমলভা নাম তার, হেমলভা নাম তার, রেমলভা নাম তার, রেমলভা, ব্লেল আনি জল, রাজিল চেডনাকর ॥ রাজিল চিডনাকর শুড়ে তম্ভাগি করেছে ॥				
থ সেই কাষা, প্রাণে ধরে মায়া, ক'দিনের পথ হবে স্থিশ্য বলহ ॥ না কাদি না রহে কেই ॥ বদি জান বল আর, ই ছল ছল, তুলে আনি জল, হেমল্ডা নাম তার, চালে দিরে বীরবর। দেই নারী কোন্ ভাবে কার কাছে রয়েছে। লৈ সিঞ্চিত, পুন্দ স্বাসিত, কি করে দে রান্তিদিবা, রাখিল চেডনাকর ॥ প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, র হলাহল, বেরে কঠছল, শোক-চিডানলে পুড়ে তহ্নভাগে করেছে ॥				
না কাদি না রহে কেছ। বিদ জান বল আর, ব ছল ছল, তুলে আনি জল, হেমণ্ডা নাম তার, চালে শিরে বীরবর। সেই নারী কোন্ ভাবে কার কাছে রয়েছে। লৈ সিঞ্চিত, পুম্প স্বাসিত, কি করে দে রাত্রিদিবা, রাধিল চেডনাকর ॥ প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, র হলাহল, বেরে কঠছল, শোক-চিডানলে পুড়ে তছ্ডাার করেছে ॥				
ধি ছল ছল, তুলে আনি জল, হেমণভা নাম তার, ঢালে শিরে বীরবর। সেই নারী কোন্ ভাবে কার কাছে রয়েছে। ালে সিঞ্চিত, পুন্দ স্বাসিত, কি করে সে রাজিদিবা, রাধিল চেতনাকর ॥ প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, র হলাহল, বেরে কঠছল, শোক-চিতানলে পুড়ে তহুতাগি করেছে ॥		τ ξ		
চালে শিরে বীরবর। সেই নারী কোন্ ভাবে কার কাছে রয়েছে। ালে সিঞ্জিত, পুশা সুবাসিত, কি করে সে রাত্রিদিবা, রাথিল চেডনাকর ॥ প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, র হলাহল, ধেরে কঠম্বল, শোক-চিডানলে পুড়ে তম্নভাগ করেছে॥			হেমল	ভানাম তার,
ালে সিঞ্চিত, পুষ্প স্থাসিত, কি করে দে রাত্রিদিবা, রাখিল চেডনাকর ॥ প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, র হলাহল, : ধেরে কঠছল, শোক-চিডানলে পুড়ে তহুত্যাগ করেছে॥				
রাথিল চেডনাকর॥ প্রাণে বাঁচি আছে কিবা, র হলাহল, বেরে কঠন্ত্র, শোক-চিডানলে পুড়ে তহুতারি করেছে।				
র হলাহল, বেরে কঠন্ত্র, শোক-চিতানলে পুড়ে তহত্যার করেছে।		,		
		,		
		त्र ।		

তারে হ'রে ল'রে গিয়া. महे ভাবে इंडे त्रिश्र मःरशांभरन द्रार्थरह । यक्षि जादत्र दर्जान कन. ক'রে থাক দরশন, বল তবে প্রেয়সীর কিবাদশা হয়েছে। অঞ্পাতে হুই আঁখি, গেছে কিংবা আছে বাকি. কিংবা প্রিয়া অভাগারে একেবারে ভূলেছে। অস্থিমাংস ঠাঁই ঠাঁই, এখনো कि इंग्र नाई. अस्ता कि (अष्टवर्भ ध्वाधारम ब्राह्म ॥ করিয়া পাঠানরাজ, রেস্ত দত্মার কাজ. এখনো কি যম-হন্তে পরিত্রাণ পেরেছে ? মাগোও মাজনভূমি। আরো কত কাল তুমি, এ বয়দে পরাধীন হ'লে কাল যাপিবে। বল আর কত কাল, रावान ववनमन. নির্দন্ত নিষ্ঠর মনে নিপীড়ন করিবে॥ কতই ঘুমাবে মা পো, कारमा या कारमा कारमा, কেঁদে সারা হয় দেখ কক্তা-পুত্র সকলে। ধুলার ধুদর কার ভূমে গডাগডি ধার, একবার কোলে কর, ডাকি মা মা ব'লে। কাহার জননী হ'যে, কারে আছ কোলে ল'য়ে, খীয় স্থতে ঠেলে ফেলে কার স্থতে পালিছ। ও নহে তব সস্থান, ারে ছগ্ধ কর দান, हुध किएम गृह-भारत कानमर्भ भूविछ ॥ মোরে দিলে বনবাস, প্রিয়া আছে কার পাশ, হার কত পীড়া পাও, হে স্থাংখ-বদনে! কোথা বদো কোথা যাও, কিবা পয় কিবা পাও, ছায় পুনঃ কভদিনে,জুড়াইব নয়নে॥" বিশ্বিত রমণীদল দেথিয়া ভনিয়া। किश्विर विनास करह स्वश्वित रहेश। 'কামিনী লাগিয়া তব কামনা পুরাব। হেম্বতা অৱেষণে পৃথিবী বেড়াব ॥ ৰিবল ভটিনী-ভট হ্ৰদ সৰ্বোবর। सद्भा निकृत गार्क, मक मरीधन ।

প্রাতঃ, সন্ধ্যা, নিশা, উষা, মধ্যাহ সময়। ভ্ৰমিব পুঁজিয়া তাঁৱে জানিহ নিক্ষঃ निकरपरश वीतवत शाक वह वरन। ' ত্রার আসিব ফিরে ভাবিত নামনে॥ চলিলাম বীর তব নারী অন্বেষণে। মৃদ্রণ-বারতা আনি জ্বডাব প্রবণে u হেরিব কেমন তিনি গার সামী তুমি। বুঝি বা তেমন আর ধরেনাকো ভূমি॥ কেন ভাব যুবরাজ যুবতী লাগিয়া। কামনা প্রাব তব কামিনী আনিয়া ॥" বলিয়া চলিয়া গেল কুমারীর দল। নুপতি-নন্দন গেলা যথা বনস্থল।। এক। বীরবর রহিলেন দেই বনে। পূर्वकथा সমুদায় উথলিল মনে । মানদে মগন, নুপতি নন্দন, হেবিয়া জনমস্থল। शीति शीति शीति, नम अम शिवि. (मथा दिन मरन मन ॥ **८४ निथटत वटन.** मुगन्ना कांत्र(प. অস্চর সনে গেলা। यে उछिनौ कृत्न, যে তকর তলে বসিয়া কাটিয়া বেলা।। যে তড়াগ-জলে. বয়স্ত্রের দ্লে ল'য়ে করেছিলা কেলি। ষত স্বেহাম্পদ. প্রিয়া প্রেমাম্পদ উঠিয়া একতা মিলি॥ ক্রণবীর তভ, রাণী চক্রমা ৩. বধুকোলে দেখা দিলা। ভগ্নীপরিজন. खित्र मधीनन স্বতিপথে আরোহিলা॥ ভিভি নেত্ৰভারা, প্রেম-অঞ্ধারা. গণ্ডদেশ বহি পডে। নুপতি-তন্যু, তাপিত গ্ৰদয়, কাঁদে যত মনে পড়ে॥ পিতা নরপাল. কেন এ জনা আমি এ কান্ধান বেশ। ষথা তথা ঠাই ভ্ৰমিয়া বেড়াই, পডिया थाकि विरम्भ ॥ ध कि हमदकांत्र, काथा ग्रह्या द्यांथा जागि वनवानी।

গণিল।

পড়িল ॥

त्र निकुक्षवरनः প্রমোদ-কাননে, বুথা মুজে পুষ্পরাশি॥ বধা গুল্লে অলি. পিক কলকলি, ৰুখাম-লামিল বয়। বৰণ শিথিবয়, প্ৰদোষ সময়. বকুলতলায় রয়॥ বুথা বারিপরে. কুমুদ বিহরে. ইন্ধিতে নেহারে শণী। বথা ধরাতল. হন সুশীতল. নীহারেব বলে রসি॥ বপা কেন্তকিনী, হ'রে পাগলিনী, মাতায় বিপিনবাসী। তক আলিকিতা. বৃক্ষ ভক্ৰতা. ঢলিয়া পড়য়ে হাসি॥ কোথা সে আমার. এই সব যার. পুন: कि সে জনে পাব। এ অমা ঘচিবে. সে শশী উঠিবে. পুন: কি দে সুধা খাব ! বলিয়া কাঁপিয়া তাপিত-হ্রদর শিথর উপবে উঠিল। ত্তগৎ যড়িয়া এমন সময়ে, নিবিড আঁধার চাকিল। ক্রমশ স্বিয়া সাগ্র-ভিত্তে, ম্লিন তপন ভবিল। দেখিতে দেখিতে গুগন মাঝেতে, রজনী ভষণ পুলকিত দেহে বীরচুডামণি, বিষম চিন্তান্ত পভিল। ভাবিতে ভাবিতে সকল ভুলিয়া অপর্ক-স্বপন বেন ভ্ৰমণ্ডল অনল-শিখায়, চলাচল সহ দহিছে। ^উনপঞ্চা**শৎ পবন যেমন**, তাহাব সহিত বহিছে ৷৷ भग-मिक्शोल निक्शन मरक, ऐर्क्समूर्थ मरव छूটिर**छ**। থেচৰ ভূচর জলচর আদি, হতাশ অন্তরে হাঁকিছে। বেণ্মর ধরা বারি বাযু রেণু, রেণু বেণু হ'রে উড়িছে। চরাচর পূরে হাহাকাব ধ্বনি.ভুধু পুনঃপুনঃ উঠিছে। সেই সর্ব্যক্ত শিখা প্রশন্তদেশে এলায়িত-কেশে নবীনা কামিনী যেন পাগলিনী, রহে ভূঞ্যুগ वर्षात्र ॥ অশুপূর্ণ আৰি দেই পাগলিনী, শিশু এক করে ধরিয়া :

^{পর} বংশধরে, পুত্র কোলে কর, বলি যেন দিল

মে লিয়া ॥

প্রসারিত কর পদ অধোডাগে শির। শিথর হইতে নীচে পড়ি গেলা বীর গ অভ্রভেদী গিরিচুড়া দৃষ্টি-অগোচর। নিমদেশে ভীমনাদে গর্জিছে সাগর। কেশাগ্ৰ পশিলে সেই অগাধ জীবনে। বস্থন্ধরা বীরশক্ত হতো সেই ক্ষণে ॥ কিন্ধ ভাগ্যবলে সেই দণ্ডে সেই স্থানে। অকবাৎ দেখা দিল নারী ছয় জনে। দেখিল স্থালর রূপ নব এক জন। প্রনবেগেতে শক্তে হতেছে প্রুম ॥ হেরিয়া সদয়-মনে কয় জনে মেলি। ক্রোড পাতি বসিয়া রহিল উরু ফেলি। নিমেষ-ভিতরে সেই নারী-উক্লেশে। অচেতন দেহথানি প্রবেশিলা এলে। নিঃসাভ শরীর সেই মুদিত নয়ন। বদন নেহারি চমকিত রামাগণ 🛭 নয়নে নরনে বাঁধা রতে পরস্পর। গও বহি অঞাবারি বহে নিবল্পর ॥ পশ্চাতে চিনিতে পারি করে হায় হায়। বলে মরি এ কি হেরি মরি এ কি দার। কমল লাঞ্ন কবে কমল তুলিয়া। নীবস কমল আত্যে ধীরেতে দেঁচিয়া !! কমল-আসন হ'তে তুলি ছ'টি পাতা। তাহাতে সংলগ্ন কৈল ছ'টি বাহলতা ॥ বেন মহার্বিশারী মহাবিষ্ণু পাশে। ছয় লক্ষীমৃত্যক ব্যক্ষ বিজ্ঞালে॥ দণ্ড ছই গত পবে জাগিল চেতন। উন্মীলিত নেত্রে বীর করে নিরীকণ। স্থপন দর্শন প্রায় দেথে সারি সারি। বিমল গগনে ভাসে স্বধাংশু-লহরী ॥ কথন ভাবেন ছয় অচলা চপলা। একত্রেতে বনি যেন করিতেছে থেলা।। কভু ভাবে বেন বিধি বিরলে বসিয়া। নিজ মনোরমা রামা স্থান করিয়া॥ না হইয়া তপ্তমন দেয় বিসর্জন। পুনর্কার নরনারী করেন স্ঞ্জন ॥

विन विकार के व्यविभन बाबा, वीरब्रम विभन

ত্যজি দীৰ্ঘখাস হায় বে অদৃষ্ট ৰলিয়া, ঢলিয়া

ৰিচিত্ৰ ভাবিশ্বা শেবে উঠিয়া বসিল।

জ্ঞানের অঙ্কর হেরি মিলাইয়া তান।

শেখিয়া মোহিনীগণ প্রফুল হইল।

বীণাবন্ত করে ধরি আরম্ভিল গান। এমনি মধুর স্রোত তাহাতে বহিল। শুনি রীণাপাণি দেবী অন্তরে মোহিল। মনোলাসে বাগীখরী তাজিয়া খরপ। আবিভূতা হইলেন ধরি বাক্যরূপ। কবি-কর্তে তাই দেবী করেন নিবাস। বাগীৰরী নাম তাই ভূরনে প্রকাশ । चमत्र-(माहन त्महे छनि वौशावानी। বীরবার পুনর্কার লভিল পরাণ্।। . সহাস-বদনে. ক্ষল-আসনে. নুপতি-নন্দনে বসায়ে। অধরে প্রকাশি. মৃতুমক হাসি. পিকবর-ভাষ শুনায়ে॥ जरन जरन ध'रत. मधु मधु चटत्र, বলে নুপবরে "ভেব না। আশার আধার. পেরেছি ভোমার. ঘুচাৰ এবার যাতনা ॥ হেরিলাম ভূপ, অপরপ রপ কামিনী। যামিনী গভীরে, ভাগীৰথী-ভীৱে. দাড়ায়ে মন্দিরে মোহিনী। (वर्ष कांडांनिनौ, कर्ण ताकतानी. গোষয়ে দামিনী বেমনি। আফুল-লোচনা, विभीषी विभनी, বিষোগ-বাসনা-কারিণী। শিশু শশধর, অতি মনোহর, হৃদয়-উপরে রাথিয়া। চপল-নয়না, পলাতে বাসনা. দেখেছি ললনা চাহিয়া। ट्टात रुत्र मत्न, (यन वा मनत्न, হৃদয়ে যতকে ধ্রিয়া। নির্বি নির্বি, बाम बिट्ड कांकि. ধাইছে চমকে ছুটিয়া॥ দাও হে সাকাৎ, बरन 'क्टर नाथ, লহ তব দাধ আমারে। সহেনাকো আর, দিছ সমাচার তোমারে॥

ওহে সুধারাশি, করণা প্রকাশি, মম তাপ নাশি যাও হে। আছেন ষেথানে. আমার কারণে. তুমি সেইধানে ধাও হে। তাঁর অমুগতা, দাসী হেমলতা. হয়েছে অনাথা বলিও। বাঁধি কারাগারে, নিৰ্বান্ধৰ পুৱে, রিপু রাথে তাঁরে কহিও॥ তব বংশধরে. क्षमदाराज श'दन. তব নাম ক'রে কাঁদিছে। অহে নিশাপতি. মম এ তুর্গতি, সদা-ূদিবারাতি জ্ঞালিছে॥ তাঁহারে ভাবিয়ে, আশা-পথ চেয়ে, মনেরে বুঝায়ে রেথেছি। বাসনা পুরাব, তনম্ন দেখাব. পরাণ জুড়াব ভেবেছি॥ তুমি হে ভ্ৰমণ কর হে ভূবন ব্যাপিয়া। কথাকর গতি যথামম পতি. মম এ তুৰ্গতি ভাবিয়া॥ বসি অক্তযার শৃক্ষোপরে আর, মিনতি স্বার চরণে। ককণা করিয়া, সমাচার দিয়া সঙ্গে আন গিয়া সে জনে॥ সহা মনতঃবে এই কথামূথে, ধীরে অধোম্থে কাঁদিছে। नौरलां ९ शनम् न. উথলিয়া জল বহিছে॥ **এই দেখ** রায়-কাজ কি কথায় শুনিয়ে। দেখে মেই রূপ অপরূপ রূপ, স্থানিলাম ভূপ আঁকিরে॥ কুমারী সক্ষ এই কথা ব'লে, कारन निन फिल्म कुनिया। চন্দি বাদংবার নির্ণি কুমার, হৃদয় উপর ধরিল। য**ে পরাকি**ট रयन कैंकि निरम, কারে লুকাইরে রাখিল। िखं श्रुटम धेरी मथ इहे भरत, কুমানীগণেরে বলিল।

"চলসেই স্থানে. জড়াইৰ প্ৰাণে, पिथित क्याम गाँ हिल ॥" অপরপ রূপ ছটা. প্রচারি প্রচর ঘটা. নবরদে নৃপত্তি-নন্দনে স্থাথ ভূলাইয়ে। পরাইতে মনোরথে. **চ**िल्ला ज्लिशिशर्थ. অঞ্চলে বাদাম তুলি বায়ভৱে তুলায়ে॥ তডিতের আভা সম. শোভা ধরি অফুপম, উত্তরিল তডিতের বেগে গঙ্গা-পুলিনে। স্ট্র স্থানিতের শোভা, नानाविध मत्नात्नाका. দেখে নব নব ভাব প্রমৃদিত নয়নে॥ নান পুরুষ নারী, নতন ভ্ৰণ তারি. ন্তন বসন ধর গিরি গুহা কানন। তাহে নব দাকদাম. তাহে পুষ্প অভিৱাম. তাহে ফল সুরুসাল অপরূপ ঘটন। . प्रवनशीन वन्तर, नव मीवि नव इन. নব পাথী ডালে বসি নব তান উগারে। গৰে নতন তাৱা. নুত্ৰ নুত্ৰ ধারা, দেখে দশদিকময় নাহি পায় বিচারে ॥ বভাবে দ্রবীভত, হ'মে হিন্দু-রাজস্তত, মেচ্ছ অধিকারে আসি দিল্লীপরী লভিল। হার উত্তর তীবে. প্রশি গঙ্গার নীতে. দিলীশ্বর-অট্রালিকা শোভা করে দেখিল। বৰ্ণ-থচিত কেত্ত, যেন স্থবর্ণের কেতৃ, তত্বপরি সারি সারি শশিকলা-প্রতিমা। া অধ্যেভাগে যত, মণি মুক্তামরকত, ত্লিয়া ছাদের ধারে, প্রকাশিছে গরিমা। ট প্রাসাদের ধারে. দাঁড়াইয়া একধারে. সম্মধের স্থবর্ণের আবরণ খুলিয়া। লালবিগতপ্রাণা, দাঁডাইয়া এক জনা. বিষৰ্ষ বিমনা ভাবে বাহুপরে হেলিয়া ॥ शिनिटक नवनन. অনিমেষ তুনয়ন, निवर्गाध क्यांचावि मत्र भव मतिरह । গ্গত শশধ্যে. বেন বিলোকন করে. বিমৃদিত ইন্দীবর জলাশয়ে ডুবিছে ॥ া ককে সুপ্ৰকাশ, ক্ষার সদশ্ভাস. সুকুমার মনোহর শিশু কোলে থেলিছে। ায়া জননী-গলে. আধ বোলে মা মা ব'লে মার মুথে মুথ দিয়ে করতালি তালিছে। বিয়া তনর দারা, প্রেমেতে বহিল ধারা, পুলকিত দেহে লোম কণ্টকিত হইল।

डेक्टल विभाग छाथि. উতলা পরাব-পাধী, আ'লিম্বন অভিলাষে বাত্যুগ খুলি॥ আনন্দে প্রফুলকার. দাড়াইলা যুবরায়. সাগর-তনমাগণে একে একে নামিল। এখন বিদায় চাই. শ্বরি ষেন দেখা পাই. এই নিবেদন ঐ প্রীচরণে রহিল ॥ 'তথান্ত্ৰ' বলিয়া তবে, वत्र मिला नात्री मटव. পরে রাজ্তনধেরে পদাসনে বসারে। প্ৰবাল মুকুতা চণি. গুণে গাঁথি গুণি গুণি. সবে হাতে হাতে ধরি দিল সবে পরায়ে॥ দেবককাধর লও. পূৰ্মন্তাম হও. অবি দমি দারা-স্থতে উদ্ধারিয়া আনহ। সর জোগমন করি বস্থন্ধরা যগে ভরি. ক্ষত্রিরকুলের নাম অকল্ক কর্ছ॥ পুন: প্রণমিল রায়. দাগর-ছহিতা-পায়, নুপতিনন্দন গুণ বীণা তানে ধরিয়া। সেই সুমধ্র স্বর. সমীরণে করি ভর. **হেমলতা-শ্রতি**মলে প্রবেশিল আসিয়া। শুনি চমকিয়া ধনী, দেখে চেয়ে নপম্পি. উर्দ्धमः अनी उटि दमहे निटक त्महादत्र। হেরি বোমাঞ্চিত কায়. তকণী শিহরি তার. পাষাণ প্রতিমাসমারতে বাহা আমকাবে।। কুমার উপায় ভাবে. কিনে দাবা হত পাবে. ক্ষণেক ভাবিয়া শেষে বাজপথে চলিল। তেথা রামা সচেতন. না হেবিয়া প্রাণধন, বিশ্বয়ে বিরস্ভাবে নিবাসনে বদিল ॥ জীবনসঙ্কট তলে. একা বীববার চলে. অমুবল নাহি অমুক্তন। ফদয়ে নাহিক তাদ. বীরমদে মনোলাস. क्रिक जिल्हारा प्रवर्भन ॥ দেবতার বেশ ধরা. (प्रवयांना नित्र भन्ना. দেখে ভ্রমে দাডাইল দারী। "পাতশাব দবশন, * * করিবারে আগমন. এই ভেট ভেঙ্গ রে আমারি॥" নকীৰ ফকারি ধায়. স্থলতান-স্মীপে ধার করপুটে সমাচাব কছে। "মলাক আলমগীর. প্ৰাক্সপা এক বীর. সিংহলারে দাড়াইয়। রহে ॥ রাজ-পরিচ্ছদ তাঁর. মণিমালা চমৎকার. কিরীট-সদৃশ শোভে শিরে।

প্রকাশিব বাহুবল, পাঠাইব বসাত্ৰ অসি খজা স্থাণিত, দটিভটে চলায়িত, অধর্মের ধন নাতি রয় ৷ পষ্ঠদেশ সজ্জিত তৃণীরে॥ ওন হে যবনপতি. যদি চাছ দিবাগতি রাজকুলে অধিষ্ঠান. চাবে বঝি অফুমান, বীর-আলিক্সনে তোষ মোরে। পডিয়াছে কোন বা বিপাকে। যদি কল্মত হট সভাসভাসভাকই. করিবারে আগমন. আপনার দর্শন. এই খজো নিপাতিব তোরে॥ ^{*} নিবেদিতে কহিল আমাকে॥* আমার শরণ লং যদি কাপুক্ৰ হও, ভনি পাতশাহ কন. "কর জীরে আনম্বন. ্রাজকজা কর পরিহার। বঝিব সে ফেরে বা কি ফেরে।" ভাজ অসি শ্বাসন নকীব ফিরিয়া বায়, তাজ রাজিদিংহাসন, দ্রলভান-আদেশ পার. বীরবরে আনে দলে ক'রে॥ লোকালয়ে থাকিও না আর ॥" নেহারিয়া আলমগীর. বলি কৈলা নিছাশন. ल्यानीश नवभग দহাতেকা মহাবীর. বসিবারে ইঙ্গিত করিল। শাণিত কুপাণ কবতলে। আ'নি স্বৰ্ণ-সিংহাসন. ঐবাবতে করি ভা বঝি অফ্চরগণ, (यन (पर श्रुवस्त्र, অশনি নিকেপে ধরাতলে॥ বীৰবাত-পশ্চাতে বাধিল। কান্ত হৈল ভীম নাদ. শক্তগণে পরমাণ কোধ করি সংবরণ, না পরশি সে আসন. বাঙ্গভাবে দর্প করি কন। 106353 ভাবে কে আইল ছন্বেশে। আসনে নাহিক কাঞ্জ, সমরে দৈবের বশ. বিনারণে অপ্য 'ভন মেজ-অধিরাজ. এই মত কবিয়াছি পণ॥ বিন্তর চিমিয়া কছে শেষে॥ বাহে আকালন ক না করিব উপার্ক্তন. অন্তরে কম্পিত ডরে. রাণ জয় যতক্ষণ, ততক্ষণ আমেন নালব। वरम "दव वर्षत्र रभान वानी। मिश्र ज्ञान क्रि. করিতে পাবি রে গ এই দৃঢ ব্ৰত ধরি, মহুৰ্তে কাটিয়া মুগু, কেবল লোকের লাজ মানি॥ জিনিয়াছি রাজপুত্র সব॥ তুমি মেছ-মহীপাল, ক্ষত্ৰংশ-মহাকাল, কেবা পিতা কোথা বাস, জাতি বৃত্তি অপ্রকা রাখি, রণ নাগিলি আসিয়া। প্ৰিবী পুরিষ্ণ তব ধশ। কাঁদিত অমুর নরে, তোবে রে করিলে নাশ. না হইবে ধর্ম ই ষেই বীরবাত্-ডরে. বরং পুণ্য পাপী বিনাশিয়া॥ তারে রণে করিয়াছ বশ। তার নাকি রূপ ভারী. কিছ রূপে নিলে কান্ত. কুষশ হবে এক ধরিয়াছ তার নারী. পরস্পর এই কথা জানি। বিপক্ষ হাসিবে সর্বাক্ষণ। আসিয়াছি রণ-আশে, শ্বজাতি-গৌরব নাবে. হিন্দুক্ল শোভা পা আলমগীর তব পালে. আপনারে ধন্ত করি মানি॥ আস্পদ্ধা করিবে চুইজন। ভেটিব রে কক! সেই নিফপ্মা নারী. রণে জ্বিনে লব তারি. অতএব তোর সনে. (यवा क'म इन्नरवन्धाती। शति विक नाती पित। শমন-ভবনে গ সমচিত ফল পাবি. কক-যুদ্ধে মুম পণ্ড * • সমতুল্য সহ রণ, তথা পাবি মনোমত নারী ॥" অকুজনে কড়ুনা ভেটিব। যদি থাকে মান ভর. যন্তপি দাহদ হয়, বলি ভঙ্গ দিল বার, डेबीय जारमण व রাজপুত্রে দিল বাসস্থান। আশু রণে ভেটহ আমারে। यम शरम रमह जात्र. वहरमण रमणांखत्र. নতবা আনিয়া ভায়. व्यभगम पुरित्व मःमाद्र ॥ জানিল সমূহ রাজস্থান ॥ श्चिम् (अफ्र-त्र¹⁹ জান ত চোরা রাজন, নানারপ-গুণযুত, সে ত চরি করাধন, मिल्लीशास्य चानि दम्था मिन । চোরা ধন বাটপাড়ে লয়।

गारक भूर्व ज्ञांसधानी. **मिवानि** वाक्थविन, কোলাহলে নগার পুরিল। ক্রোবে যুড়ি রণ্ড্মি হইল নির্মাণ। हाति मिटक **डेक्ट** मक्ष चित्रवाद जान ॥ खबरक खबरक ब्राइ माम्बा विश्राम । পৃথক পৃথক ভাগে হিন্দু মুদলমান। লোহ-ধাতুময় মঞ্জ হ্বর্ণে মণ্ডিত। রতন-ঝালর তাহে করে চমকিত ▮ বক্ষ-চন্দ্রগতপ-ছটা মন্তক-উপরে। তাহে মণি-মরকত ঝলমল করে॥ অমৃশ্য বসন দেহে তাবণে কুণ্ডল। হিন্দু-মেচ্ছ-রাজগণ মণ্ডলে মণ্ডল। মস্তকে মুকুটশ্রেণী ভারকার মাল।। কটিদেশে কটিবদ্ধে কুপাণ উজলা॥ ত্রিকোটি দেবতা যেন লক্ষেশ সভার। স্বাহনে সজ্জীভূত হ'লে শোভা পায়। রণভূমি-শিরোভাগে বিচিত্র কাণ্ডাব। গাহার ভিভরে রহে ব্যণী-ভাগুার॥ (एटवक्ट-खबरन रचन एएव विवासिनी। সেইরূপ শোভা পায় বত বিনোদিনী। কাণ্ডারের বহিন্ডাগে রণভূমি-স্থলে। স্বতন্ত্র সোনার মঞ্চ ধ্বক্ ধ্বক্ জলে।। ধানমুখী নারী এক তাহার উপরে। করেতে কপোল রাশি ভাবিছে কাতরে॥ ষেন স্বধাহীন শনী থসে ভূমিতলে। ষেন সীতা বাবণের রথে কাঁদি চলে। এই ভাবে বছবিধ জন-সমাবেশ। प्रदेशिक जुन्मु जिस्तिन इत्र त्यव॥ সাজ রে সাজ রে খরে বাজে ভেরী তুরী। অমনি প্রহরীদন দাড়াইল ভরি । উত্তর দক্ষিণে শেষে প্রচণ্ড কিরণ। ছই স্থ্য সম দৌতে দিল দরশন॥ भिरतारम्हण भित्रश्चान करत्र करवांग । বামে বর্ম পুটে তুণ ভল স্থবিশাল ॥ সিংহের গ**র্জনে** দোহে ছাড়ে সিংহনাদ। কেশরী কুঞ্জরে ধেন ধোর বিসংবাদ। छनि हमकिया लाटक मिन्यदा होता। ভবে হেমলতা-তত্ম শুকাইয়া যায়॥ না পড়ে চক্ষের পাতা ঘন বহে খাস। কি হবে কপালে ভাবি মনে গণে আস ॥

হেনকালে ছছকারে করি আকালন। সমরে মাতিল দোহে ভীম-দরশন ॥ विरुद्ध ब्रह्म, রণতরকে. ঘন ঘোর রব করে রে। ধরণী কম্প, করিছে ঝম্প, কবাল কুপাণ ধরে রে॥ যেন কুড়ান্ত. করিতে অস্ত্র. শ্লপাণি শ্ল ধরে রে। ঘুরাইয়া খাওা, (यन हाम्छा, রক্তবীলাম্বরে মারে বে ৷ কাপায়ে বর্ম, অসি খনু খনু ফেলে রে। করিয়ালক্য, অরাত্তি-বক্ষ. দৌহে দৌহারে ঘেরে রে॥ অন্ত্ৰ সাপটে, ভীম দাপটে, অসি খন্খন্করে রে। বহিং ধমকে, থজা ঝলকে. ভূমি টলমল টলে রে॥ কোপে কম্পিত, অসি উথিত. করি বীরবাছ ঝাঁপে রে। করিয়া খণ্ড. यवन-मुख, ভূমিতলে আনি পাডে রে॥ পরমানকে. गांधू गांधू गांधू वटन दत्र। কাঁপায়ে সিন্ধু. रुत्रिट्य हिन्तु. ক্ষবাত করি চলে রে॥

ক্ষাবাত করি চলে রে ॥
কাটিয়া ঘবনম্থ ডাকি উচ্চৈঃ খরে।
ববনভূপালবুলে সংখাবন ক'রে ॥
কহিলেন বীরবাছ মহাবীর দাপে।
কেশরি গর্জনে যেন মহারণ্য কাঁপে ॥
প্রাব ঘবন-রজে শমন-বর্পর ॥
সাক্ষাতে হেবিলি কার কুত বাছবল।
এবে রে ঘনরাজ্য গেল রসাতল ॥
করতল দিল্লীপুরী করেছি বে আজি।
আারো দেপাইব নীও অসিভন্তনবাজী॥
আমি রে ক্রিরণপুর নহি রে ববন।
পালিব ক্রিরণপুর নহি রে ববন।
পালিব ক্রিরণপুর নহি রে ববন।
পালিব ক্রিরণপুর নহি নিজ পণ॥
বিধার উদ্ধার মেন্ড্রোজ্য ভন্মাৎ।
অথবা সংগ্রামে দেহ ক্রিব নিপাত ॥

এই থে করেছি সত্য কতৃ না ছাড়িব। महत्व मञ्जूथ-द्रत्व भूनक माह्रिय ॥ ষত দিন মেছহীন না হইবে দেশ। তত দিন না ছাড়িব সংগ্রামের বেশ। না ভেটিব হেমলতা না হেরিব স্থতে। মেছনাম যত দিন জাগিবে ভারতে ॥* বলি রুধিরাক্ত অসি ফিরায়ে শিরেতে। হিন্দু-নরপালগণ কহেন ক্রোধেতে॥ বিক ক্ষত্রকুলে ধিক হিন্দুরাজ্বগণ ! **একেবারে বীর্য্যবলে দিলে বিসর্জ্জন** ? **জগৎবিখ্যাত কুলে জন্মিয়া ভারতে**। সমর্পিলে বাজ্ঞাদেশ বিপক্ষ-করেতে ? নারিলে বিধর্মিগণে রণে পরাজিতে। বুথায় মানব-জন্ম লাগিলে হরিতে। थाटक यनि वीर्यावन माख टर ममदत्र। হের ছষ্ট মেচ্ছদল আক্ষালন করে। পূৰ্বকালে মহীতলে ক্ষব্রিয়-মণ্ডল। প্রচণ্ড প্রভাপে রিপ কৈল করতল। সেই চন্দ্রন্থ্যবংশ-অবতংস হ'রে। শাস্তভাবে যাপ কাল বৈরি দও ল'রে॥ কেন তবে কুরুক্ষেত্রে কর তীর্থ জ্ঞান। কেন তবে নিজধর্মে কর অভিযান। কেন পর অসি চর্ম বর্ম শিরস্তাণ ? তুণ, ধহু, বীরধটি কেন পরিধান ? যদি এ ৰগতে যশ চাহ চিরকাল। ধনি চাহ এড়াইতে বিপক্ষ-জন্তাল। ষদি অকণ্টকে চাহ ভূঞ্জিবারে রাজ। এস হে সমরে সাজি রিপুজয়-সাজ। এস বাথি বাজাদেশ শাসি ধরাতল। (सथ ८ । इंश्वरं विश्वरं क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र क्रिक क्र क्रिक क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क কুপিল ধ্বনদল, তে য়েছে-মহীপাল. মারিবারে বিপক্ষেরে ক্রোধভরে চলিল। , হ'বে ক্রোধাবিত মন, দেখি হিন্দুরাজগণ, মহাক্রোধে রিপুদল সম্বেতে ভেটিল। কাঁপিল ধর্ণীতল, विन नमदानन. একেবারে শত শূর সমরেতে মাতিল। वाश्वकि हेनिन बारम, সংহ্নাদ ধ্মুর্ঘোষে, অসে ভল্ল বাণ থড়েল নভোদেশ ঢাকি**ল**। ধার অস্ত অগণন, চর্কর দর্শন, ভীষণ শ্রশান-সজ্জা রণভূমি সাঞ্জিল।

কাটা মুগু কাটা কর, কাটা পদ কাটা ধড়, গভীর শোণিত-মোতে শত শত ভাসিল। কেহ করে হাহাকার. কেহ করে মার মার. ভীম শব্দ কোলাহল বৰ্গ মন্ত্য পুরিল। হয়া রবে ডাকে শিবা, বায়দের উর্দ্ধ গ্রীবা, ভয়ক্ষর রণভূমি ঘোররূপে ঘেরিল ॥ ৰুধিরে বহিল ফেনা, মাতিল শমন সেনা, উৰ্দ্ধভাগে বিকট গুধিনীদল উড়িল। বাজিল তুমুল রণ, ছই পক্ষ বীরগণ. মরি বাঁচি পণ করি যুঝিবারে লাগিল। হারিল ধ্বন-দল, হিন্দুপকে কোলাহল, বিজয়-ছঙ্কার নাদে চরাচব পরিল। করি হিন্দুরাজ জয়, রণে রিপু পরাজয়. বীরবাছ সঙ্গে আসি আলিন্দন করিল। সর্বজনে সম্বোধিয়ে, निक शतिष्ठ मिए। অতঃপর বারবর আদি অন্ত কহিল। তথন ভূপতিগণ, মহাআমানিকত মন দিল্লীরাজ-সিংহাদনে অভিবেক করিল। যথাবিধি উপচারে. সভোষিয়া স্বাকারে সমূহ ভূপালে ভেট নানাবিধ ভেটিল। বিদায় লইয়া রায়, মহিধী-নিকটে ধাঃ বিরস-বিধুরা বামা নিরাসনে হেরিল। कां पिट्य (म विटनां पिनी. धत्वी नृष्टोद्य धन প্রাণেশ্বর-পদতলে কর যুড়ি নমিল। হাদরে হাদর ধরি সাদর সভাষ করি. পুলকিত-দেহে বীর প্রমদারে তুলিল। কাদিয়া তখন. হেমলতা কন প্রেমে গদগদ বাণী। আৰি সুপ্ৰভাত, **७**टर छानना পুন: দেহে এল প্রাণী॥ তিরোহিত করি অসুধ-শর্করী, সুথ-প্রভাকর চায়। হৃদয়-ভিতরে. পরাণে কি করে বঝিতে নারি হে রাষ্। এ বোড়শ মাস, ছিল অপ্রকাশ আজি হেরি দিনমণি। সরোবর ছের্মে चाहे (एथ (हरत्र, বিক্সিত ক্মলিনী॥ व्यहे छनि नाप আৰু অক্সাৎ, কৈকিল ঝন্ধার করে।

অপরণ শেভা ধরে ॥ ত কল্য প্রাত্তে, যান্যর সাক্ষাতে, প্রেছি অপার শোক। নাকি সেই জন, করি দরশন, প্রেতিছ পরমালোক ॥ নাই চক্রানন, করি দরশন, করি দরশন, করি দরশন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো॥ নাকি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো॥ নাকি প্রের কর ॥ নাম অভাগিনী, আল্লা-হ্রিনী, জানি নাকো তোমা বই। গমারি আলায়, এমন দলায়, করাদ্ধব পুরে রই ॥ নামারি আলায়, পুনন দলায়, করাদ্ধব পুরে রই ॥ নামারী দলায়, স্বী ক'জনার, দিখিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, দিখিলাম গাঁত-নাট ॥ নিন-মাঝারে, প্রবহি দ্বভালে। বে পরবাসে, মনের হতালে। বে পরবাসে, মনের হতালে। লোজন, উধাসন্ধ্যাকাল, দিরাছি প্রেথিছি মালা॥ ভান-আপারে, ফুল যোগাবারে,	অপরণ শেখা থবে ॥ ত কল্য প্রাত্তে, যাভার সাক্ষাতে, প্রেছি অপার শেখ । নাকি সেই জন, করি দরশন, প্রেছি পরমালোক । নাই চন্দ্রানন, করি দরশন, দিবস-রজনী গেলো। নাকি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো॥ নার প্রবিপাত, এই কব নাথ, জীবন সকল কব । নাথব তনন্ত্র, স্বদর-মাঝারে ধর ॥ নাম অভাগিনী, আজন-হ্রিনী, জানি নাকো তোমা বই । গমারি আলায়, এমন দশায়, স্বান্ধর পুরে রই ॥ গমারী দশায়, স্বীক জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, দিবিলাম গীত-নাট॥ নিব-মাঝারে, প্রথমে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশে, সাজারেছি ফ্লডালি। চামারি কারণে, মনের হতাশে, সহিত ধ্বনবালা। লে জল, উমাসক্রাকাল, দিরাছি গেথেছি মালা॥ চান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দালী-ভার ॥ কতবার, মুচিকণ হার, গীথিয়া স্ক্লের করি। লর তলে, বিধাতলে, ক্রেদিছি হ্লমে ধরি ॥	দালি ধুরাতলে,	নির্থি সকলে,
পেয়েছি অপার শোক। য়াজি সেই জন, করি দরশন, পেতেছি পরমালোক বিকানন, করি দরশন, দিবস-রজনী গেলো। য়াজি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো। য়রি প্রবিপাত, এই কব নাথ, য়ীবন সফল কব। য়েথর সময়, য়	পেয়েছি অপার শোক। য়াকি সেই জন, করি দরশন, পেতেছি পরমালোক য়াই চক্রানন, করি বিলোকন, দিবস-রজনী গেলো। য়াকি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোধ হ'লো॥ য়রি প্রবিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। য়েথব তনর, স্কার-মাঝারে ধর॥ বিম্নার আশায়, এমন দশায়, আবারব পুরে রই॥ য়ামারি আশায়, এমন দশায়, মবারবন, সহচবী সনে, দিবিলাম শিতপাঠ। থম যৌবনে, মনের হতাশে, সমারিকারবে, মনের হতাশে, সাজারেছি ফ্লডালি। বে পরবানে, মনের হতাশে, সাজারেছি ফ্লডালি। তান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, মাছিল আমার তার। বিলাম, ক্রিপ্রি মালা॥ ভান-আগারে, মাছিল আমার তার। মারিকারবে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার তার। মারিকারবে, ফ্ল যোগাবারে, মারিকারবে, ফ্ল বেলিকান, সহিমাছি দানী-ভার॥ করেনে, ম্বিকশ হার, প্রিধিয়া স্ক্লর করি। লর তলে, বিদ্বাছিল, বিস্বার্তনে, ক্রিদিছি হয়মে ধরি॥	,	ভাধরে॥
গান্ধি সেই জন, করি দরশন, পেতেছি পরমালোক । থই চন্দ্রানন, করি বিলোকন, দিবস-রজনী গেলো। গান্ধি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো। গান্ধি প্রতিক্রমন করা স্থবের স্থব্য করা করা। নিশ্ব তনম্ব, ক্রদর-মাঝারে ধর । গান্ম জ্ঞানি নাকো তোমা বই। গামারি আশার, এমন দশার, জ্ঞানি নাকো তোমা বই। গামারি মাঝার, এমন দশার, ক্রান্ধিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী সনে, শিশিলাম গাঁত-নাট। গাবন-মাঝারে, প্রপ্রে বিষম পালি। বে পরবানে, সালাহেছি ফ্লডালি । চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধ্রনবালা। লে জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিবাছি পেথেছি মালা। চান-আপারে, ফুল যোগাবারে,	রাজি সেই জন, পেতেছি পরমালোক ॥ বাই চন্দ্রানন, কিবি বিলোকন, দিবস-বজনী গেলো। নাজি সেই ধন, কাবা স্থবোগ হ'লো॥ নির প্রবিপাত, কীবন সফল কব। নিগেব তনম্ব, ক্রম্ব-মাঝারে ধর ॥ নিম অভাগিনী, জানি নাকো তোমা বই। গমারি আপার, ক্রমন্ব পুরে রই ॥ গমারী দশার, ক্রম্বন্ব পুরে রই ॥ গমারী দশার, ক্রম্বন্ব পুরে রই ॥ গমারী দশার, ক্রম্বন্ব প্রে রেই ॥ গমারী দশার, ক্রম্বন্ব করি । কর ভবে, ক্রম্বেজ্ব করি । কর ভবে, ক্রম্ব্রেজ্ব বি ॥ বি ধ্রাত্বে, ক্রম্ব্রেজ্ব করি । কর ভবে, ক্রম্ব্রেজ্ব বি ॥	ত কল্য প্রাতে,	্যাহার সাক্ষাতে,
পেতেছি পরমালোক । বেই চন্দ্রানন, কবি বিলোকন, দিবস-রজনী গেলো। য়াজি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো॥ য়রি প্রণিপাত, এই কব নাথ, য়ীবন সফল কব। য়েথব তনত্ত্ব, য়েথব সময়, য়	পেতেছি পরমালোক । বেই চন্তানন, কৰি বিলোকন, দিবস-রজনী গেলো। য়াজ সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবনাধ হ'লো॥ য়রি প্রবিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। য়েথব তনত্ত্ব, স্বদর-মাঝারে ধর॥ বিমান আজান-ছ্থিনী, জানি নাকো তোমা বই। গ্রমারি আলায়, এমন দশায়, শ্বামার পুরে রই॥ গ্রমারী দশায়, স্বী ক'জনায়, দিবিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, দিবিলাম গাঁত-নাট॥ বিব-মাঝারে, প্রবিভ ক্লডালি। বে পরবানে, মনের হতাশ্রে, সাজারেছি ফ্লডালি। তানারি কারণে, মনের হতাশ্রে, সহিত ধ্বমবালা। লৈ জল, বিশ্বিলিম ভার।। লৈ জল, দ্বামার ভার। গ্রমার করি। ফ্রমার করি। শ্বিকার, মুণ্ডিনন্দন, সহিয়াছি দানী-ভার॥ বিক্রার, মুন্ডিকণ হার, প্রিয়া স্ক্লের করি। লর তলে, বিশ্বিছা স্ক্লের করি। নর তলে, বিশ্বিছা স্কল্ব করি। নর তলে, বিশ্বিছাত্বন, বিশ্বিছা স্কল্ব করি। নর তলে, বিশ্বিছা স্কল্ব করি। নর তলে, বিশ্বিছা স্কল্ব করি। নর স্বেল্ব ক্রেম্বিছা নি ব্যাব্রমান স্কল্ব করি। নর স্বেল্ব করি। নি ব্যাব্রমান স্কল্ব করি। নর স্বেল্ব করি। নি ব্যাব্রমান স্কল্ব করি। নর স্বেল্ব করি। নর স্বেল্ব করি। নর স্বেল্ব করি। নি ব্যাব্রমান স্কল্ব করি। নি ব্যাব্রমান স্বর্মান স্বরমান স্বর্মান স্বর্মান স্	পেয়েছি অ	পার শোক।
মেই চক্রানন, কবি বিলোকন, দিবস-রক্ষনী গেলো। মাজি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো। মার প্রবিলাত, এই কব নাথ, করি প্রবিলাত, এই কব নাথ, করি প্রবিলাত, এই কব নাথ, করি প্রবিলাত, বহু কব নাথ, করিন সফল কব। মেথব তনম্ব, ক্রম্ব-মাঝারে ধর। বিম্নামি আলায়ি, আন্দ্রম-ত্রবিনী, ক্রানি নাকো তোমা বই। গামারি আলায়, এমন দশায়, করান্ধর পুরে রই। গামারী দশায়, প্রবান্ধর প্রের রই। গামারী দশায়, স্বী ক'জনার, নিধিলাম শিশুগাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, ক্রিলাম শিশুগাঠ। ব্যববানে, প্রবিল্লাম গাঁত-নাট। বে পরবানে, প্রবিল্লাম বি গামারি কারণে, মনের হতালো, সাজারেছি ফ্লডালি। ত্রান্ধ্রাকাল, বিবাছি প্রেপ্তিছি মালা। ত্রান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	মেই চক্সানন, কৰি বিলোকন, দিবস-রজনী গেলো। মাজি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোধ হ'লো॥ চরি প্রবিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। মথেব তনম্ব, স্বদ্ধ-মাঝারে ধর॥ যি অভাগিনী, আজন-হ্থিনী, জানি নাকো তোমা বই। গমারি আপায়, এমন দশায়, শ্বামব পুরে বই॥ গমারী দশায়, স্বী ক'জনাম, দিখিলাম শিশুগাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, দিখিলাম গাঁত-নাট॥ যিন-মাঝারে, প্রথবে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশো, সাজারেছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, মনের হতাশো, সাজারেছি ফ্লডালি॥ চানারি কারণে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার তার। মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিছাছি দানী-ভার॥ কতবার, মুহিকণ হার, প্রাথিয়া সুন্দর করি। লর তলে, বিশ্বছি ম্বাতনে, বেদ্বিছি মুন্মের করি। লর তলে, বিশ্বছি মুন্মের করি। লর তলে, বিশ্বছি মুন্মের বিল। বিশ্বছাত্বন, বিশ্বহাত্বন, বিশ্বছাত্বন, বিশ্বভাব্বন, বিশ্বহাত্বন, বেল্বনন, বিশ্বহাত্বন, বিশ্বহাত্বন, বিশ্বহাত		
দিবস-রঞ্জনী পেলো। য়াজি সেই ধন, করি দ্বশন, আবো স্থবোগ হ'লো। য়রি প্রণিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। য়েপব তনম্ব, স্বেপর সময়, স্কদর-মাঝারে ধর। ামি অভাগিনী, আল্লা-হ্বিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আলায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই। গমারী দশায়, সথী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী সনে, দিবিলাম গাঁত-নাট। াবন-মাঝারে, প্রপত্নে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশো, সাজারেছি ফ্লডালি। গামারি কারণে, য্বন-ভবনে, সহিত ধ্রমবালা। লৈ জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিবাছি পেথেছি মালা।। ভান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	দিবস-রঞ্জনী পেলো। য়াজি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোগ হ'লো॥ য়রি প্রণিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। য়েথব তনম্ব, স্বেম্ব সময়, স্বদ্ধ-মাঝারে ধর॥ ামি অভাগিনী, আল্লম-ত্র্থিনী, জানি নাকো তোমা বই। গ্রমারি আলায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই॥ গমারী দশায়, সথী ক'জনাম্ব, নিথিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী সনে, দিপিলাম গাঁত-নাট॥ াবন-মাঝারে, প্রথবে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশ্বে, সালায়েছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, মনের হতাশ্বে, সহিত ধ্বনবালা। লৈ জল, উমাসন্ধ্রাকান, দিরাছি প্রেণ্ডি মালা॥ চান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। াকতবার, স্থিয়া স্লেম্ব করি। লর তলে, বিশ্বিছ ম্বাডেল, ক্রিদ্ধি স্থব্যে ধরি॥		
মাজি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবনাগ হ'লো॥ চরি প্রনিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। নথেব তনম্ব, স্থেবর সময়, স্কদম-মাঝারে ধর॥ ামি অভাগিনী, আন্ধ্য-হ্রিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আপায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই॥ গামারী দশায়, স্বী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, দিবিলাম গাঁত-নাট॥ াবন-মাঝারে, প্রণহে ব্যম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশো, সাজাহেছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, য্বন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। বে জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিবাছি পেথছি মালা॥ চান-আপারে, ফুল যোগাবারে,	মাজি সেই ধন, করি দরশন, আবো স্থবোধ হ'লো॥ চরি প্রবিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। মথেব তনম্ব, স্থেব সময়, স্বদ্ধ-মাঝারে ধর॥ ামি অভাগিনী, আন্ধ্রা-মুখিনী, জানি নাকো তোমা বই। গমারি আপায়, এমন দপায়, শ্বামার পুরে রই॥ গমারী দপায়, সথী ক'জনায়, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, দিপিলাম গাঁত-নাট॥ বিন-মাঝারে, প্রথবে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবানে, মনের হতাপো, সাঞারেছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, মনের হতাপো, দিরাছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। বিক্রার, মুপতি-নন্দন, সহিরাছি দাসী-ভার॥ কতবার, মুচিকণ হার, প্রাধিয়া স্ক্রন্মর করি। লর তলে, বিশ্বিছা স্ক্রেবের। বির বিরাত্বন, বির বির বিরাত্বন, বির বিরাত্বন, বির বিরাত্বন, বির বিরাত্বন, বির বিরাত্বন, বির		
আবো স্থবোগ হ'লো॥ হবি প্রণিপাত, এই কব নাথ, ক্রীবন সফল কব। নথেব তনন্ধ, স্থেব সমন্ধ, ক্রদর-মাঝারে ধর ॥ ামি অভাগিনী, আন্ধ্য-হ্বিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আশান্ধ, এমন দশান্ধ, ক্রান্ধন পুরে রই॥ গমাবী দশান্ধ, স্বণী ক'জনান্ধ, শিবিলাম শিশুপাঠ। থম ঘৌবনে, সহচবী সনে, শিবিলাম গাঁত-নাট॥ গিন-মাঝারে, প্রণহে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশে, সাজাহেছি ফ্লডালি॥ গামারি কারণে, য্বন-ভ্বনে, সহিত ধ্বনবালা। লে জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, শিবাছি পেথেছি মালা॥ গান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে,	আবো কথবোগ হ'লো॥ হবি প্রণিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। নথেব তনন্ধ, সুথের সময়, হলর-মাঝারে ধর॥ ামি অভাগিনী, আন্ধন্ম-ছবিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আশায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই॥ গামারী দশায়, সথী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, প্রথমে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সান্ধারেছি ফ্লডালি॥ গামারি কারণে, মনের হতাশে, সহিত ধরমবালা। লে জল, উমাসন্ধ্যাকাল, দিরাছি প্রেছি মালা॥ গান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার তার। মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিন্ধছি দালী-ভার॥ কতবার, মুচিকণ হার, প্রাথিয়া স্কল্পর করি। লর তলে, বিশ্বছি হল্মে ধরি॥		
হবি প্রণিপাত, এই কব নাথ, কীবন সফল কব। নগেব তনম্ব, স্থেব সমন্ব, স্থান্দ্ৰ সমান্ত ধর ॥ ামি অভাগিনী, আন্দ্র-হ্বিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আলায়, এমন দশার, কার্মার পুরে রই ॥ গমাবী দশার, স্বী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম ঘৌবনে, শহিলাম গাঁত-নাট ॥ গিবন-মাঝাবে, প্রণহে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশে, সাজাহেছি ফ্লডালি ॥ গামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। লৈ জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, বিশ্বিছি প্রেথছি মালা॥ গান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	চরি প্রণিপাত, এই কব নাথ, জীবন সফল কব। নথেব তনম্ব, সুথের সময়, হলর-মাঝারে ধর॥ ামি অভাগিনী, আন্ধ্র-হ্বিনী, জ্ঞানি নাকো তোমা বই। গ্যমারি আপায়, এমন দশার, অবাদ্ধর পুরে রই॥ গমারী দশার, সবী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, প্রথমে তোমারে, দেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাপে, সান্ধারেছি ফ্লডালি॥ গমারি কারণে, মনের হতাপে, সহিত ধ্রমবালা। লৈ জল, উমাসন্ধ্যাকান, দিরাছি পেঁথেছি মালা॥ গান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার তার। নার কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দানী-ভার॥ কতবার, মুচিকণ হার, প্রাথিয়া স্কর্মর করি। লর তলে, বিশ্বছি হ্লমের ধরি॥		
জীবন সফল কব। নগেব তনম্ব, স্থেপর সময়, স্থাপর তনম্ব, স্থেপর সময়, স্থাপর সময়, স্থান আল্লান-হ্বিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আলায়, এমন দশায়, অবান্ধর পুরে রই॥ গেমারী দশায়, সথী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী সনে, দিখিলাম গাঁত-নাট॥ গিন-মাঝারে, প্রণমে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশো, সাজায়েছি ফ্লডালি॥ গামারি কারণে, য্বন-ভ্বনে, সহিত ধ্বনবালা। লে জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি পেথেছি মালা॥ ভান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে,	জীবন সফল কব। নেপ্ৰ তনন্ত্ৰ, স্থেব সময়, হলর-মাঝারে ধর ॥ ামি অভাগিনী, আঞ্চন-হবিনী, জানি নাকো তোমা বই। গমারি আশায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পূরে রই ॥ গমারী দশায়, সথী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী সনে, দিপিলাম গাঁত-নাট ॥ গিন-মাঝারে, প্রথমে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশে, সাঞ্চারেছি ফ্লডালি ॥ গমারি কারণে, মনের হতাশে, সহিত ধরমবালা। বে জল, উবাসন্ধ্যাকাল, দিরাছি পেঁথেছি মালা। ভান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। গরি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দালী-ভার। বি করে।র, শ্রহিকণ হার, প্রাথিয়া স্কল্পর করি। লর তলে, বিশ্বছি হ্লমে ধরি। বি ব্যাতলে, ক্রিদিছি হ্লমের ধরি। বি ব্যাতলে, বিদ্যাছি ব্যারে ধরি। বি ব্যারেলা, বি ব্যাতলে, বিশ্বছি হ্লমের ধরি। বি ব্যারেলা, বি ব্যাতলে, বিশ্বছি হ্লমের ধরি। বি ব্যারেলা, বিশ্বছি ব্যারের ধরি। বি ব্যারেলা, বিশ্বছি হ্লমের ধরি। বিশ্বরাতলে, বিশ্বছি হ্লমের ধরি। বিশ্বরাতলে, বিশ্বছি হ্লমের ধরি।		
দেশব তনন্ধ, স্থেপর সমন্ধ, স্থাপর তনন্ধ, স্থাপর সমন্ধ, স্থাপর পর ॥ ামি অভাগিনী, আন্ধ্য-হ্থিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আনায়, এমন দশার, অবান্ধর পুরে রই॥ গমারী দশার, স্থী ক'জনার, নিথিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী সনে, শিশিলাম গাঁড-নাট॥ গিন-মাঝারে, প্রণহে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বে পরবানে, মনের হতাশো, সাজারেছি ফ্লডালি॥ গামারি কারণে, য্বন-ভ্বনে, সহিত ধ্বনবালা। বে জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, বিশাছি পেথেছি মালা॥ গান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	দেশব তনন্ধ, সুথের সময়, হলর-মাঝারে ধর ॥ ামি অভাগিনী, আঞ্চন-ছবিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আশায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই ॥ গামারী দশায়, সথী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, নিধিলাম গাঁত-নাট ॥ গাবন-মাঝারে, প্রথমে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাঞ্চারেছি ফ্লডালি ॥ গামারি কারণে, মনের হতাশে, সহিত ধরমবালা। বে জল, উমাসন্ধ্যাকান, নিধাছি পেঁথেছি মালা॥ গান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার তার। মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দালী-ভার॥ কতবার, মুচিকণ হার, পাঁথিয়া স্ক্লের করি। লর তলে, বিশ্বছি হল্মে ধরি॥	_	
হৃদস-মাঝারে ধর॥ ামি অভাগিনী, আন্দ্র-ছ্বিনী, জ্বানি নাকো তোমা বই। গ্লারি আশায়, এমন দশায়, অবাদ্রব পুরে রই॥ চীমাবী দশায়, স্বী ক'জনায়, শিবিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী সনে, শিবিলাম গাঁত-নাট॥ াবন-মাঝারে, প্রণহে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাঝারেছি ফ্লডালি॥ গ্লারি কারণে, য্বন-ভ্বনে, সহিত ধ্বনবালা। লে জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, শিরাছি পেঁথেছি মালা॥ গ্লান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	হৃদর-মাঝারে ধর ॥ ামি অভাগিনী, আন্ধ্য-হ্বিনী, জ্ঞানি নাকো তোমা বই। গ্যমারি আলায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই ॥ চামারী দশায়, সবী ক'জনার, শিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, শহচবী সনে, শিধিলাম গাঁত-নাট ॥ চামন-মাঝারে, প্রণরে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাপে, সাঝারেছি ফ্লডালি ॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। লে জল, উমাসন্ধ্যাকাল, শিরাছি পেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। নার কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কতবার, মুচিকণ হার, প্রাথিয়া স্ক্লর করি। লর তলে, বিশ্বছি হ্লম্বে ধরি॥		• • •
ামি অভাগিনী, আন্দ্র-ছবিনী, জানি নাকো তোমা বই। গমারি আশায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই॥ গমারী দশায়, স্বাধী ক'জনার, নিথিলাম শিশুপাঠ। গম বৌবনে, শহচবী সনে, শিশিলাম গাঁত-নাট॥ গিব-মাঝারে, প্রণয়ে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাভায়েছি ফ্লডালি॥ গমারি কারণে, য্বন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। লৈ জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি পেঁথেছি মালা॥ গান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	ামি অভাগিনী, আৰুন-হ্ৰিনী, জানি নাকো তোমা বই। গামারি আশায়, এমন দশায়, অবাদ্ধন পুরে রই॥ চীমাবী দশায়, সবী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, শহচবী সনে, শিশিলাম গাঁত-নাট॥ চীন-মাঝারে, প্রণয়ে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাজারেছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। লে জল, উমাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি পেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। বি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কতবার, শ্রহিশ হার, গাঁথিয়া স্ক্লর করি। লর তলে, বি ধরাতলে, ক্লৈদেছি হ্লম্মে ধরি॥	•	, ,
জানি নাকো তোমা বই। চামারি আশায়, এমন দশায়, অবাদ্ধর পুরে রই॥ চামারী দশায়, স্বী ক'জনায়, নিথিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, শিপিলাম গাঁত-নাট॥ চাবন-মাঝারে, প্রণয়ে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাজায়েছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, য্বন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। বে জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি পেঁথেছি মালা॥ চান-আপারে, ফুল যোগাবারে,	জানি নাকো তোমা বই। চামারি আলায়, এমন দশায়, অবাদ্ধন পুরে রই॥ চামারী দশায়, সথী ক'জনার, নিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, দিপিলাম গাঁত-নাট॥ চান-মাঝারে, প্রণয়ে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাজারেছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। লে জল, উমাসন্ধ্যাকাল, দিরাছি পেঁথেছি মালা॥ চান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার তার। মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কতবার, মুচিকণ হার, গাঁথিয়া স্কল্মর করি। লর তলে, বিশ্বছিতল, কেন্দৈছি হয়য়ে ধরি॥		
শ্বনাদ্ধৰ পূবে বই ॥ চীমাৰী দশায়, স্বী ক'জনায়, দিখিলাম শিশুপাঠ । থম বৌৰনে, সহচৰী সনে, দিশিলাম গীত নাট ॥ চীবন-মাঝাবে, প্ৰথমে তোমারে, সেবেছি ধ্ৰম পালি । বৈ প্ৰবাসে, মনেৰ হতাশে, সাজাগেছি ফ্লডালি ॥ চীমাৰি কাৰণে, য্বন-ভ্ৰনে, সহিত ধ্ৰমবালা । লৈ জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি পেঁখেছি মালা ॥ চীন-আপারে, ফুল যোগাবাবে,	শ্বনাদ্ধন পুরে বই ॥ होমাবী দশায়, স্থী ক'জনার, দিখিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, শিশিলাম গাঁত-নাট ॥ চাবন-মাঝাবে, প্রণান্ধ তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাঝারেছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধবনবালা। বেল জল, উমাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কতবার, শ্বিকশ হার, গাঁথিয়া স্থলর করি। লর তলে, বিস ধরাতলে, কেঁদেছি হ্লম্মে ধরি॥		
শ্বনাদ্ধৰ পূবে বই ॥ চীমাৰী দশায়, স্বী ক'জনায়, দিখিলাম শিশুপাঠ । থম বৌৰনে, সহচৰী সনে, দিশিলাম গীত নাট ॥ চীবন-মাঝাবে, প্ৰথমে তোমারে, সেবেছি ধ্ৰম পালি । বৈ প্ৰবাসে, মনের হতাশে, সাজাগেছি ফ্লডালি ॥ চীমারি কারণে, য্বন-ভ্ৰবনে, সহিত ধ্ৰমবালা । লৈ জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি পেঁখেছি মালা ॥ চীন-আপারে, ফুল যোগাবাবে,	শ্বনাদ্ধন পুরে বই ॥ होমাবী দশায়, স্থী ক'জনার, দিখিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, শিশিলাম গাঁত-নাট ॥ চাবন-মাঝাবে, প্রণান্ধ তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাঝারেছি ফ্লডালি॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধবনবালা। বেল জল, উমাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কতবার, শ্বিকশ হার, গাঁথিয়া স্থলর করি। লর তলে, বিস ধরাতলে, কেঁদেছি হ্লম্মে ধরি॥	_	
শিধিলাম শিশুপাঠ। থম যৌবনে, সহচবী পনে, শিপিলাম গাঁত-নাট ॥ ।। ।। ।। ।। ।। । । । । । ।	শিধিলাম শিশুপাঠ। থম বৌবনে, সহচবী সনে, শিপিলাম গাঁত-নাট ॥ ।। ।। ।। ।। ।। ।বে পরবাসে, মনের হতাশে, সালাবেছি ফ্লডালি ॥ ।। ।বা লল, উষাসন্ধ্যাকাল, শিশ্পাছি পেঁণেছি মালা ॥ ।বান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । ।বার কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিন্নাছি দাসী-ভার ॥ । কতবার, স্থাধিলা স্থলর করি। লর তলে, বিশাছি হ্মমে ধরি ॥	• অবান্ধব পু	রে রই॥
থম যৌবনে, সহচবী সনে, শিপিলাম গাঁত-নাট ॥ াবন মাঝারে, প্রণমে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বৈ পরবাসে, মনের হতাশে, সাঞারেছি ফ্লডালি ॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধ্রমবালা। লৈ জল, উধাসন্ধ্যাকাল, শিরাছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আপারে, ফুল যোগাবারে,	থম যৌবনে, সহচবী সনে, শিপিলাস গাঁত-নাট ॥ াবিন-মাঝারে, প্রণরে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, সাঝারেছি ফ্লডালি ॥ চামারি কারণে, ফবন-ভবনে, সহিত ধবনবালা। বেল জল, উধাসন্ধ্যাকাল, শিরাছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার। মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কতবার, স্থাধিরা স্কর করি। লর তলে, বিশ ধরাতলে, কেন্দেছি হ্লম্মে ধরি॥	होमाची मनाग्र,	সধী ক'জনায়,
শিপিলাস গাঁত-নাট ॥ । বিন-মাঝারে, প্রণমে তোমারে, দেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, সাঝারেছি ফ্লডালি ॥ । চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধরমবালা। বেল জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ । তান-আপারে, ফুল যোগাবারে,	শিপিলাস গাঁত-নাট ॥ । বিন-মাঝারে, প্রণরে তোমারে, পেবেছি ধরম পালি। বে পরবাসে, মনের হতাশে, সাঝারেছি ফ্লডালি ॥ । বামারি কারণে, ফ্লনেডবনে, সহিত ধরমবালা। বাল জল, ডিবাসন্ধ্যাকাল, শিয়াছি গেঁণেছি মালা। । তান-আপারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । । বার কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার। । কতবার, স্থাতিকণ হার, পাঁথিরা স্থলর করি। লর তলে, বিস ধরাতলে, কেন্দেছি হ্লম্মে ধরি।।		শিশুপাঠ।
াবন-মাঝারে, প্রণয়ে তোমারে, সেবেছি ধরম পালি। বৈ পরবাসে, মনের হতাশে, সাঝারেছি ফ্লডালি। চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধবনবালা। বল জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা।। চান-আপারে, ফুল যোগাবারে,	াবন-মাঝারে, প্রণ্ডে তোমারে, সেবেছি ধ্রম পালি। বে প্রবাসে, মনের হতাশে, সাঝারেছি ফ্লডালি। চামারি কারণে, ফ্লন-ভবনে, সহিত ধ্বমবালা। (লে জল, উমাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁণেছি মালা। চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার তার । মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার। ক্রবার, স্থাচিকণ হার, গাঁথিয়া সুন্দর করি। লর তলে, কেদেছি হ্লম্মে ধরি।		
পেবেছি ধ্রম পালি। বৈ প্রবাসে, মনের হতালে, সাজারেছি ফ্লডালি ॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধ্বনবালা। বল জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	সেবেছি ধ্রম পালি। বৈ প্রবাদে, মনের হতাশে, সালারেছি ফ্লডালি ॥ চামারি কারণে, ফ্লন-ভবনে, সহিত ধ্রমবালা। লৈ জল, উ্বাসন্ধাকাল, নিয়াছি পেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ বিক্তবার, ফুচিকণ হার, পাঁথিয়া সুন্দর করি। লর তলে, বিদ্যাভলে, কেন্দেছি হ্লম্মে ধরি॥		
বে পরবাদে, মনের হতাশে, সাজারেছি ফ্লডালি ॥ চামারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ববনবালা। (লে জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি পেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	বে পরবাদে, মনের হতাশে। সাঞ্চারেছি ফ্লডালি । চামারি কারণে, ফবন-ভবনে, সহিত ববনবালা । লৈ জল, উবাসন্ধাকাল, নিয়াছি পেঁথেছি মালা ॥ চান-আগারে, ফ্ল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । মারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার ॥ া কতবার, স্থাচিকণ হার, পাঁথিয়া সুন্দর করি । লর তলে, বিদ ধরাতলে, কেঁদেছি হ্লম্মে ধরি ॥		
সাঞ্চারেছি ফ্লডালি। চানারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ববনবালা। (লে জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	সাঞ্জাবেছি ফ্লডালি। চানারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ববনবালা। লৈ জল, উবাসন্ধাকাল, নিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগাবে, ফ্ল যোগাবাবে, আছিল আমার ভার । গারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কিন্তবার, স্ফুচিকণ হার, প্রাথিয়া সুন্দর করি। লর তবে, ব্দি ধ্রাতেলে, কেন্দেছি হ্রম্মে ধরি॥		
চানারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ববনবালা। (লে জল, উনাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	চানারি কারণে, যবন-ভবনে, সহিত ধবনবালা। লৈ জল, উবাসন্ধাকাল, দিরাছি প্রেথেছি মালা॥ ভান-আগারে, ফুল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । গারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ বিক্তবার, ফুচিকণ হার, প্রাথিয়া সুন্দর করি। লর তবে, ক্রেদ্ছে হ্রম্মে ধরি॥		
সহিত ধ্বনবালা। (লে জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ ভান-আগারে, ফুল যোগাবারে,	সহিত ব্যনবালা। [লে জল, উ্বাসন্ধ্যাকাল, দিরাছি গেঁথেছি মালা॥ চান-আগারে, ফুল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । বারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ বিক্তবার, ফুচিকণ হার, পাঁথিয়া সুন্দর করি। লর তলে, বিদ ধরাতলে, কেঁদেছি হ্রম্মে ধরি॥		,
्ल कन, उपानकाकान, निवाहि (अर्थिह माना॥ ठान-चाशारत, कृत (यांशायारत,	লে জল, উধাসন্ধ্যাকাল, দিরাছি গেঁথেছি মালা॥ তান-আগারে, ফুল যোগাবারে, আছিল আমার ভার । গারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ া কতেবার, স্ফুচিকণ হার, গাঁথিয়া স্থ্যুর করি। লর তবে, কেন্দেছি হ্যুম্যে ধরি॥	•	
ठान-जानाटन, क्न त्यांनाताटन,	তান-আগারে, ফুল যোগাবারে, আছিল আমার তার। নারি কারণ, নুপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-তার॥ কিতৰার, স্ফুচিকণ হার, গাঁথিয়া স্থলর করি। লর তলে, বিদ ধরাতলে, ক্লৈদ্ধি ভ্রম্যে ধরি॥		
	আছিল আমার ভার। নারি কারণ, নৃপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাসী-ভার॥ কিতৰার, স্থাচিকণ হার, সাঁথিয়া স্থলর করি। লার তলে, বসি ধরাতলে, কেঁদেছি হ্যুমে ধরি॥	निश्रीहि (१	বৈছি মালা॥
অহাভিল আনুষাৰ ভাৰ ।	ণারি কারণ, নৃপতি-নন্দন, সহিয়াছি দাদী-ভার ॥ বিতৰার, স্থানিফা স্থলর করি। বির তলে, বুসি ধরাতলে, কেন্দেছি হ্যুমে ধরি ॥	তান-আগারে,	क्न (यांगावादत,
	সহিষাছি দাসী-ভার॥ া কতৰার, সুচিকণ হার, গাঁথিয়া সুন্দর করি। শর তলে, বসি ধরাতলে, কেন্দেছি হুন্নমে ধরি॥	আন্ছিল আ	_
	া কতৰার, স্থচিকণ হার, গাঁথিয়া স্থলর করি। শর তলে, বসি ধরাতলে, কেনেছি জ্বয়য়ে ধরি॥		
	পাঁথিয়া স্থলার করি। লর তলে, বসি ধরাতলে, কেঁদেছি জয়য়ে ধরি॥		_
	লর তলে, বসি ধরাতলে, কেঁদেছি জ্যুয়ে ধরি॥		
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	्कॅटम क् ख्रयटम थति ॥		_
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		´	
	ল সফল, আজি মহাবল,	ें मक्त,	
ৰ সফল, আজি মহাবল,	মিটেছে মনের সাধ।	-	নের দাধ।

এখন বাসনা. খুচাৰ কুলের বাদ।। রাজার বনিতা. রাঞ্চার ছহিতা, ৰনম ক্সিয়-কুলে। क्ति प्रमान, অশুচি যবন. ধুরিয়া আনিল চলে॥ তোমার মহিমা, আমার গরিমা. টুটিল আমারি তরে। সমূলে বিনাশি. সে কলম্বরাশি, যশ রাখি কিতিভ'রে॥ তোমার প্রের্গী. ভোমার মহিধী, ষেই নারী হ'তে চার। অহে মহাভাগ. অণুমাত্র দাগ, নাহি যেন থাকে তায়॥ করিব প্রাণেশ, খনলে প্রবেশ. খুচাও বেদনা তব। মনের গৌরব. কুলের সৌরভ, প্ৰাণ দিয়ে কিনি লব॥ সতী পতিব্ৰতা, নারী হেমলতা. ঘুষিবে ভূবনতম। নিয়ত সকলে, জুপত্তি-মণ্ডলে, বলিবে ভোমার अग्र॥

এত বলি নন্দনের চন্দ্রানন চেরে।
অঞ্চণারা পড়ে হেমলতা-গও বেরে॥
প্রমদার সাহজার ভারতী শুনিরা।
প্রমদার গণিল বীর বিষাদ ভাবিরা॥
কথন বাথানে মনে প্রেরসী-ক্রদর।
কথন অন্তরে হয় করণা উদর॥
কভু থেদে পূর্বকথা করিরা অরণ।
প্রমদারে আালিছিয়ে করেন রোদন
নানামত বাকের বীর সান্ধনা করিল।
তথাপি প্রেরসীপণ অন্তথা নহিল॥
মোহাবেশে নরপত্তি লীরব হইলা।
পতিরে প্রণমি রামা কাতরে চলিলা॥
প্রবেশি মহিলাপুরে স্বী সংঘাধনে।
তৃষি দিলী-রাক্কন্তা প্রেম-আালিছনে॥

"এত দিন ছই জনে ছিলাম খজনী। অভাৰ্ধি একাকিনী পোহাবে রজনী।

আজি আর প্রিয়স্থী অভাগিনী তবে। বাগিতে হবে না নিশি কাতৰ অন্তবে ॥ विमाग्र सनग्राथ (पठ आजिसन । আজি স্থী পাপদেহ করিব পতন । অকলত কুলে কালী রাখিব না আর। ঘুচাইব বল্লভের কুষশের ভার॥ চিতার দহলে দেহ খণ্ডচি শুধিব। ভ্ৰমণ্ডলে ক্ষত্ৰকুল-খ্যাতি প্ৰকাশিব॥ श्रियमिथ धक्यां कि कि निर्देशन। মার সম সেহে শিশু করিছ পালন।" বলিতে বলিতে আঁথি করে ছল ছল। **অনর্গল রাজকভা** চক্ষে বহে জল। ध्यमी-প্रতিका छनि. अखदत विशास शति. मिलीयत-कन्ना आजि मथा-करत धडिन। "এমন বিষম পণ, প্ৰজনী বে কি কাৰণ. কে তোমারে হেন কথা বল দেখি বলিল। প্রাণপতি আজি তোর. সংহার করিয়া চোর. মিটাইতে মনসাধ তোর পাশে আসিল। ৰঝিবারে তার মন, ভাই কি করিলি পণ. এত কটে তাঁর ভাগ্যে এই ফল ফলিল। ছি ছি দৰি এ কি কথা. দিও না রে এত ব্যথা. निषद रहेश गरे नवाकारत जुला ना। चार्ड (मध्यामा व'रन. শিশু তোর আদে চ'লে. উহারে জনমশোধ পরিহার করে। না॥ স্থি, রাজ্ভান্ময়, সবে তোমা সতী কয়. পরিচর দিতে আর হবে নাকো ভোমারে।

ৰে ভাবে রিপুর খরে. সাহিংল পরাব ধারে त्मरे कथा विविधित चुर्वित्व अ मःमाद्य ॥ चक्रनि, विनग्न कृति, **बहे त्मथ होटल** धनि এ বিষম পণে আর মনে স্থান দিও না। ক্ত্ৰকুল-চড়ামণি, তাঁকে শোক দিয়া ধা ভারতের লোকে **আ**র বিপাকেতে ফেলো না তুমি কৈলে তছত্যাগ, রাজপুত্র মহাভাগ সংসারে বিরাগ করি রাজ্যপদ তা**ভিবে**। পুনঃ হিন্দ-রাজগণে. মেচ পরাজিবে রা পুনর্কার এই রাজ্য করতল করিবে॥ তাই বলি তাজ পণ. वाज-कार्या (नर म পতিসহ দিল্লীরাজ-সিংহাসনে বসিয়া। প্ৰজাৱ পালন কর. রিপ-অভয়ার ন রাথ ধরাতলে নাম মেচ্ছদল শাসিয়া ॥" এইরূপে নানামত. সাখনা করিয়া ক ঘুচাইল হেমলতা-প্রাণনাশ-বাসনা। দিলীরাজ-কন্তা-সনে, रतिय-विशाम-मा পতিপাশে ধীরি ধীরি চলিলেন ললনা ॥ বীরবাছ হর্ষন, श्रमाद्य चारि করি রাজপুত্রগণে নিমন্ত্রিয়া আনিলা। দকলের অনুমতি. পাইয়া সানক। (क्बलका मान किश्वी-मिश्हामान विमात। নগৰে উৎসৰ লোকেতে আনন্দময়. वीत्रवाङ ब्रांक्शतः काश्चिविक रहेन । রতিরূপ পর্কা হেমলতা বামপাশে. অর অর কোলাহলে চারিশিক পরিল।

রত্র-সংহার

প্রথম খণ্ড

প্রথম সর্গ

বসিহা পাতালপুরে কৃত্ত দেবগণ,---নিত্তৰ বিষৰ্বভাব, চিন্তিত, আকৃল, নিবিড় ধুমান্ধ যোর পুরী সে পাতাল, নিবিভ মেখাড়খরে বথা অমানিশি। ৰোজন সহস্ৰ কোটি পৱিধি বিস্তার---বিস্তুত সে রুসাতল, বিধনিত সদা---চারিদিকে ভরত্বর শব্দ নির্ভাব **নিম্বুর আবাতে খতঃ নিরুত** উথিত। বসিয়া আদিত্যগণ তম: আঞ্চাদিত ৰলিন নিৰ্মাণ ৰখা সূৰ্য্য ত্বিয়াম্পতি. রাছ ববে রবিরথ গ্রাসমে অমরে; কিংবা সে রজনীনাথ হেমন্ত-নিশিতে কুৰ্খটিমণ্ডিত যথা হীন দীপ্তি ধরে, পাণ্ডুবৰ্ণ, সমাকীৰ্ণ পাংগুবৎ তত্ত্ :---ভেমতি অমরকাত্তি ক্রান্ত অবয়বে। ব্যাস্থল বিমর্বভাব ব্যথিত অন্তর অদিতি নম্মনগণ বসাতলপুরে, স্বর্গের ভাবনা চিত্তে ভাবে সর্বাক্রণ---কি**রূপে** করিবে ধ্বংস তুর্জ্বর অসুরে। চারিদিকে সমুখিত অক্ট আরাব, অংশে গেবৰুন্দ-মূথে বহে গাঁচ খাস.---ৰটিকার পুর্বেধে বেন বায়ুর উচ্ছাস ব**হে বুড়ি চারিদিক্** আলোডি সাগর। সে আফুট ধানি ক্রমে পূরে রসাভল চাকিলা বিদ্ধুর নাদ গভীর নিদাদে ; क्रिका भक्तीत चरत-- मृक्षभरथ राम একলে জীমৃতবুল মঞ্জিল শড়েক---

মহাতেকে স্থারবুকে সম্ভাষি কহিলা:--"জাগ্রত কি দানবারি স্থরবুন্দ আজ ? জাগ্ৰত কি অস্বপন দৈত্যহারী দেব ? দেবের সমরকান্তি যুচিল কি এবে ? উঠিতে সমর্থ কি ছে সকলে এখন ? হা ধিকৃ। হা ধিকৃ দেব। অদিতি-প্রস্ত। সুরভোগ্য সর্গে এবে দছুকোব বাস। নির্কাদিত স্থরগণ রদাতল-ভূমে, (क्त-नामिकां वर्ट मचन नियाम. আন্দোলি পাতালপুরী, তীব্র ঝডবেগে।" দেব-দেনাপতি স্থল উঠিয়া তথন অবসর, তেজ্ঞান্ত, অশক্ত, অলম ! "इर्किनौड, स्ट्राव्यो मञ्च अखान পবিত্র অমরধাম কলক্বিত আজ অঞ্জর অমর শুর স্বর্গ-অধিকারী দেববুন্দ স্বরম্র পডিয়া পাডালে, প্রাক্ত কি হইলা সবে । কি বোর প্রমান। চিরসিদ্ধ দেবনাম খ্যাত চরাচরে, 'অসুরুমর্কন' আখ্যা—কি হেত হে তবে অবসন্ন আজি সবে দৈত্যেব প্রতাপে গ চিরবোদা,-- চিরকাল যুবি দৈতা সহ ৰুগতে হুইলা.শ্ৰেষ্ঠ সৰ্বাত্ত পূৰিত আজি কি না দৈতাভৱে আদিত সকলে আছে এ পাডালপুরে অমরা বিশ্বরি! কি প্রভাপ দমুক্তের কি বিক্রম ছেন, শক্তি সকলে যাহে স্বীৰ্যা পাস্ত্রি ? কোথা দে শুরুত আজি বিজ্ঞী দেবের শভবার রণে বার দহুজে দলিরা : शिक्रित ! भूगी मूक क कृक कारत

96

এত দিন-আছ এই অন্ধর্তম পুরে,
দেবও, ঐথর্য্য, স্থা, অর্গ ডেরাগিয়া,
দাসত্বর কলক্ষেতে ললাট উজলি।
ধিক্ হে অমর নামে, দৈতাভ্তরে বদি
অমরা পশিতে ভর এতই পরাণে,
অমরতা পরিণাম পরিশেবে বদি
দৈত্য-পদাদিত পুঠ চির-নির্মাসন।
বল হে অমরগণ—বল প্রকাশিয়া
এইরপে চিরদিন থাকিবে কি হেথা ?
চির-অন্ধতম পুরী এ পাতাল দেশে,
দহজের পদচিহ্ন ললাটে আঁকিয়া ?"
কহিলা পার্মতী-পুত্র দেব-সেনাপতি।

কহিলা পাৰ্বতী-পদ্ৰ দেব-সেনাপতি। দেবগণ বিচলিত করিয়া প্রবণ কাঁপিতে কাঁপিতে ক্রমে সক্রোধ-মবতি, নাসারদ্ধে বহে খাস বিকট উচ্ছাসে। ষণা দগ্ধগিরি-স্রাব উদিগরণ আগে. অগ্নির ভগরে ধম সতত নির্গমে. ঘন জলকন্স, ঘন কন্সিত মেদিনী: পাৰ্কতা-নদান-বাকো সেইক্লপ দেবে। তুলিয়া স্বপষ্ঠে তথ, পাশ শক্তি ধরি, উঠিয়া অমরবুল চাহি শক্তপানে, প্ন: পুন: খরদৃষ্টি নিক্ষেপি ডিমিবে. ছাডিতে লাগিল ঘন হুচুক্ষার। সর্বাত্যে অনলমন্তি—দেব বৈশানর প্রদীপ্ত কুপাণ করে উন্মন্ত স্বভাব কহিতে লাগিল ক্ৰত কৰ্কশ-ৰচনে. ক্ষুলিক ছটিল বেন ঘোর দাবাগ্লিতে। কহিলা, "হে দেনাপতি। এ মণ্ডলী-মাঝে কোন ভীক অছে হেন ইচ্ছানহে বার অমর-নিবাস স্বর্গ উদ্ধারিতে পুন: ? পুনঃ প্রবেশিতে তার খবেশ ধরিয়া ? দানবে যুঝিতে, আর কি ভর এখন ? ভীরুতার হেতু আর আছে কি হে কিছু, অমরের ভিরস্কার প্তর যতেক षटिटह रमद्वत छोट्या रेमव-विषयन। वर्ग-व्यव्यातम् मर्खाः व्यव्यातम् कातः অতশ গভীর সিন্ধ—তাহার অধোতে. অন্ধতম পুরী এই বিষম পাতাল, তাহে এবে দৈত্য-ভব্নে লুকান্বিত স্বে। হঃধে বাস-ধ্যমন গাচতর তমঃ

মুহুর্তে মুহুর্তে খন খন প্রকম্পন, সিদ্ধ-নাদ শিরোপরি সদা নিনাদিত শরীর-কম্পন হিমন্ত,প চারিদিকে। এ কট অনুষ্ঠকাল মগ-মগাস্তবে ভঞ্জিতে ১ইবে দেবে থাকিলে এখানে. যত দিন প্রলয়ে না সংহার-অনলে অমর-আতার ধ্বংস হয় পুনর্কার। অথবা কণ্টী হয়ে চলাবেশ ধরি দেবের ঘণিত চল ধর্ততা প্রকাশি. ত্রিলোক-ভিতরে নিতা হইবে ভ্রমিতে মিথাক-বঞ্চকবেশে নিতা প্রবাসী। নিৰ্ভাব মনে হয় কাপটা প্ৰকাশ হয় পাছে কার (ও) কাছে চিত্ত জাগবিভ বিষম জঃসহ চিকা ঘণা লভাকর সভত কত্ই আবোহনবে যন্ত্ৰী সে কাপটা ধরি প্রাণে জীবন যাপন শ্বীব-বহন আবে, জুর্গতির শেষ, ৰবঞ্চনিবয়-গতে নিয়ত নিবাস শ্ৰেষ্ত্ৰৰ শত্ৰণ ভিনি সে শঠতা। অথবা প্রকাশভাবে হইবে ভ্রমিতে চতর্দ্ধ লোক নিলা সহি অবিরত. শক্ত-তিবস্থাৰ অঙ্গে অলঙাৰ কৰি. কপালে দাস্ত চিফ করিয়া লাঞ্ছিত। যথন জকুটি করি চাহিবে দানব. কিংবা দে অঙ্গলী তলি বান্ধ উপহাসে দেখাইবে এই দেব স্বর্গের নায়ক. শত নরকের বহিং অস্তরে দহিবে। অথবা বৰ্জিত হয়ে দেবত আপন থাকিতে হইবে স্বর্গে—মার আছে বথা, অমুর-উচ্ছিষ্ট গ্রাসি পুষ্ট-কলেবর, অসুর-পণাক্ষ-রঞ্জ ভূষণ ম্থাকে। ু তার চেয়ে শতবার পশিব গগনে প্রকাশি অমর বীর্যা, সমরের প্রোতে ভাসিব অনস্কাল দত্ত-সংগ্ৰামে. দেৰৱক্ত হত দিন না হইবে শেষ[†]। অমর করিয়া সৃষ্টি করিলা যে দৈবে পিতামহ প্রাসন-স্থমন্স খাতি, ব্ৰহ্মাণ্ডভিতরে যারা সর্বাগরীয়ান. অদৃষ্টের বশে হার তাদের এ গতি : দেবলম লাভ করি অদৃটের বশ্

বুত্র-সংহার

ভবে সে দেবছ কোথা হে জ-মর্ক্সগণ ?
দেব-অস্থাখাতে নহে দানব-বিনাশ,
সে দেববিজমে তবে কিবা দলোদর ?
নিরতি খতঃ কি কড় অন্তর্কুল কারে ?
দেব কি দানব কিংবা মানব সন্তান ?
সাহসে বে পারে তার কাটিতে শৃঞ্জ,
নিরত কিরুর তার শুন দেবগণ ।
ধর শক্তি, শক্তিধর, হও অগ্রসর,
ভাঠা, শক্তি, তিন্দিপাল, দেল, নাগপাশ,
অরবৃন্দ অরতেজে কর বরিষণ,
অদৃষ্ট থওন করি সংহার অম্বরে।"

কহিলা দে ছতাশন সৰ্ব্য-অঙ্গে শিখা প্রজ্ঞানিত হৈল তেজে পাতাল দহিয়া. অগ্নির বচনে মত্ত আদিভা-সকলে ছটিল হস্কার শক্ষেপিবি রসাতল। একেবারে শত দিকে শত প্রহবণে. কোটি বিজ্ঞলীর জ্যোতি: খেলিতে লাগিল। পাতালের অন্ধকার ঘুচায়ে নিমিষে **८मथारेल ठांतिनिटक ट्यां**खिर्यय ८५२। তথ্ন প্রচেতা মর্জ্যে বরুণ বিখ্যাত উঠিল গম্ভীরভাব, ধীর মৃত্তি ধরি, পাশ-অসু শ্রুপরে হেলাইয়া যেন. উন্মত্ত জলধিজন প্রশাস্ত করিল। দেথিয়া প্রশাস্ত-মৃত্তী দেব প্রচেতাব নিন্তর অমরগণ, নিন্তর বেমন ক্মিগ্ধ বস্তুদ্ধবা, যবে ষটিকা নিবাৰে ত্রিরাত্রি তিদিব। ঘোর হর্কার ছাড়ি। কহিল। প্রচেতা ধীর গম্ভীর বচন: --"তিষ্ঠ দেবগণ ক্ষণকাল শাস্তভাবে হেন প্রগলভতা কভু নহে ত উচিত. এ ঔদ্ধত্য অলমতি প্রাণীরে সম্ভবে। যুদ্ধে দৈত্য বিনাশিখা স্বৰ্গ উদ্ধারিতে অনিচ্ছা কাছার দৈত্যবাতী দেবকুলে গ কে আছে নার্কী হেন দেব-নামধারী ৰিক্ষক্তি করিবে ছেন পবিত্র প্রস্তাবে ? তথাপি প্রতিজ্ঞা-বাক্য-উচ্চারণ আগে উচিত ভাবিয়ে দেখা ফলাফল ভার: সামাঞ্চের (ও) উপদেশ শুভপ্রদ কভু, আনীর মন্ত্রণাক ভুনাহর নিকল। कि क्ल क्षिक्का कित्र विकल यश्रित ?

স্ক্ৰন-হাস্থাম্পদ হয়ে কিবা ফল 👂 অসিদ্ধ-প্রতিজ্ঞ লোক অনর্থ প্রলাপি নমস্ত জগতে, কার্য্যে সুদিদ্ধ হৈ জন। অনেক মহাত্মা বাক্য কহিলা অনেক, কার্যাদিদি নহে ওধ বাক্য-আডম্বরে. कामध-निर्दाय कर्ण প्रावरमत चारेश. শরলকাধরাশায়ী হয় শরাঘাতে। দেব তেজ. দেব-অস্ত্র দেবের বিক্রম. বার বার এত যার কর অহস্কার. এত দিন কোথা ছিল স্বস্থুরের সনে যঝিলে যথন রণে করি প্রাণপণ ? কোথা ছিল সে সকল যবে দৈত্য শূল নিক্ষেপিল স্থরবৃদ্ধে এ পুরী পাতালে ? সমর্থ কি হয়েছিলা করিতে নিজেজ তুৰ্জন বত্ৰের হস্ত দেব-অস্থাঘাতে ? ष्मञ्ज तमरे, वीधा तमरे, तमरे तमर्गन, অক্ষ অসুর (ও) দেই সুপ্রদল্ল বিধি এখনো বক্ষিছে তারে অনিবার্য তেতে, কি বিখাদে পুন: চাহ পশিতে সংগ্রামে ? ভাগ্য নাই। ভাগধের মৃতের প্রকাপ। मारुम बाहार मना (महे जागायत । তবে কেন ইন্দ্রবাণ-তেজঃ ছনিবার অক্ষত-শরীরে দৈত্য ধরিলা বক্ষেতে গ কেন ইজ সরপতি সর্বরণজ্ঞী দমুক্তম্দিন নিতা, শলের প্রহারে অচেতন রণখনে ২ইলা আপনি. চেডন-বিরতি যার নহে ক্ষণকাল ? কেন বাদে ইন্দ্র আজি নিয়তির ধ্যানে: সম্ভল করিয়া দচ প্রাপাচ মানসে. কুমেক শিখরে একা কাটাইছে কাল,---কেন স্থরপতি রুখা এ ধ্যানে নিরত গ দেবগণ, মম বাকা আকর্ত্তবারণ যত দিন ইক্র আসি'না হয় সহায়. অগ্রে কোন দেবতার করুন উদ্দেশ, পশ্চাৎ যুদ্ধ-কল্পনা হবে সমাপিত।" বঙ্গণের বাক্ষ্যে স্থ্যদেব বিষাম্পতি উটিলা প্রথরতেকা—কহিলা দবেগে—

"বক্তব্য আমার অত্যে **ওন সর্ববন্ধ**, ' ভাবিও দে বৈধাবৈধ বা**হুনীয় দে**ছে।

विक्रमण कीराखंड मिर्क्त समन्

चिति निम्मन श्रेष विश्व-चार्यान অনখর দেববীর্ব্য, শরীর অক্ষর, नर्ककारन, नर्करनारक श्रीनक अ वाह। অসুর অচিরস্থায়ী অদৃষ্ট অন্থির, **हक्न मामविष्ठ द्रिश्-श**द्रवन ; यशी मित्र (कह नट्ट हित खाडावह ; ক্ষোৎসাহ প্রভাজ অনিত্য সকলি, नर्जकारन नर्जरनारक कान उथा वहे, তুরুল্প দানব ভবে কভ কাল সবে তুর্বার সমবক্ষেত্রে স্থরবীর্ব্যানল. কত কাল রবে দৈত্য সে রণে তিষ্টিয়া ? वय हैका सुद्रदन हुद्रस जाहरत. नंदर दर बानवकृत जीम जेशाखल, বুণে বুণে কল্লে কল্লে নিড্য নিরন্তর অনুক গগন ব্যাপি অনন্ত সমর, জনুক দেবের তেজ অমরা বেরিয়া, **অহোরাত্র অ**বিপ্রান্ত প্রথর শিখার ; দছক দানবকুল দেবের বিক্রমে পুদ্রপরস্পর। ঘোর চিরপোকানলে। **हित्रपुरक्ष रेम्छानन इंहेर**व वाथिछ. না জানিবে কোন কালে বিপ্রামের হুও. নাৰিৰে ভিষ্টিতে স্বৰ্গে দেব-সন্নিধানে. হইবে অমর-হন্তে পরান্ত নিশ্চিত। चम्हे এछहे विम त्रमन मानद्र, কোন বুগে নাহি হয় যুদ্ধে পরাজিত, ভুঞ্ক অদৃষ্ট তবে তিক্ত আখাদনে চিরবুদ্ধে স্থরতেকে দানব তুর্যতি। ধিক লজ্জা! অমবের এ বীর্যা থাকিতে. নিষ্টকে খৰ্গভোগ করে বুত্তাস্ত্র ! হুখে নিড্ৰা বাৰ নিড্য দেব উপেক্ষিরা— चर्न-वित्रहिष्ठ (नव. हिस्तांत्र वार्कृत ! নাহিক বাদর হেথা দত্য বটে তাহা, কিছ বদি পুরন্দর জারো বচ্যুগ প্ৰভ্যাগভ নাহি হন, 'দৰে কি এখানে এই ভাবে ব্ববে সবে চির-জন্ধকারে গ চল হে আদিভাগণ প্রবেশি শুক্তেতে, দৈত্যের কণ্টক হরে অমরা বেটিরা দগ্ধ করি বৈত্যকুল, যুগ যুগকাল, যুদ্ধের অনস্তবহি জালারে অগরে। স্বর্গের সমীপবভা পর্বভ-সমূহে

শিশরে শিথরে জাগি শস্ত্রধারিবেশে সুশাণিত দেব-অস্ত্র নিত্য বরিষণে দ্বস্তুক্রের চিত্তপান্তি ঘচাই আহবে।"

নহুৰের চিত্তশাক খুচাং আহবে।
কহিলা এতেক স্থা, ৰাটকার বেপে
চারিদিক্ হ'তে দেব ছুটতে লাগিল,
উপিত বালুকা মথা, যথন মকতে
মন্ত প্রজন্ধন রলে নৃত্য করি কেরে।
কিংবা মথা যবে বোর প্রলম্নে ভীবন,
সংহার-অনলে বিশ্ব হরে ভশাকার
উড়ে অস্তরীকপথে দিগস্ত আছ্লাদি,
তেমতি অমরবুল বেরিলা ভাষরে।
সকলে সম্মত শীঘ্র উঠি ব্যোমপথে,
বৈষ্টিগ্গা অমরবেতী অরাত্তি অদিবা,
চিরসমরের স্রোতে ঢালিয়া শরীর,
দেবনিলাকারী চুই অস্তরে ব্যথিতে।

দ্বিতীয় সর্গ

হেথা ইন্দ্রালয়ে নন্দন-ভিতর পতিসহ প্রীতিম্বধে নিরন্তর, দানব-রমণী করিছে ক্রৌডা।

রতি ফুলমালা হাতে দের তুলি, পরিছে হরিবে ম্বনাতে তুলি, বদন-মণ্ডলে ভাগিছে বীড়া।

মদন-সজ্জিত কুসুম-আসন, চারিদিকে শোভা করিছে ধারণ, বিভিত্ত সৌন্দর্য্য স্থরভিষয়।

হাসিছে কানন ফ্লশব্যা<u>ট্</u>পরি স্থানে স্থানে যেন মৃত্তিকা-উপরি ক্তই কুমুম-পালক্ষ্পরর ॥

কত ফুল-ক্ষেত্ৰ চারিদিকে শোভে, মূলি ব্রান্ত হয় কারি হেরি গোভে, ব্রেথেছে কন্দর্প করিতে থেলা।

বসন্ত আপনি স্থমোহন বেশ, সূটাইছে পূপা কন্ত সে আবেশ, হয়েছে অপূৰ্ব্ব-শোভার মেলা॥ দানবী-সদশী ঐজিলা দেখানে, শোভাতে মোহিত বিহুলিত প্রাণে, ফুলে ফুলে ফুলে করিছে কেলি।

করিছে শালন কভু পারিজাতে,
মৃত্ল মৃত্ল সুশীল বাতে,
মৃদিয়া নামন কুসুমে হেলি॥

ৰসিছে কথন অহুরাগভরে, ইন্দিরা-কমল-পর্যান্ত-উপরে, দৈত্যপতি হাসে গারণে বদি।

হাসে মনস্থথে ঐক্রিণা স্বন্দরী, রতিদন্ত মালা করতলে ধরি, বসনবন্ধন পড়িছে থদি॥

মৃষ্টিমান্ছর রাগ করে গান, রাগিণী ছত্তিশ মিলাইছে তান, সমীত-তরকে পীযুষ ঢালি।

খরে উদ্দীপন করে নবরস, পরশ, আআণ, সকলি অবশ, অবশ-ইন্সির-ব্যাপত থালি॥

অনে রতিপতি সাকাইরা বাণ, কুমুম-ধন্মতে সু-ঈবৎ টান, মুচকি মুচকি মুচকি হাসি।

নাচে মনোরমা স্বর্গ-বিভাধরী, কল্মপ-মোহন বেশ-ভ্বা পরি, বিজ্ঞাস-মুরিৎ-ভরকে ভাসি।

এইরপে জীড়া করে দৈত্য সনে, কৈন্তাভাষা স্থাধ নদন-কাননে, বুজাস্বর স্থাধ বিহনন-প্রায়।

ধরি অনুরাণে পতি-করতন,
কহে দৈত্যরামা নয়ন চঞ্চন,
হাব ভাব হাদি প্রকাশ তায়—

"শুন দৈতোখর, শুন শুন বলি, বুণা এ বিলাগ বুণা এ সকলি, এশুন (ও) আমরা বিজেগা নয়। বিশিত বে জন, বিশ্বরিচরণ, নাহি বদি সেবা করিল কথন, সে হেন বিজয়ে কি ফলোদর ?

তুমি খৰ্গপতি আজি, বৈত্যেখর, আমি ভব প্ৰিয়া থ্যাত চরাচর, ধিক্ লজ্জা তবু সাধ না পুরে।

কটাক্ষে ভোষার আশু প্রাণ্য বাহা, তব প্রির নারী নাহি পান ভাহা; তবে সে কি লাভ থাকি এ পুরে ?

শ্বরংবরা হয়ে করেছি বরণ, হেরিয়া ভোষাতে সহেক্রলকণ, ইচ্ছাময়ী হব জদরে আশ।

ৰে ইচ্ছা ৰথন ধরিবে জদর, তথনি সফল হবে সমূদর, জানিব না কারে বলে নিরাশ॥

তালি নিকত্ন গদ্ধ ছাড়িয়া, বরিলাম তোমা বে আলা করিয়া, এবে সে বিফল হইল তাহা।

নিজ্ঞা বাসনা স্থদৰে ৰাহাৰ, কিবা অৰ্গপুৰী কিবা মৰ্ত্তা আৰু, যেথানে সেধানে নিয়ত হা হা॥

কিবা সে ভূপতি কিবা সে ভিথারী, কাকালী সে জন বেথানে বিহারী, প্রাণের সৃষ্ঠতা খুচে না কভু।

পতিত্বে বরণ করিয়া তোমায়, তবু সে বাসনা প্রিল না হায়, আমায়া (ও) এ দশা ঘটিল তবু॥

ভাগ ভেবে বৃদি বাসিতে হে ভাগ, সে বাসনা পূৰ্ব হ'ত হুত হাল, সহিতে হ'ত না লালসা-আলা।

ভাগৰাসা এবে কিসে বা জাগাই, দিয়াছি বা ছিল সে বৌবন নাই, ভালবেসে বেসে হয়েছি আলা ৷ ইন্দ্রাণী যদি দে করিত বাসনা, না প্রিতে পল প্রিত কামনা, মরি দে ইন্দ্রের লয়ে বালাই।

প্রণন্ধী যে বলে প্রণন্ধী ত সেই, না,চাহিতে আগে হাতে তুলি দেই, সে প্রণয়ে এবে পডেছে ছাই ॥"

বলিয়া নেহারে পতির বদন,
আবাধ ছল ছল চলে তুনয়ন,
আহতিমানে হাসি জড়ায়ে রয়।

শুনি দৈত্যেশ্বর বলে ধীরে ধীরে,
"কি বলিলে প্রিয়ে বল শুনি ফিরে,
প্রেয়সী নারীর এ দশা নয় ?

কি দোবে ভংগনা করিছ আমার, না দিরাছি কহ কিবা সে তোমার, অদের কিবা এ জগতী-মার ?

দিয়াছি ৰূগৎ চরণের তলে, কৌস্তুভ বেমত মাণিকমণ্ডলে, তুমিও তেমতি নারীতে আৰু॥

কে আছে রমণী তুলনা ধরিতে, বিজ্ঞব ঐথর্ব্য গোরব থ্যাভিতে, ভোমার উপমা কাহাতে হয় ?

হ্মার কি লালসা বল তা এখন আছে কিবা বাকী দিতে কোন্ধন, কি বাসনা পুনঃ হুদে উদয় ?"

কহিল ঐক্রিলা "দিয়াছ যে সব, জানি হে সে সব বিভব-পৌরব, তবু সর্ব্বজন-পূজিতা নই।

মণিকুলে যথা কৌজজ মহৎ, নারীকুলে আমি ভেষতি মহৎ, বল'দৈতাপতি হয়েছি কই ?

এখনও ইক্সানী জগতের মাঝে, গৌরবে তেমনি স্থেতে বিরাজে, এখনও আয়ত হ'লো না সেই। শ্বর্গের ঈশ্বরী স্বামি দে ধাকিঙে, কিবা এ শ্বরগ কিবা সে মহীতে, শচীর মহন্ত ভূলে না কেহ॥

রতিমূথে আমি ভনিত্ন সে দিন, সুমেক এখন হরেছে প্রীহীন, শচীর সৌক্র্য দেহে না ধরি।

ইন্দ্ৰাণ্ডি ধথন আছিল এখানে, অসর-সুন্দরী সকলে সেখানে, থাকিত হেমাদ্রি উজ্জল করি॥

শুনেছি না কি সে পরমা রূপদী, বড় গরবিণী নারী গরীমদী, চলনে গৌরব ঝরিয়া পড়ে।

গ্ৰীবাতে কটিতে ক্ষাবিত **উ**রদে, কিবা সে বিবাদ কিবা সে হরবে, মহন্ত যেন সে বাঁধে নিগড়ে॥

শচীরে দেখিব মনে বড় সাধ,

ঘূচাইব চক্ষু-কর্ণের বিবাদ,

আমার চিত্তের বাসনা এই।

থাকিবে নিকটে শিপাবে বিলাস, ধরিব অঙ্গেতে নবীন প্রকাশ, ভূলাতে তোমারে শিথাবে সেই॥

আসিবে বতে অনুষ্ঠ নারী, শচী সঙ্গে অংশ দিবা বৈশুক্তি, অমর-কৌতুক শিখারে

बहे वाक्षा किर्छ छन देवछान्नि, मठी कांनी हरद राविरद रन बिछ, इस कि ना नुनः खरमक कारना ॥

ওনে বৃত্তাস্থর ঈষৎ হাসিয়া, কহিল ঐজিলা-নমনে চাহিয়া, "এই ইচ্ছা প্রিয়ে হলে ডোমার ?"

বলিয়া এতেক দানব-ঈখন, কন্দর্পে ডাকিয়া বিজ্ঞানে সম্বন, "কোথা শুচী এবে করে বিহার।" কৃষিণ কন্দুপ্ মুখে চির-হানি, "অমর। বিহনে এবে মর্ত্ত্যবাসী, নৈমিব-জরণ্যে শচী বেড়ার।

সক্ষে প্রিয়তমা সধী অন্ত্রগত, প্রমে অরণ্যেতে ত্বংথেতে সতত, না পেরে দেখিতে অ্যের-কার॥

কটে করে বাঁদ শচী নরলোকে, ইন্দ্র, ইন্দ্রালয়, ইন্দ্রতের শোকে, অন্তরে দারুণ ছঃধত্তাশ।"

তনি দৈত্যপতি কছিলা, "মুন্দরি, পাবে শচীসহ শচীসহচরী, অভিরে তোমার প্রিবে আশ ॥"

ঐক্রিলা ভনিয়া সহর্ব হইলা, অধরে মধুর হাসি প্রকাশিলা, পত্তি-কয় স্বথে ধরে অমনি।

হাসিতে হাসিতে কলপ আবার, ধহুকে ঈঘৎ করিল টফার, শিহুরে দানব দৈত্যুরুমণী॥

পুন: ছন্ন রাগ রাগিণী ছত্তিশ, গীত-বৃষ্টি করে ভূলে আশীবিষ, নব নব রস বিভাস করি।

পুন: সে ইন্দ্রির অবশ সঙ্গীতে, অ্থুপ্র-অস্থরী শুনিতে শুনিতে, ্ চমকে চমকে উঠে শিহরি॥

কভূ বীর-রদে ধবিছে স্নতার, দানব উঠিছে করি মার মার, আবার সমরে পশিছে ধেন।

অমর নাশিতে ধরিছে ত্রিশ্ল, আবার বেন সে অমরের কুল, বিনাশে সংগ্রামে ভাবিছে ছেন॥

কথন করুণা সরিতে ভাসিয়া, চলেছে ঐক্রিলা নয়ন মৃছিয়া, কথন অপজ্য-ক্ষেত্তে ভোর, বেন সে কোলেতে হেরিছে কুমার, অনমুগে খতঃ বহে কীরধার, এমনি আদিব-সঙ্গীত ঘোর॥

কছু হাত্মরস করে উদীপন, কোথায় বসন কোথায় ভূষণ, ঐক্রিলা উল্লাসে অধীর হয়।

ক্ষণে পড়ে ঢলি পতির উৎসংক, ক্ষণে পড়ে ঢলি কুলদল-ক্ষলে, উৎফুল্ল বদন লোচনবয়॥

সমনি অপার। হইয়া বিহলে, চলে ধীরে ধীরে তহু চল-চল, নেত্র করতল অলকা কাঁপে।

ঈবৎ হাসিতে অধর অধীর, অঙ্গুলী-অঞ্জেতে অঞ্চল অভ্রির, টানিয়া অধ্রে ঈবৎ চাপে॥

চারিদিকে ছুটে মধুর ত্থাস, চারিদিকে উঠে হরৰ উচ্ছাস, চারিদিকে চারু কুকুম হাসে।

পেলে রে দানবী দানবে মোহিয়া, বিলাস-সরিৎ-তরকে ভ্রিয়া, প্রমোদ পাবনে নন্দন ভাসে ॥

তৃতীয় দর্গ

উঠিছে দানবরাজ নিজা পরিহরি
ইজালরে, শশব্যক্ষে নানাজ্রর ধরি,
দানব, গন্ধকি, যক ছুটিয়া বেড়ায়,
গৃহ পথ রথ অব সম্বর সালায়;
সালায় স্থলর করি • পুঁপানারা দিয়া
গ্রাক গৃতের বার শোভা বিস্থাসিয়া;
উড়ায় প্রানাদ-চুডে দানব-পতাকা—
শিবের ত্রিশ্ল-চিহ্ শিবনাম আঁকা।
ঘন করে শশুকানি, ঘন ভেরীনাদ;
চালিদিকে অক শব্ম ঘন ঘোর হাদ।

শিপরে শিথরে বাজে চুন্তি গভীর: খন খন ধছাৰ্ঘোষে গগন অভিৱ। हेम्सालय विरलाफिक स्रोबरवर सार्थः জয়শব্দে চরাচর মেরুশীর্য কাঁপে। বাদবের বাদগৃহ গুগুন যুডিয়া, হিমান্তিভগর তলা আছে বিস্তারি**রা**। ক্টাকের আভা তার ফটিয়া পডিছে. হিমানীৰ রাশি খেন আকাশে ভাগিছে। হাবদেশে ঐবাবত হল্মী সমজ্জিত. স্বসজ্ঞিত পূপাবথ দারে উপন্ধিত। ইন্দ্রপরীশোভাকর সভার ভবন, কৰেব সাজায় আনি বিবিধ ভ্ৰণ; সাবি সারি মণিকান্ত সাজাইছে তার. সাজাইছে পুস্পদাম চন্দ্ৰাতপ গায়। হায় বে সে ইন্দাসন বসিত যাহাতে বাসব অমরপতি, রাথিছে তাহাতে মন্দার-প্রপেব গুচ্চ করিয়া যভন, দানৰ আসিয়া খাণ কৰিবে গ্ৰহণ। ইন্দেব মক্ট দণ্ড আমনি জভগতি বাখিছে আসম-পার্থে ভয়ে যক্ষপতি, সভাতেলে বাগ্যন্ত প্ৰস্তুত কবিয়া অটক কিমুরগণ দেখিছে চাহিয়া। আতত্তে প্রবেশ-ঘারে ,—বিছাধবী যত ;— উর্বাণী মেনকা বজা ঘতাটী বিনত ---বদন-ভ্ৰমণ পৰি দকলে প্ৰস্তাত. কেবল নর্ত্তন বাকী বাদন-সংহত। সমবেত সভাতলে করি ষোড়কর. অপেরা, কিল্লব, যক্ষ, সিদ্ধ, বিভাগর। সমবেত দৈতাবৰ্গ সদীৰ্ঘ শৰীৰ---হেনকালে শঋগুনি হটল গল্পীর : অমনি সুৰয়ে বাত বাজিল মধব: অমনি অপারা-পায়ে বাজিল নুপুর: পুরিল সুধার দ্রাণে সভার ভবন : বহিল অমরপ্রিয় সুর্ভি প্রন। প্রবেশিল সভাতলে অসুর চুর্জার: চারিদিকে স্বতিপাঠ জয় শব্দ হয়। ত্রিনেত্র, বিশালবক্ষ, অতি দীর্ঘকায়, বিলম্বিত ভজ্বর দোতলা গ্রীবার পারিজাত-পুশহার বিচিত্র শোভার। নিবিড় দেহের বর্ণ মেঘের আন্তাস:

পর্বতের চড়া হেন সহসাপ্রকাশ, নিশান্তে গগনপথে ভাতর চটায়।---ব্রুবাস্থর প্রকাশিল তেমতি সভায়। জ্রকৃটি করিয়াদর্পে ইন্দ্রাসন'পরে विश्व का शिव शह देवजा-दाहरूदा । মন্ত্রীরে সম্ভাষি দৈতা কহিলা তথন :---"স্থমিত হে। ভীষণেরে করছ প্রেরণ অচিরে অবনীতলে, নৈমিষ কাননে: ভামে শনী সে অৱশ্যে ভববামা সনে . আসুক শ্বরগপুরে অমরা সকলে. যে বিধানে পারে কহ আনিতে কৌশলে। কৌশলে নাসিছ হয় প্রকাশিবে বল: ঐ নিলাব অভিলাষ করিব সফল। বড লঙ্ভাদিলা কাল ঐদিলা আমারে — শঙী ভ্রমে স্বতন্ত্রা না সেবি তাহারে। ক্ষমিতা, সভার কার্যাকর সম্পাদন, ভীষণে নৈমিষারণ্যে, করত প্রেরণ।"

নৈত্যেক্স বচনে মন্ত্রী কহিলা স্থমিত ,—

"মহিনী-বাহ্নিত যাহা কিবা সে বিচিত্র !
তব আজা নিরোধার্য্য দহকের নাথ,
নৈমিয়-ক্সরংগ্য দৈত্য যাবে অচিরাং ।
নিবেদন আছে কিছু দাসের কেবল,
আন্দেশ পাইলে পদে জানাই সকল॥"

দৈত্যেশ কহিলা- "মান্তি, কহ কি কহিবে
অহিদিত বুত্রাস্থরে কিছু না থাকিবে।"

কহিলা স্থমিত, তবে "শুন দৈত্যনাথ, অমর পশিছে স্বর্গে করিতে উৎপাত , কহিলা প্রহরী যারা ছিলা গত নিশি, দেখেছে দেবের জ্যোতি প্রকাশিছে দিশি। অতি শীঘ্র বোধ হয় দেবতা স্বর্গত্বল। এ সমর ভীষণেরে প্রেরণ উচিত হয় কি না দৈত্যপতি ভাবিতে বিহিত, সামান্ত বিপক্ষ নহে জান দৈত্যপতি, কঠোর সে অমরের যুদ্ধের পদ্ধতি। দিবারাত্রি কণকাল নহিবে বিশ্রাম, ছর্দম বিক্রমে সরে করিবে সংগ্রাম, বত বোধা দানবের হবে প্রয়োজন, এ সমরে উচিত কি ভীষণে প্রেরণ দু"

শুনিয়া হাসিলা বত্তান্তর দৈভোখর: কহিলা, "প্রলাপ না কি কহ মন্ত্রির গ আসিবে সমরে ফিরে অমর আবার , এ অৰ্থাক্থামন্তি বচিত কাভাব গ দানবের ভয়ে স্বর্গ পথিবী ছাডিয়া. লকায়িত আছে সবে পাতালে পশিরা। সাধ্য কি দেবের পুনঃ হয় স্বর্গম্থ, যাক ৰুত কাল আবো ঘচক সে তথ। দৈত্যের প্রহার অঙ্গে যে করে ধাবণ, ফিরিবে না যতে আর কখন সে জন। ্যত্রাস্থ্র থাকিতে, সে সৈক্ত দেবভার সর্গের দিকেও কভ চাহিবে না আর। বোধ হয় প্রতীহারী, রক্ষক যাহারা, অন্ত কিছ শন্তপথে দেখেছে তাহারা---হয় কোন উদ্ধা কিংবা নক্ষত্ৰ-পত্ন. নিদ্রাঘোরে শরুপরে করেছে দর্শন।"

কহিল। স্থমিত্র, "দৈত্যপতি, অঞ্চরপ বিললা প্রহবিগণ, কহিলা স্বরূপ। গগনমার্গেতে দেব-অন্দের আতাস দেনি য়াছে হানে হানে জ্যোতির প্রকাশ। বসক-প্রধানে তাকি জ্ঞাসা করিলে, বিদিত হইবে সর্বাস্থকণে শুনিলে।"

দৈত্যেশ-আদেশে আদে বক্ষক-প্রধান দাড়াইল সভাস্থলে পর্বত-প্রমাণ। কহিলা, দানবপতি, "কছ, হে ঋকভ, কি দেখিলা গত নিশি কিবা অস্তত্ত্ব ?"

কিংলা থকত দৈতা "ত্বন দৈত্যনাপ,
কিংলা থকত দৈতা "ত্বন দৈত্যনাপ,
কিংলা থকত দৈতে "ত্বন দৈত্যনাপ,
দিকে দিকে চাবিধাবে ঈ্ষং প্রকাশ,
জ্যোতির্দ্ম দেহ বেন উজলে আকাশ!
নক্ত্র উল্লাৱ জ্যোতিঃ নহে সে আকার।
নম্ম না হইন কভু ক্লকাল তার,
চিনিলাম দেব-অক-জ্যোতিঃ সে আভার।
কটতে লাগিল ক্রমে ক্রমে দশদিশে,
নতক্ষণ অক্ষকার অংততে না মিশে।
দেখিলাম কত হেন সংখ্যা নাহি তার,
উঠিছে আক্শে-প্রাত্তে বের চারিধার,
বহু দ্বে এখন (ও) সে অ্যাতির উদ্ধান
দেবতা ভাগাৰ ক্রিক ক্রিয় নিশ্চর।"

ব্রতাম্বর বিজ্ঞাসিলা ঘুচাতে সন্দেহ. *डेटमाड कामधनाम अनिना कि कि ? ইন্দ্ৰ বদি সলে থাকে অবশ্য সে পানি **ক্ষ**রিতে পাইত সর্গে সকলে তথনি।" কহিলা ঋকভ, "অক্ত দানৰ যতেক, ইজের কোদওখননি না ভনিলাএক ." তথন দানব-ইন্দ্র ব্রাস্থর কয়---"দেবতা আসিছে সত্য, কিবা তাহে ভয়? একবার অস্থাবাতে পাঠাই পাতাল. এইবার একেবারে ঘুচার জ্ঞাল। ইন্দ্র সলে নাই, যুদ্ধে পশিছে দেবতা, বাতল হয়েছে তারা কি ঘোর মুর্থতা। সকল করিত অগ শুন দৈত্যকল সভল্ল করিছ হের স্পশিষা তিশল— সুর্যোৱে রাখিব ক'রে বথের সার্থি. চন্দ্র সন্ধ্যামুখে নিভা যোগাবে আরতি, প্রন ফিরিবে সদা সন্মার্জনী ধবি. অমবার পথে পথে রজঃ সিগ্ন করি। বৰুণ বঞ্জক-বেশে অন্মতের সেবিবে. **দেবসেনাপতি স্কল পতাকা ধরি**বে. নিৰ্ভয়ে সকলে নিজ নিজ স্থানে যাও. স্থমিত্র, নৈমিধারণো ভীষণে পাঠাও।" কহিয়া এতেক বত্রাসর দৈত্রাপতি, সভা ভালি সমেকর দিকে কৈলা গতি। এখানে ত্রিদিব জড়ে ছটিল সংবাদ. স্বৰ্গপুৱী পূৰ্ব করি হয় দিংহনাদ। বাঞ্চিল তুন্দভিগ্ননি শিপরে শিথরে. কোদজ-টভাৱে যেন গগন শিহরে। প্রাচীরে প্রাচীরে উড়ে দৈত্যের পতাকা, শিৰের ত্রিশল-চিহ্ন শিব নাম আঁকা। महा दकानांहरन अर्ग देशन मर्नाइन, সাজিল দানবসাজে দানব সকল। বুত্রাম্বর-পুত্র বীর রুড্রপ্রীড় নাম, স্থপ্ত দান্ব-কুলে, দেখিতে স্থঠান। **कृषिक नगाउँ एमम,** विमान छे द्रम. ৰালকোল ভ'তে যার অদীন সাহস. সভিভত মাণিক গুচ্চ কিরীট-শীর্ষে, দেবতা আসিছে যুদ্ধে শুনিয়া হরষে, স্থমিত্রের করে ধরি, কত সে উল্লাস,

উৎসাত-ভিলোলে ভাসি করিল প্রকাশ.

মহাযোদ্ধা বৃত্তপুত্ৰ, পূৰ্কের সমরে, লভিলা বিপুল যশ: মুঝিরা অমরে। আবার আসিছে বুদ্ধে দেবতা সকল. শুনিয়া উৎসাহে মত হৈলা মহাবল। চলিলা মন্ত্রীর সহ আপন আলিয়ে, ष्यार्त्नाविद्या नाना कथा युष्कत्र विवरत । অর্গন্ধারে বারে চলে দৈত্য মহারথী, হঠ্যক বিপুৰবক্ষ পূৰ্বে কৈলা গতি। ঐরাবণী বল যার ঐরাবণ প্রায়, পশ্চিমে চলিলা বেগে নদী খেন ধার। শঙ্খবন্ধ দৈত্য--্যার শঙ্খের নিনাদে অমর কম্পিত হয়—উত্তর আচ্ছাদে। দক্ষিণেতে সিংহজটা—সিংহের প্রভাপ- -চলিলা তুর্মধ দৈত্য ভরকর দাপ। স্বর্গের প্রাচীরে ক্রমে দৈত্য কোটি বন-जीवन-- रेनियवांतरण कतिना भयन ।

চতুর্থ দর্গ

অমর মরণ নাই. विजय देनिय-वरन শায়াকে স্থীর সনে, শচী কচে স্থীরে চাহিরা। व (वर्ष (इन धीरीन, বল আবু কত দিন. থাকিব লো এ ভাবে পড়িয়া। অনন্ত হৌবন লয়ে, চপলা, ডু:থেছে অভি, না হেরে অমরাবতী. আছি এই মানব-ভূবনে। জাগে নিত্য সেই কথা, না ঘটে মনের বাধা. পুন: কবে পৰিব গগৰে॥ নর্ভাগ ভাগ স্থী. সে কথা ভূলিতে চাই, ় ৰূপনে বছপি ছাই. . দেৰের খপন নাহি আসে। অন্ত্ৰিন অঞ্কণ, हिन्द्र भक्ष करत्र काहा, **জাগ্রতে নির্থি যাহা.** • প্রাণে যেন মরীছিকা ভাগে॥ বরং সে ছিল ভাল. সভত বেড়াৰ আঁচে, নয়নের কাছে কাছে, স্বরগের মনোহর কারা। मुष्टिभर्थ चाविर्काव, সকলি তেমতি ভাব, কিছ জানি সে সকলি ছায়া। কিছুক্ষণ সুখে ভবু, ্ৰান্তি ৰদি হ'ত কভু, ্ৰাকিতাম বাতনা ভূলিয়া।

(मरवंत्र क्लांटन कारे পোড়া মনে ভ্ৰান্তি নাই, বিধি সত্তে অভান্ত করিয়া॥ তবে বা জড়াত প্রাণ অমৃত করিলে পান. দে উপায় নাহিক এখন। নিবদি এ ভূমওণ किन्नरं 5नेना वन. চিরতঃথে করিয়া বাপন । থাকি যেন করাগারে মানবের এ আগারে, পরিষা নিখাস নাহি পড়ে। আই ঢাই করে আং অতি গাটতর বায়ু, বুক ধেন নিবন্ধ নিগড়ে॥ কোথাও নাহিক পাঃ নয়ন দিৱাতে ঠাঁই. मम (वन मिल्पर्थ (हरक। চারিদিক বহিন স্থথে নাহি দৃষ্টি হয়, का श्राम (त्राव्याक् त्वन त्याक ॥ পায়ে বাজে নিতি নিং ভার। এ মাটীর কিতি. भिना (यन कर्छात्र कर्नम । ভনিতে না পাই ভাল, শব্দ যেন সর্বাকা कर्वमूटन अधिका-भर्भ॥ কেমনে শরীর রার্ এ ক্ষদ্র কিভিতে থাকি, मधी दा मकलि द्रथा पूल। নিতাএ ধর্বতাজান. আকুল করে প্র কেমনে বা বাচে নরকুল। কত কাল ভাবি তা এত কষ্টে এথানে থাকিব। ষথনি ভাবি লো সই. তথনি তাপিত ং চিরদিন কেমনে স্থিব॥ ইন্দ্রের বনিতা হা ভোগ করি স্বর্গবাস-মুধ। ক্রিপে থাকিব হেথা. হইগা অনন্ত-চে নৱলোকে সহিয়া এ তথ। মৃত্যু হয় বিষ গ अदिरल इः स्थेत व्यवनान । নিডাহীন অব' कत्न ना त्ना जात्वत्र भवान। নাহি যদি কোন ক দেখিতাম খরগ নয়নে। আগে স্থ পরে পীড়া, আগে ৰশঃ পরে ঐ শীবিতের অসহ সহনে॥ कानि नशी क्षमा हाणि, ভূপদলে না উপা

উত্তাপে না হয় বিল, বেখানে অমরীগণ. ক্রীড়া হথে নিষ্গন. লানি সর্কাসহাভির বিরাজিত প্রফল অন্তরে॥ অগ্নিদাহ অক্তে নাহি সহে॥ হায় লজ্জা। চপলা রে. আমার শয়নাগারে. তথা**পি অস্তরে দহে.** এ ছুণা না প্রাণে সহে. অমর পরশে নাহি যাহা। প্ৰক্ৰথা সদা পড়ে মনে। না ছইলা কোন জন. যে গৌরৰ ছিল আগে. বাসবের অফুরাগে. ইন্দ্ৰ বিনাধে শয়ন. বুলাম্মর পরশিশ তাহা॥ কার হেন ছিল ত্রিভবনে ? কি আবুকৰ অধিক. মেদে ধৰে আথওল. धिक लड्डा धिक धिक, েক্ষনে ভূলিব বল, এ পীড়ন সহি লো এ প্রাণে। বসিত কাম ক ধরি করে। এত দিনে দৈত্যবালা. এ মুখ করিয়া কালা, ৬ই সে মেথের অঞ্জে. থেলাভিস কত রকে. भहीरत विक्रिल विश्वारण ॥ ঘটা করি লহরে লহরে॥ আমার সপকী বাজে. কি শোভা হইত ভবে. বসিতাম কি গৌরবে. সাজে লো আমার সাজে. ঐন্দ্রিলার কটিভটে হার। পার্যে তাব নীরদ-আসনে। অমরী করিত যত্ন, আমার মুক্ট-রড়, ∗ইত কি ঘন ঘন. মুত্-মূল গ্ৰজন. কুবের আনিয়া দের তায়॥ মেৰে যবে তলাত প্ৰনে॥ গৌরব করিবে তার, मही विश दक्षां आहे. ইন্দের সে মথকান্তি. घठारत्र नत्रन-जास्त्रि. কে আর আসিবে শচী-স্থানে। কত দিন স্থী রে না হেরি। আবুনা আসিবে লক্ষী, বাচতে বাধিতে রক্ষী. কত দিন বৈদে নাই. ঘুচারে চক্ষু বালাই. লইতে ইন্দিরা পুপ্রাণ॥ স্থরবুন্দ বাসবেরে ঘেরি॥ ইন্দিরার প্রিয়পন, সুধাৰাত সুধাসমু, হুমেরু-শিখবে যবে. স্থাথে ধেলিতাম সবে, কত সুথে লইত কমলা। অমর-সৃদ্ধিনীগণ সহ। এবে সে ছোঁবে না আর. হাতে তুলে দিলে ভার, গৈরে অনন্ত শৃক্ত. অনন্ত নক্ত্ৰ-পূৰ্ণ, শচীর পরশ এবে মলা॥ সদা স্থিম সদা গৰুবহ। াটত নিৰ্মল বাযু, প্রফুল করিয়া আয়ু, উমা নাহি ফিরে চাবে. उनानी मित्रियां गांदर. कारक यनि कथन माँ छाई। কত পুষ্পা সুমেরু শোভিত॥ লজ্জা দিয়ে অধিরত. সুররমা অক্ত যত. নৰ্ল কির্ণশোভা. मशौ त्र कि मनालां छ। চৰ্ব করি শচীর বড়াই॥ মের-অংক নিতা বর্ষিত॥ কোথায় পলাব বল. কোথা আছে হেন স্থল, थी त्रहे मन्ताकिनी. চিরানন্দ-প্রদায়িনী, এ মুখ না দেখাব কাহারে। দেবের পরম স্থকব। বয়ঞ্চ মান্ব-দেছে, পশিব মানবগেছে. **डेकारम नक्तन-उ**थ. উছলে মধুব জল, अत्रिक, भविव, वादत्र वादत्र ॥ ভাবিতে লো হ্রদয় কাতর॥ ভূলে রব ষত কাল. জীয়ে রব তত কাল. চার ভোগ্যা এবে ভাষা, কার ভোগ্য এবে আহা, क्रांबिटलई कावात मत्र। আমার সে নন্দন বিপিন! ভবে না ঘূচিৰে ভাপ, , ভাবনাব অপলাপ, কৈ ভ্ৰমিছে এবে তায়, কেবা সে আন্তাণ পায়, ভবে বাবে চিত্তের পীড়ন॥" পারিজাতে কে করে মলিন॥ হেনকালে পুষ্পধন্ত, নিভা মনোহর ওছে, স্থী পারিজাত মম. নগডের নিরুপম. চিরহাসি অধরে প্রকাশ। দৈত্যজায়া পরিছে গলার। বাড়ারে শচীর মান, चाति नहीं महिशान, ত্মিগ্ধ করিবারে বিধি, য পূজা শচীর হৃদি. हेक्सानीरत कतिना मखात्र॥ নিরমিলা অতুল শোভার॥ চপলা হেরি স্বর, কহিলা "হে পুল্পলয়; ধরি কলুষিত কারা, াণী হ্লে দানবজায়া. হেথা গতি কোথা হ'তে বল। বসিছে সে আসন উপরে।

1

আছিত আছ ত ভাল, গোৱা ছিলে হ'লে কাল, र्याव (गर्था जीवरामा. তাব দেখা চির-আশা. তোমাব ও রভিব কুশল। স্থতঃ গমনের থনিতে। শুনি না কি মাল্যকার. হয়ে এবে আছি মার. সে কথা বুখা এখন, আদিয়াছি বে কারণ ঐক্রিলার উত্থান সাজাও। শুন আবেগ বাসব রম্প। निक करत्र शैथ भागा. माकारक मानव-वाना. আবের বিগদ জানি. আপনি কর্ত্তব্য মানি থালা গাঁথি অমুরে পরাও॥ জাৰাইতে এদেচি অবনী॥ এত গুণপনা তব. জানিলে হে মনোভব, নিদ্ধ অদৃষ্ট অতি. এখন (ও) তোমাব প্রতি. নিতা গাঁথাভাম পুষ্ণহার। अःन हिट्छ चित्र हित्र । ত্যজি পুজা-শরাসনে, ক ঠেবা ধা হয় `ক ব. না থাক অবনীপ্র, থাকিতে যে অক্সমনে, ত্রিভ্বন পাইত নিস্তার ॥ নিকটে আগিছে আগীবিষ॥" "শচীব অদৃষ্ট মন্দ, ৰড আগে হেলি হেলি. পুষ্পধত্ব পর্চে ফেলি. আছে কি শচীর ধন. সে কথা শুনাতে আইলে মার। বেডাইতে সুমোহন বেশ। স্বৰ্গ ভাজি ধৰাবাস. তাক্ত করি বাবে বাবে. সর্বলোক স্বাকারে. हेटचुद्र हेक्फ्यनान. ইহাহ'তে অভাগ্য কি আর ১" শুন কাম এই ভার শেষ॥ ছিছি মার নাহি লাজ. শুনিয়া কলপ কয়. "এই যদি কট হয়, ধরি মালাকর-সাজ, না জানি সে কি বলিবে ভাষ। এখন (৪) আবাচ অর্গপরে। রতির কি লজ্জ। নাই. মথেতে মাথিয়ে ছাই. ঐব্রিলা দেবিতে মবে. রতি সহচবী হবে. অর্থ্য দিবে বুর্তান্তর-পায়॥ ঐন্দ্রিলারে সাজায় নপরে।" ক্ষাকর সরেখরি. এ কথা বদনে ধার. मठी करह, "हलना दब्र, गंधना मिछ ना मारत. চেতাইতে বলিতে সে হয়। সুথে আছে পুথে থাক কাম। এ পীড়াজ দয়ে ধরি. অর্গপুরী পরিহবি, থকৰে শুনেভি যত. **बे**क्सिलां व महनां वर्षः প্রাইত কিবা মন্ধ্রাম ? তাই মনে পাই এত ভয়। ভাৰনা যাতনা নাই. नना यथी नक्षीं है. বসিয়া নন্দন-বনে, ঐন্দ্রিলা দৈতোর সনে আমাৰ দে দাক্ষাতে কহিলা. চিরজীবী হউক সে জন। রতির কপাল ভাল. সুথে আছে চিবকাল, 'শগীরে স্বরণে আনি. থাকুক আমার মান, শতী দেবা মোরে না করিলা-সহে না সে এ পোডা যাতন। প্ৰাত্তায় কৌশল কিবা. व्यामादत भिशास निवा. বুথা এ ইন্দ্রন তবু, বুথা এ ক্রম্বর্যা সং, সদা হুৰ চিত্তে কিসে হয়। বথা নাম ঐক্রিলা আমার। কিরপে ভলিব সব. তুমি যথা মনোভব, ভূনি শহী গরবিণী. চিরস্থী বিশাসিনা নিতারখী নিতা হাসময়॥" দে গৌরব মুচাব ভাহাব॥ কলপ অপান-ঠাবে. থাকিবে খবলে আদি. হইয়া আমার দাং भागारेका हललाद्य. সময়মে শচী প্রতি কয়। হাব-ভাব শিখাবে স্থামায়। "মুখ চঃখ ইন্দ্রপ্রিয়া, ' দকলি বাসনা নিয়া, निशादि ठलन-छनी. कत-भन निरंत वां যুক্তির আরম্ভ ৫সু নয়॥ তবে মম চিত্ত-কোভ যায়?' ছাডিয়া नन्तन-रत्न. আসিতে অবনীগ কোধাও বা ত্রিভূবনে, লজ্জা পায়, বুৱাম্বর, আছা দিলা ভोষণ দৈত্যের। জুড়াইবে কন্দর্পের প্রাণ। কালেব বাঞ্চিত যাহা, নন্দন-ভিতরে ভাহা. মহাবল দৈত্য সেই, তোমার রক্ষক নে না পাইব গিগা অক্ত স্থান।। ইন্দ্রপ্রিয়া, পড়িলা সে ফেবে ॥" সেবিয়া অসুর নর, কি দানবী কি অমৰ. কন্দৰ্প-বাজ্যেতে শচী. কুম্ভলে ফণিনীর তাই স্বৰ্গ না পারি ছাড়িতে। **এक मृद्धे मृष्टि कदत्र कांत्र**।

অন্তরে দাসত্ব-ভার,

গুও রাথে হস্তোপর, আগে ক'ছে কেন মাধ গ্রন্তাব নিক্তর, ছান্বা যেন পডে সর্ববগার। নিস্পান শ্বীর মন. সচেতনে অচেতন, নিশাস না সবে নাসিকার। অজানিত মচিভিত. চিন্তা যেন উপস্থিত. হৃদয়েতে ঘরিয়া বেডার॥ কলল বচিত ফণী. নির্থি মেঘণাহিনী. কতে শচী-চপলা চাহিয়া---"এ নবক মম ভাগে. স্থী নাহি জানি আগে. **(मिथ नाहि कथन** जीवशा॥ শচীর হযেছে তাহা, তগতিব শেষ যাহা. ভাবিতাম সদা মনে মনে। কপালে আছে আমাব, লাবোধে শত ধিকাব. (म कथा ना डेबिल ८०उ८न ॥ কেমনে চপলা বল. প্রশিবে কবতল. मानती हद्रश-नृशूत १ কেমনে গো স্তনহাব. ন্তন শোভিবাবে ভার, ভূজে দিব কেমনে কেয়ব গু কেমনে স্থকাঞ্চী গরি. मित किंछिडिए शनि. কেমনে বা কবরী বান্ধিব ? বনাব কুফলে বেণী, কিরপে মুকতা-শ্রেণী, ভালে তার সাজাইয়া দিব ? াণীবে যে জানি নাই. কিরপে সে ভাবি তাই. माकाहेय मानव-महिला ? দার কাছে যাব এবে, কেবা সে শিখায়ে দিবে, দাসীপনা তুযিতে ঐক্রিলা? यक क्या नमान्द्र. াব অঙ্গে বতু ক'রে, প্ৰাইত বসন-ভ্ৰণ। म चाकि ला नांभी इरह. বস্ত্র আভরণ লয়ে, ঐদ্রিলাব কবিবে সেবন॥ প্রবণেবে শত বিক! য়লজভা৷ হায় ধিক. এ কথা কহবে স্থান দিল। সিংহী ছিম্ন হৈছু শিবা, गोलना वाकी किवा. য়খন এ শুনিতে হইল। দন হে কলপ্ তুমি, আইলে মর্তভূমি, কেন কহ শুনালে আমায়? কেন বল চাপাইলা ? দি-পরে গুরু শিলা. অনক হে কি দুবি ভোমার ? ঘটিত হে সে অবধি, ें। कशारम यमि. াদতে ৰাইত ৰবে শচী।

শচীরে হে কহিলে অশচী? চপলা সভাই কি লা. সেবিতে হবে ঐক্সিলা? मठीव कि कि हरे त नाहे ? অপাক পডিলে যার, ভয় হ'ত দেবতাব. দেব যক্ষ তথিত স্বাই॥ তাগার এ হর্মিপাকে. কেহ নাই তারে রাথে. मानद्यदत्र कतिया भगन १ हेस रहन उरत निर्ह কোথা দেব অবশিষ্ট ? তুৰ্য্য চক্ৰ বৈজণ প্ৰনাণ কোথা কদ্ৰ হতাশন. किंशा शनरमवशन. व्या नाम लहे (म नवाव। ইন্দ্ৰ গিয়াছে যবে, আর কি শুনিবে সবে. শচীরে ভাবিবে কেবা আব ? তবও ত নিরাশ্রয়. हेलांगी अथन (७) नम्. ইক্রাণীত পুত্রের জননী। স্থীরে বাস্ব স্ম. আছে তজাল মান. ইন্দ্রাণী ত বীরপ্রস্বিনী॥ কোথা পুত্ৰ হে জয়স্ত, कननीत प्रथ अस. কর শীদ্র আদিয়া হেথায়। ভোমার প্রস্থতি হার. নৈত্যের শাসতে যায়. রক আমসি পুত্র তব মায়।" এত কৃথি ইন্দ্রপ্রিয়া. খানে দৃঢ় মন দিয়া. জয়জেরে করিলা স্মরণ---कननी जारवन यकि. त्म जावना शिति नही. ভেদি স্থতে কবে আকর্ষণ। জয়ন্ত পাতালদেশে. শুনিয়া কণ-নিমিবে, मारत्र रम मानरमत्र श्राम । ব্যথিত কাত্র মনে, कि वाकि नवामतन. অবনীতে চলিলা তথনি॥ কলৰ্প শচীৰ স্থান, বিদায় পাইয়া যান, भूनः (मृहे नक्त-कानन। শচীর সান্তনা-আশে, . . চপলা দাডায়ে পাশে, কহে স্নিগ্ধ বিনীত বচন॥

পঞ্চম সূৰ্গ

চপলা শটারে কহে, "শুন, ইন্দ্রপ্রিয়া, অভাপি কয়ন্ত না আইনে কি লাগিয়া ? ব্রি বা বিভ্রাটে কোন পড়িল। আপনি, তাই দে বিলম্ব এত আদিতে অবনী। কলপ্রে কথায় অন্তরে ভাবি ভয়, মর্ত্তা ছাড়ি চল, দেবি, বৈকুঠ-আলয়; কিংবা দে কৈলানে চল উমায় নিকটে,—বিশ্বাস কর্ত্তব্য কছু না হয় কপটে। কমলা অথবা গৌরী অথবা বান্ধনী, নিশ্চর আপ্রয়দান দিবেন ইক্রাণ।"

ইদ্ৰাণী চপলা-বাক্যে কহে, "কিবা কহ, অক্টের আইরে বাস শচীর জঃসহ। প্ৰবাসে প্ৰবৰ্ণ, সদা চিতে মলা, আভারদাতার মতি-গতি বুঝে চলা , চিন্তিত সতত ভয়ে কৃষ্টিত স্থাই , পরের আশ্রের বাস প্রাণের বালাই। খবদে খাধীন চিত্ত, খাধীন প্রয়াস, चांधीन विवाम, हिन्हां चांधीन উल्लान . সমর্প গুরুতে বাস পরবশ আর, ছই তুল্য জীবিতেব, ছই তিরস্কার ! अञ्चलादक देवकुर्छ देवनारम नाहि (**उ**म. (यहेथारन शत्रम. (महेथारन (अम। শুন, প্ৰিয়তম স্থী, সে আশা বিফলা, মৰ্ত্তা ছাডি পরাইছে যাব না চপলা।" চপলা শুনিয়া ছঃথে কহিলা তথনি. "ছলবেশে থাক ভবে বাসব-ঘরণি।"

কহে ইন্দ্রপ্রিয়া, "সথী তন লো চপলা,
শচী কজু নাহি জানে কুহকীর ছলা।
য়্বণিত, আমার সথী, গোপন-নিবাস,
ছন্মবেশ কদাচ না করিব প্রকাশ।
চিরদিন যেইরূপে ফানে সর্কালন,
সহচরি, সেইরূপ শচীর এখন।
আাসিছে দংশিতে ফ্লী করুক্ দংশন—
নিজ্জপ, স্থী, নাহি তাজিব ক্থন।"

বলিতে বলিতে আত্তে হইল প্রকাশ, অপূর্ব গরিমান্ডটা কিরণ আভাস; নরন-ললাট-গও হৈল ফ্যোভিশ্বর— স্পাটর সম্বাদে বেন নব-স্কর্যোগ্র ! বোর কিপ্ত প্রচণ্ড উন্মন্ত বেই জান
হেরে জন্ধ হ্র সেই, সে নেত্র জদন।
নির্মি চপলা-চিত্তে অসীম আহলাদ,
চিন্তিতে লাগিল মনে নানাবিধ সাধ।
ভাবিতে লাগিল পেনে বিপুল ছরিবে —
"নন্দন সদৃশ বন স্বজিব নৈমিবে।
মহেক্রালী-বোগ্য যবে ছইবে এ বন;
এ মূর্ত্তি তবে সে শোভা করিবে ধারণ,
কপটি দানব মুগ্ধ ছইবে মায়ার;
না পারিবে শরশিতে শচীর কারায়।
প্রকাশিব ক্ষিতির ঐশ্ব্য যত আজি;
শচী রবে আজি এই ম্বতে বিরাজি।"

চপলা এতেক ভাবি বিচিত্র কানন. শনীর অজ্ঞাতসাবে কৈলা প্রকটন।---মানদ-মোহকর নবজ্মরাজি প্রকাশিল স্থলার কিসলয়ে সা**জি**। ধাবিল সমীরণ মলম্ব-স্থগদ্ধি. **ठश्रम पन पन कश्रम व्यानिक।** কাঁপিল ধর ধর তরুশিরে সাধে. শিহবিল পল্লব মবমর সালে। হাসিল ফলকল মঞ্জল মঞ্জল, মোদিত মৃত্বাদে উপবন ফুল। क्षित स्त्रवित कुछत्र कुछ , শোভিদ সরোবরে সরোঞ্জিনীপুঞ্জ . নাচিল চিরস্থথে ম্যুর কুর্জ , अक्षरत धन धन प्रधुलीत जुन। কুনার শ্রদল প্রিয়তর আবাভা— সুর্য অবধ্ , অর্ধ শশিশোভা ; শোভিল স্বতরণ ত্বল জল অলে: বিষ্ঠিলা হাদিনী মায়াবন রকে।

হেনকালে ইন্দ্রস্ত আসিরা সেথার,

দ্বাড়াইলা প্রথমিরা জননীর পার।

জননী পুত্রের মুখ ২ই দিন পরে

ক্রেথ যদি হনরের সর্কটিন্তা হরে;

জন্ত আশা, অভিলাব ক্রোভ বত আর,

অন্তরে বিলীন হর বাপের আকার;

প্রভাতে বেমন স্থা তরুণ কিরণ

ধরণী পরশি করে কুজ্মটি হরণ।

পুত্র পেরে শুটী বেন পাইলা আবার

স্বর্গের বৈত্তর বত ঐশ্বী তাহার।

বারংবার শির্মাণ; চিবৃক আমাণ
লইয়া; ধরিলা কোলে পুলকিত প্রাণ।
পূর্ণিমার পূর্ণচন্দ্র হইলে প্রকাশ;
মধাকরে ধরে বেন প্রফুল আকাশ;
মক্রদেহে সরিতের প্রবাহ বহিলে;
ধরে মেন মক্র সেই প্রবাহ-সলিলে;
তক্র মধা নবোদ্গত কিসলয়য়াজি,
বসন্ত-প্রারম্ভে ধরে নীল পীতে সাজি;
নিজ্রা বধা ভূজ্বর প্রসারণ করি;
ক্রান্ত পরাণীরে রাধে বক্ষ:হলে ধরি,
শুক্তারা ধরে মেন নিশ:তে যামিনী।
অঞ্চলে ম্বের ধূলি ঝাডি স্থেব চায়,
মৃত পরশনে কর সর্বাহেল ব্লায়।

কাতর অন্ধবে কহে চপলা চাহিয়া—
"দেথ সথি, সে শরীর গিয়াছে ভালিয়া :
প্রনের উক পলা পক্ষেতে বেমন,
সথি রে, বংদেব আস্ত যেমতি এখন।
থোলো, বংস, থোলো তব কবচ অক্লের ,
এ ভ্রবণ নহে বোগ্য এ শুক দেহের ।
সহিতে নারিবে ভার বাজিবে শরীরে,
মির্ম্ম হও কিছুকাল মহীর সমীরে.
ভগরি অনিল তুল্য নছে এ সমীর,
তথাপি ভূডাবে বংস, হইবে অ্থির।
পাতালবাসের ক্লেশ হবে অবসান
সেবিলে এ সমীবণ—থোল অল্পাণ।"
বলিতে বলিতে বর্মা থলিয়া আপনি.

জরসে অন্তের চিহ্ন দেখিলা তথনি,
আক্রা ভাবিরা শটা জিজ্ঞানে, "তনর,
এ কি দেখি বকং কেন কডিচ্নের ?
কখন ত দেখি নাই উরসে তোমার
হেন চিহ্ন—এ কি সব অন্তের প্রহার ?"
জয়য় কহিল, "মাতা, আমার উরসে
ছিল না কলয় কভু অন্তের পরশে;
ক্বেল সে শিবদত্ত অন্তর-ত্রিশ্ল
এবার ধরেছি বক্ষে না হও ব্যাকুল—
মন্তু অন্তর দেব, অন্তর ভেদ নাহি হর,
শিবের ত্রিশ্ল-চিহ্ন অচিহ্ন এ নয়।
তনিয়া পুত্রের বাবী কহিলা ইন্তানী,
"বংস রে, কডই কই ভুগিলা না আদি;

জান নাই কভু আগে অন্তের বাক্তমা—
না জানি সহিলা কত বিষম বেদনা !
হার শিব ! হে শকর ! হে দেব শূলিন্ !
বাম কি শচীর প্রতি তুমি চিবদিন ?
হার উমা ! শচীরে কি কিছু মেহ নাই ?
কি দোর করেছি করে, কহ ভব টাই ?
তোমার নন্দনে, গোরি, কতই যতনে
রেবেছি অমরালয়ে, বিদিত তুবনে;
পার্কতীনন্দন, ক্বল, দেব-সেনাপতি—
শচীর নন্দনে উমা কৈলা এ হুর্গতি !
বে অম্বর করিলা এ ত্রিশ্ল প্রহার !
সেই ব্র মহেশ্রি, আপ্রিত তোমার !"

কহি হু:থে কহে শটা, "আমায় উদারি কাল নাই, বৎস, আব হরে অস্থারী। লানিলে অথ্য কি আমি মানসে স্বরণ করিতাম তোরে হেথা করিতে গমন! শতবার ঐক্রিলার চরণ সেবিব, অকাতবে স্থাপের আসন তারে দিব, তোমার কোমল অংক লিখতে আবার।"

ভানিয়া মাতার বাক্য ইন্দ্রত্ত কয় —

"জননি, ছাডিব তোমা যাতনার ভর ॰

চিন্ধা দ্র কর স্থির হও গো জননি ;

আানীর্কাদ কব পুত্রে বাসবঘরনি,

পারিব ধরিতে বক্ষে আবো লক্ষবার

তব আানীর্কাদে শিব-ত্রিশ্ব-প্রহার।

কৃষ্ঠ মাতঃ কি কারণে অরিলে আমায়,

কি বিপদ্ উপস্থিত, বিপক্ষ কোথায় ৽

চপলা শুনিয়া, শচীনন্দন-বচন,
বিছারি কহিলা তাবে সর্ক-বিবরণ।
কন্দর্প নৈমিবে আদি ভীষণ-বারভা
প্রকাশিলা বেইরূপ প্রকাশিলা তথা।
শুনিয়া জয়ন্ত বেন দীপ্ত ক্তাশন,
জলিতে লাগিলা ক্রোধে, বিগ্রুত নয়ন।
দেবি শচী কহে, "বৎস, হও বে শীতল,
ভ্রম কিছুক্প এই নৈমিয-মণ্ডল,
হের, বংস, মুধাকর উঠিছে গগনে,
মিদ্ধ হও কিছুক্প শশীর কিরণে।
মহীতে মাধুরীমন্ন মুধার সকাশ,
অক্ষাত্র আহৈ এই চক্রমা-প্রকাশ,

উহারি কিরণে তব তম্ন সুকুমার, ব্রডাবে কিঞ্চিৎ, কর অরণ্যে বিহার।" প্ৰিয়া জননী-বাকা জয়স্ক তথন অঙ্গেতে কবচ পুন: করিলা বন্ধন; চিস্তিয়া চলিলা শীরে কানন-ভিতরে, শীতল সমীর সেবি হেরি শশধরে। চপলা কানন রচি. আনন্দে বিহ্বলা, বেডার চৌদিকে স্থথে হইরা চঞ্চলা। ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে হেরে পুৰুষ চঞ্চন কানন-নিকটে ভাবে সংশ্যে ছেমন। জিজাসিছে এক জন চাহি অন্ত প্ৰতি, "কোথায় আনিলা দৃত, আইলা কোন পথি গ নৈমিয-অরণ্য কোথা দেখি যে উত্থান. স্বর্গের নন্দনত্ল্য পূর্ণ পুষ্পত্রাণ; চাক মনোহর লতা পল্লব মধ্র, প্ৰিকলকাকলিত নিকুল মঞ্জৱ: মোহকর মনোহর স্বস্থিয় বাতাস. কিরণে জিনিয়া চক্র পুরণ প্রকাশঃ কোথার নৈমিধ্বন ? অমরাবতীতে এখন (ও) ভ্ৰমিছ ভ্ৰমে, না আসি মহীতে।" দত কহে "জানিতাম এথানে নৈমিষ, না জানি কি হৈল তবে হারারেছি দিশ। হটল সে বছদিন মৰ্ত্যে নাহি আসি---হবে বা নৈমিষ এই-এবে ক্লৱাশি। তেনকালে চপলারে দেখিতে পাইয়া. জিজাদা করিলা তার নিকটে আদিয়া। চপলা কহিলা, "কেন, কিসের কারণ, নৈমিৰ অৱণা দোঁতে কর অংঘৰণ ? এই সে নৈমিষ, আমি নিবসি এথানে . প্রকাশিয়া বল শুনি কি বাসনা প্রাণে ? দিব ইচ্ছা গাছা তব, এ বন আমার-(१४ चार्राहर देवल नसन-चार्कात। বল আগে কার দত পুরুষ কি নারী ? পার কি চিনিতে বৃত্তি আমি যেন পারি। হাতে দেখি পারিজাত না হবে মানব---চাৰ বে দে স্বৰ্গ ৰথা অম্ব-বৈভব।" ভাবিলা ভীষণ, তবে এই হবে শচী, मात्रात नसन्दन मर्स्का चारक त्रि। প্রায়ল-পরাণে কছে, "ধর এই ফুল--পাছে নাহি মান, চিহ্ন আনিরাছি পুল;

দেব-দত আমি, দেবি, ইল্রের প্রেরিউ, তৰি সুরেশরী শচী ভূবনে বিদিত। যুদ্ধে জর অমরের স্বর্গ অধিকার, তিরস্কত দৈত্যকুল ভাড়িত আবার. স্বৰ্গ এবে শাস্ত পুনঃ তাই সূত্ৰপতি, পাঠাইবা ল'তে ভোষা আপন বসতি।" ঈষৎ হাসিয়া তাহে চপলা কহিলা ;--"আমার সন্দেশবহ চিনিতে নারিলা। পেয়েছ দতের পদ শিপ নাহি ভাল-ইন্দ্রের দৃতত্বপদ বড়ই জ্ঞাল। শিথাৰ উত্তমকূপে পাই সে সময় তুমি দৃত, আমি দৃতী, জানিহ নিশ্চয়। পুরাতনে প্রয়োজন নহিলে কি এত গ নতনে নতন জালা বঝে না সঙ্কেত।" 'শিব।' বলি দতবেশী কছে দৈতাচর. "চিনেছি চিনেছি—ভ্ৰান্তি নাহি অতঃপর। শচীসহচরী তমি বিফুর মহিলা"---"আবার ভূলিলা দৃত" চপলা কহিলা-"থাক মেনে, আর কেনে দেহ পরিচয়---মুর্থের অংশেষ দোৰ কহিন্ত নিশ্চয়, ওহে দৃত বুঝা গেছে তব গুণ্পনা--नात्री टिना प्रति टिना कुर्च एवेना। নহি হরিপ্রিয়া আমি বৈফ্বী কমলা, শুন দৃত শচী-দৃতী আমি সে চপলা। ष्यांना कति ष्यांत्रियांकि हैटलुत ष्यांत्रात्न. না হবে নৈরাশ ভাগ্যে ঘটে যাহা শেষে। বলিয়া চপলা চলে: পশ্চাতে ভাহার চলিলা পুরুষ পারিজাত হত্তে যার। দেখিয়া কানন-শোভা মোহিত ভীষণ. শত শত উপবন অমর্মোচন নির্থিলা চারিদিকে—নির্থিলা তার ক্রক বিহন্দ কত আনন্দে বেডার: পলাশ-বল্লবী, পুল্প তরুণ লভার ন্মশোভিত নদনের সদৃশ শোভার। লভার লভার ফুল, শাথার শাথার শিধিনী নাচার পুচ্ছে চন্দ্রক-মালার; ঝাঁকে ঝাঁকে সরোবরে ব্রভতী-উপরে মধূলিহ পড়ে চলে স্থাৰ মধুভৱে 🛊 তক্রণ অক্রণ কিবা মৃত্যু শৃশধর জিনিয়া মৃত্ত রুখি কানন-ডিভর !

প্রবণ্-স্থমিশ্বকর মধুর নিংখন কাননে ঝরিছে নিত্য করিয়া প্লাবন। प्रशास्त्रक र्वेस्किश्चा वर्ष स्वित्रवर्ग : কলদবরণ প**র্চে** স্থলিবিড কে**শ**। মধে আভা ভাত বেন উৎলিয়া পডে। গান্তীৰ্য্য-প্ৰতিমা বিধি দেহ ধেন গড়ে! দেখিয়া ভিমিত-নেত্ৰ হইল ভীষণ. বাকশক্ত শ্রুতিশক্ত করে দর্শন। নিখ্যাট কবি হাবে বন্ধা অক্সাৎ কবিলা মানব-চিতে চৈত্ৰ প্ৰভাত. আদিস্ট দেই প্রাণী নবসর্যোদয যে ভাবে দেখিলা দৈতা সেই ভাব হয়. সংজ্ঞানাই চিকানাই নাহি আংআজোন, চক্ষতেই গড় ধেন চৈত্ত প্রাণ। প্রবেক কাল তেন অভিতে থাকিয়া---চপলাৰে জিজাসিল ভাবিয়া চিক্রিয়া— "প্ৰন্ত্ৰ-ভাৰ্যা শচী এই কি ইন্দ্ৰাণী ۴ চপলা কহিলা, "এই তিদিবের রাণী।" অবিক্রে লাগিল মনে ভীষণ তথন 'সভাই সংগ্ৰেবাণীইজাণী এ জন। কোৰার ঐদ্রিলা—বৃধি দাসীর সে দাসী. তলনায় নহে এর চিতে হেন বাসি। ধর সরপতি ইন্দ্র। এ অকণ যার চিরোদিত গ্রুমাঝে ঘচার আঁধারে॥" নানা চিক্তা এইরূপ করে মনে মনে. নাব্যে স্বর্গে শ্রীলইবে কেম্নে.. অচল নিব্ৰথি যাব বদনপ্ৰভায় প্ৰশে কেমনে তায় ভাবিয়া না পায় . বিষম বিপদ ভাবে উভয় সম্বট ভাবিলা সে কার্যাসিদ্ধি অসাধা দুর্ঘট . অনেক চিভিয়া প্রির নারিলা করিতে. কিরপে লটবে শনী অমরাবভীতে।

হেনকালে ইতন্ততঃ ত্রমিতে ত্রমিতে।

অয়স্ত তীবণে দূরে পাইলা দেখিতে।

'অবে রে কপটা দৈতা' বলিয়া তথন

বাইলা তুলিয়া ঝজা যেন হতাশন;

কহিলা ভীবণে চাহি ক্টদৃষ্টি ধরি

কণকাল ঝজা শৃষ্টে সংবরণ করি—

চল্ এ কানন-বহির্ভাগে শীক্ষ চল,

জননীর বাসভুষি নহে যুদ্ধক্য;

নহে বৈধ স্থাকাতির সমূপে সমর, চল এ উন্সান ছাড়ি, পাষ্ড বর্ষর।

अवस्य रम्थियामां किसा रशन मृतः ধরিল বিকট মুর্ভি ভীষণ অসুর। গর্জিলা সিংছের নাদে শেল ধরি করে: ঘরার শক্তেতে ঘন মেঘের বর্ঘরে 1 না ছাডিতে গেল শীঘ্ৰ বাসব-নন্দন "জননি, অন্তর হও" বলিয়া তখন। বেগে ভেলাইয়া থড়া জীয়ণ গৰ্জিয়া পড়িল বিভাৎ যেন নিকটে জাসিয়া: শক্তে থেলাইয়া অসি বিজ্ঞলী আকার. চকিতে স্বন্ধের মলে করিল প্রহার। বিক্লিষ হইয়ামুও পড়িল অন্তরে, খোর শব্দে পড়ে গাত্র ভতল-উপবে। শালবক্ষ পড়ে যেন হইয়া ছেদিত. অথবা আগ্রেরশঙ্গ অগ্নি-বিদারিত। শক্ত কৰি ভীষণের সঙ্গী ষেট জ্ঞন প্ৰাৰেলা জেডগড়ি ভেলিয়া কানন। দেখিয়া ভাষায়ে কছে জয়স্ত কৰ্মণ---"তুই তৃচ্ছ, তোরে নাহি করিব পরশ। যা রে দাস যা রে ফিরে দৈত্যের নিকট, সমাচার দিস—তার ভীষণ বিকট জন্মতের থড়ুগাঘাতে লুটে ধরাতল, অবলু আবু যাবে ইচ্ছাপাঠাইতে বল। ভেট দিস দৈত্যরাজে-- ধর মুগু ধর ।" বলিয়া নিকেপি মৃত্ত ফেলিল অন্তর। ত্রাসিত, অস্থির দত বিশ্বিত ভাবিয়া, বতাস্তরে বার্তা দিতে চলিল ফিরিয়া। कश्च जानमहिट्ड. बननी-निकटरे---উপস্থিত হৈলা আসি এডায়ে সঙ্কটে।

ষষ্ঠ সূৰ্গ

বেষ্টিরাছে ইন্দ্রপুরী দৈব-অনীকিনী,
চৌদকে বিস্তৃত বেন সাগর-সিকতা,
বোজন বোজন ব্যাগ্য, প্রদীপ্ত ভাস্কতে—
দেবকুল সেইন্নপ দিক্ আছ্নাদিরা।
দূর্বিত, স্ত্রিভিত বত শৈল্যাজি
অক্টোদর-গিরিশৃক প্রতার উদ্ধান

অনক্ষের সমুদর নক্ষত্র বা ৰথা বিস্তীর্ণ হইয়া দীপ্তি ধরে চতর্দিকে। **आ**होरत आहोरत रेम्डा डोयन-मर्मन--পাষাণ সদশ বপু দীর্ঘ, উরস্থান-নানা অসুধবি নিতা করে পরিক্রম ভীমদর্পে ভীম-তেন্তে গর্জিয়া গর্জিয়া. আবারাত অসভত সদা যদের সভ্রায় स्ता देवजा वर्षा वर्षा. वर्ग चान्तानिया. আচচাদি অমেক-অঙ্গ বৈজয়ত ঢাকি, খোর শব্দ সিংচনাদ, অম্বর বিদারি ! অসুবৃষ্টি, শৈলবৃষ্টি, প্রতি-অহরুহঃ, অন্ত আকুল করি উভয় দৈকেতে; রাত্রি-দিবা যেন শক্তে নিয়ত বর্ষণ, বিতাৎ-মিশ্রিত শিলা দিকে দিকে ব্যাপি। নিদ্ধ-আলয়ে তেন অমর-দানবে জ্ঞলিছে সমর্বহি নিত্য অহরহঃ; বেষ্টিত অমরাবতী দেব-দৈরদলে। অদাদেশকা উভ দেবতা-দহুজে। অৰ্ণবেৰ উৰ্বিৰাশি ৰথা প্ৰবাহিত অহ্নিশ, অনুক্ষণ, বিরতি-বিশ্রাম, প্ৰোভৱতী বিধাবিত নিমত যজপ ধারা প্রসারিয়া গতি সিদ্ধ-অভিমুখে :--সেইকপ অবিশ্রাম দানব অমরে इम्र युद्ध व्यव्तव्दः, वर्ग-विवर्षः भ, জয়-প্রাজয় নিজা নিজা অনি স্চয় --দৈতোর বিজয় কভ, কথন ত্রিদশে। সভাসীন বুতাম্বর মুমিত্রে সম্ভাবি কহিছে গৰ্জন করি বচন কর্মশ— "যদ্ধে নৈল প্রাক্তিত এখন (ও) দেবতা! এখনও স্বরগ বেষ্টি দৈবত সকলে। সিংহের নিলয়ে আসি শগালের দল -প্রকাঞ্চ বিক্রম হেন নির্ভয়-জন্মে ? মন্তমাতকের শুণ্ডে করিয়া আঘাত বাপদ বেডায় হেন করি আকালন ? ধিক আজি দৈত্য নামে ! হে সৈনিকগণ ! সমরে অমর তত্ত করিলা দানবে ! কোৰা সে সাহস বীৰ্য্য শৌৰ্য্য পরাক্রম. দক্ত বাহার তেকে চির-রণক্ষী ? সসাগরা বস্তব্ধরা যুদ্ধে করি ব্যর প্রকাশিল কডবার অতুল বিক্রম,

নাহি স্থান বস্থধার কোথাও এমন, কম্পিত নাহয় আজি দানবের নামে---পশিলা অমরাবতী জিনিয়া অবনী, বিশ্বিত করিয়া বস্তমরাবাদিগণে. জিনিল স্বরগ যদ্ধে অন্তত প্রতাপে মহাদন্তী সুরকুলে সমরে লাঞ্রিয়া; বেদাইলা দেববুলে পাতালপুৰীতে-শশকবুদের মত — দৈত্য-অস্থাঘাতে অচৈতক্ত দেবগণ ব্যাপি যুগকাল তুর্নিবার দৈত্যতেজ না পারি সহিতে ! সেই পরাজিত তিরস্কত সরসেনা আবার আসিয়া দত্তে পশিল সংগ্রামে: না পারি জিনিতে তার স্বজিফ হইয়া রে ভীরু দানবগণ। নামে কলক্ষিলা। আগেনি ষাইব অল পশিব সমৰে: ঘুচাইব অমবের সমরের সাধ।

বলিয়া গৰ্জ্জিশা বীর বৃত্ত দৈতাপতি, ধরিলা শিবেব শল সিংছের বিক্রম। শেখিয়া আসিত যত দানব সৈনিক. ব্ত্রাস্থর-জ্যাস্ত হেরি নিশুক্ত সকলে। "আন রে সে শিবশূল—আন রে অমর-বিজ্ঞাী তিশুল যাহা দানিলা শঙ্কর।" নির্থে মাত্রুয়থ যথা গ্রুপতি বিশাল বুকের কাও উপাড়ি, শুওেতে তলিয়া গগনমার্গে বিস্তারে যথন. ল্ল-উচ্চ শভোব নাদে বংহিত করিয়া। তথন বুত্তের পুত্র বীর কন্দ্রপীড়---শোভিত্মাণিক ওচ্চ কিরীট যাহার. অন্তেল শ্ৰীর যার ইন্দাস বাতীত. করিলা পিতারে চাহি হয়ে কুডাঞ্জলি ,-**কহিলা—"হে তাত জিফু দৈত্যকুলেশ্বর** অভিলাষ नन्द्रात निर्दिष চর্বে। কর অবধান পিত:, পরাও বাসনা, দেহ আছে৷ আমি অভ বাই এ সংগ্ৰামে ষশবিদ। যশং যদি সকলি আপিনি মণ্ডিবেন নিজ শিরে, কি উপায় তবে, আবাজ্যজ আমরাতব হব যশোভাগী ? কোন কালে আমরা তবে লভিব সুখ্যা कीर्वि बाहा-वीतनक वीदात आताधा, বীরের বাহিত যশ: তিভুবনে বাহা,

সকলি আপনি পিতা কৈলা উপাৰ্ক্তন কি বাথিলে রণকীর্দ্তি মণ্ডিতে তনমে ? ভাবিতে ত হয় তাত, ভবিষ্যতে চাঠি সম্ভতি পিতার নাম রাখিবে কিরুপে গ कानिना रा राभागील, अमीश रकमान বাথিবে তব অঙ্গঞ্জগণ অভঃপরে ? জন্ম বুথা। কর্ম বুখা। বুখা বংশখ্যাতি। কীর্ত্তিমান জনকের পুদ্র হওয়া বুথা। অনামে যদি না ধর হয় সর্বালোক— জীবনে জীবন-অন্তে চিরুশ্বণীয়। বিভব, ঐশ্বর্যা, পদ সকলি সে বথা। পিতভাগ্য হয় যদি ভোগ্য তনয়ের . পজা সেই কোন কালে নহে কোন লোকে, গলবিশ্ববৎ ক্ষণে ভাসিয়া মিশায়। বিজয়ী পিতার পুলু নহিলে বিজয়ী: গৌবৰ সম্পদ তেজঃ নাভি থাকে কিছ. ত্রমিতে পশ্চাতে হয় ফেকবন্দবৎ, দানৰ অমৰ ষক্ষ মানৰ দ্বণিত। স্থববুন্দ পুনর্কাব ফিবিবে এ স্থানে. তব বংশজাতগণে ভাবি তুচ্ছ কীট, না মানিবে কেছ আব বিশ্ব-চরাচবে. তেজ্বী দৈতোর নামে হইয়া শক্তি। যশোলিপা কদাচিৎ ভীকর (ও) অন্তরে উদ্দীপ্ত হইয়া তাবে করে বীর্য্যবান !— বীরের অর্গই ধশ: ধশই জীবন : সে যশে কিবীট আজি বান্ধিব শিরসে। কর অভিষেক, পিতঃ, এ দাঙ্গেবে আজ সেনাপতি-পদে তব, সমরে নি:শেষি ত্রিংশৎত্রিকোটি দেব, আসিয়া নিকটে ধরিব মন্তকে দেখ অন্ট পদবেণ। জানিবে অসুর স্থর—নছে সে কেবল দানবকুলের চূড়া দানবের পতি. অজ্যে সংগ্রামে নিত্য-অনিবার্য্য রণে ষত্ত বীর আছে এক--আগ্রন্ধ ভাঁহার।"

চাহিরা সহর্ষচিত্তে পুত্রের বদনে, কহিলা দফ্রেখর ব্ঞাপ্তর হাদি ;— "কন্ত্রপীড় ! তব চিত্তে যত অভিলাব, পূর্ব কর যশোরশ্মি বার্নিরা কিরীটে ; বাসনা আমার নাই করিতে হরণ তোমার সে বশংপ্রতা পুত্র বশোধর !

ত্রিলোকে হয়েছ ধল, আবও ধল হও देमजाकन উक्रनिया मानव-जिलक। তবে যে ব্রের চিত্তে সমরের সাধ অক্ষাপি প্রোজ্জন এত হেত সে তাহার খশোলিপা নহে পত্ৰ, অন্ত দে বাল্সা নারি ব্যক্ত করিবারে বাক্য বিভাগিয়া। অনন্ত তর্জময় দাগ্বগর্জন. বেলাগর্ভে দাঁডাইলে মথা স্থাক্র , গভীব শর্কবীযোগে গাচ ঘনঘটা বিতাতে বিদীৰ্ণ হয়, দেখিলে সে স্তথ---কিংবা সে গঙ্গোত্তী-পার্গে একাকী দাঁডায়ে নির্থি যথন অম্বাশি বোব নাদে পডিছে পর্বাতশঙ্গে স্থোতে বিলুঞ্জিয়া ধরাধর ধরাতল করিয়া কম্পিত। তখন অস্তবে যথা দেহ প্ৰকিত ছজ্জ উৎসাহে ২য় সূথ বিমিশ্রিত. সমর-ভরকে পশি. থেলি যদি সদা সেই সূথ চিত্তে মম হয় রে উথিত। সেই সূথ সে উৎসাহ হায় কত কাল না ধরি হৃদয়ে, জয় স্বৰ্গ যে অবধি, চিত্তে অবদাদ দদা-কোথাও না পাই দ্বিতীয় জগৎ যদে লভি প্রবর্ধার. নাহি স্থান জিতবনে জিনিতে সংগ্ৰামে. ভাবিয়াবুত্রেব চিত্তে পডিয়াছে মলা, দেখ এ ত্রিশল-অকে পড়িয়াছে যথা সমর-বিরভি-চিহ্ন কলন্ধ গভীর। যাও যদ্ধে তোমা অন্ত কবি অভিযেক দেনাপতি পদে, প্রস্তু, অমর ধ্বংদিতে যাও, যশোবিমণ্ডিত হইয়া আমাবাৰ এইরূপে আসি পুন: দাঁড়াও সাঞ্চাতে।"

কদ্রশীত প্রক্ষিত, পিতৃ-পদর্থলি সাদরে লইলা শিবে শুনিয়া ভারতী, এ হেন সমরে দৃত নৈমিদ হইতে প্রত্যাগত, সভাস্থলে হইল উপনীত। দৃরে দেখি দৈতাপতি উৎস্ক-হদম, কহিলা "সন্দেশবহ, কি বারতা কহ ? কিরূপে এ প্রীমধ্যে প্রবেশিলে তুমি ? কোৱা ইক্সনা লটী কোৱা বা ভীষণ?"

আখন্ত হইরা দৃত কিঞ্ছিৎ তথন কহিতে লাগিলা পুরী-প্রবেশ-উপায়,

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

বায়ুতে চঞ্চল মথা বিশুদ্ধ পলাশ, রসনা তেমতি ক্রত বিকম্পিত তার। কহিলা "প্রথম যবে আমাইর এ ভানে. স্বৰ্গ হ'তে বহুৰুত্ব হিমাচলপথে উত্তৰ পৰ্বতে শ্ৰে প্ৰথম দাকাৎ হইল আমার দেব-অনীকিনী সহ। नाना इल नाना ८४० विविध दकानेल আশ্রম করিয়া পরে হইতু অগ্রসর, চিনিতে নারিলা কেহ, অতঃপর শেষে পুরী-প্রান্তভাগে আসি হৈত্ব উপনীত। প্রাচীর-নিকটে আসি অনেক চিল্লিয়া উদয় হটল চিকে, জাগৰিত ধথা সূৰ্য্য আদি দেব যত নিত্য অন্ত্ৰধারী. ভ্ৰমে নিডা অধিরত হার নির্বিয়া। আসর বিপদ চিত্তে হইল উদয়, অটিল কৌশল এক গৃঢ় প্রতারণা---ঐক্রিলার পিতভমি হিমালয়-পারে. হয় যুদ্ধ সেইখানে গ্রুক্-দান্ধে. সেই সমাচার লয়ে ত্রিত গমনে ঐক্তিলা-নিকটে যাই, পিত্রাদেশে ভার, দৈতাকুলেখন বুত্র মহাবলবান সমরে সহার হন এ তাঁর প্রার্থনা।---এ প্রস্তাবে দেবগণ শুভ ভাবি মনে चारमम कविन स्थारत श्रुती প্রবেশিতে. আদেশ পাইবামাত্র প্রীতে প্রবেশ করিয়া প্রভূর পদে আদি উপনীত।"

শুনিষা দূতের বাক্য কহে বুঝায়ুর , — "এ বারতা দূত ডোর অলীক কল্পনা সদে শুচী ইন্দ্রপ্রিয়া ভীষণ সংহতি— । শুচী কি সে ফুর্য্য আদি দেবে অবিদিত ?"

দানবরাজের বাক্যে দ্ভের রসনা
হইল অড়ডাপ্র কম্পবিরহিত—
যথা নব-কিশলর বরুষার নীরে
আর্দ্রডকু, বিলম্বিত তরুর শাধার।
স্থানির দানব-মন্ত্রী কহিলা তথন,—
"দৈত্যেশ্ব, দৃত বুদ্ধি হৈলা অগ্রগামী,
পশ্চাতে ভীবণ ভাবি আ(ই)নে শচী সহ
মঞ্চলবারতা নিত্য তড়িৎ-গমনা।"

নতমুথ নিয়দৃষ্টি দৃত কুল্লমতি, কৈহিলা—"না মন্ত্ৰি, ব্যৰ্ক আখাস তোমার ; নৈমিধ-অরণ্যে শচী জয়জের সনে করিছে নির্ভয়ে বাস—ভীষণ নিহত।"

"ভীষণ নিহত।"—গজ্জিলা দানবপতি।
"হা রে রে বালক—অবস্ত ইত্রের পুত্র,
আমার সংহতি সাধ বিবাদে একাকী!—
দস্ত তোব এত ?" বলি ছাডিলা নিখাস;
"প্রুপীড় পুত্র, শুন কহি সে তোমারে,"
কহিলা ভনরে চাহি গাঁঢ় নিরীক্ষণে—
"বলোলিনা চিতে তব অতি বলবতী,
কর তৃপ্ত অবস্তের করিয়া আছতি,
শচীরে আনিতে চাহ অমবাবতীতে,
অক্সধা না হয় বেন যাহ ধরাবামে;
শত যোদ্ধা মুদৈনিক বীর অগ্রগণ্য
লহ সক্ষে অচিরাৎ পালহ আদেশ।"

কুতাঞ্চলি হয়ে মন্ত্ৰী সুমিত্ৰ তথন কহিলা —"দৈত্যেন্দ্র, এবে দেব-পরিবত বিন্তীর্ণ এ স্বর্গপুরী, কি প্রকারে কহ কুমাৰ ভেৰি এ বাহ হৰেন নিৰ্গত ? যতে পরাক্ষ যদি দেব-অনীকিনী. নিৰ্গত চ্টাতে হয় আমানিতে শনীবে. নাবঝি তবে বাসিদ্ধ সত্তর কিরুপে কবিৰে কমাব কচ, তব অভিপ্ৰেত। অসংখ্য এ দেব-দেনা তর্জন্ব সংগ্রামে. অমর ভাহাতে সবে হুদূচ-প্রতিজ্ঞ, শক্তিত নহেক কেহ অন্ত-অন্তাধাতে. यर्किक ना हरत निव-विश्व विहर्त । ভবে কি আপনি যুদ্ধে করিবেন গতি, কুমার সংহতি অগু, দানব-ঈশ্বৰ গ বিমক্ত করিয়া পথ পাঠান যভূপি, কি প্রকারে পুনঃ হেথা হবে বা নিবেশ ?"

দৈতোশ কহিলা; — মন্ত্রি, সেনাপতি-' ববণ করেছি পুলে, না যাব আপনি, কল্পীডে দিব এই ত্রিশূল আমার, বাইবে আসিবে শূলহতে অবারিত।" নিবেণ করিলা মন্ত্রী তেরাগিতে শূল,— "পুরী-রকা না হইবে অভাবে তাহার,

উপস্থিত হয় যদি সকট তাদৃশ সমূহ দৈত্যের বল হবে নিঃসহার।" জ্বুটি করিয়া তবে ললাট-প্রদেশে হাশিয়া অসুশিষয়, গর্বা প্রকাশিয়া কহিলা দানবপতি ;—"ম্মিত্র হে, এই—
এই ভাগ্য যত দিন থাকিবে ব্তের,
জগতে কাহার সাধ্য নাহি সে আমাম
সমরে পরাত্ত করে—কিংবা অকুশল ;
অফ্কুল ভাগ্য যার অসাধ্য কি তার—
ধর রে ত্রিশ্ল, পূত্র, বীর ক্তুপীত!"

কলেপীড় কহে "মন্ত্রি, কেন অন্ত এত ? জান না কি অভেগ্র এ আমার শরীর ? বাসবের অন্ত ভিন্ন বিদীর্ণ কথন না হইবে এই দেহ অন্ত প্রহরণে। ইন্দ্র নাহি উপস্থিত, চিন্তা কর দূব, বাইব অমর বৃাহ ভেদিরা সম্বর, আসিব আবার বৃাহ ভেদিরা তেমতি শচীরে লইরা সঙ্গে এ অরগপুরে। হে তাত, ত্রিশূল রাথ, নাহি ক্রতেজ দেহতে আমার, উহা নারিব তুলিতে, বীর কভু নাহি রাখে নিক্ষল আযুধ্ বিব্রত হইতে পশি সংগ্রামের হলে।"

এরপে করিয়া কান্ত মন্ত্রী, বুত্রাস্থরে, শত স্থলৈনিক দৈতা সংহতি লইয়া অসুর-কুমার শীঘ প্রাচীর-স্লিধি উপনীত হৈল। স্থথে স্থদজ্জিত-বেশে। অফুসঙ্গী বীরগণ সহিত মন্ত্রণা করিতে, কহিলা কেই ধদ্ধ অবিধেয়, কহিলাবা অভাকেহ সমর উচিত---কদপীত নিপতিত উভয় সঙ্গটে। निक हेक्का वनवजी, यर्गानिका शाह, ঘটনা তুর্ঘট আরে সুযোগ ঈদশ . যদ্ধই ভাঁহার ইচ্ছা একান্ত প্রবল, ছল কি কৌশল তাঁর নহে অভিপ্রেত। নিরুপার কোন্মতে সমরে সমত না পারি করিতে অন্ত সন্ধিগণে সবে. অগতা৷ সন্মতি দিলা অবশেষে তবে **অক্স কোন সতুপার করিতে স্বস্থির।** ষির হৈল অবশেষে কাহার বচনে, ভীষণের সহচর দৃত যে কৌশলে পশিলা নগরীমধ্যে, অবলম্বি তাহা, নিৰ্গত হট্মা গতি কৰ্তব্য নৈমিৰে। কলনা করিয়া ভির, ঘারদেশে কোন আসি উপনীত ক্রত-আসিরা সেখানে তুলিলা প্রাচীর-শিরে স্থন্তর পতাকা, मानरवत्र युर्क-िक भूग-वित्रहिछ । উডিল কেতন শুত্র শক্তে বিস্তারিত: প্রকাণ্ড অর্বপোত ছি ডিয়া বন্ধন. বাদাম উডিল বেন আকাশমার্গেতে. সমরকেতন অনু হৈল-স্কৃচিত। বাজিল সম্ভাব-শহা, দৃত কোন জন বার্ত্তা লয়ে প্রবেশিলা অমর-শিবিরে: कश्चिम (मनानीवर्श के क्रमञ्जाबरन,---"বুত্রাস্থর দৈত্যপতি যে চেত প্রেরিলা ঐত্রিলার পিত্রাজ্য হিমালয়পারে. গদ্ধর্ক-সমরে জার বিপদ্ধ জনক দৈত্যেশ বত্তের ইচ্ছা প্রেরিতে সহায় শত যোদ্ধা দেই স্থানে শীঘ্র অবিরোধে . দেবকল তাহে যদি পাকহ সন্মত. সংগ্রামে বিশ্রাম তবে দেহ কিছকাল. বহিৰ্গত হৈতে তবে দেহ শত যোধে. ঐদ্রিলার পিতরাজ্যে কবিতে প্রস্থান।"

বার্তা শুনি দেবপক সেনাধ্যক্ষগণ—বকণ, পবন. অগ্নি, ভান্ধর, কুমাব —
মিলিত হইয়া সবে করিলা মন্ত্রণা,
কি কর্ত্তরা দানবের এবিধ প্রস্তাবে।
নিম্নেধ করিলা পানী — প্রচেতা স্থার,—
"উচিত না হয় পথ দিতে দৈতাখোধে,
কপট, বঞ্চক, ক্রেব, দিতিস্থত অতি,
নহেক উচিত বাক্য প্রত্যয় তাদের!
ঐক্রিলার পিত্রাক্য হৈতে দ্ত কেছ
যদিও আসিয়া পাকে অজ্ঞাতে আমার,
বিখাস কি তথাপি সে দ্তের বচনে?
সেধানে থাকিলে পানী না ছাড়িত তায়।"
স্থা-অভিপ্রায়—"দৈত্য যোদ্ধা শত জন

ক্র্যা-অভিপ্রায়—"দৈত্য বোদ্ধা শত জন ঐপ্রিলার পিত্রালরে বাক অবিরোধে, দেব-বোদ্ধা কিন্তু কেন্তু পশ্চাতে তাদের গ্রমন করক বেন নুষ্ণারে ফিরিতে।"

অগ্নি কহে—"দুই তুল্য আমার নিকটে,
নিবেধ নাহিক তার নাহি অনিবেধ,
সত্ত্বর দৈত্যের সনে বেইথানে বাক্,
সত্ত্বেপ পশ্চাতে শক্র কি তাহে প্রভেদ
সতত্ত অন্থিরচিত্ত পবন চঞ্চল,
ক্তু অভিমত্তে এর, কড় অক্তমতে,

অভিমতে দিলা তার- সদা অনিশ্চিত—
বে কহে বখন মিলে তাহার(ই) সহিত ।
মহাদেন, দেনাপতি, সকলের শেষে
কহিলা পার্প্রতীপুত্র—"বিপক্ষে কুর্প্রশ করাই কর্ত্তরা কার্য্য যুদ্ধের বিধানে; দৈত্যের প্রস্তাব দেবপক্ষে শ্রেম্বর। স্বর্গ ছাডি মহাঘোদা বীর শত অন ধরাতে করিলে গতি দেবেরই মদল, হানবল হবে পুরা রক্ষক বিহনে, শ্রেম্বরে ছাডিবারে অভিপ্রেত তাঁর।"

দেনাপতি-বাক্যে অক্ত দেবতা সকলে,
সমত হইলা—শীর প্রচেতা ব্যতীত;
বার্তা লব্নে বার্তাবহ প্রবেশি নগরে
কল্পীড-সন্নিগানে নিবেদিলা ক্রত;
মহাহর্ব হৈল সবে; দৈত্য বোধ শত
নিজান্ত হইলা শীঘ ছাডিনা অমরা,
আহ্লোদে করিলা গতি পৃথিবী উদ্দেশে,
নৈমিব-অর্বেণা ব্যথা শচী-নিবসতি।

সপ্তম সর্গ

হেথা স্থরপতি ইন্দ্র ক্মেরু-শিথরে চাহিলা বিশ্বয়ে যেন নির্থি নৃতন গগন ভূতল মৃত্তি বিশ্ব অবয়ব। ক হিলা বাসৰ-"হায়, গত এত কাল! ষ্ণান্তর হৈল ধেন হইছে বিশাস ! ভাবি ষেন পরিচিত পূর্কের জগৎ ধরিছে নতন ভাব ছাড়ি পুরাতন। ষেধানে তক্ষর চিহ্ন আগে নাহি ছিল, ক্ষেক্-শরীরে, এবে নির্থি সেধানে প্রকাণ্ড প্রসারি শক্তে উন্নত-শিপর নিবিড় বিটপপূর্মহীকৃহ কত ! পূৰ্বে হেরিয়াছি ষ্ণা কৌণী সমতল. পৰ্বত এখন দেখা শৃঙ্গবিমণ্ডিত. লতা-গুলানমাকীর্ণ প্রামল স্থলর. বিরাজে গগনমার্গে অক প্রসারিরা। গভীর সাগর পুর্ব্বে ছিল যেইখানে. বিস্তীৰ্ণ এখন দেখা মহা মক্তল, তক্ৰ-বাব্নি-বিবৃহিত তাপদগ্ম সদা.

নিরস্তর সমাকীর্থ বালুকা-রাশিতে !
নক্ষ নৃতন কত গ্রহ নবােদিত,
নিরশ্বি অনন্তমানে হয়েছে প্রকাশ,
হর্ষের মণ্ডল বেন অস্থান-বিচাত,
অপসত বহদ্র অন্তরীফপথে,
এতকাল হৈল গতি পূজার নিয়তি,
নিয়তি এথন(ও) তুই না হইলা মােরে
আদিষ্ট না হই, কিংবা না পাই সাকাৎ,
না বৃশ্বি কেন বা দৈব এত প্রতিক্ল।
আবার পৃঞ্জিব তাঁরে কলান্ত প্রিয়া,
দেশি প্রতিক্ল তিনি হন কত পাল!
অন্ত চিন্তা, আশা, ইছ্ডা সব পবিহরি,
বুবের বিনাশ কিনে জানিব নিশ্চত।"

এত কহি আধোজন করে পুরন্দর,
বসিতে পূজায়, পুন: নিম্নতি তথন
আবিভূতা হৈলা আসি সন্মুথে তাঁহার
পাষাণমুমতি, দৃষ্টি অতি নিরদর।
মাধুর্যা কি সম্বন্ধতা কিংবা দয়ালেশ,
বদন, শরীর, নেত্র, কি ললাটে,
ব্যক্ত নহে বিন্দুমাত্র, নিত্য নিরীক্ষণ
করতলন্থিত ব্যাপ্ত ভবিতব্য-পটে।
অনক্তমানস, দৃষ্টি আলেখ্যেব প্রতি,
কহিলা নীয়স বাক্য চাহিয়া বাসবে,—

"কেন ইক্ত। নিয়তি-পূজায় ব্যাপত ? নিয়তি নহেক তই কিবা কট কভ . অজ্ঞাত নহ ত তুমি সৃষ্টি হৈল মবে. তদবধি এ আলেখ্য অর্পিলা আমায় বিরিঞ্জি কমলাসন, নাঞ্চি সাধ্য মম বার্থ করি অথমাত ইহার লিখন। चाम थी क्षार्ध यकि इस मिथि धन. এ বিশ্ব-ব্ৰহ্মাণ্ড কণ তিলেক না ববে. খণ্ড থণ্ড হবে ধরা, শুক্ত জলনিধি, विभाग देशताल हुन इत्व व्यक्तिश्रार । ৰিকলাক হবে বিশ্ব -- মন্ত্ৰা, দেবতা, চক্ত, সূর্য্য, গ্রহ, তারা কাল, প্রমাণু---বিশৃশুল হবে অর্গ, মর্ত্ত্য, রুসাতল, ভাগোর এ লিপি যদি তিলার্দ্ধ থণ্ডিত। বাসৰ, আমার পূজা কি হেতু বুথায় ? বিবেক হয়েছ হারা পড়িয়া বিপদে, নির্ম্মল দেবের চিত্ত অসাধ্য সাধিতে।

তাই ভ্ৰান্ত হ'রে চাও অসাধ্য সাধিতে। নাহি চাহি, ভাগ্য তব ভবিতব্য-লিপি খণ্ডন কবিতে বিন্দু-বিদৰ্গ প্রমাণ।"

কহিলা বাসৰ হৃংধে,—"না চাহি কলাচ
অসাধ্য তোমার বাহা আমার তা দিতে;
কহ শুদ্ধ কি উপারে হইবে নিহত
দৈত্য-কুলপতি বৃত্ত; কত দিনে পুন:
স্ববৃন্দ সহ ইন্দ্র খনে প্রবেশিবে,
কত দিনে পূৰ্ণ হবে দেবের হুগতি ৮°

নিরতি কহিলা;—"ইন্স, কি উপারে হত হইবে দানবরাঞ্জ, কহিতে কে পারি, কহিতে উচিত কিন্ধ নহে দে আমার , তুমি না হইলে অস্তে জানিত না কিছু। তুমি স্মরণতি ইন্স—তোমার কিঞ্ছিৎ তবিতব্য গৃঢ় লিপি করি প্রকটন ; ব্রন্ধাব দিবাব অস্তে বুত্রের বিনাশ,— জানিবে বিশেষ তথ্য বাও শিব-পাশে।" এত কহি অস্তিত হইলা নিরতি।

বাসৰ সহৰ্য-চিত্ত চিন্তি ক্ষণকাল, ভাগ্যের ভারতী চিত্তে আন্দোলিয়া স্থথে. অচিরা**ৎ স্বপ্রদেবে করিলা** স্মরণ। কহিলা,—"হে দেবদুত- স্থসন্দেশবছ, তোমার বারতা নিত্য মঙ্গলদারিনী, শীঘ্ৰ যাও দেবগণ এখন ষেধানে. কহ গে তাদের দৃত,এ স্থবারতা, কুমেক-পর্বতেই পূজা সাজ করি ধ্যান ভাঙ্গি এত দিনে হইলা জাগ্ৰত. নিয়তি প্রসন্ম তাঁরে হইলা সাক্ষাৎ, করিলা বিদিত বুত্র-বিনাশ ষেক্সপে। কৈলাদে ধৃৰ্জটি-পাশে করিলে গমন, কহিবেন স্বিশেষ দেব শ্লপাণি. ভবিত্তব্য-লিপি বথা, বুত্তের বিনাশ, বন্ধার দিবার শেষে, ভাগ্যের ভারতী। निव्रक्ति-चारमर्भ এरव किमान-ज्वरन জানিতে বিশেষ তথা পিনাকী-নিকটে शीं अभ , शूनकीत लिंछ निवादनन, অচিরাৎ স্থর*বুন্দ সংহ*তি মিলিব। विविश्व हिला हैस निटवत व्यानश्च ।

স্থপন, বাসব-বাক্যে স্থগ-অভিমুথে দেবগণ সমূদ্ধেশ্য করিলা গমন, বাসৰের সমাচার করিতে ঘোষণা। সেধানে আদিভাগণ বসি নানা স্থানে বিতঞা করিছে নানা উৎস্থক অন্তব, কি উদ্দেশ্যে বত্রাস্থর নন্দনে আপন, সৈনিক সংহতি শত মর্জ্যে পাঠাইলা। শক্রপক্ষে, প্রত্যাশারে বাইতে আদেশ, কেহ বা উচিত কহে. কেহ অমুচিত, অলীক কথনে দৈত্য ছলিলা অমরে. কেহ বাসংশয়যজ্ঞ কেহ বিধাহীন। প্রচেতা চিন্তার মগ্ন ভাবি কিছুকাল, অমুভৰ কৈলা শেষে দৈত্য-অভিপ্ৰেত. শচীব প্রবাস মর্ত্তো ইক্র কুমেরুতে, তথ্য পেয়ে গেলা কোন অনর্থ সাধিতে। এরপ সংশব ভাবি প্রচেতা তথন, প্রকাশিয়া দেবগণে বিধা আপনার. কেহ কৈলা গ্ৰাহ্ম তায় কেহ না শুনিল. মতামত নানামত প্রচেতা-কচনে। দেব-সেনাপতি স্থন্দ পার্বভী-নন্দন কছিলা তখন--- "বুধা তৰ্ক কেন এত গ ষাক্ মৰ্ব্যে দৃত কোন, আত্মক জানিয়া ममत बंधार्थ कि ना शक्तर्यनानद्व। সমাচার পেয়ে পরে কর্ত্তব্য বিধান ষা হয় হইবে শেব, দত কেহ যাক।"

কহিলা প্রচেতা—"কিন্তু অবসর পেরে, ঘটার উৎপাত যদি কি উপার তবে ?" উগ্রমৃঠি জারি কোধে উন্নত তথনি

বাইতে বস্থা-মাঝে শত্রু সংহারিতে মন্ত্রণায় কালকর সর্বকর্মে ক্ষতি, একাকী বাইবে মর্জ্যে সদর্শে কহিলা। তথন কহিলা স্ব্যু—"বিপদ বছলি ঘটে কোন দেবে মর্জ্যে, তথনি স্মরণ করিবে সে শক্রু দেবে মানসে ডাকিয়া, দৃত মাত্র এক জন প্রেরণ উচিত।"

হেন আন্দোলন হর দেবগণ-মাথে হেনকালে ইন্দ্রুত গুডবাতাবহ খপন আইলা দেবা, শীঘ্রতর অতি একত্র হইলা তথা আদিতেরগণ। সহ-ইবদনে দৃত অমরবুদ্দেরে সন্তাদি, কৃহিলা আক্রাবাসবের যথা, কৃষ্টিলা—"আমার ইন্দ্র শীদ্ধ পাঠাইলা

"এই জাতি ফুল তাঁর প্রিয় অতি" সেবিতে কিম্বরী ঐক্রিলা-ছহিতা বলি কোন পুষ্প তুলে, স্বৰ্গে কি ছিল না কেছ? বদিৰার সাধ" "এই পালঙ্কেতে ব্রহ্ম ও-ঈশ্বর দানব-মহিধী वनि जारह देवरम जुला। मानी ठाहि खर्म रमह! "এই অসুগুলি আমাবে না কেন কহিলামহিষী খুলি কতবার খুলি সেই শবাসন, আমি দেবিতাম তাঁয়, কহিলা 'সাজাব রণবেশে ভোমা পরে না কি তাঁর সাধের ভাণ্ডার শিখাব করিতে রণ।' শচী না সেবিলে পায় ? কেন আ (ই) লা দৈত্য এ অমবালয়ে এ কবচ অংকে দিল। কভ দিন আছিল আপন দেশ; শিরে এই শিরস্থাণ। কটিবন্ধে কসি मिना এই अनि পরে দিয়া পীড়া লভিয়া এ যশঃ হাতে দিলা এই ব'ল। কি আশা মিটিবে শেষ ? অতি প্রিয় তাঁব किवि यमि दमर्भ অস্ত্র এই স্ব যার দিয়া তারে যান পুন: দৈত্যপতি, আমার সাধের অতি. কাঁর সাধে অকে ধরি এক দিন এ পোডা আশঙ্কা এ বস্ত্রণা ষ্ট হেরে প্রিয় ফুল্লমতি। তবে দে থাকে না, বতি।" আমাহাএই ধয় চাক পুষ্পমন্ত্র ! রতি কহে "আহা। তুমি ইন্বালা দানব-কুলের মণি। মনমথ দিলা তাঁয়, নাদেখি শচীরে যুদ্ধ-ছল করি কত পুস্পেশাব তার শোকে এত বিধুরা হইলা ধনি ! ফেলিলা আমার গায়। দেখিলে ভাগাবে না জানি সে কিবা এবে শুকারেছে হয়েছে নির্গন্ধ করিত তোমার চিতে, প্রিয়ক্ব কত দিন, ক্ৰণমাত্ৰ কাল না প্রশে ইহা---সমর-ভরকে বুঝি শোকভবে এই স্থানে না থাকিতে। বত তিনি অফুদিন। সে অঙ্গ-গঠন সকলি কোমল প্রিয়ের আমার মুখের সে জ্যোতি नमदत ऋधू निषय , সে চারু গীবার ভাগ, সে গুঞ্চলনি হেন স্থকোমল হদর তাঁহার মহিমঞ্জিত. সে উরু উরদ-হান। কেমনে কঠোব হয়? আমিও ব্ৰণী রমণীও শচী গে দেখেছে, কভূ চির্দিন তাব হৃদয়ে থাকয়ে পশি, তবে তিনি কেন তার, দেখিলা সে বতি নাকরিরাদ্যা হইয়া নিষ্ঠর এ পে'ডা নয়নে পূর্বিমার সেই শুণী। ধরিতে গেলা ধরার ? অমবার রাণী কি হবে শচীব ইন্দ্রাণী সে শচী পতি নাই কাছে মহাবীর পতিমম. ভাহারে কিন্ধবী-বেশে. শামিও ৰজপি পড়িসে কখন রাখিবে এখানে , রতিব অভাগ্যে विश्रास महीत मय ! **मिथिए इंडेल (मेर्स!"** কহে ইন্দুবালা সুকুমার-মতি ভাবিতে সে কথা থাকিয়া এথানে "হায়, রতি, কি কহিলা! আমার (ই) হদর কাঁপে ! না গানি একাকী কবিতে কিম্বরী এ হেন রমারে গছন কাননে দৈত্যেন্দ্ৰাণী আকাজ্ঞিলা! শচী ভাবে কত ভাপে।

"হার ইন্দুবালা তুমি হুকোমলা পারিকাতপুষ্প ধেন, ভাঁহার হদর পতি যে তোমাব নিৰ্দিয় এতই কেন ?" "ব'ল নাও কথা মনাথ-প্রের্মী তৃমি সে জান না তার; দেখ না কি কভু শৈল-অক্টেক্ত খাছ নীর-ধারা ধার; না নিন্দহ তাঁরে শচীর লাগিরা বীর তিনি রণপ্রিম! শচীর বেদনা ঘূচাৰ আপনি ফিরিরে আসিলে প্রিয়। ৰাৰ শচী-পাশে করিব শুশ্রবা যাতে সাধ দিব আনি, হইতে দিব না মহিধী-কিকরী কহিন্থ নিশ্চিত বাণী। মশ্মধ্রমণি ! নাহি কর থেদ যাহ ফিরে নিজবাস. পতির এ দোৰ যাহে ভূলে শচী পাইব সদা প্রয়াস। গাঁথিব না ফুল ভেবেছিত্ব আর থাকিবে অমনি ঢালা, এবে গুটাইয়া আবো স্বতনে গাঁথিয়া রাখিব মালা। ফিরিবেন পতি যবে শচীল'য়ে পরাব জাঁহার গলে, পরাব শচীরে মনের আহলাদে মৃছায়ে চক্র জলে। পতিয় মালিক নারী না ঢাকিলে কে ঢাকিবে তবে আর," কুসুমের রাশি বলিয়া, লইয়া রসিলা গাঁথিতে হার। ইন্দ্বালা তুমি "कि माना शांबिरव কি মালা গাঁথিতে জান ? পুষ্প গাঁথি দিত নিজ হাতে রভি তবু**নাজু**ড়া**ত** প্ৰাণ। (एवक्छा शीरत সেবিত নিয়ত ञ्चरमङ উच्चन कति. ঐদ্রিলা সেবিয়া সে আৰু এথানে त्रद्व मांशीदवन धति !

এ ডঃখ তাহার করিবে মোচন দিয়া তাবে পুষ্পহার ? कदिएल वक्षन ফুলের রজ্জতি বেদনা নাহি কি তাব ? আর কেন চাও ফুটাতে অঙ্ক্ব চরণে দলিয়া আগে, দানব-নন্দিনি জান না সে তুমি **इःशो**रत **भू जि**त्न नार्ग। মুগেজী আসিছে আপন আলয়ে শৃভাল বাঁধিয়া পায়! রতির কপালে এও দে ঘটল দেখিতে হইল হায়।" নয়নে তথনি বলি বাষ্পাকুল-यमाथ-द्रमणी हतन, নির্থি ভাসিল রতি-চক্ষু-জল इन्दोना हक्षला। পড়ি বিন্দু বিন্দু ক্সুমের প্রজে इन्ताना शाय क्न, ভাবিয়ে পতিরে ভাবি যুদ্ধভন্ন চিন্তাতে হ'মে আকুল। ভ্ৰিয়া গহনে কুবন্ধী বেমন মৃগয়ীর দ্ব-রব, প্রতি পলে পলে চকিত চঞ্চল মৃত্যু করে অহভব , চমকি চমকি দেইরপ ভয়ে গাঁথিতে গাঁথিতে চায়. ইন্বালা রামা ফুলমালা হাতে ক্ষদ্ৰপীড় ভাবনায়।

নবম সর্গ

দেব দৈত্য শত বোধ,
চলে শৃজে বিনা রোধ,
উদর-জচল আদি হিমাচল-পথে ,
শৃদে শৃদে পদকেপ,
কৈমে পথ সংক্ষেপ,
শৈলপথ হাড়ি শেষে উতরে মরতে।

এংগ্রামে জিনেছি স্বর্গ সমূহ অমরবর্গ, ্রখন সে অতি তৃচ্ছ দানবের দাস , ইন্দ্রের বনিতা যেই. দাসের বনিতা সেই. উচিত নহে সে ছাডে প্রভূপত্নী পাশ। কি যুদ্ধ আমায় দিবি, যুদ্ধ কি তাকি কানিবি, জানে সে জনক তোর বাসব কিঞ্জিৎ. জানে সে অমবগণ. অস্থরের কিবারণ, আছিল পাতালে প'ডে হাবামে সংবিৎ। লজা নাহি চিতে আদে, নিন্দা কর হেন ভাষে, ষে জন তৈলোক্যজয়ী পুত্রেব কুমার, হারায়েছি শত বার, হারাইব আরবার, তুই সে নিৰ্লজ্জ বড ছুঁইবি আবাব। সেই দীপ্ত হুডাশন ? ভয়ে যার অদর্শন. ংয়েছিলি এতকাল হতাশে কোথায়! ধর অস্ত্র কর রণ, বল যুদ্ধে সম্ভাষণ. সাহস ধরিয়া প্রাণে করিবি কাহায় ? "বুথা বাক্যে কাল ধায় সকলে একত্ৰ আয়" किंगा अध्रत्न, "यूक (मथ्दि मानव , ধরু অস্ত্র শত ধোধ, এথনি পাইবে বোধ. বাসব-নন্দন তুল্য বিজয়ী বাসব।" विन किना मिश्हनान, দৈত্যের শঙ্যের হাদ, अत्रग्र आद्याष्ट्रि, शुक्र कतिल विनाद , শতবোদ্ধা একেবার. क्लामर्थ मिन छेकात्र. মেঘের লিনাদে খোর ছাড়িল হকার। অন্ত শব্দ সব স্তব্ধ, দেব-দৈত্যে যুদ্ধারক, কেবল হুম্মারধ্বনি বাণের গর্জন ;

আন্দোলিত হয় সৃষ্টি. স্থরাম্বরে শরবৃষ্টি, रेमरलरा रेनरलरा राम मना मः पर्या । क्षपन, भूषन, भना, প্রক্ষেত্র, চক্র, ভল্ল, দৈত্যের নিক্ষিপ্ত অস্ত্র বরিষে করকা। জয়স্তের শররাশি চমকে তমসা নাশি. অন্তর্গকে ধার ধেন নিকিপ্ত তারকা। **क्यांत्र-मार्फ् लाग्ल**, ভ্ৰিয়া সে কোলাহল, ভ্ৰমে ভয়ে ছাডি বন, পৰ্ব্বত-গহৰৰ, বিহল জডায়ে পাখা, তাদেতে ছাডিয়া শাখা থসিয়া থসিয়া পড়ে ধরণী-উপর। ধুলিতে ধুলিতে ছন্ন, অভেদ নিশি মধ্যাহ, উদ্গীরিল বিশ্বস্তরা গর্ভস্থ অনল , অসুর-জন্বর-ক্রিপ্ত, (मन, भृत, भत्र मौध, ঘাত-প্রতিঘাতে ছিন্ন কৈল নভঃস্থল। ধরাতল টলমল. नहींकन कन-कन. ডাকিয়া ভাষিয়া রোধ, করিল প্লাবন; ঘুরিতে লাগিল শৃন্ত, र्भनकून रेशन कुछ, চুৰ্ব ছুৰ্ব ছ'য়ে দিগ্দিগ্তে পতন। হেন যুদ্ধ দেবাস্থ্ৰে, रुष्ठ व्यर्क-मिन भूदब, उथन अग्रल-कत्रज्ञा मीश-व्यपि . ছুটে ধেন নভশ্বৎ, কিংবা ক্ষিপ্ত গ্ৰহ্বৎ, পডিল বেগেতে দৈত্য-মণ্ডলী ঝল্সি। ৰথা সে অভনবাসী. তিমি তুলি জলরাশি. সাগর আলোডি করে পুচেছৰ প্রহার; যবে যাদঃপতি জলে, ক্রমে ভীম ক্রীডাচ্ছলে. উত্ত শ-পর্বত-প্রার দেহের প্রসার।

চপলার কানে কানে মৃত প্রনের স্থনে কহে "স্থি, দেখ কিবা হয়েছে শোভন . মৃত রশ্মি ক্লান্ত দেহে বেন পড়িয়াছে স্নেছে मन्त्रात्र-कुञ्चरम (यन চन्द्रमा-कित्र। এই সুষ্মার থেলা চাঁদেতে চাঁদের মেলা षाहा, षाकि ना दिश्वत, म्बि. श्रुवन्ततः (मथा (म इहेरव यरव কহিব তাঁহারে তবে দেখিলে সে কত তাঁব জড়াভ অন্তর। শুনে এ বৰ্ণ-সংবাদ করিতেন কি আহলাদ দিতেন কতই সুথে পুত্রে আলিখন; আশীর্কাদ করি কত ত্মিগ্ধ হয়ে অবিরত করিতেন স্লেহে আই বদন চুম্বন। বদি থাকিতাম আজ অমর-রুদের মাঝ অমরাবতীতে, স্থি. ইন্দ্রের ইক্রাণী। আজি কত মহোৎদবে ত্ৰিতাম দেব সবে কতই আনন্দে আজি ভাগিত পরাণী। জ্বান্তে করিয়া সজে ভাগিয়া স্থ-তরকে ভ্রমিতাম কতই আনন্দে ত্রিভূবন; विकृ-श्रिमा कमलादम ঈশান-প্রিয়া উমারে দেখাতাম ইন্দ্রপ্রিয়া শচীর নক্র। একা যে করিলা রণ সহ দৈত্য শত জন সমরে করিলা ক্লান্ত কদ্রপীড়ামুরে; সে আনন্দে বিসর্জন--ধরাতে নৈমিববন---অরণ্যবাদিনী শচী আজি মর্ক্তাপুরে ! আবার অন্তরে ভয়, ना कानि (व किवा इद्र, কালবুদ্ধে, রাত্রি পুনঃ হইলে প্রভাত ;

ক্রদুপীড় মহাবীর, অরম্ভ ক্লাম্ত-শরীর. অসুরের অস্ত্রপ্ত যেন উদ্বাগাত।" হইয়া বিমৰ্থ ছবে. চাহি চপলাব মুখে, ফেলিয়া স্থদীর্ঘ খাস কহে ইন্দ্রভায়া: "তনয়ে শ্বরি এথানে, मृष्यंन दिंदधि व्याप्त, স্থি রে, তুরন্ত স্তানের মারা। পুদ্ৰ-মুখ বতকণ না করিত্ব নিরীক্ষণ, দানব-আশকা চিত্তে ছিল না ডিলেক: আগে না ভাবিয়া, স্থি, ও চারু-মুখ নিরখি, বিবশা হয়েছে এবে হারারে বিবেক। অস্তবে আশকা হেন বিপদ নিকট যেন সহসা আতিকে কেন চিন্ত হৈল তার ? দ্বি, অন্ত কোনু দেবে শ্বরণ করিব এবে সহার হৃইতে যুদ্ধে জ্বয়ন্তে আমার ?" নিশি-শেষে নিদ্রা-ভঙ্গে অর্দ্ধ-চেতনের সঙ্গে अमृत्य पूत्रनी-श्तनि वांकितन त्यमन , স্থাস্থ মিশাইয়া পরাণেতে জড়াইয়া কাগ্রত করিয়া চিত্ত পরশে প্রবণ। জন্মন্ত-শ্রুতি-কুহরে তেমনি প্রবেশ করে मठीत रम अवश्व रकांवन वहन ; উদ্মীলিত-নেত্রে বসি হেরি অন্তপ্রায় শণী कहिला खनमी-शम कविशा वन्तन । "প্ৰভাত হইল নিশি প্ৰকাশিত পূৰ্বনিশ **দেখ মাতঃ**, চারু কান্তি অরুণের রাগে। পুত্রে আশীর্কাদ কর না উঠিতে প্রভাকর थारविन मश्योमकरण मान्दवत चारश ।"

বিগুণ বিক্রমে এবে. দানব আক্রমে দেবে. ছাড়িয়া বিকট দর্পে গর্জন ভীষণ, দেবদৈতো যুদ্ধারক, আবার ভুবন শুক শুকুমার্গে অবিরত অন্ত্র-সংর্ঘণ। व्यावाद कांशिल धना, মৃর্ব্তি ধরি ভয়করা, তুম্ল যুদ-সংক্লা, সুদা ভালহাল , দায় হ'ল তরংকুল. বিচিছন্ন পর্ববিভয়ল, ভীষণ কর্কশ বেশ ধবে রণস্থল। क्रम्स भागत-भारता. যুঝিছে তেমনি সাজে, যুঝিলা যেমন পূর্ণের বিনতা-তনয়, গকআন মহাবীর ফণীন্দ্রে করি অস্থির প্রবৈশে পাতালপুবে ভূজক্ষময়। ठाविषिएक जानीविष ফণা ধরি অহনিশ. গাঁচ অন্ধকারে কবে বিকট গর্জন. গরুড হুর্জন্ন দর্পে, ঝাপটে ঝাপটে সর্পে, প্রদাবি বিশাল পক্ষ করার স্থান ॥ এরপে পর্বাহু গত. জয়ন্ত শরে নিহত আবাব দানব পঞ্চ পডিল ভৃতলে---পতে ৰথা ধনাধর শৃক ভাকি ভূমিপর, **क्क्यान हरन जन छेहरन छेहरन ॥** তখন আকুদ্ধ-বেশ, আকৃঞ্চিত ভূক্ন-কেশ, **ক্দ্রপীড়মুহুঠেক জন্মতে নির্থি,** ভীষণ एक्षांत्र-त्रदन, শ্ৰেতে তুলিয়া তবে, প্ৰকাণ্ড জ্বল এক মৃষ্টিতে থমকি , **মুরায়ে** ঘুরায়ে বেগে, খোর শব্দ যেন মেদে, হৰ্জন প্ৰচণ্ড তেজে করিল প্ৰহার।

না করিতে সংবরণ, জয়স্ত-অঙ্গে পতন, **হইল প্রকাও মৃত্তি শৈ**লেব আকাব॥ না সহি হুর্বহ ভার. অচল বিজ্ঞলী-হাব বিচ্ছিন্ন হইলে যেন, পড়িল তেমন। কিংবা ধেন রাশীকত. চন্দ্রবাদ্য শোভা-হুদ খসিয়া পৃথিবী-অকে হইল পতন! শিরীষকুসুমন্তর, (यन वा चवनी शव. পড়িয়া রহিল মহী কবিয়া শোভন, দেখিতে দেখিতে ছ্যাতি নিমিষে মিশে তেমতি ভব্মেতে অনার-দীপ্তি মিশার বেমন ! মৃত্যুহীন দেবকায়া, মূর্চ্ছাই মৃত্যুর ছায়া, জয়ত্তে আছেন্ন করি চেতনা হরিল, নিদ্ৰিত মানৰ ৰথা, निक्त इहेन उथा, রেণু-ধুসবিত তহু পড়িয়া রহিল। **छेलारम मानवम्म.** জয়শন্দ-কোলাহল, निर्भारत व्यवनौ गुक्त देवल विषादन , শিহরে বেমন প্রাণী শ্ববাহী হরিধ্বনি গভীর নিশীথকালে করিয়া শ্রবণ , তেমতি সে ভয়ন্বর, मानरवन्न कन्न-अत् শুনিয়া শিহরে শুচী অক্তরে পীড়িয়া. **ठक्षण मामिनी यथा.** ইন্দ্রপ্রিয়া বেগে ডথা, হেরে আসি পুদ্রতমু ধরাতে পডিয়া। "হাবংস জয়ক্ত" বলি, খলিত চরণে চলি, ধাইয়া আমিয়া পার্যে ধরিল ভনয়, কোলেতে করিয়া তমু, ছিলাপুক্ত বেন ধতু, त्तर्व श्राणिया पृष्टि म्लनहीन हम।

একৈ একে বিশ্বনাথ বিশ্ববিশ্ব যভ দেখায়ে গৌরীরে তত্ত কছেন ব্যায়ে.— কি হেত হইল সৃষ্টি কিরুপ প্রকাবে, পঞ্জত, আত্মা, মনঃ প্রকৃতি প্রথমা, প্ৰমাণু, প্ৰমায়ু, উৎপত্তি, বিনাশ, কাল, পরকাল, ভাগ্য, বিধি-সংস্থাপনা পুক্ষ-প্রকৃতিভেদ হৈল কিবা হেত **হইল বা কডকাল কিরূপ সে ভেদ.** চিল কিংবা নাতি চিল সে ভেদ আদিতে ১ইবে**, কিনা হই**বে পুন: সে অংভেদ। কতাক্ষিত,কোন বিশ্ব বিবাজে কি ভাবে স্টির প্রারম্ভে মূর্ত্তি স্থিতি কি প্রকাবে, কেন বাজগৎ-গতে সকলি অস্তায়ী. সদা পরিবর্ত্ত**ীল জড় কি** চেতন। কিব্লুপে অতল সৃষ্টি জীবেব অন্ধর হটল আদি মহতে, বিনাশন ধবে কোথায় কি ভাবে রবে প্রমাণুকুল, জীবাত্মা অনিতা কিবা নিতা চিবদিন। এই বিশ্ব সপ্রত্যক্ষ—এ সৌন জ্বগৎ— বৰ্তমান কভ কাল থাকিবে এ আব : নবদেহধারী প্রাণী মহত আখ্যাত ধরিবে কি মর্ত্তি পুন: কল্লান্তর পরে। পাপ পুণ্য কিনে হয়, হুদ্ভি, স্কৃতি, অদষ্ট-অধীনগণে ঘটে কি প্রকারে; স্থু হৈতে মানবেব তঃখ-প্ৰিমাণ গুৰুত্ব কেন এত জগতীমগুলে। অনুজীৱ-আনুখা আবুনৱের আনুখার, कि एक, कि एक एमर-यानरमञ्जातन, তঃখ-স্থুও ভোগাভোগ মৃক্তি বা নিৰ্কাণ. দেবতা মানব দৈতা ভিতরে কি ভেদ। এইরপ দেব নব চিস্তার অতীত নিগৃত তত্ত্ব নিৰ্ণীত করি ব্যোমকেশ কহিছেন ভবানীরে ত্রনাও দেখারে . উনিছেন কাত্যায়নী চিত্ত প্রফুলিত। এনপে ব্যাপত হৈমবতী মহেশ্বর মহাদোর শুক্ত-গর্ড কৈলাস-ভিতরে; হেনকালে স্থারপতি আসিয়া সেথায় সম্বনে বন্দিলা উমা উমাপতি হরে। বাসবে দেখিয়া ছুর্গা মধুর-বচনে কুণল জিজাসি ভারে কৈল সন্তাধণ.

@জ্ঞাসিলা—"কি কারণে গত এত কাল. না আইনা পুরন্দর কৈলাসপুরীতে ? কি হেত মলিন দেহ বদন বিরস ? সর্বাঙ্গ বিমর্গ শুষ্ক সমাধিতে যেন. কিংবা ষেন রণস্তলে ছিলে কত কাল-কি বিপদ উপস্থিত আবাব ত্রিদিবে।" কহিলা মেঘবাহন—"হে আতা প্ৰকৃতি. ভिनिन। कि मर्त्रकथा---(मरवद्र प्रक्रिमा १ কি কবিলা বতাসর মহেশর-বরে. কিরপে অমরাবতী জিনিলা প্রতাপে ? দেবগণ স্বৰ্গচাত জ্যোতি:শক্ত দেহ. শিবদত্ত মহাশ্ল-আঘাতে তাডিত. লাগ পাষ কোনমতে পাতালে পশিয়া. সরভোগ্য স্বর্গ এবে দৈত্যের আবাস। শনী বৈজয়স্তহারা ভূমিছে ধরায়, অরণো নিবাদ নিতা অহর্নিশ কাল: অন্য দেবীগণ যত স্বৰ্গচ্যত সবে, না জানি কি ভাবে কোথা আছে লুকাইয়া, ত্রিদিব-বিজয়াবধি নিয়তি-পজায় নিময় ছিলাম আমি কুমেক-জঠরে পরাজিত, পরাশ্রিত শত্র-তিরস্কত-বিপদ ইহার হ'তে কি আবে ভবানি ? ভূলিলা কি মহেশবি. মহেশেব মত. ञ्चत्रत्म একেবাবে ? जुलिमा वामद्य ? ভাৰিলা কি ইন্দ্রাণীরে ৪ পর্স্তনন্দিনি. পাৰ্ব্বতি, ভূলিলা কি গো পুত্ৰ ষডাননে গ জানি নাই ভাবি নাই বিপদ নতন হৈল কি না উপস্থিত অন্ত কিছু আর— নিয়তি-আদেশে নিতা অন্তরীক্ষপথে চলেছি ক্রমশঃ এই কৈলাস উদ্দেশে।" ভবানী কহিলা--- "সতা ওহে ভগবান, ভ্ৰান্ত হয়ে এত দিন তত্ত্ৰ-মালাপনে ছিলাম ঈশান সঙ্গে রত এইকপে।--কান ত আনন্দ কত সে তঞ্-শ্ৰব্ণে। কি কৰ মৃত্ঞান্তে সদা আগুতোৰ, যে যাহা বাসনা করে না ভাবি পশ্চাৎ দেন তারে অচিবাৎ বর আকাজিত. আপনি নিমগ্র সদা এই চিস্তাস্তথে। এতকণ ইন্দ্র তুমি উপস্থিত হেথা. কণোপকথন এত তোমায় আমায়.

्हत ता निविष्ठे किये क्योंनि **रक्क**ि উমাপতি সম্ভার - সংক্রাবিরহিত। कारत गत्रमा अंक मिन नृजीयुद्ध ; का है। इस. बाउ कहे कृष्टिना दर कृमि ! नहीज ध्वांक वाम अव्या-फिल्ट्स । কান্তিক্ষে বহামুছ্যা-হাতনা-গীড়িত। हेल, जामि धरेकरण कहित नहरत. डांब जामीकान-शृष्ट रेन्छा छवानात উজিয় করিশ অর্গ দেবে তির্বারি. करवन धर्मान देशको-नियन-छेणात्र।" क्छ कड़ि कांग्रावनी हाहि भहारमध्य কহিলা--"শন্তর, হের আইলা বাসব কৈলাসভ্ৰনে, দেব, তোমার আন্তরে, তৰ বরপুষ্ট বৃধ দৈত্যেব পীড়ন। (इ मृशिन, मना जिम अक्ररण विलाहे, 'বটাও অমারলে দৈত্য আখাদিয়া, तिथ वर्गतात्रा अदर इत होत्थात-সানব-দৌরাত্মো, দেব না পালে ভিটিতে। মারা নাই, দ্বা নাই, স্বেহ-বির্হিত, मब-मबोगत मत्व निक्लि विलेख. ভূলিয়া আগন পুত্ৰ পাৰ্মতী-তনংগ, আছ নিতা ধান সূৰে সদা নিশীলিত। । क्रिएक ना भाव यनि एष्टित नियम. লাভ তৃষ্ট হলে তবে কেন ছুট সনে বর দিয়া পাড় এড বিষম উৎপাত ? উমাপতি; কর বৃত্র-নিধন-উপার।" ত্ৰিপুৰ-অত্তক শস্তু শিবানীয়ে চাহি ভ্ৰিলা─ "হে হৈষ্বতি, বুত্তের সংহার अवन (६) कि ना बहेन ? ना निर्ह पर्य এখন (৬) কি শ্বরবুলে করে নিশীতুন ? कर दिशीत, क्लकान विन हिंचा कत्रि, कहिरकन मृजभानि-"चन एक बीनव, क्षान्यकान छत् रहेटव नचत्र क्षित विश्वन अविश्वा-अवशास !" क्राइ-दिन्दानंत, बानि (ज. में:बाब क्षा विश्व दहकार दहकान. then biels mes dente contra बनादनव काचा जानिएक विरम्पन

बाजारव बनवीका नाम स्मिविक्रक, बायक, दलामात चात क्रम व निकात আপুন গ্ৰিমা ব্যক্ত ফারতে আপুনি. না পারি- মাহি গম্ভবে অ পথাল কর্ जिश्रापि, छन् हि छ-दिन नाम दिन्। দান করিতে নাবি চেশুনা পার্কিত হাং ছিলাম বর্ণের পশ্চি লারম্র বিখ্যাত্ত व्ययस्तित त्राप कलू मट्ट शताकते. जा स त्रहे हेस व मन बुखां चरत वित्र लिंग त्यहे माना शास्त्र १७ वर्ष नेपूर्व । व त्यांक्ष-एकत्व रेक्डा मा प्रिट्ट गृह्य वृद्ध के देन बाद्धांगांक मि है बार्शित ने कि कर, कविना गूर्ड प्रदेश जाहीत আগন ত্রিশ্ব নৈতে। দিয়া শ্বপানি।" कहिएक कहिएक हेश देवता आवर्ष ভীমতেৰে আপনার ভীষণ কাম্ম্ক, डेट्सब नवरने गांछ हमत्क हमत्क. জনিতে লাগিল তাহে জেটভিঃ অপক্ষণ नामान मानवकृत्व बीत (पव हम. অরাতির দম্ভ তার চিত্তেন গরণ . श्काकीरहेत जुना नटक (म नदां है, न्य-निर्माण्डल मृजा त्मल हाट क्लू. महावीधावान देख त्राटवत्र खाधान-मास-विकित रहा, विक अकति छ বৃহত্তি চিত্তাপে দম্ম নিবস্তর. श्वरत्व मीश्र काना वारकारक श्रकात्म । শুনি উমা. উমাপজি আরুট হইয়া. है। सब बाउब डेकि किए की ब दिया, ट्रमकारत कक्तार त्याबरकन करें। क्षेत्र कार्निन नेदर् नश्रव क्रिकादा वित्रा निक्त वह वावक्त-कट्ड, ত্যার অশ্রম বিন্দু গতেতে মারিল, नक्ता छत्का किएक क्रम नवाड, विनद्य पश्चिद्य दान अञ्चल दिन्ह femifen aceas offen Gaics "दलन देशवर्षि, त्यन को अक्रपार ! RACE 758% PICT, *(80% COF T AND PROMES STORE OF CT? MENTS PATHER WAS MISTO বিপদে পভিয়া ঘোর দৈত্যের পীড়নে. নৈমিব ছইতে দৈত্য করিছে হরণ।" ভবানীর বাক্যারত্তে দেবেন্দ্র বাস্ব জানিতে পারিয়া সর্বা, ছাড়ি ছহস্কার, তলিয়া কামুকি শৃক্তে—দিব্য জ্যোতিশ্বয় পৰ্গ-অভিমুপ্থ শীঘ হইলা ধাবিত। "তিষ্ঠ, ইন্দ্ৰ, ক্ষণকাল" বলিয়। মহেশ হত্র প্রসাবিয়া তারে কৈলা নিবারণ। শিব-করে আক্ষিত হযে আখণ্ডল. গজিতে লাগিলা যেন কোধিত অৰ্থ--যবে বাত্যা-উত্তেজিত মেদিনী গ্রাসিয়া, ধায় ক্রোঙ্গ যাদঃপতি, অবরোধে যদি সে বেগ নিবারি অঙ্গে উচ্চ শৈলকুল. নেষ্টি চতুৰ্দ্দিক দঢ পাষাণ ভিত্তিতে। গাৰ্জ হেন ক্ষণকাল শাস্তভাবে কিছু, কচিলা –"ধূৰ্জাট, তৃপ নহ কি অন্তাপি গ া ছিল ইন্দ্রের শেষ তাহাও দলকে সমর্পিলা এত দিনে মৃত্যজন্মী দেব গ প্র মর্জাগত, পত্নী দৈত্য-অপরুত, বগা হেতু যাই তারে কবছ নিষেধ গ বাসনা কি. শিব, তব ইন্দ্রের লাঞ্চনা াথাকিতে বাকি কিছ বুত্তাস্থর-কাছে. কন তবে সৃষ্টিমাঝে রেখেছ অমর গ কন এ আংকাণ্ড যত বিধি বিরচিত াহি চূর্ণ কর তবে १ - কেন হে বিধাতঃ. বিলে দেবেব স্বষ্ট যন্ত্ৰণা ভগিতে গ ^{ধবেৰ} শিবত্ব শুধু এই কি কারণে ? ।মরে অপ্রীতি সদা সম্প্রীতি অস্কবে १ ্ কি সে সর্বজন-পঞ্জিত শঙ্কর গ 'বনের অঞ্যার মিত্র-আনচরিত ? াহি চাহি কোন ভিকা, না চাহি জানিভে াব কি উপায়ে, ছাড়হ আমায়, ^{দ্ৰ} পশুপতি, এবে কোদণ্ড-সহায়ে ক। ইন্দ্র কি সাধিতে পারে স্বর্গপুরে।" ইক্রের ভর্মনা শুনি ত্রিপুর-অন্তক ^{দহিলা} আনিতে শূল বীরভদ্রে চাহি, ^{চিল।} বাসবে, "শান্ত হও, সুরপতি, চিবি স্মরণে চিত্ত হয়েছে ব্যাক্ল। ি দর্প দিছুজের অসমরাহ্রিয়া,

পরশে শরীর ভার ?—হায় বৃত্রান্ত্র, শিবের প্রদন্ত বর ঘণিত করিলি ?"

বলিতে বলিতে ক্ৰোধ হইল মহেশে. ব্ৰহ্মাণ্ডের বিশ যত শক্তে মিশাইল, পরশিল জটাজুট অনন্য আকাশে, গ্ৰজিল শিৱে গঙ্গা বিভীষণ নাদে। গৰ্জিলা তেমতি যথা হিমাদ্রি বিদারি ভাগীরথী ধার মর্ত্তো গোমুখী-গহনবে , জनिन ननाउ-र्ज्ञ श्रीक्ष-भिथात्र. বহ্নিয় হৈল সেই শক্তব্যাপী দেশ. ধরিলা সংহাব-মূর্ত্তি, কন্ত্র ব্যোমকেশ, গৰ্জিয়া সংহার-শূল করিয়া ধাবণ, তুলিলা বিষাণ তুণ্ডে দীপ্ত শ্বেত-তমু, অনল-সম্ভে যেন ভাসিল মৈনাক। ভয়ে পুরন্দর শীঘ্র সম্মুখ ছাডিয়া ঈশানী-পশ্চাতে আসি কৈলা অধিষ্ঠান . বীরভদ্র সম্রাসিত দাঁডাইলা দবে, পাৰ্বতী ঈশানে উচ্চ কবিল৷ সন্তাধ--"সংবর-সংবর দেব সংহার-ত্রিশ্ল, না কর বিষাণে ঘোর প্রলয়ের ধ্বনি. অকালে হইবে সর্বাস্থ বিনাশন. সংবরণ কর শীঘ্র সংহাব-মুব্তি। কি দোষ কবিলা কহ বিশ্বাসিগণ ১ कि त्माव कविना अञ्च श्रामी (व मकन ? কোনু দোষে দোষা, দেব, দেবতা মানব. একা বুত্রে বিন।শিতে বিশ্ব ধ্বংস কর १ কহ ইজে বুলনাশ-বিধি, ত্রিপুরাবি, নিকেপে সংহারশূল স্টিনাশ হবে, ভবিতব্য-লিপি দেব, না কর থওন, সংবর সংহার-মৃত্তি ঈশ উমাপতি।"

পার্সকী-বাক্যেতে কর তাজি উগ্ন বেশ,
ধবিলা জাবার পূর্দ প্রশাস মূরতি—
রজত গিরি-সন্নিত, গবল আচল
ভূষিয়া প্রবেশ বথা হিম্মানীর কণা।
সহাস্ত-বদনে ইক্সে সন্তামি কহিলা—
"আবওল, বুত্তবধ জহুচিত মম,
পার্সকী কহিলা সত্য এ শূল-নিক্ষেপে,
সমূহ ক্রন্ধাও নই হবে অক্যাং।
প্রশার, ভাগ্যে ভার মৃত্যু তব হাতে,
বাও শীত্ত দ্বিটি মুনির সন্নিধানে,

দ্যবাব**ীর শোভা—শঙী পুলোমজা**—

শুত্রার শতক্রণে জাবলা অবনা ক্রপীড কংহ "শচী অতি কপবতী, বর্ণিতে দে কপ নাহি আইদে ভাবতী; ক্রপ হ'তে গাড়ীর্য্য গভীব অতিশন্ধ, ক্ষণিক আমার (ই) চিত্রে সম্বম উপন্ধ; বসিল নৈমিধে যবে পুত্র কোলে করি, দেবিরা সে মুর্লি চিত্র উঠিল শিহরি, দেবী বটে, বটে শচী শক্রব বনিতা, ভগাপি সে মুর্লি চিত্র আছে প্রভাবিতা।"

অনিয়া উথলে ঐন্দ্রিলার চিত্তবেগ . বছন চাকিল যেন ঘোরতব মেব। বলদিন হ'তে শচীকপেব গৰিমা. বলদিন হ'তে ভাব গৰ্কেব মহিমা. শুনিত ঐল্রিলা পর্বের কথন কদাচ, আঁচে শুনা, আঁচে জানা কটুতার আঁচ , প্রাণে আছিল অগ্নেশুনিত ভূলিত; শনীও না ছিল কাছে ধরাতে থাকিত, এবে নিতা নিতা তাব শুনি রূপগুণ, সদয়ে জলিল তার জলস্ত সাণ্ডন। হিংসার ভাজন যদি থাকে বহুদুরে, হিংদকের চিত্ত তবু কালকুটে পুরে , निकरि कांत्रित विष उपान ज्यन, অসহা হৃদয়ে জলে চিতার দহন। আচিল বিশাস অগ্রে গরবে কেবল, শচীর স্বথাতি ব্যাপ্ত ত্রিলোকমণ্ডল; সৌরভ যে এত তার মাধ্র্য্য নির্মল, না স্থানিত, এবে শুনি হইল পাগৰ।

তাহে পুল্ৰ-মুখে তার রূপেব বাধানি— জলস্ত গরলে যেন পরিল পরাণী। লকাইতে ইথাবেগ না পারিয়া আর, তন্ত্রের করে দর্পে নথে ছি'ডি হাব-"ষে আইসে সেই কছে এমন তেমন. বতি কহে নাহি শচীক্ষপের তুলন। সভাই কি শটী তবে এতই রূপদী ? আমাৰ অকেৰ বৰ্ণ তাৰ অকে মদী ? আমার এ কেশ, তার কৃত্তল-তুলায়, চাকতার মৃত্তার তনি লজা পায়? এ শবীরে নাহি তার দেহেব গবিমা ? এ গ্রীবাতে নাহি সেই গ্রাবাব ভঙ্গিমা ? জানে নাচরণ মম চলন-প্রণালী ? সিংহীৰ চলন তাৰ আমি সে শ্গালী ? শুন হে দানবপতি, শুন তোমা কহি. আর সে তিলার্দ্ধকাল বিলম্ব না সহি. এখনি আনহ শচী কিন্ধবীৰ বেশে. দানোক আসিয়া পার্শে রূপব্যাখ্যা শেযে . রূপ আছে আছে তার রূপ কেবা চায়, দেখি আগে কেমনে সে চামর চলায়, দেখি আগে হাত দিয়ে তাম্বল-আধার. দেখি সে কেমন জানে অঙ্গেব সংস্কাব . কেমনে প্রায় বাস, সাজায় ভ্রণ, ভানে কি না ভালরূপে কবরী-রচন: জানে যদি ভালমত হাব-ভাব হাস, রাখিব নিকটে তায় শিখাবে বিলাস, নতবা যেমন সিংহী—সিংহীর আচাবে থাকিবে পিঞ্জরাগারে চতুম্পথ ধারে, দেখাইতে আছে রূপ, দেখাইবে সবে, शादं स्थ क्रथवाचा श्री श्री कर देव , আৰু তারে দৈতাপতি, বিলম্ব না কব, চল আজি মহোৎদবে স্থমেক-শিথর, পশ্চাতে চলুক মম শচী গরবিণী. হইয়া বদন-ভ্যা-তাম্বলবাহিনী; দেখুক দানৰ সবে গৌৱৰ কাহার-পুলোম-ছহিতা কিবা বৃত্র মহিলার।" अभिमा अनमी-वाका विभीज-वहरन,

শুনিদ্ধা জননী-বাক্য বিনীত-বচনে, ক্ষুদ্রপীড় কচে—"যাতঃ, থেদ কি কাবণ দানী হ'তে আদিয়াছে, হইবে দে দানী কুত্তু হারাও কেন লঘুত প্রকাশি ?" পুত্রের বচনে চাহি ব্যাঘীর সদৃশ,
কটাক্ষ করিয়া কৃট, নেত্র অনিমিষ;
এলিলা কহিলা—"পুত্র, তৃমি শিশু অতি,
কি জানিবে আমার এ চিত্তের বে গতি ?
গামন কি পারে কভু শিশুর পরশে ?
গাশতেব নীড়ে সাধ কবে কি বায়সে ?
নাবীমাঝে আমা হ'তে অক্স বদি কেহ
অধিক গৌবব ধরে, দহে যেন দেহ—
রদে জলে হলাহল—সে যদি না মন
কাছে থাকি সেবা করে কিন্তুরীব সম;
গুন কহি ঐপ্রিলাব স্বদুচ বচন—
অপত্তের প্রিবে শচী আজি এ চবন।"

কৈলাসে উদ্ভিলাবাক্য শুনিলা ঈশানী;
শচীবে ভাবিয়া হৈল আৰুল পৰাণী।
কহিলা মহেশে, মহেশেব জোধানল
অলিল প্ৰদীপ্ত কবি গগনমণ্ডল,
বাজিল প্ৰদায়-শৃঙ্গ শুক্তি বিদারণ,
বহিল ঘন হুৱাবে ভীষণ পৰন;

সংহার-**ত্রিশূলা**ক্বতি জ্যোতিঃ বাযুম্ভরে ভ্ৰমিতে লাগিল দীপ্ত বৈজয়ত্বপুৰে। চমকিত ব্যোমমার্গে ভাগবের বথ. অতল ছাডিয়া কৃষ্ম উঠে অদিবৎ, বাস্ত্ৰকি গুটাৰ ফলা মেদিনী কম্পিত. উত্তাল কল্লোলময় সিন্ধ বিধৃনিত, ভয়েতে ভুজস্কুল পাতালে গৰ্জ্জন, সংখ্যাকাত শিশু মাতৃত্তন ছাডি বয়; বিদীর্ণ বিমানমার্গ গিরিশঙ্গ পড়ে. চেতনে জডেব গতি. গতিপ্রাপ্ত জডে; টলমল টলমল ত্রিদশ-আলয়, মুচ্ছিত দেবতা দেহে চেতনা উদয়. দোত্ৰ্য স্থনে শক্ত প্ৰমেক-শিখৰ, ঘোৰ বেগে বৈজয়ত কাঁপে থর খব। ঐক্লিবার হন্ত হাসিল কম্বন. क प्रशीष - चरक देश्य त्यांग-इत्यम, নিঃশদ্ধ বুত্রেব নেত্রে পলক পডিল. "কন্দ্ৰেৰ ক্ৰোধাগ্নি-চি৯" জনিনা উঠিন।

প্রথম খণ্ড সমাপ্ত।



ক্রতিলা জিনিতে যত পাইলা আয়াস, আমনিলা ষেকপে শচী করিলা প্রকাশ। अभिश लेखिला प्रका आर्थन महान. মথঘাণ লয়ে শীৰ্ণ করিলা চম্বন ,---কেমন দেখিতে শচী, কিরূপ বরণ, কিবেপ আমাক্তি কিবা অংশব গঠন: কিরূপ বসন-ভ্যা, চলন কিরূপ, ক্তে বয়: কাৰ মত কিবা তাৰ রূপ . হার-ভাব, হাসি-ভঙ্গী, নাদা, ওষ্ঠাধর, ৰক্ষ, বাস্ত্, কটি, উক্, অঙ্গুলী, নধর, দেখিতে কিন্ধপ— জিক্সাসয়ে শতবার. . জিজ্ঞাসয়ে কেশপাশ ভূক কি প্রকাব; ভিল ভিল কবি শচীক্রপের বর্ণন. শতবাৰ শতচ্চলে কবিলা শ্ৰবণ। ক্ষুপ্ৰীছ কৰে "শচী অতি ৰূপৰতী, বর্ণিতে সে রূপ নাচি আইসে ভাবতী: কল হ'লে গাখীগা গভীৰ অতিশয়, ক্ষণিক আমার (ই) চিতে সম্বম উদয়; বসিল নৈমিষে যবে পুত্র কোলে করি. দেখিয়া সে মর্ত্তি চিত্ত উঠিল শিহরি; দেবী বটে, বটে শচী শত্রুব বনিতা, তথাপি সে মৃষ্টি চিত্তে আছে প্ৰভাষিতা।" अभिना खेशल अस्तिनात हिख्दान : বদন ঢাকিল যেন ঘোরতব মেব। বলদিন হ'তে শচীরপেব গ্রিমা. বলদিন হ'তে ভাব গৰ্কেব মহিমা. শুনিত ঐদ্রিলা পর্যের কখন কদাচ, আঁচে শুনা, আঁচে জানা কটুতার আঁচ , প্রাণে আছিল অগ্রেন্ড্রনিত ভূলিত ; শচীও না ছিল কাছে ধরণতে থাকিত; এবে নিতা নিতা তার শুনি রূপগুণ, ক্লয়ে জলিল তার জলন্ত অভিন ! হিংসার ভাজন যদি থাকে বহুদরে. হিংদকেব চিত্ত তবু কালকুটে পুরে; নিকটে আ'দিলে বিষ উপলে তথন. অসহা জদয়ে জ্বলে চিতার দহন। আছিল বিশ্বাস অগ্রে গরবে কেবল, শচীর স্বখ্যাতি ব্যাপ্ত ত্রিলোকমণ্ডল; দৌরভ যে এত তার মাধ্র্য্য নির্মল, না হ্লানিত, এবে শুনি হইব পাগব।

তাহে পুল্ৰ-মূথে তাব রূপেব বাধানি---জলম গরলে যেন পরিল পরাণী। লকাইতে ঈশ্বাবেগ না পারিয়া আর. ত্র্যায়ের করে দর্পে নথে ছি'ডি হার-"ষে আচাইসে সেই কছে এমন তেমন, রতি কহে নাহি শচীক্ষপের তুলন। সভাই কি শচী তবে এতই রূপসী ? আমাৰ অকের বৰ্ণ তাব অকে মণী ? আমার এ কেশ, তার কুন্তল-তুলায়, চাকতার মৃত্তার শুনি শজ্জা পায় ? এ শবীরে নাহি তার দেহেব গবিমা? এ গীবাতে নাহি সেই গ্রাবাব ভবিমা? জানে নাচরণ মম চলন-প্রণালী ? সিংহীৰ চলন তাৰ আমি দে শগালী ? শুন ছে দানবপতি, শুন তোমা কহি, আবাৰ সে তিলাই কাল বিলয় না স্থি. এখনি আনহ শচী কিম্বীৰ বেশে. দাভাক আসিয়া পার্যে রূপব্যাখ্যা শেষে, রূপ আইছে আছে তার রূপ কেবা চাই. দেখি আগে কেমনে সে চামব চলায়, দেখি আগে হাত দিয়ে তামল-আধার. দেখি সে কেমন জানে অঞ্চের সংস্কাব. কেমনে প্রায় বাস, সাজায় ভ্ৰণ, জানে কি না ভালরূপে কবরী-রচন; জানে যদি ভালমত হাব-ভাৰ হাস, ৱাঝিব নিকটে তায় শিথাবে বিলাস. নতবা বেমন সিংহী—সিংহীর আচাবে থাকিবে পিঞ্জাগাবে চতুম্পথ গারে . realite আছে রূপ, দেখাইবে মংে, भारतं स्थ क्रभवाचा भिधित्कत तर्त , আৰু ভাৱে দৈতাপতি, বিলম্ব না কৰ. চল আজি মতোৎসবে স্থমেক-শিথর : পশ্চাতে চলুক মম শচী গরবিণী. হইয়া বদন-ভূষা-তাম্বলবাহিনী; দেশক দানৰ সবে গৌরব কাহার-পুলোম-ছহিতা কিবা বুত্র মহিলার !" ভনিয়া জননী-বাক্য বিনীত-বচনে, কুদুপীড কছে—"মাতঃ, থেদ কি কা^র मानौ इ'टङ चानियाटह, स्टेटर टम सं মহ্ত্ত হারাও কেন লঘুত্ত প্রকাশি ?"

পুদ্রের বচনে চাহি ব্যাথ্রীর সদৃশ,
কটাক্ষ করিয়া কৃট, নেত্র অনিমির;
ঐদ্রিলা কহিলা—"পুত্র, তুমি শিশু অতি,
কি জানিবে আমার এ চিত্তের যে গতি ?
গামন কি পারে কভ্ শিশর পরশে ?
গান্টিড সাধ করে কি বাম্বসে ?
নাবীমাঝে আমা হ'তে অক্স বদি কেহ
অধিক গৌবর ধরে, দহে যেন দেহ—
রদে জলে হলাহল —সে যদি না মন
কাছে থাকি সেবা করে কিন্ধরীব সম;
শুন কহি ঐদ্রিলার স্তুদ্ত বচন—
অনক্তে বল্লিবে শতী আজি এ চবণ।"

কৈলাদে উদ্রিলাবাক্য শুনিলা ঈশানী;
শুচারে ভাবিয়া হৈল আকুল প্রাণী।
কহিলা মহেশে, মহেশের ক্রোধানল
জলিল প্রদীপ্ত কবি গগনমগুল,
বাজিল প্রদায়-শৃক্ষ শুতি-বিদারণ,
বহিল ঘন ছঙ্কাবে ভীষণ প্রন;

সংহার-ত্রিশ্লাকৃতি জ্যোতিঃ বায়স্তরে ভূমিতে লাগিল দীপ্ত বৈজ্যস্পুৰে। চমকিত ব্যোমমার্গে ভালবেব বথ. অতল ছাডিয়া কৃশ্ম উঠে অদ্রিবৎ , বাস্থকি গুটাৰ ফণা মেদিনী কম্পিত . উত্তাল কল্লোলময় সিদ্ধ বিধুনিত , ভয়েতে ভদ্ধকুল পাতালে গৰ্জ্ব। সংখ্যাকাত শিশু মাতন্তন ছাডি বয়: বিদীর্ণ বিমানমার্গ গিরিশঙ্গ পড়ে. চেত্রে জডেব গতি, গতিপ্রাথ জডে, **हेनमन हैनमन जिल्ल-आन्य.** মুৰ্চ্চিত দেবতা-দেহে চেতনা-উদয়, দোতুল্য সঘনে শক্ত প্রমেক-শিখব , ঘোর বেগে বৈজ্ঞত কাঁপে থর থব। ঐক্লিব হল্প ১'তে থসিল কমণ. क प्रशीष - चर्ष देश्व त्वाम - इवस्व. নিঃশন্ধ বত্তেৰ নেতে পলক পডিল. "কলেব ক্রোধাগ্রি-চিড" জলিবা উঠিল।

প্রথম খণ্ড সমাপ্ত।



রত্র-সংহার

দ্বিতীয় খণ্ড

দ্বাদশ সর্গ

কহ, মাতঃ খেহভুজে, অয়ভুননিনি, কি হইল অতঃপর বৈজয়ন্তধামে ? শিবের ক্রোধাগ্রি-শিখা ব্যাপি ব্যোমদেশ. ত্রাসিত করিলা যবে তৈলোক্যমণ্ডল। কি করিলা বত্রাস্থর, কি ভাবিলা চিতে, ভনিষা সে ভয়ন্তব প্রলয়-বিযাণ গ দাজিকা গন্ধৰ্ব-বালা দৈতে। ল-মহিনী সে দৈব উৎপাতে কহু, চিত্তে কি ভাবিলা ? ইন্ত্রপুরী প্রবেশিয়া পুলোমনন্দিনী যাপিলা কিরুপে কাল রিপদলমাঝে ? কি করিলা দেবগণ দানবে দণ্ডিতে ? কিরূপে যুঝিলা খর্গ, শচী উদ্ধারিতে ? কেমনে দেবেদ্র ইন্স. অভীষ্ট সাধিতে. লভিল দধীচি-অন্তঃ ? বিশ্বকর্মা ভার কিরূপে গঠিলা বজ্র ভীম প্রহরণ গ বধিলা কিলপে ইকু বুত্র মহাস্থরে ? कर, मांजः, अमत्रांत्र (कान् शांत्न এर्व শিবশক্তিধর বৃত্র ?—কি চিম্ভা-পীডিত ? শৃক্ত কেন বৈজয়ন্ত-সভাগৃহ আজি ? ছে দেবি, করিয়া দয়া কছ সে ভারতী। উত্ত স স্থামক-শৃস উঠেছে বেথানে অনম্ভ গগনমার্গে—ম্বর্গ-শোভা করি. মন্তকে বিশাল শৃক্ত ধরি বেন সুথে, হবে হাসিতেছে নিজ সামর্থ্য নির্বি. শুল হল্ডে দৈত্যপতি একাকী দেখানে দাঁড়ায়ে ভ্ধর-অঙ্গে অঙ্গ হেলাইয়া, একদৃষ্টি শৃক্তদেশে কটাক্ষ হানিছে---त्वशास्त्र भिरवत्र (काश-विक् मिन)।

অপূর্ব্ব দেখিতে চিত্র। স্থমের-অচলে বুত্রের বিশাল বপু:, গিরি ধেন কোন (ও) অন্ত কোন গিরি-অঙ্গে পডেছে হেলিয়া. পরীক্ষা কবিছে শক্তি দেছে কার কতা ভীমদৃষ্টি ভয়ানক কুঞ্চিত ভ্ৰন্তাগ, তিমিরে আছের মুখ তিন চক্ষ্ জলে, মেবেতে আচ্ছন্ন ধেন গগন গন্তীর বিদ্যাতের ছটা ধরি। ভাবে ব্রা**ম্মর**— "শিবের ক্রোধাগ্রি কি এ ? শিবের বিযাণ গৰ্জিল কি ঐথানে ত্রৈলোক্য কাঁপায়ে? জাগাতে নিদ্রিত বুত্রে—জানাতে তাহাবে তাহার দিবস-অন্তঃ ফুকতান্ত-শর্মরী আসিছে তমদা জালে ঢাকিতে দানবে ? দর্পে যার প্রকম্পিত পল্লবের প্রায়. **ज्रताक, दारताक, मृष्ट**। ज्**ब**रत सात স্বর্গে মর্ত্তো দৈত্যনাম নিতাপুজনীয় ! মুও কাটি করি তপ কত কলকাল, গন্ধাধরে তুষ্ট করি অভীষ্ট লভিছু ! **সিদ্ধ হৈন্ত শিব-বরে থ্যাতি ত্রি চুবনে—** সে সৌভাগ্য-শিখা এবে হবে কি নিৰ্কাণ পণ্ড শিব-আবোধনা। সামৰ্ব্য নিফল। অবিশ্ৰান্ত রণ-ক্লেশ অপেষ বাতন. ত্র্কার সংহার-শূল শঙ্কর-অর্পিত, मव वार्थ ?--देनव-विक त्वांविल कि हेश ? অথবা উন্মন্ত আমি অলীক আতকে ভ্ৰাস্ত হয়ে ভাবি মনে—তবে কি কারণ সহসা ত্রিনেত্রে মম পলক পড়িল ? শিব-ক্রোধানল ভিন্ন বুত্র ভীত কিলে ? হবে বা দয়াৰ্দ্ৰচিত্ত দেব আশুভোষ ক্রদ্ধ হৈলা ইন্ডজায়া শচীর হরণে ?

গানাই**লা** রোধ **তার—ভক্ত**প্রির দেব জা<mark>লাইয়া ক্রোধানল গগনমণ্ডলে ?</mark>

এত ভাবি দৈতাপতি নিশাসি গভীব কটাক্ষ হানিলা তীব্ৰ শক্তেতে আবার . নমিলা উদ্দেশে কড়ে শিবদত্ত শলে. সম্রমে প্রক্রিয়া যতে ফিরিলা আলিয়ে। ইন্দ্ৰপুরী-খারে দৈত্য, ঐক্সিলা স্থন্দরী, দ্রত কৈলা আলিখন দানবে দেখিয়া. দাদর সম্ভাষ মুখে নেত্রে প্রেমশিখা, যক**নে ধরিলা হত্ত অনপাঙ্গ হেলারে**। দৈতানাথ চিক্কা-মগ্নাকৈল উত্তর। চতুৱা ঐদ্ৰিল। ভাব বুঝিলা ভঙ্গীতে, ধবিলা গম্ভীব মৃত্তি, ধরি পাদক্ষেপে, হল্ডে ধরি বীরে ধীরে গুছে প্রবেশিলা। বসাইল। **রত্তাসনে—হার,** যে **আসনে** ইন্দ্ৰ ইন্দ্ৰায়া পূৰ্বে লভিত বিশ্ৰাম, িদিবে যথন দেব মাতিত উৎসবে. দৈত্য রণে জয়ী হয়ে যতে আম**ভি** তায় বসাইলা ব্রাস্থরে, গ্রুক নিদনী াসিলা নিকটে, বার্তা স্রধাইল কত , ক্রিল কভই যত্ন দানবে ত্যিতে। কঞ্চবপালক যথা মত্ত করিরাজে তোষে নানা ভোক-বাক্যে, যবে কবিরাজ পাদক্ষেপে পরাত্মধ উদ্ধে শুও তুলি। তথন দমুজেশ্বর বুত্র বলবান াহিয়া ঐক্রিলা-মূথ কটাক হানিলা; কহিলা গ**ন্ধীর-স্বরে, নগেন্দ্র**-গহারে গৰ্জিল প্ৰন খেন ভীষণ নিশ্বনে— 'ঐন্ত্রিলে,—ঐন্ত্রিলে, জান না কি হেমকুস্ত ভাঙ্গিলে দ্বিখণ্ড করি চরণ-আঘাতে ? বিশাল সাম্রাক্তা এই :--- ব্রহ্মাণ্ড জড়িয়া. রুত্তের দোর্মণ্ড দাপ, হেখা কই সূথ, এই স্বর্গে, ইন্দ্রধানে, অমরবাঞ্চিত এথৰ্য্য অপবিসীম খ্যাতি চরাচবে; ॐवत मचन — हत्सर्भंधरतत मन्नो : িবদীপ্ত চির্ম্মন প্রাক্তনবিভাস, সকলি ভইল বাৰ্থ তোমা হ'তে বামা— দানবি, দৈত্যের কুল উন্মল তো হ'তে। জোধাৰিত বিশ্বনাথ, শচী-অপমানে, कानाडेला कुछ- (बाव विवाद निर्नापि,

জাগাতে নিত্রিত বৃত্রে-দণ্ডিতে, ঐক্রিলে, গন্ধর্ক-কন্থান দর্প দহজে আঘাতি। চেমে দেখ অন্তরীকে সে বহিন্দ রেখা এখন (ও) ভাতিছে মুহু স্মেক্-উপরে দীপ্ত অন্ধলার বথা" বলিয়া নারব দযুজ-ক্ষার, শিবভক্ত মহাস্তব।

এক্রিলা তথন—"দেব ! দৈত্যকুলনাথ, े किला-वल्ला प्रश्ली, मञ्जूलधाती. হেন অসম্ভব দ্বিধা অন্তবে তোমার গ অম্বনিধি আন্দোলিত শুশুক্তুৎকাবে গ নগেন্দ্ৰ ভগর-কম্প পতন্ত্ৰ-নিশ্বাদে ? থগেক্তে ভঙ্গ ভয় ? কি প্রমাদ হার। কি দেখিলা—কোণা কদ্ৰকোধ হুতাশন ? (काथा वा विवान-भक्त, खेळान कहाना। কে কহিল তোমাবে, হে দহুজেখর, হাস্তকর উপস্থাস--রোগীর প্রলাপ। জান না কি শর—স্ববে নিসর্গের থেলা. অনস্ক মাঝারে হয় নিত্য কতক্প গ কিবাজনালাচক গাঁধি জ্বলে শল্দেশে. যথন প্রকাণ্ড কোন গ্রহেব মওল থতা থতা হয়ে ছোটে একাতাঝলসি গ অতি ভয়ন্তর ধানি শ্রবণ বিদারি লমণ করায়ে শ্রে, নক্ষত্রে যথন নক্ষত্র আঘাতি ধার গন্তীর অম্বরে, रेन्द-कांकर्वन-वर्ण ? (इ म्छूबनांव. দেখেছ ওনেছ পর্কেকত দৈব হেন। অথবা মায়াবী দেব দমুকে ছলিতে. সকলে একতা এবে যুদ্ধ-অ'ড়েখরে. ইন্দ্রশাল ইন্দ্রপুরে দেখায়ে অন্তত্ত, তুৰ্বল ক্ৰিতে ছলে দৈত্যভূজ্বল। শিবভক্ত শিবপ্রিয় তুমি দৈতারাল. তোমাকে বিমুখ শস্তু ? চিত্তে দেহ স্থান হেন কাল্লনিক চিন্তা। কলছ-ভোমার, কলক, হে শিবভক্ত, ধৃৰ্জ্জটির নামে। আমি যদি, দৈতাপতি, তোমার আসনে হতেম দেখিতে তবে আমার কি পণ। ভঃ চিন্তা জিলা দলা আমার জদলে. স্থান ৰা পাইত পণ অসিদ্ধ থাকিতে। প্রতিজ্ঞা করিলে—দানবের পণ, প্রভু, মনে বেন থাকে দেব-দেনাপতিব্ৰন্দে

জিনিয়া সমূৰে বান্ধি আনি অমবায়, हेत्सव असिरव विश वसना श्रमित्व। সে প্রতিজ্ঞানতে সিদ্ধ হাসে দেবগণ. আপনি চটলা বন্দী আপন সংশয়ে: वर्षा निक लेखिलारत, मञ्ज ने यत्र. অলীক স্থপনে মুগ্ধ তুমি সে আপনি। "বামা তুমি" বলি দৈত্য তুলিলা নয়ন। হেরিলা ঐদ্রিলা মূপ গর্বিত গম্ভীর, দত্তে ওঠ প্রকটিত, চাক-বিঘাধর বিক্ষারিত ঘন ঘন, প্রদীপ্ত নয়ন। সে চিত্র নির্থি বত্র আবার নীরব। লাবণা-মণ্ডিত গণ্ড-দক্তের চটায় চিত্ত-প্রতিবিশ্ব ধেন প্রভাগিত এবে मर्का चार्म, अवग्रदा, ननाटहे, शीवाग्र । যেন বাকি দৈববাণী অকোর অশুত, গোপনে শুনেছে বামা তাই সে প্রতায় দঢ়তর এত মনে,—তাই উপহাস কবিছে দল্লবাক্যে দক্ত-মহিষী।

ঐক্রিলা কহিলা তবে কটাক হানিয়া—
"বামা আমি"— বলি দন্তে সম্ভাবি গভীর,
দাঁডাইল মহাদপে শিব উচ্চ করি,
ভূজদী ঘাতকে ললিয় দ'শিবার আগে
দবনে গর্জিয়া যথা প্রদার্য্য ফণা।
কিংবা বেন রাজহংসী পল্লবন লুঠি,
মুণাল আহারে তুই অন্ত সবোবরে,
চক্তে পদল-শোভা পক্ষ দাপটিয়া
মধায়দে দ্বির হ্যে গীবা উচ্চ করে।

দেখিয়া দৈতেরে মনে দর্প উপঞ্চিল .

একিলার গরের যেন 6িলে ক্ষণকাল

জনিল প্রতায় হেন---তাছারি সে ভ্রম।

"বামা আমি, দক্তজ্ঞ ! বমণী কি হেব ?
তুক্ত কীট পত্তৰ সদৃশ কি হে বামা ?
পুক্ষের বন্ধু বামা—মন্ত্রী পুক্ষের,
বীরের একই মাত্র সহায় বমণী।
তুন, ওহে দৈতানাথ, বামা সত্য আমি,
ঐক্রিলা ত্রিলোকগাত পদ্ধক্ষ হতিতা,
সামান্ত্রা অবলা নহে দানবী ঐক্রিলা,
ঐক্রিলা তোমার ভার্য্যা, তুন হে দানব।
সত্যই ষ্তুপি শচী-হরণে ত্রাম্বক
তুক্ত হরে ক্রোধানক আলিলা গগনে,

সত্যই বছপি হয় সে উচ্চ নিনাদ প্রালয়-বিষাণ-শব্দ-- শুদ্ধ কেন তার ? . পণ্ডন অসাধ্য এবে সংঘটন যাহা। ক্ৰদ্ধ যদি উমাপতি সে ক্ৰোধ নিৰ্ম্বাণ হবে না, জানিহ পুন:—ভাবনা কি তবে ? ভাবনা কার্য্যের আগে, সাধন এখন। খলিত হিমানীস্তপ কম্পিত ভূধরে वर्षत्र निनामि हुई कति भुक्रमाला, ধায় যবে ধরাতলে অরণ্য উজাডি. কে নিবারে গতি তার—কার সাধ্য হেন গ তেমতি জানিও ইছা, নত্বা দৈত্যেশ, দানবেন্দ্ৰ নামে বোব কলম্ব লেপিতে বাসনা যথাপি থাকে. সুর্গজ্যী নাম ঘুচাইতে চাও যদি শচী ফিরে দাও। ফিরে দাও শচী তাব পতিব নিকটে, निष्क (छठेवारी रुष्य, निः भक्त मानव। नटर कर, **आ**श्चि जांव मांनी रुख गारे. কর্যোডে ইন্সাণীরে সূপি ইন্সকরে।"

দেখিল। দানববাৰ গরিমাব ছট। ঐন্তিলার মুগপদ্যে — যথা সে পঞ্জে সুর্য্যের কিরণমালা, অকণ যখন অকণ ভাৰুনে চাপি নীলাম্ব পথে আনন্দে চালায় রথ: মৃতকলম্বরে--জাগায় মানবে স্থথে বিহঙ্গমী ব্ৰজ। नित्रवि পূर्णन्त्र्य, देवजातां मृत्य ভাতিল অতুল জ্যোতিঃ—শশাস্ক-কিরণ চূর্ণ মেদস্তবে যথা ঢাকিল আবার (७/ दक यथा (अवहर्व श्रवंशवधदत) দ**ম্বনে**র মুথকান্তি চিন্তার ছায়াতে। কহিলা মহাদানৰ চিঞ্জি ক্ৰকাল.--"বামা তুমি, ইলুমুখি, গন্ধৰ্কনন্দিনি, এ নহে নিদর্গথেলা—ভা হ'লে কি কভু আতদ্ধে আশার নেত্রে পলক পড়িত ? নিদর্গ-ক্রীডার রঙ্গ দেখেছি সে কত। কহিলা এ মহেশের ক্রোধই যদি হয়, কৈ চিন্তা এখন তাহে ? জান না ঐদ্রিলে, মত্যঞ্জ আশুতোষ—ক্রোধ নাহি রয়। শচীরে ছাডিৰ আমি তুষিতে মহেশে।"

এত কহি রতিরে কহিলা দৈত্যপতি, "নীঘ্র বাও মদনমোহিনি, শচী-পাশে,

কহ তারে আসিতে হেথার, কারাক্রেশ গচাব তাহার অচিরাও।" ক্রতগতি দৈতাপতি হইলা বাহির মহাবেগে উठिना প্রাচীরে, চাহি দেখিলা চৌদিকে-দৈতাদৃষ্টি যত দ্র-দরপ্রান্তে তার. অধিতাকা, উপতাকা আচ্চাদন করি জলিছে দেবের তম গভীর নিশীথে। হানে স্থানে রাশি রাশি-কোথাও বিরল, কোথা অবিরল শ্রেণী—ছ একটা কোথা দিগন্ধ ব্যাপিয়া শোভা। দেখিতে তেমতি হে কাশি. তোমার তটে —জাহ্নী-সলিলে ভাসে যথা দীপমালা তরজে নাচিয়া কার্নিকের অমানিশা-অন্নকার হবি মত কৰে কাশীবাসী দেয়ালী উৎসবে. অথবা দেখিতে আহা নক্ষতা বেমন--নকত নিশীথ-পুষ্প — নীলাম্বর-মাঝে শোভে যবে অন্ধকাবে গগন আবরি। দীপ্ত সে আলোকে নানা ব**র্গ**, প্রহরণ, থজা, অসি, শূল, ভল্ল, নারাচ, পর্ত, কোদণ্ড বিশাল-মৃতি, গদা ভয়ত্বর, জ্যোতিশ্বর দীপ্ত তত্ম তণীব ফলক, তোমর, মার্গণ, টাঙ্গী, ভীম ধরশাণ, কোনখানে ত পাকাব জলিছে তিমিরে বিবিধ অত্যের রাশি. কোথাও উঠিছে বথেব ঘর্ষর শব্দ. নেমি দীপ্তিময় . কোথা শ্ৰেণীবদ্ধ রথ কোথাও মণ্ডলে। তুবদের হ্রেষারব করীর বুংহিত, মহিষের ঘোরনাদ উঠিছে কোপাও. গাঢতর রজনীর নি:শক্তা হরি.--কোথাও মাধ্য্যপূর্ণ অমরের বাণী। কোন বা শিবিরপর শিথিপুছ শোভে, কোন শিবিরের চুড়ে মুগাঙ্গ অন্ধিত, ্রেমকন্ত কার ধ্বজে কার ধ্বজে ভারা, কোন বা শিবির-ধবজে জলভ পাবক। ^{কত} স্থানে স্তুপাকার মেঘের বরণ িশাল শরীর, মুগু, ভুজনগু, উরু, िभिवाक देवजावश्रः दम्बिटक जीवन, গ্রির করিয়াছে দেব-রণস্থা। দেখিতে দেখিতে নিশি প্রভাত হইল. মর্গের দিবার জ্যোতি উদিল পুর্বেডে,

দস্ত কড়মড়ি দৈতা নিখাসে হুকারি,
কিরিদ আকুল-চিত্ত মন্ত্র-সভাতদে!
উক্ত্রিক ভূদিতল অণ্ডভ চিত্তার
ক্রোধে তাপে প্রজ্ঞানিত রণক্ষেত্র হেরি,
ভূদিতে চিত্তের ব্যথা সমব-প্রাক্ষণে
প্রতিজ্ঞা করিলা দৈত্য; স্থামতে ভাকিরা
আজ্ঞা দিলা সেনাবৃদ্দে সমরে সাজিতে।
অমরা-উত্তর-ঘারে বথা মহারথ
অমর-সেনানীগণ কার্ত্তিকের আদি—
সাজিতে লাগিল দৈল তীম-কোলাহলে!

ত্রোদশ সর্গ

नरशंक - व्यक्षरण — (यथा नरशंक मळवा उठिनो जनकनना कंनकनयात বহিছে, অটবী-সঙ্গ ধাবে প্রকালিয়া, দিনমণি অন্তগত, উরিলা সুরেশ, ছাড়িয়া অম্বরপথ। বিশাল বিস্তত রম্য দে অরণ্য-দেশ ! সন্ধ্যাব তিমির, গাচতর স্নেহে যেন দিয়া আলিজন. আদরে ধরেছে স্থরে অটবী স্থীরে। অরণ্য-ভিতরে কত মহীক্হরাজি— थनाम, मित्रीय, वह अथथ, भानानी, कटि कटि. ऋत्व कत्व. कज़ारम कजारम নিঃশব্দে ভাবিছে যেন ভীম বাত্যাতে । বিরাক্তিছে অরণ্যানী দেখিতে তেমতি, হাসি, কান্না, ক্রোধ যেন একত্র মিপ্রিত। কোথা শাস্তি স্থির-ভাব, কোথা ভয়ন্বর ? কোথা বা তমসা-পূর্ণ বিবর্ণ মলিন। ধীরপদে শর্কারীব ঘোর অন্ধকারে চলিলা বাসৰ ৰক্ত অৱণ্য-ৰজেতি, ভনিতে ভনিতে কত ফেক্-ঝিলীরব, বিকট-তক্ষকনাদ ভল্ল ক-চীৎকার. পেচকের ঘোব ধানি, কেশরি-গর্জন. ভয়াতুর বিহচ্চের পক্ষের নিম্বন, শাখাচ্যত পল্লবেব শব্দ মুত্তর, প্রনের খন খন স্থোর নিধাস ! নিবিড় ভিমিরাছর পল্পব-রাজিতে ৰেৰিলা থল্কোত-হ্যতি শোভিছে কোথাঞ্চ

সাজাইয়া তরুরাজি অপরুপ রূপে. কোটি মণিথও বেন অটবী-মন্তকে। কোলাও আবেৰে শাখা জটা ভয়ত্ত্বৰ নিশাচৰ যেন খোৱ খন অৱকারে প্রসারণ করে কর। দেখিতে দেখিতে চলিলা অমরনাথ কৌতৃকে মগন। নির্থিলা এক স্থানে আসি কিছু শুবে, রমণী-মণ্ডলী-শোডা বন অন্ধকারে, নজনী-সীমতে ধথা তারকার হার. শোতে শৃক্ত শোভা করি মৃত্ল রশ্মিতে। আবলিকন প্রস্পরে মধ্র সন্তাব ঞ্জিনি কলক্ষ্পানি – সুখের মিলনে প্রবাসী ভাসয়ে যথা সদেশী লভিয়া! जिक्संभित किश्वा यथा किति निकालस्य । দেখিতে লাগিলা ইল পৌলোমী-বল্লভ সে স্থদশ্য মনোহর অদৃশ্য-ভাৰেতে, মহাকুতৃহল-মগ্ন, দেখিলা বিশ্বয়ে. কেহ বা শিখিনী-মৃত্তি ছাড়িয়া বিশ্বয়ে, ধ্রিছে স্থন্যত্ত্র স্থর-বিমোহন অপর্ক অন্নারণ লাবণ্যমণ্ডিত ! কেই সুথে কুছ কণ্ঠ রূপ পরিহরি নিন্দিছে শশান্ধ-জ্যোতি রূপের ছটায়, কুর্দ্বিণী-তমু ত্যজি কোন মনোরমা কুরুলাঞ্চন নেত্রে তরঙ্গ তুলিছে, তাপদের চিত্তহর! কোন দীমন্তিনী ছাডিয়া শাদ্ল-বেশ প্রকাশিছে অমুপম চাক কান্তি রতিকান্তি জিনি, কহিছে কোন ললনা,—সুচামর-কেশ লটিছে চরণ-পার্থে, ভ্রমিছে যেমন মধকর কুল রক্ত-কমল-উপরে। কহিছে, "হা, কত কাল অদৃষ্ট রে আর সুরান্ধনা এ ছুগতি ভূঞ্জিবে ধরায় ! ধিক দেবগণে দৈত্য-রণে পরাঞ্চিত! ধিক ইশ্র—শ্রিঞ্নামে কৃলস্ব তাঁহার ।"

হেন কালে জগ্রসরি মুরেক্স বাসব রমনী-মঙলী-পার্যে দিলা দরশন, পুঠেতে কামুকি দীপ্ত রড়-বিভামন জালিছে উজ্জল করি জ্বরণ বিশাল। হর্ষিত হংসীকুল নির্ধিলে যথা মুরালে মঙল-মাঝে, হুর্ষিত তথা

(सर्वाक्रमांशन डेट्स (धरिका (होनिटक) अधावेना अर्श्तर-छेकात देवना करव १ কহিলা, "হে শচীনাথ, দারুণ যন্ত্রণা এত দিনে অবসান , আর না হইবে সহিতে প্রবাস-ক্রেশ জনম্বের দাহ. পশুপক্ষি-রূপে ছন্মবেশে ধরাবাদে ত্রিদিবে অসুরদল প্রবেশ অবধি পলাইফু মোরা সবে—দ্বাবাগ্নি যেমন প্রবেশিলে বনে ধায় কবলিণীনল-জনবধি অন্ত ধাতনা, হে সুরেশ, কেহ বিহলিনী-রূপে বৃক্ষের আগ্রের, কেহ বা কুরন্ধী, কেহ ক্রোঞ্চীবেশ ধরি, মাতকী শাৰ্দ্দলী কেহ, কেহ বা মহিধী हा ज्यानहे- कि करण वताह अधुकी। সে চুট্রিব অবসান এত দিনে দেব, অমরা-উদ্দেশে আ(ই) লাম্বর্গ উদাবিয়া হে সঞ্জল শচীপতি, আইস এইখানে অভিযেক করি তোমা অমর-উৎসবে।" বলিয়া ধাইলা কেহ পুষ্প অস্থেয়ণে, গাঁথি মালা সাঞ্চাইতে মহেল্র-শীর্ষক. ঝলাইতে পুষ্পহার স্ববেশ-গলায ---অমর-দলীতে বন পুলকিত করি, কুৰ-চিত্ত পুৰন্দৰ—বথা বলগীন কেশরী পিঞ্জর-মাঝে —ছাডিয়া নিখাস গভীর প্রবল বেগে ৷ হায় রে ভূতলে **८मटवम्स ভिक्क का**क्षि रेमछा-चूबनारभ, আখাদে করিলা শান্ত সুরক্তাদলে. স্থমন গভীর হরে কহিলা প্রকাশি কি হেতু ধরাম গতি , কহিলা বে হেতু গতি তাঁর দধীচি-আশ্রমে শিবাদেশে ; যে ৰাবতা দিলে তাঁরে ক্ষেক্-শিখরে के अवारका कत्रव विवाहन खांगारस्व ।

কহিলা অন্নাদল "হে পৌলোমীনাণ, কিছু অরো দধীতির পবিত্র আশ্রম। দ্বার সাগর ঋষি ঋষিকুলচ্ডা অন্ধিতীয় স্বরলোকে। জেনেছি আমবা ষে অবধি ভূমগুলে বাদ, চে স্থরেশ,— ক্লাব-উপকারে ঋষি ক্লগতে অতুল। ব্যক্ত-প্রত্তপকারে আর্থ পরিহরি, ক্লানা, কামনা, চিন্তা পরের মৃদল, কিবা কীটে কি পতকে সদা দয়াশীল র্মনীন্দ্র কুপার সিন্ধ -- জীব-চ্ডামণি আপনি দিবেন দেহ দেবের কল্যাণে. নাচিক, অমরপতি।"দেখাইলাপথ। চলিলা শ্বরেশ ধীরগতি। তত্ত্বণ দেখিলা গগৰপ্ৰান্তে তৰুণ কিবুণ, চাকমর্ত্তি প্রভাকর শক্তে সামাভাব। খেলিছে কুরুলরাজি , অজিন-রঞ্জিত শোভিছে কটীর-দ্বার : শ্রুতি-স্থকর অভিধবনি চাবিদিকে উচ্চে উচ্চাবিত . কোথাও ভাস্কব-স্থোৱা ললিত-লছৰী. গায়ত্ৰী বন্দনা কোথা সন্ধাৰ আৱাধনা. বিশদ স্থাবেতে বেদ সন্ধীত কোথাও কোনখানে মহিমন: মহাক্তব-পাঠ। শিধাবন্দ আনন্দে ঘেরিয়া তপোধনে, গ্ৰিছে মুহ্চিবাকা--- অনুনুম্বিদ . হায় রে যেমতি বাগীখনী-বীণাধ্বনি ভনিতে উৎস্তুক-চিত্ত অমবমগুলী---স্প্রির উৎসবদিনে—পদ্যাসনা যবে দেব চিত্ত-মোছকৰ শ্ৰমান ভাৰতী। কহিছেন মহা গৃধি কিরুপে কলছ. দর্ম-জীব-তঃখ মূল আইল ধরায়। এক দিন-- হায়। কেন উদিল দে দিন-জলধি-সম্ভবাবিফ-জায়া স্বৰ্গনামে চাহিলা বিরঞ্চি-পাশে সৃষ্টিতে অতুল, অপরপ বছ কোন ক্জি দিতে তাঁরে। বিধাতা স্থাঞ্জিলা ফল অতুল ভূবনে— কান্তি, চল্র-শোভা জিনি-ভাত্তি নির্থিলে, সৌবভ জিনিয়া চাক স্তরভি পীয়ৰ. অমব-দক্ষজে খোর ধন্দ বার লাগি. ক্রি ধবে দেবাস্থর অফুনিধি মথি भा खरमरङ व्यमवाय-मध स्वाहत्व। খনস্ত যৌধন ফলে পর্লিলে বামা পুক্ষের করম্পর্শে জ্বক্ষয় প্রভাপ। विभागी (माहिना (हित्र हाहिना तम कन , ्काशास (कनवनात्रा , (मवीवनमार्य, উপজিল খোর হল্ব, না চিন্তি বিধাতা নিকে পিলা বিষময় ফল ধরাতলে, উদবধি ঈধা, দ্বেষ, হত্যা এ জগতে। নরবজে নিমজ্জিত এ ধরণীতল।

বণসোত্ত প্রাহিত সে অবধি ভবে---মানব-নিধনে যাতা নিতা মহামারী ! কত দিনে বুঝিবে রে মহুজ সন্তান কি কুটিল ব্যাধি লোভ! কি কুট গবল নাৰকল দেহে ছলা। কবে সে ব্ৰাবে আতার পশুত্রলাভ সমর-প্রাঙ্গণে। কুটিল, কুট-কটাক্ষী, হত্যা ভয়গ্নবী সাধিতে যে পারে ভবে, নাবে কি রে তাহা অমব-ননিদ্দাদরাসরলাত্রনবী? কাৰ নৱকল— অবনী সীমস্ত-রড় – মিলি স্থাভাবে স্থথে নিতা ছডাইবে ভাততের স্থ-ধারা, যথা সে সুখদা বিমল-তরকা গকা পুণ্যভূমি-মাঝে ছডান সলিলধারা মানবে বকিতে। হাদের কমলাপতি, দেব বিশ্বস্তর। হৰ বিশ্বভাৱ শীঘ্ৰ এ ভ্ৰান্তি ঘুচায়ে— ভান্ত নরকলে দেব, কব চিরপ্রথী। হ্রষীকেশ, হও, প্রভো মানবে সদয়! (श्रीताभी-ज्यमा हेन्स. भूक अविज्ञारिय, অলক্ষ্যে অদৃশ্যভাবে ছিলা এতক্ষণ, পূর্বজ্যোতিঃ দেবকান্তি এবে প্রকাশিলা, নীবদ লাজন কেশ প্লাবিত কিরণে. বক্ষেতে বিশাল বর্ম-ভান্ধর বেমন প্রভাতে অফণোদয়ে কুহেলি-আবৃত। শোভিছে অতুৰ তৃণ, সুন্দর কামু কি---কাদ্ধিনী-কোলে যাহা চির-শোভাময় ! জ্ঞলিছে সহস্ৰ অকি. যথা তাবাদল নিশীথে শর্মারী-কোলে। উঠি তপোধন সশিষ্যে সম্ভূমে সুখে অতিথি সম্ভাষি, ৰোগাইলা মুগচম —প্ৰিত্ৰ আসন। ক্তিজাসিলা স্থাতল গড়াব বচনে---"আশ্রমে কি হেতু গতি ? কিবা অভিলাষ ?"

ভন্নতিত্ত আথওল নেহারি নির্মণ
কুপালু ঝবির মৃথ,—ভন্নতিত্ত যথা
দল্লালু দর্শকবৃদ্ধ নবমীর দিনে,
মূপকাঠে বান্ধে ববে নির্দ্ধ কামাব,
মহিষমন্দ্রিনী-দশভূঞা-মৃতি আগে,
অসহান্ধ ভাগ-মেন পূজার অর্পিতে!—
কে পারে আনিতে মৃথে সে নিষ্ঠুর বাণী—
কে পারে চাহিতে অত্তে প্রাণভিক্ষাদান,

না পেয়ে হৃদরে ব্যথা ? কে হেন দাকণ প্রাণিমাঝে গ নিস্পন্দ, নিস্তর প্রন্দর। হেবি ঋষি কণকাল, খানেতে জানিলা অতিথির অভিলাষ: গদ-গদ স্বরে মহানদে তপোধন কহিলা তথন.--"পুরন্দর শচীকান্ত, কি সৌভাগ্য মম, 🕟 জীবন সার্থক আজি--পবিত্র আশ্রম। এ জীর্ণ পঞ্চর-অন্তি পঞ্চনতে ভার না হয়ে অমবোদারে নিয়েজিত আজি। হা দেব, এ ভাগ্য মম স্বপ্লের (ও) অতীত।" এতে ক কহিয়া ধীরে মহাতপোধন-শুদ্ধচিত্তে পট্ৰবস্তু উত্তরীয় ধরি. গারত্রী গন্তীর স্ববে উচ্চারি স্বনে. আইলা অন্ন-মাঝে, কৈলা অধিষ্ঠান সুনিবিড় সুণীতল, পল্লব-শোভিড, শতবাহ বটমূলে। আনি যোগাইলা সাঞ্জনেত্রে শিষাবৃন্দ আকুল-হৃদয়, যোগাসন, গাঙ্গের সলিল-সুবাসিত। क्रिनि (होनिक ४१, अध्यः, ध्राधन, সর্জ্বস, সুগন্ধিত কুমুমের শুর विक्रिक व्याप्त काथिका को निरुक. भूनौत्स छात्रप्रवृक्ष भारता माकाहेला। তেম্বঃপুঞ্জ তমুকান্তি, স্বোতিঃ স্থবিদল निर्माण नवनवृद्य, श्रु. अक्षेत्रित । সুল্লাটে আ্ডা নিক্পম, বিল্খিত চারশাল, পুতরীক-মালা বক্ষঃস্থলে ! ৰদিলা ধীমান-আহা, ললিত দৃষ্টিতে मशार्ज क्रम्ब (यन व्यवादक विकास চাহি শিষ্যকৃল-মুথ, মধুর সম্ভাবে কহিলেন অশ্রধারা মুছালে স্বার, স্থাপূর্ণ বাণী ধীরে ধীরে ,-- "কি কারণ, হে বৎদমগুলী, হেন দৌভাগ্যে আমার কর সবে অশ্রপাত ? এ ভবমগুলে পরহিতে প্রাণ দিতে পার কর কন ? হিত্তত সাধনেতে হৃদরে বেদনা ? হার রে অবোধ প্রাণী, এ নশ্বর দেহ না ডাজিলে পরহিতে কিসে নিরোজিব ? শভি অম নরকুলে কি ফল হে ভবে ? অফুক্ষণ জীবনের স্রোভোধারা কর. হার, সে কতই রূপে। কেম ভবে ছেন.

ঘটে যদি কার ভাগ্যে সে চল্ল'ভ যোগ. কাতর নরের চিত্ত দে ব্রত-সাধনে ? হে কৰু ভাগসবন্দ, হে শিষ্যমণ্ডলী, জগৎ-কল্যাণ হেতু নরের সঞ্জন, নরের কল্যাণ নিত্য সে ধর্মপালনে , নিঃস্বার্থ মোক্ষের পথ এ জগভীতলে।" ঋষিবনে আলিখন দিলা এত বলি. আশীষিকা শিষাগণে : কহিলা বাসৰে---"হে দেবেল, কুপা করি অস্তিমে আমার কর ভচি, দেহ মম বারেক পরশি।" অগ্রসরি শচীপতি সহস্র-লোচন, তপোধন-শির স্পর্শি স্কর-কমলে, কহিলা আকল-স্বরে--শুনি ঋষিকুল হরষ-বিয়াদে মগ্ধ--কহিলা বাদ্ব--"সাধু শিবোরত ঋষি, তুমিই সাত্তিক, তুমিই বুঝিলা সার জীবের সাধন ! তমিই সাধিলা ব্ৰত এ ৰগতীতলে চির-মোক্ষফলপ্রদ -- নিতা হিতকর। कीवमद नद्रक्ति - अकृत कर्तात. ভাসিছে মিশিছে তার জনবিম্প্রার জীবদেহ অমুদিন। এ ভবমগুলে অকর তর্তময় জীবন-প্রবাহ! ক্ষুদ্র প্রাণি-দেহ-ক্ষরে এ সির-সলিল হাস-বৃদ্ধি নাহি জানে নিয়ত গভীর সোতোময়। অভিত জগতে নহে তায়. অহিত নিফলে প্রাণী দেহের নিধনে। প্রাণি-মাত্রে কি মহৎ, কিবা কৃদ্রতম-সাধিতে পারয়ে নিতা মানবের হিত. সাধিতে পাররে নিত্য অহিত নরের. আপন আপন কাৰ্য্যে জীবন-ধাবণে। বালিবুন্দ যথা নিত্য রেণ্-পরিমাণে ৰাডে দিবা-বিভাবরী, সাগরগর্ভেতে, ক্রমে গু,প—খীপাকার –ক্রমশঃ বিস্তৃত বুছৎ বিপুল দেশ তরু-গিরিময়. তেমতি এ নরকুল উন্নত স্লাই, সাধু-কার্য্যে মানবের প্রতি অহরহ:। কর্ত্তব্য নরের নিত্য স্বার্থ-পরিহার, জীবকুল কল্যাণ সাধন অমূদিন। পর্হিত-ব্রত ঋষি ধর্ম যে পর্ম. তুমিই বুঝিয়াছিলে উদ্যাপিলে আজ। মূছ অঞা ঋষিবুন্দ, ঋষিকুলচড়া দধীচি পরম পুণ্য লভিলা জগতে। কি বর অপিব আমি নিজাম তাপস. না চাহিলা কোন বর, এ স্থকীর্ত্তি তথ প্ৰাত:শ্বৰণীয় নিত্য হবে নৱকুলে। ত্ব বংশে জনমি মহর্ষি হৈপায়ন করিবে জগতে থ্যাত এ আশ্রম তব— পুণা বদরিকাশ্রম পুণাভমিষাকো।" বলিরা রোমাঞ্জ্যু হইলা বাস্ব নির্থি মূনীক্ত-মূখে শোড়া নির্মণ : আরম্ভিলা তারম্বরে চতুর্বেদ গান উচ্চৈৰ্গবিদন্ধীৰ্তন মধৰ গলীৰ---বাষ্পাকৃল শিষাবৃন্দ –গানে মগ্ন ঋষি मुनिना नग्रनदम् विश्वन खेलारम । মনিশোকে অকল্মাৎ অচল প্ৰন. তপনে মৃত্র-রিশা. সিঞ্চ নভস্তা, সমূহ অবণা ভেদি সৌরভ-উচ্ছাস, বন-লতা তক্কল শোক-অবন্ত। দেখিতে দেখিতে নেত্ৰ হইল নিশ্চল. নাসিকা নিশাসশক নিস্পান ধমনী. বাহিবিল ব্ৰহ্ম**ভেজ** বৃহ্মংক্ষ ফটি নিরূপম জ্যোতিঃপূর্ণ—ক্ষণে শৃন্তে উঠি মিশাইল শুরুদেশে। বাজিল গভীর পাঞ্জক্ত-হরিশভা, শকুদেশ যুডি পূপাদার বরষিল ম্নীক্রে আন্ডোদি। দ্ধীচি ভাজিলা ভকু দেবের মঞ্চল।

চতুৰ্দশ সৰ্গ

অমরার প্রান্তভাগে মন্দাকিনী-তীরে
মনির পাষাণমর নিজ্ত আলয়,

ফ্তথ্য অমরের চির চিন্তাধাম ,—

কনী এবে ইন্দ্রজারা দে তপোমনিরে ,

চ্ছিকে সেই সব নিকুপ্ত কানন,

ফাজাত তরুবাজি দৌরত-প্রিত,

সেই পারিজাত-পূজা — শোভা ভাগে বার

উন্নাদিত দেবচিত। গোভিছে আলোক

দ্রে বৈজয়ন্তপুরী—ইন্স-অট্টালিকা—

চাক কারুকার্য্য বার স্টেতে অতুল

করিলা অমরশিল্পী শিল্লিকুলরাজ বিশ্বক্তং , স্থাধিত অমর-বাসগৃহ। দরে সে নন্দনবন শোভিছে তেমতি প্রমোদ-বিশ্রাম-স্থুথ চির্দিন যায়, শভিশা বাসব-জায়া : শোভিছে তেমতি চির-পরিচিত যত অমর বিভব। শনী পেরে প্ররায় অমরার মাঝে অসরাহাসিছে আজি। নব কুমুমিত নন্দনে কুমুম্দল সুগন চড়ায়ে ভাসিছে অপর্বা স্থা : উন্নাদিত প্রাণ পারিজাত-পরিমল করি বিভরণ খুলিছে জদয়ভার। নির্মল মল্ছ-গলে মুগ্ধ কবি স্বৰ্গ আমাননে ছটিছে হরিতে শচীর প্রাস্তি। হরষে অধীব ছটিছে তবক্ষয়ী মলাকিনী ধারা প্রকালি পবিত্র জলে শৈল-নিকেতন--শ্চী-নিকেতন আজি। মন:শিলাতল আরো মনোবম মৃত্তি শচী-সমাগ্রে। কে আছে ত্রিলোকমাঝে প্রাণী হেন জন স্থদুর প্রবাস ছাডি স্বদেশে ফিরিয়া (কি পঙ্কিল, কিবা মক, কিবা গিরিময় দে জনম-ভূমি তার) নির্থি পূর্বের পরিচিত গৃহ, মাঠ, তক, স্বোবর, নদী, থাত, তরঙ্গ, পর্বাত, প্রাণিকল, নাহি ভাসে উল্লাসে, না বলে মত্ত হয়ে "এই জন্মভূমি মম।" কে আছে রে, হার, रिवित्रा अस्तर्भ श्रमः मा काँदि श्रदादन হেবে শক্ত-পদাখাতে পীডিত সে দেশ! বিষ্ণো-চরণতলে নিতা বিদ্লিত. ৰলিতে আপন যাহা---প্ৰিয় এ জগতে। বিজন অরণাভূমি বনের(ও) কুমুম তঞ্জিতে পরাণে ভগ্ন। শক্রর অর্চনা (मर-कार्कनात कार्श जिमका। (यथारन, तक ना दर्जारंग नवरकं व यञ्चना दम दमराम ? চিত্তমনী ইন্দ্রপ্রিমা শচীর হৃদরে শে পীডা-দহন আহি। উচ্ছাদে বহিছে সদয়তলে চিন্তার হিলোল। নয়ন কিরাতে চিত্তে বিদ্ধে ভীক্ষ শলা। চপলা ভরলমতি সে শোভা দেখিয়া. ধরিতে নারিলা ধৈর্ব্য, স্থরেশ-জায়ারে ু

(मशाहेबा अमनात (माजा हार्तिमिटक:-"চের, স্থরেশ্ববি, হের চারিপ্লারে কত खशरतत की खिंखछ । खांडा, कि यूनरत, জন্তদি-প্রতিমর্ত্তি বিরাজে ওথানে. ভগ্ন ডানি ভল এবে—তবু কি স্থলর, নম্চিস্দন নাম যা হ'তে ইন্দ্রের, (इत. हेन्द्रमां, (प्रहे नमूहि-निधन হতেছে বাসব হত্তে।—পাষাণে রচিত কি সুচাক মৃষ্টি, আহা, দেব বাসবেব ! অই পাপ দৈতা পড়ে স্ববেন্দ্রে শরে। আচে বলাম্ব বীৰ ক্ষিব উদ্গাবি ত্যজিছে বিশাল বপু। বিশ্বকশ্মা-করে বচিত বিচিত্ৰ আবো দেবকীৰ্ত্তি কত। অই হের মনোহর সে শোভা-মণ্ডপ. হভাগাৰ নাম যার . পদ্যোনি যায কবিতেন অধিষ্ঠান ইলপুৱে আসি . তেমতি উল্লেখ্য শোভা এখন(ও) তাহাতে। আচ সেই কমলার কমল-আদন মণিময় পদে গাঁথা। দৈতা তবাচার হরেছে কভই দেখ মণিখণ্ড ভার। বিষ্ণু সিংহাসন-শোভা দেখ তার পালে। কি বিচিত্ত, আহা মবি, দেবী নিকপমা ত্রিভবন-মোহকর-ত্রিদিবে অতল, বদিতেন আসি যায় জগতজননী কাত্যায়নী ত্রিনয়না- শ্লপাণি সহ! আই বিবাজিছে সেই বাণীর মন্দিব. খেতভুজা আনন্দে বিহ্বলা ধার মাঝে সপ্রবার বীণা ধরি গাইতেন স্বথে অমব সূজন-বার্তা।--পড়ে কি স্মরণে, হে দেবেন্দ্র-মনোরমা, কি আনন্দ-স্রোভ ভাসিত অম্র-মাঝে। মহর্ষি নারদ উলালে সেগীত শুনি নাচিত হর্ষে। পঞ্জালে তাল সুথে দ্ভিনে মহেশ ! হে স্করেশ-প্রণয়িনি, কি চিন্তা মণর হেরে পুনঃ এই স্ব ! কত যে স্থরণ

হয় পুরাগত কথা ! অনন্ত হিলোল

উথলিত চিত্তমাৰে যেন অক্সাং।

আহা, প্রবাদের পরে, কিবা মনোহর

শ্বতি, রশ্বি চিন্তা-পথে থেলে মৃত্তল

সংখ্যালন কৰি ধীৰে কভিতে লাগিলা,

অন্ত স্থারেথা বথা কাদম্বিনী কোলে থেলায় সন্ধ্যার মূথে উন্সলি গগন!"

বিষাদ-হরৰ-মাধা মধুর বচনে
ক্তিলা স্বেশকান্তা—"হে চাকহামিনি,
কোথা বল অমরার সে শোভা এখন!
কেন আর চিত্ত-দাহ কবিদ্ চপলে,
কোথা দে অতুল স্বর্গ ইন্দ্রন্থনীব!
ভ্রনায়ে ও সর কথা? শিধিব যথন
সেবিতে ঐন্দ্রিলাপদ, ভ্রনিব আংলাদে!
স্বর্গ নহে, চপলা, এ ইন্দ্রাণীর কারা।"

"কি কহিলা, ইন্দ্রজায়া, কারা এ তোমাব কভিলা চপলা ডঃথে অস্করে আকুল--'চারিধারে এই দ্ব অমর-বিভব ভাসিছে না আজ(**ও) কি সে তেমতি** গৌর বলিছে না অই শোভা মণ্ডিত স্থমেক, निथत উঠেছে यात व्यवस्य विनाति. তোমার(ই) চংগ তার সেবিতে বাসনা গ कहिए मा अ (पर-(पडेल डेफ्रिसिटर 'বৈজ্ঞায়ত্ত শচীবাম ?' এই মন্দাকিনী কার পদ প্রকালিতে মহা গর্কে থেন চলেছে তরশ তুলি ? ভ্রমিছে হবষে. ष्यावर्ष्ठ भूकत ष्यांनि अहे त्य व्यवत्त. কারে পৃষ্ঠাসন দিতে ? অই যে বিজ্লী কাৰ বুণচক্ৰনেমি ভাতিতে ছটিছে ? শনী ঐন্দিলার দাসী বলে কি উহারা ! किश्वा वटल यहत्रवती महिशी जारमत ?"

তৎসুক-উৎফুল মুণ হেরি দপলার, .

ফরূবে হাসির রেখা স্থেক্স-বমণী
আলিকন দিলা তায়, কহিলা—"চপলা,
কহ শুনি সুথকর দে শুভ সংবাদ,
রতি শুনাইলা বাহা দে দিন আমায়—
লম্মত-চেতন-প্রাপ্তি-বারতা মবুর,
না মিটে পিপাসা মম দে কথা শুনিয়া।
সধী রে, ধরার মাবে নৈমির বিপিনে
থাকিতাম মনস্থে পুত্র কোলে করি,
পেতাম যভাপি নিত্য তায়! কি আহলাদ,
আহা সধি, ভুঞ্জিহ দে দিন মন্ত্যধামে
পুত্র-কোলে বসিফু বখন সে নৈমিয়ে!
কোণা অর্থ তার কাছে, হার লো চপনে!
কিপ্ত হয়ে ভাবিলাম না হ'তে অধিক

युव व अभेतानरम् । भूख (भरन (कारन জননীর স্বর্গস্থ-সর্বত্ত সমান। কত দিনে চপল। রে দে সুথ আবার ভঞ্জিতে পাইব চিতে ? কত দিনে বল জয়ত্তে করিয়া কোলে ভুলি এ তুর্দশা--নৈতা-করে আমার এ কেশ-আকর্ষণ গ হেনকালে কামপ্রিয়া আসিয়া নিকটে বনিল। শচীর পদ। আশীষি ইক্রাণী কহিলা—"মনাথপ্রিয়ে, সদা স্থী আমি হেরি তোবে —ভূলিব না মমতা তোমার ? কি সুখী করিলা হায় শুনায়ে দে দিন জয়ন্ত-চেতনা-বান্তা মধর সংবাদ ! কহিতেছিলাম এই চপলারে পুনঃ শুনাতে দে স্থদংবাদ।—হও চিরস্থী। কি বারতা কহ আজি ৷ কহ, ইন্বালা চাক্ষতি দৈত্যবধ-কি কহিলা শুনি সে উত্তব ? ভাবিলা নিদয়া বুঝি মোরে --নিদয়া বেমন দৈতামহিয়ী ঐক্তিলা ? কত দাধ, কামবধ, শুনি ভোর মথে ইন্বালা-বিবরণ দেখিতে তাহাবে। কিন্ধ ভাবি পাছে তাব বাসন। পুরালে, পাপায়দী ঐক্রিলা পীড়য়ে সে বালায়।"

উত্তবিলা মন্মথ্বমণা – হাক্সছেটা বিধাৰতে সদা মনোহর।--"হে বাস্ব-মনোরমে, বাদনা পৃথিল এত দিনে। गत्नावाञ्चा शृजाहेल विधि ! मिला त्यादत्र, স্বরেশ্বরি, শুনাতে তোমার এ সংবাদ। **মৃত্যুঞ্জয় এত দিনে সদম্ব তোমায়** , এত দিনে হৈমবতী হেরখ-জননী চাহিলা তোমার মুথ ? শিব-ক্রোধানলে (জলিল যে ক্রোধানল সে দিন অম্বরে) আসিত ত্রিদিবজয়ী দত্তল-ঈশব। ভাবিলা ছাভিবে তোমা মহেশে তৃষিতে। ে স্থরেশ-রমা, দৈত্যনাথ কহিলা আমায়, শ্র ধাও, মদনমোহিনি, শচীপাশে, কঃ তারে জাসিতে হেথায় জচিরাৎ কারাবাস শেষ ভব, সভি।" নীরবিলা कामकांका मधुब्रहामिनी প্রিधःतमा । ^{ঝটিকার আনালে যথা গভীর আনকাশ}. ^{পুলোম-}ঋষির কলা পুরন্দর **জা**য়া

তেমতি গন্ধীর ভাব। ভাবিতে লাগিলা, অনন্ধ মহিলা-বাক্যে চিন্তিত অন্তর। কতক্ষণ পরে —"না বতি," কহিলা ধীরে "মারাবী অসুর ছলে ছলিল তোমায়। না ব্ঝিলে, কামবধু, কালভ্জানী ঐক্রিলার কটথেলা। ছাডিবে আমার ? হে অনঙ্গ সহচরি. এ কথা কিরুপে হদয়ে আংশ্রাদিলে 🕈 যার তরে চব ধরামাঝে পাঠাইয়া কেশে ধবাইয়া আমায় আনিল হেখা, তাব বাক্য হোল, দৈত্যপতি ছাডিবে শচীরে গকহ শুনি. কিছলনে ভূলিলে এছলে গুসতা যদি ভাবিলে তা. বল বা কিন্ধপে – স্বসংবাদ ভাবিলে ইহায় ? বতি, শুভ সমাচার শুনাতে আমায় যদি শুনাইতে আৰু. তাপিত শচীর নাথ বাসব আগেনি প্রবেশিলা অমবায়—স্বহন্তে মোচন করিতে ভার্য্যার হৃঃথ , কিংবা পুত্র মম জয়ত জননী-ক্লেশ করিয়ানিঃশেষ আসিছে বসিতে কোলে, হে অনঙ্গমে, भंठी कि तम मानदिव आक्रावश मामी. আদেশে ছটিবে তার বলিবে ষেথানে ? মোচন কবিতে আমা নাহি কি সে কেহ, অকল অমরকল থাকিতে এথানে? ना त्रि. कह रश रेमर्टा ठाहि ना डेकात. সহিব এ কারাবাসে অশেষ ষন্ত্রণা পতিহত্তে যত দিন মুক্তি নহে মম।"

এত কৃষ্টি স্থিব-নেত্রে শৃন্তদেশে চাহি উচ্চাসিলা চিত্তবেগ—"হে শিবে শৈল্জে, জীবছঃথবিনাশিনি, শনী নিঞ্চালয়ে দেবিবে ঐঞিলা-পদ, দেখিবে ভা তৃমি গু

নীরবিলা বাসব বাসন। সুরেখরী।
ন্থলপদ্ম তুল্য, মরি, উৎক্ষর বদনে
শোভা দিল অপরপ! প্রভাতিল বেন
ভাতিত কিরণ স্থির তুবার-রাশিতে
অভাামর—আভামর করি দশ দিক্!
শিহরিলা অনদ-মেহিনী হেবি শোভা,
ভাবি মনে অস্থরের ক্রোধন-মূরতি,
কাঁদিয়া চলিলা বীরে ঐক্রিলা-আগারে।

পঞ্চল সর্গ

গেলা যবে দৈতাপতি উত্তরতোরণে দণ্ডিতে অমরদর্প---দণ্ডিতে সমবে মহাবল বাযুকুলপতি প্রভন্তনে, দণ্ডিতে চৰ্জন্ন পাশী জলকলেখনে. क्षाइ मार्क अपन्त मानित्व मः श्राम. ভীম শিথিধ্বল শিব-স্থতে--গেলা বরি ক্রুপীড়ে সেনাপতি-পদে দেও ছাডি দ্বারে দ্বারে কিরিতে লাগিলা দৈত্য-স্বত। প্রবিদারে ঘোর-রণ দেবতা-অস্থরে--ভীমবঙ্গে যঝিছে অনল, যথে সঙ্গে ইন্দ্রস্থত জরম্ভ কমার ধমুর্দ্ধর। বাজিছে অমরবাত সমর-উল্লাসে, দৈত্যরণবাত বাজে অমুনিধি নাদে, ভয়ন্তর কোলাহল বিদারে অধর। অগ্রদরি চ্মুমুথে কোদণ্ড টকারি দাডাইল কন্ত্রপাড়—বাব্দে বোর রণ, ছটিল অমরঠাট ত্রিদিব আকুলি, ष्टित मानव शक्ति कतम शक्तान , খন ঘন টলে স্বৰ্গ∙বীরপদভরে। কভ কণকাল দেবদৈর অগ্রসর বিষ্থি দত্তকে - কভু নিন্দি দৈভ্যদেনা অমরধনেরে, ধার বোর কোলাহলে। মটিকা-ভাড়নে যথা তরত্ব উত্তাপ হেলে রকে বেলা দকে সাগরের কূলে-কভু জলরাশি দম্ভে ছুটে উঠে তীরে, আবার পালটি ধার সিম্বর গর্ভেডে-তেমতি সমররক অমর-দানবে। লভিষয়া প্রাচীর ক্রমে উঠিতে লাগিলা অমর-বাহিনী, অগ্রি অগ্নিময় তমু, कार जीवन प्रव-मिनामण चारन ছটিছে উৎসাহে, সিংহনাদে স্থাকুল করি উৎসাহিত। পড়ে দেব-অস্থাবাতে रेमछा-अभीकिनी, পড়ে निगावेश वर्शा আভাডি আছাড়ি ছাড়ি উচ্চ গিরিশুক, কিংবা যথা জ্বমরাজি ঝড়ে মড়মড়ি। খোর উচ্চম্বরে বহিং--"হে অমরচমু, चात्र ऋगकान वौद्या (प्रथाश्व चमनि, দেবহন্তগত তবে হয় এ নগরী।

আই স্থান, হে বীরেক্স বাসব-তদার,
লাজিলে দানবশৃশ্ব নিমেষে এ ঘার!
দেখিবে অচিরে সে চির-আনলধান,
দেখ নাই দেবচক্ষে বছকর বাহা,
অন্তর্মার চির-রত্ত নলন উতান।"
বলি অগ্নি ফুলিক-মন্তিত-কলেবর
লন্দে লন্দে সর্কা-অগ্রে উঠিলা প্রাচীরে,
ছুটিলা জয়ন্ত ক্তে সদৈক্ত পশ্চাতে।
নারে রুদ্রপীড়সেনা সে বেগ ধ্রিতে;
বৃত্তম্বত যুঝিলা অন্তুত পরাক্রমে,
নারিলা কিরাতে নিজদলে; ভল দিলা

সেনা সঙ্গে সর্ব্ব-অজে শোণিতের ধারা! এথায় উত্তর খারে অমর প্ররথী যুঝিছে দানৰ সঙ্গে, সমরে মাতিয়া দেখাইছে স্থরবুল অমর-বিক্রম, নিবারি দৈত্যেশ্র-ভূকবল ভরগর। সুবৃক্ষিপ্ত শর্রাশি ঝলসি গগন इंटिट्ड प्याकृत निक-विनाति दश्मन বিতাৎ-তরঙ্গ ধায় অনঙ্গ-শরীরে— উগারি অনলরাশি বিভীষণ শিথা। পড়ে ভীম কটাম্বর (সঙ্গে ফিরে বার बिकां है मानव निका) रेमका महाकाय, দক্ত কডমডি ভীম গদার প্রহারে ঘরারে বর্ঘরে যাহা বায়কুলপতি. श्रांबिट्ड कोनिटक नामि मन्द्रकत मल, একা লণ্ডভণ্ড করি বিকোটি দানবে, কালাগ্নি জলিছে অঙ্গে ধাইছে মার্ত্ত উक्रि সমর্সিক-উঞ্জি যেমন বাড়বাগ্নি ধার জালি সিদ্ধু শতকোশ--ঘরারে প্রচণ্ড চক্র অস্তরে নাশিছে। পলাইছে দন্তবক্ৰ দানব দুৰ্ঘতি, (অমর জর্জর-তহু দ্স্তাবাতে বার, ভৱে যার লবণ-সমূত্র প্রকম্পিত) পলাইছে স্বদল সহিত ভীমবেগে; নক লক দৈত্যদেনা ছুটছে পশ্চাতে-ৰ্থা খোর রকে ধার ঘূরিতে ঘূরিতে বর্ণবায়ু সঙ্গে বুক, লতা, পত্রকুল। শত থতে থত করি মৃত দানবের क्लिना मार्छ७ त्मव ; निमित्य नामिन ज्ञ प्रकृष वीत्र, भूष्ट पुत्राहेश

দীপ্ত চক্র ভয়কর। পড়িল সময়ে: তব**ন্ত বরুণ-হতে দ**ান্ব তুর্জ্য সিংহতুও - সিংহের সদৃশ মুও গ্রীবা। কাপিত নাবিক্রণ সদাধার ভয়ে প্ৰতিত পিঞ্চলাৰ্থৰ-প্ৰশিতে ৰেম্বি ্রাস্ক-ভবনে পাপী। কেশরি গর্জনে রকণে নেহারি দৈত্য প্রদারি বিভক্ত (উন্নত বিশাল তক্কাণ্ড 'মথা) ভটিল। বিকট বেগে গগন আধারি। দিলা বড বক্লণের অমুচর সেনা দেখিয়া অন্তত কাণ্ড। গৰ্জিল বৰুণ-গজিলা বেরূপ পূর্বেষ যবে অহিরাজ देशांविला कालक है नील कर्श-(श्रा কহিলা—"যা পলারে, রে ভীক্র ফেরুপাল। লকা গিয়ানরকান্ধকারে স্থরাধম। অমরকল-কলত। ভল দিলি রণে প্ৰচলেশে থাকিতে বৰুণ ? হা পামব। (मथ (मर्य-क्लाझांव, (मश मृत्य धांकि, সে সাহস থাকে যদি-পাশীর কি তেজ:।" বলি ভঙ্কাবিলা যথা ভঙ্কারি প্রলয়ে আনোলি অতলতল তরঙ্গ ছটান: ধবিলা সাপটি মহাপাশ—দিলা ছাডি। মেঘমন মন্দ্রিল অম্বরে রডে . দৈতা ভীম নালে, নথে দত্তে মনঃশিলা ঘাতি — ছাইল সমরাজন দৈত্য-শব-দেহ। গ্ঝিছে অমরদৈক প্রাচীর-শিথরে, নিয়দেশে হীনবল দল্পবাহিনী. নির্ধি মহাদানব গর্জিলা ভীষণ— বামুকি-গৰ্জন ভীম যথা মহাদত্তে ানিলা প্রাচীরমূলে ঘোর পদাযাত, ালিল অটল ভিত্তি বিশাই নিশ্বিত. 'ডিল ভাঙ্গিলা শত **থও খও হরে.** ছক**ম্পানে তাঙ্গে যথা ভূ**ধর-শরীব। ইলিয়া তখন মহা খজা—ভিন্দিপাল -বিশাল **অন**ন্ত প্ৰান্ত সে খড়গ ভীষণ। শাকুত্ব বুষভ তুল্য বিক্রমে দৈত্যেশ ^{থও} থও করি শুন্য ভীম-ভিন্দিপালে. ^{ম্থিতে} লাগিলা বেগে দেব-চম্রাশি। উড়িল অমরতমু আচ্ছাদি অম্বর, ^{ম্থা} দে কার্পাসিয়াশি উড়ায় ধুনারী

টকারি ধুনন-ষম্ব ক্ষিপ্তা দণ্ডাঘাতে। প্রবাহিল গ্রেড স্বচ্ছ অমর-শোণিত: দেব-**অংক** বহিল তরঙ্গাকারে ধার। মনোহর—কৌবতে পরিয়া **অপ**রূপ। অক্ত দেবের তক্ত অস্তের আঘাতে (অশ্বীর মাকত বেমন) ছিল্ল নছে কণকাল সে ভীম প্রহারে---কিন্তু দেহ मटक व्यञ्जमाटक, मटक यथा ने ने ने प्रक কুট হলাহলে ঘোরতর। স্থরবুন্দ জননে অন্থির, অন্ধ-প্রহারে আরুল, ছাডি স্বৰ্গতল শীঘ্ৰ উঠিলা বিমানে . উঠিশ নিমিষে শক্তে কোটি ব্যোম্যান আভাময়—দেব-অঙ্গ-শোভা অঙ্গে ধবি। অযুত নক্ষত্ৰ যেন উদিল সহসা নীলাম্বৰে। অপুৰ্ব্ব কিবণ অভ্ৰমণ ছুটিতে লাগিল শুক্তে শতাক্স-লহরী নিনাদি মধুর নাদে, ছুটিল চ্কিতে শিপিধবজ মহারথ ইরন্দগতি. উত্তাপে ঝলসি নভশ্চব প্রাণিকল व्यश्क निर्नास भागी तका ज्ञानन ছুটিতে লাগিল চক্রে চূর্ণি মেঘদল . মনোবৰগতি বায়-রথ ক্রভবেগে আকুল করিল ব্যোমকেশ। বৃষ্টিধারে দেৰপুরী অমরা-উপরে বর্ষিল শরকাল – দৈত্যচম মুত, গ্রীবা, বক্ষঃ, ৰাছ ভেদি চমকে উঞ্জলি অভ্ৰতন্ত্ৰ— তড়িত নিঝর যথা। দল্লবাহিনী वर्षाद्र! पुत्र मुल्ल, व्यात-स्वत्थी. না পারে স্পর্শিতে অন্ধে কিংবা ভূজপালে। লাগিল পডিতে, পলকে পলকে দৈত্য-সেনা অগণন !---নিরখিল বুতাস্তর---ত্তিচনত মুরিল, যথন বহিচক্রপায় উৰ্বাল বিশাল ভাল; দভে ভ্ছকারি वाषारम विश्वन वश्रः कविना मीचन--দীঘলভূধর মেরু ষ্থা, কিংবা যথা ফণীজ্র বাস্ত্রকি সিন্ধ-মন্থন-প্রলয়ে। माजाहेन। त्रपश्रम मञ्जूष मृद् প্রসারি সম্বনে বাহ ঘন লম্ফ ছাড়ি. প্রচও চীৎকার ধানি হস্কারি নাসায়. দুর-শুম্বে দেবধান ধরিতে লাগিলা,

আছাডি আছাড়ি চূৰ্ব কৈল ক্ষ্পকালে রথ অথ অপ্রকৃশ স্থদুরে নিকেপি। দেবদেনাপতিবৃন্দ ত্রাসিত তথন আরো দূরতর খোর অন্তরীক্ষ-পর্থ চালাইলা দিব্য যান, দিব্য অস্ত্ৰকুল চাপে বসাইলা ক্রত, শিঞ্জিনী টক্ষারি ঘোর নাদে। মহাতেকে ছটিল সঘনে অন্তর্ক -- বিশ্বহর প্রকার-প্রক ছুটে যথা ভালি গিরিশুঙ্গরাজি—ভালি ক্রম-কাণ্ড-শাখা বেগে : মুহুর্ত্তে উডিল দশ দিকে লক্ষ লক দৈত্য মহাকার. লণ্ডভণ্ড দৈত্যবাহ। ভয়ন্তর বেগে ছটিল বারীশ-অসমহাপ্রহরণ. ত্রিভূবন গুম্ভিড, কম্পিড চরাচর , প্রলয়-প্লাবন রঙ্গে টলিল ভূধর चानिन मध्यमन छेखान शिलारन . শক্ত জড়ি পড়িতে লাগিল উর্দ্ধপদ - **অ**ষ্ত দত্তজ-তত্ত্ব দ্ব-নিম্নে বেগে— পর্বতে. ভূতল, সিন্ধু অতল আচ্ছাদি। খন হাহাকার শব্দ দৈত্যমন্ত্রীতে ! বিকট মৃত্য-আরাব দণ্ডের ঘর্ষণ ! দহিছে দিতিজগণে প্রচণ্ড ভাস্কর বর্ষি প্রথর কর -- কালানল যেন--রণক্ষেত্রে। অক্ত দিকে গ্রিছে কৌশলী সমর-পণ্ডিত ধীর শূর উমান্তত। দেখি বুত্রে অক্ত শরে অভেন্ত শরীর, হানিছে স্থতীক্ষতর শর চনৎকার , শৃক্ত ব্যাপি একেবারে বাহিরিছে বেন কোটি ভূক্ষমমালা মালার আকারে, ঘেরিছে অন্মর অঙ্গ বিশ্বি ধরতর, বিদ্ধে যথা বিষদন্ত বিবাক্ত তক্ষক ৰ্মদৃত। শর্দাহে আকুল অসুর, দক্ষ্য করি শিবস্থতে ধরিলা সাপটি সংহারীর শেষ শূল-- দিলা শুক্তে ছাড়ি। চলিকা সে অস্তবর অম্বর উবলে, জলিল তুৰ্জন্ব শিখা ঝলকে ঝলকে. ব্ৰহ্মাত পূরিল শূল-গর্জন ভৈরব ! বোর-রঙ্গে ত্রমে অস্ত্র--গ্রহপিও বণা হইলে স্কুখানচ্যুত ভ্ৰমে শৃক্তদেশে— **কভু বক্র চক্রগতি, কভু স্থিরভাব,**

কথন নক্ত-ভুলা গতি অদভূত ! শুন্তিত দহৰ দেব, অস্থিয় আকাশ, নেহারি শভুশুল। কুমার-আদেশে अमुश इहेना सूर्या जानि कनकारन -লুকাইয়া ভম্ন-আভা গভীর ভিমিরে। ডবিশ মরি রে যেন আধারি গগন কোটি ভারকার বৃন্দ। হরিল দেবতা দেবতেকে গগনের তেকোরাশি যত ---নারহিল শর-লক্ষ্য অন্তরীকে আর একমাত প্রজ্ঞালিত শূলের কিরণ किंतिक गांतिन मुखरमरन करन करन । প্রান্তে প্রান্তে গগনেব ভ্রমিলা ত্রিশূল ঘুরি অস্করীক্ষর, লক্ষ্য না হেরিথা ফিরিলা দৈতাল্র-করে অভিমানে নতঃ দেখিলা দমুজপতি সে অন্ত-আলোকে রণস্থলে ভীম শবস্থল; এবে একা দে প্রাক্ণ-মাঝে। মথা নগরাজচডা গল-কর্ম্ম-রূপে যবে উডে বৈনতের। দেখিলা অদূরে হায়, ধুলি-বিলুষ্টিত দহৰবিৰয়-কেতু! নেহারি হুঃখেতে দৈত্যনাথ স্বহন্তে ধরিলা দে পতাকা, বীরগতি আলম ফিরিলা চিস্তাকুল।

ষোড়শ সর্গ

নিক্জ ক্ষর, নশন-ভিতর চারু শোভাষয় মুনি মোহকর, নবীন পরবে ঝর ঝর ঝর নিনাদ মধুর, থর থর থর মঞ্জরী দোলে।

প্রগদ্ধ-মোদিত নিক্ঞ-কাননে প্রথম মাজত আনন্দিত মনে ঢালিরা ঢালিরা মধ্-নিখনে ছুটিছে চৌদিকে—পড়িছে স্থনে কুম্ম-কোনে

হাসে ফুলকুল ভকুণ স্থন্মর; স্থানিত শোভা, রসে ভর'ভর খেত রক্ত নীল পীত কলেবর ধরে ধরে ধরে—হাসি মনোহর

মৃক্লমৃংগ

খনে স্থাকণা তছু সিঞ্চ করি খনে হিম বথা নিশিগদ্ধাপরি; ছোটে কুঞ্জন মধ্ব লহনী সধীত-বাদন শ্রুতিমূল ভরি

অতুল সুৰা ো

ভাবে ভাবে ভাবে, ভাবে পাথিকুল ; স্বরগ-বিহক আননেল আকুল ; কেলি করে স্থে খুঁটিয়া মূক্ল উভি ভাবে ভাবে , ক্রক ব্যাকুল

বেড়ার লুটে।

দ্রমে পঞ্চবাণ পিঠে পুস্থাত্ত্ব হাতে পুস্পান অমোহন ভয় অবণ অধ্যান প্রভাতারে জয় অহাসি বিজ্ঞানী, নেত্র-কোণে ভাষ্থ ভরকে লুটে॥

ঐস্ত্রিলা কহিছে "শুন হে মদন, রচিলা নিকুঞ্জ বাসনা যেমন আশার(ও) অধিক এ স্থরতি বন িধিবে অতুল—সঞ্চল সাধন

তোষার শ্বর,

নিত্যপতি হেরি এ কুঞ্জ স্থলর বাধানিবে তোমা, শুন গুণধর, বণ্<mark>রাক্ত</mark> যবে মহাদৈত্যবর, ফিবিবে এথানে , রতি-মনোহর,

স্থে বিহর॥"

র্যনি ক্রম্ভে পশি, ঐক্সিলা স্থলরী হাসে চাক হাসি স্থদর্পণ ধরি হাসে চাক হাসি পীন-পদ্মোধরী হিবি বিশ্বাধর,—অপাক-লহরী

নয়নে খেলা।

াণ আমি, ওচে দৈত্যকুলেখর"

তে দৈত্যরামা অর্জ মৃত্তার

শী ছাড়ি নাথ আমার কাতর

শিববে ভেবেছ—ইজ্লার আমার,

এতই হেলা॥

মানি, দৈত্যনাথ, রমণী তোমার াদনা প্রাতে আছে অধিকার তামার(ও) বেমন তেমতি আমার, ^{ই দ}্মকপতি, দেখিব এবার

বাষা কেমন।"

হেনকালে শুনি ভূষণের ধ্বনি ফিরিলা ঐদ্রিলা—বেন ভূঞ্জলিনী ডমক-রবে ফিরন্নে তথনি ফণা হুলাইয়া—ভাবিলা ইন্দ্রাণী

কবে গ্ৰন ৷

দেৰিলা একাকী অনকমোহিনী রতি আসে ধীরে বাজিছে কিৰিণী চিন্তা-অবনত চাক-চন্দ্রাননী বধা সুর্য্যমুখী, যবে সে যামিনী

হয় আগত।

জিজ্ঞাসে ঐদ্রিলা, "মদন-মহিলা, ইন্দ্রপ্রিলা শটী কোথার রাখিলা ? বাসব-বনিতা, কহ কি কহিলা শুনে সে বাবতা,—শিরোপা কি দিলা মনের মত ॥

"দৈতোশ মহিষি, আমি তব দাসী কেন ব্যক্ত কর, মৃথে নাহি হাসি ইন্দ্রের কামিনী যে অভিমানিনী কান ত সকলি—গর্ম্ব-নন্দিনি শুটা না আমে।

না চাহে মোচন, চির-কারাবাসে রবে ইক্তজায়া—এ খর্গ-নিবাসে শচী নাহি চাহে আপন মঞ্চল দহন্ধ-প্রসাদে—সহিবে সকল

না ভাবে তাদে॥"

প্রফ্ল আনন গঞ্জ-কুমারী নয়ন-কোণেতে রতিরে নেহারি থেলায়ে আপোকে তডিত-তরজ দংশিলা অধর—করি গ্রীবা-ভদ

ক্ষণেক থাকি।

কহিলা, "কি রতি, ইল্রের ইল্রাণী না আদিবে হেখা ? সাবাদ্ মানিনি । বুথা কি হবে সে অস্ত্রের রাণী 'পচীর উদ্ধার' ?— যাব লো আপনি

এ সব রাখি॥

সালা দেখি, রভি, ভাল কোরে মোরে কেশ-বেশলাস আদে ভাল ভোরে সাজা লো তেমতি বেন হাসি-ভোরে বাঁধি দৈত্যরালে—রতি, মন ভোরে

সালা আমার।

জিনিরা সমর ফিবিলে অস্থর রণশ্রান্তি ভাঁর করিব লো দূর এ নিকুজ-বনে !— মরি কি মধুর মদন কৌশল ! মবি কি প্রচুর

স্থগন্ধ বায় !"

সাজাইল রতি গছক-কুমারী (ধন্ম রাড, ডোর গুণে বলিহারি!) নীলোৎপল যথা গ্র'লে ধারাবারি ঞীন্দ্রিলার মূখ; অলকার সারি

ভ্ৰমৰ ভাৰ।

সাজিল ঐব্রিলা; মধুর মাধুরী বসন-ভ্রবে পডে ধেন কুরি পডে ধেন কুরি চাক-পরোধরী লাবণ্য-তরক থরে থরে থরে

নাচিল প্রায়॥

বসন্ত-সময়ে কিবা সাজে রতি
ভূলাতে কলপেঁ—রূপ-কুলপতি ?
নিবের সমাধি ভালিতে পার্কতী
সাজিলা বা কিবা ? মোহিনী যুবতী

স্থা-তুষ্লে 🕈

নিদিলা দে সব ঐদ্রিলা রূপনী সারিলা ফুলর, বাসে কটি কসি, কুস্তলে রতন ঝলিছে ঝলসি ভাবকার মালা—মন্মথপ্রেয়নী

আপনি ভূলে॥

অস্তর-মোহিনী নেহাবে মুকুরে সে বেশ-লাবণ্য, গরবেতে পুরে ; শচীরে পাইবে ভূলারে অস্তরে ভাবিল নিশ্চিত ; কোকিলা-সুহরে

কংহ "লো রভি!

সাজা এইখানে যত অলকাব, যত বেশভ্ৰা আছে লো আমার ; রতন-মুক্ট,মণিমঃ হার, জরলক্ধন—ধনেশ-তা্তার

ঢাল যুবক্তি॥

আন বান পুপারথ, অখ, গজ, নেতের পতাকা, ২েমমর ধ্বজ; আন বীণা, বেণু, মলিরা, মূবজ, আমার বা কিছ;—মানস-প্রজ,

ফুটাব আবাৰ।

বল চেড়ীদলে সশস্ত্র সাজিরা দীড়াক সকলে এথানে আসিয়া— ত্রিকটা, ত্রিগুণা, কপালী, কালিকা, যে বেথা আছে লো গমর্কবালিকা, দানবী-সাজ

যাও, হে অনন্ধ, ফিরিলে অস্থব জানাইও বার্তা, নিকুঞ্জে মধুর ত্রমি কিছুকাল।"—বাঞ্জিল ঘুজ্মুর নাতিয়া কুটিতে, চরণে ন্পুর

মধ্ব তায়

"ঐস্ত্রিলার গতি কে ফিরাতে পারে ?" কহিল দানবী মৃহল ঝলারে— "হে দম্অনাথ, ঐস্ত্রিলা হে নারে বাসনা ছাডিতে —বাসবপ্রিরারে

ধরার পায় ৷

হেনকালে কাম কহিলা সংবাদ, কিরিছে দৈত্যেক্ত সাধি নিজ সাধ জিনিয়া সমরে—যথা দে নিবাদ উজ্লাতি অরণা প্রাইয়া সাধ কটারে বায়

স্থগন্তীর গতি, অতি ধীর ভাব,
ভাবে দৈত্য মনে "এ জয়ে কি লাভ ণৃ
সমূহ বাহিনী সংগ্রামে অভাব
করিল অমর—এরপে দানব

ক'দিন রবে

আমি বেন রণে গভিন্ন বিজয়,
আমারি বেন এ শরীর অক্ষর
প্রতি রণে যদি দৈতাকুলকর
হর হেন রূপে, কারে লয়ে শ্বর

চলিলা ঐদ্রিলা আগু বাড়াইরা বসস্ক-সথারে সংহতি লইরা চলনভন্ঠাতে তরঙ্গ তুলিয়া ভুলারে কন্মর্প মধুর অমিরা

হাসিতে ঢাগি

দিলা আলিখন প্রকৃত্ন লোচন নেহারি অসুর দানবা-বদন ভূলিলা সকল ভাবনা বেদন বা ছিল অন্তরে নিমিষে কালন

মনের কালী

কহিলা, "ঐদ্রিলে, এ কি মনোহর শোভা হেরি আবজি মরি কি ক্রনায় ক্ষিরে ফটিছে অ-ওর্ম অধ্র অকণের রাগে ! ভমু-মিগ্ধকব

এ ভ্ৰালভা ।"

"রণশ্রান্তি নাথ, ঘুচাতে তোমার আমার আদেশে বির্চিলা মাব মধুৰ নিকুঞ্জ, শোভা হেরি তার সাজিত্ত আপনি ! রণচিন্তা-ভার

ঘুচাব ছে তা।"

কণু কণু ধ্বনি কিন্ধিণী নুপুরে, चाछ इंटेना धनी धीरत धीरत धीरत অদীখল তম্ব-ভব্নে দৈত্যববে বাঁধি ভূজপাশে-চাক অঙ্গে ঝরে

শশাক্ষর !

প্রবেশি নিকুঞ্জে শিহরে দানব চারিদিকে মৃত্মধুর হুবব যেন উপলিছে মধুর অর্থব চালিয়া চৌদিকে।—মুকুল পল্লব

অচেতন দৈত্য ভূঞ্জিয়। মাধুবী জাগাইলা হাসি ঐদ্রিলা ক্লরী বণপ্রান্ত শুরে স্থরে শান্ত করি চলিলা ভ্রমণে ভুঞ্চপালে ধরি

অস্থরবর।

কিছু দূরে গিয়া কতে দৈত্যবাজ এ কি হেরি. প্রিয়ে, তব ভূধা-সাঞ্চ কেন এ সকল কেন হেথা আজ পডিয়া এ ভাবে ? চেড়ীর সমাঞ্চ ? এ কি সমব গ"

"কোথা ভবে আরে রাঝিব এ সব কহ ভানি, ওহে হাদয়-বল্লভ। কার গৃহ হায় ভবন ও সব, পেৰিছ ওথানে ? **অমর-বিভ**ব ! শচী-ভবন !

অমবার রাণী! ইত্তের ইতাণী! ক্হিলা রভিরে, ক্হিলা বাথানি এ ভুবন তার ! কহিলা কি জানি ভিষর আমরা? চাহে নাসে ধনী

কারা-মোচন।

'দৈত্য-বাক্য ছার' কহিলা আবার 'কাবামুজি, হায়, কে কবে রে কার?' শুন হে দানব, পুলোম-ক্সার এ স্বথ-ঐথর্যা। তার(ই) অধিকাব হেথা সকলি।

কি সানি কখন আসিবে সে ধনী মনোহ:থে তাই আইত্ন আপনি লতার নিকুঞ্চে। ছাডিব ধ্থনি শচী আভোদিবে।" নীবৰ রম্পী

একে বলি॥

শুনিতে শুনিতে ক্রোধেতে অধীব বাডিতে লাগিল অম্ব-শরীব পর্বাত-আকাব, নিশ্বাস-সমীর বহিল সবেগে কহিল গল্গীর

"রতি কোথায় ?"

রতি কাঁপি কাঁপি আদি দৈতাপাশে কতে "ইন্দ্রপ্রিয়া ববে কাবাবাদে, নাহি চাহে শচী আপন মঙ্গল দৈতোশ-প্রসাদে সহিবে সকল

থাকি এপায় ॥"

রক্তবর্থ আঁথি ঘূৰিল স্থনে, कृतिन जसब जीवन वनत्न. কড কড ধ্বনি ৰদনে বদনে উঠিল বিকট---কহিল গৰ্জনে

ভীষ অসুব--

"আমাৰ আদেশ হেলিলি, ইক্ৰাণি গ বিফল কবিলি দৈতাবাজ-বাণী >" বলি ছিডি কেশ হুই হল্ডে টানি ছটিল হুমারি—হেবি দৈত্যরাণী বামা চত্ৰ-

নিল ফুল্গতু আপনাব হাতে, বাঁকাইল চাপ (ফুলবাণ তাতে) আকর্ণ পুরিয়া, বদি হাঁটুগাডি (সাবাস স্করি!) বাণ দিল ছাডি केंबद शिम।

অব্যর্থ সন্ধান ! মদনেব বাণ আকুল করিল দহজ-পরাণ कित्रिया दिश्व श्वित (भोगांमिनी হাসিছে ঐদ্রিলা-দানব-কামিনী

লাবণ্য-ৱাদি॥

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

দাড়াহলা শ্র। আাসরা ান্কটে ঐক্রিলা কহিলা মধুর কপটে "এ নহে উচিত, হে দম্পনাথ, তুমি যাবে সেথা করিতে সাক্ষাৎ

भठीत मरन।

তবে গৰ্জ তাব হবে যে সফল সেই অৰ্ণৱাণী! হবে কি বিফল দাসীর আদেশে দৈতারাজ-বন ? ঐক্সিলা-বাসনা স্থান ত সকল,

আছে ত মনে॥" কহে দৈত্যপতি "তোমায়, স্থারি, দিলাম সঁপিয়া ইপ্রসহচরী . যে বাসনা তব তার দুর্প হরি .

পুরাও, মহিষি ,—ফণা চূর্ণ করি আন ফণিনী।"

হরবে উন্মন্ত হাসিলা ঐদ্রিলা; সুবেথ দৈত্যববে অনিক্রন দিলা; চেড়ীদল সঙ্গে হরবে চলিলা গব্যেক্ত-গমনে, কটাকে হানিলা

বোরদামিনী॥

সপ্তদশ সৰ্গ

দেবারি দক্তজনাথ দৈত্য-সভামাঝে ৰেষ্টিত অমাত্যবৰ্গ; সমন্ত্ৰণল মহাবল সেনাপতি বুল চারিধারে। নিকটে বসিয়া ধীরে স্থমিত ধীমান কহিছে গন্তীব-মবে "দৈত্যকুলেশ্ব, मिन मिन मरत रेमछा रमरवत्र छे९भारछ. মরি লাজে কত হায়, না হয় গণনা---বীরবংশ ধ্বংস-প্রায় দেবতার তেজে। ক্রমে দর্প, সাহস বাড়িছে দেবতার বারি বরিষার ষ্ণা তর্দ্ধিনী-ধারা ধায় রকে ভালি বাঁধ চ্কুল উছলি, ুগৃহ, শস্তু, প্রাণী নাশি অগণন ! হের ছুর্নিবার তেজে জয়ন্ত, অনল, সমরে অস্তুরে জিনি অসম সাহসে প্রবেশিলা পূর্বহারে, লজ্মিলা প্রাচীর मुन्दरभा प्यमन-रेनम ; ८० रिप्टार्यथन,

আর্দ্ধক অমরাবতী ভূজবলে দেব
অধিকার কৈলা। এবে উত্তব-তোবণে,
আবাব সালিছে রণে দেবদেনাপতি
মহাবণী কুমার, স্থা, বরুণ, বায়ু,
ভাবিলা হে দহলেক্স, পলাইলা ভারা
মুকাতে ত্রিশ্ল-ভয়ে পাতালে আবার,
সে আশা নিফল, প্রস্তু, ইস্কলালে ছলি
করিছে রুপট বণ অমর মারাবী।
হৈলা দেব অম্বন-কটক! কি উপানে,
ব্রিতে না পাবি, হার এ স্বর্বপ্রী
হবে দেববিধ-শৃক্ত—ছ: দহ সমন
সহিবে ক'দিন আবে এরণে দানব ?"
দানবকল-ঈশার ব্রাস্ব ভবে—

"সত্য ষা কহিলা, মৃদ্ধি, কিন্তু কহ সুধি, কি ফল বাঁচিরা স্বর্গ ছাড়ি ?-- দার লাগি, কত তপ কৈছু কত যুগে নিবাহাবে, জিনিতে সমরে যায় কত মহাবথী দৈত্যবীবকুল-শ্ৰেষ্ঠ ত্যঞ্জিলা প্ৰাণ, ষাব লাগি অসংখ্য অসংখ্য দৈত্যদেনা পতে রবে, বীরদর্পে শমনে না ডবি। क्रमम वीरेतन करल--- मनग(है) मकल শক্র ঘাতি বণম্বলে ! হে সচিবোত্তম. কে কোথা বাজত্ব ভ্ঞে বিনা যুদ্ধ-পণে---মতাভয়ে সমবে বিবত কবে শ্ব? কৰে দে বীবেৰ চিত্তে ক্লভাত্তেৰ ভয় হানিতে সমবে শক্র ? তাজিতে পবাণ যুঝি রকে বিপুদকে সমব-প্রাক্ষণে ? শুন, মারি, যত দিন এ দহুজকুলে একমাত্র অন্তধানী পাকিবে জীবিত. পারিব ধরিতে অস্ত্র এ প্রচণ্ড ভূজে. বহিবে কৃষির-স্রোত এ দেহে আমার। নহি কান্ত তত দিন এ ছবন্ত রণে।"

হেনকালে ক্ষুপীড় বীর চুড়ামণি,
মণ্ডিত সমরসাক্ষে আসি দাঁড়াইলা
নতিনির, পিতার সমূথে কর যুড়ি।
নীর্থক উজ্জল শিরে অকে সু-কবচ,
রত্বয়র অসিমৃতি ঝলসে কটিতে—
সারসনে, পৃষ্ঠদেশে নিবন্ধ ঝলসে।
কহিলা "হে তাত, ভোমা দেখাতে মুথ
গাই লাক, হে বীরেক্স, তর পুত্র আমি

ঢিব অবিশ্বন রবে—সমবে হারিছ,
নারিছ রক্ষিতে পুরী তিন দিন কাল।
নারিছ অনল-হতে। জয়ন্ত বালক
অধিকার কৈল ছার বক্ষিত আমার।
বণে ভক দিল, পিতঃ, দছজ-বাহিনী—
আমি যার দেনাপতি। জীবিত থাকিয়া
তাহা চক্ষে নিরবিছ। এ নিন্দা ঘুচাব,
বিলোকবিজয়ী দৈত্যপতি, বণছলে
সমব-বহিতে—বথা দাবাগ্লিতে বন—
দহব অমর-শৈক্ত; সমর-কুশল,
জিনিব অনল দেবে—জয়বল জিনিব;
নতুবা হে তাত, এই শেষ দবশন
৪ চবণ-অববিল। আজা দেহ প্রতে।
বলি পিতপদধলা ধরিলা মন্তকে।

বলি পিতৃপদধূলা ধরিলা মন্তকে।
তানরা পুত্রের বাঝা র্ত্তের নয়নে
দেপা দিল বাঙ্গাবিন্দ, বিভূক প্রসাবি
পুত্রে দিরা আলিক্ষন কহিলা দৈত্যেশ—
"এ প্রতিজ্ঞা, বীরভাঠ, উচিত(ই) তোমান,
দত্রকলতিলক পুত্র কদ্রপীত,
চির অবিন্দম তুমি -কিন্তু তানি পুনঃ
প্রেক্ত আসিছে রণে, পানিবে সম্বব
অসরায়—স্বরনাথ তুর্জির সমনে,
না পাবে যুঝিতে তারে ত্রিভূবনে কেহ
মৃত্যুজয়ী র্য বিনা, রক্ষঃ-স্বরাস্থ্যে।
তার সনে সমরে পশিবি একা তুই দ
বি স্থাবি, একমাত্র পুত্র ক্র মম।"
বলি পুনং গাচ্তর দিলা আলিক্ষন
ক্রপীতে বক্ষে ধরি দক্ষপেশবর।

কহিলা আবার ছাডি ঘন দীর্ঘধাস—

"কিন্তু বীর তুই—বীরপুত্র—মহারথী,
কেমনে নিবারি ভোরে ? কেমনে বা বলি,

যাও বৎস. দৈত্যকল রবি অত্তে যাও ?"

"হে পিতঃ," কহিলা বৃত্ৰনন্দন তথন—
"কি ফল জীবনে, হেন কলত্ব থাকিতে,
কি ফল ডোমার (ই) তাত, হেন বংশবরে
নিলা বার আজীবন ত্রিলোকে ঘ্যিবে,
ইানিবে অসুর সূব যক্ষ বার নামে ?
গীবনে জীবন-অন্তে জগতে ঘ্রিত।
িলোক-বিজয়ী পিতঃ, কহিবে দকলে,
ইণালার কাপুক্ষ তনর তাহার

প্লাইল প্ৰাণভৱে না ফিরিলা রণে, পুনর্কার এ কলঙ্ক না হ'লে মোচন জীবন নিফ্ল মম, হে দমুজনাথ, মবিব বীরের মৃত্যু সমনে পশিয়া।"

উৎসাহ-প্রফ্রনেত্রে আনলে অনুর,
নির্মিলা পুত্রমুথ ছটাবিমাওত,
ভাহ-বিমাওত বথা কনক-জচল
সহস্র-কিরণমালী উদিলে শিণরে!
কহিলা সংবন্ধি বেগ—"না নিবারি ভোমা,
বাও রণে, জবিলম পুত্র রণজ্যী;
পাল বীরধর্ম, ভাগ্যে যা থাকে আমার।"
বলি কৈলা আশীর্মাদ অঞ্চবিলু মুছি।

विम भन बनरकत बानरम हिनना क्ष्मीछ । बननी-निक्टो राजा कुछ ।
दिश्विमा खेळिला हिड़ीनरल क्ष्मीछ्डा हिल समिकिनी-छोटत महीदत विक्टि ।
बानरम बननी-भिन विमान विद्या विद्या करिला बानीकीन भिछा, अछिडा बाना किनि मान हिल करिट भारत क्र मान स्था है। किन्न मान हिल करिट भारत क्र मान स्था है। किन्न मान हिल करिट भारत क्र मान सम्बद्ध मान है। समिकि सम् दिला मान हिला, अपित क्र मान सम् दिला मान हिला मान है। समिकि सम, दिला मान हिला है। समिकि सम, दिला मान हिला में स्था है। समिकि सम, दिला मान हिला है। समिकि सम, दिला मान हिला है। समिकि समीकिन समीकिन

হার রে, ঝরিল অঞ্চ বীরেন্ত্র-নরনে
অরি সে হদর-ইন্দু--ইন্দুবালা-মুথ,
এ বিদারে কার, হার, না আর্ড্ররে হিয়া
রু ঐত্রিলার(ও) শিলামর হদর তিতিল,
বাষ্ণ-বিন্দু নেত্রকোণে, কহিলা দানবী
তনরের মুখন্ডাণ লরে বন বন,——
"এ অভ্যত কথা, বৎস, কেন রে ভানালি
কাজ কি সমরে মোর
ব একা দৈত্যনাথ
নালিবে অমরকুল শক্ষর-ত্রিশ্লে।
দৈত্যকুল-পর্কজ, সমরে নাহি বাও।"

"না মাতঃ, অস্তর জলে অনন্ত শিধার। স্থর-হত্তে হারি রণে, নির্কাণ আহতি সমর্পিব এবে ভার, অমরে দণ্ডিয়া, তনরের শেষ ভিকা মনে রেখো, মাতঃ! পেষেছি চরণধূলি অনকের ঠাই,
দেহ পদধূলি তব। "এতেক কহিয়া
ভক্তিভাবে প্রণমিলা জননী-চবণে।
পুত্র কোলে করি স্নেহে দানব-মহিনী
বাদ্দিলা শীর্ষক চুডে বির সচন্দন,
কহিলা আখাদি "বংস, এ অর্ঘ্য সভত
অলক্যে রন্দিবে ভোরে—এ মম আনিদ্;
যাও রণে রণজনী অরিন্দম বীব।"
হেথা চাক ইন্যবাশ কর্তক্ম্লে,

(শুলু কুপ্রমের মালা লটিছে উরসে) বসি খেত শিলাতলে, স্থীদলে মেলি. শুনিছে রণসংবাদ ভাসি অঞ্নীরে। আহা, সুমলিন মুধ, হাদয় কাতর ! বেন রে নিশয় কেচ বিহন্ধ পরিয়া হেমসের দেশ হ'তে আনিলা গ্রীমেতে . ভাবিছে দানবৰ্ণালা তেমতি আকুল। কে পাবে কহিতে, প্রাণ স্থকোমল যাব, সমবের বোব শিথা---জ্বলিছে চৌদিকে. অভ্যত্ত দিবানিশি বণ কোলাইল ? ক্ষণ জন্মাঘাত নিত্য #তিমূলে, কহিতে লাগিলা শেষে ব্যাকুল হইয়া— "কত দিনে, হার, স্থি, এ সম্রস্রোত শুকায়ে নিঃশেষ হবে ? কত দিনে পুনঃ ধরিবে পুর্কের ভাব এ অমরাবতী ? পুত্র-শোকাতুরা আহা, মাতাব রোদন, मिथ (ब. बिमरत हिया !- विमरत ला थांग! জারিছীনা ব্যণীর করুণ ক্রন্সন। ভগিনীর থেদম্বর ভাতার বিয়োগে। হায় স্থি, বৃদ্ধ, তোরা বল, কি উপায়ে দক্ষজের এ ছবিশা ঘুচাইতে পারি ? এ দেহ করিলে দান হয় যদি বল, নিবাই সমরানল তমু সমর্পিয়া। স্থি রে ব্ঝিতে নারি ক্রিপে এ স্ব অসুর অমরকুলে মহাবীর যত নিদর নহে লো তারা আপনা পাসরি, জীবন-যাতক অন্ত্র হানে পরস্পরে ? না ভাবে মমতালেশ নাহি ভাবে দয়া, সদাই উন্মত্ত-প্রায় নিষ্ঠর সমরে, হানি অন্ত্র বধে প্রাণী, ভাবে না অন্তরে কত যে যাতনা জীবে জীবন-নিধনে।

সমর-সুরাতে হার, অমর দানব,
হর কি এতই সধি উন্মন্ত অক্সান ?
কিংবা কি সে পরাণীর (ই) প্রকৃতি বিভাবকুটিল কপটাচারী প্রাণিমাত্র সবে ?
কেমনে বা ভাবি ভাহা ? হৃদরবলত
আমার বিনি, লো সই, কপটতা ভারে
না প্রশে কোন কালে, তরু কি কাব্য
সমবে নাশিতে প্রাণী না হন বিম্থ ?
দিব না দিব না নাথে সমর-প্রাপ্ত
প্রবেশিতে প্ররায়, রাথিব বাধিয়া
হৃদর-ইপবে এই ভূল্লভা-পাশে,
নিদার্কণ হ'তে ভারে দিব না লো আর ।"

তেনকালে কদ্ৰপীড ব্ৰেব তন্য দজ্জিত দমর-দাজে, সুধীর গমন, অধ্যেত্র ধারে ধারে উভানে প্রবেশি. অগ্রদর ক্রমে সেই ক্রতক্র্মলে। দর হ'তে দেখি পতি, উটিয়া শিহরি, ছটিলা উতলা ইন্দ্রালা বামা, পডিলা বক্ষেতে তাঁর বাছ জড়াইয়৷ তকলতা তকুদেহ খেবে যথা সুখে। कश्नि।-(कांकिनांक्षनि कर्छ कुरुरिन, (হার ধবে ভগ্ন প্রবে ডাকে পিকবধু) কহিলা,—"হে নাথ, কেন দেখি হেন সাজ রণদাব্ধে কেন পুনঃ দাব্দালে প্রত্যু ? " এখন(ও) সমরক্রেশ দূর নহে ভব , এখন(ও) নিশিতে, নাথ, নিদ্রা নাহি যাও কত খথ সারানিশি শুনাও, প্রাণেশ, জাবার এ বেশ কেন দহিতে জামায়? চলিতে আমায় বঝি সাধ ছিল মনে— ইন্দ্রালা ভাবে ভয় সমরের বেশে, তাই ভয় দেখাইতে আইলে, প্রাণেশ! খোল, প্রভু, রণদাজ, না পারি সহিতে, निष्टेत नाक्रण जुमि, ललना-शन्य मिश्रिक चाहेरल शिक्षा छलना कतिया, ত্যক রণসাজ শীঘ্র, দেখাই(ও) না আর বিজীয়িকা তক্ষণীর হৃদয় তাপিতে !"

"প্রের্গন, নিষ্ট্র আমি, সভাই কংলো। পালিতে বীরের ধর্ম দিলাম বেদনা ভোমার হৃদরে, প্রিবে, লভিতে বিদার এসেছি, বিদার দেহ বাই রণস্থলে।

'থাবে নাথ ? "বলি ধীরে চারু চক্রাননী চলিলা বদন ইন্দ প্রিমথভলে. ু প্রদোধ-কমল ধথা মুদিতে মুদিতে নহারে শিশিরে ভিজি অন্তগত ভারু। 'যাবে নাথ, যাবে কি হে ছি'ডিয়া এ লতা. ্বধৈছি তোমায় যাহে কত সাধ করি গ চিডে কি হে তক্তবর, ঘেরে যদি তার হক্রতাধীরে ধীরে আতায় লভিয়া ? চিডিলে তবুও নাথ লতিকা ছাডে না, াতি তার কোথা আর বিনা সে পাদপ ? কোথা নাথ, বল বল তরকের গতি বিনা সে সাগরগর্ভ ৪ ছে সংখ, নিঝার খেলিতে না বাদে ভাল শৈল-অঙ্গ বিনা, ণত ফেরে খেরি তারে কর**য়ে ভ্র**মণ এব ঝর নাদে সদা—তেমতি হে স্থামি থাকিব তোমার এই হৃদরে জ্বভারে।"

ন্তনি সেহতরে বীব ধরিলা হরণী
চাক চন্দ্রানন চুম্বি কেলি অঞ্চারা।—
তকাইল ইন্দ্রালা, নিদাবে বেমতি
থকার ক্ষেনতা তাছর পরকে।
কহিলা সরলা বালা, নরনের জলে
তিজিল বীবের বর্ম, হৈম শ্রাসন।

"ধাবে যদি, নাথ, আগে এই লভাকল শালিত্র যে সব দোঁতে যত্তে এত দিন, এই পুষ্প-ভব্লবাজি কিসলবে ঢাকা, দেখ দেখ কত পুষ্প চলি ডালে ডালে व्यामृत्य ভाবে यम जः विनीत क्या, গ্হণ্ডে অর্জিকু যায় কতই আদরে। नान चारत दमहे मव विहन्नमत्राकि ালিত বিবিধ বর্ণে— নয়ন-রঞ্জন। थि जिन भानिना त्य मत्य क्षनात्न, ^{ম্ধাৰ্ত্ত} দে**থিলে যা**য় হইতে কাত্ৰ मान এই मधीनत. आजीवन बाता ^{ম্থের} সঙ্গিনী মম, আজীবনকাল ाष्ट्रीडिटड शानिना मना.—स्मिवना खाल्य, ^{প্রাণ}, মন, দেহ, স্নেহ-রুসে মিশাইয়া। ^{দাৰ} পরে এ দাসীরে—জাবন নাশিতে ^{বাহি}ত ভোমার মায়া, বীর তুমি ৰাথ। াতিয়া দিলাম বক্ষঃ, হান এ হৃদয়ে ^{দ রক্ত-পিপাস্থ অসি,—রণে ধাও বীর !"}

विन मृद्धांगठ हेन्द्रवाना हेन्स्पृशी. শ্বীরা বতনে পুন: করার চেতন, রুদ্রপীড় স্নেহে চম্বি অধর লুলাট শিবিবে চলিলা ক্রত চঞ্চল-গতিতে। নীরবে চাহিয়া পথ থাকি কতক্ষণ किंगा मानव-कन्ना ठाक हेन्द्राना--"হায়, স্থি, সংগ্রামে মাদকতা হেন, শিখিব সংগ্রাম আমি ফিরিলে প্রাত্তাশ।" হায় ইন্বালা, তুমি কি জানিবে বল, জীবের হৃদয়ার্ণবে কি অন্তত খেলা ? মৃর্ত্তিমতা সরলতা তুমি জীবকুলে, দানব কুলের চাক কোমল নলিনী। আকুল সরলা বালা ব্যথিত চঞ্চল. থাকিতে নাবিলা স্থির স্থিত্ব নিলাতলে. মিথ কুমুমের দাম অন্তরে নিক্ষেপি তঞ্চছায়া ত্যজি গৃহে করিলা প্রবেশ। পতিগত-প্রাণা সতী ভাবিলা তথন করিবে শিবের পূজা-পতির মঙ্গল কামনা করিয়ে চিত্তে, লভি সিদ্ধ বর নিবারিবে চিত্তবেগ শাস্তির সলিলে। আজা দিলা স্থীগণে, পুজা-অয়োজন করিতে বিধানমত, পবিত্র আগারে . পরিলা স্থপট্টবাস , স্নানে শুচি-তত্ত, প্রবেশিশা পূজাগাবে সাধী শুদ্ধতি, স্থবিন্ত, চন্দন, পুপ্ৰমান্য, সুবসন অপি শিবমৃত্তিপরে ত্তির ভক্তি সং ধ্যানে শিবমূর্ত্তি ভাবি জপি শিবনাম. বর মার্গিবাব আশে উঠিলা সুন্দরী . উঠিলা সবিস্থঞ্জল ঢালিতে মস্তকে . ধবিলামঙ্গল-ঘট ভক্তির উল্লাসে. হায় বে. বিমুখ যাবে বিধাতা যখন. কোন সে কামনা সিদ্ধ নাহি হয় তার. महमा कॅांशिन रुख मानववानात, কাঞ্জন মঙ্গল-ঘট পড়িল খনিয়া মহাদেবমূর্ত্তিপরে খণ্ড খণ্ড হয়ে. বিশ্বপত্র, জল, পুষ্প ছুটিল চৌদিকে। অধীর হইলা দেখি ইন্বালা সতী. पत्र पत्र इनव्रत्न अतिन मिनन , শিহরিল শীর্ণ ডত্ন ; 'হে শস্তু' বলিয়া ভূতলে পড়িলা বামা স্বামি-মুখ স্মরি।

স্থীগণে মেলি সবে করি কোলাকুলি প्रमा-श्र वाहित्व नहेना हेन्त्वाना : রতি আসি নানামতে ব্যাইলা তার, সাম্বনা করিয়া কিছ করিলা স্তম্বির। চেতনা পাইয়া খন ফেলি দীর্ঘখাস কহে দৈত্যরাজ্বধু দারুণ আক্ষেপে-"হে শহর উমাপতি, দাসীর কপালে এই কি আছিল শেষে ? বৃতি লো, আমার প্রি-আবাধনা-ভাব এত কি মহেশে ? ि पारव (पायो ला पानी अमर्थभ-कारक ? পাব নাকি বৃতি আমাব জনহেশে মম ? স্থানি না সে পাদণদা বিনা আিভবনে।" কহিলা মদনপত্নী "হে দানববধু, ভাবিতে কি আছে কভূ এ অশুভ কথা গ বদনে এনো না, সতি, ইথে অকুশল-প্রিয়জন-অকুশল অন্তভ চিন্তার, নাহি কি ভাবিতে অক্স ? হাদয় বেদনা জড়াতে নাহি কি উপার, সরলে গ সমত:খী প্রাণীর যাত্না স্কলি ভলিলে কি. চাকমতি ভলিলে শচীরে ? অমরায় ফিরে মবে আইলা তব প্রিয় নৈমিষ অরণ্য হ'তে শচীরে বারিয়া, হে ইন্দু-বদনা, তুমি কাঁদিলা কতই শচী-ছঃথে কত ছঃখ করিলা তথন। সে প্লোমকরা এবে নিভত মন্দিরে নিরানল দিবানিশি। ভুলি তঃখ তার, বুঁথা ভয়ে হেন ভাবে ভাবিছ আপনি ? আপন ১৮য়-ব্যথা এতই কি. সতি ?" तु ७-वाटका हेन्द्रवाना मनञ्ज्यसमा শ্বরি মনে পতি, শ্বরি শচীক্থা, অধোমুখে ভাৰিতে লাগিলা অঞ্মুখ। হিম-বিলুসিক্ত যেন শশাস্ক মলিন।

অফাদশ সর্গ

কুল কুল ধ্বনি, চলে মন্দাকিনী, দেবকুল-প্রির, পবিঅ ভটিনী; লভারে লুটিছে পুর-মনোহর মন্দার চুক্তে—ছুক্ল স্থলর সুরুভি বিষল ফুল-শোভার। বে ফুলের দলে পুরবালাগণে হেলাইত তমু বিহ্বলিত মনে, না হেলিত ফুল প্রব-তমু ধরি ধেলিত যংন অমর অমরী

শীতপুশ্বেণু মাধিয়া গায় বধন কমরা ছিল অমরের, মুরধামে দক্ত না ছিল দৈতোর; মুরবালা-কঠে সদীত ঝরিত, যে বীত শুনিয়া কিয়বী মোহিত.

কলপ অনক যে গাঁত গুনে বধন পোলোমী আৰওগুল-বামে বসিত আনন্দে তিরানন্দামে, দেবগুষিগণ আনি পুণ্ডরীক অমত-হদের—বাকা অমায়িক

দিত শচী-করে গরিমা-গুণে সেই মন্দাকিনী-তীবে গ্রিমাণা, মন্দির-অলিন্দে, শচী গুলোচনা। কাত্তে গুহাসিনী চপলা স্থন্দরী, রতি চাক্লবেশ, বসি শোভা করি—

বেরেছে মাধুর্ব্যে অমরা-রাণী প্রভাতের শশী চাক ইন্রালা শচী-পদভলে, বিদি কুত্হলা হেরিছে শচীর বিষশ বদন, শুনিছে কৌতকে—বালিকা বেমদ—

ইন্দ্রাণীর মৃত্ মধুর বাণী কহিছে পোলোমী কোথা এললোক, দেখিতে কিরূপ, কিরূপ আলোক প্রকাশে সেধানে; কিরূপ উচ্ছান কনক-নির্মিত এক্ষার কমন,

সতত চঞ্চল কারণ-জ?
কিবা আদত্ত সে বেপু-সমূত্র;
বীচিমালা ভার কি বিপুল, কুড়;
কত অপরূপ ফ্লনের গীলা
প্রকাশ ভাহাতে; কিরুপ চঞ্চলা

পরমাগুমনী মহী সে জা
কোধা বিজ্লোক বৈক্ঠ-ত্বন;
তকড-বংসদ কিবা জনাদিন;
কিবা দে লন্ধীর অক্ষর ভাঙার,
কতই অনন্ধ দান কম্লার;

কিবা প্রীপতির পালন-প্র

দেখিতে কিন্ধপ শ্ৰীবংসলাঞ্চন;
কি শোভা কৌন্ধতে— কেশব-ভূবৰ,
কমনা-লাবণ্যে কি চাক-মাধুনী,
কীবোদ মধুর যে মাধুযোঁ পুরি;

কিবা স্থামন্ব বনার কথা।।
কৈবাস-ভ্বন কিরপ তৈরব ,
ভৈবব কিরপ জটাধারী ভব ,
কিরপে ঝিশ্লী করেন প্রলন্ন—
কিলোক-এলাও যবে বেণ্মন্ন —

প্রদান-বিধাণ কিবা সে বোর। কিবা দরাময়ী শকর-গৃহিণী, ভবে শুভকরী ত্রীভিহারিণী, কি দেব, দানব, বক্, রক্ষ, নর, নীবহুংবে উমা কডই কাতর,

ভক্তজন-মেতে সদাই ভোর ॥
আগে সে কিকপে বাদবে তৃষিতে
বিধি, হবি, হব, অমরপুরীতে
আদিকেন সুথে—আদিতেন উমা
বাগ-মাতা বাগি, পলাদনা রমা

ইক্সখ-উৎসব যে দিন খরে। গোইতে ইন্দুৰালা-মনোব্যথা, চনাইল। শচী সে অপুর্ব্ব কথা, ধ্যক্ষ তিদিব মাতিত ঘথন, ধি পঞ্চাল নিজে পঞ্চানন

গান্ধিতেন যোগী গঞীর-মরে॥
।পপতি জানী সে গীত ভনিরা,
হাডি যোগধ্যান ভাবেতে ভ্বিয়া
ন্পাতেন ম্বর সে ম্বর সহিত ,
দ্বনা উত্তলা, বিধি রোমাঞ্চিত,

আনদেশ অধীরা ভবেশ-কায়া। গি গৃচ তন্ত্র হরি-গান ভূলি, গিডি তুহ যন্ত্র উদ্ধে বাকু তৃলি, গিডালে ঘন ঘাতি করতল, গিডিত নারদ—হর্ষে বিহ্নল

আনন্দ-সলিলে ভিজামে কারা ॥

ানাইলা শতী দছজগালার —

ইদিনে আসিয়া থাকিত কোথায়

থা জীবনে সফল সাধন

াবু, পুণাশীল প্রাণী যত জন—

দ্মাত্মস্থ-ভোগ কিবা সেধার।

কহিশা ইন্দ্রাণী শ্রন বে সরলে, এই স্বর্গধানে আছে কত হুলে, স্বপবিত্র ক্ষয়ি আত্মা মোহকর কত নিক্পম মাধুবী মুক্তর,

দিতি স্তগণ না জানে বার ॥"
তান ইপুন্থী ইপুনলো বলে
"হে অমব-রাণি, আমি সে সকণে
তানাইলে যাহা মধুমাথা স্বরে,
পাব কি দেবিতে १—তানিয়া অস্তরে

কত কৃত্হণ উথলে হায় !"
কাতর হৃদরে কহে ইন্দ্রপ্রিয়া,
চাক ইন্দ্রালা-চিবুক ব্রিয়া,
মুহল নিমানে নাসিকা কম্পিড,
মুহল মধুব অধর ক্রিড,

বাশ্পবিন্দু থীরে নরনে ধার;—
"রহিল এ থেদ শচীর অন্তবে,
অন্তগত জনে মনে আশা ক'বে,
না পাইল ফল তাহার নিকটে !
বল, ইন্দ্ৰালা, বল অকপটে

কি দিয়া এখন ত্ৰি ভোষায়॥"
কহিলা সরলা স্থীলা দান বী,
(বেন নিরমল সরলতা-ছবি)
"ইন্দ্রপ্রিয়ে, মম চিত্রে অভিলায -চিবদিন তব কাছে কবি বাদ,

বচৰে ভোমার প্রথেতে ভাসি।
চল, দ্বেবি, চল আমার আগব্যে,
আমি নিত্য তোমা গন্ধ মুপ্প লবে
করিব শুশ্বা; হ্বদ্যেব সুথে হেরিব শুতত, শুনিব ওু মুথে

বীণা-বিনোদন বচন-রাশি ।
কেন, ইন্দ্রপ্রিরে, এ কারা-মন্দিরে
ছু:খে কর বাদ, আমি মহিবাবে
করি অন্থনর, রাখিব তোমারে
আপন আলয়ে,—অশেব প্রকারে
কবিব ঘটন তোমার বাগি।

খামী গেলে বণে কাতর হানয়. তোমা কাছে পেলে তুর্দ্ধিগ্ধ হয় এ দগ্ধ অন্তর—চল, হুরেখনি, আমার আলালরে; হে প্রর-স্থলরি,

নিকটে ভোষার ইহাই মারি॥"

ভনি ইঞ্জাধা বাক্যেতে মৃহ্ণ, "হায় রে সরলে তুই দৈতাকুল করিলি উজ্জান" করিলা বিল্যে, নেহারি স্থনে, ব্যথিত হুণয়ে

তকণীর আর্দ্র নয়নধয়।

হেনকালে বতি চকিত চঞ্চল, (হরিণী বেমন কিরাঞ্চর দল হেরিলে নিকটে) বলে, "ইন্দ্রপ্রিদ্ধা, হের—দেধ— ফাই —চেডীদল নিদ্ধা

এজিলা আদিছে বাগিনী প্রায় , ইন্দ্রালা, হায়, লুকা কোন হানে, এগনি দানবী বধিবে পবাণে; না জানি ললাটে আমার (ই) কি ঘটে মহেল্র-বমণি, এ বোর সমটে

কি কবি, সত্ত্ব কহ উপাদ্দ," ইন্দ্ৰালা ভয়ে, কাত্ত্ব-বচনে, চাহি শচীমুখ কহে, "কি কাবণে লুকাইব আমি ? কেন, স্বেম্ববি, বাহিৰে আমায় দৈত্যেশ-স্বন্ধী ?

কোন্ দোষে আমি দোবী গো তাঁষ ?"
উত্তর করিল। ফরেশ-বমণী,
(তানপ্রাতাবে যেন তারধানি)
"মীনকেতু-ভাষা, কি হেড় এ ভয়,
ইক্রপ্রিয়া শচী অমনী কি নয় "

নারিবে রক্ষিতে আখ্রিতে তার গ্ বাও, লো চপলে, যেখানে অনল, রগজ্ঞী সূর—কহিও সকল, কৈও তাঁরে মম আদিস্বচন, স্বার হেথা করি আগমন

করন দহল-বালা উদার॥
থাক, অইথানে থাক ইন্বালা,
কি ভয় ভোনার ? কপটার ছলা
শিব না কথন, মেথ না হলমে
পাপ-পঞ্চ হেন কোন (ও) প্রাণী ভয়ে,
কপট-আন্টাবের অনস্ত জালা;
সংগ্রু কাম্যুল প্রাণ্ড গ্রু বি

বাও কামবধু, প্রাণে যদি ভর, লুকাইর। থাক , শঙী রভি নর দানবী-একারে নহে সে অভির, জ্লাছে নে সাহস্ এথন (৩) শচীর, পারিরে মন্দিতে ও চালবারা। । সুকাইল রভি। হেরে ইন্দ্রজারা, হেরে ইন্দ্রালা. (বেন প্রাণি-ছারা) আদিছে সাঞ্জিয়া চেডীরা করাল, কিরণে অনিছে প্রহরণ জাল,

ভাসু মাথি বেন তর্ধ-থব চলেছে কালিকা ঘন-নিত্থিনী মূহ-গলগতি—যেন কাদধিনী বিজ্ঞাী পরিয়া করিছে নর্তন-জলিছে করচ ভীম-দরশন,

হাতে প্রভাষিত শাণিত শব চলেছে ত্রিজটা বিশংল-লোচনা, সিন্দ্রের ফোঁটা ভালে বিভীষণা, ভীম ভন্ন হাতে—মদ-মত্ত করী ধার বেন রক্ষে শুও উচ্চে ধরি —

ছুলিছে নিবেণী চলিছে বাম প্রচণ্ডা কপালী চলে খজা তুলি, পূচ্চদেশে কেশ পভিয়াছে খুলি , চামুণ্ডা-করেতে অসি ধরশাণ, ধামণী-পূঠেতে নিবঙ্গেতে বাগ,----

চলে মহা দত্তে শতেক বাম চেডীদল সংক চলেছে রে রঙ্গে ঐক্রিলা অন্দরী, লাবণ্য তরঙ্গে অবর্ত্ত জিলি, ঝরে যেন অদে বিহ্যুত-লহবী—নমন অপাধে

থেলে কাৰ্কুট গ্ৰল-শিবা
নিকটে আসিয়া চিন্ত চমকিত.
নেহারে ঐত্রিলা হইয়া গুন্তিত,
অমরার রাণী ইত্রাণ্ডি-বদন ,
চাক দীন্তিময় অতুল কিরণ
স্বচিত্রে ধেমন অপনে বি

কোথা রে ঐন্দিলে তোর বেশভ্যা? অভূষিত তছ জিনি চাক উরা ভাতিছে আগনি, প্রকাশিয়া বিভা তছু-শোভাকর, মনের প্রতিভা

উছ্লি হৃদয় জ্ঞালিছে শু
হার রে মলিন শশাক বেমন
হেরি দিনমণি, দানবী তথন
মালিন তেমনি শচীর উদয়ে,
ক্লিধা-বিষ্দাহ জ্ঞালিল হৃদয়ে

भागीरत स्महाति स्थीन है

ক্ষণে ধৈৰ্য্য পেলে, চাহি ইন্দ্ৰালা, চালি নেত্ৰকোণে অনলের জালা কহিলা—"দানবক্ল-কলকিনি, বধ্-বেশে তুই কালভুজিলিনী,

বদিলি রিপুর চরণ-তলে ? আমার কিল্পী,—তাব পদতলে স্থান নিলি তুই ? অস্তর-মণ্ডলে অস্ত্রাব্য করিলি ঐক্তিলার নাম, প্বাইলি হার, শ্চী-মন্ত্রাম ?

কি কব হৃদয়ে গরল জলে॥ এখনি মৃছায়ে এ কলঙ্কমদী, ভিজাতাম তোর শোণিতে এ অসি, কি বলিব হায় পুশু-অফ্লবোধ না দিলা লইতে সেই প্রতিশোধ

চেডী-হলে তোর বধিব প্রাণ।" পরে ব্যঙ্গ-স্বরে বলিলা —"ইন্দ্রাণি, জানিতাম তুমি অমরার রাণী, বালিকা ছলিতে শিবিলা সে কবে ? ইন্দ্রদাল শিকা স্বর্গে আছে তবে ?

হায়, এ জাদিব অপূর্ব স্থান " বলি, জোধে ভীমা তুলিলা 6রণ শাচী বক্ষ:স্থল করে নিরীক্ষণ, বন্ধন ছিডিয়া ছুটিল ক্সুল; ধেন কণা তুলি দোলে ফণিদল

সুন্দরী-রম্মণী ক্রোধ কি কটু!
চেডীদলে আজা করিলা নিদরা,
বান্ধি আনি দিতে কন্দ্রপীড়-জারা,
বান্ধিতে শৃত্থলে ইন্দ্রের অসনা.—
ছুটিল কিঙ্করী করালবদনা

ভীমাঞ্চা পালিতে সতত পটু॥ হেনকালে রণবেশে বৈধানর, চপলার সনে আসিয়া সত্তর বন্দিলা শচীরে, জয়ত কুমায়, করতলে অসি ধরি থরধার,

নমিলা আদিয়া জননী-পদে।
পুত্রে কোলে করি শঙী সুলোচনা,
বহিত্রে তৃষিলা, পীযুষ-তুলনা
বচনে মধুর; চাহি ইন্দ্বালা
অন্তে কহিলা—"সম্বর এ বালা
লারে কোন্ স্থানে রাথ বিশ্লে;

বধিতে উহারে দানব-মহিলা দেখ দাঁড়াইয়া,"--বলি সুধাইলা চাহি পুত্তমুথ, কুশল সংবাদ, কোলে পেয়ে পুন: অগীম আহলাদ

যতনে নগনে হৃদয়ে ধরে। ইন্দ্রকায়া-বাক্যে হয়ে অগ্রসব ইন্দুবালা-পার্গে উগ্র বৈধানব চলিলা তথনি , সতৃষ্ণ-নয়নে হেরে দৈত্যবধু শচীর বদনে,

কপোল বাহিমা সলিল খবে॥
দেখি ইন্দুবালা-বদন-মূক্ল হাব রে যেমন নিদাবের ফ্ল
নব তকশিরে কিরণ তাপিত —
পুবন্দর-জায়া শচী ব্যাক্সিত,

ফ্রদয়ের বেগ পরিতে নারে॥
ভাবিতে লাগিলা বুঝি স্মাকিঞ্ন,
"কিন্ধপে একাকী করিবে পমন
চাক ইন্দ্রালা ? এ চাকলতায়
স্থেহনীরদানে কে পালিবে, হায়।

কে ভূচাবে তথ্য জ্লয় তাব পূঁ অম্বি নিকপমা স্বেশ-রমণা, নিখিল অ্লাও-মানসের মণি, তব চিত্তে বিনা হেন মধুৰতা কার চিতে শোভে, এ ফেং-মমতা

বিপদ্ধধ্রে কে করে আব ?
জয়স্ত শচীবে করি অহনর
বুঝাইলা কত—ভ্যাঞ্জি সে আলয়
জ্ভাতে সন্তথ হৃদয়েব ভাগ;
কহিলা "হা মাতঃ, এ দাসের পাপ

ঘূচাও আদেশ করিয়া দাসে, নারিছ বক্ষিতে নৈমিবে তোমার, সে মনোবেদনা, জননি গো যার এ কাবাবন্ধন ঘূচালে তোমাব; আজা কর মাতঃ, দহজ-বামার

দুর্প চুৰ করি বাবিয়া পালে।" দহজ-রাজেন্দ্র-বনিতা ঐব্রিলা, বথা বিক্ষারিত ধহুকের ছিলা ছিলা এভঙ্গণ; সহসা তথন সাপাট ধরিয়া তুলিলা জীবণ

होम्याब मीथ थन कुलारन।

' মন: শিলাতলে শচী-তন্ত্-ভাতি প্রভাষিত যেখা চরণে আঘাতি সঘনে তাহার, দাঁভাইল বামা --নিশুস্ক-সমরে ষেন দক্তে শুামা

দাডার নিনাদি বিকট খনে । বেরি জোধে বহি জলিতে লাগিলা, অবক টফারে কোদণ্ডের ছিলা, লজ্জিত আবার ভাবে তুই জনে বামা-অঙ্গে পর হানিবে কেমনে,

কিরপে দমন করে ভীমার।
আসি হেনকালে দাঁডার সমূথে
বীরভদ্র বীর বোমশন্ত মূথে,
হাতে মহাশূল, শিরে বহি জলে,
শিব-আজা ভনারে জরত-অনলে.

সন্ধরে দোঁগারে করে বিদার॥ সংক করি গরে ইন্দ্রমণীরে বিবদ্ত চলে; চলে বীরে ধীরে শচী অলোচনা, জননীর অহেহ জড়াইরা বাছ ইন্দ্রালা-দেহে,

কনক-ভূগর স্থমেক বেখা। হাসিল ত্রিদিব শচীপদতলে ত্রিদিব-কুসুম দলে দলে দলে সূটিতে লাগিল ফুটিয়া বেন মনে সাধ সে পদ ধরিয়া

চি এদিন তাবে রাখিবে দেগা॥ বীরভাত বীর কহে ঘোর বাণী চাহি ঐত্রিলারে 'ভন রে দৈত্যানি, রবে ইক্সপ্রিয়া স্থনেঞ্শিধরে যত দিন রুজ সমরে না মবে—

অমুরনিধন নিকট অভি ।"
মহোরগ যথা মহামত্রে বশ
ভানি শিবদুত-নির্ঘোব কর্কশ
ভেমতি ঐক্রিপা—মহিলা গুম্ভিত,
কে যেন চরণযুগলে জড়িত,
ক্রিয়া শৃদ্ধুৰ্গ দিবারে গতি॥

উনবিংশ সর্গ

গভীর ধরণীগর্ভ, পুচ ত্রমোময় নিৰ্জ্জন ছৰ্গম স্থান বিশাল বিস্তৃত, বিশ্বকর্মা-শিল্পাল: ভীম শন্দ তায় উঠিছে নিয়ত কত বিদারি প্রবণ. প্রকাণ্ড মুদ্রার-ধ্বনি কোটি কোটি বেন. পভিছে আবাতি गुन्ती ; निनानि विकरे-সহস্র বাস্থকি-গর্জ ভয়ত্বর যথা দ্ম ধাত-স্রোত বেগে ছটিছে সলিলে। ধ্ম-বাষ্প-পরিপর্ব গভীর সে দেশ সপ্তবীপ-শিল্পালা একত্তিত যেন হইলা গহনরে আসি: গাচতর ধম ভস্মরাশি: বাষ্পর।শি-দগ্ম বাযক্ষর উঠিছে নিখাস রোধি তীত্র ভ্রাণসহ, প্রবেশিলা পুরন্দর দে কেন্দ্র গহররে ৰইবাদ্ধীচি-মন্তি। উচ্চ-জন্তপরে দেখিলা জলিছে উদ্ধে জিনি স্থা-আভা. ভড়িৎ পিড়ের শিনা, নীপের আকাবে डेकिन जमगरम् । दम्यिना चारनारक-ভীমবলী আৰওল ধাতন্তবমালা পাংশুল, পাটল, শুলু, রুঞ্চ, রুজ্ক, পীত, বক্রগান্ত সর্পাকৃতি চৌদিকে ভেদিছে মহী-দেহ, নানাবর্বে রঞ্জিত তেমতি ৰথা ঘনতার নানা আভাষয় পশ্চিম গগনপ্রাত্তে ভাতরশ্মি ধরি।

কোনধানে ধূমবৰ্ণ লোহ-ধাতুৱালি
পলিছে পৃথিবী-গংজ-শত শত খন
মহাকার অজগর পুজে পুজ বাধি
ছুটিছে মহা জঠরে, কোনধানে শোডে
শুভ ধড়ীকের গুর তাড়িত-আলোকে
আভামর; রক্তবর্ণ তামের গুবক
কোনধানে—ক্ষরিগাক্ত তরক-আকৃতি
রক্ত-পূবর্ণরাজি অঞ্চ ধাতুসহ
নির্থিলা আখণ্ডল দে মহা জঠরে,
শোভাকর—শোভাকর বথা অক্ষরের
বিশ্বলী উজ্জন আভা কাদ্যিনী-কোলে!
অলছে ভূমি অকারগ্যর কত দিকে,
কোখাণ্ড বা শিধামর, কোধা শুমি শুমি.

ছড়ায়ে বিকট জ্যোতিঃ বথা ধ্যধ্যক্ষ
গৃহদাহে, কভু দীপ্ত কভু গুপ্ত ভাব!
পীতবৰ্ণ হরিডাল-স্তুপ কোন স্থানে
ধবে শিধা নীলবৰ্ণ—দীপ্তি-থবতর;
কোথাও পারদ-রাশি হুদের আকারে।
কোথা শ্রোতে তর্কিত ছুটিছে ধ্রার।

অগ্রসরি কিছু দরে দেখিলা বাসব অগ্নি-প্ৰজালন যন্ত্ৰ যেন বা আংগ্ৰেয় শৈলভোণী সান্ধি সারি বদন প্রসারি উগারে অনলরাশি ধাতুরাশি সহ! মিশেছে দে সব ষয়ে বায়-প্রবাহক বিশাল লোহের নল শতদিক হ'তে---জরায় সহিত যথা গর্ভিনী-জঠরে গর্ভস্থ শিশুর নাড়ী মিলিত কৌশলে। নলরা জি-অন্তম্থে প্রকাণ্ড ভীষণ উঠিছে পড়িছে শ্লাতা, ধাতু বিনিৰ্গত, ভয়ক্ষর শব্দ করি--ছটিছে প্রন কভ ধীরগতি, কভু ঘোরতর বেগে। যন্ত্রমণ্ডলীর মাঝে বিপুল শরীর. প্রসারিত বক্ষোদেশ, বাহু লৌহবৎ (मविनिज्ञी घुत्राहेरह ठक त्नोहमन्न), ঘর্মাক্ত ললাট-ঘর্ম মতি বাম-করে। ঘুরিতেছে একবার শিল্পাল যুডি. সংযোজিত পরস্পরে অন্তত কৌশলে. निक निक (नोड्यन्न (म চক्किन मह. শুৰ্মী ঘাতি পড়ে কোট ভীষণ মুদগর, ছুটিছে শুৰ্মীব পূঠে শত শত স্ৰোতে বাহির হইছে নিতা কত গুপ্তরাঞ্চি ফটিক লাঞ্চনা আড়া---পোডে চারিদিকে. কথন বা বিশ্বকৃৎ লৌহচক্র ছাডি শর্মনা ধরিয়া হল্মে প্রচণ্ড আঘাতে ভেদিছে ভধর-অন্ধ, তথনি সে ঘাতে শত ধানি-প্রতিধানি ছাড়িতে ছাড়িতে বিদীর্ণ গিরির অবে তরক ছটিছে भिन्नभारम, वातिकृष्ठ भूर्व कति नौरत i কথন বা সুরশিল্পী খুলিছেন গীরে ধরা অতে আগ্রের পর্বত আচ্চাদন. শিল্পাল-বহ্নি-ধুম বালা নিবারিত,---গৰ্জিয়া গভীর মন্ত্রে তথনি ভূধর উগারিছে অগ্নিরাশি পাংও ধাতু-ক্লেদ

কাঁপিতে কাঁপিতে ঘন , শৃত্য ভয়ত্কর পরিপূর্ণ ধুমান্রিত বহিব শিখার, শিলাপূর্ণাতৃস্রাব ভন্ম-ববিষ্ণে ভত্মীভত কত দেশ অবনীপঠেতে. শত শত নগৰী নিমগ্ৰ বেণ্ডাৰে গঠে শিল্পী কত দেতু কত অট্টালিকা. প্রাচীর, দেউল, ছর্গপ্রকবণ কত, সুতিৰদ সস্তু, বৰ্ম দেখিতে আভত। নির্থি চলিলা ইন্দ্র, সত্তব আসিয়া দাঁডাইলা শিল্লি-পাশে। বিশ্বকৃষ্। হেবি দেবেক্স বাসবে হেথা কান্ত দিলা প্রমে। মৃছি ঘৰ্ম আদি কাছে হইয়া প্ৰণত কহে সুবশিল্লিবাজ, "কি ভাগ্য আমাৰ, আমার এ ধ্যশালে দেবেন্দ্র আপনি ? *সফল আয়াস মম এত দিনে দেব !* এতেক কহিয়া শচীনাথে আগে আগে দেখায়ে চলিলা পথ, খুলিয়া অপূর্ক অক্টের অদৃশ্য ধাব রত্ন-গিরিদেহে, প্রবৈশিলা ইন্দ্রসহ সরম্য আলয়ে।

রজতনির্মিত গৃহ কাককার্য্য চাক. গলিত কাঞ্চন, লৌহ, তাম আদি ধাত, মহর্ত্ত-ভিতরে তার শলাকা বহৎ, সুশা সুশাত্ৰ তার ধাতৃ-পত্র নানা গঠিত আপনা হ'তে গঠিত নিমেষে কন্ড মৃত্তি –স্থবলনি গঠন স্থল্য। শ্বেত ক্লফ শিলাখণ্ডে কত স্থানে দেখা বিচিত্র স্থব্দর মৃত্তী চাক অবয়ব. थाठीत-भटन-घटन निवा वाजावतन. খচিত কাঞ্চন, মণি, হীরক, প্রবাল, চাবি ধারে শুস্তবাজি: চাক শোভাময়. ठाक पर्छ ठाविकिट**क समात अलि**न কমনীয় বামাতত্ব পুরুষ স্থঠাম. নিকপম-ছেম-মণি-রজ্জনিশ্বিত চলিতেছে, বসিতেছে, নর্ত্তন-বাদনে রত সদা: সচেতন বেন বা সকলি। কত রক্তে কত দিকে বাজিছে বাজনা ল লিত মধুব স্বরে। কত অঙুত রহক্ত বিশার্থর দে হর্মা-ভিতরে : কে বর্ণিতে পারে, হার, দেব-বিল্লখেলা। মঙিত হীকথণ্ড স্থবৰ্ণ-আসনে

বসাইলা আথগুলে—পার্বে দীড়াইলা শিল্পগুল, স্থধাইলা কি হেতৃ দেবেন্দ্র সে গহারে ৷ কি মহৎ কার্য্য হেন তাঁব স্থবেন্দ্র আপনি বাহা আদেন সাধিতে, উদ্দেশে স্থবিলে আজা সুসিদ্ধ বাহার !

"হে বিশাই, দেবশিল্লি, শিল্পি-কলেখর স্থনিপুণ।" কহিলা স্থারেশ স্বর্গপতি.--"কোথা ধর্ম > কোথা বদি স্মবিব ভোমায় ? ৰত্ৰাসৰ পাপমতি এখনও ধ্বংসিছে স্থবপরী। উদ্ধাবিতে তাম শিবাদেশে এ ধরণী-গর্ভে গতি মম: নামবিবে দুরুজ্জ-ইশার অবস্থারে, বজুবাণ হে কৌশলি, কবছ নির্মাণ থবা করি . এই অন্তি মহৰ্ষি দধীচি দিলা ৰাহা দেবেব মন্দলে তমু ত্যজি আপনার। লছ বিশ্বরুৎ, অস্তু গঠ অচিরাৎ, কহিলা পিনাকী ইথে যে অন্ত গঠিবে, সংহাবাতিশ্লতল্য তেজ সে আর্ধে. প্রলয়-বিষাণ-শব্দে ভ্রমারিবে সদা: ত্রিদিবে না ববে আর দানব-উৎপাত. বজ নামে সেই অস হবে অভিহিত।"

শুনি ছঃথে দেবশিল্পী কহিল।—"স্থারেশ, ত্রিদিব উদ্ধার নহে আজও। ছের দেখ সাজাইতে সে স্বর্ণমন্ত্রী অমরায় করিয়া কতই যত্ত কতই গঠিত স্ত্রণ। এখনও দক্ত দগ্ধ করে সে নগরী? এত আনে বিফল আমার? পালিব আদেশ তব, মুরকলপতি, ক্ষম কর ক্ষণকাল।" বলিয়া প্রাচীরে বসাইলা অতি কুদ্ৰ বন্ধত-কুঞ্চিকা, ष्यमनि युष्ट्य-च हे भूर्व हिमझल, স্বৰ্-থালে সুরস অমর্থান্ত আহা। কে পারে বর্ণিতে কোথা আম স্থাদল ক্ষিতিতলে ! রাখিলা বাস্ব-সন্নিধানে : কহিলা বিশাই-"তব অভ্যর্থনা, দেব, কি আতিথ্য সম্ভবে আমায় ? দীন আমি, ভোগৰতী-বারি এই-স্বাহ স্থশীতল।" সম্প্রীত আতিথ্যে স্বরীশ্বর শচীনাথ कहिलान.-- "एक भिरत्नेचेत्र विश्वकृत्, সঞ্চল করেছি আমি না ছুইব কিছু

পেয় ভোজা ত্রিস্বগতে, ত্রিদিব উদার না হইলে.--নহিলে এখনি স্থাথে আমি পুরাভাম অভিলাষ তব : পুর্ণপ্রীতি আতিৰো তোমার।" শুনি আথওল-এত অস্থি লয়ে কর্মশালে ফিরিলা সত্ত্র শিল্লিরাজ, পরন্দর ফিরিলা পশ্চাতে। দিলা ঘুরাইয়া চক্র,—স্বান স্বান ডাকি পভিতে লাগিল জাতা, প্রবেশিল বাযু অগ্নি-প্রজ্ঞালন-যন্ত্রে থব তর তেজে যন্ত্রগর্ভ শিথাময়, মুহুর্ত্ত-ভিতরে অষ্ট জালায়ন্তে অষ্ট কটাহ বৃহৎ বসাইলা স্থরশিল্পী ভাম ভূজবলে; দিলা অষ্টধাতু তাম লৌহাদি কাঞ্চন; দাঁডাইলা শৃশ্মী-পাশে দাপটি মুলার। ছুটিল ধাতুর স্রোভ কটাহ হইতে অষ্টধারে একেবারে--নুগ্র ভয়ন্তর, খন খন মুকারের প্রচণ্ড আঘাত পড়িতে লাগিল তায় বধিরি শ্রবণ। এইরূপে ধাতৃস্রাব একত্র মিশায়ে, করি ভীম পিণ্ডাকৃতি শিল্লিকলরাজ নিকাশিল মহাধাত অন্তত প্রকৃতি গলিত না হয় তাহা অত্যক্ষ অনলে সে ধাতু. দধীচি-অস্থি এক পাত্রে রাখি উত্তাপিলা বিশ্বকর্মা তরন্ত উত্তাপে ধরি ভডিত্তাপ যন্ত্র, ছই কেন্দ্র ছাডি ছটিল বিদ্যাৎস্রোত বিপুল ভরকে মহাতেকে তেকোমর করি সে গহার। কাঁপিতে লাগিল ধরা ঘন ভ্রুপনে, মাটীতে ছুটিল চেউ, উন্নত ভূধর ডুবিয়া হ**ইল** হ্রদ ধরণী-অক্ষেতে,---সে ঘোর উত্তাপে ধাতু গলিল নিমিষে। অষ্টধাত-পিওসহ সে পিও মিশায়ে মহাশিল্লী আরম্ভিলা বজ্লের গঠন. প্রকাশি কৌশলে যত নিপুণতা তাঁর। স্থাৰিশাল দণ্ডাক্তি গঠিলা প্ৰথমে. পরে মধ্যগত স্থলকোণে বাঁকাইয়া পিটিয়া গঠিলা ফলা অপুর্ব্ব-মূরতি, ছুই মুথ দিবিধ আকৃতি বিভাষণ পশাইলা অস্ত্ৰ-অকে ভীম মন্ত্ৰযোগে প্রদীপ্ত প্রচণ্ড তেজ:. বিদ্যাৎ-অন্স

জলিতে লাগিল পঠে কলা ভল্বরে। গঠিলা হরিচন্দন-ত্বকে করতার নহে দগ্ধ যে পাদপ তড়িৎ-উত্তাপে: অগ্রিকোর গ**ঠিলা ভাহাতে মনোহর**। বিবিধ বিচিত্র চিত্র দিব্য শোভাকর धवरयार्ग स्वतिनही महर्व जलादा. খাকিলা অত্যের দেহে, মৃর্ত্তি নানাবিধ (চন্দ্র, তুর্যা, গ্রাহ, সাগর, সুমেরু) অনল-রেখার দীপ্তি-জ্ঞালিতে লাগিল। গ্রাকিলা অমরোৎসব এক ফলাদেতে. পারিজাত-মালা পরি অমর-অজনা রত নৃত্য গীত-বাত্মে, দেবতামগুলী দেখিছে সহর্ষচিত দাভারে অন্তরে। থাকিলা অন্ত ফলকে, কডাস্ত-নগরী; ভীষণ নরককুণ্ড, পার্যে যমদৃত ণত হাতে দাড়াইরা ভীম আঘাতিছে নারকী আংগীর মুডে, আঁকিলা কোথাও ুঙীপাক ঘোৰ হ্ৰদ , কোথাও ভীষণ উচ্ছাদ, নরকরুতে প্রাণি-কলরব . বহিছে ক্ষির-প্রদে তর্গ কোথাও কোথাও শীতোক কণ্ডে কাপিছে পাতকী।

मश्च मिना-निर्माणां न गांनि ज अत्रत्न मश्च मिना-निर्माणां न गांनि ज अत्रत्न निर्माणां न गांनि ज अत्रत्न निर्माणां न गांनि ज अत्रत्न न जिल्ला न जिल

হেনকালে অকন্মাৎ তিন দিক্হ'তে

দীপ্ত করি শিল্পদালা তিন মহাতেজঃ
লোহিত ভামল খেতবরণ স্থল্পর,
জনিতে জলিতে অপ্ত-আলে প্রবেশিলা।
প্রামিলা পুরন্মর তিন তেজঃ হেরি

শিরি বিধি, বিষ্ণু, হরে, তথনি গভীর
গর্মিলা ভীমনালে দভোলি ভীরণ।
দেবশিলী দক্ষার তে প্রথন তেফে

না পারি ধরিতে অস্ত্র এবে গুরুভার
ছাদি দিলা অক্স্মাৎ, ঘন ঘন ঘন
কাঁপিল ধরণী-কেন্দ্র প্রচণ্ড আঘাতে।
মহানন্দে শচীনাথ নির্মাণ দেগুলি
ত্লিলা দক্ষিণ হল্পে করিলা উভ্যম
পরথিতে অস্ত্রবের, বিশ্বকর্ষা ভরে
কর্মনাড়ে পুরন্দরে নিবারি কহিলা;—
"না নিক্ষেপ অস্ত্র দেব এ মর-আলরে,
এখনি উৎসন্ন হবে এ বিশাল পুরী,
বহু পরিপ্রানে, প্রাভু, করেছি সঞ্চয়
এ সকল, হবে ভস্ম বাজ্রর নিক্ষেপে।

নিরস্ত বিশাই-বাক্যে, দেবকুলপতি স্বরীশ্বর, আশিকীদ করিলা তাহারে আনন্দ অন্তরে শীভ্র ছাড়ি কেন্দ্র-গুহা বক্স করে শৃত্তপথে আরোহিলা পুন:।

বিংশ সূর্গ

বাজিল ছুলুজি রণ-নাদে,
অস্ত্র অমর উন্মত্ত সে নাদে,
ছাড়ে দিংহনাদ ছাড়ে হুত্তার,
চলে দৈতাদেনা-দল অনিবার,

ভরল বেমন তরল-কাছে। খনতার বথা গগনমগুলে বায়ুম্থে গর্জি মহাবেগে চলে, চলে দৈতাসেনা বোজন বিভার, তুই পক্ষে তুই বাহিনী প্রদার,

মধ্যে অকৌছিনী প্রধান বল। স্থাসজ্জ সমরদাকে বীরবর চলে কদ্রপীড় মহা ধহধ্বি, চলে ভীম ধহু সংনে টকারি; তুই পক্ষ-নেতা, তুই অমরারি—

কালভদ্ৰ-বীর স্থলনাস্থর। চলেছে বাহিনী ক্ষগ্রবর্তী দেন। অস্ত্রমূবে ঘন কানলের ফেনা, হতেছে নির্গত ঝলকে ঝলকে বহি তাল তাল পলকে প্লকে

इंटिक् निक्थि नक्व शाह ।

হেং দি দেবদশ ভাকি ছই দলে জয়ত অনল আদেশেতে চলে। ঘন ধলুর্ঘোষ ঘোব দিংহনাদ, দেবতকুদীপ্ত কিরণের বাঁধ

তিমির-তর্মে হেন ভেটছে।
অগ্নি অগ্নিমর চাপ ধ্বি করে,
দৈত্যসেনাপরে পরবৃষ্টি করে;
বহি-বৃষ্টি দেখিতে ভীষণ,
অন্ত-কামুকি বাণ বরিষণ

থেন বা করকা নেঘে ঝরিছে। ক্রমে অংগসর তুই মহাবল, মহাশকে যেন ধার জলদল, বয়ন বথন আপনি সার্থি, মহাসিদ্ধ-বারি শতচক্রে মথি,

শতচক্ৰ রথ চালান বেগে।

মিলিল ত্ৰপ, --তুই মহানদ মিলে ধেন রজে জুটিয়া উল্লদ, ফেন রাশি রাশি ভরঙ্গে তরজে ছুটে কোলাহলি তুই নদ-অজে

তু'নদ বিস্তার সমূহ জুড়ি। শিঞ্জির-নির্ঘোষ ঘদ ঘন ঘন, অংসে অক্ষাঘাত শক্ষ বিভীষণ .

সেনার গর্জন, তুরী শব্ধ-নাদ, ব্যচক্রধনি, অর্থ-হেধা-নাদ,

বিপুল তুম্ল সমর-স্বোতে। ধূলি-ধূমজালে গগন আছেল রথচকে অধ-কুরেতে উৎসন্ধ

অমরা নগরী, ঘোর অন্ধকার দৃষ্টি নাহি চলে দীপ্ত-অন্তধার

চমকে চমকে নয়ন খাঁথে।

ছোটে ক্রপীড-রথ ভর্কর, ভীমকুনুষ্ঠি ভীম ধ্বজে ধার— ছোটে জয়স্কের অরুণ ভাক্ন, ছোটে বহিবথ খোরদর্শন

অত্লিক ছড়ায়ে যোজন পথ।

কালভজ রুঞ্-ভ্রস-উপরে মহাগর্ক ক'রে ফিরিছে সমরে , ফুলন অস্থর ভীষণ করাল ; ধোর গদা হাতে জিনি তরু শাল,

ফিরিছে উন্মত্ত মাতধ্বং।

পড়ে দৈক্ত সংখ্যা অগণন, শক্তম্ভেরাশি আত্তাণে বেমন ক্ষকের অস্ত্ৰ-আথাতে লৃটিয়া পড়ে শক্তক্ষেত্রে ভূতল ছাইয়া

ধেলাইয়া চেউ ধরণী-অবেদ শালবনে কিংবা যথা পত্রকুল, উড়িয়া পবনে উত্তাপে আকুল, নিদাৰ-আরম্ভে পডে রাশি রাশি নীয়স, পিঙ্গল বর্ম প্রকাশি

যোজন-বিস্তার অবণা ঢাকি ।
পতে দেবদেনা থরে থরে থরে -পূজারাশি যেন রণস্থল'পরে
কিংবা বহিগর্ভ বাজি শৃক্তে উঠি
শৃক্তপথে যেন ভাদি পড়ে লুটি

ছডামে সহস্র কিরণকণা ,
ভীবন সমর-হতাশন জনে
আমরা-ভিতরে স্থলে স্থলে
বোঝে দলে দলে দেবতা অস্থেব ,
রণতেজে ঘন কাঁপে প্রস্থাব,

খোর আডম্বর, বীব-মারাব। সুমেক-শিবরে চপলা চাহিয়া দেধাইছে শচী অঙ্গি তুলিয়া "হের লো চপলে কিবা ভয়ত্তর র৭ অইধানে—কি ঘোর ঘর্ষর—

একাদশ কন্ত সুৰে ওথানে . তৈরব-বিক্রমে যুঝিছে দানব, মহাগর্কাধরি—মুখে ভীমরব— হানিছে চৌদিকে, পড়িছে অমর, কোনুবীর, রতি, অই বজাধর,

কোধিত বুষভ ছুটিছে যেন ?

मर्ख व्याप बार्ड किंद्र-धेवीह, मर्ख व्याप्त व्याप्त व्याप्त्र-नोह, छत् युर्ख धका धकानम मान मखरुषी स्थन खारण नगवान—

অমর-বাহিনী দে'থে পলার ।"
চাক ইন্দুবালা সরলা প্রনারী
স্থাবা— "ইঞ্জাণি বল গো কি করি,
এ বোর আঁখার-শব-ধ্রমর
শৃস্তপথে দৃষ্টি কিরপেতে হর,
কিন্তপে দেখিতে পাথ বা দুরে দু

আমি ত কিছুই নারি নির্থিতে, শুধু মাঝে মাঝে চকিতে চকিতে হেরি অন্তজালা, শুনি কোলাহল বল্পুরে বেন চলে দিক্কজল

উথলি হিলোলৈ অনন্ত পথে।"
শচী ব্যাইনা দানববালায়
দেবচকু বিনা দেখিতে না পায়
ধ্মাজ্য দেশে, কিবা তম্পায়,
ব্যাজ্য দেখিতে পায় দেখভায়

দানব-মানব-নন্ধন স্থূল। কহিছে শচীবে মদনের প্রিয়া কালভদ্র-দৈত্য-বীর্য্য বাগানিয়া, তেনকালে বেয়ক্ত অঞ্জ-ক্রু শর ধিগও করিয়া অঞ্জ-ক্রু শর

বিদ্যা ককদেশে আঘোতি ভাষ , অহাব ব্যথায় পড়িল অহাব,— একাদশ রথচকা, আখাক্ব কুণা করি সেগা ভগনি ছুটালি, পেদাযায়ে দহজ-বাহিনী চলালি,

কাপভদ্ৰে বৃদ্ধি শাণিত শব্ধে , থেৰি কন্দুপীত ভগ্ন নিজ্প দল চালাইলা রথ—অমরা চঞ্চল, মহাঘোর শব্ধে কোদণ্ডে টফার, বাণে বাণে সাজাইল হার

ভূজকের শ্রেণী যেন আকাশে। ফুলনে কহিয়া পদ্যতে থাকিতে, গিল বিশিথ ছাড়িতে ছাড়িতে, গ্রগণে গিয়া অগ্রে আওলিলা উম্ভি: ওণে বাণ বদাইলা-

ধেন লক্ষ শর একতা ছাড়ে !

াটিয়া নিমিধে রথের ধ্বজিনী,

৭১জ, নেমি, অখের ব্রুনী,

ফাদশ ক্জ নিমেধে নীর্ব,

করিতে সুক্ষন নিবারিলা পথ,

পড়ে রুজগণ খোব বিপদে ,
গে বাণবৃষ্টি বাণবৃষ্টি পিঠে,
উজ্জ্বজার নাহি চলে দিঠে ,
হে শতধারে অমন-শোণিত,
পূর্দ যুগন্ধি সৌরভ-পূরিত,

অত্তের দাহনে দহে শরীর।

জন্মন্ত কহিলা 'হের বৈধানর, বৃত্তস্তুত-শরে দেহ জরজন, রুজ একাদশ—পশ্চাতে সুন্দন— না পারে দানৰে করিতে দমন,

অন্থিব শরীর অস্থ্য-তেজে।" শুনি অগ্নি বেগে চালাইলা রথ, চক্রের বর্গণে অগ্নিমন্ত্র পথ, সর্ব্য-মন্তে দীপ্ত কুলিক ছুটল, নলবনে যেন দাবাগ্নি পশিল,

তেমতি ক্রোধিত অনল-বেশ , চারিদিকে দৈত্যদেনা পড়ে ঝবি চোপো চোপো শবে, সুতীক্ন কর্ত্তবী— আমাতে যেমন পড়ে নলবন, মুম্ম-চয়তে অনল তেমন

ক্রিছে নিধন দফ্জ-বাশি , দেখিতে দেখিতে ভীম হুতাশন দৈত্য-চমূ দমি নিবাবি ফুক্লন, দাড়াইলা গিয়া ক্রগণ-আগে, কালাগ্রির তেজে , ভয়স্কব বাগে

বহ্নি-কজুপীডে তুমূল বণ ' কহিলা হুজারি দহজুকুমাব — "বৈখানর, শিক্ষা দেখিব এবাব, বুঝিবে এবার বুজের তানয় সমরে না শানে জীবনেশ ভয়.

এ ভূজনওের সামর্থ্য কত।"
বলি শরে শরে কৈলা অন্ধকার,
ছাডিতে লাগিলা বিকট হুলাব ,
কোলগু-ট্লার নিমিষে নিমিষে,
বাগের গর্জন শুক্ত করি দিশে

ৰধির করিল শ্রবণ্মূল। অনল তৎপর দে আশুগঞ্জাল এড়াইলা, বথ রাণি ক্ষণকাল, শর লক্ষ্য-স্থান অস্তবে আদিয়া, আৰার ঘর্ষর নির্যোধে ঘ্রিয়া

বিশ্বনী-গণ্ডিতে অতি নিকটে, ফিরিলা নিমিবে ক্রোধে হুতাশন, না ক্রিতে কক্ষ্য দহজ-নন্দন, দীপ্ত অসি ধরি, লক্ষে ছাড়ি রথ, কুক্ত্মীড়-রধে অধ্য আলাবৎ

হানি দীপ্ত অসি করিল নাশ ;

শতগণ্ড করি কেলিল শতাক— নেমি, নাভি, ধূব, ধ্বজ, রথ-অঙ্গ, ভীম অসি-ঘাতে—বিনাশিরা হত, উঠি ভগ্ন রণে লক্ষ্য দিলা ক্ষত

ক্রুপীড-ধন্থ বিধণ্ড করি ; হানিবারে বায় বক্ষ:ক্ষেলে তার, মহা জ্যোভিশ্ম তীত্র তরবার, হেনকালে দৈত্যস্তুত স্থচ্তুর ছাড়ি নিজরথ রথেতে শত্রুর

উঠিল বেংগতে প্রলম্ফ ছাড়ি।
পদাবাতে ক্তে ফেলিয়া অন্তরে,
নিজে দ্বন্ধি ধরি ঘোর বেগভরে
চালাইলা রথ কিছু দ্বে গিয়া
রাধিকা শুন্দন চরণে চাপিয়া
ধরিলা অধ্যের বশি-ডোর;

নিলা অনলের ধ্যুক্তাণ তুণ কান্দুকে বসায়ে দিব্য নব গুণ গর্জিতে লাগিলা ভূজবেব প্রায় লফ লফ শ্রু অনলের গায়

ক্ষিপ্রহল্ত ফলে নিমিষে ফেলি। "সাধু রুদ্রপীড — ধরা মহাবল" ছাড়িল হুকার দানবের দল; শরেতে অস্থির শূর বৈখানব, ভারবে'পরে ক্রোধে ধর থব

না পারি রোধিতে অরাভি-বাণ। ছুটাইল রণ অ্নলে রাক্তে জরস্ত ত্বরথী পল না পাতিতে ছুটাইল রথ কুবের ত্র্বার, ছুটাইল রথ অবিনীকুমার,

অনল-সহারে বিজলী-বেগে। হেন কালে বৃত্তাহ্বৰ স্থানপুণ মহাধ্যুদ্ধৰ কৰ্ণে টানি গুণ, হানে ভয়ধর সুশাণিত বাণ, হুভাশন-কুঠ ক্রিয়া স্কান

বিদ্ধিল সে শর করিরা লক্য।
জয়ন্ত, কুবের, অখিনীকুমার,
থেরি বহ্নিরে কাছে আদি তার,
বিশিধ জলনে অস্থির অনশ
ক্ষিলা—"বীরেশ ঐক্রি মহাবল,
ধেও তব রধ কানাই দৈত্যে—

বহ্নির কি তেজ।" প্রবোধিলা সবে "এস মহাভাগ কণ শান্তি ল'ভে , এ হাতনা তব হ'লে কিছু দ্ব রণে এস পুন: , বুত্রাস্তর ক্রুব

ষ্কিলা অমরা রোধিবে রণে।"
বলি ইক্সাআজ বথে বৈখানরে
তুলিলা সকলে, রাধিরা অন্তরে
সম্বে ফ্রিলা—জন্ত স্থীর
কুবেরের রথে তুই মহাবীর

অখিনীকুমার অখেতে চলে।
দফ্জনন্দন বহিরে বিমৃথি—
মহাদর্পে ছাডে— মন্তরেতে সুথী—
ভীৱ শরজাল দেবসেনা'পরে,
মৃহুর্তে মৃহুতে বিদ্ধিছে দেশরে

অমরবাহিনী দহি বাতনে। জরস্ত, কুবের, অধিনীকুমার, রুদ্রপীড়-রথ ঘেরিল আবার; আবার বাঞ্জিল সমর তুম্ল ভীম অস্ত্রাঘাতে কুরু সৈতুল্ন,

শরে হুলহুল সমরস্থল।
বেংগে লক্ষ দিয়া কুবের তথন
গদা ঘুরাইলা করিল গমন,
উড়াইঃ। শবে শুক পত্রাকারে
ঘূর্ণবাহুগতি গদার প্রহাবে,
পদতরে শুন কানেপ ত্রিদিব।

সম্বর্শ ক্ষান্ত বিশ্ব কর্মার সম্বর্শ ক্ষান্ত ক্ষার ছাড়ি ধহুর্কাণ, ছাড়ি বছকার, দাড়াইলা রথে ভীম শেল ধরি, কুবেরের বৃক্ষঃগুল লক্ষ্য করি

বেগে ছাড়ি দিলা বিপুল তেজে, বিদ্ধিল ভীষণ শেল বক্ষঃস্থলে, দাকণ প্রহারে খাস নাহি চলে, পড়িল ধনেশ হয়ে হস্তচিত, জয়স্ত-ক্যন্দন ছুটিল অরিড.

ধনেশেরে ঐদ্ভি তুলিলা রগে।
শিক্সিনী টানিয়া আকবিলা বাণ,
দছকনন্দনে করিয়া সন্ধান .—
শচী নির্ধিরা আতকে উতলা,
কতে ভীক্তবরে "হের লো চণলা,
বাঙ শীক্ষণতি নিবার স্থতে স

না প্রবেশে রণে রুজুপীড়-সনে , মহাধস্থার দক্জ-নন্দনে নাবিবে সংগ্রামে করিতে বাবণ, যার হাতে হাবে দেব হুডাশন,

ভার সনে একা ব্রিতে ধার। নিবার নিবার নিবার চপলে, বাও জ্ভগতি যাও রণ্ড্লে, বাজিল হাদরে শেলসম ব্যথা, পডে যদি পুত্র পডেছিল বধা

নৈমিব-অরংগা দানবাঘাতে।"
চপলা চলিলা স্চপল-গতি
দেবদুজ-বেশে ৰথা দেবরুৰী।
কচে ইন্দ্ৰালা "হার, ইল্রপ্রিয়া,
তব বাকো, সতি, কাঁদে মম হিয়া,
কেন প্রাণনাধ হেন নির্দ্র ?

ক্চ চপলাবে আনিতে এখানে, ঘূচাতে এ ভন্ন তোমার প্রাণে, প্র আনি কাছে পুরন্মরজারা, বুগ্রিবারে পাবি তব চিত্তমায়া,

আমার (ই) জ্বর-বেদনা-বেগে।
হার নাথ, যেন ব্যথিলে আমার,
ব্যথা দেও কেন অতে পুনরায়।"
বিলি অঞ্জলে বকং ভিজাইলা ,
দেবদ্ত-বেশে এথানে চপলা

বাসক-কুমারে সম্ভাষি কর— "বংশ ক্ষান্ত হও, স্বেরশ-নন্দন, সহিতে নাবিবে ভীম প্রাহরণ কুদ্পীড-হাতে, জননী-আদেশ, একাকী সমুদ্ধে করো না প্রবেশ,

বিধো না উছিলের হৃদরে শেল।
একাকী যে বীব নিবারে সমরে,
একাদশ কড় বৃক্ত বৈখানবে,
ভাবে কি সংগ্রামে পারিবে জিনিতে ?
গও অন্ত স্থানে এ রথ স্থারিকে;

ক্ৰের অনলে সুসুত্ কর ?"
বিষা তথান হৈলা অগ্শন,
তীন দৃত্যুথে জননী-বচন,
জয়ত হংখেতে ফিরাইলা রথ
তালি ধ্তুকাণ—ধ্রি অঞ্চ পথ
ফুরেরে লইবা অনল-পাশে।

জয়স্তে বিম্প দেখি ব্তস্ত, বোব সিংহনাদে—শিক্ষা অদভ্ত, অযুত অবুত শব নিকেপিলা, দেবচম্ বাতি বথে তুলি নিলা

শাপন দার্থি, নিষদ, ধরু।
মথিতে লাগিলা স্থবদেনাদশ—
বাডবাগ্নি বেন দহি রদাতল
জলস্তক্ত্র আকুল করিয়া
ভ্রমে সিদ্ধুগর্ভে ছুটিয়া ছুটিয়া

ছবস্ত প্রচণ্ড ভীষণ দাপে— অদ্রে দেখিলা অধিনীকুমাব য্থিছে অবাধে থিক্রমে হর্মার, দিব্য অখোপরে দেব হুই জন হানিছে কুপাণ সুতীকু ভীষণ

লণ্ডভণ্ড করি দফ্জদল। তথনি দৈত্যেশ-ফুত মহাবলী আদেশে সাব্থি স্থ্যাস্থ্রে দলি চালাইলা রথ ঘর্ষর নিনাদে বেংগে দেই দিকে,—ক্রুপীড় সাধে

ধবিলা কাশুকি উদ্ধারি ৩৭ ৷
চক্ষের পলকে লক্ষ্য কবি ছিন্ন,
ছুই তীক্ষু শব নিকোপেলা বীব,
নিকোপেলা পুন: আবে ছুই শর,
নিমেষ না কেলি কাঁপে ধুর ধ্ব

পড়ে দেব-অব্ধ আবোহী সহ। ভীষণ হকার ছাডে দৈতাদল, জন্ম দিল রণে অমরেব বল; পশ্চাতে চলিল দানবের সেনা (বস্থা যেন চলে বুকে করি ফেনা)

দগ্জনন্দন, সুন্দন বীব। ধায় বণমন্ত কেশবী ধেমন ছাজি সিংহনাদ ভীষণ গৰ্জন, দেখিতে দেখিতে অমরবাহিনী আলোচীর-বাহিবে তাড়িত তথনি,

লভা-পূত্ৰ যথা ঝটিকা-মূথে।
দেৰবৃাহ ভেদ কৰি মন্তগতি
চলে দৈত্য-দেনা চলে দৈত্য-বথী;
বণক্ষেত্ৰ দূৰ্যে ছাডিলা চলিল,
বথা চলে বেগে ভটিনী-সলিল
ভয়দ-ভাষাতে ভাদিলে কুল।

শচী স্মেণ্ড শিখর-উপবে হেনে সেনাভঙ্গ কাত্ত্ব জ্বন্তবে ; কদ্ৰপীড় বীৰ্যা হেনে চমকিত চাহে দৈত্যবধূ-বদনে স্থানিত,

বৃদ্ধিতে তাহাব স্থান্তৰ।
তেমতি বিমৰ্থভাবেতে সরলা
দেখিলা ভাবিছে—তেমতি উতলা,
কহিলা ইন্ধানী "এ কি দেখি ভাব,
চাক ইন্দৰালা, পতিব প্ৰভাব

দেখিয়া তবুও প্রসন্ন নহ।

আমার তনয় হইলে এথনি, ভাবিতাম ওরে জগতের মণি, কি বীয়া সাহদ কি শিক্ষা-কৌশল। একা হাবাইল অিগশেন দল,

শক্ত বটে, বঙ্গ বীব বাথানি !" ইন্দ্ৰালা অঞ ফেলি দৱদৰ কচে "প্ৰৱেখনি, কাঁদিছে অন্তব, নাহি চাহি আমি প্ৰভাব প্ৰতাপ, প্ৰাণে না সহে এ খোৱ উত্তাপ.

ইন্দ্রপ্রিয়া, হার, অভর দেহ— না দিব বটিতে কোন অমঙ্গল প্রিরের আমার—হে শচি, সংল একমাত্র অই এই ভঃথিনীর!

একমাত্র অই এই ছঃখিনীর! আমার (ই) অদৃষ্ট-দোবে হেন বীব, নাজানি কপালে কি আছে শেষে।"

কহে ইন্দ্ৰদায়। "লগাট-লিখন অৱে ইন্দ্ৰালা, কে কৰে খণ্ডন ? চিম্তা নাহি কর কি আশঙ্কা তব ? ইন্দ্ৰ নাহি হেথা, সাধিব, তব ধৰ

বাসৰ-অভাবে অমব হেন !" হেথা কদ্ৰপীড গজিছে ভীষণ, সমর-প্রাক্তে দেবরথিগণ দ্ব হ'তে ভাষ কৈলা দরশন ;—

কার্ভিকের স্থ্য বকণ পবন,

দেখিলা অগ্নির শতাঙ্গ ধ্বজ্ঞ। বুঝিলা তথনই পূর্ব্বদারে রণ হইলা কিন্ধণ ; জন্মন্ত তথন অখিনীকুমারে কুবেকে অনলে সংহত্তি নইয়া আইলা দে স্থলে

বিবরিশা রণবারতা যক।

স্বরধিগণ শুনি চিন্তাকৃল— বৃত্ত, বৃত্তস্তুত করিলা আকুল অমর-দেনানী, কিরুপে উদ্ধাব দে দোহার হাতে হইবে আবার,

পিতাপুলে দৌহে অনের রণে। কহিলা ভাস্কর—"উন দেবগণ, বিনাইল্র যদি সমরে নিধন না হবে ইহারা—কি হেতু হে তবে এ দারুণ ক্রেশ এ ঘোর আহবে ?

ইন্দ্ৰ লাগি সৰে বিরত হও।
নত্বা যভগি রাথ মম কগা,
করহ সমন ধবি অৱ প্রথা,
ত্যজি ধয়ুর্বাণ, বাহন, অনন,
নিক্ষ নিক ডেজ কবহ ধারণ

প্রদায়ের মৃষ্টি বেরপ যার। বাদশ প্রচণ্ডরূপে জলি আমি, জনুন কালাগ্রি-বেশে বহিষামী, প্রদারন ছুটান বাবীশ, প্রমন উড়ান রচেড দশ দিশ,

দেখি কি না দৈতা-নিধন হয়।" স্থা-বাক্যে বায় ছুটতে উভত, সিক্সুপতি ভাৱে করিলা বিবত, কহিলা "কি কহ, ওহে প্রভাকব, দস্তে নাশিতে ভেজ বিশংব

প্রকাশি ব্রহ্মাণ্ড করিবে শ্র ? নাশিবে নিথিল পরাণীর প্রাণ নাশিতে ত্জনে ? কবিবে ঋশান বিখ-চবাচর ? কছ কি উচিত দেবের এ কাজ ?" "না জানি কি হিড,

জানি কেহ দথা" কহিলা রবি।
হেনকালে শৃত্তে তৈরব-নির্ঘোষ
কোদওটকারে যুড়ি শত কোশ
বন সিংহনাদে পূরে শৃত্ত দূর
বন সিংহনাদে পূরে স্থরপূর

অমর দানব শৃংক্ততে চায়, দেখে ইন্ধ্রপ্ন গগন বৃডিয়া শোভে মেঘশিরে ছলিয়া ছলিয়া নামে বীরে বীরে দেব আথখন, মুক্ত বেড়িয়ে কিরণমঙ্গা,

চিন্ন-পরিচিত স্থাীল তম।

পরশিলা ইন্দ্র অমরা আবার কত কল্প পরে করিতে সংহার বুল্ল মহাস্থর, দিলা আলিখন পুবর্থিপণে পুলকিত মন,

দেব শচীপতি অমরনাথ।

হৰ্ষে সিংহনাদ দেবদৈস্গদলে অম্বনগৰী তাক কোলাহলে , সহধ্বদন চাহিল্লা চপলা কহে শটী "স্থী পেল চিত্তমলা,

জ্ছাল হাদ্য নরন মন।"
বলি অকস্মাৎ চাহি ইন্দুবালা
মলিন-বদনে শচী শিহবিলা
দে অঞ্চন্ত্ৰন ফিরাতে তথন
চপলাব সনে বিবিধ কথন
কহিতে লাগিলা স্তরেশ-রমা।

একবিংশ সর্গ

किनारम नरशक्तवाना सानिना यथन পুরন্দরজায়া-শচী-বক্ষ: লক্ষ্য করি विक्ति जुनिना भम,---मनिना हत्रत्न পৌলোমীর প্রতিবিদ্ব চাক আভাময় কিবলে অক্তিত স্বৰ্গ-মন:শিলাতলে . বাষ্পবিন্দু নেত্রকোণে, জয়ারে সম্বোধি কহিতে লাগিলা মহামায়া মুচস্বরে ;---'জ্যা রে. কি হেতু বল জগতীমণ্ডলে শর-চিত্তে পীড়া দিতে প্রাণিবন্দ হেন তিলাই না ভাবে তঃথ, না চিস্তে মান্দে কি দারুণ ব্যথা প্রাণে তাব, পরদঙ্খে পীড়িত ষেজন। হায়, স্থিমন্তাপ ক্তই এখন ভঞ্জে শচী—মনস্থিনী ए उनक्रिशि हिस्तामश्री ? **अन स**श्री, ফেন চিত্তজালা নিত্য ভূঞে যে প্ৰাণী, সেই বুঝে নররুক্তে কেন নিরুত্তর মার্ডিজু মহীতল; কি মহা পীড়ন ত্রিজগতে, দক্ত, বেষ, দর্প ভূজবলে? था कित्न हे सकाशां वृद्धिल दत सहा, বিজিতের জ্বদিদাত কিবা বিষময় কি বিষয় কালকট-জালা অধীনতা!

হে সদিনি, তুমিও বৃঝিলে এখন সে ভরহরী নাম ধরি কেন কালে কালে করাল কালিক।-রূপে আবিভূতা উমা।" কহিতে কহিতে চিত্ৰ ঈষৎ চঞ্চল. कहिलान, (क्रांश्यत महाकाल-क्रांश জীবদন্ত-সংহারিণী—"এ দন্ত তাহাব থাকিত কি এতক্ষণ দানবী ঐকিলা এই দক্ষে ক্লানিড সে ভীম-ভামিনীর বীর্যা কিবা। চণ্ডবিলাসিনী চণ্ডীবোষ। বে কৈববী কি কৰ দে ইলে অগৌৰব আমি যদি বতে বাধ দণ্ডি সে বামারে।" এত কহি ভবানী ভাবিয়া ক্ষণকাল তাজিয়া কৈলাসপুৰী শলে প্ৰবেশিল: বিশ্ব-কেন্দ্ৰ-মধাভাগে ষথা প্ৰদ্ৰকোক উত্তবিলা বেলামধী উবমাদগতি দেখিলা দে মহাশন্তে, অনন্ত ব্যাপিরা, কিবণমণ্ডলাকার বিপুল প্রিধি ব্ৰহ্মাৰ পৰীৰ প্ৰাক্ৰেখা—শোভামৰ অন্তে আলোকে। নীল অনুরের কোলে নিবন্ধৰ থেলে যেন ভাতৰ হিলোলে. বিবিধ সূবৰ্ণ নীলবৰ্ণে মিশাইয়া (पिथा किवव-काला। (म विश्व-अदिन्ध्यः) কৰ্ব্য ব, দানৰ কিংবা সিদ্ধ দেবযোনি (वरामहत्र श्रांनी (यवा आहेरम रमशास्त्र. লমে ভূলি শুক্লপথ, প্রণমি তথনি ষায় দরে উচ্চেতে উচ্চারি গাতা-নাম. खकि-शनकि करनवर । biविभिटक খেরি, দে মহামণ্ডল কিরণপরিত---পার্থে নিমু উর্দ্ধদেশে অপর্ব্ব মবতি। নবীন ব্ৰগাঞ্বাজি সভত নিৰ্গত। শেখিকেন জগদমা প্রফল সভরে সে ব্ৰহ্মাঞ্জুল-গতি অকল শৃষ্টেতে কত দিকে কতরূপে কত পোভাময়। ভেদি সে ভাত্মণ্ডল, প্রবেশিশা সতা, বিশ্বমোছকর ব্রহ্মলোক-মধাভাগে। দেখিলা দেখানে, সীমাশুর মহাসিন্ধ সদশ বিস্তার শ্রোতঃ-পাবাবার ঘোব সদা তর্ক্তি-ঘূর্ণ্যমাণ উর্দ্দিরাশি নিঃশব্দে সতত ভীম আবর্তে ঘুরিছে বিধাতার আসন ঘেরিয়া। নির্বিকার.

নিম্রাণ নির্জ্যোতিং, আভাহীন তাপশৃষ্ঠ ; সে স্বোতে উর্শির সিদ্ধু ! উর্দ্ধদেশে তার বাপারাশি স্ক্রতম মণ্ডলে মণ্ডলে---বথা ভাল্ল মেঘরাশি গগনে সঞ্চার . ঘুরিছে অন্তত বেগে-- অচিন্তা মানসে, অচিন্তা কবি-কল্পনে—সে বাষ্প্ৰমণ্ডলী • আবর্ত্ত-ভিতরে কোটি আবর্ত্ত বেন বা! জনমি তাহার মৃত্ আলোকমণ্ডল ব্যাপিছে অনন্ত তমু—কেন্দ্র আভাময়, আভাময় স্ক্তেব তরল কিরণ সে কেন্দ্রের চারিধারে , দ্রতব বড, তত গাঢ় দচতর পরমাণুরক বায়ু, বহুন, ধাতু, মুৎপিওক্সপে। ছটিছে অনন্তপথে দে পিওকলাপ সূর্য্য, চন্দ্র, ধুমকেতু, নক্ষত্র-আকারে नान। वर्ष, नानाकांत-- अपूर्व निनाह পুরিয়া অম্বরদেশ, কোথাও ফুটছে মনোহর দত্ত-ভূবন মোহময়। বিরাজে দে উর্দ্মিয় অকুল অর্থবে বিধির স্ঞ্নাসন-অচিন্তা নিগমে ! চারিধারে সে আসন ঘেরি নিবস্তরু ছুটিছে তরক্মালা লুটিতে লুটিতে উঠিছে আসনদত্তে আনন্দ খেলায় হেন ক্রীড়াবলে রভ সে তরলরাজি (थनिट्ड जानन-शार्य ; विधि-शनायुक বধনি পরশে তার, তথনি সহসা নে অপূর্ব্ব স্রোভোমালা জীবন-মণ্ডিড খুৰ্ণ নিরমল রূপ জীবাত্মাত্মন্দর— 考 র্ণব্রন্ধ জ্বোতীরেখা অলে পরকাশ। পুলকিত পদ্মধোনি হেরেন হর্যে (म बीव-व्याचा-मखनो, द्रातम इत्राव স্ষ্টির লগাম-শ্রেষ্ঠ জীবের চেতন, (मर-नर-थानि-(मरह एवर खुर्शाशंत्र। বিশ্বিঞ্চি কারণসিদ্ধ-গর্ভে হেন ক্রপে গঠিছেন কত প্ৰাণী সকৌতুক মনে। नवीन बीवनाचारम मुख भीवजून ভূঞ্জিতে অভূতপূর্ব কতই উল্লাস--সে মৃহূর্ত্ত হুধ ৷ আহা, কে পারে বর্ণিছে, কে পারে চিন্তিতে, হার! আভাস তাহার (দীপভাতি বথা স্থ্য-ক্ষিত্ৰণ আভাস)

ভাব মনে, হে ভাবুক, শিশুর উল্লাগ রবে পর:সিঞ্জ তুণ্ডে, অর্দ্ধফুট স্বরে, ধরি জননীর কণ্ঠ হাসে চিত্ত-মুথে, প্রকাশি পীয়বপূর্ণ ক্ষেত্ত-ফুল্লাননে ! এ হেন আনন্দরদে হইয়া বিহ্বল প্রথমে বধন, ছেরে সে প্রাণিমওলী **লোভোগভ অ**ৰ্থবের উর্মিক্স ক্রীডা হেরে শক্তে বায়, বাষ্প, বিচাৎ-আলোক স্জন-লীলা অন্ত, তথনি সভয়ে শুক্ষ শীৰ্ণ পুষ্পপ্ৰায় মুদিত নয়ন ধায় বিধাতার অংশ ভয়ে লুকাইতে, ধার ভরে শিশু যথা জননীর কোলে ! পশি বিধাতার ক্রোডে তথনি আবার হেরে সে কৰণাপূর্ণ নির্মাল আনন্দ, তথনি নির্ভয় পুন:--পাসরি সকলি, তথনি আপন হ'তে চিত্তের উচ্ছাদ। স্কীত উচ্ছাদে বহে অপুর্ব ধানিতে অপর্ব-ধানিতে উচ্চে পরবন্ধনাম **ভাকিতে ভাকিতে উঠে বে যার ভুবনে.** জ্বগৎ-সীমান্ত-বত্ত জীবরূপ ধরি। আনন্দে আনন্দমন্ত্রী কারণ-সিন্ধুতে হেরিলা কতই হেন সম্ভনের লীলা, পুঞ্জ পুঞ্জড় জীব, ব্ৰহ্মাণ্ড, আকাশ, স্থ্য, ভারা, শশধর, স্বর্গ, রসাভল মুহুর্ত্তে মৃহুর্ত্তে সৃষ্টি অপূর্ব্ব দেখিতে, দেখিতে দেখিতে স্থাধে শঙ্কর-মোহিনী চলিলেন ধীরগতি—দাড়াইলা আদি বিপুল কারণ-সিদ্ধুতটে মহামায়া! সহসা উদিল ছটা---অতুল শোভার উक्रिल महा-चार्य । (इति (म क्रिय সবিস্থয়ে পদ্মধোনি উন্মালি নয়ন চাহিলা, বে দিকে চারু শোভার উদয়। সম্ভ্ৰমে আইলা কাছে শক্ষরী, হেরিয়া मञ्जाबि स्विष्टे चरत स्वत्यार्थ विवि ভিজাসিলা —"কি বারতা, হে ত্রামকলারা কি কারণে গতি এখা ? কোথা বিশ্বনাৰ কি হেত বিধিরে আজি হেন অহকুল ?" "হে বিরিঞ্চি, তুমি ভিন্ন" কহিলা অধিকা^ন "দেবকুলক্ষা-মান কে রাখিবে আর ? क्रम नामि कहिएक मह्हान क मध्यम ,

ভানি পাছে করেন প্রাণম বানদেব !

ছটা বুআত্মর-জায়া দানবী দান্তিকা
তুলিলা হানিতে পদ শটা-বক্ষ:হলে,

হে ক্ষলবোনি, ব্যক্তিলা শটার ক্রদি,
কে আর হে তবে পরচিত্তে পীড়া দিতে

ইইবে শক্তি, ইক্সলায়া পোলোমীর
এ দশা যভাপি ! দর্প চুর্প কর দেব,
দক্ষবামার অচিরাৎ— কর বিধি,
হে বিধাতঃ, বুঅ-বধ যাহে, বধি ভারে
দানবীর দৌরাত্য ঘুচাও অর্গধামে,
গুচাও, হে প্রাণমন, উমা-মনজ্যাপ।"

বিরিঞ্চি উমার বাক্যে চিক্তি কতক্রণ, নগেজ্ঞনন্দিনী সঙ্গে বৈরুঠ-ভূবনে গেলা যথা রমাপতি, মাধব-সংহতি ফিরিলা সত্তর পুন: ভূবন কৈলাদে!

বসিয়া ভবানীপতি ভাবে নিমগন। কোটি ব্রহ্মাণ্ডের প্রতিমৃত্তি চারিধারে, হেরিছেন কুতৃহলী বোগীক্র মহেশ লং**দের অপূর্ব্ব** গাত !—বিশ্বচরাচরে, কতরূপে কত জীব, কত ঞ্ড্ডফু নুহুর্তে হইছে লীন। নিগৃঢ় রহস্ত— নিদর্গ বন্ধন-স্ত্র-ছেদন-প্রণালী। বোধাতীত, চিস্তাতীত, অতীত কল্লনা-জড় জীব-ধ্বংসগতি--কাল-সংগঠন। কিবা সূক্ষ্মতর ক্ষুদ্র সূত্রেতে জড়িত র্ণাবের জীবন, ভোগ, সম্পদ, প্রতাপ; কি স্থামিলন, বিশ্ব-চরাচর-মাঝে অচেত্তন সচেত্তন -- ভূলোকে গুলোকে, প্রাণিকলে, জড়জীবে, আত্মায়, শরীবে কিবা মনোহর ক্ষু শুঙাল-মালার জড়িত ব্ৰহ্মাণ্ড-বপু কেশাগ্ৰ সদৃশ ইতের রেধার বদ্ধ আত্মা, মম, দেহ। शिविण इहेटल क्राप्त निविल विकल।

দেবিছেন মহাবোগী প্রগাঢ় কৌডুকে
দে লর, প্রলম্ব কুত্বনে তৃবনে।
দেবিছেন যোগিবর কালের প্রতাবে
গাঁবব্র কত মর্প্তো স্টি-শোভাকব,
গাঁবম্ধি পরিহার, হতেছে বিলীন
গভার কালের গর্ডে। কত জ্ঞানদীপ
কোটি কোটি ব্রহাওমাঝারে ক্ষণে ক্রেণ

निविद्य-पूर्विट्य त्यात्र अव्यान-चित्रिदत्, সুষ্মা কতাই রূপ, কতাই জাগতে হতেছে কলন্ধময়-ভাতিছে কোখাও অসীম লাবণ্যরাশি চক্ষের নিমিষে। চতুর্দ্ধ লোকমাঝে মাত্র। সুবিমল। নিৰ্বাণ নক্ষত্ৰপ্ৰায় জ্যোতি হারাইয়া পড়িতেছে কত দিকে কত শত, হায়, পাপপন্ধ-পরিপূর্ণ অন্ধতম কুপে --পুড়িতে সন্তাপ-তাপে। দেখিছেন দেষ সে স্বার অধােগতি ব্যথিত অন্তরে.---যথা নর্চিত হেরি সুখ্যের মণ্ডল --রাছর গভীর গ্রাদে যবে প্রভাকর ! কোন বাঅবনী এই প্রাণিপুলময় উদ্ভিদ-লতার স্থানোভিতা, কণপরে হইছে পাধাণপিও মণ্ডিত হিমানী---প্রাণিশুক ভ্রারের মক ভর্মর। কোথাও আবার কোন বিপুল জগৎ বিদীর্ণ হইমা চর্ণ-রেগুর আকারে মিশিতেছে শৃতাদেশে। কত জনপদ উমতি-সোপাৰ ছাডি ডুবিছে কালেতে অচিহ্ন হইয়া ভবে চিরাদন তরে গ দেখেন কোথাও কোন এলাণ্ডের মাঝে ভীষণ প্রলয়-রঞ্জীব, জড যত, উদ্ভিদ্, ভূধর, বারি, ভূমগুল, বাযু, কালানলে দ্মীভত শৃংসতে লুকায় चानुकारण रामिशार्ड—गृक्षमत्र कति সে ধরামগুল-ধাম, কোথাও আবার দেখিছেন ভূতনাথ যুগ বিপর্যায় — इड्डिश शांवरन मध विनाल धर्नी পত, পক্ষী, নরকুল অদৃত্য সকলি, ভ্ৰমিছে বিমানমাৰ্গে ডাকিছে প্ৰন ভীষণ প্রবল শব্দে মিলি দে প্লাবনে। দে ঘোর প্লাবনে বিশ্ব, ভূবন চকিজ , এইक्ष मध्येषा जूरान जुरान कि (भव-मानव-वान , किवा निक्धारम ; দেখিছেন যোগীল্র নিমগ্ন গাঢ় ভাবে. মুত্তর কথন ঈষৎ হাস্ত মুথে।

হেনকালে ম্বংর সম্ভূ ভবানী; দাড়াইলা ব্যোমকেশ শব্দরে সন্তাবি, দদানন্দ মহানন্দ কৈলা আলিছন কেশৰে হিবণ্যগভে—উমারে চাহিবা
তৃষিলেন আওতোৰ মধুর হাসিতে,
মাধব তথন সদা প্রিয়ংবদ দেব—
গন্তীর-বচনে শুনাইলা বিশ্বনাথে
সকল বারতা— শুনাইলা শাইতংধ,
শুনাইলা শিবে অধিকার মনন্তাপ।

শুনিতে শুনিতে এটা গৃক্ষটি-মন্তব্দে কাপিতে লাগিল ধীরে—ললাট-ফলকে শশধর থরতর আভা প্রকাশিল। মহাকাল-ভোধমৃষ্টি উদর দেখিয়া সাখনিলা হ্বীকেশ সত্ত্ব শহরে.

বিষ্ণুর বচনে মৃত্যুঞ্জরী মহেশব কহিলেন "হে মাধ্ব, উমার ৰাদ্না পূৰ্ণ কর এই দণ্ডে—হে কমল্যোনি, কর যাহে বুত্রাস্থর নাহি কীয়ে আর, ক্লানি আমি আমার(ই) বরেতে স্পর্ম। তার কিন্তু কহ শুনি, কেশব কৈটভহারি, সম্ভ বিধাতা, কেবা সে নহ তোমরা ভক্তির অধীন সদা— বথা ভক্তাধীন ভামিমান আঞ্ডোব ? ভান্তি যদি ভাব. এই দঙ্ভে দেই ভ্রান্তি ঘুচাতে বাসনা দত্তকের অদৃষ্ট অভিয়া; হের ইক্র সসজ্জ সমরক্ষেত্রে; বজ্র প্রহর্ণ নিশাইলা বিশ্বকর্মা: দিলা ভোমা দোঁতে নিজ নিজ তেজ: অত্তে অবার্থ করিয়া, একমাত্র অন্তরায় - অন্ত নতে আঞ্জ(ও) ৰিধা হার দিনমান-সে ব্যথা ঘুচাও অকালে অন্তরে নাশি হে বিধি কেশব ৷---আপনার কর্মদোষে মজে যে আপনি. কে বৃক্ষিতে পারে তারে ?" বলি শুলপাণি ভক্ত বংগল দেব বুৱে ভাবি মনে ত্যবিষা গভীর খাস, বদিলা নীরবে। ছেরে মহেশের মূর্ত্তি দেব চক্রপাণি মন্ত্ৰণা করিলা ক্ষণকাল ত্রন্সহ উত্তরিলা মহেখরে—"হৈ অন্তক্ষারি: কর্মফলে প্রাণিবুনে উন্নতি, পড়ন; যতঃ পরিবর্ত্তশীল প্রাক্তন-প্রভাবে ! তথাপি উমেশ, উমা-অন্থরোধে আমি,

দেব প্রজাপতি, বুত্র-ভাগ্যলিপি-নাশে

হুইত্ন সমত।" ৰলি লুকাইলা তহ।

অতহ হইলা মহাবেব ,—গুণ তিন একত্র মিলিয়া অকলাৎ, প্রকাশিলা পর-ব্রদ্ধন নিরূপম !—অতুলিত শোভাপূর্ণ কৈলাস-ভূবন ক্ষণমাঝে। ক্ষণমাঝে বোরশ্সে হৈল বোরধানি— "বুত্তের অদৃষ্টলিপি অকালে থণ্ডিত।" হেথা ভাগ্যদেব গাঢ়-চিস্কা-নিমজ্জি

ক্ষণমাঝে বোরশক্তে হৈল বোরংবনি---হেপা ভাগ্যদেব গাঢ়-চিস্তা-নিমজ্জিত, বসিয়া বৈকুণ্ঠ-প্রান্তে বিনত সন্মধে বিশাৰ প্রাক্তন বিপি -- দৃশ্ব মনোহর। ছায়া ইন্দ্ৰালে यथा ধুৰ্ত যাতুকর দেখার অঙুত রঙ্গ—অঙুত তেমতি অনন্ত আলেখা আলে ক্রীডানির্তর। কোনখানে ভূমগুল-বিজয়ী বীরেশ ছুটে চতুরঙ্গ দলে পর্বাত লঙ্গিয়া আবার মুহূর্ত্তকালে সে বীর-কেশরী মকভূমে পদব্ৰজে ভ্ৰমে চিন্তাকুলে। এই রাজ-ছাভিষেকে,-ছানল-হিল্লোগ (थिनिष्ड धत्रेषी, चटक खेवादर खेवादर, কত গজ, তুরকম, কত প্রাণিকুল স্থ্যস্থাস্থ্যার তথনি আবার আলেখ্য শাশানজারা ভয়ন্তর বেশ। রাজতত্ম চিতাপরে, অপত্য, বান্ধব, বাষ্পাকৃশ-নেত্রে ছেরি শবে। ক্ষণকালে চিতা-পাৰ্যে কোথা আচ্মিতে অটালিকা ন্ত্ৰপ্ৰিত —রঞ্জিত বসনাবৃত চাক্ৰ— বিবাহমগুপে স্থে দম্পতি আদীন ৷ মুহুর্তে স্থাবার, মৃতপতি কোলে করি কাঁদিছে যুবতী ছিন্নভিন্ন কেশবেশ: বসন-ভূষণ বিলুষ্টিত! ক্ষণে ক্ষণে কতই যুবক আহা, ভৃষিত পুষমা. প্রতি অঙ্গে স্থাধ ধেন স্বাস্থ্য মৃত্তিমান— शात्राहरह रम मार्गा---रशेवरम खनित्र ! যৌবনে উচ্চিত্র কত বামারপরাশি। কোন চিত্ৰ উপনাভকালে পূৰ্ণ এই; উজ্জল निभियमत्था। कान मीश्र ছति. প্রভাষিত নির্ভর—সহসাম্পিন ৷ কোন সে আলেখ্য-দুখ্য – দারিদ্র্য-প্রতিমা বর্ত্তমান এই বেন - দেখিতে দেখিতে মনোহর চারুবেশ মণি-মরকত-মন্ন রত্ব-প্রশোভিত: কত পর্ণশালা

ধরিছৈ সুহর্মারপ চক্ষের পলকে গ কত সে আবার দিবা স্বর্ণ-ছট্রালিকা ধরিছে কটার-বেশ কালের কালিমা. তৃণ গুলালতা আছোদিত কলেবৰ । মিশাইছে কত চিত্ৰ ফুটিতে ফুটিতে গ্ৰাতক শৈলকল: প্ৰভাতে কুছেলি আবরিলে মহীদেহ মিহিরে লুকারে ' কত দুখা মিলাইছে চিরদিন তরে। এইরূপে জগভের যে কোন প্রদেশে कालभर्म कर्मकर्प ऋखारश करवारश. গটিছে যথন যাহা সুগতি অগতি. কিবা জীব কিবা জড কি উদ্ভিদকলে। তথন দে চিত্ৰপট নিতা ক্ৰীডাময়, অঞ্চিত চইছে তাহা ,--- নিমগ্ন মানদে দেখিলেন ভাগাদের নিশ্চল-নয়নে . ব্যাত্রক বিশাল চিত্র সে আলেখ্যপত্তে কত শোভা-বিভ্নিত, কত জাভাময় দলিছে উজ্জন মূর্তি-প্রদীপ ছটায ত্রিভ্বন প্রজ্ঞাত । - হেরিলেন ভাগা কুত্হলো। হেনকালে আহব বিদারি প্ৰিল ভৈৱৰ মূৰ্ত্তি -- আকাশবাণীতে প্রকাশিয়া ব্রহ্মরূপী ত্রিমৃ**র্টি আনেশ।** সভয়ে প্রাক্তন শীল্ল ফিরায়ে নয়ন নিব্যল চিত্ৰপটে— দেখিলা সহসা বত্তের বিশাল চিত্র কালিমা মণ্ডিত. মিশাইছে ধীরে ধীরে—ধোডা-বিরহিত !

দ্বাবিংশ সর্গ

বিদিয়া অসুর-পার্মে অসুব-ভামিদী;—

ন নীরদরাশি, লুকায়ে বিজ্ঞলী হাসি,
বুকে ইন্দ্রধন্থ-রেখা, ঢাকিয়া মিহিব,
াবশি ভ্ধব-মঙ্গে রহে যেন স্থির '
যেন চল চল জলে নীলোৎপলদল

াবিত নেজ্বয়, দৈত্যমূখে চাহি রন,
নিম্পদ শ্বীর ধীব, গভীর বদন,—
না পভিলে ধারাজাল জলদ বেমন।

দেখিয়া দহজনাথ সে মুখের ভাব বিশ্বর ভাবিরে মনে. কর ধরি সবতদে. করতলে চাপি গীরে মধুব উল্লাদে. কহিলা উৎসাহপূর্ণ মৃত্ল সম্ভাষে ;— "এ কি হেরি, দৈতারাণি, যামিনী উদয় ক্ৰদপীড শবজালে এ কুথ-মধ্যাক্তকালে গ निर्द्धत कतिना शुत्री अनत्य किनिया, পরিলা অতুল ষশঃ কিরীট মণ্ডিয়া। পলাইলা সুবদেনা শিবা যেন ভারে: জয়ন্ত শশকপ্রায় तथ नास तिरा भारत পালটি না ফিরে চার, দৈত্যের ভাতনে, অমবার প্রান্তে দেব ভাবে ক্র মনে; ভালে অমুরের দল আনন্দ-উৎসাহে: পুলের স্বশোগান, ত্রিভূবনে দৈত্যমান, আজি প্রভাষিত কত। --সার্থক জীবন चाकि (म मक्त श्रिरम, मक्त भारत। হেন পুলে গর্জে ধবি, এ স্থাথেব দিনে চিত্তে নাই স্থোচছাস, মুধে নাই প্রীতিভাষ, প্রেরে কল্যাণে নাই মঙ্গল-কামনা; এ ভাবে মনের থেদে কেন ছে বিমনা ? কের দেখ কবতলে ধনের ভাগার ! কর যাহা চিত্তে শ্ব. গোষিতে পুলের জয়. खाता । जिल्लानव **उरत्रव-हिस्तार**न, এ দিন কখন যেন কেহ নাহি ভূলে। কি অভাবে মনোহঃখ, দতুজমহিষি ? কি নাঞ্চি করিতে দান কিবা স্থান কিবা মান, কহ কিবা চাহে প্রাণ, কি আশা পুরাতে-কোন রাজসিংহাসনে কাহারে বসাতে? আজিলাদবিজ যেবা দছকেব কুলে দেও আজি আশাবান আশায় জুড়ায় প্রাণ, স্থপনে কল্পনা করি অসাধ্য কামনা ! हेळ्नामधी अखिला (इ मलिन-दहना १ জননীর মন্তাপে পুরে অকল্যাণ--কে কোথা বিশ্বতিপ্ৰলে, ভাগায়ে হ্রদর-তব্দে, বিষাদে আশ্রে দিলে, কি হেন ভাবনা ? ঐক্তিলে, চিত্তের বেগে ভ্লিলে আপনা ?" উপ্তরিলা দৈত্যবাল-মহিষী তথন;— বছরূপী দেহছোৱা, খলেব চাতুরী মায়া, ধরে কত রূপ তাহা কে বুঝিতে পাবে ?

শ্বমণীর চাতুরীতে রমাপতি হারে !--

উত্তরিলা—"হে দকুজকুল-অধীশর, তথনি অদটে তার. অভাগা ধধন ধার. কত বে লাঞ্চনা-ডোগ কে বর্ণিতে পারে ? নহিলে নিৰ্দ্য তেন কেন তে আমারে ? ঐ দ্রিলা পাষাল-প্রাণ।- তুন্যে ভলিয়া, ভেবে মুখ করি কালা, ্বাপনার তচ্চজালা, আইনাপতির কাছে? হেরদয়নাথ. ক্রময় ব্যথিত আর পেলে না আঘাত ? কবে যে কঠিন হেন দেখেছ আমার? কাহার জীবন-দানে. কারে বধিয়াছি প্রাণে, निम्हा बहेश रहामा किए निवादन १ कि प्रिथित करव वन निष्टेंब एउमन १ হার, ঐক্রিলার হেলা তনরের প্রতি, ধিক ঐ জিলাব নামে. এই ছিল প্রিণামে, ভনিতে হইল তারে এ পক্ষ-বাণী। পতির বদনে, হার। ধিক রে পরাণী। কারে জানাইব আরু মনের বেদনা গ ৰশ্বকাল যার সনে. নিদ্রাহারে একাসনে, তিনিই আমারে যদি ভাবিল এমন কি জানাব কে জানিবে মনের যাতন। থাক. হে দমুজ-নাথ তনয়-বংসল, কর ভোগ একা সুথে. যে খেদ আমার বকে. থাকুক তেমতি, ছঃথে পুড়ক পরাণী। थाक स्टब्स, महामय-हिलल शांशी।" বলি ভাক্তকোধে বামা উঠি দাঁডাইল -কত অফুরোধ করি. কভ বত্তে করে ধরি. বসাইলা মহিষীরে নিকটে আমাবার. ঘুচাইলা কত বড়ে চিত্তের বিকার। কহিলা তথন রামা মধুর কপটে,— "ছে বীর সমরপ্রিয়, রণক্ষেত্রে অন্বিতীর, শান তুমি শুধু রণ-রঙ্গ-ক্রীড়া যত; তুমি কি জানিবে কহ বামা-ক্ষেহ কত ? कि कानित्व अननीत श्रांत किया रहा ? ' সস্তানের মমতায়, কত ব্যথা চিম্বা তার, কত দিকে ধার চিত্ত। হে দৈতাভ্যণ, পুরুষ বুঝে কি কভু বমণীর মন ? विषय-डेलारम এবে তুমি সে উন্মাদ, ভাবিছ আমার মন. পুত্রে দিয়া দরশন, দেখাবে কিব্লুপে তারে এ বদন ছার---

भाभीक्षेत्री-कारन यदव दनिदव कुमात्र ।

স্থাবে ৰথন 'মাতা, ইন্বালা কোথা? দিয়াছিত তব করে. পালিতে সোহাগ্ৰ কোথা সে জেছেৰ লভা বাখিলে আমাৰ কি ব'লে জনয়ে শেল বিধিব ভাছার ? হারাম্বেছি, দৈতানাথ, পুত্রের মাণিক, ছারায়েছি, হাদয়েশ, অঞ্চলের নিধি ৫ দল্পেন্ত, হারায়েছি, সুশীল তোমার, ইন্দুবালা বিনা এবে পুরী অন্ধকার !" বলি বাজাকলনেত হইলা নীরব ৷ দৈতাপতি অন্ত অচল নগেন্দ প্ৰায় চাহি ঐদিলার মথ থাকি কভক্ষণ. ছাডিলা অনল-খাদে গভীব নিম্বন, "কি কতিলা ঐলিলা" বলিলা গাঢ় সংগ্ৰ সে অধাংও নিক "ইন্বোলা নাই মম. ডবেছে কি অন্তাচলে !--পাব না কি s দেখিতে সে নিরমল পীয়ৰ আধার ? আব কি সে ক্ষেত্ৰখী সরলার কথা হৃদয় শীতল কবি. চিহ্নার উদ্ধাপ হ জড়াবে না এ শ্রেণ—জুড়াত বেমন নিন্দিত বীণার ধ্বনি ঝরিত ষ্থন ধ না ঐদ্রিলে, নিগনের নহে সে প্রতিমা-ছবিতে সে অধ্যায়. কভান্ত কাদিবে ট চিরায় সে ইন্ধালা অক্ষ রতন ,---विकशी वीद्युत गर्भः किवाय त्यमन ।" "হেন অমকল কথা, হে দক্তপতি ' কি হেতু আন হে মূথে," ঐন্তিলা কুলিম্ছ কহিলা বিমৰ্থভাবে চাহি দৈত্যপানে. "এ বেদনা কেন দাও চঃখিনীর প্রাণে? চির আব্যতীহ'ক বধু সে আমার ৷ চিরায়তী থাক ভার. পরশে না যেন ট কেশের শতাংশ ভাগ শমন দুর্ঘতি. হে নাথ শমন হ'তে নিদারুণ অতি। ইন্দ্রের কামিনী শচী-সাপিনী-ক্রিনা শিশুমতি বাবিধ कशरहे छनिना शह. সাধিতে নারিল যাহা দেবতার বলে , সুসিত্ব করিল তাহা কৃহকীর ছলে। হা ধিক ঐদ্রিলা-প্রাণে—ধিক দৈতারাজ कृति दिवसारवर्ग ভোমার কুলের বধু, ভनि कृत-मान गर्य दिनिया नकन. আতার করিল কি না শচী-পদতল ?

তব আজা শিরে ধবি, দলুজকেশরী, ন্ট্ৰ আনিবারে বাই. হতভাগা পোডা ছাই. নিবখিত ইন্দৰালা সেবে শচীপদ।--उचार् बहिना, नांध, व कनक इन ! অসহ সদয়বেগ না পারি ধবিতে #চীবে গঞ্জনা দিয়া. বধরে আনিতে গিরা, ঘটিল যা ছিল শেষ কপালে আমার.--বেমন তবাশা হার, পুরস্কার তার গ বলি নাই, ভাবি নাই, চাহি না বলিতে महिएक बहेन, প्राप्त, দে চ:খের কথা কভু. স্বৰ্গজয়ি-জায়া হ'ৱে শচী পদাঘাত। সে তঃৰ 'পাষাণ'-প্ৰাণে সভেছি তে নাথ। সহিতে না পাবি কিন্তু এ অখ্যাতি তব, নারীব কলক ভাষ্ ামীৰ কথ্যাতি হায়. ভাবি তাম সে কলক ঘচাবে কেমনে --ইন্দ্রালা পড়ে মনে জাগ্রতে স্বপলে। চল দেপাইব চল স্বচকে দেখিবে. াঝিবে সে কি কারণ, नटर 'পाशांगीत' मन. কেন এ স্থের দিনে হ'মেছি হতাশ। নারীর বচনে নাথ, কি কাজ থিখাস ?" ঈষৎ কম্পিত নাদা, কৃঞ্চিত ললাট, বিনে নিখাস খন, আগ্রফিন তিনয়ন, চলিল দম্জপতি দানবী-সংহতি . চলিল দৈত্যেশ-বামা গৰ্কিত মুর্জি . ধন্ত রে ঐক্রিলা ভোর পণে বলিহারি ' চাপি চিন্তা, চিত্তবেগে, লছ নদীর বেলে: সাধন করিতে নিজ সাধেব মনন : জান না হৃদ্ধে কভু নিরাশা কেমন। চলিল৷ অসুবপতি মহিষী-সংহতি, নির্থিলা স্তরে শুরে, টিলা **প্রাচীরপরে.** অকল সাগার তুল্য সুরামুরদল, নির্বিলা স্বর্ণময় স্থামেক অচল। শোভিছে অমরা প্রান্তে – সহল্র শিথব বেন কল্পনার বেদী, िंग्इ व्यवस्थ (छिनि. মুরবিমোহিনী মৃতি সাঞান রয়েছে! निर्माल किंद्रनेमाला मर्कीएक म्टब्स्ट ! ান দে শিখরে তার — মাহা, কিবা শোভা তার, য়া কিরণেতে মিলি. থেলিতেছে ঝিলি মিলি, দেখার ভর্জনী তুলি দছক্ষহিধী --বসিয়া সুরেশ-কান্তা উত্তলিছে দিশি;

পদতলে ইন্দুবালা মলিন বদনা— শীণালস কলেবর, অফুট কুমুম-থর, মধ্যান্ডের সূর্ব্যতাপে বিরস বেমন, নিশ্চল, অলস, অর্দ্মদিত নয়ন, কাছে রতি ভ্রমতি চপলা অচলা. তেরিছে সমরাঞ্চনে. মগ্ধচিত কয়জনে---চাক চিত্রপটে যেন তুলীর লিখন। নিব্ৰখি দছজবাজ বিশ্বয়ে মগন। বিসায়ে মগন দৈতা কভক্ষণ থাকি করিল নাসিকা-ধ্বনি, গরজিল যেন ফণী. ন্দ্য ছাডি লভিয়তে স্থমেক দেহ বাড়ে . কেনকালে সুৱাসুৱে সিংহনাদ ছাড়ে,---পরিয়া সমবক্ষেত্রে দেনা-কোলাহল সহসা শক্ষেতে উঠে. वश व्यथ त्वरण इस्ते. করিব্রঙ্গ শুগু তুলি গর্জ্জিল ভীষণ, বাজিল পটহ. ভেরী, দামা, অসগন ! নিমিষে পালটি নেত্ৰ দেখিলা প্ৰাক্তে. যেন বিহ্যাতের গতি. क्रमिशेष वर्ष न्त्रधौ. ছটিছে বাহিনী-অগ্রে, উঠেছে পতাকা, ভয়কর বাতৃদ্ধ কেতৃ-অঙ্গে আঁকো। নির্থি ভলিয়া দৈতা সকল ভাবনা, ন্থিব-নেত্রে স্তর্ধবৎ, वक्तरहे ठांकि तथ, দেখিতে লাগিল বৃত্ৰ অনক্ষমানস বথের তরঙ্গতি, অধের তরস। সমর-আফলাদে চিত্র সদাই বিছবল, তাহে পুত্ৰ যদ্ধনাজে. প্ৰবেশিছে শক্ৰমানে, নির্থি অপুর্রভাবে হৃদ্য ম্থিল. অন্তত আনন্দ্ৰোত চিত্তে প্ৰবাহিল ! দেখিলা অম্ব-ম্ব মধ্যস্থলে আসি. স্থির হৈল রথগতি, অতুল আনন্দমতি, পুত্রের সমবসজ্ঞা হেরে বুত্তাস্থব— রতন-দন্তবা বিভা উছলিছে ধুর, শুভ্ৰ সাৰদেৰ পুছহ মণিওছে নত তুলিছে শীৰ্ষকে বাঁকা, অন্তাণে অন ঢাকা, হীরকমণ্ডিত অসিমৃষ্টি কটিতটে, मात्रमत्न व्यमित्कांव इनिष्ट मांभए । বক্র ধন্ম: বামকরে, রথ-মঙ্গে শোডে, নানাবৰ্ণ ধছওবি হেম্মর নানা তৃণ, শাণিত কুপাণখেণী, গদা, প্রক্ষেড়ন, शकुष छ विविध आधूध अवश्व ।

ধন্ম:পরে করতল উঠি মহেঘাস. ব্দিরাসমরাস্থ্যে ভীম শৃত্যু নাদি .--দাভাইলা রথোপরে. গন্তীর বিশদ পরে, বাজিল চন্দভিধ্বনি. খন খন খন খনি কভিলা সন্তাষি ক্ততে, প্রফল্ল নয়ন--বাজিল সমরত্বী যুডিরা প্রাক্প; "ছে সার্থি আংজি মম সফল জীবন . দানবের সিংহনাদে কাঁপিল গগন। তুৰ্জন্ন ত্ৰিদশনাথে সমরে সম্ভাষি হেরি বডানন শীঘ্র সেনা-অগ্রভাগে পরিব অতল যশঃ. উজ্জল করি শিরস, আইলা-নক্ষত্ৰগতি. সদল বিপক্ষ মহি রাধিব অক্ষর খ্যাতি অক্সরমণ্ডলে, मां जोरेन निविध्तक थेत थेत थेति : দেখাৰ কামুকি শিক্ষা স্থৱর্থিদলে ! উডিল বিশাল কেত শত্ত শোভা করি। कहिला डिमानसन कलम गर्कात्न,-জানি মৃত্যু স্থনিশ্চিত বাসবের হাতে, রণভগ্য খনরং আজি এ সমরাক্রে. ভাজিব অক্গ-মনে. মহুৰ্তে নিস্তব্ধ সব. রথের মর্ঘরশাদ, হস্তীর গর্জন. এ দেহ, হে সতবর--সৌভাগ্য আমার. ভালে নালিখিলা ভাগা অক মতা ছার ! ক্যুব্ৰজ শুক্তাৰ উন্নত **প্ৰ**বণ .---কহিলা জলদম্বনে—"রে দান্তিক শিশু, ত্রিলোক অজের ইন্দ্র ত্রিদিবের পতি. বহিনরে নিবারি রণে. উন্মত্ত ইলি মান প্রক্রেপ প্রথায়ার. বীব-চকে চমৎকার. অমৰ-সেনানী-অংগ আ(ই)লি একা বণী, তাব সনে আজি রণে যুঝিব হরষে, ভূলিলি শ্যন-ভয়, আবে ছন্ন্মতি ? এ মরণে কাব মনে মুখ না পরশে ? যে শিবিৰে আদিতের মহার্থিগণ. সাবপি, মৃত্যুর চিষ্ঠা ব্যুচছে এখন, এক একজন যার. নিমিষে ব্ৰহ্মাণ্ড ছাল দেখিবে অন্তত রণ. আজি সুরাস্তরগণ, বিক্রমে কবিতে পাবে অবহেলি ভায়. দেখিবে বীবের মৃত্যু সম্ভত কেমন. সমবে পশিলি একা অবোধের প্রায় ? এক কথা, সাব্ধি ছে, রাখিও শ্ব্বণ.— না চিনিলি প্রচণ্ড মার্তণ্ড গ্রহনাথে ? অক্তিম-শর্মে যবে দেখিবে আমায়. দিশ্ধ যারে নিতা **সে**ং প্ৰন ভীষণ দেবে. রণক্ষেত্রে, এই দেহ, দেখো যেন শক্ত কেছ. আক্রেদ্ধ ৰকণ পাশী ? যম দণ্ডধরে ? ঘূণিত চরণে নাহি কবে প্রশন. রাক্ষস পিশাচে যেন না করে ভক্ষণ। ফণীন্দ্র বাস্থাকি ফণাধব-কলেশরে ? ভীম অঙ্গারক কজ. সৌরি শনৈশ্চর. এই আমগ্রিচক্র রথ লভিয় যাবণে, বৈনতেয় খগেখব. নৈঋতি নৈঋতি ছাবাইয়ে ভতাশনে. দিও হে পিডচরণে. জয়ত্ত বাসবপুত্র অসীম সাহস. দিও পরে এই মম অংক-আম্ভাদন, আমি দেব-দেনাপতি ভবেশ-ঔরস। বলো-কুনপীড-সাধ হয়েছে সাধন! এ বীরবুলের মাঝে বল কার সনে, এই অৰ্ঘা, পুত শ্ৰেষ্ঠ দিলেন জননী. যুকিবি রে ধহুঃ ধ্রী তাঁর প্রাণাধিক পুছে, যঝিবি সাহস কবি? রক্ষিতে সমরক্ষেত্রে. দেবেব বিক্রম কত দান্তিক বালক-দিও জননীরে পুনঃ বলিও তাঁচায় সমুদ্র শুবিতে চাও হইয়া শুষক ?" মত্যকালে এই অর্ঘ্য ধরিত্ব মাথায়। "হে পার্বাভীমত" দর্পে উত্তরি তখন, দিও, স্ত. এ সারসপুচ্ছ মণিময়. "পাবে শীঘ্ৰ পৰি কহিলা বুত্তনয়, **উड्डन भीश्क**शद्र. আজি যাহা শোভা করে, শিশু কি প্রাচীন এই অসুর-আত্মজ, দিও ইন্দ্রালা-করে করিতে স্থবণ, বৰে আংগ্ৰস্ব শীঘু হও শিবিধ্বজ. डेगां पिनी (প্রমে বার মুগ্ধ আজীবন, কি দল বিচাবি কার সনে করি রণ. বলো তারে, সার্থি হে, বলিতে বলিতে পরাঞ্জিব সংক্র करत्रिक व्यवज्या ११, ঝরে হিমবিন্দ-ঝারা, करलात्न विक्न धाता. নিদেব করিব স্বর্গ, আজি এ সমরে, ভাবি সে রদয়ময়ী স্লেছের পুতলী.

चनवारम कर्शदाश-नीविवन वनी :

নতুবা ভ্যাঞ্জিব প্রাণ ব্যাকুলি অমরে,

যত জন যেবা ইচ্ছা হও অগ্রসর. বিজ্লীর বেগে ধেন ঘুরিতে লাগিল, সাধিতে বীরের কাজ, ভিব **বিমুখ আজ**. চক্রাকারে মহারথ, অনল ক্ৰিক্বং. আজি সমরের পণ উদহাপন মম. ক্ষিপ্রহঙ্গে ক্ত্রপীড ভীম ধত্ব ধরি খুচাব সমরে পশি দেব-চিত্তত্তম। কিবা শিক্ষা অন্তত চারি বথোপরি. ভেটিৰ সমরাঙ্গনে স্থরনাথে আজি. হানিতে লাগিল শর শিলাধারাবং, শিঞ্জিনীর ক্রীড়া তাঁর. तेरहरू **हम्दकांत्र.** চক্রাকারে শুক্তপব, একে ধোর অস্থ্র. पिथित (म क्यांत ज्यो नाहि गहि चान, मखन-आकारत वाति-नहती (यमन, আভ পূর্ণ কর আশা ধর ধমুর্কাণ।" ছটিল ভডিৎগতি বিচিত্র মার্গণ, বলি সব্যসাচী বুত্রস্বত ধরুর্ধ র,---পড়িল ভাস্কর-বথ-চূড়া আচ্ছিতে. ঘচতে ধরশর. ফেলিল শতাঙ্গপর, কাপিল স্থ্যস্তদন, শরাঘাতে ঘন ঘন. লক্ষ্য করি বরুণ প্রথন প্রভাকবে, বক্লের তুবঞ্ম বাণেতে অস্থির, সেনাপতি শিথিধকে বিদ্ধি পর্শরে। ধারাকারে রুফ-অংখ ছুটিল ক্ধির। বাজিল চুন্দভিধ্বনি স্বৰ্গ কোলাখলি. অচল বাযুর রথ-তরঞ্ উধাও, ভীকর প্রাণে আভঙ্ক, শতৰেও ধনু ও ণি, বাণ-মুখে উডে তুণ, জিল সমর শৃত্য, ধহু:শৃক্ত প্রভঞ্জন নিমিষে বিকল, ঝডগতি চারি রথ ছুটিল সমুথে, ছটিতে লাগিল বেগে ভ্রমি রণস্থল। ছুটে যথা প্ৰহেলিকা গাঢ় অভ্ৰমুখে। অন্তির পার্বাঙীস্থত ব্রস্থত-তেন্দে, চারি কোদওের ছিলা বধির শ্রবণ **এই निवातिष्ट 4**व, তথান মুহুর্তপর, वनरक कटकवादत. निनामिन ठाविधादा. স্কা আৰু কলেবৰ শ্ৰকালে ঢাকা. ছুটিল কলম্বুল তারারাশি হেন . সঘনে কাঁপিছে রথ - ভগ্রচ্ছা পাথা। ছুটে ঘনঘটা-কোলে তভিল্লতা যেন। চমকিত দেবগণ, ইন্দ্ৰ চমকিত, ছটিছে নৈখতি হ'তে ভাস্বরের রথ. ে বি দৈতামুত-বল, উন্মত্ত অসুর দল, নাসাতে প্ৰন বয়, জন্তব সাতি হয়. সুব∤সূব **ছুই দলে ধ্বনি ঘন ঘন,** করে না পরশে ক্ষণে মনঃশিলাতল-"সাধু কদ্ৰপীড় সাধু বুত্তেৰ নন্দন" ক্রোধিত তপনতেজ স্থানন উজ্জ্বল ; অধীর দেধ্বনি শুনি তরু পুলকিত, व्यशिकारित विकर्णत मुख्य इय तथ. উচৈচ:ম্বরে অক্সাৎ. উল্লাসে দমুজনাথ. টল মেখের মজে: ফেনরাশি নাসারজে, "সাধু কদ্ৰপীড" বলি নিম্বন ছাড়িল, চারি কৃষ্ণ হয় ফেন্ময় কলেবর. पृत्र मृत्र परम (यन क्रम गर्किन। শতচক্র বায়ুগতি খুরিছে ঘর্ষর। দেখিল অন্তর-ন্তর প্রাচীর-শিথবে. দ্বীশানে পাৰ্বভীস্থত-শুন্দন ভীষণ, বুঞান্ত্র মহাকার; গাঢ় খনরাশি প্রায়, শাৰ কেতন চড়ে, উড়িছে আকাশ যুড়ে, मां जारब विभाग रुख गृत्त्र धामातिया, থেলে বেন ইন্দ্ৰধমুঃ আভা ছড়াইয়া, আশীর্কাদ করে যেন পুজ্রে সঙ্কেতিয়া। অখের তরলগতি তরক কিনিয়া। চঞ্চল নিবিড় কেশ উড়িছে প্রনে. বায়ুকোণে প্রনের শতাকের খেলা,---শ্বণে বীর-কুতল. াকিরণের রেখা, यांत्र कि ना यात्र (मथा, বিশাল ললাটয়ল, ভটিনী-বেষ্টিত কটি প্রস্ত উরস, ছুটিছে মানসগতি জিনিয়া তর্সে,— তিন নেতে অরুণের রক্তিমাপরশ। কুরক অন্ধিত কেতু গগন পরশে। বুত্তে হেরি দেব-যোধ পদাতিকদল দেখিয়া দৃহুজনুত সমর কুশলী मखरन मखरन फिर्न, ভীও কুরদের প্রায়, বেগে শত দিকে ধার, াদিলা সার্থিরে. রণক্ষেত্রে নিক্ষেপিয়া চর্ম প্রহরণ ; বেগে চালাইতে অখ, না হয় বেমন পালটি ফিরিয়া নাহি করে দরশন। न्याका क्रवकान (वांठेक अन्तन।

নির্থি উদ্দেশে বুজ ধ্যু: হেলাইয়া . রুদ্রপীড প্রণমিলা, কণ কান্ত ধহু: ছিলা. আবার কোদওঘাতি টানিয়া শিঞ্জিনী. চমকিলা জ্ঞা-নিৰ্ঘোষে অমৰ বাহিনী। অধৈর্যা অমবর্থী সরোধে তথন. আজা দিলাতিন জন. চালাইতে অফুক্ণ, ক্ত্রপীড়-রথমূথে নিজ নিজ ধান, সভাকে কোদও ধবি কবিল সন্ধান। চলিল দৈত্যারি-রথ অবার্থ গতিতে. নামানি শরের গতি. না মানি বিপণ পথি. অবিচ্ছেদে ঋজু-গতি চলিল সমুখে – ছব্বার বিশিখ-স্রোভোবেগ ধরি বকে ! তিন মধে তিন দেব স্তর্থী নিপুণ. বকণ বারিধীখর. গ্রহপতি প্রভাকর. তারক-হদন শূর পার্বতী নন্দন--অক্তদিকে গদাহতে ভীম প্রভঞ্জন। কদ্রপীড রথগতি মন্দিভূত ক্রমে, ক্রাক্স ক্রতর. চকে ভ্রমে রথবর. শেষে স্তির মধ্যস্তলে নিবারি গমন . হেরি সুরুর্থিবন ছাড়িল গর্জন। "মাতৈ মাতৈ" শব্দে ভীষণ নিনাদি. "হের পুত্র ধহর্দ্ধর, কছিল দফুভাষের. ক্ষণকাল নিবার এ স্থর রথিগণে. এখনি বাহিনী সঙ্গে প্রবেশিব রণে ! (गांकर्, भागिवाइन, गांधि, घरहाँ ५कह, সোমধতি, তণগতি, হে দৈত্য-রথিক-পতি, বীরেন্দ্র-পষ্ঠেতে শীঘ্র ২ও অগ্রসর"---রণক্ষেত্রে চাহি উচ্চে ডাকি দৈত্যেথব, নামিলা প্রাচীর হ'তে—এখানে ত্বিত . মিলি সুর-রথিগণ, আরম্ভিলা মহারণ. ঘেরি রুদ্রপীড়-রথ বিষম হঙ্কারি দৈতাস্তত শররাশি শরেতে নিবারি। কাটিলা ভাষর অগ্নি শুন্দনের চূড়া, कारिना त्रापत ठळ, তারকারি শরে বক্র. বৰুণ শাণিত অন্ধ হানিতে লাগিলা; সদাগতি গদা ধরি ক্রোধেতে ছুটিশা--नाम्क नाम्क अनिक्ति क्रि हार्तिन्दक. রথচক্র পাতে পাতে, ্ৰন ঘন ধোর ঘাতে, हुर्व देकना क्लकारन व्यवस्त्र वस्ती,

क् फ़िला निमित्त हुन गुशस्त्र, जान !

অচল দেখিয়া রথ দক্তককেশরী লক্ষ্য দিয়ারণক্তের নামি মনঃশিলাভ সিংহ ষেন গাড়াইল কিরাত-বেষ্টিত, দীপ্ত তরবারি বেগে মন্তকে ঘর্ণিত: শত থতে থতা কৈল প্রনের গদা: নিমিষে কাম্ম ক পুনঃ, ल'रत्र करत्र मिला क्ष শিঞ্জিনী অপুর্বা রকে খেলিতে লাগিল, ক্ষণে ক্ষণে শরকাল গগনে ছটিল। আঘাতিল প্রভাকরে বকণে আঘাতি. আচ্চাদি কুমাব-অঙ্গ, **मर्जान्दक** इ'रग्र इ পড়িতে লাগিল ঢাকি শতাক গগন, বিমুখি সংগ্রামে শরদক্ষ প্রভঞ্জন। তথন পাৰ্কাতীপুদ্ৰ দেব-দেনাপতি. निवा षाञ्च धति करत्. দ্বিগণ্ড করিয়া শ ৰুদ্ৰপীড়-শ্বাসন ভীষণ আঘাতে---নিমিষে বীরেন্দ্র, ধন্ধ: নিলা অকু হাতে . নাটাৰিতে শিঞ্জিনী প্ৰচণ্ড দিবাকর কোদও ফেলিলা গ্ খণ্ড করি থুরে গুরে, বসাইলা চাপে অস্ত্র ঘোর আভানয়. নির্থি তিলাদ্ধ কালে বুত্তের তনয় ধুমদণ্ড—ধুমকেতু-আক্বতি ভীষণ— वाञ्जिल थरव । धतिना मान्छि करत्, কিরণের দ্বেথাকারে গগন বিস্তারি-ভাত্রমধ শ্লাকা সহস্র সারি সারি। ঝাপটে ঝাপটে ঝাড়ি যে দিকে হেলায়ে দে দিকে শলাকা ধরিছে আকাশমূথে, निनाकारत शाजुत वर्खन वाहितिएह, ঘোর শব্দে শৃকুমার্গ ছি ডিয়া ছুটিছে . क्लकान कच्च बाहर भवरम वर्छ,न, অদুশু কবি টা क्ति जिन्न हर्नकान, চিহ্ন নাহি রহে তার দেখিতে কোথার, ভীষণ বৰ্জুল হেন কোটি কোটি ধায়। न ७-७७ (मर-त्रथी विमान-मणनी। श्रेष्ठ निनाद घन, ধাতুর বর্ত্ত পিও ঝলকে ঝলকে,— ভাকে রথ ধহু সত্ত্বে পলকে পলকে; ভাছে প্রভাকর-রথ ক্ষার-দগ্ধ বেন , वक्रावत विवा यान. ক্ষপমধ্যে থাৰ কোটিখতে কান্তিকের বিমান ভালিল, (प्रवृत्थ-कृत खरम त्रार एक निन्।

তথন দেবেন্দ্ৰ ইন্দ্ৰ সাপটি কামুকি. টক্ষারি ভীবণ স্বনে, অগুসর হৈল রূপে. দিব্য চাপে বসাইলা অস্ত্র ধরশাণ, টানিলা ধহুর ছিলা করিয়া সন্ধান— ছটিল বিহাৎগতি নি:শব্দে অম্বরে, gশাণিত ম**হাশ**র পডে ধুমণ ও'পর, কাঁপিতে কাঁপিতে খণ্ড তথনি নিমেষে, হইল সে ধুমদণ্ড কাশ্তণবেশে। উডিল শলাকাকুল দণ্ডমুষ্টি ছাডি. আভাদি গগন-তমু. যেন প্ৰমাণু-জ্বণু. অদুশ্য হইল শুন্তে কোটি পথে ছুটি ;— ক্দপ্রীড-হাত হ'তে পড়ে দণ্ডমৃঠি। নিকটে আসিয়া ইক্স প্রসক্ষবদনে. माध्याम विश्वा. বুত্রস্থতে বাথানিয়া, কহিলা "সুববি, ধক্ত শরশিকা তব, (मशाहेला बीववीर्ग आबि अमल्ब , এখন প্রস্থান কর রণস্থল ছাডি; গাম না কর আবে. মনোগত প্রস্থার. পেয়েছ, হে বুত্রস্ত, লভ গে বিস্থান. নহে হল্ব তব সনে নাচাহি সংগাম।" কহিল দমুজনাথ-তন্য বাসবে---াইল মেখবাহন. শুনিরাছ মম পণ, পর্গেতে থাকিতে দেব না ফিবিব ৰূপে, গীবিতে লজ্মিয়া পণ ফিরিব কেমনে গ াথা আকিঞ্চন তব, দেবেল বাদব. **ৰ্ছিজীবন পণ**, করিয়া তা উদ্ধাপন, আজি পুৰাইৰ মম জীৰনের আশা. শ্বিতে যন্ত্রপি হয় মিটাক পিপাসা---নিটাব পিপাসা যুদ্ধ কবি তব সনে. ^{হি} এ সমরকেতে, দেখিব প্রফুল-নেত্রে জ্যা-বিক্সাদ তোমার কোদণ্ডে স্থরেশর, ^{শব} প**হঃ, যোধবাক্য রা**খ ধছর্দ্ধর।" ∄খাইলা নানামত ইআং মহামতি, বে ঃইতে ক্ষাস্ত্র. দৈত্যস্তে রণশাস্ত, ^{ছ-৬মুদ্ধে} অসম বিপক্ষে সংঘাতিতে, শতত বিরাগ-ভাব দেবেন্দ্রের চিতে। নাবিলা বুঝিতে ধদি কছিলা তখন, भद्रत्वा मःवद्रम्, वृद्ध कार्रवाङ्ग. ^{কর} ভবে পার যদি বেগ নিবারিতে।" শাজা দিলা সার্থিরে অক্স রথ দিতে।

মাতলি অপুর্ব বান বোগাইল ত্রা-বুৱম্মত জভগতি, ক্ষণে আরোহিলা তথি, বাছি বাছি প্রহরণ তুলিলা ভাহায়; ছুটিল অমররথ অপূর্ব্ব প্রথার। বাজিল অভুত রণ হই ধ্রুদ্ধবে; কে বৰ্ণিতে পারে তাহা, ভূবনে অতুল ধাহা. মুরেক্র অমরপতি খ্যাত ত্রিভূবন---মহাধোদা ধহুদ্দর দুমুক্ত-নন্দন। কিবা কোদণ্ডেব গতি—শিঞ্চিনীর ক্রীডা, ফিবিছে বিমান্ত্র, রণক্ষেত্রে সমুদয়, ক্ষণে দুরে—ক্ষণে কাছে—ঘেবি পরস্পরে, সহসা সংঘাত খেন আবাব অন্তরে। কিরিছে বিপুলবেগে, না পরশে তবু, চ্ডা ঋগ কেহ কার. বেন রঙ্গে নিত্যকাব, নর্ত্তকের সঙ্গে কিরে প্রমোদ মন্দিরে— না ঠেকে বাহুতে বা**হু—শবীরে শরীরে**। কণন দৈত্য-বিমান পুস্পকে লজিয়া मृत्म डेठि क्लकान, বিস্তারে বিশিশকাল. (मोनामिनी (थटल एक निकर्त क जिल्ला। আবার ইন্দ্রের রথ নিকটে আসিয়া. প্রন বিদারি বেগে মহা শুক্তে ধার, দেখিয়া কপোতে দূরে, मृत्म (वन पृत्व पृत्त, তুই বাজপকী ফেরে পক সাপটিয়া, নগে পত্ত থতা দেহ ক্ষিবে ভিজিয়া। কথন বহু অন্তবে অচল স্থান, ছই ব্যোমধান স্থির, শহুধরি ছই বীর, থেলার শর-তরঙ্গ দেখিতে অন্তত। নিঃশব্দে অন্তর-দেহে অযুত্ত অনুত পুরয়ে মণ্ডলাকারে হুই শবখেণী, প্রাস্ত দীমা অহমান, न्तिक्छ इहे यान. ভবন্ধ আসিছে এক ছোটে অন্ত ঝারা তুই কেন্দ্ৰ-মাঝে ধেন বিত্যুতেৰ ধাৰা! যুঝিল এ হেন ক্লপে সমর-নিপুণ চমকিত ত্রিভূবন, . ধ্রুদ্ধিব ছাই জ্বন, যতক্ষণ কন্দ্রপীড-অস্থ না ফুবায়---নেহাবে অস্থ্ৰ স্থ্ৰ অদাডেৰ প্ৰায়! ৰে মৃহুৰ্তে নিঃশেষ হইল তাৰ তৃণ, ৰীবেন্দ্ৰ শতাক'পবে, তথনি ইজের শবে. পড়িল সহস্ৰ শবে জৰ্জাবিত-তমু. খসিল শীর্ষক শিরে করওলে ধহুঃ।

পডিল জিদিবতলে সার্থি সহিত. অচ্ছিদ্ৰ নাহিক স্থান. শুকু ছাডি ব্যোমধান. ত্রেতায় কর্ম,বপতি শবেতে অস্থির। পডিল গভার্ বথা জটার্-শরীব। উঠিল সমবক্ষেত্রে হাহাকার ধানি। বকঃ ভিজাইয়া জল. আকুল দমুজ্দল, প্ডিতে লাগিল স্লোতে, ভাসারে নয়ন; নীবৰ অমবদল বিষয়-ৰদন। উঠিল দে কোলাছল - জেন্দন-কলোল নেত্রযুগে ধীবে ধীবে. কনক-ছমেরু-শিবে শচীর শোকাশ্রধানা বহিতে লাগিল, সহস। বিবর্ণ-তমু -- চপলা কাঁপিল। জিজ্ঞাসিল ইন্ধালা আতক্ষে শিহবি, কোন বামা-হ্রদিভলে, কে পড়িল বণস্থলে. আবাৰ হৃদয়নাথ বাতিল আমার -কার ভাগো ভান্ধিল বে অথেব সংসাব ?" চপল । অখ্ট-স্ববে রুদ্রপীড নাম উচ্চাবিল অকলাৎ, হলে ধেন ৰজাঘাত. না পশিতে সে বচন প্রবণের মূলে— পড়িল দানব-বধু ইক্সঞ্জায়া কোলে। क्तकोडेल डेन्स्वाला - निर्माद्यय कुल, ষেন স্বপনের হাসি, इस्य द्वा रम जलनामि. লুকাইল নিদ্রাকুলে — ফুটিবে না আব ! ছিন্ন যেন শচীকোলে লাবণ্যেব হার। "কেন বে চপলা হেন নিদারণ হ'লি ? ঘচায়ে স্থ্ৰভি বাস, কেন সে দাকৰ খাস, পবশিল এ কুসুমে ।"-বলি হলে তুশি ধবিলা ইন্দ্রেব রামা সে স্বেহ-পুতৃণী। এখানে সমবাঙ্গনে প্রবেশ্বর-কাছে. য়ভিয়া যগল কব. নয়নে শোকাঞ্চ থব, রুদুপীড-সাব্রথি কহিছে থেদস্বরে -গহৰবেৰ মুখে যথা গিৰি-ধারা থবে! "পুরাও সদয় হয়ে, হে অমবনাথ, কুমাব বাসনা আজি, , প্রভাতে সমরে সাজি, আইলা ষণ্ন বীব কহিলা আমায়---এক কণা, সাব্যি হে, আদেশি ভোষায়, দেখিবে অস্তিম কাল ধণন আমাব, মম দেহ প্রাদলে, শেথো বেন বণস্থলে. চবণে প্রশি কেই না করে হেল্ম--রাক্ষণ পিশাতে যেন না করে ভক্ষণ।

এই অগ্নিচক্রবর্থ লভিমু যা রর্ণে হারাইয়া ভতাশনে. দিও **হে পিত**চৰত দিও পদে এই মম অন্ধ-আচ্চাদন, বলো-কুদ্রপীড-সাধ হয়েছে সাধন। সে রথ উৎসব এবে, হে অমবনাথ, **কব**চশীৰ্শক স আজা দেহ বীবতমু. লয়ে জাঁর পিতপদে সমর্পণ কবি---প্রাও'বীবের সাধ, হে বীবকেশরি।" বাসব ত্রিদশপতি সার্থি-বচনে কহিলা---"শুন রে স্তত্ত দৈতামত কদত দেখাইলা রণে আজি সময়-কৌশল. শুক সুরাসুর তার হেরি ভূঞ্কবল। এ ছেন ৰীবের শব পবিত্র জগতে . চিন্তা নাহি কর চিতে, আমি সে দিব বহিং এ বীবেদ্ধ-মতদেহ, নিজ পুস্পবথ---ইথে লয়ে পূৰ্ণ কর বীব-মনোর্থ।" সার্থি সঞ্জনেতে স্থবেক্ত-আদেশে দৈনিক সহায় করি, তলিয়া পুষ্পকোৰ্গা কদ্ৰপীড-মৃততমু অস্ত্ৰাদি ভ্ৰ্ষণ . ইক্রাদেশে শব সঙ্গে ফিবে দৈত্যগণ। বাজিল সমর-বাত গ্রীর নিনাদে , চলিল পতাকাধা রথ-পার্থে দারি সারি. পদাতিক মাতক অৰ পশ্চাতে চলিল,-ধীরে খীরে অমরার হারে প্রবেশিল।

ত্রয়োবিংশ সর্গ

পুত্রে আখানিরা বৃত্র ফিরিয়া আনহে,
করিলা সমর-সজ্জা রণক্ষেত্রে ধরং
প্রবেশিতে পুত্রের সহারে। অজ্ঞা দিণ
বোধরন্দে সমরে সাজিতে অচিরাৎ।
সহস্র কোদওধর শত যুদ্ধ যারা
যুদ্ধি দেবরিথ সনে মথি সুরদল;
লভিলা বিপুল যশ: অতুল উৎসাহে
সাজিতে লাগিলা দৈত্য আদেশে তথনি
কিরিলা সভামগুণে বৃত্র মহাসুর।
মহাপাত্র স্থানতে চাহিয়া ধীরভাবে
কহিতে লাগিলা বৃত্র;—"কি কৌশল ধ্
যুদ্ধিরে দানবগণ—রক্ষিরে নগরী?
কে বৃক্ষিরে পূর্বহার কেবা সে দক্ষিণে

থাকিবে খদৰ সলে ? কোনু সেনাপতি পশ্চিম-তোরণ রক্ষা করিবে বিপদে? কেবা সে উত্তর হারে প্রহরী নিয়ত 🧨 হেনকালে ঘোরতর ক্রন্দন-আরাব উঠিলা বিমানমার্গে, গুরু সভাক্রন ত্রনি সে ক্রন্সনম্বর—স্তব্ধ সে নিনাদে ইক্রারি দমুৰেশ্ব চাহি অমাত্যেরে, জিজ্ঞাসিলা "কোন বীর আবাব পডিলা শ্বাঘাতে ? কহ হে সচিব, সহসা এ কেন হাহাকার গ কেন হেন কোলাহল গ ভঙ্গণে. হে সুমিত্র, লভিলা জনম দানবের কুলে পুত্র বীর কুদুপীত। ধল রণশিক্ষাতার—ধক্তবাত্তৰ। সকল সাধন এত দিনে। ভুজ-ৰলে मगर व्यमद्रोमण निवादिला এका: জিনিলা ৷ মরে বজি চুর্নিবার দেব ; बिनिन। কুবেব ভীম বলী: বিমুখিলা ক্ষে একাদশ--বলে বৌদু ভেজ যাব . ইক্লের নন্দনে খেদাইলা ফেক ছেন। নিংশক্র করিলা পুরী, প্রাচীর বাহিবে মণিছে সমরে এবে অমর-বাহিনী ঘুৰত্ত বিশিখজালে: স্বচকে দেখিতু-সে জুজুর সাহস, সমর-নিপণতা চাবি মহারথী সঙ্গে গুঝিছে একাকী। য়ানি মন্ত্রি, জানি তার বীর্ণ্য-রণোল্লাস পারে সে যুঝিতে একা প্রচণ্ড ভাগরে भैमवनी **आ** अक्षरन, किश्वां निक्किंधत्त, কিংবা মহাপাশধারী কারিকুলনাথে , কিন্তু মুরপতি ইন্দ্রে, কি জানি উৎসাহে, একাকী ভেটরে পাছে । মলি হে, সত্তর ^{আজা} দেহ র্থিবনে হইতে বাহিব।" হেনকালে ক্রুপীত-সার্থি বহিলক গথিলাপুষ্পক বথ আক্রের মাঝে! ^{ন্ত্}মুখে স্থপতাকিবৃন্দ দাঁড়াইল: মুচ্মন্দ রণ-বাছা বাঞ্চিল গম্ভীরে; শিহরিণ সভাজন অব্র-মঙ্গী; ^{কাণিল} বুত্রের বক্ষঃস্থল ঘন বেগে। হিলক সঞ্জ আঁথি রথ হ'তে নানি, मिरित्र जनमञ्जा नरम शीरत शीरत ^{গ্ৰ}েশিল সভাতলে। হেঁটমূথে আসি

রাথিলা দমুজবাজ-চরণের ভলে. সুদিব্য ক্বচ, আভাময় সুমেগ্লা অদি-কোৰ-নিসদ-কামুক-চন্দ্ৰহাস বাথিলা, হার, ফেলি অঞ্ধারা, শারক শোভিত সারসপুচ্ছ-ওচ্ছে মনোচব। দৈত্যরাজে নমি, দাঁডাইলা যোডহন্তে . কহিলাকাঁদিয়া-- "প্রভু. কি আবুকহিব ?" ব্রাম্ব, প্রশেকে অধীর সদরে, অশ্বিদুনেত্কাণে সহসা ঝবিল. কহিতে লাগিলা হতে – হায়, বাণুখন বনবাজি-মাঝে ৰথা---"হবে না বলিতে বার্ত্তা তোর, রে বহিলক, জেনেছি দকলি, দৈতাকুলোজ্জনরবি গেছে অন্তাচলে।" দূরে নিকেপিলা শৃল - এখন নিফল। নীরবে বসিলামহাত্রর। ক্রণ প্রে ত্ৰিয়া লইলা বংক পুত্ৰ-ভক্তজন . চাপিয়া হৃদয়ে ধরি, পুত্রে পাইয়া যেন আলিখন দিলা ভাষ করিয়া চম্বন। কৰচ, শীৰ্থক, নেজনীৱে ভিঞ্চাইয়া। উচ্চাদিল সভাস্থলে শোকেব নিখাস। যথামত মৃত ছবে সাগর-ভিল্লোন উচ্ছাদে বেলায় পড়ি, নিদ্ধগর্ভে যবে ডোবে কোন নীরকলা, মুহুগ্রাদে তথা উচ্ছাসিল সভাগন সত্ৰপীড-শোকে। শোকাকল বহিলক ওখন খেদধ্বে करिना .-- '(इ देव जवाज, दह वो वस्थनो, হে মিত্র অমাত্যগণ, না দেখিলা, হার, কি ৰীরত দেখাইলা অভিনে ক্যার ৷ সূত মামি তাঁব, কত যুদ্ধ নির্থিত, সে বীরের বীরদর্প—কিন্ধ কভ কেন অদভত অস্কেপ চকে না হোবত না ভানিত এ প্রবলে। বীরচভামণি মৃত্যুকালে দেখাইল। বারত্ত্বে শেষ। সূত আমি, কি বর্ণিব, কি জানি বর্ণিতে, সে কামুক-ক্রীডাভন্নী--সে ভুজ্চালন বিজলী-তরজ-লীলা জিনি চমৎকার ! অন হেরি দেবকুল স্থবরথিগণ, সূৰ্য্য, বায়ু, বৰুণ, পাৰ্ব্বতীপুত্ৰ ধীর, অন্তির আকৃল বাণে নারিলা তিষ্টিতে,— इंडिक्टन अटकवांद्र युविका कुमातः।

কি বলিব, দছজেল্ল চকে না হেরিলা! না ভ্ৰিলা দে বিশ্বর-প্লাবিত উল্লাস শাধুবাদ ঘনধ্বনি কত শতবার উঠিব সমরক্ষেত্রে কমারে বাধানি। বাসৰ আপনি--- হায়, শৱে হার বীর গতজীব—বিশ্বিত অন্তত বীৰ্য্য হেরি. দিশা নিজ পুপারথ, ত্রিভবনে খ্যাত, বহিতে বীরেন্দ্র-সজ্জা, অর্পিতে ও পদে।" ভনিতে ভনিতে বৃত্র করিত নাসিকা. বিক্ষারিত বক্ষঃস্থলে দাপটে সাপটি ভীষণ ভৈরব শূল, কহিলা উচ্চেতে,--"সাজ. রে দানবরুদ--সংসারের রণে।" হেনকালে তথা শিশুহারা কেশরিণী বম আন্দোলিয়া এমে ৰথা গিরিমাঝে, ষাইলা ঐদ্রিলা বামা—আললিভ কেশ বিশৃঙ্গল বেশ-ভ্যা স্থ্যন নিশাস কম্পিত নাসিকারন্ধে, অন্ধিত কপোলে শুদ্ধ অঞ্চলবারা, কহিলা দানবী বোরখরে—উন্মতা করিণী বেন জীমা,— "হে দৈত্যকুলপতি, দৈত্যকুল নিৰ্কাংশ জানিরা এখনো স্থির আনছে দক্ষ হিরা? শোকে অবসর ততু হতাশের প্রার ? ধিক হে তোমারে, ব্যাধ না বধি এখন নির্থিছ শৃক্ত নীড়, উচ্ছিল অটবী । হের, দৈতাপতি, হের তপ্ত অঞ্জল দহিছে এ গওতল। আবো উঞ্জৱ শোকদাহে দহে জদি। তুমি পিতা হরে এখনো অসাড় দেহ না সরে চরণ ? কি কব, হে দৈত্যনাথ, না শিখিলা কভ সংগ্রামের প্রকরণ ঐক্রিলা কামিনী। নহিলে সে দেখাতাম কার সাধা হেন ঐ জ্রিলার পুত্রে বধি ডিটে জিভবনে ? জালাভাম ঘোর শিখা চিত্ত দতে যাতে. **নেই ভন্তবের** চিত্তে—জার'-চিত্তে তার জালাভাম পুত্রশোক চিতা ভয়ত্তর.. জানিত সে দানবীর প্রতিহিংসা কিবা।" সহসা পড়িল দৃষ্টি দহজবামার ক্তপীড়-রণনাবে; হেরি পুদ্র-নাক হৃদ্ধে শোকের দিন্ধ বহিল আবার ! বহিল লোকাঞ্ধারা গগু ভিজাইয়া।

"হাপত। হারুদুপীড।" বলি উচ্চৈঃস্বরে লইলা দমুজবামা যতনে তুলিয়া भूट्य मगत-मञ्जा-एपिया नीर्वरक সেই মাঞ্লিক অর্থা ব্রেছে তেম্ভি। জ্ঞলিল বিষম শোক সে জ্বর্যা হেরিয়া. कैंकिन मारवन लोग। शह दन । भाषात्म পশিল অনলদাত যেন অক্সাৎ ! উচ্চৈ: স্বরে কোলে করি পুল্র-রণসাজ, "হা বীবেজ-চডামণি" বলিয়া উচ্ছাদি. कैं। विमा पांकन बाटन खेलिना मानवी। "কে হরিল ? কারে দিলে, অহে দৈতারাও, আমার অমল্য নিধি ? জন্য-রতন আনি দেহ এই দতে তনরে আমার দৈতানাথ, আনি দেহ কন্তপীতে ম**ম** । এমনি কবিয়া বংক ধবিব ভাহায়. এমনি কবিয়া ভিঞাইব অঞ্চনীবে সেই চারু চন্দ্রান্য। দৈত্যকৃত্যমণি, দেখিব হে একৰার। জীবন-পীগ্রে জুড়াব তাপিত দেহ !-- এ জগৎমাঝে 'মা' বলিতে ঐদ্রিলার কেবা আছে আর ধরাসনে নহ, বংস জননীর কোলে, বলিৰ যথন ভার মন্তক চহিলা. নিদ্ৰা তাৰি তথনি উঠিবে প্ৰ মম---দৈত্যপতি, এনে দাও সেধন আমার।" কহিলা দত্তকপতি—"হে দৈতামহিষি, জানি সে কঠোর বিধি করেছে নির্মাণ ব্রত্তের হাদের জ্ঞাশা কঠার-জাঘাতে। এ শোক-চিতার বহিন জলিবে হৃদয়ে. को अखिरान, यक मिन जन्म नरक रिम्हा কি হবে বিলাপে এবে ? হা রে অভাগিনি বিলাপের বছদিন পাইবে পশ্চাৎ আকেপের এ নহে সময়, আগে খাতি পুত্ৰবাতী ইন্দ্ৰের হৃদয় এ তিশুলে. পরে বিলাপিব দোহে। হের যুদ্ধসাতে সসক্ষ স্থ্রথিবৃদ--- সমর-প্রস্থানে গমন-উত্তত আমি, বিলাপি এখন চিতের উৎসাহ-বেগ না হর, মহিৰি।" দানবের তেজঃপূর্ব বচনে এদ্রিলা পাইলা স্বভাব পুন:, অঞ্ধারা মৃছি কহিলা--- "দকুজনাথ, প্রতিপ্রত হও---

পুত্রবাতি-পুত্রে বধি দিবে প্রতিশোধ—
তবে সে হৃদয়-জালা ঘূচিবে কিঞিৎ,
তবে সে বৃথিব বীর শ্লধারী তুমি।
তবে সে কগংমাঝে এ মুথ জাবার
দেখাব দম্ভা-কুল-মহিলার কাচে।"

কহিলা দল্পজেখর উত্তরি বামার .—
"পুরাইব মনোবালা, মহিলি, তেগমার-এ শূল আঘাতে পারি যদি পুরাইতে।"

"পারি যদি প্রাইতে গ্—ক কছিলা হার" কহিলা ভ্রন্থ কহিলা ভ্রন্থ সৈ প্রস্থানে ঐক্সিলা দানতী ,—
"ব্দয়-শোণিত তব গেছে কি শুকায়ে,
প্রতিহিংসা নাহি তার গ নহ কি সে তৃমি—
সেই মহাত্মর বুত্র দেব-অসকাবী গ
এখন(ও) তৃতীর অংশ নহিল অতীত
রন্ধার দিবসমানে, তৈরব ত্রিশ্ল
এখন(ও) ধবিছ হল্তে তেমতি প্রতাপি,
'পারি যদি প্রাইতে'— বলিলে দৈত্যেশ ?"

বুঝাইলা তুনাস্থর সাভ্নিরা তায় প্রতিজ্ঞা করিয়া পুন: মগুক প্রণি, নাশিতে ইক্রের স্থুড়ে।—স্থিরচিত্তে তবে ধীরগতি ঐক্রিলা ফিরিলা ইক্রালবে।

তথৰ দমুৰপতি স্থমিত্ৰে সমোধি ক্ৰিতে লাগিলা প্ৰ-অস্থ্যেষ্টি ষেত্ৰপে সমাধা হইবে অভে । হেনকালে সেথা প্রবেশিল বীরভদ্র মহাকাল-রত। সম্ভ্রমে দমুক্তপতি প্রণতি করিয়া সম্ভাষিলা শিবদুতে। কহিলা প্রথমে-"বৃত্র, ভব পুত্র-তফু সুমের-শিংবে ণ্টতে বাসনা মন। অভ্যেষ্টি-সংকার সে বীরের করিবেন ইন্দ্রাণী আপনি। ইন্বাল্-ভতুসজে অনস্ত-মিলনে মিলায়ে সে বীর তমু সুমেক-অকৈতে রাখিবেন স্থরেশ্বী :--হে দত্তনাথ, পতিশোকে পরাণ তাকেছে পতিপ্রাণা हेम्वाला। मानरवसः, लुकाहेरक्, शाह, সে ফুর্মা-রাশি আজি সুররমা-কোলে! নিষেধ না কর, দৈত্যনাথ, পুল্লনাম প্রতিষ্ঠিত করিতে ত্রিদিবে চিরদিন।" নীরবিলা শিবদত এতেক কহিয়া। कहिना मञ्चनाथ--"उकारहर्ष्ट् शंत्र,

দে চাক কোমলণতা ইন্পালা মম;
হের মন্ত্রি বিধাতার বিধি আদভ্ত—
দৈত্যকুল-রবি দনে দে কুল-পকজ
ভূবিল হে এককালে। ছাড়িলা যথন
কন্দ্রপীড় বুত্রাম্বরে, থাকে কি দে আর
দৈত্য-কুল-পন্ধী তার ঘরে ? জানিলাম,
এত দিনে আমন্তরকলেব অবসান!
হা মাত: ফ্লালে। তব অস্ত্রিমকালেতে
চক্ষে না দেখিছ তোমা! দেবিলে মা কত
তনয়ার সেহে বুত্রে — বুত্র জীবমানে
মরিলে শক্রব কোলে। মৃত্যুব সময়ে
না পাইলে অবার্রবে বজনে দেখিতে!
হা বিধাতঃ, লীলা তব কে বুঝিতে পারে ?"

আক্ষেপি এরপে বল নিখাদি গভীর. কহিলা এইতে তমুমহেশেব দুতে. বীরভদ্রে প্রণমিয়া কবিলা বিদায়। চাহি পরে মহাস্থব গৈনিক বন্দেরে সাজিতে আদেশ দিলা—আদেশিলা শ্ব সাজিতে দহজকলো। কিবৃদ্ধ তকণ bिल क्रम्भवीत (य यात आंगाद्य. ঘোষিত অমরমাঝে সুর্ব্যাদ্যে বণ । হায় রে সে নিশি যেন গাচতর বেশে দেখা দিলা অমরায় ৷ প্রতি গ্রহে পথে মৃত্র করণ সর। আলিয়ে আলিয়ে গ্হীর হৃদ্যোচ্ছাস মধ্ব গভীর, পিতাপুলে, মাতাস্থতে, ভগিনী-বাতায় কত ধীর আলাপন, মধুর সভাষ, বিনয়, ককণা, ক্লেছ, মমতা-পুরিত। বনিভার স্থালিত কতই বিলাপ ! পতির আন্ধাস প্রেম্ময় মোহকর ! কাদিতে কাদিতে পুলে সাজাইছে মাতা চন্দি কভবার স্নেছে পুলের ললাট। মছি নেজনীর বীর অলীক আখাদি বঝাইছে কত তায়। জননীয় প্রাণ ভলে কি চলনে, হায়৷ আবো গাচতর অস্তবে ছটিছে বেগ প্রাণে আঘাতি! কত শতবার থুলি তহুত্র কঠিন ভনরে ধরিছে বুকে! কোন বা আলরে मामरतत शतिष्ठम वै। थिए वै। थिए छिति । कांति ह लाका कृत वर्ष हत्र.

অক্ট নিখাস, নীর-ধারা দর দর নয়ন-যগলে। পতি-আছে। শিরে থবি. কোন বা রমণী বাঙ্গে পতি-কটিবন্ধ। কোন বা রমণী ধরে তলি শিশু-কর. কাদিতে কাদিতে জড়াইছে পতিকণ্ঠ সে কোমল করে। হায়। কেহ বাধবিছে পতির অধরদেশে শিশুর অধর ! সুমধর হাদি মথে থেলিছে বালক কিরীটের গুচ্চ তলি— আনন্দে তলায়ে আংশতে মিশারে হাসি হেরিছে বমণী. সঞ্জল-নয়ন মবি এবে অনবিচল। চাতে কোন সাম্যিনী স্থামীর বদনে কবে তুলি খড়গ-কোষ, কোন বা বালক পিতার কবচ অঙ্গে, হাসিতে হাসিতে चानिए कननी-कारक-कांनिए सननी। পুলে দাজাইছে পিতা, পিতাৰ পুঠেতে কৌতহলে পূৰ্ব তণ বাহিছে তন্য! বঝাইছে বধকলে বৃদ্ধ পুৰবমা । মায়ে সাভনিচে স্তা. জননী কলায় ৷ শুকাইছে কত ফল প্রথল আনন. গত নিশি প্ৰকৃটিত অববিক সম. চিল প্ৰেদ্টিত ধাহা ৷ হায়, কত আঁথি তঃথেতে মুদিছে আজি। গত বিভাবগী ষে বদন দেখিবাবে জদয় উৎস্ক, আজি নিশি নাহি চাহে নির্থিতে তায় গ যে হৃদ্য-প্রশনে শীতল প্রাণ দিঞ্জিত পীয়ুম ধারা, তপ্ত তাহা আজি--প্রশ্বে দগ্ধ জদিতল। শ্রুতিমূলে ষে বচন কালি সুমধর, আবিদ তাহে বিদ্ধিছে কণ্টক। কত সেহে আশা, আই), কত চিন্তা,ভয়, প্রতিদিন দানবের ঘরে একত ভর্গ তলি ফিবিছে সে নিশি. না হয় বৰ্ণন হায়, সে হাদি প্লাবন । পুডিছে স্বার বক, কোলে করি কেই হেরিছে শিশুর মুখ – চুম্বনে বিহ্বল। কেহ প্রিয়তমা-আশ্রু মৃদ্ধিছে বতনে হৃদরে চাপিয়া স্থে ! কেই বা কাঁদিছে ! ভ্রাতার ভ্রাতার, আহা, সে কাল-নিশাতে বিদায় কতই মত। স্থায় স্থায় শেষ প্রণয়ের দেখা কতই স্লেহেতে !

আলিঙ্গন ণিতা-পুত্রে-জননী-আশিদ্, সে তামদী অমরায় নির্থিলা কত!

চতুৰিংশ সৰ্গ

অমরায় বিভাবরী হইল প্রভাত. খডগ, চৰ্মা, বৰ্মা, তণ ভারল কিরণে প্রদীপ্র হইল দশ দিকে। সিন্ধ যেন সে ঘোর সমরভূমি—অকুল গভীবা দেব-দৈত্য-চমদল উন্মিকল প্রায় ভাসিতে কিরণ মাথি সে রণ-সাগরে ! দে কিবণে প্রভাতিল ভীম শোভামর অপৰ্কাঅমর-বাহ বাদব-রচিত। বচ দেশ যডিয়াছে বাহিনীবিজাস— অন্তাচল, হেমকুট, ভায়কুটগিরি, পর্বত-পারদ গর্ভ প্রবাদ-ভধর, মন:শিলা শৈলকল আদি আচ্চাদিয়া মণ্ডল-ভিতরে দৈল-মণ্ডল স্থাপিত---অপেক শ্ৰেণাক্তি। মধ্যত্তে তাব যক্ষপতি আনি স্ববর্থী—শরাহত (म्वर्गन: (हो मिटक खवटक खूवटमना, রক্ষিতে সেনানীবৃদ্ধ বণে স্থনিপুণ। বাচ নিব্যিয়া ইজ অকণ-উদয়ে দেৱ-সেনাপতিগণে করিলা আহ্বান আপনার পটগুহে। 'বাসব-আনেশে আ(ই)লা জলকুলপতি বরুণ স্থীর বুমুত্তবাণে বিদ্ধ বাম উক্দেশ পাশে রাখি দেহভার থঞ্জের গতিতে আইলা ইচ্ছের পার্খে। সূর্য্য মহাবলী তীকু শরে দগ্মতকু, আইলা সত্তর <u>ট-জ-পটগহে বিদ্বাম-ভূজ</u> ধবি। আচলালে অগ্নিদেব অস্থির দহনে; का(रे)मा (पर टाइअन हक्षम-शहित्र, আম (ই)লাদওধর ধম করাল-মুরতি: অন্তর বাসব পুত্র দেব হড়ানন। ৰথাস্থানে যে বাহার কৈলা অধিষ্ঠান। অৱপতি চাহি সুয়ো, অনলে, বরুণে, ক হিলেন, — "হে অমৰ মহারথিগণ, চিত্ত মম আবুলিত হেরি তোমা সবে

হেন শরদথ-তম্ব—না জানি এরপে,

১গতি করিলা সেবে বৃত্তের তনয়।"

ক্রিক্সাদিলা—"কোথা এবে হক্ষ ধনপতি;
না আইলা কেন তুই অধিনীকুমার;
কোথা একাদশ ক্রন্ত, অন্ত বীর আর ১"

উত্তরিলা বারীশ বরুণ পুরুদ্ধের. "আমাসবাহ'তে শর্দগ্র গুরুত্র দে সকলে, হে সুরেন্দ্র, গতিশক্তিংীন কোন দেব, মুৰ্চ্চাগত কেছ বুত্ৰস্তত শ্রাঘাতে।" শুনি ইন্দ্র আক্ষেপিলা কত। কহিলা **অমরপতি—"হে** সেনানীগণ, হত এবে সে অসব ভীম ধন্দ্রে। কিছ ছট বুত্রাস্থর জীবিত এখন(এ). দৈতাপতি সমরে জর্কার। যার রণে অমবা-বঞ্চিত দেবগণা সে ত্ৰাজা সাগ্রামে পশিবে **অ**চিরাৎ , কি উপায়ে নিবারিবে ভাষ এ সমবে । কহ ভানি। দ্ধীচির অস্থিবলে, পিনাকি-আদেশে, পেয়েছি অব্যর্থ অস্ত্র— বজ্র প্রহবণ কিছ দে অসুর ইথে না হতে নিপাত ना श्टेटन अक्षामिता (भव ! कि जेशाह्य. কহ, দৈত্য ছঞ্জ সমরে নিবারিবে 🕫 ধৰি কোষ হ'তে তুলি ধরিলা দস্তোলি দূতকরে পুরন্দর। ধক ধক জালা ঘ্লিতে লাগিল অস্ত্র করি দীপ্রিময় নে দেব-পটমগুপ--অনস্ত শিবির: উं बार्ट काश्वित स्वकृत, स्वि हेस ভীম বজ্র রাধিলা আবার বজ্রাধারে।

ভীবণ দক্ষোলি-ভেজ হেরি বৈখানর,
মাহলাদে অধীর, অলে ক্লিস চুটিল,
কহিলা অসহ কঠবেদনা উপেক্ষি,
"মমরেন্দ্র । শুন কহি মম অভিলাব,
তিলার্ধ নিমেদ্র আর বিলম্ব না কর,
অরক্তের সংহার বজে, অদুষ্ট-লিখন
কে বলে খণ্ডিত নহে, স্বোগে সকলি
"ভকল। না থাকিলে এ বেদনা মম,
এখনি, সুরেশ, বধিতাম বুত্রাস্ত্রের
এ অস্ত্র-আবাতে।" শাক্ত কৈলা সুরপতি
উগ হতাশনে বুঝাইবা নানামত।
তথন ভাক্র-এইক্লপতি দেব

তীবতর খবে উচ্চে নিনাদি কহিলা,—

"হে হ্রেক্স, ভয় যদি দভোদি-নিকেশে,
দেহ তবে মম করে, দেখিবে এথনি
থও-মূও হয় কি না ত্বস্ত অসুর!
প্রচিত্ত স্থোর তেজে বজ্জের সহায়ে
লুটিবে অসুর-মূও—বিত্তীর্ণ শাশানে
শাল কন্ত বড্ডে যথা! না জানি, স্বেল,
কি হেতু অসাধা তব হেন বিপুনাশে,
আগনি অকত দেহ! জরজর-তল

দেবকুণ অস্থায়তে! কি জানিবে কহ,
ছিলে লুকাইরা দবে ক্মের-গ্রেব।"

পর্যোর বচনে জ্ব জলদলপতি
কহিলা—"হা ধিক, ধিক্ দেব দিবাকব,
দেবেক্সে এ ভাষা। সর্বাতালী সুরপতি
দেবতার হিতে, লজ্জা, ঘণা পরিহবি
বিশ্ববারে শ্রমিলেন ভিক্তকর বেশে,
তারে এ পক্ষ-বাকা । হে দোহবিনালা,
অন্ধ কি হইলা ক্লেশে । কচ সে কাহাব
নহে শ্রদগ্ধ দেহ। একাকী সমবে
মৃথিলা কি দৈতাপ্রতে । কি সাহসে হেন
শহরার, হে সবিতঃ—ভীক অপবাদ
দিলা ইন্দ্রে এ স্বমগুলে । কজাহীন
ভীক যে আপনি, অন্ধে ভাবে সে ভেমনি।"
এত কহি নীরবিলা সিন্ধুকুলপতি।

সংবক্স তথন শাস্ত কবি বারিনাথে,
কহিলা সুধীবভাবে গন্তীর বচন ,—
"হে সুর্ব্বা, ক্ষারৰ-নাশে ক্ষানাধ আমার—
দেব-ভূংখে নহি ভঃখী-নাহি হে বাথিত
শরবাথা বিহনে শবীবে ? ক্ষাকারণ
ক্ষাতি নাশিতে করি হেলা ?—হে দিনেশ,
সহস্রাংগু, গুটাও সে চিত্তন্ত্রন তব,
লহ এ সংহাব ক্ষান্ধ, বিনাশ ক্ষান্তর।"

এত কহি স্থা-ক্ষেরা বাগিলা দভোলি।
আগ্রহে ভাস্কর হেনি সে ভীম আগুণ,
তৃলিতে কবিলা যত ছই ভূজে ধরি;
প্রকাশিলা যত শক্তি ভূজণতে তাঁর;
তৃলিতে নাবিলা বজ্জ-লজানত মূথে
লাভাইলা দূরে গিয়া দেব-ক্ষরালা।
ক্ষিত্রা ক্ষেত্রক বিচ্চা ক্ষেত্র

হাদিলা অমরবৃদ্দ উচ্চ আন্তহাদে; হেরি স্থ্য-পরাভ্ব ব্যক্তরে ক্ড

বিজপিলা কত জন কৃটভিরস্কারে। তথন বাসব শীল্প পীয়ৰ-তুলনা বচনে শীতল করি চিত্ত সবাকার; নিবারিলা সর্বজনে—"হে দেবমণ্ডলী" कहिला विभवस्य - "गृह-विमश्योप সদা অনর্থের হেতু ত্রিজগতীমাঝে; विপाल कात्व मत्नामिनन(ह) मण्या । কে না পারে স্থাভাবে সম্পদ্ভৃঞ্জিতে গু দেবতার কত হীন মানবেব জাতি. তাদের(ও) সম্প্রীতি কত সোদরে সোদরে. কতই স্থাতা স্নেচ আত্মীয়-স্কলনে সৌভাগ্য দেয়ত দিন। সৌভাগ্য ফবালে স্থাবে সংসার ছার—শাদ্দিল-কলহ আত্মীয়-কলহে গৃহে ! ভ্রাতৃত্ব উচ্ছেদ। সে প্রবাদ দেবকুলে করিতে প্রবল চাহ কি অমরগণ ? আ অ - বি অবণ বিপদে এতই দেবে, ওছে দেৰগণ ?" এতেক বলিয়াইন্দ্র আবার নীরব. ভাবিতে লাগিলা চিত্তে কিরূপে অসুরে ভেটিবে সমরে পশি। পার্কভীনন্দন কার্ট্টিকের সেনাপতি সমর-কুশল কৃছিলা মুদ্ধের প্রথা বাহমধ্যে থাকি. বঞ্জিতে স্বপক্ষবল: বকণ বিচারি त्रत्व काश्वि कवकान मिना उपरम्भ : অকুদেবগণ মত দিলা যে যাহার। ভাবিত-অমর-পতি অমর-শিবিরে, হেনকালে মহাশুকে বিদাবি বেগেতে আন(ই)লা শিব-পারিষদ ভীম মহাকাল. স্থাধিলা বাসব শিৰদুতে শিবশিবা-বারতা, কৈলাদ-মুদংবাদ। শিবদাবী ননী ইন্দ্রে বনিয়া তথন কহিলা "হে---অমরেন্দ্র, উমেশগেহিনী পাঠাইলা, শচী-দ্রঃথ হরিতে সতত চিন্তা তাঁর ; পাঠাইলা, হে বাসব, জানাতে তোমায় বুত্তের খণ্ডিল তাগ্য--অকালে অসুর পড়িবে দজোলি-খাতে। হে শচীবল্লভ, विवय ना कत्र आत्र, वर्ष्ण विमातिश বকঃ চুৰ্ণ কর তার', ভৈরব আপনি কুপিত ঐদ্রিলা-দত্তে কৈলা এ বিধান।" था विन निवन्ड कित्रिना देवनाटम.

ধুমকেতু-বেগে গতি উৰুদি অখর। মহানন্দে কোলাহল দেববুলমাঝে। ক্ষণকালে জিভুবনে খোবিল সংবাদ --ইন্তবুত্তাস্তবে রণ বুত্তের সংহার বজ্রাঘাতে। বিহ্বলিত কৌতৃক-হরুষে চতুর্দশ লোকবাদী সিন্ধ-ব্যোমচর ছুটিল বিমানমার্গে। আইল বক্তুল, বিভাধর, অপ্সর, কিন্তর্বর্গ ষত: আইল কৰ্ব, রগণ, গন্ধৰ্ব, পিশাচ; ষাইল সিদ্ধ, নাগকুল, প্রেত্ত, পিতৃগণ, দেবৰ্ষি, মহৰ্ষি, যতি, শুচি-আত্মা যত ; আইল ব্ৰন্ধাণ্ডবাদী প্ৰাণী শৃক্তদেশে। আকাশের দ্রপ্রান্তে শৃক্তথানে চাপি বহিলা সকলে ব্যগ্র। সে রণ দেখিতে খুলিল ব্রন্ধাণ্ডদার অম্বর সাজামে: নানা বৰ্ণ হেম, মণি, প্ৰবাল, অয়দ, ৱচিত বিচিত্ৰ কত গৰাক, ভোৱণ, কত দিব্য বাতায়ন খুলে চন্দ্রলোকে, ছডায়ে বিমানপথে চল্রলোক-শোভা। স্থ্যলোকে কত কোটি বাতায়ন, আহা, খুলিল অতলমূর্ত্তি লোমহর্ষকর ক্ষন্তত দৌন্দৰ্য্য-ক্ষমি প্ৰকাশি গগনে। প্রতি গ্রহে এইরূপে নক্ষত্তে নক্ষত্তে খুলিল কতই হার, গুৱাক্ষ, ভোষণ, বিপুল অনন্তকোলে অনন্ত শোভায়. প্রতিবাতারন-পথে গ্রাক্ষের ছারে আপাণিবৃক্ত অগণন; শৃষ্ঠ যেন আপাঞি প্রাণিময়-পরিপূর্ণ জীবন-প্রবাহে ! সে শোভা হেরিতে রমা শ্রীপতি সহিত ু পুলিলা বৈকুঠঘার। খুলে ত্রন্মলোক অতন তোরণ, আজি ব্রদ্গলোকবাদী। খুলে ছার মহাকাল কৈলাস ভ্বনে ! অতুল সুরভি-গদ্ধে পুরিল জগৎ! বিহ্বলিড চৌদ্দলোকে প্রাণীর মণ্ডল দে দৌরভ দ্রাণ লভি ! আকুলিত প্রাণ দেৰিতে লাগিল শুক্তে বৈক্ঠ-ভুবন, অতুল ত্রন্ধার পুরী, বিশাল কৈলাস, ষোহে অচেত্ৰন বেন ভূলি কণকাল ইন্দ্র, বুতাস্থর, স্বর্গ, সমর প্রাস্ণ্য ছেথা ইন্দ্ৰ ব্যহ-মাঝে প্ৰবেশি তথন

নিবখিলা-একে একে দেবর্থিগণে সমরে আংহত যত. কিংবাদে মুর্ক্তিত। ধনেশ্ব কুবের অধিনীস্তত-দরে, গাস্ত্রনিলামিষ্টস্বরে। ক্লু একাদশে শ্বিষ্ণ-করি, স্নিগ্ধ করি অক্সদেবে শ্বত আহত সমরক্ষেত্রে, কিরিলা বাসব কবিবাহ প্রদক্ষিণ। আমাসি বহিদ্দেশে আজা দিলা মাতলিরে আনিতে পূপক. খাজা দিলা নিজ নিজ বথ সাজাইতে. অ**স ব**ত প্রব-রথী। শিবিব যডিয়া সাগ্র-কল্লোলধ্বনি উঠিল আকাশে। সাঞ্চাইলা অকণ সুযোৱ প্রবিমান একচক্র **র**থবৰ অন্তত দেখিতে। গতি মনোহর অতি, প্রদীপ্ত চড়াতে সপ স্বৰ্ণ-কন্ত শোভা। নিয়োজিলা ভায় স্থ খেততবৰ্ষ বৃদ্ধি বিশাল, জিনি ত্ব্পফেনবাশি ভ্ৰত তমুক্ত. ক্ষণে পাবে ব্রহ্মাণ্ড ঘ্রিতে ! বৈনতেয় উঠিশীঘ বসিলা ভালনে। সে আনদেশে অনল-সার্থি রথ সাজাইলা ভেড: ধলোহিত বিমান প্রচণ্ড শিখাময়, বজনৰ ছই আৰু, নাসাৰকে ৰাসে প্ৰাদে ছটিছে ধুম ৷ আনি যোগাইলা ১২৪ হয় ক্রম্বর্ণ শমন-সানান কতান্ত-সার্থি ভীম। শহ্মবির্চিত শত-চক্র শভাগ স্থলব বরুণের, বেগে যার রসাতল সদা বেগময়. উত্তাল ভরক্ষপূর্ণ দিন্দুর শ্বীর. মবে বারিনাথ রক্তে, বাবিধি-বিহারে, ণ্মেণ বারুণী সজে—সাজাইলা সূত। ম্মাব-সার্থি ফেডগ্রে সাজাইল। শত**্ড শিথিধবজ ক্লে**ক বিমান , ব্ৰশ্বৰ্ণাহন বায়-বিমান সাজিল. শাজিল শতাঙ্গ অক্ত যত অমবের। হেনকালে মাতলি সার্থি কৃতাঞ্জলি নিবেদিলা পুরন্দরে---"পুষ্পক-বিমান দিলা দেব, রুদ্রপীড-শব বহিবাবে, কি বাহনে স্তররাজ পশিবেন রণে ?" চিন্তি ক্ষণে দেবেন্দ্র কহিলা আনিবারে ^উচৈ:শ্ৰ**া মহা অখ-- অখকুলপতি**।

মাতলি ঘোটক আনি দিলা ইন্দ্রপাশে। হেবিয়া বাসবে, উচ্চৈঃ প্ৰবাঘন ঘন ছাডিল নাসিকাধ্বনি, গুলাইয়া সুখে ফলাইয়া গ্রীবাদেশ, কেশব সুন্তব---ঘন হেষাধ্বনি ছাণে, ঘন থবাঘাতে থ ডিতে লাগিল। মন:শিলা স্বৰ্গতলে, ষভ শিনি তকুশোভ। শুভ সুচিস্কৰ. ক্ষীরোদসমুদ্রজাত ঘোটক অন্তত। সালাইলা আপনি সে অধে শ্বরাল স্তুদিব্য আসন পঠে বৃশ্মি তেজোময় গলদেশে শোভিতে লাগিল--দৌদামিনী বেডিল বেমন গ্রাবাদেশে। মহা হথে শচীনাথ ধবিয়া দভোলি, আবেচিংল করিলা উজোগ। হেনকালে শৃক্তপথে স্থমেক হইতে জত নামিল পূপক. চপলা ফুলবী বদি তায়, তড়িল্লভা হাস্থ্যকটোমথে। হেবিইনেড ক্রগজি নামিলা চপলা, নিবেদিলা শচীনাতে শচীব কুশলবার্ত্তা, কহিলা, ষেত্রপে পাইলা পুষ্পকবথ হেমাদ্রি-শিখবে , ইন্দুবালা-বারতা সংক্ষেপে বিবরিয়া দীভাইলা নম্রমুখে। চপ্লারে হেরি স্বধাইলা স্থতনে কত্ই সংবাদ ম্বনাথ বাব বাব ; কত চিত্তমুখে শুনিতে লাগিলা যত কহিলা চপলা। সহৰ্য উৎস্ক মনে আশীষি ভথন. कहिना (भोरनामौनाय, "८० हाक्त्रकिनि. চিরসহচবী ইন্ধাণীন, কহিও সে স্বৰ্গন্ধ-স্থানীবে, স্বৰ্গরাজ্য তাব উদ্ধারি আবার শীশ্র অর্পির উচ্চারে, চিরত্যথা মিটাব চিত্তের ! ফিব এবে সুহাসিনি, সুমেক-শিখবে নিরাপদে ।" এত বলি শচীনাথ চপলার পানে চাহিলা প্রফুলমতি : হেরিলা—বঞ্চিণী দেখিছে নিশ্চল আঁথি বজ্ল-কলেবব. দঙ্গিথে চিতত্বারা যেন। ইন্দ্রে হেবি স্লজ্জ-বদ্দে বামা মুদিল নয়ন: বাঙিল সুগণ্ডতল, কাঁপিল অধর। বিশাষে স্করেন্দ্র এবে দেখিলা এ দিকে ভীমরূপ ত্যঞ্জি বন্ত্র দিব্য তেকোময়

धतिहरू अशुर्स मृष्ठि विधि-हति हत-তেকে নিত্য সচেতন: হেরিছে সখনে স্থির সৌদামিনী-শোভা অস্থির নয়নে। হাসিল বাসব, আজ্ঞা দিলা মাতলিরে আনিতে কুমুমদাম, কহিলা—"চপলে, পূরাব বাসনা তোর—লাবণ্যে মিশাব আজি স্থর-রণভূমে ত্রিলোক-সাক্ষাতে তেজঃকুলেখর বজ্লে বিবাহ-উৎসব হবে পরে।" মাতলি আনিয়া পুষ্পমালা मिना ऋरथ हेल-करत्र, ज्यानत्म वानव অর্পিলা চপলা বজ্রে দে কুমুমদামে। স্বয়ংবরা হইলাচপলামনস্থে . বলিলা লাবণারাণী তেজ্ঞাকলরাজে, অমর সমরক্ষেত্রে—বুত্রবধ-দিনে ! বাজিল সমরভেরী তুরী শভা কত; উঠিল আনন্ধ্বনি ঘন ঘনোচছাসে প্রিয়া সমরকেত্র—অনস্ত যুডিয়া অবিশ্রার পুল্পধার। হইল বরিষণ। কোলাহলে পূর্ণ দশদিক। ক্রতগতি ইন্দ্রপদে নমিলাচপলা, হাসি দেব দিলেন বিদার। ভীম অন্তম্তি পুন: ধরিলা দস্তোলি শত্রুদন্ত-সংহারক।

রচিরাতে মহাবৃতে বুত্র মহাকুর
দিগন্ত অর্কেক যুড়ি উদদ-অচল,
পিলল, ত্রিকুটনাগ, গোত্র ধরাধর
লোকালোক স্মাভূৎ অচল মালাবৎ
ভূধর রজতক্ট হিমাল শিশুর
ছেরেছে দানবদৈলা। বচিরাছে বৃত্ত
একাদশ মণ্ডলীতে বাহিনী সালারে
বিস্থাসিয়ে বথ আর গল্প পদাতিক।
পকীক্র গরুড় বেন বিস্তারিয়ে পাথা
বসেছে নগেল্ড-শিরে—দেখিতে তেমতি
দৈত্য-চধ্ব গঠন। মধ্যে নিজ্লান,
বুত্র ত্রীরাব্তপরে, ব্রেরিয়া তাহার
পরাক্রান্ত দৈত্যসেনা; দৈনিক সুর্থী
পর্বতের প্রেনী বেন নগেন্ত বেরিয়া।

হেনকালে ছই দলে বাজিল ছুকুডি, নাচিল বীরের হিয়া লহরে লহরে, দাগর তরল-তুলা বিপুল বিশাল ছুলিয়া ভালিয়া পুনঃ মিলিয়া শাবার চলিল पश्च-पन रमनानौ-bieca I দৈত্যধ্বকা উডিছে গগনে মেখাকারে ঝক ঝক কিরণ চমকে অস্ত্রপরে রথধান ঝেশসে তহুতো ্মুহুলে,— **অকিছে কিরোণোচ্ছান দিগন্ত ব্যাপিয়া**! সাজিয়াছে রণসাজে দৈতাকুলপতি বুত্তাসুর – বান্ধি কটি কটিবন্ধে দৃঢ়, ছুই খণ্ড গণ্ডাবের দৃঢ় চর্মপেটি তুই উপবীতাকারে বান্ধিয়াছে ঘেরি বকোদেশে। বাম-করে ধবেছে ফলক সূর্যোব মণ্ডলবং--প্রচণ্ড, বুইৎ, দক্ষিণে ভৈরব-দত্ত শূল বিভীষণ , ঐরাবত করি-পৃষ্ঠে বলেছে অম্বর रेमल-भर्ष रेमल (यम। कविक्रवादांव গত রূপে জিনি যায় লভিলা দানব চলিলা বংহিত করি -- চলিলা পশ্চাতে দম্ব-বাহিনী ষেন তরকের মালা।

ছটিল ইন্দ্রের রথ গগন আন্দোলি, কভু শৃন্থে কভু নিয়ে কভু পাৰ্দদেশে বিঞ্লীর বেগে গতি ছিল্ল-ভিল্ল করি रेमजा अनोकिनी भाकि, कक, वरकारमम, খনদল অখব বিদার্থ চক্রাথাতে। ইরম্মদে রথচক্রে জ্বলিতে লাগিল তডিদাম- জলিল সহস্ৰ অক্ষি তেকে। শরকাল ভরকর শুক্তে বর্ষিল মধলের ধারে ধেন ববিধার ধারা! অপুর্ব্ব শিল্পিনী-ভঙ্গী! মৃহুর্ত্ত ভিতবে দিগত ব্যাপিয়া শর সর্বজন'পরে সর্বস্থানে সর্বাদিকে রণস্থল ঢাকি, পড়িতে লাগিল প্রহরণে অশ্ব হস্তী অসংখ্য পদাতি-মহাঝতে তরু যেন কিংবা বজাঘাতে যথা শৈলকুলচ্ডা; ব্যহ ভেদি প্রবেশিণা স্থরেশ-স্থন্দন, ভ্ৰমিতে লাগিল ৰেগে দাবাগ্নি বেমন ভ্রমে বেগে ভীম রক্ষে বন দথ্য করি; किश्वा बधा উर्म्मिकून निम्नु উपनिस्त्र ধার রকে বেলাকুলে উপল আছাড়ি।

ছিল কৈল ছই পক্ষ হরেশের শরে
বৃহ-কলেবর ছাডি—বণা বৃত্তাহর
বেষ্টিড দানব-বীরদলে। রক্তব্যোত

প্রবাহিত বিপুল তরকে চারিদিকে।
দেবি দৈত্য মহাতরে দত্তে চালাইলা
মহাহন্তী ঐবাবত; ছাড়িল মাতক
কোটী শঝনাদ শুণ্ডে, গর্জিল তথন
ভীম-শব্দে দৈতামাধ, গর্জিল বেমন
অধরে জ্বলদল, কহিলা হ্রারি—

"রে পাষণ্ড, এ প্রচণ্ড ভুক্তেজ আগে না নিবারি, বধিছ দম্ভ-পদাতিক > তম্ববের প্রার বুত্তে এডারে সমবে নমিছ বে বশভ্ৰমে ভীক্ষ হীনমতি। ত্লাজনে সংগ্রামে না ভেটি, হস্তা হয় तिश्रह निर्मा छक-श्रांगः विक त्र वानवः কি হেতু আইলে রণে ভয়(ই) বদি এত অস্বের ভূজবলে? সে ভূজ-প্রতাপ কেব পুনঃ।" কহি, শুলে তুলিলা অমুর মহাকাল শল ভয়ত্ব ৷ নাউত্তিরি সুবুনাথ কোদ্ধ ধবিলা ভীমতেজে লক্ষ্য করি ঐরাবতে নিমেধ-ভিতরে কৰ্ণমূলে নিকেপিলা সূতীকু বিশিখ, অস্থিব জালায় মহাবাবণ মাডিল. বোব শব্দ শব্দে ছাডি ছুটিল বেগেতে নামানি অঙ্গাহাত। ভীম লক্ষ ছাডি দাঁডাইলা মহাশ্র মনঃশিলাতলে---শ্ল হতে ! লক্ষ্য করি ইন্দ্রকতল ভাবিলা ছাড়িবে অস্ত্র –দূবে হেনকালে দেখিলা দমুজপতি জয়ন্ত-পতাকা। নির্থি ইন্দ্রের পুল্রে নিজ পুল্রশোক জলিল হৃদয়তলে, শারিলা তথন ঐক্রিলাব ভীমবাক্য, প্রতিজ্ঞা কঠোব, চরারিলা ধোর স্ববে অসুব <u>চর্জ্</u>য, ছটিলা উদ্মন্ত যেন মথি স্থররথী, মথি অধুমান্তক পদাতিক অগণন। নুকায়িত শার্দ্ধনেরে যথা বনমাঝে খুঁজে বাাধ বনবাজি আন্দোলন কবি. কিংৰা পক্ষিরাজ বাজ কপোত হেরিয়া ধার যথা শুক্তপথে—ছুটিলা দিতিজ।

হেখা ইচ্ছে ৰোর রণে দৈতাবীর যত বেরিল নিমেষকালে! তুম্ল সংগ্রাম বাজিল বাসব সঙ্গে। কংখাল, পডক, ধবধুর ধবলাক বেরিল পুসাকে

স্থদল সহিত এককালে। সুরপতি যঝিতে লাগিলা রণমদে। পশুবাজে বনমাঝে নিষাদ ঘেরিলে, উন্মাদিত পশুবাৰ ভীম লক্ষ্ ছাডি, প্ৰমে ৰথা দশদিকে লওভও কবি বাাধকলে. তীক নথে দস্তাঘাতে থণ্ড থণ্ড করি. নিশিপ্ত তোমর, ভল্ন, কৃঠাব, মুদাব---তেমতি স্থারেক্স বথগতি। ক্ষণে পর্কো. ক্ষণে পৰে উত্তৰে আবার অক্সাৎ, পশ্চিমে দক্ষিণে—বেন খেলে ভডিদ্ধান সর্বস্থানে দিগন্ত ব্যাপিয়া একেবাবে ৷ যুঝিছে দমুজদল অসীম বিক্রমে, ভিন্দিপাল, ভীষণ পরভা, প্রক্ষেডন, निध्यत्व निध्यत्व दक्षि हे खद्राची भटत . কাটিছে সে অস্ত্রুল ইন্দ্র মহাবল ভঙ্গদণ্ড মৃত্য সহ শরে , উঠাইছে থণ্ড উক্ল বিশিখে বিশ্বিয়া: জভ্যা, বাছ. কক্ষ, কক্ষ, ললাট বিশ্বিছে লক্ষ বাণে । নিবস দক্ষিদিয়া হৈল অচিবাৎ পড়িল সমবক্ষেত্রে কোটা দৈতাবীব। ছাড়ি সিংহনাদ কোধে দৈত্য-দেনা তবে ধাইল উপাতি বৃক্ষ, ক্টিডি শৈলচ্ছ---ছটিল সচল বেন স্মর্ণা ভগব. ছটিল পুষ্পক শ্লেম মেঘমক্রে ঢাকি. নিনাদিল ধ্রু গুণ ইন্দের কাম কি. ছাইল কলম্বুল ঘনাম্ব-পথ, সুরপুরী অন্ধকার হইল কণকালে। পড়িল কছোজ, হলাস্ধ, মহাস্থ খবশ্ব খড়ৰডি পিক্ল খেডকেশ সেনাধাক আরো শত শত। ভদ দিল দৈত্যদল বণস্থল ছাড়ি--ফেলি অস্ত্র, গিরিশক মহাজ্মরাঞ্জি, ফেলি রথ অখ হন্তা। ছটিল তেমতি করখালে-বায-মথে উডে ৰথা কাশ। কিংৰা ৰথা পশুপাল, পশুপাল সহ কর্মাসে প্ৰাণভৱে পুছ তুলি কবি ঘোর বব! হেথা মহাশুর বৃত্র ক্ষয়স্ত উদ্দেশে

ছুটে ঝটিকার গতি। হেরি মহারথ

কার্ভিকের আদি স্থর রক্ষিতে কুমারে

চালাইলা দিব্য যান বেগে জ্ৰুভত্ত ;

ছটিলা অনণ দিবাকর অম্বপতি বায়কুলপতি প্রেডঞ্জন ভীম দেব. করাল অনন্তমণ্ডি যম দণ্ডধর জালাময় তিন চক্ষ ভীষণ ভ্রারি . দাঁডাইল দৈতারাক্স সুবর্থিগ**ে** হেরি দরে। হেরি দৈতা দণ্ডধর কালিম জলদবৰ্ণ হোব স্থাব ভাষি ক ভিলা অমববনে -- "ছে দেবসেনানি . প্রান্ত সবে, বছরণে যঝিলা ভোমরা, ক্ষণকাল লভ হে বিশ্রাম আমি যুঝি দৈজোৱাজে ক্ষণকাল আজি।" চাহি ডবে সম্বোধিলা বুত্রাস্থবে—"হে দানবপতি, পরেতে-পতিবে আজি ভেট রণজমে। প্রেতপতিবাকো বন ছার্জায় জমারি ক হিলা, 'হে ধখবাজ, এত যদি সাধ ষ্ঠিতে পত্রের সহ – ধ্ব দণ্ড জবে. হের দেখ রাখিজ তিশল আজি. ইছা নাধরিব অহাদেবরণে ইলপ্রতে কিংবা ইন্দ্রে না আঘাতি আগে।' পার্দেশে বিদ্ধিলা ভৈববশল মন:শিলাতলে দৈতাপতি: ভীমগদা ধরিলা সাপটি, ঘবাইলা ঘনসনে: ঘ্বাইলা যম প্রচণ্ড করাল দ্ওা। ছই ক্বী যেন বন্মাঝে রুণ্মদে করে কবাঘাত, তেমতি আঘাতে দোঁতে দোহা দওগদা-প্রহারে বিদীর্ণ নভস্থল, ঘোর রব উঠিল গগনে, ঘর্ণ-পাকে ডাকে বায চৰ্মনঃশিলাচাবি চরণ ঘণণে। দণ্ডযদ্ধে বিশাবদ দোঁতে, কেচ নারে নিবারিতে কারে, ভ্রমে নিরস্তর ঘুরি; छुडे घन (सब (धन भएक जबदा । প্রেতরাজ কালদও ঘর্মরে ঘুরায়ে আখাতিলা ভীমাঘাত বৃত্ত-মৃষ্টিতলে, সে আঘাতে ফিরে দণ্ড-ফিরে বুত্রগদা গ্রুদস্ত-বিনিম্মিত। তথন অসুর বাসস্কল্পে শমনেব ভীষণ বেগেতে করিলা প্রচণ্ডাঘাত গদা ঘুরাইয়া। যমরাজ বদিলা আঘাতে ভগ্রকটি, ক্ৰম যথা ছিল্লমূল পড়ে মড়মড়ি। তুলিলা তথন দৈত্য ভরন্বর শূল

লক্ষ্য করি জয়স্তেব বিচিত্র পতাকা। দিলা ৰড দেবৰথিগণ ঝডবেগে হেরি সে ভীষণ অস্ত্র। দর হ'তে হেরি চালাইলা পুষ্পক বিমান ইন্দ্রাদেশে মাতলি---ছটিল রথ ঘনদলে দলি ঘৰ্ষৰ নিনাদে খোব লিদিব চমকি . ঞ্হস্তের রথমূখে পথ আচ্ছাদিয়া দ্ৰ্যভাইৰাক্ষণকালে। বিভাতেৰ গতি বাসৰ অমৰ নাথ ছাডি সে তালন. আবোহিলা উচ্চৈ:প্রবা অধনলেধর . শোভিদ স্থনীল তত্ত তত্ত্তদ দেদি, ক্ষন অনে ভেদি যথা শোভে নীলামর। ক্ষুটিক জিলিয়া গচত প্ৰদিবা কৰচ. শিরস্থাণ দঢ় জিনি কঠিন অধ্স, অপুর্ব কির্ণছটা কিবীট আকারে বেডেছে নিবিড কেশ- আভা ছডাইয়া সর্গমেশ্বমালা যেন ঘেরেছে মন্তক। জলিকে সহস্ত অকি-ভীষণ দল্পোণি শঙ্কে তলি স্থবনাথ অংখ আরোহিলা. উট্টিলা নক্ষুগতি উচ্চৈ:প্ৰবা হয় মহাশুর ভেদ করি, সুমেক ছাডিয়া উচ্চ এবে দৈত্যবপু নগেরুদদ্শ , বক্ষ: সমসতে তার পক্ষ প্রসাবিয়া স্থির হৈলা অখপাত—ডাকিল দংখালি শত জিমতের মল্রে বাসবের কবে। ছেবি ঘোর ঘনস্বরে ভীষণ অস্তর किना निर्नापि উচ্চে.—"श मधी वाम्यः ভাবিলে বৃক্ষিবে হুতে বতেৰ প্ৰহাবে ! কৰ কৰে এ শল-আখতি সংবরণ পিতা পুত্ৰ হুই জনে"— বেগে দিলা ছাতি। ছুটিল ভৈরব শূল ভীম মূর্তি ধরি মহাশৃক্ত বিদারিয়া, কালাগ্নি জ্বলিণ প্রদীপ্ত ত্রিশ্ল-অঙ্গে ৷ হেন কালে (হায় বিধির বিধান গতি কে পারে বুঝিতে) বাহিরিল খেতবাত কৈলাদের পথে সহসা বিমানমার্গে শূল-মধ্যস্থলে चकर्षि चष् । देश निष्म छिउदा। অদুখা হইল শূল মহাশূম-কোলে ! হেরিয়া দমুজ্পতি কাতর হদয় कड़िला देवलारन हाहि, मीर्चवान हाफि,

'হা শস্তু, তুমিও যাম।' দগ্ধ হতাখাদে ছুটিলা উন্মতপ্রায় হস্কারি ভীষণ, ছিলম্ভ বাহু যেন। অগ্নিচক্রাকার ঘবিল ত্রিনেত্রে বোব—দত্তে কড নাদ। প্রলয় ঝটিকাগতি আদিয়া নিকটে প্রদারি বিপুল ভক্ত ধরিলা সাপটি ইন্দ্র-করে ভীম বজ্র —উদ্বিগ্ন কবিতে অস্ত্ৰবর বজ্রদেহে জালা ধক ধক জলিতে লাগিল ভয়ত্বর। সে দহন মহাস্কর না পাবি সহিতে গেলা দুবে ছাডি বজ্ৰ, ঘোর বিকট চীৎকান. ৰণ্ফে ৰণ্ফে মহাশক্তে ভীম ভক্ক তৰি ছিডিতে লাগিলা ক্রোধে নগ্রুমণ্ডলী. ছডিতে লাগিলা ক্রোধে—বাসবে আঘাতি. আঘাতি বিষমাধাতে উচ্চৈ:শ্ৰবা হয়। একাও উচ্চিন্নপ্রায়, কাঁপিল জ্ব্যাৎ উজাড স্বর্গের বন, উভিল শুক্তেতে স্বৰ্গজাত ভঞ্কাও। গ্ৰহ, ভাবাদল, থ**সিতে** লাগিল বেন প্রলম্বের ঝডে। উছলিল কজ সিম্ধু কত ভূমণ্ডল. থ ও খণ্ড হৈল বেগে চুর্ণ বেণু প্রায়। দে চীৎকাৰ, দে কম্পনে বিশ্ববাদী প্ৰাণী চন্দ্ৰ, **স্থ্য,** শন্ত, গ্ৰহ, নক্ষত্ৰ ছাডিয়া ছুটতে লাগিলা ভয়ে বোধিয়া শ্রবণ. ৈকলাস, বৈক্প, ব্রহ্মলোকে। সে প্রালয়ে স্থিৰ মাত্ৰ এ তিন ভ্ৰন ৷—মহাকাল শিবদূত কৈলাস ছয়াবে, নন্দী ধারী কাঁপিতে লাগিল ভয়ে, কাঁপিতে লাগিল

ব্ৰন্ধলোকে ব্ৰন্ধাৰ তোৰৰ ঘন বেগে। কাঁপিল বৈকৃষ্ঠ দাব ৷ বোর কোলাহল দে তিন ভ্ৰনমুখে, ঘন উচ্চৈ: স্বর "হে ইন্দ্ৰ. হে স্থবপতি, দস্তোলি নিক্ষেপি বধ বত্তে—বধ শীদ্ৰ—বিশ্ব *লোপ হয়*।" এতক্ষণ সুবপতি ইন্দ্র সে চর্য্যোগে চিলা অচেতনপ্রায়—বিশ্বকোলাহলে স্বপনে জাগ্ৰত খেন বজ দিলা ছাডি: না ভাবিলা না জানিলা ছাডিলা কখন। ছটিল গর্জিয়া বজ্র ঘোর শৃক্ত-পথে, উনপঞ্চাশৎ বাগ দলে দিল যোগ. ঘোৰ শব্দে ইরমাদ অগ্নি অক্টেমাথি, আবিত্ত পুদ্ধর মেষ ডাকিতে ডাকিতে, ছটিতে লাগিল সঙ্গে, স্থামক উঞ্চলি শণপ্রভা থেলাইল . দিল্লাওল ধেন থোব বজে সজে সজে ঘবিয়া চলিল। ঘরিতে ঘ্রিতে বজ্র চলিল অম্বরে বেধানে অস্তরপতি বিশাল-শ্বীব, বিশাল নগেন্দ্র তুল্য , ভীষণ আঘাতে পড়িল বুলেৰ বক্ষে--পড়িল অসুৰ, বিষ্ক্যধবাধর **যেন প**ডিল ভুতলে। বহিল নিক্দ খাস ণিভ্বন যুডি, বহিল বুত্রেব খাসে প্রলম্বের মড। "হা বৎস, হা কদ্ৰপীড" বলিতে বলিতে ম্দিল নয়ন্দ্য জুজ্য দান্ব। দহিল ঐক্সিলাচিত্তে প্রচণ্ড হতাশে,

চিবদীপ চিতাৰণা৷ ব্ৰহ্মাণ্ড যড়িয়া

ভামিতে লাগিল বামা--উন্নাদিনী এবে গ

সমাধ।

আশা-কানন

[সাঙ্গ রূপক কাব্য]

नगन-ननारहे

প্রথম কম্পনা

আশাব সহিত সাক্ষাৎ ও পরিচয়, জাঁহার সঙ্গে আশা-কাননে প্রবেশ। ভিন্ন ভিন্ন দিক হইতে কৰ্মকেতাভিম্থে প্রাণি-স°প্রবাহ। দামোদর নদ বলে মুবিখ্যাত ক্ষীর সম সাত্নীর , বিবিধ লতায় ৰুক নানা জাতি মুশোভিত উভ ভীর; জনমি ষে নদ বিস্কাগিবি-শিরে (मण-(मणोख्टत हरन। সুসার সৈকৈত সিকভা-সজ্জিত মুখোত নিৰ্মল জলে , বে নদের কুল পবিতাক রিলা সুক্ৰি কৃষণ ক্ৰি; কুমুম মধুব ফুটায়ে কবিতা-বাণীর প্রসাদ লভি , রসবিহ্বলিত যে নদ-নিকটে ভারত অমৃতভাষী; বাশীতে উন্মন্ত জনমি স্থকণে করেছে গউডবাদী। তীরে এক দিন (नहे नाटमानत-व्यक्त-डेन्द्र डेठि , धत्रनी-भत्रीदत्र দেখি শৃস্তমার্গে কিরণ পরিছে ফুটি; পড়িছে 降রণ দশ দিক্ ভাতি আকাশ মেৰের গাই, বরণ বিবিধ হরিদ্রা লোহিত গগনে চাক্ন শোভার;

ন্তবে ন্তবে ক্টে, প্ৰনে উডিয়া কিরণ মাথিয়া দিগন্ত বেডার চুটে। দামোদর-জলে পড়ে সূর্য্যরশ্মি আবালোকরি হট কুল, তৃণ-লত্তা-দলে পড়ে ভরু-শিরে রঞ্জিত প্রভাতী ফুল। ভ্ৰমি ধীরে তীরে হেরি চারু শোভা প্ৰশিষ্ত প্ৰন, হাদয় পীড়িত সংসার-যাতনে চিতার আকুল মন , কত ভাবি মনে ভুমি কত বার শেষে প্রাস্কি-অভিভূত, কোন বৃক্তে বসি চকু মুদি ক্ৰমে তক্সা আবিভৃতি; ক্রমে নিস্তাবোরে প্রাণী আন্চল্ল হয়, সংসার ভাবন স্থান-প্রসাদে পাসরিত্ সমৃদয়; নবীন প্রদে ভাবি যেন নব ক্ৰমশঃ কতই বাই; ছাড়ি কত দে আসি কত দূর কানন দেখিতে পাই; কানন ক্চ অভি মনোহর ষেন সে গগন কোলে; ঈষৎ চপ কিরণে সচ্চিত প্ৰনে ছেলিয়া দোলে; বিটপে ভূ ৰুরণ হরিত मद्रण यून्द्रद (पर,

চূৰ্ণ-কান্ত্ৰ মেগ

্জ সারি লাবি সাক্ষানে ওংগ্রেড	শনিত্তটিয়া কেরিছে সে এটো
<< । दिवस । दिव	office the state of the state o
াভে বন মাত্য বিচাৰ সভাব	. क्षिकाणि डाक अधिका निकर्ण
প্রসাবি নিপুল্ কাম্	मिन्द्री के के एक होता है है जो है। इसके किन्द्री के किन्द्री
ল প্র সদুপ স্বাধ্য কহিছে ।	S STATE STATES S S STATES
ছলিছে মুড়ল হাছ।	李明 十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二
্তি শোল্য কৰি ক্ষুত্ৰকুমুত্ৰ	े भारता क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र
শৃভি গোলে জালু ল স সা	'कारदात वा बाज वर्तपू
केस लगाउँद क्षाप्ता स	「一一一的性質医利利 - "有效主题的证
भिष्य (तर्गा निषाद्य	to the state of th
श्रीस इक्षिक्त स्म अन्य कर्ष गर्	ালগৰ হলে এক বেন্ প্ৰে
म्पाल इंप्यांति चात्रः	পাঠিকেল ভনজান ,
्योत्त भटाइतः । अकृतन्त्र सह	नद ५ छ ५ मा । विकास स्थापन
ኒ ^ተ ነር ማፍተዛ ነፃነት .	संक्रिका है। इंग्लिका है ज
In the months of the chin	で作り (2種) になった にそ 2枚(サイ
শুক ৮৮ প্ৰকাৰ্মিয়া _ক	197 5 (Mar 197 5)
THE WATER STATE OF THE	1.86.29.14 74 75.14.14.14.14
in an a citizan setan	रिया शार १६ र भ
李朝 郭州 一一一的人的人的	শ্ৰনি টোণ্ডি কাৰ পাণীকাদ
ভাটে তেম্পিছিচ্য,	\$160 mm & m 1,
^{संद} श डीड्डा अन्य सन् य १	करिक असी मन
রল । এ ক্রাক্সপ্রত	THE HE TO SHOP A
ा (भग्नी । । संस्थान व	
क्षत दश क्षेत्रप काम	187
িচলাৰ জাৰ - গুৰি চল্লিক	19 3 1 22 1 +4 (to 64)
間間等 1 312 11,	File out way
ार शहरू दका हिंदा अहा व	"मुनाय कार्रिय । अस्ति क्षेत्रक वा
শৃক্ত কাশ্সম্ব	191 - 100 - 1 1 CM ,
াই শ্বেম ধন কুই হ	মানাৰ জঃভ নি পৰি কৰ্মাৰ
ঞ তি বিমোহিত ২গ।	कुराके लगा ७ खादर,
্গৰতীৰে ধেৰি এক পাঞ্	यथाय १५८ । अर्थद (भोक्स्य)
নাম্মা প্ৰিক্তিক	८०१ १८७ कामन ५ व,
্ত মুকু : কানিচে হাসিতে	सिर्धितभी प्रविद्गारमस
হ বৈ ছে জগুপন ফুরি;।	শ্তশ করি জ্লয়।
প্ৰকাৰেশ নিমিয়ে শুলাই	
कर्मक जन्म स्थित,	4.46.486 (4.47)
ারি ন্তর নিমিধে দিং 🖰	নৰে সাতন্ত - চাৰনা সক্ৰি
ष्यांनरक (धन ष्यांव,	এ মুখ্য কর সম্মান্ত্র
্প সেট মুকুগের বেশ ভি	ছণ, শয় নিছাৰ কথিছ আলায়
কত প্রতিবিদ ভাদ,	"কিন্ড ন্ ৰীন স্ব ু

প্ৰাণী ৰনে ৰনে একে একে একে त्मशांदर कामाद्र, त्मरथि कत्नक, কত যে উঠিছে তায়; নছে এ তকণ প্ৰাণ।" ভ্ৰমে সে তর্ণী বিনা কৰ্ণ দণ্ড কভুত দে পুরী আশোকহে "তবু (थम्रा निम्रा शांता-नीरत , কর নাই পরিক্রম, প্ৰাণী ষত জন উঠে ক্রমে তাহে দেখ একবাব ল সকে মম পরপাবে রাথে ধীরে! ঘুচুক চিত্তের ভ্রম। প্ৰাণী হেন কত উঠে ভীর'পরে তাপে চিত্ত তব গ্ৰি যে কারণে গুৰা বৃদ্ধ নাবী নব, যে বাসনা ধর মনে— মনোরথ-গতি থেলায় ভরণী সকল তোমাব গুরাব বাসনা ধারা-নীরে নিরন্তর। প্রবেশ আমার বনে , দামিনী-ছটায় গগনে ধেমন সকল তোমার দেখাব সেখানে কাদ্ধিনী শোভা পায়, কত কিবা অপরূপ. বদন তেমতি প্রাণী দে সবাব দেখে নাই শাহা নয়নে কথন প্রদীপ সুগ-প্রভার। স্বপনে কোন সে ভূপ ; হেরি কতকণ চিত-হারা হয়ে স্বরুগে যেমন থাকিৰে কাননে প্রাণী ফ্রেন লক্ষ লক্ষ্, কাদিতে হবে না আব; আসে সেই স্থানে দশ দিক্ হৈতে ভূলিবে সকল, শোক চিম্ভা তাপ ভরণী করিয়া লক্ষ্য। ঘুচিৰে প্ৰাণের ভার।" চাহি মুখপানে আশা কহে হাগি পাইয়া আশাস 'কি হেন সংবিদ্হারা, বচনে আশার পশ্চাতে ভাষাব সনে , প্ৰবেশে যে প্ৰাণা আখার কাননে হ'ৰে কুতূহলী ধাই জ্ৰুতগতি ভাহারি এমনি ধাবা-প্ৰবেশিতে সে কাননে। ভাতিছে বদনে হের কিবা স্থ দাডাইলা আশা আসি কিছু দুর নাচিছে হৃদয় কত; হাসিয়া মধুর হাসি পানে মত মন বাসনা-পীধূষ — মম আঁখিৰম্বে পরশি ভর্জনী চলে মাতোয়ারা মত , কহিলামূহল ভাষি— নিমিধে নৃতন নন্দে যেমন সম্মুখে তোমাব "তের বৎস হেব नवीन कूचम फूटि, আমার কাননস্থল, इंशामित्र हिटल নিমিষে তেমতি . হের মনোহব নবীন আনন্দ উঠে, কাননেব ধারে ধাবা কিবা নিরমল। কথন কোথা দেখেছ কি কভু আশার কানন তশ্বী হেন চমৎকার, নির্থি সমূধে প্রকালিত ধারা-জলে; বিনাশে বিরাগ পরশে পবাণে সলিল তাহাতে স্বচ্ছ কাচ ষেন ঘূচার প্রাণের ভার। उहिन डेहिन हरन , বুঝিবে তথ উঠ তরী'পরে উঠিছে আপনি कथन डेथान এ কাননে কত সুথ, কথন হইছে হাস , রচেছি কান नक्त अपृत्र মণির উৎপল ম্বি-পদ্ম কত, ঘুচাতে প্ৰাণীর ছথ।" ধরা-অঙ্গে সুপ্রকাশ; ধরিয়া আমা এত ক'রে স্বাশা তরী মনোহর ८थटल धात्रा-नोदत्र তুলিলা তরণী'পর, হীরকে পচিত কার,

অম্নি সে ধারা निन उथनि চলে জভ পর পর ; দেখিতে দেখিতে পুরিয়া তুরুল हल हल हल कल. দেখিতে দেখিতে সলিল চাকিয়া ফটিল কত উৎপল। চলিল ভরণী গতি মনোহর মধুর ম্বলীধ্বনি, বাজিতে লাগিল महमा को मिटक তরীতে সদা আপনি: ভূলিলাম যেন এ বিশ্ব ভূষন করতলে স্বর্গ পাই: চাবি দিকে ষেন মণিময় পুষ্প नित्रिथ (यथारन हारे। ঙনি যেন কেহ কহে শ্রুতিমূলে "বেখ রে নয়ন মেলি, কলস্কবিহীন মানব-মণ্ডলী ধরাতে করিছে কেলি, স্বৰ্গ-তুল্য এবে হয়েছে পৃথিবী সর্গের মাধুবীময়, বেষ, হিংদা, পাপ-ৰৰ্জিত পৰাণী নিৰ্মাল শুচি হ্ৰদয়।" েরি যেন মর্ত্ত্যে তেমতি তকণ তেমতি নবীন ভাব ধ'রেছে মানব य पिन विधित्र श्रिमि आविकाव, নাহি ধেন আর দেই মর্ত্তাপুরী त्यथात्न मात्रिका-निश्रा. ভস্ম করে নরে, হতাশ-অকারে অনলে যথা মকিকা, नम्ब-मन्मिद्र ধেন অভিনব কিরণ প্রকাশ পার, ∮রি করা ধন, ফিরে ধেন কালে कारन जारन भूनतात्र ; क्ड (ब ज्ञारम আনন্দ-লহরী উঠিলি ভাখন মুম ভাবিলে সে স্ব, এখনও অস্তুরে সহসাউপৰে অম ! কড দূর আসি ভাগি হেন ক্লপে তরণী হইল স্থির, 16

পরপারে আসি আশা সহ সুথে উতরি ধরার নীর ; ভরী হৈতে তীরে নামিয়া তথন হেরি মনোহর স্থান; "বহিছে সতত শীতল প্ৰন বিস্তারি মধুর জাণ; তক-ডাবে ডালে পূৰ্ণ প্ৰকাশিত স্বভি কুস্মদল, চন্দ্রমার জ্যোতি সদৃশ কিরণে উজ্জল কানন-স্থল; পাখী নানা জাতি প্লবে বসিয়া মধুর কৃজন করে, নাচিয়া নাচিয়া গ্রীবাভঙ্গি করি মযুব পেথম ধরে। কৃছ কুছ কুত্রে গলার কোকিল প্রমন্ত ভাব, মূহ: মূহ: মূহ: তমু-নিশ্বকর সুগন্ধ সুধার আব। সরোবর-কোলে প্রফুল কম্ল কুমুদ, কহলাব ফুটে, গুঞ্জরিরা ভালি কুমুমে কুমুমে আনন্দে বেডায় ছুটে। চলেছে সেখানে প্ৰাণী শত শত সদা প্রমৃদিত প্রাণ, স্মধুর স্থরে পূবে বনস্থা আনন্দে কবিয়া গান, কেহ বা বলিছে আমাজ নিব্ধিব কুমুদ-বঞ্জন শোভা; **डे**ठिटव वथन গগনেতে শ্ৰী क्रमन-मर्गालां हा ; আজি রে আননে ধরিব জনমে মধুর চাঁদের কর, কোমণ করিয়া কুম্বম সে করে বাখিব হৃদয়'পর। ভাহার উপরে विश्वा श्रिषाद কত যে পাইব সুধ। কথন হেরিব, গগৰে শশাস্ব কথন তাহার মুখ।" কৰে কোন জন বেপুরবে স্থথে "কোগ' পাব হেন স্থান!

য়াখিয়া এ নিবি খগত-হর ড नित्रि क्षारे शांव ! এ হেন রভন विवा व शीमाह ৰতনে রাথিতে ঠাই, নিরজন হেন ভূমগুলমাঝে নহনে দেখিতে নাই।" "হায় কত দিলে (कह वा विनद्ध भाव त्म काक्न-कन ! দেখিতে তেবন নাছি বে খুনার भूं किल व्यवनी छन ! কি দে অপরূপ দে তুল ভ কল দেখিতে কিবা খুলর, অপরূপ তার বুৰি স্পিতিতলে নাতি কিছু পুথকর ! নৱনে কেৰল लाहे प्रत्ना না গতি আখাদ কভু, ক্বা সে আনন্দ হার মধুমর কিবা সে আত্রাণ তবু; পাব কত সুখ না জানি সঞ্চয়ে গুচিৰে সকল ভৰ, করিব পৃথিবী কভূ যদি পাই অপূৰ্ব সৌন্দৰ্য্যমন। ছার চিস্তা রোগ ভাবনা কি ছার দে ফল বতাপি মিলে, जीवन भवांनी বিনিমরে তার কোভ নাকি বিকাইলে।" শুথে করে গীত চলে কত কৰ वरण करव शांव वन, শোভিব উৰ্বাস পরিয়া শিরেতে धवती कवित वर्ष। বিভীয় রতন भवियो-जिक्दन কি আছে তেমন আর— চিকণ মৃত্তিকা ৰীয়া মণি হেন কেবল বংশর ভার!" वत वन मारम विवाह दर्भवां গঞ্জীর চুকুজি-বর, করিয়া সকীত हरण खापिनन कल्लिक (बिनीशब !

२। एक-विकास আৰি মত নদী ছেরি কি ভরণ চালে ! প্রভয়ন ভোর আৰু য়ে প্ৰতাপ হেরিতে আনন কত, হেরি ক্ষবর্থ আজি ধরা তব কিবা সুখ অবিরত ! পগনের কোণে জোল হৈমধ্যজা কৈডনে বিহাৎকাল-कुनारनात मूर्य লেখ ধরাতলে मानव किनिद्द कान ।" खुत्रक-तिमदत्र **বলি**শ্বা সুসভ্জ ভরুক্রি কত ভন, हरण खण्डरदरण नावित्र हला नात्र कृति आकर्ष । কত হেন ক मन भिक् र्'एड সঙ্গীত ভানিতে পাই. উন্মন্ত পরা ত্রৰ উন্নাসে প্রাণী ভেরি মত থাই। ধৰা দে জাহবী ছাডিয়া শিধরতল, नेजन वाजिए '.सुटम (सहन **(**सहन শীতস করি অঞ্স ; श्वांन नीत्रशं ছোটে কল কল धवती नवरण पुरस, নানা শত বিধিধ পাদপ বিভূত করিয়া বুকে। योग नाना का (बर्ग समहत् मखद्रव कांत्र भीटत. विविध आहे! পশু স্থাচর मना ज्ञास श्रूप छोटत ; विडेट्स विछ ভীর সমিহিত नावी करत यूर्व भीम, विकाल को লতা-শুলারাজি প্রফুলিত করি প্রাণ ; দ্ৰবে তটে ভীবে नमा लामां कि वने, श्रीदश्च करन वाननिक बरन नमा ऋर्थ निम्मन क्या त्न नास्वी काहि कि प्रकार कहा कि प्रकार

নির্থি ডেমভি াহে নিড্য তথা चानक यूधा-नहरू। ाबि मेंड शर्ब ছাড়ি শত দিক প্ৰাণীগণ চলে তাৰ; वा युष व्यानी शुक्ष तमती ক্ষিতি পূৰ্ণ জনতায়, লে থাকে থাকে কালারে কাডার পিপীলির শ্রেণীমত: व्यागीत व्यनारक धनःश्र व्यनःश्र পরিপূর্ণ পথ যত। নির্বাধি কৌতুকে ।। विश्वा (हो बिटक সাগরের বেন বাণি--াৰ প্ৰাণিগণ চাকি ধবাতল हत्न निया करलांनि, অদেৰ উৎসাহ আনন্দ আখাদে मकला करव गमन, দেখিয়া বিশাৰে পুরিয়। আখাদে আশারে কেরি ভখন, "এরপ স্থানন্দে িজাসি ভাহায় श्रानी मत्त्र कांचा यात्र, কে বাসনা মনে চলে কোন স্বানে কি দল সেপানে পায় ?" অশাক্তে প্ৰি হাসিয়া ডখন "हन, ३९म हन काटन. প্ৰাণী-রঞ্জুমি কৰ্মজ্জ নাম নির্থিবে অমুরাগে, াণী যত তুমি ८१व এট সব সেইখানে নিতা যায়, ধাদৃশ যাহার াদনা কল্পনা সেইখানে গিয়া পায়।" গ্ৰাপা-বাণী শুনি চলি ক্রত বেগে আশা চলে আগে আগে ाने किष्टाहर দেখি মনোহর পুরী এক পুরোভাগে।

দ্বিতীয় ক**ম্পেনা** কমকেল—ছয় বাব—হয় জন প্রহরী কর্মুক

রক্ষিত-পুরীপরিক্রম-প্রতি হাবে

প্রহরীর আকৃতি ও প্রকৃতি দর্শন। ্রম ছারে শক্তি, ২য় ছারে অধ্যবসায় তর ছার্ছে मारुम, धर्य चारत रेवश, धम चारत लोग, ७**हे चारत**ी खेरमाइ--- भूतीयत्था श्रादम - भूतीवर्म---भूतीर मधाकारण यनःदेनम] অপুর্ব নগরী চৌদিকে প্রাচার भावारम बहिन्त कांबा, নির্বাধি সম্মুধে বিশাল বিশ্বত পকাশিরা আছে ছারা; প্রাচীর-শিখরে প্ৰাণী শত শত নিব্ৰি দেখানে এড বিচিত্ৰ স্থাদর শামজী ধরিষা লমে স্থাপে অনিবত, कवि एक्समन নিয়দেশে প্রাণী কতই আছেল নম. চাহিয়া উচ্চেতে व्यभीत करेंगा मना करत्र मित्रीक्रम--রাজ-পবিচ্ছদে वाक-शिःशामम ञ्चवर्ग-द्रमञ् कांह, মতিত হীরক প্রবাল মাণিকা কত দ্রব্য শোভা পার। আশা কহে "বংস, অপুর এ পুরী আমার কানন ইজ, গ্ৰাণী নিতা নিতা প্ৰেশে ইহাতে মিটাইতে প্রাণের স্পৃহা, এ পুরী পশিতে আছে ছয় খার इव बाजी चारक बारत । **(कर (**म हेशाल প্রকেশিতে নাহি পাবে, আ (ই)দে যত জন **જા**(वन मानदन সেই পথে করে গভি, যে পথে বাহারে করিতে আবেশ ৰান্ত্ৰী করে অনুমতি।

चा(रे)रम अधि अक्रमा

করি হেঁট মাথা বাৰুপ্ত,প পাশে প্ৰতি বাবে বাবে একে একে সবে বালুকা করে গণন। क्रमनः करत् सम्। গুণিয়া গুণিয়া শিধরসদৃশ এ পুরী ভোমারে চল দেখাইব করিয়াছে বালুরাশি, च्यारा रमथ यछ चात्र, ল'য়ে ভায় ভার আবার গুণিয়া প্রকৃতি প্রহরী কিন্নপ আকৃতি ঢালিছে তাহাতে আসি, গতি মতি কিবা কার।" অনু অভিলাধ অন্ত কোন সাধ लहेबा च्यायांब এড কৈয়ে আশা নাহি কিছু চিত্তে তার, চলিল প্রথম দারে বালি গুণি গুণি যুবা এক জন অনক্ত-মানদে নির্থি সেখানে कतिरह रेनेल-आकार । দাঁড়ায়ে খাবেব ধারে; অতি সাম্যভাব প্রকাশ বদনে প্রকাণ্ড-মুর্তি षांत्र-मज्ञिशादन অণুমাত নাহি জেশ, অচলেৰ এক পাৰে, নহে বিকশিত অস্তবে শরীবে ভুকাদৃঢ়ক রি ৰে যুৱা পুৰুষ চাঞ্চল্য বিবক্তি-লেশ। দাঁডারে দেখে উল্লাসে। ভূৰনে প্ৰশিদ আশা কছে "বংস, অচল-শবীর হেলিয়া পড়েছে ধরাতে শুখ্যাতি ধার, সে যুবা ধরিয়া ভায় প্রার্থ-রঙ্গ গুলে সে **অধ্যৰসা**য়, जुनिष्ट फिनिष्ट অবলীলাক্রমে চকে দেখ এইবার ॥**"** ভুক্লেপ নাহি কায়। ক্ৰমে উপনীত তৃতীয় তৃয়ারে, জ্রকৃটি করিয়া কভু সে অচলে আসিয়া হেরি তখন, यूवा ८३८त मात्य मात्य, প্রাণী লক গণ দাঁভাষে সে খারে নিক্ষেপি অন্তরে নিহত কপোত করে ধারী আরাধন। नित्र (वभन बाद्धाः হয় দেই দারে মহা কোলাহল বিচিত্ৰ ব্যাপাব দেখিয়া যুবার শক্তধাবী সর্ব্যজন। বিশ্বয়ে নিশাল হই, চম্কে চম্ক রবির আলোকে প্রমাদে কণেক বাণী-শৃকুহ'য়ে অস্ত্রে অস্ত্রে খরষণ। ন্তম্ভিত ভাবেতে রই। নির্থি নিভী চ পুরুষ জনেক চাহি আশাম্থ পরে কুতৃহলে দারেতে প্রহরীবেশ, আশা বৃঝি অভিপ্রায় বীৰ্যা প্ৰকাশি অপান্ধ-ভনীতে প্রাণী রক্তৃযে কহে "শক্তিরপ চাহি দেখ অনিমেষ। এই ঘারে হের তাম, কেশরী কুল্ল সম্মুখে উন্মন্ত অদাধ্য ইহার নাহি এ ভবনে করে ঘোরতর রণ, याश हेळा जाश करत्र, সেই বীশাবার নিষয় ভাবেতে মানৰ মণ্ডলী ৰুনা দৈত্যকুলে করে তাহা দরশন। পূক্তে এরে সমাদবে।" আবাসি মধা গ च्या हेल मंत्री व হ'য়ে ভাগাসর কহিয়া এন্তেক वृष्टे शांख (मांहर शहर, আসিয়া বিভীয় বার, এক হাতে ক্রী এক হাতে সিংহ দেথ এ ত্রারে আশাকহে "বৎস, (वर्ग निवांत्रण करत , প্রাণী এক চমৎকার।" कत्रिया डेज्ड স্পাবার উদ্রেক নির্থি বৃসিষা দিতীর বারেতে (मृद्ध द्यांत्रकत त्र्य,

বৃদ্ধ প্ৰাণী এক স্থৰ,

মাধুরীতে ভাব লৈয়ে করে ক্রীডা অতি মধুময় কেশরী কৃষ্ণর স্ক-িজাস নির্মাণ, মনসাধে অফুক্রণ। তথনি সে সাধে कांभा कटह "बाद्य प्रिविছ बाहादत ৰা বলেন বিধি সাহস ভাহাব নাম, ষারে করে পরশন, দেব দৈতা প্ৰাণী ধরা তুষ্ট তারে তথনি অমনি টনি তুষ্ট বাবে বশীভূত সেই জন; মর্ত্তো বাক্ত গুণগ্রাম।" কিছ অঙ্গে তার ভুজক্ষের মালা চত্ৰ্য ত্য়াবে আশা আইদে এবে পরাণী দেখিয়া জাদে · कट्ट "वरम, देशर्या (मेथ, আপন ইচ্ছাতে এব তুল্য প্রাণী নিকটে তাহার প্রাণী-রক্কড়মে হেরিতে না পাবে এক, কেই না কখন আসে। কি করেন বিধি ভাবিয়া অধীর দেখ কিবা ছটা वम्या श्रमीश्र স্জন বিফল হয়, কিবা দে প্ৰশাস্ত ভাব, প্ৰাণী কোন জন এ মৃত্তি যে ভাবে পবিত্র স্কাদয়ে অদ্টের কাছে সুস্থির নাহিক রয়। করে নিত্য সুথ লাভ।" षामि देनवरेनाटव আসি হেন কালে নিরখি সে ছারে বিশ্বাবিত-নেত্রে নিকটে করি গমন, স্থিরদৃষ্টি এক জান, না জানি যে বিধি কি ভাবিলা মনে পুত্তে দৃষ্টি কবি অন্তরেব বেগ আমারে হেরি তথন, ननं करत मःववन , ভূঞ্জ তাহারে ক্ষত্ত হৈছে তার (चत्रिमा (ठो मिटक খুলি ফণিমালা দ°শন করিছে কভ, পরাইল মম অবস্থে করিতে ভূবন করিলা ভ্রমণ একই ভাবে সদা তবু সে পুরুষ শরীরে বাঁধি ভূজদে, গ্ৰীবাদেশ সমূরত, না পরি লজ্মিতে বিধাতাৰ বাক্য নয়ন-অপাঞ্চে ম্থে নাহি ভার ত্রিলোক ভূবনে কিবি, নাহি ঝরে অশ্রুকণা। ফৰিমালা গলে অঙ্গ বিষে জলে নাহি বহে ঘন খাস নাসাবস্ত্রে भिवानिमि शीति शीति । নহেক চঞ্লমনা। নাহি পাই খান ব্ৰহ্মাণ্ড ভূবনে ক্তিপয় মাত্ৰ প্রাণী সেই দ্বারে স্থান্থর পরাণে থাকি, প্রবেশ করিছে হেবি, আদি শ্বস্থ কিছ প্ৰাণী শত শত শেষে আশা-পূরে দূবে দী'ডাইয়া এক্সপে হয়ার রাখি আছমে সে বাব ঘেৰি, মানস তোমাব দেখি স্থকুমার **েরি অপর**প প্রাণী বারদেশে এ পুরী ভ্রমণে তাপ। সম্ভ্ৰমে সুধি আশায়, পাও'ৰদি কভু আংসিও নিকটে কেন সে বসিয়া **শেরূপে সেথানে** ঘুচাইৰ সে সম্থাপ , ফণী দংশে কেন গায়। হৈয়ে চমৎক্ত ভূমি ধৈৰ্য্যবাণী ধীৰ শান্তমতি খনিয়া বচন চলিতুপঞ্ম ছাব, ধৈৰ্য্য, সে তথন কয়-নির্থি দেখানে প্রহার জনেক হেন দশাম্ম "ভন বলি কেন । প্রাণী অভি থকাকার, কিরূপে উত্তব হয়। সেই কৃদ্ৰ প্ৰাণী বামন আাকৃতি কৰিয়া বিধাতা अमुहे २५ जन কোনালী করিয়া হাতে, ভাবিয়া আকুল প্রাণ—

এ ক্ষিতি-থনা धवती मंत्री द তবু ক্লপকাল : করিছে খনন আমাৰ বিবাম নৰ; নিত্য নিতা অস্ত্রাঘাতে, थुँ फ़िया थुँ फिल দিবস-য।মিনী ধ্নন করিয়া इंगिट्ड मुखिका নিত্য যা সঞ্চয় করি, রাশিতে রাখিছে একা :-भगरन छेए সে যুদ্তিকারাশি ঝারিছে সভত करमवर (अप কিংবা আন্ত লয় হবি: वस्ता हिन्दांत्र द्वाथा। তুলি আকিংশ দশ বৰ্ষে যাহা अनि-(कोनाइन ক্ষনি সেই দ্বারে এক গাত্যাঘাতে নাশে. নিবিড় জনতা ভাষ, অদৃত্য আন श्रानी खरर्गमहरू না জানি কেন ৰা মুছুৰ্তে মুহুৰ্তে এডই ডুল্মের আনে . পড়গ্ৰ-ফীটের প্রার। ধাৰী হেব*া* আর আর হাবে বিহীন শরীর বসন-ভ্রণ-কেই না বিশ্ব পোহায়, কেশজাল ভাষ্-শলা ন' হবিজে ভার আক্লিষ্ট বাংন ধলি মুঠি করে। নির্বি ভাদের (माना-मूटि श'द याय , (क्रम एक (क्रम माना, कामि यहि त्नामा द्रांशि कर्ष्ट्र ा ক্ধা-ক্ফাড়র অংক পরিপূর্ণ उथनि (म ३३ ७४), बाभारत विखामां कति, गह नाई य প্রমেব ভাগোতে প্রাণী সেই র'রে কেন বা সে দব কিবা অভাকি প্রকা, সেরূপ আকার ধরি। जे दय दमस्थिष्ठ জব **সংস্প**্র অস্তু কোন পথ আশা কছে বিৎস, कछ कि कदिएवं लोन, যে প্ৰাণী নাহিৰ পায়, আনিল এল বলিয়া আমাধে वहे बाद्य जावा কথকের মাঝে এবে সে দেখ विशान !" প্ৰবেশ কৰিছে চাৰ; শুনি চাহি ফিরে শুনিয়াছ ক্ষি শ্ৰম নামে হৃঃথী আশাফিরাইয়ামূপ, নৱে তুজ বাব নাম. या ३ वर्ष ' **হের মৃত্তি ভার** करह "तरम, हव সেই আন এই अपृष्टे हेहात इव ।" কতে দিক বনস্বাম।" कित भीर्यथान তুঃথিত অস্থ্যর শুনি আশা-বাণী यश्राकारन वर्त्र वात्र. निकारे डाडात याहे. ভাম ম হেরি শুস্তপাশে क्रिया धारमध्य বিনয়ে নিব্ৰ लागी (मधा ठमशकांत , বারতা গীরে স্থাই, नाषादय प्रशादन হয়ে সুশীত্র সাম্নাবাক্যেতে শ্র-পদে আছে স্থির, करङ हांत्री त्यनचरत्र, W 7 1 করতলে ধরি বক্ষ:স্থলে নিডা বলিতে বলিতে হলার করে গন্তীর, धर्षिन्यू धन वाद्य , ব্যক্তিক 🖑 क्टर् "विव्रक्तिन আমি এইরপে নিখাস-প্ৰখাস অপর্প তেজ তার, बहे (म क्लामानी भन्न, नदीव '' নিষেষে পরশে कति व्यक्त्रह ।वृत्री चनन टक्ष्यमिक द्यम भाव ; ना कानि मिया-गर्वती ; चारत हैं গ্রাণিগণ স্বাসি আইদে অপরাহু প্ৰভাত ক্রার ্ৰা মিন্তা বেইকণ, প্রাবার প্রভাত হর

সাবর্ড আকারে সে নিশাস-বেগ क्षरवर्ष भूरव छथम ; বুরিতে বুরিতে যথা মদীগর্ভে मनिन वथन চলে, **পড়িলে ভাহাতে** ভয়তরী-কার্চ मृहूर्स्व श्रादरम जरम ; বুরিতে বুরিতে এথা সেইরূপ প্রাণী প্রবেশিছে ভার, ক্লণকাল স্থিৱ क्ट मृष्-भरम সেখানে নাহি দাঁড়ার, পড়িতে পড়িতে প্রাণীর আবর্ডে व्याना मृह करत्र शति, खख-वहिट्फिटन রাথিলা আমারে ৰতনে স্থৃত্বি করি। কৌতৃক প্ৰকাশি বিশ্বরে ভথন আশার বদন চাই, আশা কছে, "বৎস, না হও চঞ্চল আছি সঙ্গে ভর নাই; वहे वर्ष-बादब এ মহাপুরুব ভূবনে বিখ্যাত বিনি, উৎসাহ নামেতে অসম সাহস त्नहें बहाखानी हैनि।" উৎসাহ তথন আশার বাক্যেতে আনন্দে আগ্ৰহে অতি, ৰদিভে লাগিল বসাবে নিকটে जन्मूर्य दम्यादः नथि-"এই পৰে বাৰ কৰ্মকেজ-মাঝে না কর অন্তরে ভর, মানব-জীবন কে বলৈ ক্ষণিক জগতে প্রাণী অকর; ত্ৰৰ ভীৱ তেৰে প্ৰাণী-রক্ত্মুৰে শরীর অক্সর ভাব, बीवबरण मिख् মৃত্যু ভূচ্ছ করি टेबंटछात्र विकटन श्रांव ; শৈবালের জল · ৰ্পন-প্ৰ**ণাপ** • নহে এ মানব-আৰি, कोड-क्ष कुमा আহার শরন चाचात्रं मटर विवासः व बहीबखरन THIS WHILE क्षा माचा विशिव रहि, A CANADA CONTRACTOR

নিভ্য থাকে বার সেই বন্ধ প্রাণী त्नहे नर्ब मृष्ट मृष्टि ; স্বকার্য্য-সাধন নহে বত কাল এ বিশ্ব-ভূবন-মাঝে, আচান বুকি বল ধন মান তেজ দেহ প্রাণ কোন্ কাজে; এখনও না পারে থিক্ সে মানবে 🦈 প্রাণ সঞ্চারিতে জীবে, এখন(ও) কৃতান্তে না পারে জিনিতে नःशंत्रि नर्स चिनिद्द ; कि कर ७ एउक সহিতে না পারে নরকাতি তেকোহীন, দেবতুল্য ভেজ নতুবা ভাদের করিতাম কত দিন।" এত ক'ৰে কান্ত হইল উৎসাহ নিখাদে হন্ধার ছাড়ে, প্রাণীর স্বাবর্ষে কাপিতে কাপিতে নিরধি আশার আড়ে; সহজ্ৰ পৰাণী ' मृहूर्ख नरङक বুরিতে বুরিতে বার, दांत्ररमस्य भनि তিলাৰ্দ্ধেক কাল ভূমিতে নাহি দাঁড়ার; আশার সংহতি বিশ্বরে তথ্ম नगरत প্রবিষ্ট হই, क्षकान (यन প্রবেশি নগরে छक्ति इहेद इहे; कति हाति पिरक পরে নিরীকণ लागी दहति त्रक्षा, শত শত ভাবে শত শত প্ৰাণী গতি করে মহাধ্যে; নির্ধি কোণাও কেতন সুক্র বছমূল্য বিরচিত, কোৰাও চিত্ৰিত রঞ্জিত বসনে ধরাতল সুদক্ষিত ; খন্ত-শৈভাকর কোৰা চন্দ্ৰাভণ বিস্তুত গগনভাবে, চিত্রিভ চুকুল কোণা ব্যনিকা व्याद्धानित्व (स्मवादन ; বৰনে আৰুত **মূত্তাৰ**ড়িত ভূরত কুরত, কড়,

যুৱা কোন জন

জাঁকে রূপ ভং

ক্ষিতি কৃষ্ক করি भरव भर्ष भर्ष াতি করে অবিরত: াৰান শভ শত হাব ক-মণ্ডিড পথে পথে করে গতি. ধ্নতার স্রোতে নগর প্লাবিভ রজঃ-পরিপূর্ণ পথি ; হেম্মণিময় কোথা বা সুন্দর আস্ন সজ্জিত আছে, করি কর্ষোড প্ৰাণী সক্ষ লক্ষ দাড়ায়ে তাহাব কাছে; প্ৰাণী কোন জন বসিয়া আসনে হেমদও করতলৈ, आकान विनीर्ग খন জয়ধ্বনি প্রাণিবৃন্দ-কোণাইলে, হেরি স্থানে স্থানে বসি কভ জান শিরত্বাণে জলে মণি, (हलांब (ग मिटक ইপিতে কটাক रंगरे मिटक श्रवशानि ; ভুরক্ষের পৃষ্ঠে (কাথা বা অসজ < कर करत चारतांक्प, হিরণ্য-মণ্ডিত াধিয়া কটিতে অদি-লগু সার্সন; ইঞ্জিতে কটাকে त्वाहि त्वाहि खानी ट्रोपटक क्रिक जात, অসি নিকাশন কবিছে গৰ্জন ভীবণ ঘন চীৎকার, टकान मिटक पनः হেরি কন্ত বামা অন্তরে ভাবিয়া সুখ. विननी विनास ব,ধিছে কৰ্ত্তী হাসি-রাশি-মাথা মুখ ৮--পাজিছে আসন কেচ বা কুসুমে কোমল ধরণীতলে, অন্তরে সুধিনী বসিছে ভাষাতে সিঞ্মির সুগরিজনে। পরিশ্বে বসন কেহ বা চিৰণ করতলে মণিমালা, ছলাইছে ধীৰে বাজুতে খুংখুর বাছতে বাজিছে বালা; हरण दकान धनी शीरत शीरत शोरत ठाक-कमा त्वन भने,

ধীরে ধরাতলে বৃদি ; চলে কোন বাষা রাঙ্গা-পদ পড়ে ধরণীর বুকে, কোমল কান ষ্বা কোন জন সম্বাথে পাতিছে মুখে। নারী কোন ১ন নিব্যি কোথাৰ ব্দিয়া ধ্বণীতলে, কোলে সুকুমাব হেরে শিশুমুণ वालन कति अक्टल, मांचारत्र निकः প্রসন্থ-বদন হৃদ্য বল্লস্ভ তার, "কভ শিশ্বণ কেরে ক্রিয়াম্থে মুত্রাসি অনিবার, হেবি কোনগানে প্রবরীব ক্রোণে अभा माहारण (मार्ग, শশ্চিক যথা পূৰ্ব ধোলক শোভে পশাকেব কোলে। প্ৰাণী কোন গ্ৰ Cकार्था 9 मां जाटव বেৰে ভার চারি পাশ, আছে শুচ চাতক বেমন বদনে প্রকাশ আশ; আন্ন্ৰেমগণ সেই সুখী : ধরিয়া কাঞ্জন-ডালা, করে বিড " পরি করতল বিৰিধ রতন-মালা। निकटि या ा ভনয় ভনয়া বান্ধব যতেক জন, ভাবি শ্ৰা বদন ভাহার মুখে করে নিরীকণ; কোথাও আবার भृति भृतः !! সুহ্ব সহব প্রাণী.--कात-लग्न (। । कतिरह कमन শিবে করাখাত হানি। খেদ আর্দ্র া ষুৰা, বৃদ্ধ, শিশু वमन-विशीन कांत्र, অনশনে কীণ শিরে কক্ষে, 🕾 কত কোটি প্ৰাণী বায়। केरिम करू হালে খেলে কড

ভাবে বলি কত লগ্,

কৈর আইকারে কেছ বা মাণিককিরণে করে প্রমণ।
কত অপরণ কড,
বেধি চক্ত্ মেলি
চলিতে চলিতে পথ।

তৃতীয় কম্পনা

রত্বোদ্যান—আকাক্ষা-ভবন, ভরিবাসীদিগের নৃশংস ব্যবহার ও কঠোর ব্লীতি-নীতি। চৰিতে চৰিতে হেরি এক স্থাদে অপূর্ব নব অঞ্চল, অতি মনোহর তক্ষিরে ফল कनटकत्र शब्दका। কত ৰত প্ৰাণী इंटिছে সে मिक्ट কত ৰত আসি কাছে, ফল পত্ৰ ছেরি তক্ষর শিপরে উর্দৃধ হ'রে আছে। अब्रिट्ड ब्रम्ड কোথাও তক্ততে বহিছে সুরভি বাদ, व्यत्रिया कोनिएक গ্ৰাণিগণ ভার করিছে কত উল্লাস। নাশ্চর্য্য-প্রস্কৃতি তহ্ন দে সকল च्त्रिष्ट् अम्बन्धः, क्छ् बद्यासम्ब কড় প্রান্তদেশে তিলেক স্থৃহির নর; ৰ্মিছে ভাহার পকাতে পকাতে लावे दिति कछ बन, তহ বারি বারি **ज्ञान हिंदि कि उन्ह** (न पिटक करत शमन ; वाम कछ छन्न ভ্ৰমে তল্প-পাৰ্মে প্ৰাণী হেন ৰত শত, गमा উद्ध्यांग नवा উর্ছ বাছ । স্বিশ্ৰান্ত স্বিয়ত; লমে কিপ্তপ্ৰাৰ পথে নাহি চাৰ ভঙ্গ না পরণে তবু, ছাৰি নাডিখান WINDSTON TO THE !

क्छ छङ् भूका দেখি ছাবে ছাবে হির হ'বে সেধা মাছে; খোর বিসংবাদ ৰহা গওগোল ৰয় নিভ্য ভাষ কাছে; **ৰুড ৰে হুৰ্মাক্য** অপ্ৰাব্য কটুকি সভত সেখানে হয়, ভাবিতে ৰখন ভনিতে ক্ষম मूर्थरा वक्कवा नव। কোন প্ৰাণী বদি করে আকিঞ্ন পরশিতে তর-অল, আঘাত, চীৎকার क्छहे श्रकांत्र **(क एवर्स रम व्याधी-तक।** সে বৰ বিকট দেখিলে ভণন কুরমভি ভরকর, সেই সব স্ব মনে নাহি লয় বস্করাবাসী নর। উঠে ভঙ্গপরে সবার বাসনা উঠিতে না পার কেহ, এমনি অভুত বিপরীত মতি প্রাণীয়া পিশাচ দেহ। সহি বছ ক্লেশ क्ट् वित क्ष् উঠে কোন তরূপরে, ७४न हो मिटक শত শত জন ভারে আক্রমণ করে; পাদপৃষ্ঠ ধরি কেলে ভূষিতলে থণ্ড থণ্ড করে তুর্ণ, নৰ-দন্তাবাতে निर्मन खहादन व्यक्षि मूख करत्र हुर्व ; चारतारी रव चरन না পারে ধরিতে चट्ड कांटे रख गर, अमिन विवन বাদনা ছয়ত धवनि वेशं इचन ; 🔹 ুউঠে তরুশিরে ভবু দে পরাণী चानत्म कांकन रीत्र ; থাকিয়া থাকিয়া ফুটিছা ব্যন মণি-আভা নেত্ৰ গাঁধে; ছিন্ন হক্ত পদ কত প্ৰাণী হেন হেরি সেখা তরুপরে, क्छ छन वोहि उट्ट जनांख्टन क्ष जार तक बदह ;

মাভ≢ ঘোটন দেখিলা ৰতেক নাচি কৰে জাৰ সে ক্ষির্ধারা (इम (दोशायव यान, প্ৰাণী সে কাকৰ পাড়ে, দাতা **ভোকা** গ্ৰ.ৰ দেখিলা মতেক কনকের ফল নেকের পাতা ভূৱে স্থাপদ মান; যভনে বসনে ঝাডে। পত্রাদি চা এই তক্ত-শস্ত উঠে নিত্য প্রাণী वहेक्टल टमधा আগে করি গেলা তারা, কভু আংদে কোন জন, ভোগে সে এখ ভাই সে এখন সে প্রাণিমণ্ডলী অতি দূর হ'তে ধরাতে আশ্রহ্য ধারা ।" निभित्य कदि गड्यन ; कामा हट्या বলিজে বলিতে উঠে তরুপরে বিষলীর গতি পশ্চাতে পশ্চাতে যাই, কেই না ছুঁইতে পায়, আসি একস্থা সে অঞ্চল-মাঝে डेडिट यथन ভক্তবন-শিবে চকিত অন্তরে চাই। তথ্ন সকলে চায়, लांगे कः भ দেখি সেইখানে বতন পাড়িয়া ভক্ত হ'তে পুনঃ অনিছে প্ৰমন্ত ভাব; নামে শেষে ধরাতলে, মুথেতে 🗁 দামিনীর ছটা প্ৰাণিগৰ এবে ভক্তলস্থিত নিতা হয় আবিভাব, क्ष्म नाहि कि रू राम , করেতে উলঙ্গ দেখাৰে রতন ষায় মন্ত করি ক্ষিছে ভড়িতবং. ভাষা সেবে জাভাসাড়, বেশেতে 🤊 🤊 নক্ষতা পত্ন না পারে চলিতে না পারে ছুইতে हृष्टि ज्ञाम मर्जाभय, চরণে বেন নিগড়। করি সি'া কেহ অশ্বপ'রে মম চিত্তভাব ক্ষিয়া ওখন बढ़शंकि मना किरत, ष्यांना करह "वरम, सन, যেন অভিলাষ এই তরুদলে ভেবো না কিম্বর काकर्गन कदि हिस्त , এমনি আশ্বর্যা গুণ – (क्र हत्य मार्ड কিবা দে কৌশলে ছলে কিংবা বলে কিতি কাপে টল-টল, যে পারে উঠিতে শিরে, **ভ**াডিয়া বুংহিত-নিৰ্ঘোষ কভু কেচ আর ভাহারে এথানে **চলে मर्ल्स ममक्न** ; পরশিকে নারে ফিরে কেহ মন্ত্ৰমতি शांत्र श খ্ৰাপ**দ খেমন** অব্বরে দীড়ায়ে তরুক্ত যে ভাবে ধার, গজ্জিবে एथन मर्दि, তুলি দীপ্ত অদি ঘন শ অাসিয়া সম্বরে व्यथना निकटि ৰ্জ্ৰধ্বনি নাসিকায়; পদধুলি তুলি লবে।" वानी रः হেন মন্তভাব 'এङ कहे मस জিঞাসি আশারে ভ্ৰমে নিত্য সেই স্থানে, द्राञ्च मक्ष्य करते. শুৰ ৭ পদ্ভলে ৰলি কিবা মোক্ষপদ কি কামনা-সিদ্ধি গগনে কটাক্ষ হানে; কোথা পার পুন: পরে।" काठ-दि ৰিৱৰি শেখানে আগিতে আগিতে খাশা ক্য "এবা কড় চার অট্টানিকা---मिरित गरंडक वन, প্ৰভাষ, নাই চাৰ গুৱছাতি षिया यनि निद्र ্প্ৰকাশে বেন চজিকা; े विद्यागतन दिन er Live ্ অপূৰ্ব শোভা ধাৰণ ;

কিরীট মন্তকে टिम श्रामन एउ শত শত ধাৰ পরিয়া উজ্জাল ৰেত রক্ত নীল পীত, বেগে নামে ধরাতলে. কাঁপায়ে মেদিনী উড়িছে সভত ছাড়িয়া হন্ধার ৰট্ৰালিকা চূড়ে গগনে করি শোভিত। মহা দন্ত-তেকে চলে; "পৃথিবী স্ক্ৰন ছটিভে ছটিভে , প্রাসাদ-নিকটে বলে গর্ক করি मद्द উপनोष्ड इब्र, বল সে কাহার ভরে. করিবে এ ধরা না চিস্তি কণেক করে আরোহণ না বদি সম্ভোগ क्न विधि शक् नात ? চিত্তে ত্যাৰি মৃত্যুত্তর। श्रामान-भन्नीदन প্রাণীর শৃত্যল ম্বর-বীর্য্য ধরি বে আদে মহীতে चाद्यां भिष्ठ केंद्रि केंद्रि, ভাহারি উচিত হয়, ভূঞ্জিতে ধরাতে <u>রিশ্বর্যা</u> প্রভাপ সে প্রাণি-শৃত্বল লন্দে লন্ফে এরা निश्रदत्र উঠে खराद्य ; পশু বারা ভাবে ভর। পাবে কর্মফল ধর্ম ল'য়ে ভাবে উঠে যত দুর ক্ৰমে গৃহ-চূড়া পাবে মোক্ষপদ হার। উঠে তত শৃষ্ঠ ভেদি, করিতে পারিলে মর্ভ্যে ইন্সালয় প্রাণী সে সকল অসম সাহসে অৰ্গপুরী কেবা চার ?" উঠে अञ्ज्यम इहि , हरन मर्श कति দূর অন্তরীকে কেছ গৰ্মভাবে উঠে ধেন ক্ৰমে প্রাণী সে সকল হেরি, আকাশে মিলিভ হয়, শত শত প্ৰাণী সোলামিনী সহ অঞ্চ নয়নে যোর যেন দেহ চলে চারিদিক্ খেরি; ঞ্লদ স্থির রয়। জনক আমার" কেহ বলে "কোথা ্ মাঝে মাঝে করু কোন বা প্রাসাদ কেহ বলে "ভ্ৰাতা কই"; অতি গুরুতর ভাবে. क्ष्ट्र वरण किरत দেও রাধানাব, বিভিন্ন হইয়া পড়ে ভূমিতলে নাহি সে नम्म वहे।" ह्रकां हा शिशादा ; রুমণী বালক এইব্লপে কভ প্রাণীর সোপান আরোহী সে জন कम्मन कत्रिश थीरत्र, কাচ বিনির্মিত গেহ. গশবস্ত্র হ'রে চলে কুডাঞ্চলি নিমিষে অদুখ্য नाहि थाटक किছू मरक मरक मना फिरत। नाहि थाटक श्रामी टक्ह। (म क्लान-चत्र না ভবে সে বাণী উঠিয়া শিপরে ন পড়ে বাহারা সে প্রাণী শার্দ্ ল-প্রায় খন সিংহ্নাদ ছাড়ে; **Бबदक ठबदक** অসি হেলাইয়া ণড়িছে প্রাসাদ চারিদিকে বেন উন্মন্ত ভাবেতে ধাম; नित्रि जानम वाए। কি পুরুষ নারী যে পড়ে সমূৰে াদ প্রাসাদমালা-উপরে আশ্র্যা किंवी किंगिए शानी, প্রাণী এক হেরি স্রমে, তথ্নি সে জনে খণ্ড করে ক্রীড়া করে বেন বিৰদীর লভা শাণিত কুপাঁণ হানি। क्षांत्राष-मिषद्य क्रम । শিশু এইরপে দেখিলাম কত निकटठे चारेटन चारताही व्यागीता कछ (व जनावा नात्री, म्कूषे ज्लिका धरत ; नण मख मन ক্ত্ৰিল বিনাশ প্ৰাণী সে স্বল ष्रदेश स्टेश (महे नव चन्नशांती; क्त्रीहे निरव्रष्य भरत

व्यापि कहि, "हम अहे मिरक दें माहिकदा नद्रा প্ৰাণে নাহি যায়া अनि एवन कोनाहन, कल लांगे द्वा वर्ष, नित्रथिव किंवा কেন কোলাই ভতেতে ছিড়িয়া কমল-কোরক इत्र পूति (म प्पक्षन।" हस्तो (यन हरन भए ; च्यातक निरम् করিলা আমা: কেছ বা পশ্চিমে কেছ উমরাত্যে দে পৰে বাইতে আশা; পূर्वपिरक कोन बन, ভবুকোন ক্ৰমে সংব্যিতে না: উন্মন্ত পরাণী দেখি সেই সব भवागिव रम भिभामा। मांगटि कदत शंमन, অনম উপার ৰেবে আশা মো প্রাণী হুই এক উম্বৰ-পশ্চিমে नहेबा तम नित्क यात्र ; किशि॰ गरकारत यात्र, নিকটে আসিয়া অভিধীৰে ৷ পূৰ্কাদিকে চাৰ কেশবিগর্জনে প্রচহরভাবে দীড়ার, ছুটে কত মহাকার! ভকু অহি দা দেখি সেইখানে হুদয়ে বেমন দেখিয়া তথন প্রাণী এক বৃদ্ধরা, ক্ৰির হৈ**ল জল,** শতগ্ৰন্থিময় ্ বস্বুলিপ জ্ঞলিল পরাণ दबन विवशास মলিন বপুতে পরা, (सर इहेन मूळवन । ধৃলিপিওবং [°]এই কি•তোমাৰ খাত বিচু হা কহিছ আশার কণা কণা করি ভায়, আনন্দ-কানন-প্রি? চারি দিকে প্র ভুড়ায় ভাণিত-বাটিছে সকলে আসিলে এথানে ঘোর কোলাহলে ধার, ক্ষর-শরীর-প্রাণ ? क्षां भाष्ं न সদৃশ ছুটি ইবৎ লচ্ছিত ভাবে কৰে আশা যুৱা বৃদ্ধ কত প্ৰাণী, "ওন রে বালক্ষতি, বন্ট্ৰ কবিং বিশ্ব না সয় প্ৰাণী যত এথা আমার সেবক कां फ़ि नव दवरन छ। नि ; এ নছে তাদের গতি ; অঠর সভাব ক্ধানলে জলে ত্রাত্মা পরাণী ছুৱাকাজ্ঞা নামে कि करत चाद्रत करा, কথন পশে এথার, কাড়াকাড়ি ক' পরস্পদ্ধে সবে লাপট ভাহার তুৰ্দ্ধ প্ৰভাপ निर्वादत क्षा कालना। নিবারিডে নাহি তার, ভৰি কুগ বা কত যে কয়ণ ফেলার কুপথে **ज्नाहेश** वारी कछ (थम-वांका हांब, অহি সম পূৰ্ব ছল, ভনে হিরচিত্তে বারেক বে বান সে জন পরশে বাবেক বাহারে জনমে না ভূলে তার। করে ভারে করতল ; कछ निर प् দেখিলাম আহা অবিকার মম नाहि थाटक चात সে প্রাণীলিকাতে ধার, বপরে হয় কিবা গভি বিশুদ্ধ পুপোর মত, সম্পূর্ম দু সূর্ব কত পদ্ধ ধন নাহি কানি পরে চেয়ে আছে অবিরত; वृशा दंत स्मार्थ व्यामात्र ; গণ্ড বক্ষ অঞ্জলে ভাগে स्वित्व स्मर्थास . इन अहे बिदक ৰ্নতা ভেদিতে চাৰ, কিবা এ পুরী-সহিমা, নিকটে বে খানে MH-#41 5. (8 क्षरवरम भूबीदण ं (एनं बड सन শালনে বেৰাটো ভার। म्मदिशा अक श्रिशा ।"

হার কড জন অধীর কুধার निविध स्मर्वादन शंव, তুৰ্বলা অবলা শিশু-হন্ত হ'তে আৰু কাড়ি ল'ছে খার। দে প্রাণি-মণ্ডলী কত যে অধৈৰ্য্য কত যে কাতরে আসে. করিয়া চীৎকার मृहुर्ख मृहुर्ख त्महे वृद्ध व्यानि-शाला। कैं। मिटल कैं। मिटल चन्न क्या क्या वर्षेन कत्त्र (म क्षांची, নিত্য থিল ভাব সদাই আক্ষেপে चिक करहे करह वानी ;-"কেন বে সকলে আইদে এথানে কোথা আর অর পাব, विधित वक्षना তোদের লাগিয়া বল আৰু কোথা ধাব; এ পুনী-ভিডবে নাহি থেন স্থান না করি বেথা ভ্রমণ ; নাহি হীন বৃত্তি চৌৰ্য্য কিংবা ছল नां कवि बाहा शावन , তৰু ৰাহি ঘুচে কাছালের হাল কি কব কণাল ছুট, কোৰা পাব বল, আহার তোদের বিশাতা আমারে রুট; কেন এপুরীতে করিস্প্রেবেশ ভূঞিতে এ হেন ক্লেণ, ধনীর আশ্রয প্রাণি-রক্ত্রে नट् कांकारणत (मण।" তাশিত অন্তরে কহিছু আশার "बाब ना मिथिए हारे, এ পুরী-মহিমা গরিষা যতেক बवात्न (मबिट्ड शांहे, मिक स्मनाहेश বাহিরেতে বার পুন: বাই সেই স্থান, মাসি বেখা হ'তে, मिथिया अ गव অস্থির হরেছে প্রাণ।" আশা কহে "কেন म्बृब-बंहरम **छेळ्ला रहेह अछ,** বাসনা বেরপ मिथादेव छात्र

व्या पर महिर्द्धक ;

কৰ্মভূমি নাম चन এ नगरी कर्ष खरन करन कन, ব্ৰিছ ভোমার বালম্ভি তুমি অন্তর অতি কোমল ; নিৰ্মিত বে প্ৰাণী কটিন ধাতুতে সেই বুঝে রহ এর, প্রাণি-রক্তৃমে ভ্ৰমিতে আপনি वितिकि छार्यन रकत , हम अहे मिरक তব মনোমভ भमार्थ (मथिए भारत, কৌতুক গহরী এ পুরী-ভ্রমণ-তথন নাহি ফুরাবে।" এড ক'রে আশা **हरन चारत चारत** সভয়ে পশ্চাতে হাই ; আসি কিছু দ্র পুৰী-মধ্যভাগে অচল দেখিতে পাই।

চতুৰ্থ ক**প্পন**্ বশংশৈন—নিয়ভাগে প্ৰাণিদ্যাগম—মাংগা-

হণ-প্রথা--ভিন্ন ভিন্ন শিশ্ব-দর্শন-ভিন্ন ভিন্ন বশ্বী প্রাণিমগুলীর বীর্ত্তি-কলাপ-দর্শন--বাল্মীকির সহিত সাকাৎ। নিকটে আসিয়া নির্থি সুন্দর व्यश्रक्त विश्वद्रत्वितीः কনক-প্ৰদীপ শিপরে শিপরে (धन किंत्रणंत्र (वेशी। ভূবিত নহন रेमन-हाविभिटक वावी नक नक बन, মাল্য মনোহর কুত্বদে গ্ৰথিত শুন্তে করে উৎক্ষেপণ, হয় জরধ্বনি चन चन चन करवक नाहि विद्योग, বেন উর্বিরাশি ৰগরাশি-অংক ' গতি করে অবিরাম। ঞাণিব্ৰহ্ম আসি

ट्याटलात अवावनी

'চুড়াতে ঋলিছে	মাণিকের দীপ	চলেছে গায়ক	नोंग्रेक बाहक,	
नवत्न त	সন্ধনে দেখিছে তার।		शीमा (तम्-भाति-भाती ।	
শে অচলে হেরি	খেরি চারিদিক্	উঠিতে বাসনা	করে না অনেকে	
প্ৰাণী আ	রোহণ করে,	শাসিরা ফিরিরা যার,		
আমূল-শিথর	टेनन-जरक व्यांगी	नौरह र'ए भ्रम	কেলি ফুল-মালা	
অপরপ		দেই অচলের গায়।		
कटन धीरत शीरत	শিরে শিরে শিরে	वहसम् श्रमः	করিয়া প্রয়াস	
অংকে অং		উঠিছে অচৰ	गरमरम,	
	প্ৰাণীয় প্ৰবাষ্	পাই বহু ক্লেশ	ফিরিয়া আবাব	
কৌতুক	कवि वर्षन ;		সিছে শেষে।	
শিলাতে শিলাতে	পদ রাখি ধীরে	ৰিজাসি আশারে		
	ात्रा रि श्व,	কিবা হেরি এ অচণ ?"		
ভাৱীৰ্ভ ভাৱী ৰ্ভ	পড়ে কভ জন	আশা কচে "বৎস,		
	য়ে ৮রণ;	অতি মনোরমা স্থা।		
ব্টফ্ল ঘণা	বৃক্ষ হ'তে সদা	বাডিল কৌতুক	উটিজে শিথরে	
থদিয়াপ	ডে ভূ তৰে ,	খানদে খ		
वधा मिहेक्स्त	প্ৰাণী নিত্য নিতা	আগে আগে আশা		
খদিয়া '	ডে অচলে।	बहरन পर	(मर्थात्र ;	
পড়িয়া উঠিতে	কেহ নাছি পারে	উঠিতে উঠিতে	क्षिम् इ'शद	
(4€ 1.	আরোহে পুনঃ,	সুমধুর ধ্বৰি	र चन,	
সে আণি-প্রবাহ	कविरक्तम-गरि	बखरा-डेशदत	পুরিয়া গেমনি	
क थ्य स	: গ্ল উন।	স্ভত করে		
্লয়ে নিজ নিজ	যে আছে সম্বল	খেন শভ বিনা		
€ 37cm :	ভেনে কভ,	মিৰিত ক		
্নী শিপরে শিপরে	কনক-প্ৰাণী	ভাবণে প্রবেশ	করিলে ভংগি	
নেহারে সুখে দত্ত।		পুলকিত ক	दब्र थान ।	
উঠে প্রাণিগণ	দীপ লক্ষ্য করি	শ্বে দৃষ্টি করি	রোমাঞ্পর	
ীত গ্ৰী	মুনাহি জ্ঞান,	বিশ্বয়ে ভা		
্মিয়াকরি সার	দেহ ভাবি ছাব	किया कान यन	কোবা বাডা	
্ৰী পণ কৰি	। নিজ প্রাণ।	किছू ना ट	দ্বিতে পাই।	
	মণি-মৃক্তারাশি	হাসি কৰে আশা	्रवश च्या कर.	
ু, উপাৰি	কাহার শিরে,	দৃষ্টি নাহই	त्व (मध्य,	
ু কাহার সম্বল	নিজ বৃদ্ধিবল	এ মধুর ধ্বনি	ানত্য এছকা	
व्यव्यव छिडिटक् धीरतः;		ै निनानिष्		
্ৰভু ৱাৰি ৱাৰি	नरत्र (कोन वन	बीना कि वानशी		
কাৰ ক	গয়ে কোন খন রতংশ তুলি,	নিঃস্ত ৰ		
विशेष्टिक्स वा शतिएक	বতনে কক্ষেত্তে	খতঃ বিনিৰ্গত	সুবাগত :	
क्षांवा-व	াছ কতঞ্চল ;	ज्ञाम निष	্যাস্থিপ র ;	
শ্ৰেক বা অপের	कड़ाज़ ग.८४ (४८४	नमा गुनारव	वाबूटल वाय	
beace	चता गाँ	of a section of the section of		

केमेरनित्रे मन ৰেষ্টিয়া বেমন खमत खरम खब्बति।" ভনিতে ভনিতে আশার বচন क्रमनः चहरन छे हि, বত উৰ্চ্চে বাই তত সুমধুর ধ্বনি ভ্ৰমে সেথা ছুটি। हां ि व्यत्भारम উঠिছ यथन मधा डाट्ग शिविकांब ; थोदत्र थोदत्र शोदत শরীর পরশি বহিল মুছল বায় ! সে বায়ুতে মিশি • হুমধুর ভাণ कित्र चारमाप्रमा ; হ্মরভি মধুর যেন সে অচল সৌগলে ভূবিয়া রয়; জিনিয়া সে গন্ধ অগুরু চলান পুষ্পাগন্ধ ষেন মৃত্; মরি কি মধুর মনোহর বেন দেবের বাঞ্চিত মধু। ভ্ৰমিছে সে গন্ধ বেরিয়া অচল প্রতি শিপরের চুড়ে; সে ভাগ নিয়ত ছুটিছে প্ৰনে কতই বোজন যুড়ে; নাহি হয় হ্ৰাস ক্ৰমে যত বাই क्राय वृक्षि छछ इत्र, আণপূর্ণ করি নাসারদ্ধ যেন প্রোণ করে মধুমর। সেই গলে মঞ ত্ৰনি সেই ধ্বনি ভ্ৰমি সে অচলপ'রে কত কি অভূত ৰ্ষিতে ভ্ৰমিতে দেখি চক্ষে সুখভরে ; নির্থি ভাহার কোন বা শিখরে প্ৰাণী বদি কোন জন, সম্ম সুসাধ্য অসম্ভব ক্রিয়া निभिष्य करत्र गांधन; কোন গিরিচুড়ে বসি কোন প্রাণী यनि क्छ दिनाहेट्ह, কণপ্রভা ভার ৰশবতীহ'য়ে চরাচর খুরিভেছে; क्नि वा निषद বৃদি কোন জন ভোলে ভোগবড়ী-বন.

কেহ বা করেতে আকর্ষণ করি ঘুরায় বিশ্বমঞ্চল. কেহ বা নক্ত গ্ৰহ, ধৃমকেডু श्रिष्ठा दिशा भेषे, লক্ষ্য করি তাহা শৃন্তমার্গে উঠে ভ্ৰমে সবে চক্ৰবৎ, কেহ বা ভেদিয়া কুৰ্ব্যের মণ্ডল चाध्वामन च्राव रक्ति, খাননে দেখিছে বাষ্প সরাইরা নিবিড বিছাৎ-কেলি, কেহ শৃন্ত হৈতে পাড়ি চন্দ্র-তারা করতলে রাথে ধরি, পুন: ছাড়ি দেয় সর্কা অঙ্গ তার স্থা নিরীক্ষণ করি ; দেখি কোন চ্ডা উপরে বদিয়া ম্বদিব্য-মূরতি প্রাণী, **७औ** राक्षारेग्रा মনের আনলে ঢালিছে মধুর বাণী; কোন শৃঙ্গে হেরি প্ৰাণী কোন স্বন मखरक कांश्रममत्र, শিধর উপরে অণিছে মুকুট रव (यन प्रशीपव ; হেরি দিব্য মৃষ্টি দিব্যাসনোপরে ळागे देवत्म त्कांश श्रुत्थ, ধক্ধক্করি হীরা-খণ্ড সদা थमीथ श्रेष्ट तूरक, হির শান্ত প্রাণ হেরি কত ঋষি বসিয়া অচল-অকে, গ্রন্থ করে পাঠ বেন ধ্যান ধরি ভাগিছে ভাব-তর্তে। হেরি অপরপ অচল-প্রকৃতি প্রাণিগণ ষত উঠে, ছাড়ি ষধ্যদেশ বির হয় হেথ त्महेबादन शमा कृत्हे। তথনি শিণরে रव भूजना मन मिक् नरम भूरत, কাপারে নিনা অচল-শরীর , श्रादरम जमत्रभूदत्र । वाने तरहें बन व्याय विवा मृरि रेवरन ठांक भूष्णगञ्ज,

(इंग्रेस्ट्रेंग जहांगणी

दक्वा चार्वाक्ट्र ভারতীর পুত্র য়া অনু বঙ छाहात दीका वाबात। পুৰে ভারে নিরন্তর। এবে স্বাৰ্যভূষি কোন্ বীরভোগ্যা সে ভূধর-অংশ हराक खराक कान कवी बनवान, কড ছেন পদাফুল, করিয়া দখন দৈত্য-রক্ষঃকুল (मथिनाम द्राप উপরে উপরে दक्का करत चार्यप्रमान। कोज्रक र'ता जाजून। ্ যশ:-প্রভাগ্তণে কোন্ আৰ্যান্থত विकाशि चानादा বিশ্বরে তথন चरतम डेब्बन म्थ, আশা মৃত্ভাবে কয়, বিভীয় জানকী হৈয়ে কোন্ নারী लागे व ववादन "ভাৰে बोবनोना শ্লিপ্ক করে পতি-বুক; वहें जात दिया देश। ८वमविधि धर्म কেবা রক্ষা করে জানাতে বারতা প্ৰাণি-রলভূমে কোন বুধ মহামতি. হর খুল্তে সিংহমাদ, ভিলকত্বরূপ বান্দণকুলের चारेटम दावन्त निषद-छेशद সাধন করে উন্নতি; कतिश कछ बास्लोम। বিজ্ঞানে বারত কত এইরূপ প্ৰাণী যত জন धहे त्व त्विश्र उधारेबा वाबःवाब, পদ্মাসনে আছে বৃসি, ভাবিয়া না পাট কি দিব উত্তর প্রলয়ে অকর ধরার ভূবণ **ठत्क वरह नौत्रधात्र**। मानव-हिट्डब्र मनी। कक्रन-वाटकारः হেরে অঞ্ধারা তব পরিচিত দেখ গিয়া কাছে ঋ্বি অতি ব্যগ্ৰ মন, প্ৰাণী এখা পাবে কত, অতি স্বত শাগ্ৰহে আবার করিরা আলাপ ব্দন হেগ্নিয়া देकला ब्याटब मखावन। পূর্ব কর মনোরধ।" "কি বলিব ঋ ক্ছিমু তথ্ন কাণে কহি নাম একে একে আশা কি দিব সংবাদ তার— ठिन दिशास बद्ध, ভোষার কোশ ভোষার অবোধ্যা मिथिए मिथिए পুলকিত তম্ বে আগ্য নাহিক আর; চলিফ তাহার সঙ্গে। क्रम्ब-म्बिंदन , ভুবেছে এখন ভারতী প্রভৃতি वाान, कानिवान, নিবিড় ভাষনী ভার, চরণ বন্দনা করি, म बीना-सकाव সে ধহু-নিৰ্ঘোষ খনা দীলাৰতী শ্বর-আচার্য্য আর না কেহ ওনার। মূর্ত্তি হেরি চক্ছ ভরি। विक, कवक्न निरक्ष स्टब्स् विशासन विश्व केडिए मिथाटन ्यन धर्म नर्स शिवा, বান্মীকি অমরপ্রার, অকুন পাথারে ভাসে পুণাকৃষি ज्यश्व दीवा : आमस्य वाकादा পরমূধ দির্থিয়া। ঞ্জিমাচরিত গার। আৰ্ব্য-খবিস্ধ त्व बहन छंनि অমর ত্রাক্ণ দেখিয়া আমারে बहिन द्य किया छाउ, भवार्ज-मानन र'टब्र, ক্ষৰি চতুৰিব 💗 বে ভর্কর 🖠 ं दरवने वानिश क्रिका श्रमध्वि वाशमूर्व बनवाव ; व्याच निरशंबान ग'रत्र। काविद्य (न कथा कि किया(क) वर्ग चटवाशा वावण जिल्लानिन प्रवा (क्या बाषा करहे छ। 0.00 m 医胸膜皮肤 体验的

পড়রে অভিত ब्रेट्व हिन्निक বাণীতে প্রকাশ্ত নর, যত ছিল সেখা শাৰ্য-কুলোৱৰ महावानी मरहास्त्र, **ঘোর বজাবাতে** · একরারে বেন আকুলিভ সমুদর। সে হঃধ দেবিরা দেবিয়া সে ভাবে আৰ্যাহ্ছে চিন্তাকুল; ভূলিয়া দৰ্পণ षांना करह "हेरब চাহি দেব আর্য্যকুল। দেব রে দর্পণে ভবিষ্যতে পুনঃ ভারত কিরূপ বেশ, प्रत्थं धकवांत्र প্রাণের বেদনা च्ठांव द्व मर्भव (क्रम ।" দেশিলাম চাহি বেন পূর্বাদিক জলিছে কিরণময়, ভারতমণ্ডল সে কিরণে বেন श्रमीथं रुहेश दह। ভারত-জননী বেন পুনর্কার বসিয়াছে সিংহাসনে, ফুটিরাছে বেন তেমতি আবার পূর্ক্তেদ হাভাননে। বেরিশা ভাহারে নব আর্ব্য-জাতি কিয়ীট কুগুল তুলি, পরাইছে প্ন: ভূবণ উজ্জ্ব কাড়িয়া কলত-ধূলি। নবীন পভাকা ভূমি ভূলিয়া গগনে ছুটেছে খাবার দৃত, ভূবন-ভিত্তরে क्त्रियन नाम বদনে প্রভা অভুত। **निक्मनवाजी** মানবমগুলী भानि नश्च निष्यन, करत अख्रिदेवक वरन केळनारन ্ ৰাত্ৰত স্বাৰ্য্যৰত্ব। পশ্চিষে উত্তরে 🧼 হয় বোর-ধানি াশানদ-স্বীত গায়, ^{छेट}र्व निक्वाति ভারত গ্রহ্ণাণি ्रावात्र शक्तिता शात्र , উঠে হিৰায়ৰ পুন: পৃত ভেগি

हुट भूनवाब ভাহৰী ব্যুবা গভীর সলিলে ভরি। আনন্দে আবার ভারত-সভান বীণা ধরে করতলে. আবার আনন্দে বাৰাবে হন্সুভি बञ्चका-मार्य हरन। **(मर्थ (म मर्गर**) সপ্ৰ প্ৰতিষা া শপ্ৰ হরৰ-বাম্পেতে আঁখি, প্রিল ক্ষমনি কুটিল বাসনা ষদ্ধে তুলিরা রাখি। मिथिएक मिथिएक तम मर्भन होता . चारता উर्फ्जाश वाहे, অরে অরে খেন হেরি সে ভ্ধর উঠে শৃত্তে ৰত চাই। আশা কৰে "বংস, ক্ত দূর বাবে নাহি পাবে এর পার, वक मृत्र बाटव তত দ্র ক্রমে শৃদ পাবে অন্ত আর।" আশার বচনে কান্ত হ'বে কিবি পুনঃ দে অচন-অকে, নামি কিছু দূর নির্ধি বেখানে স্কবি কৰণে রকে। পদতলে তার দেখি মনস্থৰে বিদয়া ভারত বিজ. वासाहेट्स वाने मध्द छ्वरव इड़ारेश क्य निय! ক্ৰমে ভূমিতলে অবভার পুনঃ छन् द्वन ल्यांव मन, করে ভাকিঞ্ন গিরিভলে থাকে সুথে আর কিছুক্ণ! ৰথা নীড় হৈতে করিয়া হরণ স্বরণ্যে পক্ষীশাবক, ক্রন্তবেগে গতি ক करत्र शृह्मूर्यः হ্রত কোন বালক। সেই পদীশিও তখন বেমন চার হৃংথে নীঞ্পানে, কাকলি করিয়া সুকু আর্থছরে भारतिक स्व कार्य।

সেই ভাবে এবে কিরিয়া কিরিয়া অচল-শিখরে চাই, মুকুট উর্জাল জ্বলে হেম-দীপ হেরিতে হেরিতে বাই।

পঞ্চন কম্পনা

त्यह, ভक्ति, वारमना, अवन अञ्चित निर्वारम প্রবেশ করিবার পূর্বের এই অঞ্চল অভিক্রম করিয়া বাইতে হয়-কর্মক্ষেত্র এবং স্বেহাদি অঞ্লের মধ্যবর্ত্তিনী নদী—তত্বপরিস্থিত পরিণয়সেতু-তাহাতে প্রাণি-গণেব গতি বিধি। করি পরিহার কৰ্মকেত্ৰ এবে আশার সহিত পরে উপনীত হই আসি এক স্থানে নির্ধি আননভরে---নব-দূৰ্কাময় ভূমি সমতল বিস্তার বহল দুর, প্রান্তভাগ তার পডেছে ঢলিয়া नील नजः स्मानुद्रा। তরুর শিথবে জেকণ তপন वन किंकि किंकि करत, ভামুর্শ্মি মাঝি শাখা বলী যেন তুলিছে সুখেব ভরে, কিরণ প্রকাশি প্রফুল ভাস্কব প্রফুল করেছে বন, পর্মশ শবীর মুহুতর তাপ ত্মিগ্র করে অমুক্ষণ। (यन स्वयुद्ध হেমন্ত-প্রভাতে স্বাের মৃহল ভাতি, যুখে ভূঞে লোক আলোকে বসিয়া কিরণে শরীর পাতি। পশু পক্ষী প্রাণী এথা সেইরূপ ভ্রমে সুথে নিরস্তর, অঙ্গেতে মাথিয়া স্বিশ্ব নিরম্ব উচ্ছল ভাতুর কর। নেহারি সেখানে চারিদিকে কত

নিজ নিজ বৎস ল'য়ে গাভা মেধ নিরম্ভর স্থথে চরে। শস্তুনানা জাতি ক্ষিতি-শোভাকর वीक भूभ धति कारन, প্ৰন-হিলোলে কিরণে ডুবিয়া হেলিয়া হেলিয়া দোলে। नित्रथि को मिटक কৌতুকে সেথানে শশুন্তন্ত নতশির. কাঞ্চন-বরণ মঞ্জরি পরিয়া जूषन (यन मशैद्र)। মনোহর চিত্র ষেন সেই স্থান চিত্রিত ধরণাবুকে, কিরণে সুন্দর চলে পথ বৃহি প্রাণী সেথা কত মুখে। চলি কত পথ ক্রমে এইরূপে আসি শেষ কত দূব, নির্ধি সমুখে চমকিত চিত সুসজ্জ গৃহ প্রচূর , শোভে সৌধরান্দি अञ्-अ (यन চিত্রিত স্থলর ছবি, তাহে যেন ধ্ৰে রঞ্জিত করিয়া কিরণ ঢালিছে রবি। (महे (मोध-वाधि দেবালয় স্ব স্থ্রচিত্ত মনোহর, অবিমৃক্ত শ্রেণ ওরে শুরে গুরে শোভিছে ভটের পর। চলিছে তবঙ্গ থরতন বেপে ভিত্তি প্রকালন করি, উঠিছে পড়িছে আবর্তে ঘুরিছে সূর্য্য-প্রভা কটে ধরি, ছুটিছে ভটিনী ह्य ह्य ह्य কুল কুল কুল নাদ, थत्र शत्र थत्र কাপিছে দান यत्र यत्र यदत्र दीधः; चुत्रिष्ट भावा দর্ দর্ দর্ কর্ কর্ কর্ ডাক, ৰীপিছে ত্রী লপট ঝপট धमक धमक धांक ; मिलन-व नव जनभन्न কিরণ ফুটিছে তার;

শ্টিতে স্টিতে	ছুটিতে ছুটিতে	শ্বলিয়া অক্সবী	প্র√র আক্রেস
সৈকেতে হিল্লোল ধার,		ধুলিয়া অঙ্গুৰী প্ৰায় আংজুলে শুচিমনে উডে উড:	
ভটে দেবালয়	জলে ঢেউ খেলা	অগ্নি সাকী করি	মালাকার দান
_ (रोज-	থেলা তার সঙ্গে,	কর্বে করে	এ উহাব.
আনন্দে নিব্যি	নয়ন বিক্ষাবি		উভয়ে আননে
. स्वि	সে কত ই রক্ষে।		দৌতে পাব।
দেখি মনোহ্ব	নীরব উপব	এইরূপে বাভ	বাহুতে বাঁধিয়া
সেতৃ বি	বৈচিত আছে,	প্রাণী দৌতে	
ষ্গ ল যুগল	প্ৰাণী সেখানে	উঠিছে আনন্দে	প্ৰকম্পিত বক
দাঁ ভাবেয়	তাহাব কাছে.	প্রকৃট স্বংখ	অন্তর।
দেবালয় যত	কত যে প্রনার	কত হেন ৰূপ	নিব্ৰিকৌত্ত
	বৰ্ণন তাৰ,	মনস্থে নিয়	ক্ষেব
উচ্চে বেদ্ধবনি	প্রতি দেব†লয়	উঠিছে দম্পত্তী	হাসিতে হাসিতে
₩নে স্থ	ধ দেবভার।	বিচিত্র সেতু ব পব।	
সদাশশ্ব ঘটা	সুমকল পৰি	আশা কচে "বৎস,	স্মাণে ভোমার
হয় মধ	উচ্চাবণ,	দেধ দে সুন্	র দেত.
চন্দ্ৰ-চৰ্চ্চিত	4 7 7 1 1 1 1 1 1	আমাব কাননে	
প্রফ্রিড	কেবে মন।	কেবল সুগেং	
ন্তব-জ্যোত্র পাঠ	জয় জয় নাদ	পবিণয়-দেতৃ	নামে প্ৰিচিভ
সকলে উং	ঠে গন্তীৰ,	এ কানন-মা	
বিধাতার নাম	खक्त कर्श-भारत	আদে ইথে লোক	মিটাইতে শেষে
বোমাঞ	কবে শরীব।	কানন-ভ্ৰমণ-স্পৃহা।	
গ নিতা নিতা	গীত বালপনি	এই দেতু বাহি	দম্পতী ষে, কেং
্ কত মত	মতে†ৎসব,	পারে হৈতে :	नि भाज,
	পানিত কে বল	এ কানন-মাঝে	আহে যত সুথ
সুখদ আ		নিতা প্রাপ্তি হ	য়ে ভাব।
াহাত্য বদন	প্ৰাণী কত জন	দেখিছ যে অই	
প্রতি দে	वांमग्र-धारत,	मिता खेलवन र	াত,
^{!!ধ} আ ভপ্ৰেত	८५व निक निक	প্ৰবেশিতে তায়	আমাৰ কৌশলে
উপনীত (সেতৃ-ধারে;	আছে মাত্ৰ এই	
ণ্ডমুৰে প্ৰাণী	দৈখি কত জন	সদা প্রীতিকর,	সভত স্পাব
ধানদ্ববি ব	'ৰে হাতে.	অই সব উণ	বন ,
াশবাদ করি	করিছে প্রশ	পবিত্ৰ নিৰ্মাল	
পৰিকম্ভৱ	गौ-मार्रथ।	প্রাণীব শান্তি-ব	
। भ्या-शान	ধরি করে কবে	বিচিত্ৰ গঠন	অপূর্ব্য কৌশলে
ছই ছই স্থী প্ৰাণী,		সেতৃ বিরচিত	að,
^{रनक भ} क्ष	র্মণীজনেক	সেই হয় পার্ বুঝেছে ইহার ৫	নিগ্ঢ সন্ধান
্ বদ করে উ	টভপাণি :	বুঝেছে ইহার ৫	যই।"
া গান্ত দূচ	अक्टल अक्टल	এক ক'য়ে মাশা	
তত বিধি দৃষ্টি তভ,		সেতৃ কৈল আ	<u>রে</u> †হণ,

ছিয়-ভিন্ন দেহ কৃক্ষ শুদ্ধ পাথা সেতৃ-মূৰে স্বৰে নবীন আনকে অহিব শরীর হয়। কৌতৃকে করি গম্ন ! চাতে চতুৰ্দ্ধিক আকুল নয়ন कुहे भारत स्मिथ রঞ্জিত বসন চঞ্পুট ভয়ে **অ**ড, ভৃষিত স্ন্দর সেতৃ, ঘন তকুশাখা শৃক্ত কলরব ন্তম্ভে ক্তান্তে ভাছে বসন্থ-বায়ুতে নথে নথে ধরে দড। উড়ে খেত পীত কেতৃ। ভগ্ন শাধাসহ वस्राम विविध কত পড়ে তলে গ্রাথিত স্থার ভগ্ন পাৰা ভগ্ন পদ. সজ্জিত কেডনকুলে, হ'য়ে গত জীব পড়ে পুৰ: কন্ত নবীন পল্লব रहे सार्य भार्य চঞ্চবিদ্ধ করি ছদ। মঞ্জরাস্তিত তুলে। এথা সেই ভাবে শত শত প্ৰাণী মৃত্ল প্ৰন বহিছে মুছল দেতু হৈতে পডে **ভ**লে, পডিছে শীতল ছায়া, জী বসি কেহ পিপাসায় সেতৃ-কম্পে কেহ, বসিয়া পল্লবে ৰধুপ্ৰিয় পাখী কেহ ঝটিকাব বলে। কিরণে ঝাড়িছে কারা। না পারে উঠিতে পড়ে একবার বায়ু আমোদিয়া উঠে চাকবাস বিষম তরকে ভাবে, ঢলিতে ঢলিতে যায়, পুন: কত জন কভ জান হেন মৃগ্ধ নবরসে চলে প্রাণিগণ তলগামী হয় ত্র'দে। বায়ু-গদ্ধে স্মিগ্ধকায়। ভাগিতে ভাগিতে কদাচ কখন বাই কভ দূর সেতৃমূখে হেন কেছ আসি কভে ক্ল, পাই পরে মধাস্থান, ষটে এ ঘটন ৰূপালে যাদের সেথাথরভর . বোর রৌদ্রভাপ দৈৰ দে তাহার মূল ৷ উভাবে আকুল প্ৰাণ! নির্থি চ্মকি কভই পরাণী প্রচণ্ড কির'ণ উত্তপ্ত বাসুকা ভাগিছে নদীর হুলে, करत्र मधः भम्खन, প্রাণিগণ সবে *সেতৃ*ম্**ণ**হিভ আকুল তৃষণয় শুষ কঠ তালু দেখে ভাহে কুত্হলে। প্রাণিগণ চাতে জন। কেহ বা যুগল কেহ ভাবে একা বহে **বে**গগতি নীচে ভয়কর नमीत्र आंदर्ख पूरव, স্রোত্ত্বতী কোলাহলে, लानी शी-भूर न ভাবে নদীময় ভীষণ গৰ্জন বৰ বৃণিপাক তুক্ল আক্লেপে প্রে। অসন তটের নিকটে তীব্ৰতৰ বেগে চলে ! আসি কত জন ভৃকম্পনে যেন মাঝে মাঝে মাঝে ক্ষণে বাডাইছে হাত, (मञ् करत हेन हेन. পুন: পৃৰ্ণিজ্ঞ বালি-মৃঠি ধরি বহে মাঝে মাঝে ঘন হত্তার ৰুরে পড়ে অকশ্বংৎ। রূপে প্রাণী কত হুট ত্বস্ত ঝটি প্রবল। ভাদে এইরূপে প্ৰাণী কন্ত এবে অস্থির চবণ সেতৃ হৈতে পড়ি নীরে, প্রাণী সেত্র উ^{প্র} মৃথে প্ৰকাশিত ভঃ, চলে অন্ত প্ৰাণী অব্রির শরীর हक्षण सम्बन, দেখিতে দেখিতে ধীরে। দেখিয়া হঃথেতে ভাবিতে ভাবিবে চলে কটে দেতুময়। উৎপ্ৰীড়িড বন वक्ष बद्द वाटफ चारबा कुछ पूत्र बाहे, ষতেক বিহল্পচয়,

চাতি মধাভাগ ক্ৰমণ আসিয়া সেতৃপ্রান্ত শেষে পাই। এখানে নির্থি অভি মনোহর আবার শীতল ছারা। পর্শি তথনি পডেছে সেতৃতে শীতল হইল কায়া। পড়িছে বে এত थानी नमी करन তবু হেরি সেইস্থানে. লক লক অন চলেছে আনন্দে দল প্রফল্লিত প্রাণে। চলে চিত্ত-সুখে সদা তুপ্ত মন অকুর শান্ত হদয়. মধ্য কিসম দে বনে তাহারা कत्रसम्बन्धः । কেন যে বিধাতা স্বার ভাগোতে এ ফল নাহিক দিল। কেন এত জনে বিমৃথ হইয়া বিপাক-স্রোতে কেলিল। সেতৃর নিশাণ কেন বাংষ হেন রচিত এত কৌশলে। উঠিয়া সেতৃতে তেন এত প্ৰাণী মগুহয় পুন: জলে। ধরি চিত্তে নানা এইরূপে চিকা আশার সহিত বাই, প্রাণী শান্তিবন সেতৃ হয়ে পার হাসিছে দেখিতে পাই।

ষষ্ঠ কম্পনা

ণরোল্লান—ভাহাতে এমণ—অপূর্ব তক-পূকা দর্শন —সভী-নিঝ'র—প্রণয়ের মৃতি উ।হার সহিত দাক'ৎ ও আলাপ।

যথা যবে ঋত্ সরস বসক প্রবেশে ধরণী-মাতে, শোকে ভরুলতা ধরি চারুবেশ নবীন-পল্লব সাজে; খবে ধীরে ধীরে পত্র প্রাতন ছাড়িয়া বিটণী-ক্ষক্

চাক কিশ্লয় প্রকাশিত ধীরে পাইয়া মলয় সক। নৰ চাক মৃগ্ কিপলয় যত হরিত-বরণ শাখা, মঞ্বী মধুব পরিয়া স্থন্সর বিকাশে তরুর শাখা। ষ্থা অপরূপ সে বসস্ত কালে चानम डेथरन मःन, হৃদয়ে অব্যক্ত সুধের প্রবাহ প্রকাশ্ত নহে বচনে ; এথানে প্রবেশি তেমতি আনন্দ উপজে হাদ ময়, শীত স্বিগ্ন রস ষেন সে এথানে বায়ুতে মিশ্রিগ রয়; मिथि ठांतिभिक উত্থান রচিত প্রকাশিত চারু ছবি. সাজিছে সুন্দর ন্তবকৈ ন্ত 'কে বিবিধ শোভা প্রসবি; অভি মনোহর উচ্চানে দে সব পার্ঘে পার্ঘে অবন্থিতি, অঙ্গে অঙ্গে মিশি मधुष्टाक (यन অপুর্ব বিসাদ-রীতি, প্রবেশের মুখ ভুণাপি মিলিভ স্ব , নৰ নৰ জ্বাপ প্রতি উপবনে সদাহয় অহুভব। আশা কহে "বৎস আমার কাননে স্থির শাস্তি এই বেশ, কিছু কাল সুথে ভ্ৰমিলে এখানে ভূলিবে পথের ক্লেশ। ষত উপবন দেখ ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন ক্ষেহ-স্থান। প্রভৃতি সে বস (मोटाफा, व्यनम সদা স্মিগ্ধ করে প্রাণ। কটু ডিজে সর উচ্চ কোলাহল না পাবে ভনিতে এথা, ধীর মিষ্ট ভাষা ধীরে ধীরে গতি এখানে প্রাণীর প্রথা; সবে সভা ভাব সৰে সভ্যবাদী भविमक थार्प थांद्र

আসিলে নিকটে আপনা হইতে এখানে প্রাণীবা ছেন কিংসাছল তক্ল ছাডি হলে সূটে। কেহ কভু নাহি জানে। নির্থি সেথানে কত তক হেন এখানে নাতিক ষভঋতু ভেদ **ा**ंगीयक मरन मरन সমভাবে ভর্ম্যোদয়. ভ্ৰমে সূপে কভ যু**গল পর**†ণী আম্বিকাননে ক্ষেত্ৰয় প্ৰাণী নিয়ত তাহার তলে, এই স্থানে তাবা রয়।" কৰতল পাতি তক্তলে শাগ্ এত ক'য়ে আখা প্ৰণয়-কাননে সেই মনোহৰ ফুল . হাসিয়া কৰে প্ৰবেশ, অতুল আনন্দে মা প্ৰাণী **সক**লে পডে ক্ত তায় মাতিল হৃদয় আনন্দে হয় আকল; হেবিয়ামগুব দেশ। দাঁডায় হু'জনে পাতিয়া অঞ্চল **লভা-গৃহ দেথা** হেবি চারি ধাবে গিয়া কোন তক্ষমূলে অপৃক্ষ কিবণময়, মৃহুর্ত্ত ভিতবে পরিপূর্ণ তাই। **অ**মরাবতীতে ষেন দেব-গৃহ হয় মনোমত ফুলো। ভাবকা-ভণিত রয়। ভূমে তুই প্ৰাণী প্রতি তক্তলে পুস্প্রয় পথ মৃত্রিকা পর্শ তক বৃষ্টি করে ফুল, নাহি হয় পদতলে, গেন বা আনন্দ হেরিয়া তাদেশ ভক হৈতে শ্বতঃ চাক স্থকুমাৰ আনন্দিত তরুকুল। ধবিত্র কথের আসিম পুষ্প হ'তে দৃষ্টি ছলো। যণাদে পৰিত্ৰ প্ৰতি গৃহদ্বাবে সূথে চক্ৰবাক হেরে শক্ষলা-স্থ; চকোৰ ভ্ৰমণ কৰে। পুপ্প ছডাইল শাখা নত কবে বাগ্র হিলোলে নিরবধি ধেন ফ্ল-ডকুফল-মূ্থ; হবি স্তধাধারা দেগা কবে। দেইরূপ হেবি প্রণয়ীষ্∽ন শোভে তকরাজি সে প্রদেশময় আবাদে এথা তক্তলে, ধরে অপরপ ফুল, করে আশীর্কাদ ভক নত-শিবে অবনী-ভিতবে অপুৰ্দ্য প্ৰাক্ষতি বর্ষি কৃত্মদলে। নাহিক ভাহার তুল , সে কুলের মালা পরিয়া গলায শাখাব উপকে , যতক্ষণ থাকে প্রণয়-প্রকৃয় প্রাণ, শোভামাত্র দৃষ্টি তাব, হেবি কত প্ৰাণী ভুমিছে সেখানে বহে দে কুন্তমে মধুর সৌবভ লভিয়া কুসুম-ছাণ , गाथित्व क्रमस्य कांत्र , চাঁপা ফুল ভেন বরণের শো-। আপনি গ্ৰিত হয় সে ক্সম সুন্দৰ মলিন আঁথি, বুমে বুফে শত যুডে, চলে কত বামা বল্লভের দেং কিন্তু পুনঃ আব নাহি শুগাঙ্গ দ্ৰবে বাছলতা রাখি। বাবেক যগপি তুডে। কোন সে যুবক প্রতিক্ষণে ধরে নব নব ভাব চলে মনসুথে বাধি নিজ ভুজপাশে, নবীন মাধ্বী তার, **সদৃশ ত**ৰণী কমল-কোরক নেহারি আননেদ ুপ্রতি ফণে ফণে অর্থকুট মুহ্ হাদে। নৃত্ৰ পত্ৰ ছডায়, চলেছে সোহাগে কোন বা স্থলবী ফুল-বিক্সিত ছবি, নবীন সৌবভে প্রতিক্ষণে তাহে নবীন পরাগ উঠে,

োহিত স্থন্দর	গণ্ডে প্রাক্টিত	প্রতি ধারা অঙ্গে	কত রঞ্চে তাহে	
গুলাবরঞ্জিত রবি ;		অবপ্ৰব বৰ্ণ ছড়ায়।		
আহা কোন রামা		यतिष्ठ नियंत्र		
প্রণন্ত্রীর বাহ্ন্সে,		প্রণয় অঞ্চল অস্কে,		
চক্রকরমাথা	সেফালিকা যেন	८५थिटल नग्नटन	ফিরিতে না চায়	
চলেছে গুঠন	थ्रल।	নেহাবে তু	নেহাবে তুলিয়া বঙ্গে।	
কাহার বদনে	ফুটিয়া পড়েছে	ফুটে কন্ত ফুল	দ্বেরি উৎস সব	
মধুর মৃত্ল হ	াস,	অমর-নন্দন-ভাতি,		
সহকার কোলে	সরস মঞ্জবী	नक्रात ८७४न	বুঝি বা স্থন্দর	
বসন্তে ধেন ৬	প্ৰকাশ।	ন†হি পুষ্প	হেন শাতি।	
ठटलट्ह भूर्णऋ		অতৃণ দৌন্দর্য্য	দে সব কৃত্যে	
কোন রামা	मनञ्रूरथ,	নাহি কভু বৃদ্ধি হ্রাস,		
পূৰ্ব ষোলকলা		নিবৰ্ণি শোভা		
আডে হেরি	थिश्रम् ८थ ।	निवर्गा घूट वात्र।		
প্রিয় চাক করে		অতি শ্রূ-গামী	চকোব প্রভৃতি	
প্রফুল্ল উৎপ্র চলেছে চঞ্চল	ा ८वन,	স্বৰ্গীয় বিহন্ধ যত,		
६८वर्ष्ट् ४४व	পকজ নয়না	মৃত্ কলস্ব ৰে	ধারা ধারে ধারে	
আগ কতর	ামা হেন।	স্থুথে ভ্রমে	ষ্বিরত।	
নীলপদা যেন		হেবি কত প্ৰাণী	আদি উৎস পাশে	
মধুর মাধুবী :	ধরি,	शाता-करण		
इथिनी महिना	প্রির-অঞ্চে অঙ্গে	নিমেধ-ভিতবে	নিৰ্মল শ্রীব	
সুথে সুমালন করি।		ধরে সুধাসম ছাণ।		
দেখি স্থানে স্থানে (কৌতুকে দেখানে	হেরি কত পুনঃ	পরাণী বিস্ময়ে	
কত উৎস ম	নোহৰ,	পंत्रभटन मिहे वावि,		
থ্যার সন্ধাশ	সলিল ছডায়ে	পাধাণ হইয়া	হারায় সংবিৎ	
পড়িছে সহয	ঝড়,	চলিতে চিন্তিতে নারি।		
পড়িছে নিঝঁর	মবি বে তেমতি	কত যে পুরুষ		
চাবিধারে ধী	রে ধীরে,	নিশচণ নিঝ		
প্রাণে লিখন	জাহ্নী ধেমন	কত যে রমণী	পাষাণ-মূরতি	
জ্টায় শিবে র		ठक्कर ल मन		
কৌথা সে ভৃতলে	ভূপতি-ভবনে		কারণ তাহার	
খেত-শিলা বিরচিত,			গজাসাকরি,	
গীড়া-উৎস নব	মহিধী-মোহন	কেন সে প্রাণীবা		
মাণিক্য-স্থৰ্ণ-মণ্ডিত !		থাকে হেন	ভাব ধবি ?	
डेंडिट्स निय ंत्र	সে কাননময়	হাসি কহে আশা	"শুন রে বালক	
নিত্য কিভিতল ফুটে ;		স্বতি শুচি		
শত-ধারা হয়ে	ভাকিয়া ভাকিয়া	পৰিত্ৰ মানস		
भूष्म (यन भट		পরশি হয় শীভল।		
শীল কৃষ্ণ শ্বেত	আদি বৰ্ণ যত	অপবিত্র দৈহ	অপবিত্র প্রাণ	
নিন্দিত করি		বে ইহা পর	भ करत	

আনন্দে বিহ্বণ বসায়ে নিকটে দলিল-মাহাত্যো তথনি সে জন শুনে গীত প্রেমভরে। পাষাণ-মূক্ষতি ধরে; জিজাসি আশারে হেরি কভক্ষণ এই ভাবে স্বা কাদে চিরকাল কেবা সে অপূর্ব জন, চলংশকতি-হীন , নিঝঁরে নিঝারে ভূষি এ সবারে জন্ম প্ৰাণী ৰত অমূতাপ হেরে এরপে করে ভ্রমণ ? স্থিত হয় অফুদিন। "এই সে পরাণী আশাকহে হাসি এ সব নিঝ'র সতী-ঝর নামে দেখিতে হেন হঠাম, সুপবিত্র বারি অতি, চিয়দিন বাস, প্ৰাণয়-কাননে मनिन ইश्र পর্শে যে নারী সস্তোষ ইহার নাম।" লভে ধশঃ নাম সভী। করি আলাপন সে যুবা-প্রসকে করে ইথে স্থান পুরুষ (ব জন আশার সহ উল্লাসে, জিভেজির নাম তার, আসি কছু দুর চলিতে চলিতে লভে স্বৰ্গ-সূপ धवाधारम थाकि এক লভাগৃহ পাশে; আনন্দ লভে অপার। প্ৰাণী এক জন হেরি তার মাঝে প্রণয়ে যাহার কঠোর সাধনা অক্ত জন পাৰে বসি, পবিত্র নির্মাল মন, উদ্ধ্ ধ্যেন মেবের আড়ালে জনমে বে প্রাণী পর-চিন্তা চিত্তে পূৰ্বকলা চাক শ্ৰী। করে নাই কোন ক্ণ। স্তৃষ্ণ ন্যুন বসি তার কাছে পরশে এ বারি সেই নারীনর চাহিয়া বদন তার, অফে না ছুঁইতে পারে, কতই যত কতই শুশ্ৰাষা অপবিত্র মনে অন্তেধে পরশে করে হেরি অনিবার। আই দশা ঘটে তারে।" প্রদীপ যেমা নিৰ্কাণ-উন্মুপ নিকটে দে স্ব নির্ধি নিঝ্র कर्त श्रिष करन करन, ত্ৰমে প্ৰাণী এক জন, বিকাশে তেম व्यागी (महे बन মধুর মাধুরী মধুময় হাসি - কিরণ মুধমগুলে, অঙ্গেতে করে ধারণ, নাহি অন্ত আশা নাহি অক তৃষ আফুতি তাহার অতি স্বললিত (क्व्न व्यव्य कांब्र, দেহ কান্তি নিক্পম, পড়ে ষদি তাংং সূৰ্য্য অংশু-রেথা অধরে সতত মুখে দিব্য ছটা কেশজালে ঢাকে তায়। মুত্ হাসি সুধাসম ; নিম্পন্দ শহীর বেন দে অসাড প্রীতিকর দাম গলে প্রস্ফুটিত হৃদর ছাড়িরা প্রাণ, গ্রথিত অপূর্ব ফুলে; নিবিড় হইগ আসিরা বেষন **ুমধুর বাদি**ত্র ৰত: নিনাদিত নয়নে পেয়েছে স্থান। লম্বিত বাহর মূলে; প্ৰাণী অন্ত জন मिन रहन व्यय यदा यदा সুথে করি গান (मथाहेट्ड विखीविका, সরল স্থমিষ্ট ভাষে, নিমেৰে নিমেৰে কত হে প্ৰকারে নির্মণ জ্যোতি বিমল বদন वर्गत जनाश निथा; সূৰ্য্য-মাভা পরকাশে; कर्छ ठानि कर কখন বা বেগে প্রাণিগণ ভারে নিঝ'র-বিলাসী ক্রিছে নিখাস রোধ; कछ नमामन कदन,

কথন বা নধে ছি'ডি ওষ্ঠাধর প্রেমানন্দে ভোর হইয়া ছ'লনে উঠিছে করিয়া ক্রোধ; হেরে নিবস্তর স্থা। কখন মাটীতে ভাবিছে ললাট কপোতী যেমন কপোতের মুখে কৃষির করিছে পাত, মুথ দিয়ে স্থাৰ চাৰ, কভূ সর্কা-অঙ্গে ধৃলি ছড়াইয়া মূছ কলধ্বনি মধুর কৃজ্ঞন বক্ষে করে করাঘাত, क्रदब धन शलाम । --কথন গৰ্জন করিছে বিকট ८५८थ পरम्भटत দোঁহে মনস্থথে **मस्य मस्य चत्रवन,** লভিয়া প্রাণয়-ভাগ, কখন পডিছে আনন্দ-পুলকে ধরাতলপরে পুণকিত ভহু, সংজ্ঞাহীন বিচেতন। মুথে পুলকিত প্ৰাণ ,— প্ৰাণী অক্তঞ্জন নিকটে বে ভার দেখেছি অনেক সেইরূপ ভাব কতই যতনে হায়, প্ৰণয় প্ৰকাশ হায়, দেবিছে তাহায় করিছে শুগ্রাষা প্রণন্ধী জনের প্রেমের অনলে যুচাইতে সে মৃচ্ছায়। বদন বহিন্ত প্রায় , ক ভূ **ধী**রে ধীরে করশাখা খুলে কিন্তু কভু হেন বিশুদ্ধ প্ৰেণৰ मार्क्किছ जनत्र (नन; নির্মাল স্লেহের ক্রীর, কভু করতল কভু পদতালু নাহি দেখি চক্ষে মানব শরীরে কভূ ঘর্বে ধীরে কেশ। প্রগাঢ় হেন গভীর। কথ**ন তু**লিছে কতই উৎস্ক হ্বদর-উপরে অন্তরে তথ্ন অবসন্ন বাছ লতা, ट्रित (म श्रानिवहन, কভু স্বেহপূৰ্ণ वनिष्ट खेवरन न व-कलध्य নিরখে ধেমন পীযূৰ-পুরিত কথা। চাতক উৎস্থক মন। বারি স্থশীতল ক্ধন আনিয়া অধবা যেমন বনাচ্য-আগারে रम्दा करत्र निक्षन, ছংখী হেরে ধনরাশি, কখন তুলিয়া মুত্ৰ সুগৰ হুথে নির্প্তর নির্থি তেমজি নাসাগ্রে করে ধারণ , আনন্দ-বাষ্পেতে ভাগি। আৰার ধখন চেতন পাইয়া পাইয়া সুৰোগ গিয়া কাছে তার रत्र (म जैमानव्यात्र, বিনয়ে জিজাসা করি, মধুর মধুর বীণাবান্ত করি কিরূপে এরূপে থাকে সে সেখানে স্নিশ্ব করে পুনঃ তার। একধ্যান চিত্তে ধরি। হেরে সে প্রাণীরে কি স্থে উন্মাদে কত যে আহলাদ ণয়ে করে সেবা ञ्चरत्र रहेन मम, সহে নিত্য এত ক্লেশ, বাসৰা ফুটিল र्यन नित्रविध কেন সে মণ্ডপে ঞাগ্ৰত সভত **ट्टिति म्थ निक्लम**। থাকিতে এতেকু দেশ। দেখেছি অনেক প্রণয়ী পরাণী সংবন্ধ বীণাতে পড়িল যেমন হেরে পরস্পর মৃথ, সহসা কাহার কর, ভাগি এ উহার ন্ধন-হিলোলে উঠে সে বাঞ্চিয়া আপনা হইতে পিয়ে স্থাসম স্থ , निःगाति मध्व ऋत , <িদ নির**জ**নে সেইরূপ ভাব করে আলাগন कट्ट (महे अन ब्यारका (यन मूर्य स्टे, स्मध्र चत्र मृत्य,

ৰৱে সে গভত কি মুথ সম্ভোগ কি আনন্দ প্রাণে উঠে। কহে "সে কেমনে বুঝাৰ ভোষায় कियां (म जानत्म शिक, বসিশ্বা ইহারে এ লডা-মণ্ডপে কেন এ ষ্ডনে রাথি। ক্ষেমনে বৃঝিবে প্ৰণন্ধী যে নম্ব প্রণয়ের কিবা প্রথা, স্রোতোধারা কিবা মকুকি জানিবে মধুময় তক্লতা। ত্যুলোক ভূবন বসি এইখানে देवकुर्श्व (पश्चिर्फ भारे , বায়ু ব্যোম ধারা ।লনিধি মেঘ नकनि जूनिया गाँरे ! আসি সুরবালা গৰি খেন মনে व्यानिया चर्गव वर्ष, नहेबा विभारन ব্রিয়া আমারে চলে বহি শুক্তপথ, নির্থি সেধানে প্রবেশি স্বরগে नक्नवरमञ्जू হেরি মনস্থ ভনি বেদধ্বনি মনাকিনা-নদীকুল, मिथांत्र आभारत (एव-वृक्त (नवा আনন্দে অমরালয়, অনুত ভাণার তারা শশধ্য युत्र-सूथ-मभूषम् । সে স্থুপ তোমারে কেমনে বুঝাব বাণীতে বৰ্ণিব কিবা— দিবাকর-জ্যোতিঃ জ্যোতি বে কিরণ তাহা সে প্ৰকাশে দিবা।" পরশে যেমন ষ্থা ক্তাশন ষ্থন গৃহের ছাদ , প্ৰথমে প্ৰকাশ শেষে অনলের হুদ। সেইক্লপ ভার বলিতে বলিতে বদন পুরে ছটায়, নিষেধে শরীর নেতে বাষ্থ্য व्यनीश वश्चित व्यात्र। त्नहे व्यानि-नाटन পরে পুনরার এক চিস্তা এক ধাৰি,

প্ৰাণী সেই ধন ধরিয়া আবার भूनः देकना व्यक्तिमा বিহুগ বেষন নিদাৰ-ভাপিত शाहेटल वत्रश-कल, আর্দ্র-পক্ক-ক্লেদ স্থাথে ধৌত করে স্থানে হয় সুশীতল। তেমতি শীতল ভনে ৰাণী তার পরাণ হইল মম, ক্ষিরে ক্ষিরে চাহি হেরি বার বার সেই মুখ সুধা সম, হেরি কতবার অতৃপ্ত নয়নে ভাবি কত মনে মনে— माधुबी यमन ভাবি নিরমণ বুঝি নাই ত্রিভ্বনে; চাহি আশাম্থ বিশ্বন্ন ভাবিয়া আশা ব্ঝি অভিলাষ, কহিলা তখন আনন্দে হাসিয়া বদনে মধুর ভাষ। এ কাননে মণ "এই যে পরাণী হেন সুখী নিরমল, ভুবন বিখ্যাও প্ৰণয় নামেতে নিত্য সেবে ভূমণ্ডল ." শুনি আশাবাণী রোমাঞ্চ শরীর আকুল হইয়া চাই, প্ৰণয় ভাবিয়া প্রাণের হুতাশে বিধিরে শ্রবিয়া ষাই।

সপ্তম কম্পনা

শ্লেছ-উপবন-মাতৃশ্লেছ-সাথনা মন্দির
ভারদেশে প্রান্তির সহিত সাক্ষাৎ।

আকার আখানে চলিহ পশ্চাও

আশার আখানে চালতু পশ্চাতে প্রথম-অঞ্চল-মাঝে, আফাসি কিছু দর দিব্য বাপী এব

আসি কিছু দূর দিব্য বাপী এই সম্মূধে হেরি বিরাজে। মনোহর বাপী গভীর ফুল

थहे थहे करत्र जल,

স্থির শাস্ত নীর সুগদ্ধি র^{্চি} স্কৃতি স্বচ্ছ নিরম্প ।

দাডাই**লে তীরে** অপুর্ক দৌরভ বন্ধাণ্ডের জীব নিত্য করে পান পরাণ করে শীতল, ক্ৰমাত্ৰ নহে ক্ষ্ ্চন আল্ডি হয় মনে নাহি মানে চারি যুগ ইহা আছে সমভাবে আছি বেন ধরাতল: এইরূপে পূর্ণ পর। কভু ক্ষিতিতলে স্লিল তেম্ন **वहें मिया वांशी** এ কানন-সার **ठ**क्क ना प्रिथिए जाएम. মাতাব স্নেহের হ্রদ; यथा (पश्चि नाई জানিয়াছি ভগু মুধা হৈতে মিষ্ট স্লিল ইহার ঋষির বাক্য-আভাসে , विनार्भ नर्स विभए। नां बानि त्र वाहि স্থা কি না সেই কেহ কোন কালে এ স্থা-সলিলে আশাবনে পরকাশ, বঞ্চিত নহে অন্তাপি, এমন নিৰ্মাল এমন সুরভি हिरकान हैश . আছে এইরূপ এমনি সুচাক ভাস। অগাধ অকর বাপী! বাপী-চারি-ধার প্রাণী লক্ষ লক ष्परे स्व सिविष्ट মাধুরীর রাশি দাঁডায়ে গাঢ় ভকতি, নারীরূপ নিরূপমা; करत्र नित्रीक्रव নিৰ্মল সলিল দেবসৃত্তি ধরি জননীর স্লেহ সতত প্ৰদন্ন মতি। প্রকাশে হের স্বমা। দাঁডা**য়ে** তটেতে হাতে হেম-পাত্র বিভরে সলিল প্রকাণি এথানে অপরপ এক নারী. রাথিতে প্রাণীর কুল; আ**সে যত প্ৰাণী** সতত সকলে লগত-ভিতরে এই স্থানীর বিতরণ করে বারি; এ মৃঠি নিত্য অতুল।" কিবা মৃষ্টি ভার কি মাধুরী মূথে হেরি কতক্ষণ হেরি প্রাণ ভরি কিবা সে অধরে হাস. কতবার ফিরি চাই, কত যে আৰন বিধাতা বেমন ৰুগতেৰে সুধ উপলে জনয়ে একত্ত কৈলা প্ৰকাশ। অবধি ভাহার নাই। **ৰুম-পরাগে** ক্রিরাগঠন ধ্যান ধরি হেরি হেরি চকুমেলি অমৃত লেপন করি, ভূলি বেন ভূমণ্ডল; বিধি ষেন সেই হাতে যেন পাই নিকপম দেহ হেরি বতবার शक्रियां शहरव धदि ; পবিক কিদশস্থল। শৰা হাস্তময়ী সদা বারিদান চাহিয়া আনবার হেরি বাপী-ভটে করেন স্বর্ণ-পাত্তে; हाक हेन्स्थ्य डिटर्र, কোটি কোটি জীব **धत्रनी-**भत्रीदत আদে অফুক্ৰণ বাকিয়া পড়েছে সুতৃপ্ত পরশ মাত্রে। শিশুগণ ধার ছুটে; পিপাসা-আতুর ধরি ধরি করি চাহি আশা-মুগ ধার শিশুগণ কতই আনন্দ মনে, इन्द्रश्चर थात्र आटग, খাশা কচে "বৎস. সরিয়া সরিয়া নানা বৰ্ণ আভা মাতৃত্বেহ-ভূমি প্রকাশিয়া পুরোভাগে , हेहाहे जामात्र यस । ^{(५}न भूगाकृति পাবে না দেখিতে গরেছে ভাবিয়া কেহ বা খুলিয়া নিজ করতলে চাব, খুঁজিলে অৰনীতল, ষ্ণ পরিপূর্ব (नहें हें अध्यु আছে সেইথানে নেহার সন্মধ किया द्रमधूत्र भग। দুরেতে দেখিতে পাম।

ধরাতে সে জানি विधित इनाम वधुत्र व्यथदत्र হাসি নাহি ধরে वुशा रम देनमव निधि, দুটাইয়া পড়ে ভূমে, মৃত্যু কণী শিরে কৈশোরে রাথিয়া উঠিয়া আবার হাত বাড়াইয়া मानद्व विक्ता विधि। ধরিতে ধাইছে ধৃমে। আছে কি শে কীট এ কাননে পুন: ধরে ধন্থ-অঞ্ কোন শিশু ধেয়ে मोक्न कर्तान कान ? অমনি মিলায়ে যায়; এ স্বৰ্গ-পুত্তলী নৃতন নৃতন আশারও কাননে আবার ফুটিয়া পথে কি আছে জঞাল ?" নশ্বন-পথে বেড়াশ্ব। "কথন এথানে শুনি কহে আশা মনের হরষে খেলে শিশুগণ পডে দে কালেব ছায়া, দে বাপী-তীরেতে স্থথে, নিবারি তাগকে কিন্তু সে ক্ষণিক সুন্দর কিরণ ভুকুণ ভূপুন নিমিষে প্রকাশি মারা। ভাতিয়া পডেছে মুখে; করেছি নির্মাণ অশেষ কৌশলে হাসিছে অধর হাসিছে নয়ন দিব্য অট্টালিকা ফুলে, বদৰে ফুটিছে আলো; শোকতপ্ত প্রাণী প্রবেশে যে তার অমরাবতীতে না জানি তেমন তথ্যি সকল ভূলে। আছে কি কিরণ ভালো। প্ৰবেশি তাহাতে পায় নির্থিতে রোমাঞ্চ শরীব হেবে সে আনন্দ বে বাহা হয়েছে হারা— কত চিন্তা করি মনে, প্রণন্নী প্রেমিক. দাবা, স্থত, ভ্ৰাত নিরমল সুখ ভাবি বৃঝি হেন Con (म প्रमान-भाता! নাহি ভূঞে কোন জনে; বলি চলে আৰ চল দেখাইব" বাল্মীকি ভাপস ভাবি বঝি ব্যাস ষাই পাছে কুতৃহলে, করেছিলা দবশন, আসি কিছু পথ হেরি অট্টালিক ভূবন আতুল भरता वर्गभूरी শোভিছে গগন-ভালে। আশার স্বেছ-কানন; কি দিব তুলনা গ **তুলনা** ভাহাব তপন্বী আপ্রমে তাই দে গোকুলে নাহি এ ধরাব মাঝ; ছডায়ে আনন্দর্স, ভূলোকে অতুল বাজ-অট্টালিকা সুল্লিভ হেন গায়িলা মধুর সেহ হারি মানে লাজ। জননী স্নেহের বশ। স্বপনে দেখিয়া পরীর আবার থাকিতে এ পুরী ভাবি মন্ত্রাধানে বুঝি কোন শিল্পকর, আবার কি হেতু লোক, করিয়া সুন্র রচিলা সে তাজ, করে স্বর্গপুরী ষাইতে কামনা মানবের মনোহর, ছাডিয়া মরতলোক ? শিলা ধৌত কৰি ভ্র-চন্দ্র-করে ভাবিতে ভাবিতে ভূগিয়া দে ভ্ৰমে রাথিয়াছে যেন গাঁথি; মৃত্যুরূপ পুন: স্মরি; হীরক প্রবাল চুণি পালামণি উৎসুক হইয়া কাত্র অন্তরে তাহাতে স্থন্দৰ পাঁতি ; আশারে জিজাসা করি— শোভে ভিত্তিকাৰ্য লভাষ লভাষ *এই ভাবে নিভ্য এ শোভা প্রকাশ কতই হীরার ফুল, থাকে কি তোমার বনে ?. মৰি মর 🕫 নাহি কি গুকায় মণি পদ্মরাগ এ আনন্দ ধাবা ट्रोक्श (नाडा चड्र ; মুত্যুশিখা-পরণনে ?

নীৰ কৃষ্ণ পীত লোহিত বরণ माणित्कत्र किंवा इते ; মাণিকের লতা মাণিকের পাতা मानिटकत जक्को।, চামেলি, পক্জ কামিনী, বকুল কত সে কুমুম তায়, বস্তনে খচিত রতনে জড়িত ভিত্তি-অঙ্কে শোভা পায়, কিবা মনোহর গোলাপের ঝাড সুন্দর পদোর শ্রেণী. क्षियां शोवांटन করেছে কোমল रधन नवनीटि एकनि, দেখিলে আপালয় পাষাণ বলিয়া নাহি হয় অসুমান; এমে তুলে আঁথি উপজে প্রমাদ পুষ্পত হুহয় জ্ঞান। ভিতবে প্রবেশে শিলা-অঙ্গে আভা আহা কিবা মনোহব; যেন সে পুর্ণিমা টাদের জ্যোৎসা হরে তাহে নিরন্তব, অট্টালিকা তাৰ এ হেন স্ক্ৰ তুলনাতে সেই ছার। নির্থি আসিয়া ষ্ট্রালিকা সেথা হেরে হই চমৎকার। স্থানে স্থানে মবি কত কাচথণ্ড জলিছে প্রাসাদ-গায়; বেন মনোহর সহস্ৰ মুকুব প্ৰদীপ্ত আছে প্ৰভায়। হেবি কত প্ৰাণী প্ৰবৈশিছে তায় য়ান মুখ মৃত্গতি, বদন নয়ন চিন্তা-সমাকুল শরীরে নাহি শক্তি, কত**ই যতনে** श्रताइ अपरम श्रुशिक कार्षित्र शूढे, কবিছে নিয়ত মৃধে মৃত্বৰ সুমধুর অর্দ্ন ট্ ; পুট হৈতে তুলি ধুলিয়া খুলিয়া দ্রব্য করি বিনির্গত, ধীরে লগে আগ বাথি বক্ষোপরে

আহরে বতনে কত;

কখন বা ছঃখে করিছে চুম্বন সে পুট হৃদয়ে রাখি, কখন মস্তকে করিছে ধারণ मनलार्भ मृति चाँथि। এরপ আশালয়ে করিয়া প্রবেশ ভ্ৰমে তাহে কতক্ৰণ. भारत भीरत भीरत আসে ভিত্তি-পাশে त्रेष९ जूल वनन , ধেমনি নয়ন পডে কাচ-অক অসনি মধুর হাস, यमन नम्रन অধর ওঠেতে ক্ষণে হয় প্ৰকাশ ; তথনি বিরূপ হয় পুৰ্ব্বভাব ভূলে যত পুৰ্ব্বকথা ; হাসিতে হাসিতে প্রফল অন্তরে গৃহে ফিবে নব প্রথা। অট্টালিকা-দারে আশা সহচবী ভ্ৰান্তি-হাতে দেয় তুলে, কোটা নৰ নৰ হেরিতে হেরিতে পূৰ্বভাব সবে ভূলে। কত প্ৰাণী হেন হেৰি কাচখণ্ড किरव रम जानव इांडि, সহাস্ত-বদনে কেশ, বেশ, অঙ্গ চলে নানারপে ঝাড়ি। চমকিত মন আশার কুহকে বসি সে সোপানপব; উঠি পুনর্কার আদেশে তাহার थौरत **रहे ज्ञ**शनत्र।

অফ্টম কম্পনা

ব্ৰহ্মবন্দনা ও সরস্বতী অচনো।
ব্ৰহ্মাও-ভূবন ফ্ৰুল গাঁহাব
প্ৰাণী বিৰ্হাচত থাৰ,
যে জন হইতে জগৎ পালন
যিনি জীব-মূলাধার;
রবি শশধর প্ৰন আকাশ
জ্যোতিক নক্ষ্মদল,

পর্বতে অরণ্য कोगृज, कनिध इपिनी, श्रिजी, वन, অনল উত্তাপ নিনাদ বিহাৎ হিম রৌদ্র বাষ্প বাস, ফল বুক্ষতা পুষ্প বিহয়সম লাবণ্য আন্থাদ শ্বাস, শ্ৰবণ দৰ্শন বাক্য স্পর্শ ভ্রাণ শ্বৃতি চিন্তা সুথকর, প্ৰেম ভক্তি আশা স্জন গাঁহার পালন পৃথিবীপর; মানব-শরীর জগৎ-ভূষণ মানব-ভূৰণ মন, নমি আমি সেই श्रु विका (य वन দেব নিভা সনাভন। তুর্গম কান্ধারে করেছি প্রবেশ ত্রাশা বামন হয়ে, ধরাতে থাকিয়া ধরিতে শশাঙ্ক শিশুর উৎসাহ লয়ে , আশার কাননে হুরস্ক বাসনা ভ্ৰমিব পৃথিবীময়; রুপানিধি শ্রভ্, কর কুপাদান হর ভ্রান্তি, হর ভর। নাহি কিছু মম পথের সম্বল অবলম্বধু আশা, বোধ-বিস্থাহীন জ্ঞান-চিস্তাহীন অক্হীন থকা ভাষা। ক্ষিপ্ত অভিনাৰ যশ:-তৃষাতুর পীড়িত করে হদয়, তৰ শক্তি বিনা সর্ব্যপক্তিময় বাঞাপুৰ্কভূনয়। मग्राविम् मान কর দ্রাময় আমি ভ্ৰান্ত মৃচ্মতি, আদি মধ্য শেষ জ্ঞানীপরমেশ অচিস্তা চরণে নতি। কর মা ভারতি তুমিও গো দয়া দেও মনোমত ফ্ল, বাসনা যেরূপ সাজাই কানন তুষিতে বান্ধবকুল; তোমার উন্থান (थान या वादाक প্রবেশ করিব তাম,

গুটিকত কুল তুলিয়া আনিব পাঁথিতে নবমালায়; বুজ্বতের কুঁজি নাহি সে স্থবৰ্ণ অদৃটে আমার ঠাই, বিহনে সাহায্য জননি তোমার কাননে কেমনে বাই। **८** इब निष्य निष्य কত চিত্ৰ মাতঃ ! বাসনা অক্ষরে আঁকি, না পারি আঁকিতে বাণীর অভাবে অন্তরে লুকায়ে রাখি। মৃদ্ধ বাসনা পূর্ণ কর মাতঃ রসনাতে দিয়ে বাণী, শত অংশ তাব বৰ্ণে ষেন পাই বে চিত্র মানসে মানি; আঁকি চিত্রপটে মানবের হৃদি রচিব আশার বন ; করুণা বিহনে জননি তোমার কোথা পাব কিবা ধন। মানস-রঞ্জন দেও গুটিকত কুকুম তোমার তুলে, পুরাই বাসনা আশাব কানন, সাজাই তোমার ফুলে।

নব্য কল্পনা

বিবেকের সহিত সাক্ষাৎ—আশার অন্তর্জান— বিবেকের অন্তবর্তী হইরা কাননের প্রান্ত-ভাগ দর্শন। শোকারণ্য—তাহাতে প্রবেশ ও অমণ—শোকের মৃত্তি দর্শন ও তাহার পরিচয়।

আপার পশ্চাতে প্রাসাদ হইতে
আসিয়া কিঞ্চিং পূর,
বিজ্ঞাসি তাহারে কোন্পথে এবে
ত্রমিব তাহার পূরণ?
বিজ্ঞাসি কাননে সকলি কি হেন
সকলি সৌন্ধ্যানর ?
কোন হানে কিছু সে কানন-মাথে
কলক অভিত নর ?

অভি সুমধুর ভৰি হাসি আশা কহিলা আমার কানে, "পাইবে দেখিতে ভূ**লিবে** যাহাতে উতলানাহও প্রাণে, **Бल अहे পखि"** হেনকালে হেরি জ্যোতির্ময় ঋষি-বেশ, **उक्:श्रुव शो**त्र অমল বদন খেত খাশ্ৰ খেত কেশ, প্ৰাণী এক জন আসি উপনীত শিরেতে কিরণচ্ছটা, ছায়া-শৃক্ত দেহ দেবের সদৃশ অঙ্গেতে গৌরভঘটা, "কুহকে ভূলিয়া কহিশা আমারে কোথা বংস কর গতি, দেখিছ বে অই আশা মায়াবিনী বডই কৃটিলমতি। উহার বচনে ক'রো না প্রত্যন্ত্র ভূলো না উহার ছলে, হেন প্ৰবঞ্চ দেখিতে পাবে না কদাপি অবনীতলে। ছিল সভ্য আগে অমর-আলয়ে দদা সত্যপ্রিয় অতি, না জানিত কভ মিথ্যা প্রবঞ্চনা সরল স্থার গতি। যথন বেরূপ বলিত যাহারে ফলিত বচন তথা, ত্ৰি**লোক-ভু**বনে আছিল সুখ্যাতি মিথ্যানা হইত কথা। স্থুবে স্বৰ্গধানে ছিল বছ দিন क्रा देशविष्णवना---স্বৰ্গ লইল হবি দানব ছুরস্ত অমরে করি ছলনা। ^{हे}स्सामि (मवर्जा षञ्*ष-*(पोत्राटपा) স্বৰ্গপুরী পরিহরি, করিলা ভ্রমণ ধরি ছমুবেশ আসিয়া পৃথিবী'পরি, থাৰ্থ-পরবশ আশানাআইসে অমরাবতীতে থাকে, দানৰ-ব্ৰাঞ্জ- সমধ্যে অৰ্গেডে অর্গের ত্যার রাবে;

সেই পাপে ইন্দ্র দিল অভিশাপ গতি হবে ধবাতলে. মানব-নিবাদে হ**ইবে থাকিতে** চিরদিন ভূমওলে। তদৰ্ধি ছঃখে অমে কৃহকিনী ঘুরিয়া পৃথিবীময়, কংহ ৰত বাণী সকলি নিক্ষণ नकिन व्यनौक इया চিরকাল হেন ভ্ৰমে এ কাননে ভূলায়ে মানব ৰত, নাহিক বিরাম ভ্ৰমে দিন দিন শঠতা করি সভত। নির্থি তোমারে স্কুমার অন্তি সরল নির্মাল মন, পডিলা বিপাকে উহার সংহতি এখানে করি গমন, করিয়া গোপন বেখেছে তোমারে এ কানন গৃঢ় স্থল; শামি চেতাইব এস সঙ্গে মম নেথাইব সে সকল।" ঋষির বচন শ্ৰবণে কৌতুকী व्यानात উদ্দেশে চাই, হেরি চারিদিক্ কোন দিকে তারে নির্থিতে নাহি পাই। श्रविकटर "वर्म, भारत ना रम्बिर्फ এখন তাহারে আর, আমার নিকটে থাকে না স্থস্থির এমনি প্রকৃতি তার। দেখিয়া আমারে নিকটে ভোমার অদৃশ্ৰ হইল ছলে, গেলা ভূলাইতে অক্স কোন জনে আনিতে কাননহলে।" ভনিয়া সে কথা তথন বেমন ভাঙ্গিল নিজার ঘোর, উঠে যেন প্ৰাণী নিছলি ঘুচিলে भगाहेत्न भरत होता। কথাৰ প্ৰভাৰ হইশ তাঁহার অগত্যা পশ্চাতে বাই, ু আশাপুরী-প্রান্তে গাঢ়তর এক অরণ্য দেখিতে পাই।

' কত যে রমণী কত যে পুৰুষ ভ্ৰমে এইথানে ঋষি কহে "বৎস সাধনা করিছ কত --व्यानामक थानी यात्रा-এ কুসুম দাম গ্ৰহণ কবিতে দারা, বন্ধু পিতা শতি, **পুত্ৰ, ভ্ৰাতা** কেছ সে নহে সম্মত। क्ननी, वाक्वय-शाता!" পলায় অন্তবে নাজানি কি বুঝে ষাই জ্ৰুতগতি ব,ডিল কৌতুক নিকটে দাঁডাই যার, वन-मवनन चारमः দেই কার হাতে ভলে ধদি কভু আসিয়া অস্থির অরণা-নিকটে ঠেলি ফেলে এই হার। ন্তম্ভিত হইত আদে। হেরি এ কাননে বহে ভয়স্কর আহ! কত প্ৰাণী ৰথা যবে ঝড কতই আনন্দ পায়, ৰায়ুমুথে মেঘ ছুটে, কি কব বিধিরে এ হেন অমৃত দুর হ'তে শুক্তে অভি ঘোরতর नाहि (म निन आभाष । ছ ছ শব্দে বেগে উঠে , হিডিব এ ৰাম ভাবি কতবার তেমতি উচ্ছাস কানন হইতে চ্চিডিতে নাহিক পারি; উঠিছে গভীর রব, প্রণক্ষেব ভূমি তাই হঃখে ত্যজি ভনিয়া সে ধ্বনি কানন-বাহিবে এ বনে হয়েছি দ্বারী।" পরাণী নিস্তব্ধ সব। ক্রতবেগে চলি প্রচণ্ড নিশাস এত করে যার ঘন হাহারব **চক्षে विन्तृ विन्तृ अ**ल , উঠিছে ঝটকা সম; অন্তরে ধেষন ভ্নিয়া কাত্র কভু ভয়ানক কভু শাস্তভাব खनिन कृषे गत्न । এই সে তাহার ক্রম। প্রবেশি অরণ্যে ঋষির সংহতি সে অরণ্য-পাশে প্রবেশের মুখে হেরি এবে চারিদিক্ -দেখি প্ৰাণী এক জন, **লভা,** গুলা, পাতা হাতে ফুলমালা, জর্জবিত তক্ত, অতি মানভাব আকীৰ্ণ রাশি বল্মীক। তু:থেতে করে ভ্রমণ; এথা ভক্ত শাৰা পডিয়াছে কালি বদনমগুলে ভাঙ্গিয়া পডিছে ওথা উন্মূলিত দারু; গভীর চিম্ভার রেখা, হেলিয়া কোনটি রম্বেছে শৃক্তেতে চাহি ধরাপানে ফেলি অশ্ৰধারা হত পুষ্প ফল চাক্ল; সতত ভ্ৰমিছে একা। ভাবিষা ছলিছে কাহার পল্লব কাতর অন্তব দেখিয়া তাহার ৰিক্ত কাহার চূডা, উপনীত হই কাছে, বিশীৰ্ণ কোনটি ज्राम (महेथारन বিহাৎ-আহত জিজাসি কি হেতু মানীতে পড়িছে গুঁডা; কত দিন সেথা আছে। व्यनन-माइत् "আশার কাননে ষেন বা গুরস্ত कहिल (म सन উচ্ছিন্ন করেছে তার-আছি আমি বছদিন, শোভা-বিরহিং দিবা-বিভাবরী সে শোক-কানন ভুমি এইরপে দেখিতে তাহারি প্রায়! শরীর করেছি ক্ষীণ; প্ৰাণী সে কান নির্বি আশ্র্যা বংসর কভই পক্ষ ঋতু মাস তুই রূপ তুই ভাগে, অতীত হইল হায়, কানন-ভিত্রে ধার পরস্পর নারিলাম দিড়ে তবু কার গলে পাছে এক, অন্ত আবি; এ ছাত্ৰ ক্ষেহ-মালার!

জীবিত যাহারা ' তাহারা পশ্চাতে অগ্ৰভাগে ছায়া যত. কানন-ভিতরে করে পরিক্রম অবিশ্রান্ত অবিরত; গ হতো২স্মি রব, শিব শিব ধ্বনি সতত জীবিতমুথে, ছায়া-বুন্দ পাছে খুরিয়া খুরিয়া ভ্ৰমিছে মনের ছথে। কত যে প্রাচীন ভ্ৰমিছে দেখানে প্রদারিয়া ছই বাহ; বিশীৰ্ণরীর. ব্যাকুল বদন গ্র।সিয়াছে **খেন রাছ**। কত শিশুচ্চায়া ধার অগ্রভাগে নিকটে আসিলে হায়, অমনি স্বিয়া ফিরে ফিরে চাহি দূরেতে পলারে বার। কোন বা যুবক বুদ্ধের আকৃতি ছায়ার পশ্চাতে ধায়, ছায়া স্থির র**ে**হ যুবাছুটি আমি আলিঙ্গন করে তার; কোথা আলিখন রুথা সে পরশ শূক বাছ বকঃস্থলে। যুৱা দীৰ্ঘখাসে ছায়া নির্থিয়া ভাবে তপ্ত অঞ্জলে। কোন জন ধায় ছায়ার পশ্চাতে বাড়াইয়া ছই হাত ; ব্ছদিন পরে ষেন পুনরায় দেখা পায় অকন্মাৎ, करह **चाञ्च**नप्र বিনয় করিয়া "আ(ই)দ সথে একবার, বাহুতে জড়ায়ে क्रव कर्श्वरम्भ নিবারি চিত্তের ভার। বহ দিন সংখ ভাবি নিরস্তর অই সুপ্রসর মৃথ, নামে জপমালা ক্রি ক্রতলে সংবরি মনের তৃথ। বদন-আক্লতি সকলি তেমতি সমভাব সেই সব, ^{ভবে} কেন সথে কাছে গেলে সর ৺কেন নাহি মূপে রব ॰

কেহ বা বলিছে ছুটিভে ছুটিভে কোন এক ছায়া-পাছে---"बा(रे)म किरव चरत्र ভাই প্ৰাণাধিক ठ**न अ**ननीत कांट्ड ; দিবানিশি হায় করিছে ক্রন্দন ৰননী তোমার তরে, শাব্দারে রেখেছে সকলি ভেমতি জননী তোমার তরে। সেই ঘৰ আছে আছে সেই জায়া ভাই-বন্ধু সেই দব, (मह माम-मामी, সেই পরিজন গৃহে সেই কলরব, ক্মলের দল সদৃশ তোমার শিশুরা ফুটিছে এবে; আন(ই)স ফিরে বরে ক্রোডে করি তার বদন আজাণ লবে।" বলিয়া হঃখেতে করিয়া ক্রন্দন পশ্চাতে ধাইছে তাব, ছায়ারূপী প্রাণী না ভনে সে কথ। দূরে যায় পুনর্কার। আহা হুরপদী রামা কোন জন ছই বাছ উদ্ধে তুলি, ছুটে উৰ্দ্ধগানে "নাথ নাথ" বলি । কুন্ধল পডিছে খুলি, "দাডাও বারেক ফণকাল নাথ. জুডাও তাপিত বুক, বারেক তুলিয়া দেখাও আমারে অই শশিসম মৃথ , ভ্রমি অনিবার এ আঁধার বনে বর্ষ বর্ষ হায়। শাগর সলিলে ঞ্বভারা ধেন नाविक नित्रशि यात्र ; উঠিছে তরঙ্গ চারি পাশে তার তরণী ছুটিছে আগে, অনিমিষ আঁথি দেখিছে চাহিয়া আকাশের সেই ভাগে; সেইকপ নাথ कांशि मिरानिक সেইরপে ছাথে চাই, ভবু এ হরস্ত ' অকৃল সাগরে কুল নাহি খুঁলে পাই;

স্থিরভাবে কর্ পক প্রসারিয়া শাবার তেমতি কবে পুনরায় বছকণ শৃচ্চেরর, পাইব জনতে স্থান। আ ৩ হ'তে নারে বা পারে ফিরিতে মুধা সম স্বর শুনিব মধুর অবিচল পক্ষয়; জুড়াবে শরীর প্রাণ।" किकांत्रि अविद्र সেইরূপে যাই কত পত জন এইরূপে সেথা "কহ এ কি তপোধন— ছায়া অধ্যেষণ করি, এই স্থানে বেগে কোণা হ'তে হেন রোদন করিবা এমিছে আকেপে এরপ বহে প্রন ? আঁধার কানন ভরি , ঝড়ের আকাব অন্ত দিকে হেরি সদা থেদখর ज्ञाम कविरुद्धान, কিছু নাহি হ**র** দৃষ্টি ; শিরে বক্ষে করাবাত, প্রচণ্ড বাতাস বহিছে এধানে অবিরল ধারা ঘন দীর্ঘাস, একি অাদভূত স্ষ্টি ?" যুগল নয়নে পাত। हम किছू चारित ঋষি কহে 'বৎস, চাহি কণকাল তাহাদের মুখ त्रहत्क (मिथिटव मव ; হু:থেতে পূরে হৃদয়, কথন্ কি ভাব কোথা হ'তে উহা নবীন পঙ্গ কহি, "হায়, বিধি কিন্ধপে হয় উদ্ভব।" ওকালে এমন হয়! দেখি এক স্থানে ষাইতে ষাইতে প্ৰকাশিত যায় স্ষ্টির গৌরব প্রচণ্ড ঝটিকা বহে , এ ছেন ভরুণী-মুখ, পশুপক্ষী জীব সন্মুথে তাহার মানবের মনে তাপদগ্ধ হয়ে তৃণ আদি हित नहरू, দেয় কি এতই ছখ! গগন আছেয় ধৃলিভে ধৃলিভে বিধু পদ্মফুলে ধীরা, মুক্তা, চুণি ঘনবেগে শিলাপাত , কলম দেখিতে পারি; ব্রিষে ক্র দগ্ধ শোকছোয়া বুষ্টিধারা-রূপে তক্ষণীর মুথে বিনা মেৰে বজাঘাত। কদাপি দেখিতে নারি।" সাগর হইতে যথা দে তরক করিয়া তখন এরপে আ'কেপ প্রবেশি নদীর মৃথে, ক্রমে হই অগ্রসর, তুলারাশি হে মত্ত-বেগে ধার বেগে অল্ল অল্ল ক্ৰমশঃ বাতাস (कनस्तू भ नदा व्दकः আঘাতে বদনপর। তীর সম তেনে ছুটে ভরীকুল হই ৰত আৱো ক্রমে অগ্রসর তীরেতে আছাড়ি পড়ে, বায়ু গুরুতর তত ; ভরন্ধ-ভাড়িভ বেগে পুনরা লতা-পাতা ক্ৰমে গাছের পর্ব নদীগর্ভে ধার রড়ে; বায়ুভারে অবনত। কত শত প্ৰা সেইক্লপ এপা श्चरण भवन ক্রমে বৃদ্ধি বড় ঝড়মূথে বেগে ধার, বুকে মুথে বেগ পড়ে; আকুল বুর ঘন ক্লম্বাস ত্ই অগ্রনর অতি কটে ধীরে ধরা না পরশে পার; স্থির হৈতে নারি ঝড়ে। বৃদ্ধ নর না কত শত যুবা ৰায়ু-প্ৰতিমূৰে হৰা অন্তরীকে বিধাবিত বেগে ঝড়ে; বিহল বখন ধাৰ, কড়ু অকুদি কভু এক স্থানে প্ৰবৰ বাতাৰে ष्यांश्व रेश्टल विष्टू আহাত্তি আহাতি[:]পড়ে। पूरत रकरण श्नतातः;

নির্থি সেথানে কির্ণ ঢাকিয়া व्यक्ति भर्करह हाता. ব্ৰুষায় ৰথা তপন ঢাকিয়া প্রকাশে মেঘের কারা। অথবা যেমন मुट्या शक्रशांल উড়িলে আধার-লাগ. ভাষা বিভাইয়া পড়ে ধরাতলে ঢাকিয়াগগন-ভাল; हांका रम व्यक्तरम তেমতি আকার আঁধারিয়া নভত্ব, ঘুরিছে শুক্তেত ছটিয়া ছটিয়া इत्र कति (म अक्न । অভির শরীর ছায়ার পরশে শুক্ত কণ্ঠ ক্লম খর, চঞ্চল নয়ন তপোধন-পাংশ নির্থি শৃষ্টের পব, বোর গাঢ় মেঘ বেন কালি-মাধা শুকুপথে উড়ে যায়. ঝ**ড়বেগে** গতি ত্ৰিয়া ত্ৰিয়া ধুম বিনিৰ্গত ভাষ। ভুমিছে সে মেঘ অন্ধকার কবি প্রসারে আকাশ যুডে... সে মেঘের ছারা পড়ে যাব গায় উত্তাপে তথনি পুডে। শুকার ক্ষির শরীবে আমার তুত্তে নাহি সরে ভাষ. ঋষিব বদন অশ্ৰপৰ আথি নির্বি পাইয়া ত্রাস। অই কাল খেৰ ঋষি কাহে "বংস. এ আশা-কাননে শিথা, ৰুপা ৰে এ বন উহার(ই) শগীবে কালির অক্ষরে লিখা। ও কালী মুরতি পকী নহে উহা করাল কালের ছায়া, খুরে নিতা এপা প্রাণিগণে দলি এরপে প্রদারি কারা।" ভূলিয়া আপনি বলিভে বলিভে তপোধন কয় শোকে---এ কালিম ছায়া "হার রে বিধাতঃ इफ़्रांगि (कम फ्रांगिक ?

in things ...

ৰগতে যা আছে মধুর সুন্দর গঠিয়া তাহাৰ পর. গঠিলে বিধাতঃ সকলের শ্রেষ্ঠ প্রাণিরপ মনোহর; বিষমাখা তার কণ্টক আবার গঠিলে কেন এ কাল ? মৰ্ক্যে পাঠাইয়া সর্গের পুতলী भर्ष मिरल कैं। हो-क्रांन । স্থাচিত্র পটেতে কালি মাথাইতে কেন এত ভালবাস গ নিদাকণ বিধি জগতের সুথ এরপে কেন বিনাশ ?" এরূপে বিলাপ करब्रन रत्र अवि আতক্ষে সমূধে চাই, গৈরিক-মিশ্রিত **पदत शास्त्रम** ন্তুপ নির্ধিতে পাই। সেই ব্দুপ-অকে অন্ধ গুহা এক উখিত হইয়া তায়, হন ঘন খাস প্রচণ্ড বাতাস ঝডের আকারে ধায়। সেই গুহাপাশে অতি কটে দোঁহে আসি হই উপস্থিত, দেধিয়া স্বস্তিত নিকটে আসিয়া ভয়ে চিত্ত চমকিত। বসি এক প্রাণী গহৰৰ-ভিতৰে প্রচণ্ড নিশাস ছাডে . জনমি বাভাস तिहे मौर्घशास अफ मम दिर्ग वर्ष । পাষাণ-নিৰ্মিত কালীর বরণ (यम (त्र कठिन कांग्रा, যেন অন্ধকার শরীরে বিস্তৃত ঘোরতর গাঢ় ছায়া। কালে দর্ম-অক মাৰো মাৰো মাৰো ভ্সারধ্বনি নাসায়, কৃণ্য বৃষ্ণ কেশ ছিন্ন-ভিন্ন বেশ মপ্তকে বিভিছন হায়! করিয়া বদন করে আচ্চাদন বসি ভাবে হেঁট মাথা, বেন দে মৃরতি বসি ছেন,ভাব (महे खरा-च्या नीया।

কোথা নাহি ৰাই থাকি একা হেথা সম্ভাবি আহারে কহে তপোধন তবু সে বিধি আমার. "শোক্ষর্ত্তি এই ছের, প্রেরিয়া পরাণী আশার কাননে • ইহা হ'তে ঘটে বিভম্বনা করে ব**ছ** বিশ্ব ব**ছ** ফের।" আমাৰে কত জালায়: ঋষিরে জিজ্ঞাসি "কেন, তপোধন খুলি দগ্ধ আঁথি, বৰ্ষে যন্তবার মুখে আছোদন কর? তথনি যে থাকে কাছে, না দেখিত কভু वनन इटेंटड ভার সম বুঝি আশার কাননে উহা ত হয় অন্তর।" অভাগা নাহিক আছে। সে কথা শুনিয়া ছাডি দীৰ্ঘাস আসিতে আসিতে দেখিয়াছ পথে শোক-মূর্তি ছঃখে বলে, সহঅ সহঅ প্রাণী, বলিতে বলিতে করের অঙ্গুলী ভ্ৰমিছে হুঃখেতে, . এ कठोक-त्नारव তিভিল নয়নজলে, ভনায়ে কাতর বাণী। কে ভূমি এখানে "এ কথা জান না না থাক এথানে যাও অসু স্থান ভ্ৰমিছ আশা কানন , বাঁচিতে যগপে চাও, বুঝিয়াছি খরে শিশুনহ তাহা আমার নিকটে থাকিয়া এথানে কেন এ সন্তাপ পাও ?" হবে কোন যুবাজন। আছি এই স্থানে আমি হতভাগা গৃহীর আলমে বথা যবে কোন চারি যুগ এই হাল , মৃত্যু উপস্থিত হয়, বিধাতা আমায় করিলা স্ঞ্জন রোদন-নিনাদ বিলাপ-শোচনা করিয়া লোক-জ্ঞাল। বিদীর্ণ করে আলয়; ব্ৰুকোন জ্বন **ষে আ**দে নিকটে মৃত্য নাই মম তথন যেমন দেই পায় নানা কেশ, বিমধ মলিন বেশ, সেই হেতু এগা কালিম বদন থাকি এ নির্জনে কালেব ছায়াতে ্ছংবে ছাড়িয়াছি দেশ। নাদেখাই কারে এ ছা বাহিরায় বহির্দেশ, হেরে চাবিদিক এ ছার বদন অন্ধক বিষয় তাহাব কারণ বলি---ব্ৰহ্মাণ্ড মলিন-কায়, দেখিব যাহারে বিণাভার শাপে ভদ্ধ কণ্ঠ তালু ঘন উদ্দশ্বাস তথনি সে বাবে জলি: হৃদয়জনলৈ শিখায়, কত অহুনয় অধীর হইয় করিত্র বিধিরে ধরাতল যেন লইতে এ পাপ-প্রাণ, সতত কাঁপিতে থাকে, এ কাল-কটাক কণ্টক উপবে হইতে আমার ভব্নে ভব্নে যেন প্রাণীরে করিতে ত্রাণ; ধরাতলে পদ রাথে; তা ভ্ৰিয়া বিধি শুধু এই বর দেইরূপে এবে নির্থিয়া শোক मिना (म कक्रण कर्त्रि-করি স্থান পরিহার, হেরিতে কেবল ৰাই ঋষি সহ अधि करह में শিশুর বদন পাইব নয়ন ভরি, বদনে চিন্তার ভার---"নির্থিলা শোক নির্ধিলা ভাব এ কটাক্স-দাহ শিশুরে কেবল ষরণো কাল-প্রতিমা, দাহন করিতে নারে. ন্তুবা মৃহুর্ত্তে দশ্ব করি তাপে, চল বাই এবে দেখিবে আশ কোথা সে কানন-সীমা।" অন্ত প্রাণী স্বাকারে;

দশম কণ্পন

নৈৱাশক্ষে—মধ্যভাগে মরপ্রদেশ— তাহাতে চিরপ্রদীপ্ত অনলকুণ্ড— হতাশের মৃধ্যি দর্শন ও নিদ্রোভঙ্গ।

ধীরে ধীরে ঋষি চলে আনগে আবেগ পশ্চাতে করি গমন, শোকারণ্য ছাড়ি, অন্তথ্যের তার

উপনীত হুই জান। কঠিন মৃত্তিকা নিয় উচ্চ ভূমি ধ্রানহে স্মত্তল.

চ**লিতে** চবণ স্থির নাহি বহে, সেপথ হেন পিচ্ছল।

নাহি ডাকে পাথী তক্লব শাৰায় নীয়বে বসিয়া রয়,

বিনা বায়ুবেগে নিত্য তক্তলে ঝরে লভা-পত্রচয়।

ক্রীডায় নিবৃত্ত ব্যাধগণ সবে উক্লাড করিয়া বন,

ফিবে গৃহমূথে ত্যজিয়া কানন আনন্দে করে গমন;

তথন ষেমন ছাডি নানা দিক্ পুন: ফিবে ষত পাথা;

ভ্রমে উডে উডে তক্ত চারি ধাবে ভরে না প্রবেশে শাখী।

নিরবি আসিয়া এথা সেই ভাবে আছে যত নিকেতন,

চারি ধাবে ভার ত্রমে নিবস্তব হতাশ প্রাণিগণ ;

সাহস না করে পশিতে ভিতরে কুল মন, নত শিব,

एक कर्श्रतमा, एक क्रक दक्श नम्रत्म ना यदा नीत्र।

হেবি কত প্ৰাণী চলে অতি ধীবে দেহে যেন নাহি বল,

শুক নীলোৎপল মুথছেবি খেন করে চাপে বক্ষঃস্থল।

क्छ यूवा, श्वाहा नज शृक्षेत्र छ हरण रहन धीरत धीरत, প্রতি পাদক্ষেপে বেন রেণু গণি লিরখে মহী-শরীরে।

হেন ধীব গতি তবু কত জন পড়ে নিত্য ভূমিতলে,

খলিত চৰণ ধ্লিতে লুটায় পিচ্ছল সেহ অঞ্লো।

পডে কিভি পৃষ্ঠে চলিতে চলিতে বৃদ্ধ প্ৰাণী কত জন.

উঠিতে শক্তি নাহিক আশ্রয় আশ্রয়ে ধবে প্রন।

কোথাও পরাণী হেরি শত শত বসিয়া তুর্গম স্থানে,

অনিমেব আঁথি নীরস বদন

নিত্য হেরে শৃক্ত পানে , চলে দিনমণি ভাসিয়া গগনে

চাহিয়া তাহাব পথ, ছাড়ে দীৰ্ঘযাস বলে "হা বিধাশু:

ভাল দিলে মনোরথ; করি বড় সাধ ধরিলাম জদে

কুপণের যেন মণি, এখন সে আশা হয়েছে গরল

দংশিছে বেমন ফণী।
কেন বিধি হেন আখাদে ভূলায়ে

জালিলে হৃদরে শিথা ?

জানিতে যগপি অগ্রে এ ললাটে এ হেন অভাগ্য লিখা!"

এ রূপে বিলাপ করিছে **অ**নেকে কেচ বা উঠিয়া ধায় ,

ভাবে যেন শৃক্তে কোন সে আঞ্জি সঙ্সা দেখিতে পায়।

গিয়া জ্বতপদে কর্তল যুডে বাছ প্রসারণ করি,

বাকাসে মিলায় ঘুচে সে প্রমাদ পালটে স্মাশা সংবরি।

ফিরে অসংধামূতে বসিয়া অনাবার দিনমণি পানে চায়,

দেবে শৃক্ত মার্কে ধীরে ধীরে স্থর্গ গগনে জাসিয়া বায়।

নিরখি সেখানে প্রাণী অফ কড মনস্ভাপে ধীরে ধীরে,

প্ৰতিজন পাশে ধূলি-সমাচ্ছর, কুনুমের হার কণ্ঠ হৈতে খুলি পডেছে কতই ধসি। नित्रथिए किरत किरत , বাঁচিয়া কি ফল ৰলিছে "এখন ফেলিছে ভূতলে করি ছিন্ন ছিন্ন পাইয়া এ হেন ক্লেশ, পদতলে দৃঢ চাপি, এ ছাব সংসাবে বুথায় ভ্ৰমণ ফেলি মৃত্যু ভ নেত্রে অঞ্বিন্ ধরি এ ভিক্ক বেশ! উঠিছে সম্বনে কাঁপি; কতই বাসনা কত ৰে উৎসাহ পণ্ড খণ্ড হয়ে পদাবাতে চূৰ্ণ ধরিত আগে এ মন ৷ त्म माना পड़ে यथन, ভাবিতাম তৃচ্ছ ভূধর-শরীর ছাড়িয়া নিখাদ উদ্যাপন বলি শামাক তুচ্ছ গগন! সে প্রাণী করে গমন। कन्धि (भाष्मम ভাবিতাম স্বাগে বৃসিয়া নির্জনে দেখি কত জন ইদ্ৰপুৰী কৃদ্ৰ অতি, धीरत िखने थ्रल, পরিণামে হার इहेन अ मनः অ্হিড চিত্ৰেব मद्रामत नीत्व এখন কোথায় গতি!" একে একে রেখা তুলে: ভগ্ন অসি লয়ে বলিয়ে এতেক সর্ব্ব অবয়ব করিয়ে ম'র্জিত ज्ञात्य करव श्रहात्र, নিরত্ব কবিয়া পরে, পডিয়া বংগতে আবার ভৃতলে সেই চিত্ৰপট বিছারে বিছারে চাপায় পাষাণভাব। তুই করতলে ধরে; শিলাখণ্ড তুলে উপবে উপরে পরশে মহাকে পরশে জনবে কতই চাপিছে বুকে, যতনে করে চুম্বন; কতই কাদিয় কবিছে আকেপ পবে ছিন্ন কবি ফেলি ধরাতলে দারুণ মনের ছথে। সস্কাপে করে গমন। "कि कठिन हिया"— कहिए के मिश বিদীৰ্ণ হলি নে বলে "রে এখন(ও) "শিলা হেন হয় ছার, হার রে কঠিন হিয়া ? পরেছি যেখানে না ভাঙ্গে সে বুক কি ফল বাঁচিয়া এ হেন মধুব বাসনা ফণিব হার।" व्यामा दिमर्कन मिश्रा १ উঠিয়া আবার বলিতে বলিতে না জানি কভই ভাবিতাম আগে ক্ৰমে অগ্ৰভাগে যায়, (कांबल बानन बन, शिश्वा किछू पृरव বৃক্ষ অন্তরালে আশার হিলোলে ছিল যত দিন অর্ণামাঝে লুকার; কবিত হদে ভ্রমণ। কোথা প্রাণিগণ বাড়িল কৌতুক কৌছ ধাতুময় বু**ৰেছি এ**থ**ন** এরপে করে গমন, कर्छ। त नरतत शिन, ঋষির পশ্চাত জানিতে বাসনা কারণ করিয়া অনক্ত হঃথেয় চলিফু আকুল মন। গঠিলা আমায় বিধি !" চ**লি ক**ত 🕫 পশ্চাতে তাদের প্ৰাণী শত শত কোন খানে দেখি ক্রমে আদি উপনীত, শয়ন করি ভূতলে, ঘোর মক্তৃতি অনন্ত বিভার তুলিয়া বিষম পাষাণের ভার হেরি হয়ে চমকিড; রাথিছে স্তুদয়তলে ; **ৰেন** নিব গু হেরি চারিদিক মণিময় দণ্ড কাঞ্চন মুকুট ধুমেতে আজ্ব বর, হেম-বিমণ্ডিত অনি,

নাহি বৃক্ষণতা পশু-পক্ষী-রব ! গাঢ়তর বেন অস্ককারজাল বিকলাক সম্দর, বারিশ্ভ মক ধৃধৃকরে সদা সে মকপরে ছড়ায়। সে বিকট **জালে** আঠুল তরাসে চলিতে নাহিক পথ, শ লব শিহরি চাহি তথন, চদেহ ব রোমাঞ্চিত দেহ ক নিস্পান ছই নয়ন ; কঠিন কৰ্মশ লবণ-মৃত্তিকা কম্পিত হাদয় উত্তপ্ত অনলবং। পদতালু জ্বলে যে যেন তপ্ত বালু দেখি স্থানে স্থানে কত শব-দেহ দে তাপ নাহিক জ্ঞান, দিক্হারা হয়ে ভ্রমে সেইখানে সেই বারিশৃক্ত স্থলে, নে বি বিক্ত বদন নিবর্ণ শরীর পরাণী আকুল প্রাণ ; বাণীশৃন্ত মুখ ধুলিপূর্ণ কেশ লতা-রজ্জুবান্ধা গলে। পীড়িত হৃদয় কাঁপিতে কাঁপিতে শরীরে কালিম-মলা সে মরুপ্রদেশে ভ্রমে প্রাণিগণ জ্বভবেগে করে গতি, হেরি এইরূপ যাই যত দুর **অন্তরে হরে উত্তলা;** বিশীর্ণ বদ্দ বরণ পাঞ্র বাহিয়া উত্তপ্ত পথি। ক্ৰমে যত ৰাই তত উষ্ণ বায়ু - নীরবে করে ভ্রমণ; উফতর শুক মহী, উঠে বোর তাপ ঘেরি চারিদিক্ নিশীথ সময়ে প্রেত্যোনি যথা দশ্বচিত্ত দশ্বমন। শরীর চরণ দহি। ক্রমে উপনীত বিশাদ বিস্তৃত তৃষিত অন্তরে **८**हरत मकरमम চার সে ধ্মল শ্তে, নিরথি সে ভাব শরীর কণ্টক ভরত্বর মক্তৃমে, শ্রুওআগতা হ হ করে দিক্ আছেল নিবিড ধ্মে; হ হ অবে বালি অনস্ত বিস্তৃত হৃদয় পূরে কাকণ্যে। আশাভগ্ন হার, কুত নারী নর কত যুবা বৃদ্ধ প্রাণী, ভ্রমে এই ভাবে সে মক্ত প্রদেশে দশ দিকে পরকাশ, ধৃধ্করে শৃক্ত অনন্ত শরীর ্বদনে মলিন গ্লানি। দুর ক্রমশঃ তভুই দৈণিতে পরাণে ত্রাস। লবণ-বালুকা বিকীর্ণ প্রদেশ যাই যত দূর নৈহারি ধ্ম প্রগাঢ়, ঘনঘটা বেন বিছারে আকাশে পেলে বেন তাহে चनलित्र ८७উ তিমিরে চাকে আবাঢ়। ক্রমে অন্ধকার বেবরে দশ দিক্ উত্তপ্ত বালুর সংক্ষে। মরু-মধ্যভাগে একমাত তরু প্রবেশি বেন পাতাল, উঠে নিত্য ধ্ম ফুটে ক্ষিতিতল তাণে জাণ কলেবর; প্রাণী এক স্থন তলংশে তার দাড়াইয়া স্থিরতর, হাতে রজ্মুধরি দৃঢ়করি তার কজ্জল-বর্ণ করাল। মাঝে মাঝে মাঝে বিকট কিরণ বাধিছে কঠিন কাস, আরোপি শাধাতে পরিছে গলায় চমকি চমকি ছুটে, কাল-কাদখিনী কোলেতে বেমন ছাড়িগা বিকট খাস ; ঝুলে ভক্তালে শ্বদেহ বেন ৰিহাৎ গগৰে ৰুটে ; ভাতে তীত্ৰ ছটা ধাঁধিয়া নয়ন ঝুণি হেন কভকণ, মৃহুর্ভে পুনঃ সুকায়,

কৰ্ম সংক্ৰেপ্ত	খুলিয়া আবার	धृध्कटत मिक्	অনন্ত ব্যাদান	
কঠ হ'তে পুনঃ খুলিয়া আবার রজ্জুকবে উল্মোচন।		বালুমগ্ন সক্লেশ;		
কখন শ্বস্থির	বেগে তক্তল	क्लिट्स घनन	সে বিৰম কুণ্ডে	
ত্যবিষা উন্ম		আশাভগ্ন -	আশাভগ্নারী নর, দশ্দিক হ'তে হতাশ-তাড়িত	
ছুটে মন্তভাবে	সে মক্প্রদেশে	দশদিক হ'তে	হতাশ-তাড়িত	
প্রাণী সেক		পড়ে তাহে		
চলে দিক্শ্ক	করি হত্কার	হেরি ক্ষণকাল	সে স্কনল-কুণ্ড	
চেন-পঞ্জ	খে উঠে.	ব্যাকুলিত	হয় প্ৰাণ,	
ফেন-পুঞ্মু জনস্ক বালুকা	ভাপে দমীভূত	বলি—"শী্ম ঋষি	পবিহরি ইহা	
অস্থির চরণে	१ ছटि ,	চল কোন	জন্ম স্থান।	
ছिन्न करत्र (नर	নতে বিদাবিয়া	যেন দে কোন বা	অব্বের ক্লে	
नरक हिन्न व	ংরে আচে.	বৃদ্ধ নে কোন বা বৃদ্ধি নির অক্ল সাগরে	থেলে একা, ভিতৰ উৰ্জিকল	
ব্যক্তিয়া অঙ্গুলে	চি [*] ডে কেশ-জটা	অক্ল সাগরে	নিত্য উৰ্মিকুল	
মৃত্তক করে	বিকচ :	म्ब्रिया स्टब्स्ट हिल्ला स्टब्स्ट हिल्ला स्टब्स्ट हिल्ला स्टब्स्ट स्टब्स स्टब्स्ट स्टब्स	বার দেব।, অমনকাজলধি	
ৰুধিরাক্ত তহ	ठांब जनपिटक	হ হ চণে জণ জননম গন	दिफ्जाम.	
ক্রাবিদ্যাত তথ্ প্রাণিগণে	থেদাইয়া—	অনস্ত ঘন শৃক্ত অন্তরীকে	অগাধ অনন্ত	
আশাভয় প্রাণী	যত দে প্রদেশে	ব্যামকা	ল পরকাশ।	
সমূথে ভ্রম		পক্ষী-প্রাণী-শুক্ত	র পরকাশ। নিথিল গগন	
জলে মকুমাঝে	অনলের কুণ্ড	পক্ষী-প্রার্থ	ৈ-শূক সিকু।	
		জলধি-গৰ্জন	≹-শ্ক সিরু। কে∢লি নিয়ত	
বিপুল মুখব 'ধৃমল কালিম	বজ্ঞ-ধাতু সম	লাতি অৰ	। স্বর-বিন্দ।	
শিলাখতে		π০া /স অকল	জলধির তীরে	
উঠে বহিং শিথা	দূর শুক্তপথে	প্রাণ আ	কুল হয়, শরীর জীবন	
দ্ধিহল প্রস		ৰসিলে একাকী	শরীর জীবন	
डू टडे डूटडे डिटर्ड	पृत्र गुरू পरिश	ৰোধ হয় দেইকপ এখা	শ্রুময়;	
ভীষণ গও	জন ধরি;	সেইরূপ এথা	এ মরুপ্রদেশে	
লিহি লিহি করি	উঠে বহিশালা	প্রবোশ প	মাকুল দেহ, শুন তপোধন	
কপ হ'তে	ভীম রকে.	হতেছে আশার ≩দল পরি	ত্ৰা ভগোৰ	
জিহি লক্ লক্	ভূটিতে ছুটিতে	হলিমা নিক্তি	হৈরি চারিদিক্	
প্রাম্ন প্রসারে র	यन जूकरंत्र ,	বাণায়। শেখাৰ ঋষি নামি	ह प्रिथि चात्र!	
	ধরি একে একে	क्षिप्रकार क श्रे वः	সেই ভক্তল	
८महे भृष्टि छत्रकत्र,		শেকাভণে মুন্ত সেই দা	मानत-धात।	
দে অনগ-কুতে	मृहुर्स्ड मृहुर्स्ड	তেমতি কিরণ	পড়ি দামোদৰে	
निस्कर्भ	বহিংর প র ;	काटना व	करत पृष्टे क्ल, जन्मत भनीरि	
ঋষি ক্তাত "বংস,	. হের রে হতাশ	তেমতি কিরণ	তক্ষর শরীবে	
চতাশ-ক	প নেহার ;	রঞ্জিত ব	রিছে ফুল !	
আৰু পাৰ কাননে	প নেহার ; পরিণাম এই	ক্ষেত্ৰত দেখিতে	ফিরিকু আবাব	
নিকপিত	ৰিধাতার !"	প্রবেশি	আপন গেছে;	
নেহাবি আত্তরে	কম্পিত শরীর	পুনঃ সে ধরার	আপন গেছে; আবহের পড়িয়া	
ভয়ে শি	র কাঁপে কেশ—	মঞ্জিহ জ	াটিল স্মেহে।	

ছায়াময়ী

[কাৰ্য]

প্রস্থাবনা

পার্কা-গগনে নিবিড কালিমা অরণো খেলিছে নিশি । ভীত বদনা পৃথিবী দেখিছে খোব অন্ধকাবে মিশি !---ो शै भवरम खड़ेवी शृतिरह জাগিছে প্রমথগণ, **ৰট হাসেতে বিকট ভাবেতে** পৃরিছে বিটপী-বন। কট করতালি কবন্ধ ভালিছে ডাকিনী চলিছে ডালে, বিন্ত্ৰ-বিউপে ব্ৰহ্ম-পিশাচ হাসিছে বাজায়ে গালে ৷ উৰ্দ্ধচৰণে প্ৰেক্ত নাচিছে বুক্ষ হেলিছে ভূঁৱে, াৰ অটবী বিবাট তাওবে. কাশ উডিছে ফুঁরে; ক্যা বিথাবি বিকট শাশানে বসিছে ভৈববী পাল. ীম-মূবতি শাশানে হাসিছে আলেয়া জলিছে ভাল। ^{চ্}ণ্ড-**স্বারাবে থেলিছে ভৈ**রব অস্থি-ভূষণ গলে, ঠঠ ঠং ঠঠ নর-কপাল শ্বশানভূমিতে চলে। প্রেত। চলে কপাল বথ- यः

कात माथा अठा हि हि हि—हः ধাকিটি ধাকিটি ধিমিয়া। ২য় প্রেত। রাজা কি বাথাল ছিল কোন কাল এখন মডার মাথার কপাল শ্বশানে দিয়াছে ফেলিয়া। ১ম ও ২য় শ্রেক। চলে কপাল ধধ--- পঃ কার মাথা এটা হি তি চি চ: ধাকিটি ধাকিটি ধিমিয়া। মথে কটকট শব্দ বিকট (थिलिट्ड टेड्र वनरम. দম বিকাশি থিলি থিলি হাসি অন্তি-ভূষণ গলে; **थिनिएउ ४४निएउ ५७ मा**नएहे প্রমথ চলিল শেষ. নদীকুলে হেথা মৃত্ত ঝুলায়ে শ্ৰণান কবাল-বেশ। দগ্ম-বরণ বিগত-যৌবন সন্মুণে স্থাপিত শব. ভুত্র পলিত চিকুর বিরুসে বদনে বিবত বব, তীত্র নয়নে দেখিছে চাহিয়া কপালে কঞ্চিত রেখা, অৰ্দ্ধ-জীবনে শ্মশান-গছনে মানব বৃদিয়া একা। অটু হাসিতে প্রমণ হাসিল ভৈরব ধরিল ভালি. অন্থি কুডাবে নৃমুগু-কগালে সন্ম্ৰে বাৰিল ডালি।

প্রথম পল্লব

শুশানবিহারী ভিখারী তথন :—

"অরে রে প্রমথ প্রেডম্রিগিন,
করিস ভ্রমণ কত সে ভ্রন,
কত অন্ধকার আলো দরশন,

ত্রিলোক-ভিতরে নিশিতে যুরে,

বল্ কোথা বল্ কোথা পরকাল, কি প্রথা সেথানে ভোগ কি জঞাল, জীবদেহ হ'তে কডান্ত করাল জীবাত্মা যথন থেদার দূরে ?

প'ড়ে ধাকে দেহ,—কোথা বা পরাণী, কলুষে অধিত ঐীবনের মানি করে প্রকালিত,—কি সলিল আনি ধাকে কত কাল, কোথা কি পুরে?

আছে কি ঔষধ—আছে কি উপায়, পাণেব কলত্ত বাতে বুচে বার, পাশীর পরাণ আবার ত্রীয়ায়, ত্রীব-চিত্তশিথা কভ কি নিবে দ

কতৃ কি নিবে রে সে ঘোর অনল, বারেক হৃদয়ে জলিলে প্রবল ? ইহপরকালে কি আছে রে বল, দে দাহ নিবারে জুডা'তে জীবে ?

ভূলে কি পাতকী ত্যজিলে জীবন, ইত্ত-জন্মকথা এ মৰ্ত্তাভূবন ? স্মৃতি-চিন্ধা-ডোর জীবের বন্ধন মাটীতে পুন: কি মিশারে বার ?

অথবা আবার সে সব বন্ধনে জীবাত্মা দেখে বে অপনে অপনে, ফণিক্সপে কাল অনস্ত গৰ্জনে অনস্ত ভূবনে যুবায় তায় ?

না থাকে এবে সে ইন্দ্রির-চালনা, সে মোহ বিকার মারার ছলনা, শরীর-ধারণে, পাপীর বেদনা কথন কদাচ ভূলা ও বার; ভূলাতে কিছু কি থাকে নাক আৰু, কেন বা খণন—কেন বা বিকার, কেবল পরাণে আগে কি ধিকার, অশ্বীবি-ডাপ নাহি ভূড়ায় ?

জুডায় কভু কি সে চিতাদাহন ? কিবপে জুড়াল—জুড়ায় কখন, আছে কি নে প্ৰথা বিধির লিখন লঘু-গুক-ভেদ যাতনা-ভেদ?

অথবা বেমতি দশানন 6িডা জলে চিরকাল — চির-প্রজ্ঞানিতা, শিথার গর্জনে সাগর পীডিড! বেলার দুটিয়া কররে থেদ,

অধীর হৃদরে অপ্রান্ত তেমতি এমে জীবকুল অসীম তুর্গতি ছাডিতে ভূলিতে নাহিক শক্তি তিলার্দ্ধ বডনে নিছ্তি নয় ?

এ হ'তে নরক কিবা ভরত্বর কোন্বেদে আছে, জীবদাহকর; পাপের কটক বিধিলে অন্তরে নতে কি কথন দে পাপক্ষর?

দেহপুন্ত ভোরা, আমি দক্ষনতি, বুঝাইথা বলু পাপীর কি গতি, শিশু পুণ্যমন, নারী পুণ্যমতি কলুর পরশে পায় কি পার?

আছে কি রে পার সে পাপের হুদে,
ভূবে বাহে নর পড়িরা প্রমাদে
বিষাক্ত জীবন ভোগে রে বিবাদে,
আছে কি পন্চাতে নিকৃতি তাব।

ষ্দি সত্য বল, দেথাইতে পার পরকালে হয় পাতকী উদ্ধার বথন ত্যাজিব এ জালো-আধার, তোদের সঙ্গে সাথুয়া হয়।

গহন গহরে নগর অটবী নয়ক পাতাল বে কোন পদবী বধন দেখিব— যেধানে দেখাবি তথনি দেখানে আগুরে বব! हत्र निर्माहत्र, लव म्हर्शिव নর অস্থি-মালা নুম্ও-থর্পর, নরদেহ ধরি হব রে বর্কার. পিশাচ-পদ্ধতি শিখিব যত।

वन काथा वन-हम नस्य हम (मधिव (म (मन, भाभीत मधन, দেহতাগী জীব লভিয়ামকল. কি কাজে কিরুপে কোথার বত।"

সে কথা ভূনিয়া ভৈরব সকল কেছ বাধরিল বিকট কবল, কেছ বা নাচিল-কেছ বা হাসিল. ভীষণ কটাকে কেহ বা চায়।

বিভগ্ন বিকট পিশাচ-শবদে কেহ বা নিকটে আসি ধীরপদে কহিল বচন ,-- "ত্যজিবে ষখন (शह-च्यांक्शांत्र और-निष्ठं स

কি হবে তাদের কি হবে রে আব---আমাদের মত ধরিবে আকার. ভ্ৰমিবে ভ্ৰন খুঁজি অন্ধকার. বলিহু তহারে নিশ্চয় বাণী।"

विन थिनि थिनि शांति वात्र पृद्ध . আসি অকুপ্রেত ভয়ত্বর সুবে কহিতে লাগিল শ্রুতিদেশ পুরে শাশানবিহারী প্রাণীর কাছে:-

"আমি বলি যার :--করিন প্রভার, দেহাতে মানব কিছুই না হয়. মাটীর শরীর মাটীতেই রয়, দেহ মন গড়া একই ছাঁচে।

অমরা অদেহী বিভিন্ন-গডন চিরকালি এই মুর্ভি ধারণ, তুহারা নহিস্মোদের মতন।" বলি নৃত্য করি মুরে সেথার।

সহসাতেখন সে বনরাজিতে বেতাল তৈরব আসি আচম্বিতে প্ৰবন্ধ কৰিল কৰেব তালিতে. পিশাচমকলী নিকটে ধার। কহিল ভাদের ভূত-দল্পতি. বিকট ভুণ্ডেতে খরতর গতি অমাত্রী ভাষা--- গৈশাচ-পদ্ধতি ;---"নিকটে উহার না ৰাও কেচ: *

শোক-তঃখ-তাপে যে নর পীডিত মৃত্যুর অঙ্গুলী ধার দেহে স্থিত তাহার নিকটে জগৎ শুন্তিত. নালভ্য কেহ রে তাহার দেহ।

আমি ভতা হার, এ আদেশ তার ত্রিলোকমগুলে এ কথা প্রচার. কহিত্ব তোদের—দেখিস ইহার কদাচ কোথাও অন্তথা নহে।

লভিবলে এ বাণী জান ত সকলে কি শাসনপ্রথা পেরেড মণ্ডলে ?" विनिया अनुनौ दहनाईया हटन ; এবে শৃক্ত বন কেছ না রছে।

দ্বিতীয় পল্লব

একাকী মানব এবে বিজন খাশানে সুদুর ঝিল্লীর রব সম্মুখে স্থাপিত শব मात्य मात्य উঠে थानि विकरे श्वनता।

উক্তিকে লাগিল তাহা আকাশে চডায়ে. একে একে ঝিকি মিকি শুত্র আলো ধিকি ধিকি क्षिन नौनिमा-कारण कृष्ठे कृष्ठे (यन पार्टन--আকাশের নীলিমার কালিমা ঘুচায়ে।

পডিল দে ধীর আলো পাতার লতার, পডিল নদীর নীরে পডিল সৈকন্ত তীরে পড়িল শাশানভূমে বঞ্জজ্ঞ টায়।

জখন ভাপিত সেই নরদেহধারী চাহিয়া মুতের পানে বাথিত ব্যাকুল প্রাণে कल् वा উर्क-नक्रन দেখিতে লাগিল ঘন, ভাবিতে লাগিল ঘোর অন্তরে বিচারি,-

সত্য কি পিশাচ-বাক্য-শনীর-বিনাশে পরাণী বিনাশ পাবে ? পাংশু ক্ষারে মিশে বাবে, ভাবিতে হবে না কিছু ভাবীর তবাদে ?

ভাবিতে-কি হবে না বে ? পরকাল নাই ? মাংস অন্থি মেদ শিবা জীবের চৈতক্স-গিরা, সে গ্রন্থ খুলিলে ফাঁস জীবন—জীবাত্মা নাশ, ত্রাণ মজ্জি ভক্তি জ্ঞান সকলি বুধায় !

এই জন্ম, ইহকাল, এই আদি শেষ ?
মৃত্যু পরশনে গত জীবনেব ৰম্বণা যত,
স্থিতে হয় না পবে তৃষ্কৃতির কেশা ?

যা কিছু বাতনা কেশ, চিতের উচ্ছাস, স্রোতের ফেনার সত উঠে ফ্টে অবিরত, শরীরেই জন্ম লয়, দেহাতে নাহিক রুখ, ক্ষির মজ্জাতি থালি তর্ম বিকাশ ?

ধে ভারে মানবকুল ভ্রমণ্ডল যুডে ভাবে নিত্য অবিবত, দেব দেবী স্জে কত, কৃত শ্বতি, কত বেদ, কত নীতি গড়ে;

ধেলার করনা-স্রোত যে ভরের হেতৃ
মানব হদরতলে মক-গিরি বনস্থলে,
হিমবাদে দীপকার, প্রারশ্ভিত লালসার,
বান্ধিতে কালের নদে মুক্তি-পথ-সেতু ,

সারত্ব নাহিক তার —কেবলি প্রমাদ ? সেই ভর সেই আশা, অনিবার্য্য সে পিপাসা, সকলি কি মান্ত্রের স্ব-রচিত ফাঁদ ?

শিকা দীকা জনজতি বেরপ বাহার.
সেইরপ চিন্তা জ্ঞান, আশা তৃঞা পরিমাণ,
বাঁধিয়ে আগন পায় শৃথাল নিজে গড়ায়,
মঞ্কের মত তুমে কৃপে আগনার শৃ

পাপীর নরক শুধু এই কি জীবন ? কলাফল শান্তি যত, সঙ্গে সলে হয় গড, জল-বুবুদ্দের প্রায়, ু চিহ্ন কি থাকে না তার, পরকাল-পরিসীমা ভূপতি-শাসন ?

কিংবা মরণের পরে প্রেতক্রপ ধরি বাহিতে হবে ধরার বাহে ওরা যে প্রথায়, কানন গহন গুহা বীভৎসেতে ভরি ? কহিল ও প্রেত বথা করিয়া নিশ্চয়,—
হিতাহিত-বোধ-হীন, নিয়ত তমেতে গীন
জযক্ত-কায়া, জীবন নয়—তমছোয়া
মল-মৃত্র-ক্রেদ-ভোগী, নিয়াশ নিগত ?

এই মৃত কারা বাব, বে ছিল জীবনে কান্তি-রূপ-গুল-সীমা, সারল্যের স্প্রতিমা নিরন্ধ শশীর শোভা যাহার বদনে;

দয়া মায়া করুণার পুরী যাব দেহ,
শীতলার মণিমালা, বিনয়ের বক্ষোমাণ হিতত্তত-পরিণাম, নিখিল মাধুগীধাম ছিল যার স্থাদিতল বিলেপিত-মেচ;

জগতের একমাত্র ছিল যে বন্ধন. ভূলিয়া বাহাব স্নেহে ভূলিতাম পাপ-দে: ভূলিতাম চিন্তারূপ চিতাব দাহন,

যার মায়া-বন্ধনীতে বাধিগ্না পরাণ হৃদরে না দিস্থান বিধাতার কি বিধান জীবনের পাপ তাপ মৃত্যু ভর মনস্তা হেবিলে বাহার মুখ তথনি নির্কাণ .

সেই সূতা মৃত্যুকালে যথন শগান বলিল মিনতি ক'বে— কি হবে এ দেহাফা পিতা গো ভাবিও তাহা—কিসে পবিআ'

ষার শব বংক ধবি অমিচ মর্ত্তোতে, হেরিলাম রামেখব যুম্নাত্তি পূত^{ুর} পূচব প্রয়াগ গরা, বিদ্যাচল হিমান অমিলাম কামরূপ, শ্রীক্ষেত্র তীর্থেতে,

সেই সুপৰিত্র স্থতা – নির্মাল পৰাণী স্ত্রমিবে পিশাচীবেশে তমোময় দেশে দে স্থানির সৌরভ-শোভা হরব না জানি।

ভ্ৰমিছে কি সেই ব'লা উহাদেরই সনেআই ভৈরবীর দলে নর-অন্থি-মালা গণে
ভূলেছে পিতারে তার মহুবা-জীবন শ
সারল্য শীলতা দরা নাহিক সে মনে !

নতে—নতে কদাচন, না জানি প্রতায়. ব্রহ্মাবদি নিজে বলে সে প্রাণী ওরূপে স্থ সে আত্মার শেষ এই—অন্ধ নিশিময়। প্রবঞ্চক, মিথ্যাবাদী, বিজ্ঞপি উহারা, প্রকাল আছে সভ্য আছে পাপে প্রায়ণ্ডিন্ত ভগৎনিমন্তা বিধি অবশ্য কবিলা বিধি বেদ্ধপে উদ্ধাব পাবে ভ্রমান্ধ মাহারা।

কে বলিবে—কে জানাবে—দেখাবে আমায় বিধাতার সেই পথি নরেব চরম গভি পরলোক, মৃক্তিপথ, কিন্ধুপ কোথায়।

কে আমানে লয়ে যাবে দেখাতে তনয়া, দেই পুণ্যৱাশি ছায়া ধবেছে কিন্তুপ কাষা কি কারণে বিৱাজিছে কার তবে কি ভাবিছে অক্ষহীনা সে প্রতিমা কোণায় উদয়া।

জ্যোৎস্নামর গগনেব কোল হ'তে তবে বেগানে বোচিনী তারা প্রভাবতী সেই ধাবা দেবী এক তারা গতি নামি এল ভবে।

নরদেহ-ধাবী-কাছে দাঁডাইল আদি—
পরিধান খেতবাস খেত আভা অঞ্জাদ
শীবে অমৃতগদ্ধ মূথে স্লিন্ধ মনদ স্বকোমল নিবমল নিকপম হাসি।

বিনিক্তি-কাশপুপা তহু কমনীয়, ব্যত্তলে করতল পলে যেন প্লাদল বিনীত-নয়না, চাহি প্লায়ুগে স্বীয়।

নিকটে আসিয়া তাব মৃত্ল গুলনে মুম্বী কহিল ভাষ। জীবিতের ছুঃখ-নাস। ভাপিত না হও দেহী ভ্ৰতণে কেহ নাহি ক্লভিত নহে যেবা পাপ প্রশ্নে।

প্রবৃদ্ধির ক্ছলনে ভূলে নাহি কভূ ^{মা}পন প্রমানবন্দে কিংবা বিপুরাশি-রদে হেন নর-নারী নাই— হবে নাকে। কভূ—

পরিপুর্ণ নির্মণতা এ জগতে নাই, গৃথিনীৰ নহে তাহা দে বাসনা এথা স্পৃহা নিন্মগুলে কেছ, ধ্বিলা মানব-দেহ বিদি করে সে বাসনা দে আশা বৃধাই।

यङ भिन नज्ञकूटल गुकरण ना इटव ^{पुडे} निर्म्मलङोमग्र প्रतिशृङ्घ — यङ भिन काट्या हिटख स्थम्बिन् बटव, তত দিন একা কেহ এ ধৰণীমাৰে, রিপুমর দেহ ধবি ক্ৰাসনা পৰিহরি নিক্লক সুধাজতে স্থান কৰি হদিতলে নারিবে শভিতে জয় পুণ্যময় সাজে।

বিধির নিয়ম ইহা অথও লিধন—
সমগ্র নরেব জাতি, ধরাতে একতে সাথী
একত্র উদয়গত, একত্র পতন।

ৰথা অনজের পথে গ্রথিত সুক্রর গ্রহ শুণী ভারাকুল অনুষ্ঠা বন্ধন মূল , কোন গ্রহি যদি ভাব ভিন্ন শ্লথ একবাব পাতাল ভূতল শুক্ত ছিন্ন চরাচর।

কিন্ত যার বিধি ইহা তাঁরি বিধি শুন, হঙ্কতির আছে ক্ষয় সন্তাপ অনত নয় পরকালে আছে ভোগ মৃত্তি আছে পুন:।

চল দক্ষে দেখাইব দে গতি তোমায়. দেখাব তনয়া তব ধ'রে যার শুরু শব অমিলে পৃথিবীপর ভিক্ষ্বেশে নিবলর দেখিবে ক্ষদেহ এবে দেই তৃহিতায়।

আ গে এ শবেব কর দাহ-সংস্কাব মৃত্যুম্পর্শ দেহ যাহা বাধিতে নাহিক চাহ। অ-মৃত জীবের বাদে—বিধিবাকঃ দাব।"

ক্ৰিল তথন স্ক্লন্তংশংগাবী;
আন্ধ্ৰীয় দ্বশনে সিঞ্জ ভীত গুকু মনে
লোম কণ্টকিত কায়া বদনে অনিছে:-ছায়া
অস্থি-সাব শবে বাহু স্নেংহতে প্ৰদারি—

"কেমনে কছ গো ধেবি অনলেব তাপে তাপিব ও কলেবর আন্দৈশৰ নিবন্ধর স্নেহে ভিজারেছি যায় হরব সন্তাপে।

দিখাছি অমূত ভেবে যাহাব বদনে পায়স নবনী জীব স্থানীতল ভক্ষ্য নীব স্থান্ধ চন্দন চুয়া তাফ্ল কৰ্প্ব গুয়া দে বদনে বহুজালা ধবিব কেমন।

প্রমিষাছি বছকাল থাণানে শাণানে, দেখেছি নিধয় মন নব নারী কও জন শাণানে করিছে দগ্ধ প্রিয়তম জনে, দেখেছি পরাণে কেঁদে কত স্তা-স্ভ প্রিয়তম পিতা মূথে সহায়ি করেছে স্থে বর্গরূপা জননীব ম্থায়ি কবিয়া নীর আমানিয়া চেলেছে ভব্মে—শাস্ব অভ্সত।

এ নির্দ্ধর প্রথা কেন, ওগো স্থর্গস্থতে ।
প্রিয়তম ভিন্ন আব স্থাসিগ্ধ নহে সংকায়
এ প্রথা পালিতে প্রাণ দহে অব্দুতে।"

সে বাক্য শ্রবণে মৃথ অমরী তপন
শব-পাশে দীভাইথ। নিজ মূথ অগ্নি দিয়। রহিল কঞ্চালবাশি সঙ্গে দর্গে মর্গ্রবাদী উঠিরা আকাশে উক্লেক্সিরল গ্যন।

তৃতীয় পলব

চলিল গগনপথে অমর-ফুন্দরী কিরণের রেথা-মত শোভা কবি নীলপথ কুধাগদ্ধে বাযুক্তর পবিপূর্ণ করি।

মূদিত নয়ন, ভীত, কম্পিত দ্বীর অস্কলেশে দেহধারী এবে শূরুপথলাবী মুখ্পু প্রাণীর প্রায় অপনে বেন ঘুনায় উঠিতে লাগিল ভেদি অনকঃ গভীঃ!

উতরিল অবংশধে অমরী তথন গগনের সেই দেশে বেথানে নক্তরেবেশে অনস্ক ভ্ৰওরাজি করয়ে ভ্রমণ।

প্রবেশে নক্ষত্তে এক সে তারারণিণী

শক্ত হ'তে আপনার রাখিল নিকটে তাব

শীবদেহধারী নরে বতনে তাহার পরে

কহিলা মৃত্বরে মুমিটভাবিণী—

কহিলা চাহিয়া স্থপ মানবের পানে—

"ধোল চকু দেহমগ্র ও ভূবন শৃষ্ট নগ,
ভূমিতে পারিবে হেথা যবা ধরাস্থানে।"

সবিশ্বরে দেহধারী দেখিল তথন
• চারিদিক্ কুহামন

উন্নত বিনত তথা

কুহাসা তেমতি সেণঃ

নহে সে নক্জ-বসু মণ্ডিত কিয়ণ।

আখাদিত চমংকৃত বিনীত-বচনে
জিজ্ঞাদে তথন নর "এ কি পুন: ধরাপন
আনিলে আমায় দেবি ঘুমারে ঋপনে?"
অমরী কৃষ্ণি—'দেহি, এ নহে পৃথিবী,
পৃথিবীর অফুরূপ দৃঢ কুহেলিকা তুন
অধিনী নক্ষত্র নামে বাজে ধাহা ধবাধানে
এই লোক সে নক্ষত্র—ভূলিও না জীবি।

ৰত দেখ ভারাকপ অনস্ত-শরীবে, সকলি ইহার প্রায় দৃঢ় স্থির ধাতৃক।র দ্ব হ'তে দেখা বায়—যথা সে মহীরে—

কিরণের রাশি মত — কিরণমণ্ডল; কিন্তু এ নক্ষত্রাজি, অতরল শ্রতাঙী মুশ্মর ধবার প্রায় দৃঢ়ীভূত সম্দার মুক্ত জীবিতের বাস — প্রাণিমর স্থল।

রচিত খনিজরালি পৃষ্ঠতলদেশ, পারণ, রঞ্জ, সীস শিলা, অর্ণ অসদৃশ কত ধাতু মর্জ্যে তাব নাহিক উদ্দেশ।

কারো পৃঠে অবিরল কেবলি ত্বার, কারো অফে কুহাচয় কেহ বা সলিলয় কেহ ফ্লাকালাবুত কারো অফে সদা গিঙ অনল উভাপ তেজ—করিছে বিহার।

জ্যোতিৰিশারদ গুরু ধবাতে বাহারা, তাহারাই বহু ক্লেশ দেখে এ নক্ষতদেশে স্বরূপ কিরুপ কার, কোথার কি ধারা।

ধরাতে নকল নামে ডাকে এ সকলে,
আনরা অদেহী প্রাণী অন্ত নামে শৃকু জানি
এ সব বর্তু লাকার ভূবনে মত বিস্ত ব জীবাত্মার কারাগার অস্কুরীকতলে।

তাপ ৰাষ্ণা বৃষ্টি ধৃম ঝটিকা প্ৰভৃতি ৰেখানে প্ৰধান যাহা তারি অহস্কপ ভাগ ইহানের নাম হেখা—যার যে প্রকৃতি।

দেহত্যাগে জীব-লাত্মা পরমাত্মা-দেশে.
বাহার বে তুঃগদল ভূঞ্জিবারে সে স চন বেখানে আদেশ পায় সেই সে মন্ডাল ভ পুঠতল ভেদ করি অব্যব্ধ প্রবেশে। যতকাল শেষ নহে জীবন-আঘাদ হলতাপ-শিখানলে ততকাল সেই স্থান. থাকে সে পরাণীপুঞ্জ ভুঞ্জিতে বিষাদ।

সে লালসা নির্কাপিত হয় যেই কণে
সেইক্লণে মুক্ত প্রাণী তেয়াগি শবীরী-গ্লানি
স্থা-আভা অবয়বে প্রকাশিত পুন: সবে
ত্যক্ষে সে লোকগর্ড নিস্তাপিত মনে।

তাদেবি অন্তের শোভা কিরণ-আকাবে, গাঁপি কাঁপি ঝিকি ঝিকি তারা-অন্তে ধিকি ধিকি চমকে মানব-চকে শরীরী উাধাবে।

পাপম্জ প্রাণিবৃদ্ধ বিহরে তথন ব্রন্ধাপ্ত বেষ্টন করি তাপিতেব তাপ হরি হিতব্রতে সদা রত ত্মাপন সামর্থ্য মত বিধির বাঞ্চিত কার্য্য করিতে সাধন।

কত প্রাণী ধার পুন: হরবে মগন, বিধিব রাসনা বেখা গঠিতে নৃতন প্রথা নৃতন আকাশ তারা পৃথিবী নৃতন ধাবা নব রবি নব শশী নৃতন তুবন।

যে লোকে এখন তুমি দাঁড়ায়ে মান্ব, ৰুহালোক এট স্থান কপটী পাপীর প্রাণ নিহিত ইহার গর্ভে—ক্ষুপ্ত প্রভা সব।

মিখ্যা ভাষা প্রবঞ্জনা করিয়া ধারণ যে প্রাণী ধরণীপরে অক্তেরে ছলনা করে ন্বল পাপের মূল সেই সব জীবকুল এই লোক-জঠরেতে ভূঞ্জে দিপীডন।"

জীবিত জ্বিজ্ঞাদে তাঁর—"কোণায় দে সব, না নেথিত কোন দেহ কোণায় না দেখি কেহ কেবলি কুষেলি-রাশি—নিবিড নীরব।"

"সলে এসো এই পথে" — বলি দেবী দেব ভীবিত্তের আবেগ আবেগ চলিল দে তলভাগে বিশ্ব দেখারে ভারে; আসি এক গুহা-বারে অন্ধকারে গুহা-পথে করিল। প্রবেশ।

চতুর্থ পল্লব

প্রবেশি গহরর-মুথে শুনিল শরীরী বেন কত প্রাণিরব এফল মিশিছে সব কলরবে সে প্রদেশ পরিপূর্ণ করি।

নিবিড অরণ বথা মাক্ত-নিসনে পত্র ঝব-ঝর খবে, সর্কাদিক্ পূর্ণ করে, তেমতি অফুট নাদ, ঘন খব স্বিবাদ বহে শ্রোত নিরম্বব সে ঘোর ভূবনে।

ধ্মবর্ণ বাম্পরাশি—গাঢ়তর ঘন— অনে সে প্রদেশময়, সর্বত্ত প্রসারি বর তমার্ত নিশামুধে যেমতি গগন,

কিংবা যথা হিমঞ্জু প্ৰাদোষ সময় গাঢ় কুহেলিকা জাল চাকে মহী তক ভাল সবোবৰ পথ ঘাট শুল গিৱি নদী মাঠ ধুসৱিত কুহাধুমে লুকাইৱা রয়;

তেমতি কু**ংগীজন** নিবিভ সে দেশ ; গোধ্লি-আ**লোক-মত** ধীর-ভাতি দ্রগত কদ।চিৎ স্থানে স্থানে করিছে প্রবেশ।

আবা-অরকারময় বিশাল ভ্বন, জটিল কুটিল গতি নানা দিকে নানা পথি চলেছে ফিরিছে ঘ্রে, এই লক্ষ্য কিছু দ্রে প্রবেশি ভাহাতে কিছু আবোধা ভ্রমণ!

অসাধ্য ভ্ৰমণ ৰথা কোন সিদ্ধযোগে বিদেশী ব্ৰাহ্মক ৰবে বৃদ্ধি হত ভদ্ধ রবে কাশী বৰ্ত্তে নিক্ষেপিত একা নিশিযোগে।

সতত অগিত-পদ শরীরী মানব চলে অমরীর পাছে ধীরগতি কাছে কাছে চলিতে চলিতে ধীরে তেবে অন্ধকারে ফিরে[†] কত দিকে কত জীব সংখ্যা অসম্ভব।

হেরে দেহধারী ভরে বোমাঞ্চিতকার — কবন্ধ সদৃশ সব বক্ষগ্রীবা কীণরব, পশ্চাতে ইাটিলা চলে পৃঞ্চভাগে চার। না পায় দেখিতে অগ্রে—নেতা নাসা মুখ ঘুৱান পৃঠেব দিকে কেহ নাহি চলে ঠিকে ঘুকলে বাযুর মত ঘুরিয়া বেডায় পথ, বাক্য-নিঃসাবণে যেন কতই অসুখ।

চলে দৰে কৰে চাপি কঠিন কৰ্মণে কণ্ঠতল মূৰ্ম্মুভ, বেদনা যেন ছঃসহ নিয়ত ব্যথিছে কণ্ঠ শ্বাস-প্ৰসারণে!

এত স্কীব চলে পথে চলিবার স্থান কটে স্বতি মিলে নরে; চলিল পথির পরে স্কটিল জনতা ঠেলি শতপদ হেন কেলি শতপদ হক্ষে: চলি কররে প্রয়াণ।

দেহের উত্তাপে তাবে জানি জীবকুল, ভগ্নকীণ কুল বর, পলবে বেন মর্মর নির্গত নিখাসপথে—ব্যথায় ব্যাকুল,

কহিল—শরীরী প্রাণী স্থল দেহ তব, জুমি কেন হেথানব হরত এ গুহান্তর কোথা আনদি কোথা আন্তেন নাপাইবে সে তদস্ত এ গুহাগহরর, নব হুর্গম ভৈবব;

কতকাল(ই) আছি হেথা ত্রমি এই ভাবে ঘ্রিয়া ঘুরিয়া প্রান্ত তব্ পদে পদে প্রান্ত চিনিবারে নারি পথ—তুমি কোথা পাবে ?

আলোকে ভ্রমণ সদা অভ্যাস ভোমার, ওহে দেহধারী নর শীল্ল ভাজ এ গহরে আল্থাময় দেহধবি আমরা ভ্রমণ করি আমাদেরি নেত্রপথে নিশি এ আধাবা !

নিবারি ফিরিয়া বাও।"— স্থন শরীরী কহিল "হে স্বাত্থাময় তব চক্ষে দৃখা নয় আমি কিন্ধু বাব এই স্বন্ধকার চিরি,

সদে হের কে আমার।"—বলিয়া সঙ্কেতে , দেখাইল জ্যোতির্ঘন্ধী, নিরথি সবে বিস্থন্ধী শশব্যক্ত আথাতর বছনে বিস্তারি কর পলার পাপাত্মাগণ নিশি মধা প্রাতে:

কিংবা পিণীলিকাশ্রেণী দলিলে চরণে চৌদিকে যেকপে ধার নেইরপে হেরি ভার পলাইল পাতকীরা সে কুহা-গহনে। প্রবেশে গহরমধ্যে অমরী পশ্চাতে
শরীরী পরাণী এবে চলে বীবে ভেবে ডেবে কাতর অন্তরে অতি ভরে ভরে করে গহি দেখে অলে গুহালোক – দীপ যথা বাতে।

না যাইতে বছদ্র শবীরী হেরিল বদনে শুঠনারত আত্মা দেহী শত শব চলে ধীরে, কভু জ্রুত, কথন শিথিল,

চলে পথে, চলনের গতি চমৎকার— যষ্টি বাডাইরা ধীরে পদ ফেলি দেখে ফিরে এই চলে একধাবে মুহুর্টে অপর পারে ক্ষণে পূর্বা, ক্ষণে পরে পশ্চিমে আবার।

শরীর-শুঠনে ছাপ কত রঙে আঁকা, কি যেন কক্ষের তলে লুকায়ে সতর্কে চলে খঞ্জ গতি—কক্ষে যেন বিদ্ধিছে শলাকা।

আছোদন অবয়ৰ ভাষা বৰ্ণ বেশ দেখিল যত প্ৰকাৰ বিভিন্ন সে সৰাকায দেখিয়া ভাবিল দেহী ধৰা বুদ্ধি শৃক্ত-গেহী– এত স্কাতি এত জীব ভূঞে সেথা কেশ।

নিকটে আবাদিবামাত্র মিই আলোপন মৃত্সপ্তাৰণ করি জ্তগতি অবগ্রদ্ধি দীভাইল হাত্তমূবে শত শত জন।

• এত মধুপূৰ্ব বাক্য মূথেতে সদাই— বেন বা মিত্ৰতা কত স্নেছ-মানা পূৰ্কগত অবি যেন হদিতল কতই স্বথ-বিহাল তত আপনাৰ আৱ কেহ যেন নাই।

চাহি অমরীর মৃথ মানব তথন—

"চে দিবাাদি। কহ এ কি নেত্রে না কথন দে^{ছি}

অন-প্রাণী ইচাদের, তবে কি কারণ

একপে সন্তাৰে সবে গ্"—জ্যোতিশ্বী বর্গ "ও কথা শুনো না কানে চেলো না ওদের পারে ওরাজীব নরাধ্য!"বিলিয়া মূচাতে র[া] মূধের গুঠন তুলি দেখার সকলে;

নরদেহী চমৎকৃত ত্রাদিত অন্তরে, স্বারি ললাটভাগে দেখিল অভিত দার্গে 'প্রভারক'—লেখা দশ্ধ-শলাকা অক্রে। ভখনি জীবাঝাগণ কালিতে কালিতে উল্লপদে নিম্নলিতে খুরিল্লা ঘূরিলা ফিতে কবে ঘোব আর্ত্তনাদ না পালে ফেলিতে পাদ কদ্ধবাদে উড়ে যেন না পালে খামিতে—

মূথে বলে "হার হার ধরায় তথন কেন বা চাতৃয়ী করি পরের সর্কাশ হবি যাপিয়া জীবনকাল — ভূঞ্জি এ ৰাতন।"

রোষ-ক্ষাম্বিত-নেতে অধর-ফ্রন্থে লগাভাব বিলেপিত অমনী চলে স্ববিত গেনব-দেহীরে লয়ে। পশ্চাতে বিশ্বিত হঙ্গে শরীরী চলিল ধীবে সেকুহা-গহনে।

চলিল—বধির কর্ণ আস্মা-কোলাংলে, কেঃ নাহি শুনে কায়, সন্তাবে সবে স্বায় বিকলিত কতরূপ অফুট কাকলে।

চলেছে সে আত্মাগণ নিরানন্দ মন, গুলিতে চলিতে হায়, অন্তুত ভীম প্রথায় ছিল গ্রীবা সহ তুও অন্ত কাঁধে বদে মুণ্ড কার মূথে কার থিহবা ভীষণ দর্শন!

ষ্মন্ত নাই—শান্তি নাই—গতি অবিচ্ছেদ নামে মাঝে বোরতর মুখে বেদনাব স্বর নিশাচর প্রেত-প্রায় তম করে ভেদ।

জিজ্ঞানে অমহী চাহি দেহধারী আধাণী কিকারণে আত্তরাদ করে এরা—কি বিবাদ কিতাপে আত্তর দাহে কেন বা ওক্সপে চাহে বন্তুই যুথ বেন হেরে অরণ্যানী ?"

কহিলা অমরীমৃঠি—"করিছে ভ্রমণ ^{টে} সর জীব হেথা কত কাল এই প্রথা এই কথা মনে যবে করয়ে অরণ,

দেহধারী তৃমি কীব ব্ঝিবে কিঞিৎ উচ্চসহ সে বাতনা, কি নিরাশাসে কলনা বাসনা থাকিতে চিত্তে কণেতে বঞ্চিত। ১৪ মিখ্যুক পাপায়া এবা—ধরাতে থাকিয়া জড়ারে অসত্য-জাল কাটিলা জীবনকাল এবে ভূজে ফল ভার, এখনও চিত্তবিকার; বিধাননে জলে নিতা এখানে আদিয়া।

চল আংগে"—এলি দেবী হয়ে অগ্রসর, দাঁডাইলা এক স্থানে , শরীরী উৎস্ক প্রাণে পুনর্কার চারিদিকে চাহিল সম্বর।

দেখিল সমূধে এক ভীমাকার বন, ঘনতর কুয়াসায় আবৃত সে বনকার দেখিল অঠেরে তার করিছে শ্রমণ।

কত জীব-দেহছোৱা কত রূপ ধরি, কদলীপত্রের প্রায়, সতত কম্পিত হার, ভীত-দৃষ্টি মন-ক্রেশে হেরে সদা পৃষ্ঠদেশে— পৃষ্ঠদেশে মমদ্ত ছোটে দণ্ড ধরি;

সে বনের চতুর্দিকে বিকট নিনাদ উঠে নিত্য বোরোচছ্যাদে আত্মাকুল মহাত্রাদে করে ঢাকি ৺ভিত্তণ করে আর্ত্তনাদ।

বিকট বিদ্যুৎছ্টা মাঝে মাঝে তার পড়ে অরণ্যের গায়, আাত্মাকুল দক্ষপ্রায় হা হতোহশ্মি শব্দ করি বৃক-বিবরেতে সরি লতাগুলা অধ্বকারে আতকে নুকার।

সেধানেও নাহি আ'জি বাতনা সন্ত্ৰাসে; বিধন্ন-কোটন-পায় ঘেধানে লুকাজে বায় দেইধানে গন্ধকীট উডে চাবিপাশে,

কর্ণমূল গণ্ডদেশে কটুল ঝকাবে, দ্রমে সদা লক লক্ষ, ছড়ায়ে বিবাক্ত পক্ষ, উডে উতে চারিধাবে আক্ল করে ঝকাবে, ব্যথিত জীবাআক্ল দংশন-প্রহারে!

দেশে নর আত্মা দেহ সে বন-ভিততর কত হেন গিরি-কৃটে, নদী, গুহা, ণতাপুটে কাদিতে কাদিতে কাপে বিবরে বিবরে।

বিবর ছাডিতে নাবে বিহাতের ভরে, ভিতরে হুর্গন্ধনয় কর্ণমূলে কুমিচন ঝঙ্কারে বিবল্ল ভানে বধির করিলা কানে অধীর কীবায়াকুল বিবর-আর্ভারে। ্ধেন অঞ্কার দেশ যেন নেএ পথে ওক্তর কোন ভার দৃটি রোধে জনিবার নাসরে, নাহয় ভেদ, কভুকোন মতে!

কত আবা সে তুঃসহ তিমির-পীডনে করি বোর আর্ত্তিগ্রনি বিহাতাভা শ্রের গণি, বিবর ছাডিতে চার ছাডিতে না পারে তার, এবে তম্পায় অরু দৃষ্টির বিহনে!

দেহধাৰী মানবেরে অমনী সন্তাবে— "নিরানন্দ এই সব জীববৃন্দ হে মানব, দেখিছ এখানে যত ভীত হেন আবে,

কুটজীবী প্রবঞ্চক ষতেক গুর্মতি, ধরাতলে বঞ্চনায় ছলিলা কত প্রথার জাপন হিতের তরে সতত পরস্থ হয়ে হের হে দে পাপীদের হেথা কিবা গতি।

হের কি তুর্গতি কিবা বিশীর্ণ মূরতি ! কীবনে হুলুতি বত কাগে ছিল শ্বতিগত এবে কীট্রুপে শক্ত ব্যবিহছে শ্রতি।

না পারে দহিতে পূর্ণ আলোকের ছটা, কিরণ দেখিলে কাঁপে নিত্য দহে চিত্ত-তাপে আদেহি-চিত্তের দাহ— ত্রন্ত বিষ-প্রবাহ ছুটিছে অস্তর-তটে করি ঘোর ঘটা।

দেখ দেহী আই স্থান"—বলিরা আথবার আমনী দেগারে তার সেই দিকে ধীরে ধার দেহধারী নির্থিল সক্তেতে তাঁহার।

দেখিল মক্ষ-প্রাস্তবে জীবাআ। ছুটিছে পতলপালের মত মধাস্থলে কৃপগত কতে জীবাআরে বাশি খেদবাণী পরকাশি কৃপগতে নিরস্তর জ্মনলে পুড়িছে।

ক্পের নিকটে তবে আমরী আসিয়া দেখাইল মানবেরে, তাভিত শরীরী হেরে অনলের হুদে জীব চলেছে ভাদিয়া;

কুদুৰুণ, কৃপগৰ্ড বিশাল বাদান, লক লক অহি তার অনল মাধিরা গার লোল কিহলা প্রসালিয়া লেহিছে জীবাআঃ-হিয়া নাচিয়া প্রমণ্ডণ করিছে সন্ধান। বিকট কামুকি ধরি তীক্ষতর শর্ম কৃপগর্কে নিরন্তর আত্মাকুল জ্ঞার শর্জালা অহিদন্ত-দংশনে কতির!

ষথন অন্থির সবে তীব্র বেদনায় অন্ধ্রকারে দৃষ্টি করি কুপ পার্থে ধবি ধরি উর্দ্ধেতে উঠিতে যায় তথনি সে স্বাক্ত ভূতগণ শর ক্ষেপি গহ্বরে ফেলায়।

ছারারপী কত আত্মা সে প্রান্তরময় নীব-ক্রিষ্ট হতঝাস হৃদয়ে হত বিখাদ– কাহাব কথার কেহ না করে প্রভায়।

জননী বিশাসী নয় আপন তনরে। পুত্র না প্রত্যের যায় পিতা বিধা তনরা অবিশাসী পতি-প্রিয়া অবিশাসে দ্যা গি মিত্রে না পরশে মিত্র প্রতারণা-ভরে।

স্বাত্মাকুল এই ভাবে ত্রমে সে কাস্তাবে, প্রান্ত হয়ে কভ্ধার, লভিতে তক্ত্র-আপ্র-পল্লব শোভিত তক্ত্র কাস্তাবের ধারে।

তরুতলে আাসে বেই, ভূলিয়া মর্শুর হেন বিষাদের শ্বর ধরে লতা-পত্র-গ বেন বা উন্মন্ত বেশ কেহ অক্মল-দে কেহ শাধা পত্র ছিডে অধ্ধৈয়া কাতর।

তথন সে পত্রবল বৃশ্চিক-আকারে শৃক্ত হ'তে নিত্য ঝরে ন্ধীব-আত্মা দেহ'ণ বিষাক্ত দংশনে দগ্ধ করয়ে সবারে।

পলায় জীবাআবুল উধাও হইরা, বদন বিকৃতাকার নিকটে না আসে আ ব্রমে তমোমর পথে অপুরিত মনোরণ গহররের কুহেলিতে অদৃশ্র থাকিয়া।

অমনী শরীরী চাহি কহিলা—"হে দেনি, এই জন বিষপত ; শাথা, শিথা, পত্ৰ, প^ন তীত্ৰ বিষপূৰ্ণ—গদ্ধে নাহি জীয়ে কেন্দ্ৰ।

ধরাতে 'উপাস' নামে এ তরু আবা তি, বে বার ইহার তলে বে পরনে প^{ুরুতি} বে শরীরে পড়ে ছারা তথনি সে জী^{ন কা} নির্ঘাত জীবন-মূলে তথনি আবাত। হেবিলা ধরিত্রীবাসী সে গাঢ় কুয়াসা হব আছের যায় ছুরস্ক প্রভা ছটায়, কথনও উডিয়া যায়—দিশি পরকাশা।

তথন গহারগত জীবাত্মা-মতলী চাগে বে তুর্গতি কত দেখিলে হদ্ব হত ডি কডরাশি প্রায় প্রান্তর অবণা চায়, নতগ্রীবা ভূজতলে করিয়া কুওলী।

না পারে দেখাতে মুধ কেহ অন্ত কাবে, ৱীভূত জীৰ্ণ কাষা সেই সব জীব-ছারা ' নিশ্চল — নির্বাক্ - যেন ভূজদ বুয়ারে।

যমদ্ত ভয়ত্বৰ আদিয়া তথন তোক কুওলীক্কত পাণাস্থাবে করি গুড বালোকে তুলি মুখ, থুলিয়া দেখায় বুক— হেরিয়া শরীবী ভয়ে পাণুর ববণ:

স্বচ্ছ ক্ষ**টিকের প্রা**য় হ্**লবের** তল, খাবায় সে কিরণে— নেপিত যেন প্রস্তনে কুড কুদু কত ছিজ্-পূর্ণ কতস্থল।

আবাপনি ফ্লিছে কভু আপনি ফাটিছে। টিসব ছিন্ত্ৰমূপ ছিন্ত-ভিন্ন কৰি বুক, ক্সাব মাথি গান্ধ কোটি ক্ষমি ভ্ৰমি ভাষ ছিদ্ৰে ছিদ্ৰে ছুটে ছুটে কলিজ। কাটিছে।

কত ভীতিপূর্ণ স্থান হেরিলা শরীরী কুকুঝটিকাময় সে ঘোর পাপি-আলয় অমরীর সঙ্গে সঙ্গে ভয়ে ভয়ে দিবি।

্শমিতে লাগিলা দেবী দেখায়ে নবেবে তিনে খ্যাতিমান্কত মিথাকের প্রাণ— বিক ছল্লভাষী বকধনী আখারাশি— থবন নিক্ক সেই গহরের বেবে।

দেখাইলা মানবেৱে অমরী দেখায়, বিগরেতে স্থান বদি কোন নরপ্রাণ ক্ষ্ণ-কণ্ঠ গতখাদ টানিছে জিহনায়।

বিদিয়া "তৈথস থঠ" বিকট বদন , গীট অবিয়ত উড়িয়া পড়িছে কত বিণ নাসিকায়, তাড়াইতে সে সবায় অজম আঞ্চর ধারা ঝুরিছে নয়ন ! শৃষ্ণ হ'তে অনিবাব ফিণ্ণ ভগ্মবাশি উত্তপ্ত কষ্করবৎ বোধি নাসা ওঠপথ ব্ৰহ্মতানু-তল দগ্ধ ক্ষাব-তগ্ম গ্ৰাসি!

কবে কবতল মাতি প্রেতরূপণারী চাবিদিক্ থেবি তার, ছাড়ি থোর ভত্কার, শব্দে বিদারিছে প্রাণ বদম্ল নিক্থান মৌনীভাবে কাঁদে শ্রীব উগদে প্রহারি!

হেরিল অমনীবাকো অস্থতে চাহিয়া, বদনে জড়ান কর "এন্টনি" বিষয়স্বর "কাইসরের" মৃত তত্ব সমুবে পড়িয়া,

বদনে বিলাপ ক্ষরে হুদি বিদারিয়া; সে প্রাণী কাছে তথনি, আসিয়া ভূনিল ধ্বনি ভূনিল এ নহে তাহা "সপ্ত গিরি বোমে" বাহা কপটা ভূনায়েছিল জগৎ মোহিয়া।

ভ্ৰমে জীব শলাবিদ্ধ নহনে নেহারি, পৃষ্ঠরেখা বক্তভাব . ওষ্ঠাধরে লালাম্রাব সম্মুখেতে শিলাতলে রেখারিত জ্বস্তুলল ব্যস্নের পাধী গুঁটি প্ডেছে প্রসারি।

শরীরী ঝিজাসে—"কার আআ এ পরাণী?" অমরী কহিলা ডায় কটাক্ষ কৃট প্রভায় ভারত কলঙ্ক আই কৃটিল শকুনি।"

বলিয়া নির্দেশ কৈলা কেলায়ে অসুলী,
শরীরী ফিরায়ে আঁথি সেই দিকে দৃষ্টি রাধি
হেরে এক ক্লাসন ক্লেদ-পূর্ব ক্গঠন,
দৈলের অংশতে গাঁথা—শ্ছে কেতু তুলি।

'এখন **আসন শৃষ্ণ' অমরী কহি**লা, "কিছু ঐ শিলাখতে বিধির বিহিত দঙে সত্যঞ্জী মুধিষ্টিয় সভাপ ভূজিলা,

একমাত্র মিথ্যাবাণী বলিয়া জীবনে—
সেই পাপে এ আলবে মনভাপে দগু হয়ে
ক্সীপুত্র ধর্মধর ঘাপরে প্রসিদ্ধ নর
সে পাপ ধতিলা আসি এ তাপ-ভূবনে।

তারি চিহ্ন হেতৃ এই শিলার আসন চিরস্তন বন্ধ হেথা অলভ্যানির্ম প্রথা জানাইডে শৈল-মঙ্গে কেতৃ নিয়শন।

দেশ, দেহি, কত আজা সন্ধাসিত এবে কাঁদিছে ওথানে বসি নেত্রমণি গেছে থসি মূথে শব্দ হাহাকার প্রবেশ কীট-ঝরার জীবনে অসত্য ধল ছলনায় সেবে।"

পরিছরি দে প্র'দশ চলিলা দক্ষিণে, অবস্থাং কোলাইল যেন চলে প্রোক্ত জল চতুর্দ্ধিক হ'তে সেথা প্রবেশে প্রবেণে।

এত অস্কতম কুছা সে তুৰ্গম স্থানে; কোথা হ'তে কোলাগল কোথা বা আত্মা সকল কিছু নাহি দৃশ্য হয়, থালি ভীতি-শ্ৰম্ম কলবৰ ভয়ৰৰ প্ৰবেশিছে কানে।

সেথানে পশিতে নর দেখিল সভরে ক্যোতির্মরী কণে কণে বেন বিধাযুক্ত মনে ভাবে কোনু দিকে পথ কুহা আরু হরে।

হেন রূপে চলে দোঁছে—শুনে অক্সাৎ পশ্চাৎ পারশধ্য উচ্চনাদে পূর্ণ হয় বেন আত্মা কত জন অন্ধকারে অদর্শন ৰলিতেছে ঘোরস্থরে বচন নির্ঘাত্ত—

"সাবধান—সাবধান, সমূধে গহরর জ্বেল পাতালস্পর্শ অসীম ভীম তৃর্দ্ধর্ব কেবাও নির্ভ হও—নহিলে স্ব্র

পড়িরা প্রপাত-মুখে ছুটবে এখনি
সে অতল তলদেশে কে যাও শরীরি-বেশে
কাল্ক হও—কান্ত হও
পাদমাত নিকেপিলে নিপাত তথনি।"

কপালে মর্ম্মের বিন্দু শুদ্ধ কলেবব শরীরী দীড়ারে দেখা নেহারে অপূর্ব্ধ প্রথা হরস্ত প্রপাত ছোটে শব্দ ভয়কব।

নেহারি পাতাল্দেশে দেঠীর পরাণ আকুল হইল ভরে যেন মুগীগ্রন্ত হরে হেরে মুরে শৃক্তদিক্ নেত্র-পাতা অনিমিয পড়ে পড়ে যেন স্থোতে হারাইখা ফান। দেখিয়া অমরী নরে ধরিল তথনি, মৃহুর্ত্তে দিলা চেতন শবীরী বিহরণ ম কহিলা "না পাক হেথা হে দেবনন্দিনি.

অন্ত কোথা লয়ে চল—দেখ দেহে চাচি।
অসমী ভাবিষা তুথ
কণ্টকৈ আছেন যেন
কণ্টকৈ আছেন যেন
ক্ৰিলা আখাদি নবে "প্ৰয়োজন নাচি

প্রবেশি এ তুর্গমেতে—ও গুহা গহিত, বিধির বিধান-বলে, আত্মাক্ত্র-অঞ্চল পবিপূর্ণ চিবকাল—নিত্য উচ্চুমিত।

বিষম ড:থের জাগী বিশাস্থাতক মর্ত্তালোকে যত জন, মিত্রথাতী ক্রুব মন আই পাতালের তলে চল যাই অভ্যন নির্থিতে অভ্যন্ত পাপের নবক।"

পঞ্চম পল্লব

উটিলা অমহী এবে অন্ত তারা-লোচে অক হ'তে রাখি নরে কচিলা সুমিট থং "বাতি নামে ধবাতলে বলে যে আলোকে

এই দে নক্ষত্ত দেখ।"— নেহাবে শ্বীরী নিরস্তর বৃষ্টিধার। পারদের ধাবাক্ষ দে ভুবন-শৃষ্ঠ-ভলে যথা আংবদেব এর স্নাভ মহীভলে সদা বায়ু বন গিরি।

পতে ধারা ক্ষণকাল ন। হিক বিরাম – পড়ে সে ভূবনময়, জীব-আ্রা দৃগ্য না, হিমানীর মক বেন নীরদেব ধাম।

প্রবেশিল নরে লয়ে অমন্ত্রী তথন, অস্তর-ভিত্তরে তার, হেরে দৃষ্ঠ তীমালার শরীরী কম্পিত দেহ কপালে স্থেদেব প্রেদ দেখা দিল বিন্দু বিন্দু—নিশ্চল নরন।

দেখিল জালিছে আলো সে লোক-জঠ : রক্তবর্ণ বনজ্জট। চারিদিকে ভী খটা নিশাকালে জালে বথা বেলাক্তম্বলরে . উৎকট লোহিত আভা -- ভানাতে নাবিকে কোথা গিরি জলমগ্ন, কোথা দিকু পোতভগ্ন ল্লাগ্নিত জলতলে কোথা ব। ভালিয়া চলে, চঞ্চল বালুকাচর -- বস্ত্র কোন্দিকে।

অথবা শৈল-শিখরে যুদ্ধকালে ধবে আলে ঘোর দীপ্ত জ্ঞালা শৈনিক প্রহরিমানা কুহারত নিশিকোলে লুকায়ে নীরবে।

সে আভার প্রতিভাতি অথমাত্র ভাব বৃদ্ধিৰে দেখেছে ধারা, নিশীথের ভারাকাবা বক্তবর্গ কাচপিও ধরি যাহা পোতদও ভাগীরথী-জলে ভাসে জানারে প্রভাব,

দেখিতে তেমতি ছটা, অথবা যেরূপ লৌহ অব ধার যবে ত্রিষামার ঘোর রবে যামিনী, ধরণী শুলে করিয়া িজ্রপ,

ধ্বক্ধ্বক্জলে আভা কেশব-পুচ্ছেতে চলে ষেন অজার রক্তচকু ভয়ঙ্কৰ , ধস্ধস্তেইবাহাস বহে নাসিকায় খাস নানা জাতি নরবুদেন উভায়ে পৃষ্ঠেতে।

জনে সেইরপ আবালো প্রচণ্ড উৎকট, প্রভাতেই যেন তাব চাবিদিক্ আংক্ কার ঝলসিত-চকুনৰ ভাবিল সঙ্কট!

কম্পিত শ্বীবি-দেহ আলোক নির্থি , । সর্বাদ শ্বীরময় ভয়েতে তেমতি হয় ঘুমাইয়া অক্ষাৎ অহি-দেহে দিয়া হাত অন্ধকার গৃহে ষ্থা জাগিল চমকি।

না যাইতে বহুদ্ব শুনে ঘোও নাদ উচ্চপ্ৰে আব্যু-মূখে—শেল বিল্পে যেন বৃকে— শুনিলে ডেমনি যেন চিত্তে অনাইলাৰ।

শুনিল উঠিছে স্বর, প্রবণ বিদারে— বাহি আছি আহি জীবে। নিবে নিবে নাহি নিবে কি চুন্নন্ত দাহ জ্ববে, দহে দেহ ত্তেরে স্তবে কি জ্বাকে ব্রহ্মাণ্ডমাঝে এ তাপ নিবাবে!

আর্ত্তনাদ শুনি নর আত্মায়ত্মী সনে টালল যে দিকে স্বর , হেরিল হরে কাতর আর্ত্তনাদকারী দেই আত্মাদেহিগণে। দেখিল ললাট বক্ষে "হড"—চিহ্ন লেখা দগ্ধ লৌহ শৃগাধাবে। নিরখিল সে সবাবে— নিতাক দেহের পর অফাব সদৃশ কর, অফা অবয়ব চক্ষে নিবাশাব রেখা।

তাদের নিকটে আসি শরীবী পরাণী কহিল – "হে জীবময়, আমাদেব গতি নয়, হেরিবারে তোমাদের এ হুর্গতি গ্লানি;

সে নিষ্ঠব কৌত্কের পরবশ নহি; এসেছি খুঁজিতে তার, হারায়েছি মটো যায় এসেছি মারার ডোরে বল্ধ হয়ে এই ঘোরে, অমামিও ধরেছি দেহে জীবনেব অফি!

জানি জালা, আব্যুমর, সকাপে কেমন শরীরীর সাধ্য বাহা কহ এবে শুনি তাহা বলিতে সে কথা যদি না থাকে বাবণ;

ক হ কি কারণ সবে বিক্তেব প্রায় ? কি হেতুদেহের পর এরপে নিবদ্ধ কর ? কারও পৃঠে,কারও বৃকে, কারও কটি, জ্জা, মূথ ভ্রমণ শয়ন গতি পঙ্গুর প্রথায় ?"

বৃশ্ধিলা কঠেব অবে জীবাআ-মওলী, নরে দেখি নিরিধিয়া, নেতকোণে দগ্ধ হিয়া অশুদারারূপে বেন উথবিল গলি।

কহিল, "হে দেহণা ী, জীবে যত দিন লিখ জীবনেব মূলে তথ্য শলাকার শুলে এ দগ্ধ জীবেব কথা – কেন হেথা হেন প্রধা আমাদের আত্মামর জীবন মলিন।

ছিলাম ধরণীধামে আমরা যথন ভোমারি মতন দেছে, দখা, মায়া, ক্ষমা, স্নে'ছ, না দিয়াছি ক্ৰিডলে আশ্রয় তথন,

স্থাৰ্থ-পদ লালসাতে, লোভের দচনে, অন্ধ হয়ে জীব-দেতে, দূবে ফেলি দিয়া স্থেচে, যেথা কৈয়ু অস্তাবাত সে অফে তাহার হাত নিবদ্ধ এখন, হায়, সচ্ছেল্থ বদ্ধনে।

সাধ্য নাই. আশ' নাই. খ্লিতে—তুলিতে, বক্ৰ ভদ বিকলাদ আশা মোহ শান্তি নাদ ছিন্ন দেহে ছন্ন লীবে হতেছে কাঁদিতে।" বলিখ়া উচ্ছোদে দৰে ভীষণ চীৎকাব। শুনিয়া শ্ৰীয়ী নব প্ৰবণে তুলিল কর দেক্ষণ মরম-ভেদী আর্ত্তনাদ আ্যান্-ডেদ্গী ধরাত্তলে নাহি কিছু তুলা তুলনাব।

অমরী-আদেশে এবে হুংখিত মানব চলিল হুদয় চাপি তেয়াগি দে মহাপাপী থেদপুর্ণ আয়াকুল দেখানে বে সব।

ফণেক চলিতে পথে নাদাবন্ধ পুরি উঠিল এমনি ছাণ হেন তীর অহমান মহির শরীরী জীবী; দেখিয়া বৃদ্ধিনা দেগী নিবারিলা দে তুর্গদ্ধ সুধাগদ্ধ ফুরি।

কহিলা আখাসি--"দেহী না হও আসিত, দেহেতে বা কিছু ক্লেশ যথনি হবে প্রবেশ, তথনি কহিও তাহা হবে নিবারিত।"

'বিল পুন: অগ্রসর; পশ্চাতে শরীরী বাকশ্তর মনগতি চলিতে লাগিল পথি; চতুর্দিকে নিরখিল দেখিতে অতি পিছিল, ক্ষিরাক্ত মুখ যেন রয়েছে বিভারি।

নিকটে আসিয়া আরও দেখিল মানব
ছুটিছে সে মূদ্বৎ বথা সিদ্ধ কর কথ,
বালাকারে ধ্ম তার উথলি ছুটে বেডায়
ছুটে ডুটে উঠে নিতা – নিয়ত উদ্ভব

তেমতি দেখিতে যথাপচা গন্ধময় 'স্থলরী"-অরণ্য কোলে, তক্ষ থাল বিল খোলে অপক পদের রাশি ছডাইয়াবয়।

পরশনে সে কর্মনানব-শরীরে দাপাদ মন্তক থ্ড়ে সর্বং-অঞ্গ থেন পুডে, কাতরে কহিল নর চাহি অমরীরে –

শুপ্রাণ যায়, প্রভামগ্রী, দগ্ধ হয় দেহ। সেহে না দহন সয় নিখাস নির্গত হয়, গাহি মাক্তের লেশ কর্পে যেন কাসে কেশ, স্থৃহপ্তি ফেটে যায় — ভালে যেন কেছ।

দাহ-ক্ষত পদতল, শরীর, আনন, সংযেন তথ্য বাসু! পিপাসায় তক তালু, ধূলিবং জিহবারস—না সবে ভাষণ!" বলিলা মূৰ্চ্চিত্ৰৎ পড়িল মানব। শীতল বাৰু-সঞারী নিজ খাদে মূচ্ছা হার, অমরী তুলিলা তাল, উপনাভ-জাল প্রাফ নিজ শুঠনেতে ঢাকি স্ক-অবলব।

নরে চাহি কহে দেবী—"এখন শরীরী ভ্রমিতে পারিবে হেখ। অধিন অমর-প্রথা; শীত, গ্রীম, বৃষ্টি, তাপ, সকলি নিবাবি।"

স্বাধন্ত শীতলদেহ শরীরী তথন পুন: সে মৃত্তিকা'পরে প্রবেশে সাহসভবে , অগ্রভাগে দেবী-মৃ**ত্তি**, উৎজ্ল নয়নে স্ফৃতি, ধীরে ফেলি চাকপদ কবেন অমণ।

ব্ঝিল মানব এবে সে মুৎ-পরশে, পক্ত যথা জলসিক্ত ক্ষিরেব ধাবাপুক পিচ্ছল তরল তথা চরণ-ঘর্ষে,

দেহভারে মৃৎ যেন ঘ্রিরা বেডায়।
দেবীরে সহায় করি চলে নর প্রোপবি লোহপ্রাবে সূত্র্ম ভয়ত্বর ধে কর্দ্ম পদে পদে খলে পদ দ্বির নহে তার।

বহিছে প্রবাহ এক সে পঞ্চিল দেশে কালির সরিৎ ধেন কালতর ঘুর্ণ ঘন ভীষণ তরঙ্গ তুলি বিভীষণ বেশে!

হুন্তর কান্ধার-মাঝে চলেছে সবিং , অক্স জনবিন্দু নাই কোন দিকে—মণ ঠাই নাহি বাযু তঞ্চজ্বা, বিবোর বিকট কায়া চলেছে একাকী সেই নিভ্ত সরিং।

ছুটেছে করোলরাশি ভয়ত্তর বোবে, চক্রাকারে ব্রথবর্ত্ত ঘ্রিয়া চলেছে নিতা নির্ব্বাত শ্ভেতে শক্তবিন্দু নাহি বোবে।

এ হেন নিঃশব্দ স্থান — বাযুশ্ত লোক,
আপন নিখাস-শব্দ দেহধারী নিজে তকে
বেন দূর শৃন্ত কোলে কেহ প্রতিধানি তোলে—
অবিহে ভ্বনময় বিকট আলোক!

দেখে জীব-আত্মা কত উৰ্দ্বখাদে ছুটি পড়িছে সবিৎ-অবে, ছুটিরা স্রোতের সবে ভাসিছে ডুবিছে নিত্য কভু তীরে উঠি, পিপাসা-আত্র প্রায় আবার সরিতে ভগনি দিতেছে ঝাঁপ, মুহূর্ত্ত না সহি তাপ আবার উঠিয়া তীরে লুটিছে পক-শরীরে কথনও তৃদানে লুটে ভাসিতে ভাসিতে।

gramma na arang managan n

কত আখা তীবে নীরে এরপ বিব্রত বিশ্বরে হেরিল নর হেবিল হয়ে কাতর, অসহ বাতনা যবে আয়ু ওষ্ঠাগত।

তথন সে আত্মাগণ করিয়া চীৎকার ডাকে বিধাতার নাম প্রভাবি হৃদয়ধান, বৃত্তিত তরজ বৃকে আহি—আহি শব্দ মুধে অবসর হন্ত পদ তবলে বিভার।

এবে অনন্তের কোলে শ্রুতি-বিদারণ ১য় ঘন বজুনাদ অন্তরেতে অবসাদ গভীর আবর্ত্ত-গর্ভে ডুবে আত্মাগণ।

অমনী কহিলাধীবে চাহিলামানবে—

'যত দিন স্পৃহা-লেশ রবে চিত্তে—রবে ক্লেশ জীবনের পাপাখাদ যত কাল অবসাদ না হইবে চিত্তমূলে, এইভাবে রবে।

এই সব নরাধন"—বলিয়া অমরী চলিল অনেক দূরে, মানব বিবাদে পূরে দেখিল সমূধে পুন: নেত্রপাত করি—

দেখিল শ্রেণীতে বদ্ধ আব্যা অগণন অর্দ্ধ-মগ্ন হদ্ধেনীরে বসিগানদের তীরে কধিকে অঞ্জলি করি পুত্র পৌত্র নাম ধরি মন্ত্রনে বিষাক্ত দৃষ্টি---করিছে তর্পণ!

তুলিছে সে ক্লেদিক অঞ্চলি প্ৰিয়া দিশায়ে অঞ্চ ক্ষিত্ৰে একে একে ধীরে ধীরে কাল তর্মের কোলে দিতেছে ফেলিয়া।

দেখি চমকিল দেহী,—দেখিল আবার শবিৎ-দলিল ঢাকি ছামারূপে থাকি থাকি তত শব নদ অলে ভাসিছে তরকসলে কতচিহ্ন কত স্থানে অলেতে স্বার;

বেরি আতা জনে জনে বুবিছে নিকটে, শহারো জনম ধরে কাহারো অহু উপরে কাহারো অঞ্চলপুট বৃক্ত কটিতটে। ষ্ণা প্ৰাণের কথা প্রাচীন লিখন, কাল-অজে ভাসি কালী, শবরূপে দেহ ঢালি ঘোর পচা গদ্ধষ বেহিন হৈ হিরুমর ঘুরেছিলা মহাকালে করিয়া বেইন।

সেইরপে শব হেণা ভাসে রুঞ্নদে, মুখে রোদনের রব ় ঘুরে ঘুরে ফিরে সব ছই কুল পূর্ণ করি আনাক্ষেপ-নিনাদে।

হেরে দে জীবাত্মাবৃদ করি নিরীকণ প্রতি শবে কত্ত্মান প্রতি কত পরিমাণ হৈরিয়া ধিকাবে পূবে, ত্মণা করি ফেলে দ্রে, অক্সাৎ ছিন্ন-শিব—বিকট দর্শন!

দেখি দেহী হতজ্ঞান , অমনী তথন — পবদ্রবা-অপহারী মহাপ্রাণী হত্যাকারী বোর পাপী এবাসব জবক্ত জীবন।

জিজ্ঞাসে মানব উারে—"এ নদ-উদয় কিন্ধপে কোথায় কছ্ আমায় সেধানে লহ বাসনা দেখিতে হায়, এ সরিং কি প্রথায় হেনরূপে হেন স্থানে প্রবাহিত হয়!"

"দেখাব"—বলিয়া দেকী চলিলা সত্ত্ব , উত্তরি অনেক পথ মানবের মনোরথ পূণ্ঠিকলা দেখাইলা সরিৎ নিঝর।

দেখিল নদের মৃত্যে দেখীর নির্দেশে— আহাারপী কত জন বসিয়া কিপ্তাবেমন হৈরিছে ভ্রণয়তল বক্ষ: ভেদি অবিরল বহিছে উত্তপ্ত ধারা সরিৎ উদ্দেশে।

বিদ্যাছে আংআগণ্বিদীও উবস , উগারি উগারি ধারা পডেছে কালির পাবা— ঘনতর নীলময় কটুল বিবস ,

বহিছে তেমতি— যথা ঝরে ধনিমূথে কালিবর্ণ জলধার অনর্গল আনিবার মাথিরা অসার ক্লেদ ধনি-অস্ক করি ভেদ বেগে প্রবাহিত শেষে ধরণীর বৃক্টে।

কিংবা যথা কালিনীর কৃষ্ণ জলবানি যমুনোত্তি-নগৰুকে বহে বেগে নিমু**নুথে** পডে ধরাতল দেহে কল কল ভাৰি। বদেছে জীবাস্থাকুল জম্মাননাপরে, উৎকট বেদনা রেখা ওঠ গণ্ড নেত্রে লেখা বিদারিত বকঃস্থল নির্থিছে অবিরল গণ্ডুষে করিছে পান ধারা-স্রোত ধ'রে,

বিকট বিষাদ-নাদ মৃথে মৃত্যু ছিঃ, শুনিলে তাদের অর বোধ হয় খেন ঝড় বহে ভেদি মর্মতল—শব্দ করি ভূত।

ক্ষাত্রী দে নিনাদ তনিতে তেমতি ধেন জন-শৃত কেতে বায়ু পদে কলদেতে নিনীথে প্রান্তরপরে ত্রাদিত করিয়া নরে কিংবা মুমুর্থ্র স্বর কুশ্রাব্য ধেমতি।

"কে এরা"—জিজ্ঞানে দেহী,— অনমী উত্তরে—

"অবনার পাপরূপ দয়াশৃষ্ণ যত ভূপ

দেই পাপী এই সব এ তাপ-গহররে।

হের দেখ অইথানে— পারিবে চিনিতে যত জীব নুপসাজে তাপিতা ধরণীমাঝে মাতিয়া ঐখ্যামদে ভাসাইল অঞ্চনদ দৌরাত্যা-পীড়িত নরে— স্ব-ইচ্ছা সাধিতে।

হের অই ভশ্বরাশি-আসনে যে পাপী—
আহ কংস ধরাপতি দরাশূক্ত ছন্নমতি
উৎসন্ন করিল আগে ধত্নক্লে তাপি।

নিপ্লীড়িত মগ্রাব ধক্ষ:স্থল দলি, দেবকীর মনোলুৰে লিথিয়া ভারত বুকে আপন কলত্ত-রেথা এখন বিরাজে একা এ বোর নরকে বসি—মনস্তাপে অলি।

হেব অই সাত শিশু স্বন্ধদেশে পড়ি কি বলিছে কানে কানে বিব ঢালি দক্ষ প্রাণে নেত্রকাছে যমদ্ত হেলাইছে ছড়ি,

দেখাইছে নিলাতন—প্রহারি বাহাতে সজ্যোজাত নিশু দেহ বিনালিল তালি স্লেহ হের দেখ নৌহ-পারা অননীর অনধারা নিলাতে আঁকিছে অব্ধ্ব প্রতি বিশুপাতে।

সে জীবে পশ্চাতে ফেলি চলে ছই জান; কিছু বুরে গিয়া ফিরে হেরে পরিখার পারে অপ্রেডে অন্তল এক ধুসর-বরণ; উৎকট আবোকছেটা পড়িয়া তাহায়
মহাভয়ত্বর বেশ করেছে ভূগরদেশ
একা সেই সিরিপরে আবা এক বীণা-কবে
ভাসিছে নেত্রের নীরে বসিয়া সেণায়।

বিশ্বরে জিজাদে দেখী অমরী চাহিয়:—

কোব আআ হেরি অই. দগ্ধ বীণা করে লট এ ভাবে পাপাআ লগ্নে ওথানে বদিয়া !

উত্তরিলা জ্যোতির্মনী "অচল-পশ্চাতে আমরা এখন, নর, তাই ও গিরি শিখর, দেখিতে না পাও ভাল, কিছু ফুত পদ চাল চল নির্থিবে স্ব আবোহি উহাতে।"

পার হয়ে শুক্ষ থাত শিধরের তলে ক্রমে শোহে উপনীত, অমরী সহ জীবিত উঠিতে লাগিল এবে সে উচ্চ অচলে।

শরীরী থর্মাক্ত-দেহ আবোহিতে তায়, ষে ভাগে চরণ সরে সে ভাগ তথনি কবে নাহি পায় স্থান এক দৃঢ়পদে মুহুর্তেক বেখানে চরণ রাথে ভ্রবের গায়,

নাপ। মূথে ঘনখাস চাহে দেবী-পানে। বুঝিয়া অমরী তায় করে ধরি লয়ে যায় অচল-শিথবদেশে, পাপাত্মা ঘেথানে।

অমবী বলিলা নরে, "থালি থাক দেহ এই গিরি—তন নর, উঠিতে ইহার পর শরীরীর শক্তি নাই, বিষম হৃথের ঠাঁই এ গিরি জীবাত্থা বিনা না পরণে কেহ।"

বছ কটে শিখবেতে উত্তিলা শেষে; তথন জীবিত প্ৰাণী হেরিল বিশ্বর মানি চাহিলা চক্তি-নেত্রে গিরি অগ্রদেশে,—

দেখে রাজধানী এক বিশাল বিস্তার, পরিপূর্ব ধ্যানলে, মাঝে মাঝে শিখা জগে যত পৃহ হ্ম্যা তায় দগ্ধ ইন্ধনের প্রায়-লক্ষ প্রাণি-কোলাহলে শব্দ হাহাকার,

বীণাদওধারী কাত্মা একদৃষ্টে চাহি, বিগলিত অঞ্ধারা, হেরিছে উন্মাদ-পার্থ দে বৃদ্ধি-ওরল-ভল—ক্ষণে ক্ষান্তি নাহি। হৰ্জন্ন পৰন-বেংগ কৃত্ব খাদ-বাত হাত নাসাবস্ক্রে ছাডে স্বেংগ ঘন আছাড়ে য় বীণাদও-দাক তাদিলা প্রেটর মেক কভ্ বক্ষা ভালদেশে প্রহারে নির্ঘাত।

দারণ আকেপে তার শিলা দ্রব হয়, নিছে "কণেক কান্তি, দেহ দেব চিতশান্তি পারি না—পারি না আর দাহ নাহি সয়।

বুঝি নাই ধরামাঝে— এখাগ্য-উন্নাদে—
নাকপতি হ'তে হ'লে কত সাম্য-ধৃতি-বলে
নাকেরে পালিতে হয়, কেন বলে ধর্ময়
লোকপালে ধরাতলে — বুঝেছি বিধাদে।

দুরে দাডাইল দেহী মানিয়া বিশ্বর, জাতৃর মৃত্থকে দেবীরে জিজাসা কবে— . "কেবা এই ভূঞে হেন সস্তাপ ভূজির ?"

জীবিত নরের বাণী ভনি সে শিথরে
চুইবরে জীব বলে— "কে তুমি রে এ অচলে
থবিত শরীরধারী ? তুমি কি কেহ তাহারি
মাহার পীডনকারী নূপ এ ভূধরে ?

হও বা না হও শুন—নিদম্পরাণী মানি 'নীরো' ধরাপতি— রোমের নিপাতগতি ধরার কলঙ্কণাতি—নরকুলগানি!

নিজ রাজধানীকার। জালির। জনলে, যেথ বীণাবাত করি বসিরা শিথরোপরি হরেছিছ শিথানল প্রভূজে পিয়ে গরল প্রাতে চিত্তের সাধ ধর্ণীমণ্ডলে।"

বলি, পুন: পূর্বভাব আবার ধরিল ! মন্বী-ইলিতে নর তেরাগি গিরি-লিথর পদাক গুণিয়া তাঁর আবার চলিল :

কত বন গুহা থাত এড়ারে স্বরিত ^১শনীত ত্জনার বেথানে সচল প্রোর বিবাৰ প্রাচীর সকলে, সাঁথা যেন তারি সকল স্বাস্থানার দেহ এক শুক্ত প্রসারিত।

সে প্রাচীর-তলভাগে বহিছে ভীষণ ^{ক্রের} সলিলাকার বেগবতী স্রোভোধার তীরে পাবাণের পুরী মলিন-বরণ ! অঙ্গী হেলায়ে দেবী দেবাইলা নরে পুরীয় পরিথা ভিত্তি বুরুজ গমূজ কীঠি চাহি পরে উদ্ধাননে দেবাইয়। পাপপ্রানে বলিলা—"শরীরি, তুমি চিন কি উহারে ৮

অই পাপী নর-আত্মা বিকট-আকার কৃষ্ণশাশ্ধারী ছায়া ধ্রাতে ধরিলা কায়া নিষ্ঠুর ভূপাল-বেশে, যে নাম উহার

শুনিলে এথনি তুমি ঢাকিবে প্রবণ ; হানর অকারমর— মানবের হৃদি নর বন্দের সৌভাগ্য-চোর দৌরাত্ম্য-আধারে ঘোর কেতুরূপে ধরাতলে কৈল বিচরণ।

গভৰতী বমণীর জঠব খণ্ডিলা দেখিতে জরায়্পিও জীবিত জীবের দও কবিত অশেবরূপ তুর্মনে ডুবিলা।

দেশ দেশ পাপের চিহ্ন এবে আত্মাদেহে পাৰণ্ডের হুদিতল উগারিছে ক্লেদ মল হস্ত পদ বক্ষ: শির পাষাণ-প্রাচীর স্থির কালের করাল ফণী সাধে অদু লেহে।

নড়িতে ফিরিতে ভোগ হের কি করাল। ভয়কর শলাকায়— মলা-বিন্দু নাহি ভার বিদারিত কঠতল কাদিতে নাহিক বল জীবিত মৃতের মুণা চিহ্ন চির কাল।

চিন কি উহারে তুমি ?" বলি আআমেরী চাহিল দেহীর মূথে; শরীরী নিধাদি তুথে বলিল,—"দিরাজুদোলা অই কি চিন্নরি ?"

ইনিতে হেলাহে শির অমরী চলিল , চলিল তাহার সনে দেহী নিরানল-মনে দূলি ক্ষিরাক্ত পক হনুরে কত আতঙ্ক কতুই উল্লেখনেরে উথলি উঠিল।

দ্রেতে দেখিল দেশ জলাশরমর; দ্র হ'তে দৃশ্য তথা বেন পঢ়া পত্র-লভা হত্তর তুর্গণ গর্ভে বিছাইয়ারয়।

বলে বথা ভাজ-শেবে-রৌজ-ভথ জলা বন-পঙ্কে বিনির্গত তুর্গদ্ধ বায়ু দূখিত বরষা ঝতুর ভলে ছড়ারে চৌদিকে রঙ্গে নগরে নগরে ভোগে শমনের ধেলা। দেইরূপ দে চ্**তা**র চ্র্নম যুজির। কত ভদ্ধ লগা বিলে বনবর্ণ পদ্ধ-নীলে ছুটছে দ্বিত বায়ু চ্র্নদ্ধে পৃতিরা।

স্থানে স্থানে তীত্র-ফট তৃণগুলাপ্রার
ফটুল কুশের রাশি কর্মিনতে চলে ভাসি
ফ্রোগ্র ফটকময় পচা লতা-পত্রচয়
কোনধানে উর্জুশির—কোধা বা স্টায়;

কাছে আসি হেরে নর কাতর অন্তবে, পচা লতা-পত্র নর, সকলি জীবাঝানর পত্র-লতা-গুলার্লপে ললাশর-পরে।

গড়ারে গড়ারে চলে ধরি গলে গলে, কেহ বিম্পিত হর, কেহ অক্তে বিম্পির, ছিল্ল করে প্রস্পর বিষ্ণ চূর্দ্ধনোপর আব্যারাশি—বালু যেন লুটে দির্দ্ধলে।

"ধরাতে এত কি পাপী ;" ৰিক্সাসে শরীরী "দরাশৃষ্ণ এত জীবী ?" উত্তর করিলা দেবী— "হের, দেধ অইখানে এই দিকে দিরি;

নরাধম জ্রপদাতী পিতৃদাতী নর, ভাদের তুর্কশা দেখ. দেখ, দেছি, দেখ শেখ, অরি নিজ নিজ পাপ ভূগিছে কি ঘোর ভাপ," এত বলি শোভাষয়ী হৈলা নিক্তর।

দেখে দেহী দ্রমে কোথা স্বাস্থাগণে টানি ভীম ক্ষম বনচর গুল্ক ভাগে ধরি কর, ক্ষুরধার কুলোপরে---পদাবাত হানি।

কোথাও গহুর-গুলো জীবাত্ম। বেড়ার শিশু-প্রাণ বীধি গলে কাদিতে কাদিতে চলে কোন বা উদ্ধত প্রাণ আধানি তুলি কাডান ভীরবেগে হানে নিত্য আধান গলায়।

কোনধানে পাত' বেন রজকের পাট, জাব্যাগণে ধরি তার বমদ্তে আছড়ার ; কেহ রজ্মু বাঁধি কঠে কররে বিনাট।

এইরপে কতক্ষণ জুগি ছংগঝাদ, উন্মাদ আকৃল হিলা কৃষ্ণ নদ-তটে পিরা কাঁপ দিলা পড়ে তার আবর্তে বেরি বেডার মূথে হাহাকার শক্ত আক্তরে বিবাদ। একান্ত উৎস্থক-চিত্তে নিকটে আসিয়া দেহী ধীর সংখাধনে কহে মাজা কর কনে "কে ভোমরা কি পাপে এ তুর্গমে পড়িয়া ?"

নরের হৃঃধিত খর বছকাল পরে শুনিয়া পরাধিগণ . মৃগ্ধ হয় কিছুক্ষণ পরে কাছে ছুটি তার, ঘূচাতে ক্ষণির ভার আহারস্ত করিল কেহ আক্ষেপের ফরে।

অকসাৎ সে হুৰ্গমে হুরস্ত ঋটিকা, বহিল কোথার হ'তে জীববুন্দে পথে পথে, উড়ারে চলিল বধা লুপ্তিত গুটিকা,

চলিল উড়ারে ঝড হেন ভীমবেগে হেরে নর গভিহীন, পাতৃর মুধ মলিন, শুকাইল কঠতালু মুধেতে ফেটিল বাণ উটিল চীৎকার কবি—স্বপ্নে যেন জেগে।

শোভামরী মৃত্ত্বরে আখাসিল তায়, কহিলা—"এ আত্মাসব এবে করে অক্তর বে তাপ না ভোগে কভূ থাকিয়া ধরায়।

পন্ধী-ব্যবসায়ী এরা—হীন অর্থলোডে বংশের দোহাই দিয়া নারীর সতীত্ব নিয় ব্যবসা করিত এরা অহণ্য অকোতে !*

অমরী এতেক বলি নীরব হইল। কালিতে কালিতে নর যুড়িরা যুগল কর— "হে দেবী সদর হও শীল্প স্থানান্তরে লঙ সুহিতা আমার কোধা"—সুংধেতে কহিল।

ষষ্ঠ পল্লব

শরীরি-বদনে আদিত বচন
তানিরা অনবী তার ;—
"প্রাব প্রাব বাসনা তোমার
অন্তথা নাহি কথার,
দেখিবে নন্দিনী কিরপে তোমার,
দেহ উদ্যোচন করি,
কি গতি লভিলা করে কিবা লীলা
কি পুণ্য-পরাণ ধরি।

ভ্ৰম এ ভূবেন আর কিছুকাল: বাসনা জনমে মম. দেখাই তোমারে এই সৰ পুরে প্রবেশের কিবা ক্রম। मिथारे जोगाद (थिन छव-८थन). কিরপে জীবাত্মা শেষে আসিয়া প্রবেশে কোন পথ দিয়া এ সব আত্মার দেশে। ধর্মকপীষম, কিরপ আনেদেন, কি প্রথা বিচারে জার. কিরূপে নরকে পাঠান পাপীরে সহিতে পাপের ভার। मिथित नम्रान, नम्रान कथन ७ মানৰ না দেখে ৰাৰ--ব্ৰহ্মাণ্ড-কেন্দ্ৰেতে বসি ধৰ্মবাজ বিরাজে কি প্রভার। কত কি অপূৰ্ব্ব দেখিবে সেখানে বিশ্বরে প্লাবিত হয়ে. দেখিতে বাসনা থাকে যদি বল, यांहे स्मथा एकाभा नस्त्र। কিন্তুকহি শুন তুরুহ ভীবণ পগন-গছন সেই. পশিবারে পারে দে জন সেখানে ভীক্তা বাহার নেই। এ হেন সাহস ধর যদি চিতে কহ তবে গোহে চলি. এত যে আগ্ৰহ দেখিতে এ সব এবে কোথা গেল গলি? সে উৎসাহ আশা কোঝা বা এখন গ काथा वा तम मत्नांत्रथं ? যচকে দেখিবে পরকাল-গতি বিধি-নিরূপিত পথ ? জীবন থাকিতে প্রকাল-ভেদ ৰে জন ভেদিতে চায়. প্তল-শহীরে থগেন্দ্রের বল ধরিতে হইবে তার।" নীরব অস্ত্রী এতেক কহিয়া: মানব মনের তুপে চিস্তি ক্ষণকাল কহিলা তথন লজা-অবনত মুখে---

"অরি জ্যোতির্মরি ধরি সে সাহস এ ৰুড শরীরে যাহা পারে ধরিবারে, না কাঁপি অস্তরে, অসাধ্য নহে গো ভাছা। কিন্ধ বাহা দেবি অসাধ্য মানবে দে সাম্প্য কোণা পাব ? পাপীর নির্দ্ধে পাপাতা হটয়া কেমনে নির্ভরে যাব ? (पिथिक (य नद मत्न इ'तन चांत হিয়াত্রুত্র করে, শিরাতে শিরাতে প্রচণ্ড আবাতে বেগেতে ক্লধির সরে: লোম-ছর্যণ হেন ভয়কর নারকী আত্মার গতি, অবজ্বা নিয়ম বিধাতার হেন. চেতনে হেন তগতি--कन्द्रवत्र काँद्रम कौवदन उक्तनन. ক্রন্সন মরিলে পর। হেরিলে এ গতি হে অমর-বালা. তাসিত কে নহে নর ? তথাপি দেখিব দেখিবে যা কিছু, অভ্যাস নরের বল, সে বল হাদয়ে লভেছি কিঞ্ছিৎ জ্মিরাএ স্বস্তল, তুমি গোষ্পন সহায় আমার, ক্ল নহি আমি নর---মারে রক্ষা করে যে শিশু-সন্তানে থাকে কি তাহার ডর ?" अनिया अमरी ;-- "(इ महीत्रशाहि, ভাৰ নাহইও মনে. পারিব রক্ষিতে শরীর তোমার প্রবেশিয়া সে গগনে। কিছ চিত্তে তব বহিবে যে স্লোভ পরাণ ব্যাকুল করি, অমরী বদিও, সে স্রোত-বারণে শাম্প্য নাহিক ধরি। আমিহ নিশ্চর মলেস দমনে মাহুষেরি অধিকার; ক্দর-রাজ্যেতে, শাসন রাথিতে সহায় নাহিক ভার।

আপনারি তেকে আপনি বিজয়ী, व्यक्ती दुर्जन (यहे. তর্বল পরাণে শমভা সাধিতে ক্ষমতা কাহারো নেই। কি অমর নর, এ প্রথা স্বার, उन रह भतीती आंगी; প্রকাশ এখন কি বাসনা তব এ কথা নিশ্চয় মানি ৷" কহিল মানব, "হে সুধাভাষিণি, কেন সুধাইছ আর, যা ঘটে ঘটক কাঁতক পরাণী যাব সে ত্রন্ধাত্ত-পার। সামান্ত পণেতে তহু খোৱাইয়া---প্রাণ দিতে পারে নরে. নর হয়ে আমি এ পণ সাধিতে নারিব ভয়ের তরে গ **ठल, ८मर्वि, ठल, ८कांथा न**टम गांदव, সাহদে বেঁখেছি বুক, দেখি অন্ত ভার জীবনেব পাপে জীবাঝার কত ছখ।" চলিলা তথন দেহীরে লইয়া অনন্ত গগন-মাঝে, অমর স্থলরী কিরণ প্রপারি किंद्रिश (यन विद्रांदक ! উঠিতে লাগিল কতই যোজন গভীর শৃক্তেতে পথি, নীল নীলতর গাঢ় স্ক্র জড কত বায়ুস্তর মথি। থেলে চারিদিকে অধঃ উর্দ্ধ পাশে গড়ায়ে ছড়ায়ে সেথা, মক্ত-সাগ্রে প্রন-হিল্লোল সাগর-উন্মির প্রথা। উঠিতে লাগিল যত স্বাহালে কক্তলে তত নরে, মুত্ৰ কৰ্ষণে অমর-বালিকা যতনে চাপিয়া ধরে। দিয়া নিজ খাস-প্রখাসে তাহার मृत्त्राञ हिनन (परी ; মাতৃ-ক্রোড়ে যেন চলিল মানব অপূর্ব আনন গেবি।

(मबिएक (मबिएक फेट्रि) (महशाती বিশ্বয়ে বিহবল প্রাণ. পথচিহ্ন নাহি অভ্ৰান্ত গতিতে গ্রহ তারা ভাষামাণ । কত দিকে গতি করে কত গ্রহ. কতই ভারকা ছোটে, অনন্ত প্ৰাৰণে জ্যোতিৰ্মালা যেন कृतवात्राज्ञत्भ दक्षांदि ! ছোটে পিঠে পিঠে গুৰকে গুৰকে ८क्ट शीटत अका शांत्र, অদবে অস্তবে বিচিত্র অয়নে বিশাল অনন্ত-গায়। কেহ না বাধিছে কাহারো গমন চলেছে অয়ন কাটি. পূৰ্ব গোলাকার কাচডিম্ব প্রায় গ্ৰহ ভাবা কত কোটি। ছটিতে ছটিতে নিজ নিজ পথে निनान कतिरह मद्द, পরিপর্ণ করি সে গগনদেশ মধুর মৃত্ল রবে। দে মৃত নিকণে নিজালু মানব মুদিল নয়ন-পাতা, স্থপনে যেন বা উডিয়া চলিল শুনিতে শুনিতে গাথা। অমর-সুন্দরী জ্যোতিঃ পিণ্ড-পথ এডাবে এডাবে ধীরে, **ठिनन (उमिन अद्रात्म (समिन** कित्रराव द्वश किरव। ভেদি সে দকল বুত্ত-মধ্যভাগে সুর্য-জ্যোছনা ছাডি, প্রচণ্ড নির্বাত কিরণ-সাগরে প্রবেশিয়া দিলা পাডি। তপত-কিরণ গগন-গহনে व्यमती खादतन (वह, चान अवेदन यन देन देन देन অসহা উত্তাপ দেই, সুপ্ত মানৰ কপোল কপাল মৃত্ল পরশ কবি, বক্তু নয়ন নাসিকা অগ্রেতে থেলিতে লাগিল সরি;

কৰ্ণ-কুহরে খন খন নাদ ঘাতিতে লাগিল ধীরে. দর-ধাবিত ক্ষিপ্র-চালিত নিনাদ যেমন তীরে। গ্রীম ঋতুতে ব্রত্তী-আবৃত ছাড়িয়া কুঞ্জের ছায়া, দথামক্লতে পডিলে বেমন উত্তাপে তাপিত কায়।। তীক্ষ কিরণ হিল্লোকে পরশে निनां व्यवस्य नत्र. স্থপ্ন তেয়াগি চমকি জাগিল কঠেতে কাতর স্বর । স্বিশ্ব-ভাষিণী অমরী তথন কহিল তাহার কানে, "উণা-বদনে আবর বদন বেদনা পাবে না প্রাণে।" नीय भवीती अमती-खर्श्वत ঢাকিল বদন গ্ৰীবা, স্থিরদষ্টিতে দেখিল চাহিয়া অসূর্য্য-প্রভার দিবা। সাদ্ধা-গগনে ঢলিয়া পশ্চিমে फुविट् यथन त्रवि, यर्गवद्रम, किद्रग-मांगटक, অনল যেন বা হবি। দীপ্ত প্ৰভাতে তথন যেমন উডে পাবাবত-সারি. মঞ্চলায়ে উড়ায়ে শৃষ্ণেতে, করিলে গগনচারী। স্কু চিকণ ঝকিয়া তেমতি আ'বাশ আচ্ছল করি, मिथिन मानव छेर्क्त इत्रदन জীবাত্মা পড়িছে ঝরি: চক্রগতিতে ঘুরিছে সতত সে ভীষণ ব্যোমস্তর, সঙ্গে ঘুরিছে কিরণ-সাগর অনন্ত অম্বন'পর। দীপ্তি-জলধি অজেতে মিশিয়া কোটি জীবাত্মার কায়া, ন্টিতে দৃটিতে উর্শির আগাতে উড়ে যেন ধূলি-ছায়া!

প্ৰাস্ত শিথিল গতিতে অমনী कित्रग-मागदा स्थितः যোজন যোজন গভীর প্রদেশে भिन (म नव (केनि। স্থির ফটিক সদৃশ আকাশ পরশি ছাড়িলা খাস : কক্ষ-গ্রথিত মানব-দেহীরে রাখিলা তাঁহার পাশ। পূৰ্ণ পীযূষ পূবিত বচনে কহিলা তাহারে চাহি. ত্রন্থ নিমিথে দেখিল অমরী नद्रत्र विदवक नाहि। সর্প-দংশিত পরাণী সদৃশ মানৰ পড়িল ঢলি. নীল-বরণ-মণ্ডিত বদন কম্পিত কঠের নলী। বাক্য বিহ্বল বিশ্বয়ে পাগল ক্ষারিত নেত্রের পাতা, **पृष्टि-विशीन नवन-**गूशन কপালে ষেম্ন গাঁথা। স্থস্থ করিলা নিমেষ-ভিতরে अव्रवस्त्री नद्र। অস্তৰ্কনে চেডনা লভিয়া মানব কহিলা পরে--"হে স্থরস্করি, কর গোমার্জনা इर्कन मानव-चाँथि, এ আলো উত্তাপ নারিফ সহিতে চক্কুর মণিতে রাখি। হেরি বহুক্ষণ নিরীক্ষণ করি হইমু অক্ষের প্রায়, এ কি অভূত ও গো সুরবালা বিশ্বয়ে পরাণ যার।" किशा अभन्नो,—"िहस्रा नाहि आत সুস্থ হও এবে নর, প্ৰশান্ত এ দেশ প্ৰশান্ত যেনন অহিলোল সরোবর। দেখেছ মরতে ঝটিকা বেমন সহস্র বোজন ছেরি. चूरत रचांत्र रवरंग रमम इत कति, প্ৰাণিকুল শুৰু হেরি।

ফেলি কৃত্বখাস চলিল শরীরী মধ্যস্তল তার অচল অটল ধৰ্মের আসন যেখা, প্ৰন প্ৰশাস-হীন, বোজন অন্তরে দাঁড়ায়ে অচল সৌর-বিশ্বমাঝে এ কেন্দ্র তেমতি এ হেন জনতা সেথা। প্রশাস্ত সকল দিন। (मरी करह "नव, शांक वहें हारन মধ্যেতে ইহার সঞ্জন অবধি কি হেতু সহিবে ক্লেশ ? স্থাপিত মহতাসন, নিকটে পশিতে, এইখানে থাকি ধৰ্মবাজ-বেশে শমন তাহাতে সফল হবে উদ্দেশ। চল পাবে দরশন !" এত পরিষ্কার কিরণ এথানে विन चार्श चार्श श्रृष्ट्ववनना অস্থানয়নে তব শোভামরী ধীরে বার; বিনা অবরোধে হেরিতে পাইবে ভাবিতে ভাবিতে পাছে চলে নর এত দ্র হ'তে সব।* ক্ষটিক মণিশিলার। অমর-স্থলরী বাক্যেতে শরীরী অবঙ ধবল মুকুরসদৃশ নির্দেশে তাঁহায় হেরে क्विक हो मिक्सह. বিচিত্র আসন, জীবাত্মা-সাগর তুহিনের রাশি চারিদিকে ভাসি চারিদিকে যেন খেরে বেন বা ছড়ায়ে রয়! জিনি শ্বছ কাচ, ফটিক মাণিক (मथाटब (मथिटब अमत्री मानव রচিত অপূর্ব্ব পীঠ চলে কুতৃহলী হয়ে, ঝলকে ঝলকে উছলিছে আভা বেতে কিছু দূর অবনী-বিহারী আক্ষি নয়ন-দিঠ দেখিল শিহরি ভয়ে— ব্ৰহ্মাণ্ড-কেন্দ্ৰেতে নিবদ্ধ আসন ভীম দীৰ্ঘাকার ছায়ার আকৃতি আদিকাল হ'তে ধীর অশরীরী প্রাণী কত, लाटक द व्यवादन वथा कामीधाम ফিলিছে ঘুরিছে তম্বিনীময় ত্রিশ্ল শ্রেডে স্থির আরণ্য-ভরুর মত। ইন্সাদি প্রভৃতি ত্রিকোটদেবতা দেহ অন্ধকার, কপালের তটে তুলিয়া মন্তক'পরে দেউটা ষেমন জালা, ধরেছে আসন সহাস্ত বদনে খুৱে বেন ভাটা এক চকু-ছটা জুড়িয়া যুগল করে মুখে শব্দ হলা হলা। जानन-जेलद्र मिनम् दिशी, দেহধারী নরে হেরি জতবেগে স্থাপিত উপরে তাঃ চতুদ্দিক হ'তে যুটি, অন্তত গঠন মহা তুলাদও শভ শত জন শমন-কিকর সর্ব্ব-মান্যস্ত-সার নিকটে আসিল ছুট। উৰ্ণনাভতৰ সদৃশ স্ত্তেতে কেহ কেহ ভার হুহুঙ্গার নাদে লম্বিত তুলার ধ[া] किटिएटम ध्रति नद्द, कुहे मिटक रवन कुहे शूर्वीम করিল উভাম শৃক্তেতে ঘুরারে তুলিছে হয়ে প্ৰকট ফেলিতে প্রভা-দাগরে। ক্ষণ নহে স্থির উঠিছে নামিছে তথনি অমরী নিবারি তাদের নিয়ত সে ধটব্য. জানাইল মনোরথ, দক্ষিণে পুণ্যের বামেতে পাপের অমর-বালারে কথনে চিনিয়া মান-নিরূপণ হ^{রু।}

বমদৃত ছাড়ে পথ।

একে একে পাপী আসন-সমীপে কাঁপিতে কাঁপিতে আসি. আপন বদনে আপনি বলিছে নিজ নিজ পাপরাশি। **शीर्ठधात्री त्वय हेन्सानि बाहात्रा** বলিছে পুণ্যের ভাগ, তখনি আপনি নামিছে উঠিছে চন্দ্রাকার তুলাভাগ। ানদণ্ডপরে স্থির দৃষ্টি করি প্রস্রুত হেন. দি ধর্মরাজ, ক্টিক-আসনে निवक त्राहर एवन। চলার্দ্ধে বছাপি আত্মানর প্রাণী পাপ অংশ কোন তার, র কি বিশারে গোপন-মানসে নাকরে মুখে প্রচার; হসা তথনি সে অপুর্বা যন্ত্রে তুই ধট হয় স্থির, লে তুলাদণ্ড: অথণ্ড বিধান হার রে কিবা বিধির ! ने निक् इरेट इहि ऐर्क्षचारम তথনি শ্যনদূত, থে "হলা" ধানি প্রহারে এমনি পীড়নে অহির ড়ত। ানিতে বাসনা ফিরে চাহি নর বাক্য নিঃসারিতে বার. नक उर्छाध्यत चत्रुमी हाशिया व्यवदी निवादत जात्र। নঃ পূৰ্ববং ছেরিল শরীরী তুলাগট উঠে নামে, লকে পলকে কন্ত আত্মানর প্রাণী ফিরে ডানি বামে। ত বে ব্রহ্মাণ্ড খুরে চারিদিকে গ্ৰহ ভারা খণ্ড হয়, াটলে আসেন নাপশে নিঃস্বন (म (म्म निःमक तत्र। परमय-मृत्थ, मात्य मात्य समू অতি মৃত্তর খরে,

क्यांक इहे, जारम्य बागारण,

প্রতি আত্মা-মানপরে।

পাপ-পুণ্য-মান এক্লপ বিধার্মে, সেথা সমাধান হ'লে. ৰমদত ৰত, পাপিবুন্দ লয়ে, পরিখা বাহিয়া চলে। মরে লয়ে দেবী পরিখার তটে গিয়া চলি জভপদ. কহিল—"হে নর, স্থূল-নেত্রে হের , **এই বৈতরণী নদ:**" দেখিল भंतीती, (ध्रा-छती कछ. কুল-ভাগ যেন ছেয়ে, প্ৰতি তথা পৃষ্ঠে ৰমদ্ত এক, দাড়ারে তরীর নেয়ে। অতি কৃত্ৰ তথী বৃহৎ তথাৰু, বৈতরণীতীরে মত. এ ভব-ভিতরে, তুলনা তাহার, নাহি কিছু কোন্মত। নিম্বন চৌদিক, আকাশ প্ৰাৰণ, হেন শক্ষীন স্থান, চকিতে মুহুর্ত দাঁড়ায়ে দেখানে. উড়ে শরীরীর প্রাণ। मौत्रद आञ्चाता. উঠে मोकांशदत, নীরবে শমনদূত, (थम्। निम्ना हरन, देवज्यती-करन, কেপণী ফেলি অন্তত। অমরী-ইন্সিতে কর্ণধার কেহ. বুহৎ ভরণী বাহি, निकछि वानिबा, ताबिन मोहाद्य, বিশ্বিত নয়নে চাৰি; মুছল নিখন প্ৰমে ধ্যেন. यथन (कछकी-कारन, বসন্ত-বারতা, গোপনে শুনার, ভেষতি অস্টুট তানে--व्यवती वृक्षांद्व, भगन-किइटत, मानदव नहेबा धीदब, তরণীতে উটি বাহিগা চলিল. देवजबनी-ममी-मीदब । কত নিশি দিবা, ভন্নী চলৈ বাহি, কত গ্ৰহ কত তারা, नुत्र मुख्नभरतः, छेठिन फूरिन, যেন ভষোমণি-ঝারা।

উদ্দেশিত দেশে উত্তরি নাবিক. ভরাকু করিল স্থির, অমরীর বলে, তরণী ছাডিয়া, মানব লভিল ভীর। (मिथिन (मर्थात्म, भवानी भूक्य, দাঁডাইয়া মহাকায়, ধবল কমল, শিরেতে বেমন ধবল শক্তের প্রার। বিশাল ললাটে, অন্ধিত তাহার. সহস্ৰ কৃঞ্চিত রেখা. को वांचा-छेन्त्रिव, मधाञ्चल रवन, रेमनांक मांडांदा अका। বামদিকে তার, স্থতীক্ষ কঠার মৃষ্টিতে রাখিয়া ভর, হেলিছে কখনো, উকু হ'তে ঝরে देवलवनी-मधी-यव । সে মহাপুরুষ, দীড়ায়ে এ ভাবে, मिक्किनिक्टिक (मृद्धः জীবাত্মা ধরিয়া, অনস্তে ছড়িছে, উর্দ্ধে তুলি একে একে। যে গ্রহ নক্ষতে, যে পাপীর বাদ, (महे मिरक नका कति. অতুলা বেগেতে, সে মহাপরাণী, নিক্ষেপে পরাণী ধরি। স্থবির বিশীর্ণ, মুবক মুবতী হায় রে কিশোর কত. কুৎসিত, সুন্দর, ধনী, মানী, জানী, মহীপাল শত শত, নিক্ষিপ্ত এরপে, ব্যোম-গর্ডদেশে, ঘুৰ্ণ প্ৰজাসিকু ৰাষ, ष्यांष्ट्रांद्रल-श्रूट्थ, ८१ क्रम्बन-श्रुवि হাহারব বাতনার -পশুর(ও) প্রবণে, পশিলে সে খেদ. স্থাস্থির নাহিক রয়, त्म त्थम छनित्म आंगमुक अछ, नावादना विमीर्न हम । স্থরবামা-স্থী, নরের নয়নে, ঝরিল অজম ধারা, বিশ্বরে হিমাস, গওদেশে যেন, ্নিবদ্ধ মুক্তার ঝারা।

অমরীর(ও) আঁথি বাপাধ্যে খেন, देश किছू आंडाशैन, নরে চাহি দেবী মুচল নিখাসি কহিলা বচনে ক্ষীণ---"হে অচলবাসী কিরণ-সাগরে विन्तृ विन्तृव कांबा, নির্থিলে বত, সেই রেণুরাঞি এ হেন আতারি কারা।" "ভেবেছি তা আগে" কহিলা মানব "কহ গোজননি শুনি: এ মহাপুরুষ আ আনুকি অমর কহ কে দাভাৱে উলি ?" "মৃষ্টিমান হেথা আদিক্ষণ হ'তে चनानि लागैन छानी:" কহিল অমরী "কাল ওঁর নাম" পীয়ম-পুরিত বাণী। হেন কালে নর হেরিলা শক্তেতে সে মহাপুরুষ-করে, পরম কুন্দর নর-আবা এক নিক্ষিপ্ত অনন্ত ভারে. নেহাবি নিমিষে স্তর-কল্পা পানে চাহিলা উৎস্ক হরে. বঝিয়া অমরী ছাড়িলা সে দেশ চলিলা মানবে লয়ে।

সপ্তম পল্লব

জমরী মানবে লবে নামিল তথন; ৰূপতের কেন্দ্র ছাডি শৃক্তমাবে দিয়া পার্চি ভিন্নরূপ পাপলোকে করিলা গমন।

আকাশের বেই থণ্ডে অট্টালিকাকার পঞ্চ সক্ষত্তের মিল শোভি গগনের নী^ট দশমী ভিথিতে যেথা চল্লের বিহার ,

পাঁচে একে একে পাঁচ—মিলায়ে কিব[্] নিশীধিনী-শিবোপরে স্টিকণ ঝারা ধ[া] আনন্ত কোলেতে বাহা দেৱ দরশন; মধা নামে তারালোক —প্রবেশি ভাহায় নবে নামাইল। দেবী , স্থশীতল বায়ু সেবি দেব লোক-বাহিরে দেহী শরীর জুডায়।

শীতল হইলে পরে অমরী মানব প্রবেশিল গওঁতলে, দও তুই কাল চলে, গোধুলি আবালোকে বেন—বিমর্থ নীরব।

কিছু পবে হেরে দ্বে উন্নত প্রাচীর, হেরে মনে হয় হেন, লৌহের প্রাকাব যেন নীবব শৃক্তেব কোলে তুলেছে শবীর ,

নিবাবিছে কিরণের প্রবেশ দেথার, গোন প্রহরীর বেশে, বিরাক্তিছে ঘোর দেশে কালীর বরণ অন্ধ কালেব মলায়।

ত্ই দিকে ত্ই বার—প্রশন্ত ভীষণ কুফ-ম্ঠি ভয়ত্তর শত শমনের চর রোধি প্রবেশের বার কবিছে ভ্রমণ।

পশিছে তাহাতে যত আক্মাময় প্রাণী ম্থবর্গ লোহশল। তপ্ততৈলে যেন জ্ঞালা অংশ বিধি তাহাদের কহে ঘোর বাণী।

জ্যোতির্মন্ত্রী চলে আগে—পিছে পিছে নব, মাসিয়া হারের কাছে প্রথবেশের পথ বাচে কৌতুকে নিকটে ছুটে যত যমচর।

অপূর্ব মধুর বাণী অমরী-বদনে বিশে হয় শীতল, কুডান্ত-কিকরদল চমকিত-চিত্তে চাহে দেবীর নয়নে।

ষর্গ শোভাকর আভা চারু নেত্রতবে বি স্লিগ্ধ মনোহর নেহারি শমনচর পথ ছাড়ি তুই ধারে দাঁড়ায়ে সকলে।

ভিতরে প্রবেশি নর নির্থে আবাকাশে নবিড় জনদদল বিন্দুমাত্র নাহি জল গর্জিরা গর্জিরা থালি উড়েড উড়েড ভালে।

নিদাবে দ্বৌত্তের ভাবেশ ফাটিলে বেমন বনীতে ক্ষেত্রকর সেইজপ দেত্রমর চারিদ্বিক্ কক্ষেবেশ---নীরস-দর্শন। হেন কক কেত্ৰতলে পশিলা তুলনে , কুজ ক্তুত ক্তৰুদারি হেরিলা শাখা প্রসায়ি পিশাসাতে ফাটি বেন চাহিছে গগনে।

হেরিল। কতই লতা-কূপ সে কাস্তারে শুক্ত শাধা শীর্থ নাধা বিনা বাতে ঝরে পাতা অবাপনা হইতে নিত্য শোণিত উগারে।

দ্র হ'তে লক্ষ্য করি তক দে সকল বিক্ষারিত ছিলা'পর বদায়ে স্থতীক্ষ অব, ভ্রমে কত ভষ্চারী দলি দলি ক্ষেত্রতলে;

শক্ত-দেহ নরাকৃতি— কটিব উপরে. পদপুক্ত শব-প্রায় বড়ের গতিতে ধায় লভা গুলু কুপ তকু বিদ্ধ করে শরে।

ক্ষত অঙ্গ সে সকল বিবাদে তথন মহুৰ্য-ক্ৰেন-বৰে ফুটিলানিনাদ কৰে, শৱ সকে শুক অুকুঝারে যতকণ।

স্থানে স্থানে থমন্ত প্ৰান্তর খুঁড়িয়া বেড়ার বিকট আঁথি আঁথারে বদন ঢাকি অকার সদৃশ করে খনিতা ধরিয়া।

অমরীর দিকে নর ব্যগ্রচিতে চার, ধীর সংঘাধনে তাঁর কছে—"দেবী, কি হেখার কারা এরা হেন বেশে কাঁদে এ প্রথার ?

কেন বা কালের চর ওরণে খনন করিছে এ সব কেত্র ?" অমগী প্রশাস্ত-নেত্র চাহি মানবের দিকে কহিলা তথন—

"গুপ্ত কামে বাহাদের আকাজ্ঞা-প্রবাহ বহে হ্রদরের তটে সংঘটন নাহি ঘটে এ সব তাদেরি আত্মা-সহে পাপ-দাহ।

মৃত্যুচর হের ৰত করিছে ল্রমণ, ফুটাতে অব্যুর বীজে বে বাহার নিজে নিজে খুড়িছে কেলেরে তল--করহ খাবণ--

প্রোধিত এ ক্ষেত্রতলে প্রাণি-স্বান্থা কত পোড়ে নিত্য তাপানলে, অলৌফিক বিধি-ধলে স্ক্রিত হয় পরে বতা গুরু মত।

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

ক্ত কটি পণ্ডলে অমিলে বেমন স্কালে লোমাঞ্ছর মানবের পেছমর সহসা ডেমতি হয়, ওনে সে বচন ;

শ্বীরী সে স্থান ছাজি অন্তরে দাঁড়ার। অমরী মধুরতর বাক্যে করে—"প্রান্ত নর, সর্কটাই এইরূপ, সরিবে কোথার ?"

"ৰাই হোক অস্ত ছানে চল, দেবি, চল"
মানব কহিলা ভাগ, জতপদে তৃজনার
দেকেত্র ছাডিয়া পশে অস্ত কেত্রতল।

"এই দিকে ২ে শরীরি," অমরী কহিলা, "দেও চাহি ক্ষণকাল, তুংধ তোতো কি বিশাল পদ্বিল-পরাণ যত অসতী মহিলা।"

অমরীর বাক্যে নর হেরে অনিমিরে; নেখিল প্রবহীন কত শুদ্ধ তরু ক্ষীণ শাধা তুলি শৃক্ততেল উঠেছে চৌদিকে।

"নির্ধিয়া দেখ নর—হও অগ্রসর, ভবে এর তথ্য পাবে" বলিয়া স্বিতভাবে রক্ষ-সরিধানে দেবী স্বাইলা সম্বর।

দেখিলা শ্রীরী সেথা—শুশানে বেষন চিতাগ্মে সমাজ্য চিতাতাপে দথবর্ণ শাক্ষনী থক্ষ্র তাল—তেষতি দর্শন।

গুড বৃক স্থানে স্থানে প্রশৃষ্ঠ শির, গুঙ্কুল শাথাদেশে বলেছে করালবেশে পক্ষীর পুরীবে বৃক ক্ষর্ব্য-শরীর।

নধে নধে বিদ্ধি শাখা বসি গুঙাবল টিবাইছে ধীরে ধীরে চঞ্ দিরা চিল্লে চিল্লে ে অন্ধ শাখা শুবিশুছে যবি গল্ভল।

পড়িছে অধ্য বেংগ শত শত থারা— চুবিছের থারা হেন কাঁপি কাঁপি রুক্ত খেন ব্রিক্টিপ সংক্রীপ কার্য কান্তার-চারা। ডখন সে সব তক করিরা ক্রেম্মন , ফাটিছে বিথও হরে হেরিরা পুচ্ছেতে ः বিকল- শের ভাব করিছে ধারণ।

তাপিতের ঘোর অর বদনে স্বার আবাগাণ একে একে জীবমর বৃক্ধ কের বাহিরি প্রকাশে জুংগ চিতে যেবা যাত

আমরী কহিলা—"নর, গুধ হের যত এ হেন কদর্থা-বেশে বসি উচ্চ শাধানে পক্ষী নহে ও সকল—পক্ষিরপগত।

শমনের ভীমচর রাক্ষণ উহার।।" অক্ত হরে চাহে নর গুরুত্বপী নিং ১ স্থনে চীৎকার ছাডি উল্লভ ভাহারা,

পাধার ঝাপটে টানি গুডি ক্ষণে ফার্চ চঞ্তে প্রহার করি ক্রধার ২০০০ বিদীপ বৃক্তের মাঝে ফেলে স্বাহাগাে

শ্বমনি বি২ও তক দাড়ারে আরার উঠিরা পূর্বের মত জীববুল দ নিদারণ নিপীড়ন সংহ পুনর্বার ;

সে সৰার মাঝে নর হেরে ছই জন, অংশ্রুম গণ্ডতল জীণ-নীর্ণ কে: জীণ বরে বলিতেছে জাতর বচন-

'কে বিধাতঃ কেন আর—মরণ কোণ্ট এ পরাণে নাহি কাজ ধরাও গুন্^{এ ব} দেও মরিবারে পুন আহো প্রাণ বার[া]

मानव विकार -- "तित, त्वर दन भगें करनात कम्ब वाका नांतीरवरन द उश कांका स्टार मान स्व कांकिन कर्ने

ছিল ববে ধরাতলে; প্রাচীনা শে গ্র পরিচিত কিবা নামে ৮ কে উটি উং বা ক্রপা নবীনা বালা—মণিনা এবং গ

"বিজ্ঞাস নিকটে পিছা"—বলিছা জা ভাষেত্ৰ নিকটে বাছ ধীয়গতি া

∰ক্ষীবিছা চলিত ন্তু আীৱানত কবি নিকুটে আসিছে হেরি শকুনির পাল পক সাপটিয়াসবে ভয়ত্বর তীকুরবে তুলিল এমনি ঝড় প্রচণ্ড করাল,

অমনী মানৰ দোঁহে ধেন অকআং পক্ষ-ঝাপটের ভোৱে পড়ে বৃণিবাধু ঘোরে ; সঙ্কট বৃনিদা দেবী উদ্ধে তুলি হাত

বলিলা—"হে ধর্মচর, লাস্ক দাও রোষে. আমরা পাপাত্মা নহি বিধাতার বিধি বহি পশেছি এ পাপদেশে—নহে অস্ত দোবে।"

ঝন্ধার পাথার নাদ নীরব তথনি ; গিয়া তৃই আাত্মা-পাশে, মানব কম্পিত ত্রাদে স্থাইল তৃই জনে, প্রবণে দে ধ্রনি,

উচ্ছ্বাসি গভীর খাস প্রাচীনা যে জন কহিলা—"হে দেহধর, শাপযুক্ত আমি, নর, দেব-গুরু-ভার্য্যা আমি—পাপেতে এমন;

কামীর নরক-মাঝে হের হে তারায়।" বলিয়া যুগল করে বদন ঢাকিলা পরে ক-কারাগারে ছোটে শিহরি লজ্জায়।

জীবমর জন্ত প্রাণী বলিলা বিবাদে— "আমি নর, পাপীরসী জন্তচি প্রণদ্ধে পশি এ জোগ ভূগি হে হেথা চির-জনাহ্লাদে,

আমি বিভা ভারতের !" বলিরা লুটার শ্বাহত মুগী প্রার । নরদেহী বেদনার অমরী সহিত ফিরে অস্ত দিকে বার।

না চলিতে বছপথ শিহরে মানব, দেখিল সমূধে তার গলে ভূজকের হার, ছুটিছে জীবাত্মা এক নিনাদি ভৈরব।

স্থানিত কুন্তি কুন্তি দংশিছে কণিনী ইদিতলে ধারা ঝরে সুপ্রি ভানি করে টানিতে টানিতে কণী ছুটেছে রমণী।

"কে তৃমি"—জিজালে নর ভরে চমকিত, উন্নাদিনী প্রায় হেন জ্জানে ছুটিল কেন? ✓**ভাশ বিধানে গ্রেরিডু;" অস্তিত নরের বাদক্য—শাড়ারে সমূথে সে জীবাত্মা জড়বৎ নিবারিতে ৄহরি পথ কহিতে শাগিল বাণী নিদাকণ তুথে—

"ফ্থারো না হে শরীরি, সে কথা জ্ঞামার, মিশর-রাজ্ঞীরে হার কে না জানে ব্যুধায় কুলটার ঘোর তাপ এখন হেথায়!

চল নিরখিবে কিবা ৰাতনা তুঃসহ ভূগি প্রাণে অফুফণ কুলটার কি শাসন দেখিবে চল হে চক্ষে তুঃখ বিষবহ।"

"কে ইনি"—বলিয়া কান্ত হইল তথনি;
চাহি আমনীর মূথে দাকণ মনের চুথে
নতশির আবধামুথে দাঁড়ার রমণী।

ধীর শাস্ত সুশীতল দেবীর বচন ঝরিল পীযুষ তুল্য সে পীযুষ কি অমূল্য পহিল পরাণ যার জানে সেই জন।

"যাও আগে; হে কীৰাআ, দেখাও মানবে," অমনী বলিলা তায়, "ব্যভিচাব-পিপাদাদ কিরপে নিবারে ষম—দেখাও সে সবে।"

নীরবে চলিলা এবে ত্রিবিধ পরাণী — দেব-আত্মা দেহী নর পাপিনী নরকচর — আবার্গ চলে সকলের মিশরের রাণী।

এড়া^{ন্ত} সে তারকার কঠোর প্রা**লণ** বেথা অন্ত তারাতলে কৃষ্ণবর্ণ বা**লু জ**লে সেই বা**লু**সাগরেতে চলে তিন জন।

দেখে নর ভয়ে কাঁপি-—উচ্চ শলাকার শত শত প্রাণি-প্রাণ অধংশিরে লয়মান প্লাঙ্গুঠ শ্লাবিদ্ধ জন্ত প্রথায়!

দে সব আগার কাছে করাল-মূরতি নিষ্ঠুর কালের চয় ছড়ে ছড়ে দেহত্তর ছি'ড়িছে হুলার ছ'ি প্রকাশি শকতি।

ভীবণ খাপদক্ল অভি রুশোদর, কুধাতে আত্র বেন ্যাদান বিভারি হেন গ্রানে গ্রাস খণ্ড করি টানে নিরন্তর ় দে সৰ আমারার দেই। হেবি চাহে নর আমরীর মুখ-পানে, দরা-বিচলিত আহাণে অমরী অরিত নরে কৈলা খানান্তর!

না যাইতে বছদ্রে সে দেশ হইতে আমনীর ঐতি ভ'বে কঠোর কর্মণ করে নিদারণ শোকবাণী বহিল বাযুতে।

কঠোর শুনিতে যথা পোকের কীর্ত্তন শব-দেহ স্কল্পে ধবি হরি হরি শস্ত্ব করি জ্ঞাতিবর্গ গলাতীরে আগত বগন।

সেইরূপ শোকময় কঠোর নিনাদ, সহসা দক্ষিণ হ'ডে প্রবেশিল শুভিপথে চমকে মানব-চিত্ত ভবে সে বিবাদ।

চমকি হেরিল নর—নিবধে সন্মুখে বেন স্তৃপাকার বালি অবেলতে মাথিয়া কালি চলেছে উর্মি-আবাতে সাগবের বুকে।

নিকটে আদিলে পৰে তথন নেহারে আয়াময় প্রাণী বত চলেছে বালির মত দলে দলে কুফবর্ণ বাল্সিল-ধারে।

উড়িল দেহীর প্রাণ দেখিল যথন সে বব আ্যার হাতে কুলু নিজ নথাছাতে বংগিও, শিব-গত –বীড়ংস দশনিক্ত

भरत मरल ठरून-बेटर्ब-भन्नीरत कुल्लान रबन वाउरस्था-बर्टर रजनितक शुधिनीश्रीक अन्निर्म थलन्।

আচেতন প্ৰায় জীবী নয়ন মুদলি;

আকলাং ভীমনাদ— সোতে বেন ভালে বাধ

ছটায়ে বজাব জল—ডেমভি গুনিল!

ষ্ণাতকে দেখিল দেহী—থর্ণে সিক্ত ভাল— থোরতর রুফ্বর্ণ তীক্ষ্ণনন, উর্দ্ধরণ ব্যন্ত বিতাড়িত ছোটে ফেরুপাল।

চকিতে জীবাআবুল নির্থি প্রাণ্ড ক কৈ বেগে উর্থানে, ন্যুন না মেলে আনে বি উল্লেখন ধূদিকুল কটিকুল-জাবাতে।

শশু দিকে প্রাচীরের পৃষ্ঠবার বেথা বেগে প্রবেশিয়া তার নির্গত হইতে ২৮ হেরে ভয়কর মৃত্তি বারদেশে দেথা—

মহা অবলগর প্রায় দেহের গঠন, স্কন্দেশে তুই পাথা শহলে শ্রীর ঢাল। শত কুওলেতে পুজ্—রাক্ষন-বদন।

ধাৰিত জীবাত্মাগণ বেই ধারে আসে সেই ভীম অস্ত্রাগর ব্যাদানি মূধ-গংধ্র পক্ষের বাপটে সবে মৃহুর্তেকেগ্রাদে,

তীক্ষ দল্পে পিষি পিষি নিধ্যেপে জঠবে। আবাৰ বমন করে আবার গরাসে গণ কথন(ও) পেষণ করে প্ৰিয়া উদ্বে।

এ হেন পীড়ন সনি গ্রহকে কাল পেই সৰ পাপি-প্রাণ হতাপেতে হত্ত্যান প্রাচীর ভিতরে ছুটে ভেটে জেকগাল।

তথন সে মজোরগ রাজদ-বদন, উৎকট চীৎকার করি বংগ—"রে সভীব ভারি লপ্পট কুট্নীগাল জবল জীবন—

এ ভোগ ভোদেরি যোগ্য ; যে বিষ ধরায় ছড়াইলি দেহ ধরি সেই বিষ প্রাণে - 'ব ভবিশ্ব-শঠরে ভোগ চির-যাতনায়!

ু হেরি দেহধালী নর, তানিরা গর্জন, শুনলীর দিকে দেখি কহিল—"জননি, এ^{কি} - কোথার আমারে দেবি আানিলে এখন ?

এথানে কি পুণাময়ী ছহিতা আমার ? এ কি ভাব যোগ্য বাস ? সে চার-কু^{ল চার} যোটে কি এথানে কভু ?—কাছে চল বি

"হে দেহি ভোষারি চিন্ত করিতে উজ্ঞ প্রাতে ভোষারি আশা এ ছংগ-নিবানে ভা^{রা} দেখাব কলারে তব, সঙ্গে কিরে চল।

ভনরা দেপিতে হেন ভূবনে দ্রমণ করিতে হবে না এবে চল ধরাতে ^{নো} বিগত-কণুব-ভাগ বিগত-স্বাদ্ধ **আব্যারায় নদিনী**র পাবে দর্শন।" এত ধৰি নিজাগত কণিণা মনেবে িলৰ ক্ষমত্তী কৰা পৰ্ণচন্দ্ৰ ক্ষ্যোৎস্পাভত্তা মত মাক্ততের পতি উত্তরিল ভবে।

বালি নিবে ধর তিলে জাণারে চেতন,
নাজনী প্রতিভাৱ দিবাচকু দির তার
ালের-বিনত্ত-মান্ত দীড়ারে দেশী সঞ্জে
ক্ষিতা-- "কের গো তব লহিডা এ ন ।"
বিশ্বয়ে আনন্দৰেলে আগুত ১৭০০
ানরবিল ধরাবাদী নিশ্বল প্রাণ-ভালি

মণ্ডকে মুক্টজ্ঞটা জনিছে মণ্ডল, তথাগদ্ধ অলে এনে প্ৰজান্মন বলিখনে সমলীলিমা-সিং, কপাতে কিবলা ক্ল রেখাগ্রুটন্নে তথাও উল্লেখ্য

धवां करण ज्यांति । १ व करवरक केन्द्र :

স্কৃথ-ন্যনে ২েলি মান্ত-বছন শ্চিলা প্রধারাশিন ভাত, এবে **অবিনাশী** কাল্লাময় এ শ্বীব স্থাচতে স্থান।

শে হপন ও জগতে স্বাচি প্ৰিংহ বিপানলে ৮৮ হয়ে তাপ ন**ল কনে ল্যে** প্ৰফালি ধৰাৰ কাৰ পুৰায়ে শনন-ৰাৱ আধাৰ মানন মনে ফাৰ্মকৈ প্ৰিংধ্

হে ত:ত, ধোনতে পুন, ০য় যদি মন একলে জীবাধানৰ সনস্ভ ভার**কাম**য় পুন্ঠায় চহিতাবে কমিড গ্ৰণ।

এট বি শোভাষ্যী থাকাদে মিশিয়া, কণকাল সম্বৰ্ধ ন হৈলা ছাভি মরস্থান, বিবহন বিজ্ঞান বি নিজন ধর্ণীশিয় ভিনিত গাড়িল বদন এখনে আলিয়া।



চিত্ত-বিকাশ

হের ঐ তরুটির কি দশা এখন। হের ঐ ভক্টির কি দশা এখন; বিরাঞ্জিত বনমাঝে আগে সে কেমন। ছিল স্থাবদাল কাও স্থাক গঠন, উন্নত শিখরে অভ্র করিত ধারণ, শাধা শাধী চারি পারে উঠিত কেমন. বিটপে আতপ-তাপ হইত ধারণ। পড়িত ভাহার তেলে ছায়া সুশীতল. ফুটিত কেমন ফুল কিবা পরিমল। কতই পতিকা উঠে জড়াইত গায়. কতই পথিক প্ৰান্ত আদিত তলায়। কটিকা-ঝাপটে এবে হারারে স্ববল হেলিয়া পড়েছে আজি পরশে ভূতল। শুকায়েছে শুকা'তেছে বিটপ-পত্তিকা, থদিয়া পড়িছে ভূমে আপ্রিত-লতিকা. শুক ফল পুষ্প পড়ি ভূমিতে লুটায়, আশে পালে বিহলেরা উভিন্না বেভার। নিরাশ্রম ভগনীডে নিকটে না যায়, পথিক সতৃষ্ণ-নেত্রে তরু-পানে চার। ছায়া বিনা কেহ তথা বদিতে না পায়. নিকটে আসিয়া কেহ কণ না দাঁড়ার, পূৰ্বকথা ব'লে ব'লে পথে চ'লে যায়। দেখিয়া তক্ষ রে তোক্তে প্রাণ কাঁদে মম. আছিল আমার(ও) আগে সবই তোর সম, শাথা পাথী ফল পূব্দ সুবেশ সুদ্রাণ, করেছি কতই জনে সুজ্বারা প্রদান। হেলিয়া আমার গার লভিয়া আশ্রন কতই শতিকা শতা ছিল সে সময়, নিজ পর ভাবি নাই অনক্র উপার, বে এসেছে আশা ক'রে দিরাছি ভাহার, এখন আপনি হেলে পড়েছি ধরার. বগণ আশ্ৰিত জন কাঁদিয়া বেড়ায়,

কে দেখে আমারে আজ ফিরারে নয়ন. হের ঐ ভঙ্গটির কি দশা এখন।

বিভূ কি দশা হবে আমার।

বিভ কি দশা হবে আমাব. একটি কঠারাবাত শিরে হানি অক্সাং ঘুচাইলে ভবের স্বপন-সৰ আশা চুৰ্ণ ক'ৱে রাখিলে অবনীপরে চিবদিন কবিতে ক্রন্দন॥ আমার সংল মাত্র. ছিল হন্ত, পদ, নেত্ৰ, অন্তধন ছিল না এ ভবে. সে নেত্র করে হরণ **তবিলে স্বৰ্বন্থ** ধন कानाहेबा मिटन कवार्गदा। চৌদিকে নিরাশা-চেউ, বাথিতে নাহিক কে সদা ভয়ে পরাণ শিহরে. ষ্থনি আহোর কথা. মনে পড়ে পাই ব্যগ मिनामिनि हत्क अन चारत। কোথা পুত্ৰ কন্তা দারা. সকলই হয়েছি হারা গৃহ এবে হয়েছে ঋশান ; হৃদয়ে দাকণ বাৰা ভাবিতে দে সব কথা. निवांगारे दहति गर्विमान। मब घठां हैटल विधि. रु'रत निरम ठक्-नि^१ मानरवत्र अथम कत्रिरणः পর-প্রতিপাল্য দীন वन विख नव होन. क'रत छत्व वैधित त्रांशिता मकलहे कतिरल रह कीवरन वामना वड. অন্ধকারে ডুবারে অবনী; না পাব দেখিতে আর, ভবের শোভা-ভা চির-অন্তমিত দিনমণি। অবণ্য ভূমি আ ধরা শৃত্ব ভ্রম জল . . ना शांकित्व किছुत्र(है) विहात,

भा तर्रव नेत्र में प्रि ত্তমোমর সব স্প্রী, म्मिष्क शांत अक्रकांत-विछ । कि मभा श्रव आभात ॥ প্ৰতিদিন অংশুমালী, সহস্র কিরণ ঢালি. পুলকিত করিবে সকলে: আমার রজনী শেষ, হবে নাকি। হে ভবেশ। कानिव ना किया कारत वरन ? আর না সুধার সিন্ধু, आकारम मिथिव हेन्. প্রভাতে শিশির-বিন্দু জলে, শিশির বসস্তকাল. चारन बारव हित्रकान. আমি না দেখিব কোন কালে। বিহন্দ পতক নর. জগতের সুথকর, তাও আর হবে না দর্শন. ভাকিয়া সংসার-ক্ষেত্রে, পাব না দেখিতে নেত্রে দেবতল্য মানব-বদন। পৃথিবীর সার স্থ, নিজ কলা-পুত্ৰ মুখ. তাও আর দেখিতে পাব না. থাকিবে স্মরণ মাজ, অপুর্ব ভবের চিত্র, স্থপ্রবং মনের কপ্রনা; কি নিয়ে থাকিব তবে. তবে কি সাধনা হবে ভবলীলা ঘুচেছে আমার, বুথা এবে এ জীবন. হয় না কেন এখন, বুঝা রাখা ধরণীর ভার। ধন নাই বন্ধ নাই. কোথায় আত্রর পাই, ত্মিই হে আশ্রয়ের সার, সকলি হরিয়ানিলে. জীবনের শেষকালে. প্রাণ নিয়া ছ:খে কর পার-विष् ! कि मभा इत्त आभात !

कि इरव काँ मिश्रा ?

কি হবে কাঁদিয়া লগৎ ভরিষা
স্বারি এ দশা কিছু চির নর,
চিরদিন কাবো নাহি রয় হির,
চিরকাল কারো স্মান না বায়।
পবিবর্ত্তমন্ন সদা এ জগৎ।
নাহি ভেদাভেদ ক্ষুদ্র কি মহৎ;
ছাস বৃদ্ধি নাশ ধার বে নিরত,
প্য অফুপ্স প্থিবীমন।

আমি কিবা ছার নগণ্য পামর, শত শত কত মহাভাগ্যধর, বিরাট, সম্রাট দেবতুল্য নর,

উন্নতি পতন সৰার হয়।
কোথা আজি সেই ক্ষরোধারে ধান ?
কোথা পূর্বক্ষ দীতাপতি বান ?
কোথা আজি দেই পাওবের দথা ?
কোথার মথ্রা কোথার দারকা ?
কে পারে লভ্বিতে অদৃষ্ট-শৃন্ধলে ?
ঘটেছে আমার যা ছিল কপালে।
কে পারে রাধিতে বিধাতা কাঁদালে ?

বৃথা তবে কেন কাঁদিয়া মরি ? এস ভগবান্, কর ধৈর্ঘ্য দান, কর শান্তিমর অশান্ত পরাণ। সৌভাগ্য অভাগ্য ভাবিয়া সমান,

নিজ কর্ম যেন সাধিতে পাবি॥ স্থাচির বসন্ত, হাসে না ধরার, না চির-হেমন্ত ধরণী কাঁপার, উত্তপ্ত নিদাঘ প্রাবৃটে জুড়ায়, ক্ষনিত্য সকলি বিধির ইচ্ছায়, ছর্দ্দিনের দিন ধেই বলীয়ান, সহিতে বিধির কঠোর বিধান! নমে না টলে না নহে ম্রিয়্মাণ,

বে পারে তীহারি জীবন ধন্ত। এ ভব-সাগর গুব লক্ষ্য ক'রে রাখিতে আপনা আবহের ঘোরে না হারারে কুল না ডুবে পাধারে,

নাহি রে নাহি রে উপার অন্ত ॥
আমা হ'তে আরো কত ভাগ্যধর,
হারারে সাঞ্জাল্য শৌর্য বীর্য আর,
পড়িছে ভূতলে অনুষ্টের ফলে,

বৈরবে আবার বাধিছে হিরে।
কি ছার আমি যে হয়ে ভাগাহীন,
কাঁদি এত ভাবি দেখিরা ছর্দিন,
কেন কাঁদি এত কেন বা কাঁদাই,

রাথ আমার নাথ ধৈরম দিয়ে॥ আপনারই দোবে আপেনি হারাই, বিধাতারে কেন দে দোবে জড়াই, এ সাজনা কেন পরাদে না পাই।

निज कर्मकन चमुटहे क्वरन !

সে গদ সপ্পদ সে আদর শান,
কত দিন হলো কেংথার পেছে,
চরু সে মধ্ব দেখে নৃত্য ভোর,
সকলই তো গেছে সব ফুরারেছে,
আর ত ফিরিয়া না পাব ভার,
তবুও এখন (৩) অভিগত র্থ
ভেবেও তাপিত রুদর জুড়ার।
আর বে মংব নাচিরা অমনি

থছোত ৷

কি শোভা ববেছে তরু থছোত-মালার, হরেছে আলোকময়, শাধাৰও সমুদ্র, কি চারু স্থানর শোভ। জুড়ার নয়ন! নীৰ আভা পুডে ধরে শোভিতেছে তব্লপরে, कक चार्लारकत्र विभू कृष्टिष्ट स्थमन। সোনার তক্তে বেন, . হেন্দ্রে মনে হর হেন, লক হীরাথও জলে, জড়িত কাঞ্ন! কথন বা মনে হয় তক্তি যেনন, ष्मारनारक जूरिया थारह, नर्स-वन विष्ठाहर, মনোহর নীলকান্ত কাঞ্চন-কিরণ। অথবা যেন বা কেছ অসিত বসনে, চাঞ্জাক্তকার্য্য তুলে विम् विम् वर्ष-कृत्व, एकिया दाबिट्ड छक्र कवि आध्वामन। किन পর্যদিন প্রাতে উদিলে তপন, কোথায় কাঞ্চন হার, কাছে গিয়া হের ভায়, দারুময় ভরু সেই পূর্বের মতন। (काथा वा शेवकमाना मधन-बक्षन, ভক্তলে ভালে গাছে, দেখিবে পড়িয়া আছে, কেবল জোনাকী পোকা গাঁডি অগণন। हात्र दत्र कछहे एक विकिस नर्मन, मामत्वत्र ख्वकत्र, नदन-मानग-इद्र, করেছেন ভগবান্ ভূতলে ক্লন। निया विकायकी-स्यादन ककरे अमन, #फि मृष्टि गत्नारमाचा, व्यक्ति करवरहन भीचा, क्षेत्रमधीन गव्हीम यतन् हरमन ।

আহা বিধাতার এই মাধার ইংশীন,
নহে বঞ্চনার তবে, তুপুই জ্ডাতে মা
মাধালালে জড়ালেন নিধিল জ্বন,
না ব্যে ক্লডছ নর বিধির মনন।
নিলা করে এ কৌশলে, তাঁহারে নিচুর বার বিবেন ব্যান

আলোক।

আ'লোক স্জন হইল যথন অগতের প্রাণী উল্লাদিত মন, व्यवनी शशन अन्धि-सीवन , করে বিচরণ পুলকিত মনে, মহাসুধে হেরে প্রক্তির ম্থ, হেরে পরস্পবে হইরা উৎস্ক । हमकिछ हिटल करत पदम्म. লাবণ্য-মণ্ডিত জগৎ বদন, কিরণ ভ্ষিত ভূতল আকাশ, অতুল স্বমা চন্দ্রনা প্রকাশ। লগতেৰ জীৰ আনন্দিত-মন, প্রাণি-কর্গ-রবে পরে কিভ্বন. আলোকে উজ্জল লোক সমুদ্ধ, জয় জয় শব্দ ক্রিভূবন্ময়। জগৎ হইল আলোকময়, খুচিল আধার জডতা ভর, বিধাতার এই অতুল ভ্ৰন, **इहेल उथन जानम कानन,** ভঙ্গতা তৃণ মুৎ ধাতু জ্ল, निक निक दश्य माजिल मकल ; পতল বিহল কুরল কুঞ্জর, কিরণ মাথিয়া অভি মনোহর, त्रक्षिण गर्भम विविध वज्रत्य, माना वन-कृत कृषित कानरन। व्यात्नारक अकान हरेन उधन, ञ्च्यत प्रशीव मानव-वत्तन, दिश्वित्त वहन गछ-भक्ती वछ. নিজ নিজ শিব করিল জানত। कि जान्तर्ग विवि रुक्त-खेशानी, अक बाकि किंद विधित्र नवनि

चारलाक भारति मानवम्थली. দেখিতে গাগিল হয়ে কভঃলী, नव-एष्टिमाडा-२डन-८कोमनी विधि नियमिक भधन मकन. দিবদ রজনী চতু সূর্যা গতি. **১ চ ঝতুধারা নিয়ম-প**রতি, চেরি 🕫 দীলা স্তত্তিত হইয়া, বোমাঞ্চিত কারা বিশ্বর মানিয়া। আলোক-মাহাজ্য কেনা নাহি ভানে (य (सर्व्यक्त कल निना चनमारन, श्री ज:-श्र शिक्षा किरदी मका काटन. পৰ্ণ যোলকলা শ্ৰান্ত মন্ত্ৰে (व एमरश्रष्ट्र कंड मन्य-तभरक्. ठिक कुललल मा नव नरह. প্রশারে কমল স্ব্রার কোলে, शामिन्यव्य छटन बोटन बोटन इलेटन. নান। বৰ্ণ ব্ৰুছে শ্ৰচিত কাৰ। विक्क भवन किवरम टालाइ. দেতে ডে কখন(s) অপ্যা গগনে. वारमाय-माश्चा (मज (म सारन) আংশেক-মহান্তাল্লিয়াভে সেই. b वांडन्**यम ८**५ थिबांट्स (यह, লতা, পাতা, তক্ত নিক্তিৰ গায়, আলোবের ওণে সতঃ ব্যক্ত হয়, বিধি-চক্ষলিপি কোখা ভাব কাছে গীতা-উপদেশ জগতে কি আছে. अभूमा भनार्थ दर्ग किंडू जात. আলোকের সহ তুলনা যাহার গ

ফুল ।

দেব কি ফুলব ফুলটি বাগানে, ফুটিরা উত্তান জ্বালো ক'রে জ্বাছে নাল রলে মরি কি শোভা উহাব, জ্বলুবে প্রাডা জ্বলে মাবিয়াছে ' এ কৌন্দর্যা আর ক'দিন বাকিবে, জ্বভাবে এরণে নয়ন-মন দ কাল না কুরাতে পরত হেলিবে ব্রেট্টাট্ট উহার, কুরাবে ধৌবন।

হবে সভাশির সালিয়া পতিকে এ শোভা তথন ঘঃ িয়ে না আর. ক্রমে পর্ত্তর শুকারে ক্রান্তর ভূচনে প্জিৰে ব**ার ক**ণ্টা মাল্যের(৭) দেহ সোল গি এসনি, तिम का माळ उद्भव उद्भवी. গৌৰনেও কাল ছবার ধ্বন, পে শোভা সৌন্দর্যা করার অমনি। ৰেণিলে তথ্য প্ৰ প্ৰত কাৰ সে বুবা ধুবকা চেনা নাহি যায়. প্ৰাদ্দক্য যথন প্ৰশে ভাগ্দেৰ. (मथिराज कथन कमि राधा भाषा ভগতেও অলে নিয়ত নিয়মি পৰ্ন ৰোদ্ধা আন্ত একাশিয়া আছে. বাস আৰু তাত্ৰ জি মানু নাই, তে জ চবে যেন ভাগান্ত নিয়াজে। কেল ভগুলাম হেল নিষ্ট্রাভা, সগতের প্রতি এই কি যাম গ না গাকিতে দাখা কিছকাল তেওে, যা দেখে পৰাণে এতই আবাম গ বিধি কি চে ডুৰি মনে ভাব লাছ নিজ নিপুণতা দেখাইতে ভবে গ किया बोव-यूरा क्र हिश्मा छन. না ভঞ্জিতে দ্বাত্তৰ বিভবে। এত কি যে এথ নিয়াছ জগতে. এ সংখ্র জার প্রয়োজন নাই. লোহাই জোমার তুমি জান ভাল এ ভব ভোমার কি মুখেব ঠাই।

নরিং-সময়।

ভর্ ভব্ ক'রে চলিছে সলিল
শিলা অলমূন করিরা শিগিল ,
शैरत গীরে মাটী কেটে ছড়ে ছড়ে
কলে কলে জলে ধন ভেকে পড়ে।
লভা-পাতা বেত স্মাতোবেলে কাঁপে ;
তক-লভা ঝোণে তীরে ঝাঁপি ঝাঁপে;
তক লভা শ্লোভে সমূরে উপাদ্ধের

সর সর বালি জলতলে সরে, বাধা পেরে শেবে তীপক্রপ ধরে। আম, কাম, শাল, জাকল, ভিস্তিডী, তীরে ছারা করি চলিছে ছধারি। कृत जरूपन पुक्रन युक्त, ফুল-গরে বায় করে ভর ভর। জলচর পাখী তীর চাডি চটে. নীন মথে করি পাতা ঝাডি উঠে। চলে স্রোত-ধারা ভালে গড়ে কড়. আপনার বলে খুলে লয় পথ, বাঁধা বাধা বাঁক কিছু নাহি মানে। দিবা-নিশি চলে আপনাৰ মনে। উজীর আমীর কানাল না গণে, চলে দিবানিশি আপনার মনে। তর তর ক'রে চলেছে সময়. পল অতুপল কার(ও) লক্ষ্য নয়, গজিচিক থালি ধরা-অঙ্গে লেখা. কালের প্রবাহ তাই বার দেখা. কত ভাকে গড়ে প্রোতোধারা তার, ভূম ওলমর সংখ্যা করা ভার। নব কিসলয় সম শিশুগণ, প্রকুর কুত্র সম যুবা জন. কাৰ নদী কৰে ভত্তৰতা মত বাড়ে দিনে দিনে শোভা ধরি কত। তঙ্গণ বৌৰন পূৰ্ব হ'লে পৰে. সরল সুঠাম প্রেটি কান্তি ধরে। বার্দ্ধক্য করার শুকারে বধন, কালগর্ভে পড়ে হয়ে অনুর্শন : অবিচ্ছেদ-গতি বহে কাল-স্রোভ, ধরা-অক্তে কত করি ওত-প্রোত। রেণু রেণু করি পর্বতের চড়া। কালে ভগ হয়ে হয়ে বার গুঁডা। ় বালুকার স্ত,প বেড়ে বেড়ে কালে, পৰ্মত আকারে ঠেকে শৃক্তভালে। আৰু মকুড়মি কাল জলে ঢাকা. বিপুল ভরত্ব চলে আঁকা-বাঁকা। আৰু রাজ্যপাট অট্টালিকামর, কাল মহাবন শাপদ-আশ্রে। কাল-বোত ধারে নর-ক্রোঞ্চ কত. নীরে শক্ষা করি ভ্রমে অধিরত :

অবদর বুঝে প্রোতে মগ্র হয়,
ডক্তা মুথে করি বুকে উড়ে যায়,
পক্ষ বাঁপটিয়া পূর্ববেশ ধরে,
উচ্চ ভালে বসি ডক্তা জীপ করে।
চলে কাল-প্রোত নাহি দ্যা মায়া,
চলে মুথে নিয়া লিগু-বুজ-ক্ষেয়।
রাজা হুংথী ধনী প্রভেদ না গলে,
চলে অধিবত আপনার মনে।
তর তর্করি কাল-প্রোত বায়,
সরিৎ সময় চই তলা প্রায়।

কল্পনা।

কি দেখিত আহা আহা. আর কি দেখিব তাহা, অপূর্ব হৃদরী এক শুক্ত আলো করি; চাঁদের মণ্ডল হ'তে. উঠিছে আকাশ-পথে. অদীম মাধুরী অঙ্গে পড়িতেছে ঢলি। ভাবভরা মুধ্ধানি, আহামরি কি চাহনি. কটাকে ভুগার নর অমব ঋষিরে, कि नगाउँ किया नामा. মন-ভাষা পরকাশা, ওষ্ঠাধরে হাসি-রেখা নুভ্য করি ফিরে। বিচিত্র বসন গার. ইন্দ্ৰথম শোভা পার. বিবিধ বরণে ফুটে কিরণে খেলায়. (यथात्म क्षेत्रत वर्ग. স্থপদ্ধি মলর বয়, অকের সৌরভে দিক আমোদে পুরা^মা कथन निश्चत-निद्धः বসিয়া নিঝ'র তীরে, মিশারে নীণার খরে গানে মত হয়, কভূ কোন কুঞ্বনে, প্ৰবেশি প্ৰমন্ত মনে. নৃত্য করে নিজ মনে অধীরা হইয়া, कथन छिनी-नीरत्र. (शेक कति करनबरत्र. ভরুকে মিশিরা ফিরে সঙ্গীত ধরির[।]।

কভূ হক্জুমি-গায়, ফুলোভান রচি তায়, ভনিয়া পাখীর গান করয়ে জ্রমণ ; কভু কি ভাবিয়া মনে. একাকী প্রবেশি বনে. शांटन काँटम निक यटन डिग्रांन रायन । কথন মন্দিরে ধার, পূজা করে দেবতায়, জগৎ-মাতানো গীত প্রেমানন্দে গায়, कथन नक्त-रत्न. অপরী অমরী সনে. থেকা করি কত রকে তাদের ভূকার। কথন অদৃখ্য হয়ে, ছায়াপথে লুকাইয়ে, দেখার কতই ছলা কত রূপ ধরি. नमारे जानम बन, সর্বত্র করে গমন. বেড়ার ব্রহ্মাপ্তময় প্রাণি-ছঃধ হবি।

স্বৰ্গমন্ত্ৰ্য রসাত্ৰ, সব(ই) তার লীলাম্বল, কোথাও গমন তার নিবেধ না মানে. তিন লোকে আসে বায়. সর্বত্ত আদর পার, সে মনোমোহিনী মূর্ত্তি সকলেই জানে। কভূ ছায়াপথ ছাড়ি, আর(ও) শৃক্তে দিয়া পাড়ি, দেখার অপুর্ব কত ত্রিলোক মোহিয়া; উঠিতে উঠিতে বালা, मिथांहेट कड हना, কত রূপে কত মতে নাচিয়া গাইয়া। নিধিল ব্ৰহ্মাণ্ড-প্ৰাণী, द्धतियां व्याक्तर्या मानि, বিক্ষারিত-নেত্রে সবে বামা-পানে চার, ধরা উলটিয়া ফেলে. স্বৰ্গ আনে ধরাতলে. **অমরাবতীর শোভা ধরাতে দেখা**র। চলে বামা বায়ুপথে, श्रुवाहेशा मत्मावत्थ, यथनि द्यशास नाथ रमशास छम्ब ;

কথন(ও) পাঙালপুরী,
আলোক-উজ্জ্বল করি,
বাের অন্ধ্রকার হরি করে স্থাোদর।
মকতে উন্থান রচে,
মরে প্রাণী পুনঃ বাঁচে,
উত্তপ্ত কিরণ চাঁদে, ভান্থ মিংকার,
চপলা চাপিরা রাথে,
ত্রন্ধাণ্ড ভ্রমে পলকে,
অন্তর্মপ কত হেন ভ্রনে দেধার।
কতই বিস্ফাকর,
কার্য্য হেন হেরি ভার,
স্ফুচতুর বাজীকর বাড়র সমান,
হেলার প্রার সাধ,
সাগরে বাঁধিরা বাঁধ,

অগাধ ক্লধি-কলে ভাসায়ে পাষাণ। পশু-পক্ষী কথা কয়, "বানরে সঙ্গীত গায়" গিরি-অকে পাথা দিয়া আকাশে উড়ায়; कथन नाविकमाल. ছলিবারে কুতুহলে, অভল সাগরজলে কমল ফুটায়। কণ নিমিষের মাঝে. মহানগরীর সাজে, সাজায় কখন বন গছন কাননে, কখন বা মহারকে, ভালিয়াধরণী-অকে. (मोधमाना चहानिका मथ्दम हत्रत्। কভুমহাশৃক্ত পরে, দৌর জগতের ধারে. দেখায় নৃতন সূৰ্য্য নৃতন আকাশ, নবীন মেঘের মালা, नवीन विक्रानी-(थ्रा. नव-कनाधांत्र मनि-कित्रव क्षकांन । স্বৰ্গ শৃক্ত ধ্রাপর. কত হেন কল্পনার, অলোকসামান্ত কাও দেখিতে দেখিতে. বিচারি ত্রন্ধাণ্ডময়, হ্য-পুলকিত কার,

হেরি কত অস্তোদর হর ধরণীতে

হেন্চক্রের গ্রহারলী

েলি কত দুর বাই. যেন ভার অন্ত নাই, भारत ना दमसिएक शाहे टकावा बाहे b'टको . মুদূর গগন-গার, **ल्या मिशारेबा वाब,** हर्गनी हम्दर्भ त्यम दर्भाव मख्टन । 'महमा होषिटक हांहै, তথনি দেখিতে পাই. সেই আমি সেই ধরা দেই এক এল, বাইনি নিমেষ পার্ छाछिया व दराउन. তবৃত্ত ভ্ৰমিত স্বৰ্গ মৰ্শ শ্ৰাভণ। এ হেন প্রভাব যার. श्रमाप मण्डल रेव. कि छःच व क्रमंदिक ना भागि , व्यक्तिम्म क्यम, ज. পাঠ ৰদি প্ৰাৱেকে, निवासन अध्यक्षि हिश्यान केवि। s for athe Ald. মিটিল না অপরাধ ল হোলাড়াখিনী মাজো গৈৰ-প্ৰতিক্স, কমল। ঠেনির পার, भाष टेकना मानहात्र आभा-छक्ष यम विना क.. प्रका

প্রকাপতি।

কে জানে নহিনামর নহিনা তোমার,

সামাক পতল এই,

ইহার তুলনা নেই,

কৈ চিত্র বিচিত্র করা আলেতে ইহার।

কিলে ফলাইরে রং করেছে অমন।

কে লানে লগৎ-মাঝে,

ক্লিকে এমন চিত্র ফলর চিকণ।

ধলারে রক্তর টেউ কি রেণাই টেনেছে,

ভিতরে ভিততে ভার,

বিলু বিলু রম্বহার।

বিলু বিলু রম্বহার।

বিলু বিলু বিশ্বহার।

বিলু বিশ্বহার

বিলু বিশ্বহার

বিলু বিশ্বহার

বিলু বিশ্বহার

কার চন্দু ৰা জ্ডায়. এ মহীমগুল-মাঝে কে আছে এমন। কি এ শোভা আকৰ্ষণ বলিতে না পারি. ভলার শিশুরও মন. কত আশা আকিঞ্ন: कफरे कानत्म (हार्ट वित वित किता ধরিতে না পারে যদি কি হতাশে চার, ধরিতে পারিলে স্থা: कृत्व शर्का खाम प्राथ, মুখেতে কি হাসি চুটা পুলকিত কার। (मय-निह्नकद्र-कीर्ति वाथात्म नवाहे. বল ত বিশাই শুনি. কি কাৰ্যা তোমার গুণি. এর দক্ষে তুলা দিতে কোথা গেলে পাই সামান্ত পত্ৰ এই শোভা কারিওরি, ক্রমশঃ উল্লুহ করে. আনো কড শোভাধর, কি আশ্চর্য্য বিধাতার নৈপুণ্য-চাত্রী। এত বস্তুকর মর আপন কৌশলে। বন্ধাণ্ডের পতি গাতে. প্রতি রেখা প্রতি ছত্তে, দেৰ শোভা দেখ বিশ্ব কি কৌশলে চলে কিছুই না পাই ভেবে আদি অক সীমা নকলি আলিকী তব. অন্ত ভোষার ভব, কে জানে মহিমামর তোমার মহিমা।

জ্মাভূমি |

এট ও আমার কগতে দার.

শুভি সুথকর জনম ঠাই
বেধানে আলোনে নবীন আখানে,
শৈশব-জীবন স্থাপ কাটাই
বে স্থাবর দিন আলাও) পড়ে মনে,
ভূলিব না বাহা কভু এ জীবনে,
শেখানেই থাকি বেখার বাই
হেবেছি কত নগরী নগর,
কত বাজগানী সপুর, জুলর

পুৰ বাছ শাঠ তক অলাপৰ, বৃতি পৰিবল সানা প্ৰদৰ্

्रिन क्षेत्र भाव (काबाब आर्ट ? वंगरकृती समक ज्वन, अकक्टरहोत्रद्य इंडे चजुनन,

্ষরণ(৩) নিকট প্রবের(ই) কাছে। এই লৈ বর্তনা পবিত্র আলর (ব্যাহুলা-পূলা কত সেখা হয়)

গীতবাচশালা সমূৰে ভার। সেই শাচনালা নীচেই অনন, ইউক-মুক্তিকা প্রাচারে বেইন,

ৰোধনের বিব পরশে বার॥ হেরে যেন সব চারিছিক্ষর, আনভ্যা ক্রেও ভরিল ক্রের

শাবার ঘেন বা আসিল ভিরে। শৈশৰ কৈশোর অথের ঘৌরন, বাল্য নথা নথী বৃদ্ধ গুরুতন,

आवात्र रगमन कोनिटक विदत्र ॥

কত পুরাতন কথোণকখন, হাক্ত-পরিহান নদীত বাদন,

শ্মানদৈর চকে বেধিতে পাই। প্নঃ বেল ধেলি নদীগণে বেলি, বাঠে গাটে ছটি করে অন্যক্তি,

কালাকাল তার বিচার নাই ॥ কথন বেন বা ক্থা-ডুফাডুর, আতপ-উত্তর কিলি নিজপুর,

जनमी निक्टि इपिता गरे !

रुपेन(क) र्यन नांत (कारण करत, क्रिनेक करत कांधारतह करत,

चींकरण श्रीकश वसन मुकारे । केक सिमारि सब तम बारवत मृत् रहित सुद्धि करका क्रिका विकास

कात टब्टब पुरव टर्न कानल-कृषि

THE RESIDENCE OF

प्रकारक राज क्रिका प्रति । गर्चा सहस्रक क्रीकामकी

100 Marie 1

श्वा अन ट्राइ नरीव ट्राइड श्वा ट्राइडिंग समक गरम

ক্ষিনী কুলুমে প্ ইবিৰ উভাবেশ উন্নতিক আৰু ধন ৰপ-লোকে বিভাগ পিকানি

णानीत ८५वन क्षांता नारात जानरत ताना स्ट्रेस क्षेत्र, रनोतन-जातरक हात्रोदन बाँदान,

কৰিতা স্থাৰ আৰাই কতই আগেৰ সুথ ভালবাদা, কতই আৰাজ্ঞা কত বলৈ আৰাঃ

ক্টে উঠে প্রাণে বে দিকে ক্র কথন একতে কভু একে একে, অনিমের চকু আনল-পূলকে,

হণর-মূক্তর বেলি প্র আগেকার মন্ত বেন হৈরি সন্ আগেকারি মন্ত পঞ্চ পক্ষি-রর্ব,

আগেকারি মত করি ক কুড়াতে পরাণ ইহার সমান, নাহি কিছু আর, নাহি কোন ক্রিক

हित-छुटिकत स्थान आहे. बरायश्यावत इत वृत्ति स्थान,

দাদশ উত্তাপে অলে বাৰ প্ৰাণ,
তবুও দে দেশ ব্যৱস্থ ভাহার নমনে ভেমন ভ্ৰমৰ,
মনোহর দান পৃথিবী সাগর,

नाहिक ज्उटन द्वांका के क

दक आरम्भ धनन मानव-मनास्त्री है। मृति-छन्नो बाद जानत्म ना वार्टमः वहत्तिन शरव स्वर्धी

मा बरन जेज्ञारन खरून जनसङ्ख् ट्यामणीक स्मार-जनसङ्ख्या

वरे वक्ष्मि चानाव

पृष्टि तकताण अक होन-सोना. अर्फ दे बनिना ७७ तीन-दोता

(क्षेत्रात्(४) नवान अस्तर त्रुद्ध के पुत्र बटन सार्व अस्तर शाक्ष साम्बद्ध स्टेस त्राधिक হে জগৎপতি এ দাস-মিনতি, বেথ এই দরা বলমাতা প্রতি, বলবাদী যেন কথনও কেহ। যেথানেই থাক্ থেথানেই বাক্, বতই সম্মান যেথানেই পাক্, না ভূলে স্থেদশ-ভকতি স্লেহ॥

কি সুখের দিন।

কি সুথের দিন মনে পড়ে আৰু, व्यानक निर्श्वत शहरत वह. হ'ল বছদিন, আৰ(ও) তুলি নাই, এখনও সে দৃশ্য তেমনি রয়। শৈশব-সময় বর্ষ বার ভের, প্রাক্রম ব্রিষ্টিইবে তথ্ন, জারিরা অবধি এক দিন তরে. জানি না কখন হুঃথ কেমন। তথন(ও) প্ৰাৰ্হ সেই মাতামহ. ন্থমেরুর মত উরত শরীব. মাতা পিতা আদি বন্ধ সর্বজন, ্রেস গিরি আশ্রমে মাছেন স্থির। শ্বৰে হাসি থেলি স্থৰে আসি যাই, সুখেতে ভাসিয়া করি ভ্রন্থ, সুৰে পূৰ্ণ ধরা শুক্ত স্থাপে ভরা, स्रु (४३(हे) क्षराह जारि बीवन। আদরে লালিত আদরে পালিত, মাতাম'র আর ছিল না কেহ, অগতা তাঁহার আমাদের(ই) প্রতি ছিল আবৈশব অধিক শ্লেহ। আশার নির্ভর করিরা আহলাদে. ৰানাইলে তাঁয় মনের সাধ. ক্থনত অপূৰ্ণ থাকিত না তাহা, পরাতেন তিনি করি আহলাদ। वरमञ्ज वरमञ्ज नाजनीय श्रृका, **इहे** ज्ञानदा जानम गर. कडहे जानम (शरहि छर्थन, মাসাবধি করি ধরি উৎসাহ। খানিত প্রত্যহ প্রতিমা দেখিতে, क्छ छ:शी वानी व्यक्त-मूर्य,

नव बर्ख गरव निरम निरम गासि. সাজায়ে বালিকা-বালকে সুথে। সে আনন্দচ্চবি তাহাদের মুখে. হেরি কতবার সংশরে ভাবি, কার বেশী শোভা-প্রতিমার কিবা ডাদের প্রফল মুখের ছবি। আদে যায় হেন কতই দৰ্শন. গ্রাম-পল্লীবাসী কতই আসে: ভিকৃত বাচক গীত-বাখ-কর, অভিথি অভ্যাগত কত কি আৰে। ক্ৰমে গ্ৰাগত আত্মীয়-স্ঞ্লন, কলরব-পূর্ব সতত আলর, প্রির সম্ভাবণ মধুর আলাপ, গৃহের সর্বতিধ্বনিত হয়। সদা হাইমতি কুট্ম-জেয়াতি, चारमारम धारमारम वक नमाहै, সর্বা পরিজন আনন্দে মগন. নিরানন্দ ভাব কাহার(ও) নাই। সে আনল মাঝে আমি শিশুমতি. সদা হেসে থেলে স্থথে বেড়াই, धनो कि पश्चित व्यक्तित्वी-चरत्र. আমার প্রবেশ নিবেধ নাই। সে কালের প্রথা রামারণ-গান. অপরাহে ভনি মোহিত হয়ে, সমৃদ্র লজ্যন পুষ্পকে গমন,— শুনি শ্বন্ধ হয়ে বিশ্বন্ধে ভাগে। নিশিতে আবার শুনি বাতা গান. সম্ভ রজনী জাগিরা থাকি . গুনি সে আধাান না ডুলি কখন. ज्ञमद्र-क्रम क निश्रिता दाशि। वां हे वर्ष चार् कृताहरण यात्र, সে স্থাপর দিন কতই গিরাছে. वाबि उ त्र मिन क्निनि श्रम्दर, সে যথের স্থাদ আৰু ত আছে। बमनीत चन कीरतत आशाम, একবার জিহবা জুড়ার বার, व ब्लटन इ वान-कीषात्र बाह्नामः क्रशंख किह कि हात्र मात्र ?

ধনবান।

ধনবান জনবান ধরণীর ফুল.

বিনা ধনী কে অবনী সাজাত এমন ?

কে পরাত ধরা অঙ্গে এত আভর্ণ গ প্রাসাদ-মন্দির-মালা স্বর্গে অতুল ? কাশ্মীর-ভূধর-শিরে যক্ষ-সরোবর. অফেটাদ বাহার নাম কাদম্বী প্রিয় কে সেখানে বিরচিল ক্রীডাবন স্বীয়, ধনী যদি না থাকিত ধবণী-ভিতৰ। তাজ-জ্ঞালিকা চ'থে কে দেখিত আৰু যার শোভা দেখিবাবে ধরা-প্রান্ত হ'তে-প্রতিদিন কত লোক আসে এ ভারতে. অমৃল্য প্রাসাদ-বত্ব অবনীর মাঝ। विना धनौ ऋशकत निर्ह्मंत्र श्रवाह. থাকিত না ধরাতলে বিভার আহলাদ. জানিত না নরচিত্ত সাহিত্য আখাদ, কি আনন্দকর চিত স্থাংথ অবগাহ। উজ্জ্বল ধরণী-আক ধনীর উদয়ে. ব্ৰিচ্ছটা সমুছটা তাদের প্রকাশে, এক জন ধনী যদি হয় কোন দেশে. চিরদীপ্ত সে অঞ্চল তাব দীপ্তি লয়ে। কোন কালে ছিল আরে ভারতমগুলে. ডবানী অহল্যা বাই মরিলা ছ'লন; আজ(ও) দেখ তাঁহাদের নামের কিরণ, জাগায়ে খদেশ-খাতি জগতে উজ্জলে। কত হেন লব নাম প্রতি দেশে দেশে. धनव**ी धनवान ऋत्यन कल्**राव শাধন করিয়া নিত্য লভিয়া সন্মান, প্ৰশাম অদেশ পূৰ্ণ করিছে স্থাপে। শাধিতে জগৎ-হিত ধনীর স্জন, বিধাতা তাদের হত্তে দিয়াছেন ধন, জগতের সুমন্ত করিয়া মনন. এ কথা যে বুঝে মর্ত্তো দেবতা সে জন; নিত্য স্মরণীয় সেই মহাত্মা ভূতলে; के इःथी खानी खाना करत निवायन, জগতের কত হিত করে সে সাধন, দে কথা ভাবিলে প্রাণ আপনি উথলে।.

পরের হিভার্থ ধন না বুঝে বে ধনী, নিজ স্বার্থ চরিতার্থ সদা বাস্থা করে. পরহিত ভাবে না বে মুহুর্ত্তির তরে সে জন হরাত্মা আহতি জগতের গ্লানি। বিধাতার বর-পুত্র ধনী এ গরাতে. দেবতা হইতে পারে ইচ্ছা মদি করে. ইচ্ছাকরে বেতে পারে নরক ভিতরে স্বৰ্গ নরকের দাব ভাহাদের হাতে। मशैष्ठ मशैश-तृत्त धनौत्र अधान, দৈবঘটনায় আৰু মহীপতি তারা. আবার চক্রের গতি হ'লে অবস্থারা, পশিয়া ধনি-মণ্ডপে হবে শোভমান। धनीतां अन्तर्भादतत सूथ-इःथ-मूल, যে ধনী না বু'ঝে ইছা ভ্রান্ত পথে যায়, ধরার কণ্টক সেই , যে বুঝে ইহায়, ফুটে রয় ভবময় শোভায় অতুল।--धनवान अनवान धत्रीत कृत।

ভালবাসা।

ভালবাসাবাসি এত পথিবী-ভিতরে. সে তঞ্চা মিটে না কেন আমার অন্তরে 🔊 বাল্য হ'তে নিরস্তর খু' জিয়া বেডাই, প্রাণ জুড়াবার স্থা তবু নাহি পাই। কারে ভালবাদা বল, কিবা তার ধারা ? কি পেম্বে প্রাণের তৃষ্ণা মিটাও তোমরা ? পিতা ভালবাদে কতা পুত্র আপনার. স্বামী ভালবাদে ভার্য্যা প্রিয়ত্তমা তার। ভাই ভালবাদে ভা(ই)য়ে দোদরা দোদর, প্রতিপাদকেরা ভালবাদে পোয় তার. আত্রিতে আশ্রম্বাতা ভাবে আপনার. अनिभनी अनुभीतं रुनस्मत स्वतः। এ যে ভালবাদা-ভরা দেখি এ সংদার. ভালবাসা নয় ইহা স্বার্থের বিকার. ক্ষেত্ৰয়া মায়া আর যাতা কিছু বল, ভালবাসা কিন্তু তবু নহে এ সকল। প্রাণে প্রাণে বিনিময় ভালবাসা ষেই. দে ভালবাসা ত হেথা দেখিবারে নেই,

কত অনে হাতে তুলে দিয়েছি তাহায়. সে ত নাহি প্রাণ তার দিয়েছে আমার। আমি চাই এক জীউ একত্যা মন. এক চিন্তা এক দৃষ্টি একই প্রবৰ্ণ. এক রাগ অভুরাগ একই মনন. ছুই ছুই ঘুচে গিয়ে একতা মিলন। অন্সুমনের গতি. অনন্ত কল্পনা স্থৃতি, অন্য আকাজ্ঞা আশা, ष्मनल ज्यात्वत पृथा, এক জ্ঞান এক ধ্যান একই স্থপন. ভার(ই) নাম ভালবাদা হলনে মিলন । এক প্রাণ হই দেহ. অভেদ শক্ততা স্লেহ. অভেদ আচার ভক্তি. इहे (मह এक(है) मिक्ति, পাষাৰে পরাণ গাঁথা একাত্মা জীবন, এ ভালবাসাবে মোরে দিবে কোনু জন ? এই ভালবাদা-আদে উন্মন্ত হইয়া. লজ্ঞ। ভয় লোকনিন্দা সব তেয়াগিয়া পরাণে প্রাণে তার হইতে সমান. অনেকের হাতে সঁপে দিয়াছি পরাণ: কত জনে কতবার সোদরে অধিক. ৰভাৱেছি হৃদরেতে ভাবিরা প্রেমিক, বৃশ্চিক-দংশিত হয়ে ফিরিয়াছি শেষে, কেলেছি রজনী দিবা যাতনার ক্রেশে। কতবার কত জনে কণ্ঠের ভ্ষণ. করিয়া রেখেছি বুকে ভাবিয়া রতন, ছি ডিয়া ফেলেছি শেষে ব্ৰিয়া স্থান. করেছি কতই তপ্ত-অঞ্ বিসর্জন; ভালবাসা বলি যাবে পরাণে ধেয়াই. সে ভাৰবাদারে হায় কোথা গেলে পাই ? পরাণের বিনিময়ে পরাণ বিকাই. এ ভাৰবাসা কি তবে পৃথিবীতে নাই ?

অতৃপ্তি।

বিধাতা হে নাহি জানি প্রাণে কেন হেন মানি মাঝে মাঝে বিরুক্তি উদয়। থাকিতে এ ভবনিধি পরাণে কেন এ ব্যাধি বল বিধি বল হে আমার। আজি নয়নহে কাল এই ভাব চিরকান কেন মন হেন ডিক্ত হয়, কিছুই না ধ্বে মনে অসাধ্য সদাই প্রাণে কিছতেই সাধ নাহি রয়। আমোদ প্রমোদ হাসি সব(ই) যেন যায় ভাগি কিছতেই মন নাহি বলে . নিকটে প্রাণের মিতা অনায় রদের গীতা তাহাতেও চিত্ত নাহি বসে। সুত সুতা স্থেহভবে. চিবুক ভুলিয়া ধ कर्छ धन्नि दकारण यिन हारम , ভাতেও চেতনা নাই সে দিকে না ফিবে চা বেন কোন অমঙ্গল তাদে। এ অতুপ্তি কেন সদা ধন যশ কি প্রেম कि इहे मरकायकत नरह. নাহিক আংকাজকা আশা নাহিক কোন লাল প্রাণ ধেন সদা শুক্ত রহে। মুথে ব্যঙ্গ পরিহাস হূদে থেদ বাবমা कन्छन्य नुकारिया हटन , বাহিরে আলোক-পূর্ণ হৃদয়ে অঙ্গাব-ঃ প্রাণে সদা বহি-শিখা জলে। কেন হেন তিক্ত প্ৰাণ দিলে মোরে ভগবা এই সুগ-জগতে তোমার; নাহি কি কিছুই তায় মম সাধ মিটে যা কোন হেন স্থলর স্বতার। ফুলতক কত জাতি কত বৰ্ণ কত ভাগি আছে এই জগতমণ্ডলে: ধরা শুক্ত শোভাকর কত পশু পক্ষী ন্য रेनवान मुगान भीन करन। আকাশে টাদের শোভা জগতের মনোগোভা মনোহর তারকা ঝলকে, সেটি আদরের ^{তাব} বেটি মনে ধয়ে ধার চিরকার এই ধারা লোকে। উদ্যানে কাহার(ও) সাধ কুম্বমে কারো আংলা^র कांद्रा माथ श्रामान-खब्दन.

্ৰু বা পক্ষীৰ গান ভনিয়া জ্ডায় প্রাণ, কেহ মৃগ্দ স্থীত-শ্বণে। কহ ভলে চিত্ৰপটে কেহ বা কবিতাপাঠে কারোমন সৌলর্ঘ্যেমগন . কহ সুখী ধনাৰ্জনে কেহ সুখা ধনদানে कारता माथ ममुक्ति-माथन ! কহ বত বিলাভাবস কেছ বা বেশবিকাদে विवान-वामना करव रकश. কেহ অনাদরে তায় ভোগস্থ কেহ চায় বনে যায় তেয়াগিয়া গেছ। চন রূপে স্কজন কোন না কোন বন্ধন জনয়ে বেঁধেছে স্থুখ আ'শে; ষর্ণ করি সেই আশা জড়ায় কদি-পিপাসা অকল সাগ্রে নাহি ভাসে। গামারি জদি কেবল চায়া-শক মক-সল কোন বাসনায় বন্ধ নয়; কিছুই না গরে চিডে এত শোভা ধরণীতে. শৃত প্রাণে দেখি সম্দন্ত। কি হেতু হে ভগবান দিয়াছ এমন প্রাণ সুথের সাগরে সবে মজে , ংলে জলে ভ্ৰত্তে স্থাৰে লছরী চলে কি সে মুখ্ আমি মরি খুঁজে। স'ব আব কতদিন গ্ৰেছি অনেক দিন দিনে দিনে ডবি হে পাথারে, াহর এ প্রাণ হবি এ ডঃখ ঘচাও হরি এ যাত্ৰা দিও নাক কারে॥

মৃত্যু।

কে আসিছে অই আধার-রণ,
লোহদণ্ড কবে করিয়া ধানণ।
জলস্ত বিদ্যাৎ নয়নের ছটা,
দেহের বরণ খোর ঘন ঘটা,
চূপে চূপে আসি ছায়ার মতন,
মুম্র্ প্রাণীরে করে নিরীকণ।
মৃত্যাশ্যাশান্তি-শিয়বে দাডায়ে,
নিজ দণ্ড তার শরীরে ঠেকাফে,
বলে 'গুরে আয় আর দেরী নাই,
আয় সকে মোর, আমি নিয়ে ঘাই,
বে দেশে নাহিক ক্র্যাচন্দ্র তারা,

যেথানে দেখিবি অদেহী যাহারা. কোথা এবে তোর বয়স্ত বাহারা. যাহাদের পেয়ে হয়ে জ্ঞানহারা. যৌবন-মদিরা পিয়েছিলি রঙ্গে, কৌতুক, বিলাস, ব্যসন-তরঞ্জে, ভাবিতিদ ধরা সরার মতন: এখন তাদের কাদিছে ক'জন ? দেখ একবার এই শেষ দেখা. যাদের চিত্র ভোর প্রাণে লেখা. যাদেব পাইয়া মনের মতন. সাজাইলি তোর ভব-নিকেতন, পদ্র-পৌদ্ররূপ ভবরত্ব-চয়, কোথা ববে এৰে সেই সমুদর ? দেখে নে রে ভোর ক্রেহময়ী মায়, (আব কভ চথে দেখিবি না হায়,) काॅनिएड এখন इख नित्मश्रीता, ধরার পডিছে পাগলিনী-পাবা, দেও যাবে ভলে কিছ দিন পরে, কদাচিৎ যদি কভুমনে কবে। অই দেখ তোর প্রাণাধিকা নারী, ষারে লয়ে তই হ'লি রে সংসাবী. তোর মুথ চেয়ে করিছে ক্রনন, নিস্পন্দ নির্বাক পাষাণ যেমন, কিছকাল পরে সেও রে ভূলিবে, ফিরে এলে কাছে চিনিতে নারিবে, টাডায়ে শিষুৱে হাবায়ে সংবিৎ, অট যে তোমার প্রাণের স্থত্তং. शांदव कांट्र (भरन चांत्र मत्व (करन, थांकिएक मियम-ब्रक्तमी विवृत्त, কত দিন মনে রাখিবে তোমার, ভলিবে যে দিন পাবে অক কার। এই ষে রে ভোর গৃহ অট্টালিকা, মঠ, অখশালা, ভোরণ, পরিখা, এ नाइमिन्सित इत भूक्तिनी, বিচিত্ৰ চক্ৰিণী পতাকাশালিনী, (काथ) तरव जब मुक्तिल नवन, কে ভোগ কবিবে এ সব তথন ? তই নিজে ধাবি ভূলিয়া সকলি— দারা পুত্র স্থা এ ধ্রামণ্ডলী, धन, मान, गण, अधर्गा, विख्य,

দরা মারা স্নেহ জনকলরব. একাকী উলঙ্গ সঙ্গে যাবি মোর, কিছই সক্ষেতে যাবে না রে তোর। এই সব ভবে হয়ে চিন্তাকুল. আৰম ঘুরিলি ষেন বা বাতুল, সকলি ফেলিয়া খেতে হ'ল এবে, কার ধন হায় ! এবে কেবা নেবে ! সব(ই) ফেলে গেলি সৰ বিলাইলি. পথের সম্বল কিবা সঙ্গে নিলি ?" আচম্বিতে নাভিশাস দেখা দিল, মৃত্য-শ্ব্যাশারী নয়ন মুদিল, शैद्ध शैद्ध मथ इडेल बालान. সেই পথে প্রাণ করিল পয়াণ, ফুরাইল এক জীবের জীবন, ভাবিল ভবের একটি স্থপন, দিবস রজনীকত হেনরপ্র ওনিছে মানব শমন-বিজপ; দেখিছে নয়নে কত শত জনে, ম'রে ফুরাইছে প্রতি ক্ষণে ক্ষে, তবুও কিবা যে মারার বন্ধন, সে কথা কাহার(ও) থাকে না স্থরণ, কার সাধ্য বুঝে সংসার-রচনা 📍 ধক্ত বিধি। মারা-সঞ্জন-কল্লনা।

শিশু-বিয়োগ।

এ কি ভানি, কাব কালা হেন নিদাকণ, বুঝি বা জননী কোন হলে শৃক্ত কোল, কান্দিতেছে হেন রূপে করি উত্রোল, দিবানিশি কেঁদে চক্ষ্ করেছে অকণ!

কেন হেন ভগবান তুর্বল মানবে, কর দক্ষ চিরদিন শোকের অনলে, এ কি থেলা থেলাও চে এ ভবমওলে, ভাসাইয়া নর-নারী ভংগের অর্থবে।

কি পাপ করিল শিশু এই অল্পকালে, অনাহারে মৃত্যুম্পে নিকেপিলে তারে দ হ'ল না দগার পাত তোমার বিচারে ? কেন কর্মভূমে তবে ভাহারে পাঠালে ? না না, কিবা কোন পাপ ছিল না উচাঃ
মাতা পিতা পাতকের(ই) শুধু এই ফল,
কেন তবে দেখাইলে তারে এ ভূতল,
নির্দোষ জীবন কেন করিলে সংহার ?

অথবা সে পূর্বজন্ম ছিল মহাতপা, তাই তারে না ছুইতে ধরণীর ক্লেদ, সকালে সকালে তারে করিলে উচ্ছেদ, ভালবাসা জানাইতে করিলে হে কুণা।

এই যদি ছিল মনে ওছে দয়াময়, কেন তবে মায়ে তার দিলে গর্ভফ্রেশ, কেন আশা দিয়ে বৃকে ছুরি দিলে শেষ, প্রত্যু এ তো করুণার কার্য্য কতৃ নয়।

একবার মার মুগ চেমে দেগ তার, কি ছিল বা গত নিশি কি হয়েছে এবে, ডাকিছে তোমার দেব পূবাতে অভাবে, দেশক্তি ব্রহ্মাওপতি নাহি কি তোমাব গ

সে শক্তি না থাকে যদি আপনিই এস, কোল শোভা কর তার শিশুরূপ ধবি, তুমি ত সকলি পার এজনাথ হরি, কেন না এরূপে আদি অভাগীরে তোষ?

বৃদ্ধি না তোমার দেব ভব-লীলা-ণেলা, এক্লপে কেন বা স্থীবে হাসাও কাদাও, কেন মার কেন কাট কি সাধ প্রাও, স্মারায়-বিচার কি যে কেন বা এ থেলা?

ন্ধানি তুমি আছে সত্য ব্যক্ত চরাচরে, সত্য তুমি দল্পামল বুঝিতেও পারি, ভবের সহস্ত শুধু বুঝিবারে নারি, নিষ্ঠ্রতা হেরি তাম প্রাণ শিহরে।

দ্বাদ নামটি নাথ বডই মধুর, কলম হেরিলে তার প্রাণে বাথা পাই, তাই জিআাসিছি এত কম হে পৌসাই, মনের এ ঘোর ধাঁধা ভেলে কর চুর।

ব্ৰজ-বালক।

স্কারু ফুন্দর বিনোদ রায়. কে সাঞ্চালে তোমা হেন শোভায়. নয়ন বঙ্কিম কিবা সুঠাম, চাক গ্ৰীবাভঙ্গী ঈষৎ বাম, ভালে ভুরুষুগ আকর্ণ টান. অপাক্তকীতে চমকে প্ৰাণ, মোহন মুরতি চিকণ কালা, রপের ছটার জগ উজলা। মুখে মৃত্হাসি অলকা সাজে. মধুর মুরলী অবধের বাজে, শিথিপুক্ত চূডা ঈষৎ বাঁকা, ললাটে কপালে ভিলক আঁকা, নব-ঘনঘটা দেহের কান্তি. দেখিলে নয়নে উপজে ভ্রান্তি. পীতধড়া আঁটা কটিতে তায়. মেঘেতে বেন বিজ্ঞলী থেলায়, বক্ষঃ সুবিশাল কটি সু-ক্ষীণ, মনোহর বপুউপমাহীন. ভূজৰওলতাজিনি মুণাল, করপদতলচ্চটা প্রবাল। বন-ফুল-মালা গলায় সাজে, চলিতে চরণে নৃপুর বাজে, महेदद-(देश दिन्द-दोक. मनारे विरुद्ध निकुछ-मांग, স্থগন্ধ সৌন্দর্য্যে সদা বিহ্বল, मना बन्ध-ब्राम कौषाक्रमन. কদম্বের তলে মুরলী মুখে, ত্রিভঙ্গ-ভঙ্গীতে দাড়ায়ে স্থে, বাঁশরীর রবে শিথা নাচায়, বাঁশরীর রবে ধের চরায়, ষাহার মধুর বাশীর গানে, यम्नात कन हरन डेजारन, ব্রজের রাখালে অতুল রূপ, **बिरंग मोकारप्रक्** जगर ज्ल, হেন কালরপ আর কি আছে? এখন(ও) নাচিছে নয়ন কাছে। প্ৰেমভক্তি-পথ শিখাতে লোকে, बाद इकि भूवें रद बालादक,

এ ম্রতি ধার মনে উদর, এ জন কথন মাজুদ নয়।

কবিতাস্থন্রা।

অশোকেব তলে বেন শশী জলে হেন রূপবতী নারী, ভাবিছে একাকী করে গণ্ড রাখি অপূর্ব্ব শোভা প্রদাবি। স্থনিবিড কেশ ঢাকি প্রদেশ ছডায়ে পডেছে এলা, ঘুরিছে ফিরিছে উডিছে পডিছে প্ৰনে ক্ৰিছে পেলা। নব তণ্দল আসন কোমল বসেছে চরণ মেলি, বাঙ্গা পদতল করে ঝলমল তক্ৰ-দেছে আছে হেলি। করি-শুণ্ডাকার ক্রমে লঘতর উक किनि श्रकननौ , নিতম্ব পীবর ন্তন মনোহয় অফুট কমল কলি। ত্রিবলী-অঙ্কিত কণ্ঠ সুশোভিত পক্ষবিষ ওষ্ঠাণর . সিন্দূবে মার্জিভ মুকুতাব মত দস্তপাতি শোভাকর। মদনের গড শ্রবণ কুহব रामही मृग नामा , চক্ৰনিভানন, শেতাভ ববণ থঞ্জন নম্মন-ভাসা। শোভা মনোহব পুষ্প থরে পর শাখা এক শিরোপরে, मन्त भन्त (पार्टन প্ৰন-ছিলোলে বৈদে বামা গও করে। ডালে ডালে পাগী নানা বৰ্ণ মাথি ় করিছে মধুর গান , থেকে থেকে থেকে ডালে অঙ্গ চেকে কেহ ধরে উচ্চতান। তক্ষ অঙ্গে গাব মৰুমক বায়

পত্র কাঁপে থর থর ;

নিঝার-দর্পণে কত নিবজনে **अ**ह्नटवजा ८ माटन প্ৰন-হিলোলে নিজ নিজ বিষ হেরি। শক হয় মর-মর ! দ্লন্ত্ৰাণ সেবি কত বনদেবী ততুমনোহর কত ব্নচর ভ্ৰমে সাজি ফুল-সাজে, আবৃত রঞ্জিত লোমে; রত সর্বাঞ্গ দূরে সলিধানে নৰ্তন বাদন অভয় পরাণে সে শেব-কানন-মাঝে। অধিরত স্থে ভ্রমে। পুলকে পূরিয়া নাচিয়া গাহিয়া শিশু কাছে করি হরিণী সুন্দরী এরা সবে মাঝে মাঝে; ভ্রমে নৃত্য করি স্থাপ। প্রেম-ভক্তি ভরে পুলকেতে পূবে তুলে মৃণালিনী করিণী স্বথিনী আনন্দে বামাবে পুজে। (एवं निक भिचम् स्थ। করে অভিনয় মিলি বদ নয় গাভী বৎস চরে হাম্বার্থ করে বামাব প্রীতিব তরে, কেহ না দেখিলে কাম; করুণার দৃশ বীর বোদ্র হাস্ত চমকিত চিতে চরিতে চবিতে নয়নে তুলিয়া ধবে। তৃণ-মূথে মুগ যায়। মৰ্ভিমান হেন প্রাণে ভয় নাই সবরস যেন ভ্ৰমে নীল গাই জদয়ে প্রত্যের হয়; অদ্রে অথবা দৃহ্র , বদে বামা-হণি ক্রোধ ভয় আদি লোমণী স্বন্দরী বিচবে চমরী কভূ অশ্রধারা বয়। বনমাঝে ঘুরে ঘুবে। নৰবৃদ **মে**ণি প্রমত্ত উল্লাসে হেন রূপে কেলি সেথা পরকাশে ক'বে সমাদবে রাখে, কবি-প্রিয় গতুচয় , তৃষিত নয়নে সরস সুধ্যা কীড়া সমাপনে বসস্ত, ববষা বামারে ঘেরিয়া থাকে। শরৎ সৌন্দর্য্যময়। বসিয়াছে হেরি সে বামারে যেবি অতি ব্যাস্থান নিকটে উত্থান মহাপ্ৰাণী কত জন ; দেবতা গন্ধৰ্ম ভূলে, অনিমেষ নেত্ৰ নাহি পড়ে পন সদা সুশোভিত সুগন্ধামোদিত হেবে সে রান্ধা চবণ। নানা জাতিতক ফুলে। মহাজ্যোতিধ ব কত ঋষি নর সদা ভ্ৰমে তার ফুলে রেণু-গার বদেছে বামারে থেবে, मन यन मभीत्र , কতই বশসী चरमनी विष्मनी আকাশে দৌরভ মাটীতে সৌবভ কেবা সংখ্যা তার কবে; সুগন্ধ বর্ষে যেমন। **ৰ্যোতি ছড়াই**য়া সেখানে বসিয়া লতা-পত্র ঝরে গাছে মধু ক্ষরে, মহাকবি ঋষি ব্যাস; উডে ভৃঙ্গ মধুকর , সম জটাধৰ নব প্রভাকর ভবিয়া উন্থান সুষমা সুদ্রাণ বাল্মীক সেথা প্রকাশ। গদ্ধে ভরা সংখ্যের। **সুধাসম** ভাগ কবি কালিদাস মহিমাকে জানে সে সৰ উন্থানে বাণী-বন্ধপুত্ৰ যেই; নিত্য চল্লোদয় হয়: সেক্ষপীর কবি অমরের ছবি শশান্ধ উজ্ঞলা নিতা ধোল কলা विकली (यन (थनाई। চির-জ্যোৎসাফ্টেরয়। বুধের মণ্ডগী ধরণী উঙ্গলি ভ্ৰমে কন্ত সেথা অপার-বনিতা বদে দেপা স্তরে স্তরে, গীত বাখ নৃত্য করি ;

নিজ বন্ত ধ'বে সুধাকণ্ঠস্ববে সে চরণ পূজা কবে। হেরি সেই শোভা দেব মনোলোভা কার না বাসনা করে . পরিতে গলায় এ ৰশোমালায় রাখিতে হাদয় ধ'রে। অয়ি নিক্পমে মম হৃদি-পামে বাসনা আছিল কত, ত্ৰ আৱাধনা তোমার সাধনা কবিব জীবন-ব্ৰত। ভ্ৰেনিজ ভ্ৰমে বুথা পরিপ্রমে कीवन क्वारत्र अला, নালভিত্থন না সাধিত্ব পণ তুকল ভাসিয়া গেল। পডিয়া বিপদে এবে নহে সাধে আবার তোমারে ডাকি: হয়ে। ন। নিদয়া কর দাসে দ্যা ভক্ত ব'লে মনে রাখি; তুমি কেমস্কবি নিজে ক্ষমাকবি ভুল নামাক্ষেব মায়া; পুরাইও সাধ ক্ষমি অপরাধ क्छि (क्वि। शक्षांत्रा।

এবে কোথায় চলিলে ?
(সার রমেশচন্দ্রের মৃত্যু উপলকে)
এবে কোথার চলিলে ?
প্রথম ক্র্যোর প্রায়
এত দিন ধ্রাতলে স্কাগ্য সাধিলে,
দেশ অন্ধ্রার ক্রি কোথায় চলিলে ?

জগতের হিত-ব্রত সাধিতে মনের মত ঈখবের কোন্ রাজ্যে উদয় হইলে ? কোথা ওহে মহাপ্রাণ কোথায় চলিলে ?

এখন চলেছ ষণা সে দেশ কেমন ? কিবা তার হুল স্কল কি ঋতু সেথা প্রবল কুমুমের কৈ মুগন্ধ কেমন কিবণ ? কি পাধী দেখানে গান্ধ কি বৰ্ণ রঞ্জিত তান্ধ প্রাকৃতির কিবা শোভা কেমন গঠন ফু সে ফিতি মাটীর কিংবা গঠিত কাঞ্চন ফু

বায়ু বহে কি প্রকাব ফল-বৃক্ষ কি আকার গগনে আছে কি দেখা চন্দ্র-ভাবাগণে ? দিবাকর কিবা ত্যতি অনলেব কি আছতি স্কীবের সুধের গতি কেমন দেখানে ?

সেথা কি নিম'র থেলে
সেথানে কি শোভা ঢালে
নদ-নদী-শৈলমালা-গিরি ক্ঞবন
পে দেশে প্রাণের সথা মিলেছে এখন
দ্যা মায়া কোমলতা সে দেশে কেমন
থেলা-ঘরে থেলা সারি
সেই দেশ লক্ষ্য করি
বিহতেছে এক প্রাস্তে ফুর্বহ জীবন ;

একাকী যাইতে হয়
থেকে থেকে তাই ভয়
ভোমারে স্থাই তাই বল বিবরণ—
যেতে পথ কি প্রকার
আলো কিংবা অন্ধকাব
আছে কি কন্টক কিংবা ভূজজ-গৃৰ্জ্জন ?
স্থে কি কেশেতে সেথা হয়েছ উদয় ?
পথে পেয়েছিলে তক ?
কিংবা পথ শুধু মক ?
থেকে পথে মেলে ফল ?
যেতে পথে মেলে ফল ?
মেলে কি কৃষ্ণায় জল ?
প্রাণী তো চীৎকার ক'রে কালে না সেথায় ?

একাকী অজানা পথে
নি:সহায় বেতে বৈতে
অক্সাং প্রাণে যদি পেয়ে উঠে ভয়,
আতঙ্গে শিহরি ভবে
ডাকিলে চীংকার ক'বে
আাস কি রক্ষক কেই মহা দ্যানয়?

সধা ! জীবনের প্রহেলিকা
ভেদি ভব-কুহেলিকা
জীবন-পরিঝা-পারে কিছু কি ব্ঝিলে ?
বেরিয়া নখর কায়া
কেন এত দরা মারা
ফুরায়ে যার কি তাহা এ দেহ ভাকিলে ?

শ্বড় জীবে কি বন্ধন কে করিল সংঘটন জীবাত্থা মানব-দেহে কা হ'তে সঞ্চার দ এ গৃত রহত্ত-কথা প্রকাশ হয় কি সেথা অথবা সেথাও এই আলো অন্ধকার দ

কাল-অবেদ চিক্ রাখি
মহিমার জ্যোতিঃ মাখি
জ্যোতির্শন্ন দিব্য-ধামে তুমি ত চলিলে,
তোমারে হইনা হারা ধরাতে রহিল বারা
কি সাখনা তাহাদের কুডাতে রাধিলে গ তুমি কোণার চলিলে ?

ভোমারে পাইলে কাছে জুড়া'ত পরাণ,
কি মধুর মাদকতা সৌরডের াক স্লিগুড়া
সরস আনলভরা কি স্থা আঘাণ।
ভানিলে তোমার কথা ভূলিভাম সব বাথা
শোক ছঃথ ব্যাধি আলা পাইত নির্বাণ,
কোথা ওহে মহাপ্রাণ করিলে প্রস্থান ?
হা মিত্র, মিত্রভা তব করিয়া স্বরণ,
বলভূমি আজি কত করিছে জনদন;
কান্দিলে জনমভূমি
দেখিতে পারনি ভূমি
আজি দেখ দেশময় উঠেছে রোদন,
রোদনের প্রতীকার
করিতে পার না আর ?

ঢালি অঞ্চ অবিরত
সধা ব'লে ডাকি কত
নিদারুল বধিরতা বে দেশে এমন,
কোন প্রাণে সেথা তুমি করিলে গমন ?
কোনে বা ডোল আল, আবালা প্রণয়
একতেতে সব হয়
কোথাও পুধক্ নয়

হার স্থা সে ক্ষরতা গেল কি এখন ?

বিশ্রামত্বন কিংবা বিচার আগার, কত নিরজনে বাদ কত হাস্ত পরিহাদ কত সুথ আলোচন। কত শোক-পরিচর,

মন-কথা বলাবলি
প্রেমে কত কোলাকুলি
মিটালাপ •িলটাচার কত স্থমর ;
যৌবনে যশের আশা
একত্র বিজয়-তৃষ।
যুগাস্তের কথা যত আজি মনে হয় !

তুমি রোগে শব্যাপরে অক হরে আমি দূরে দেবিতে নারিছ তুরু বাবার সময়, আমারে বার্ধক্য-কটে দেখিলে না হায়!

কি আর বলিব সথা চির-ছবী হও।

সভাব দেবের স্তার আফা আর্ব্য দেবতার প্রাচ মলিন মর্ব্যের তরে ত্মি সথা নও;

দেবলোক হ'তে এলে দেবলোকে বাও।

সেবিয়ে দেবভাচর সে রাজ্য দেবজ্মগ
দেবনাথে দেবভার ভালবাসা লও,
দেবলোক হ'তে এলে দেবলোকে বাও।
দেববাসে দেব-পালে
দেবে দেব ভালবাসে
দেব-ভাবে দেবভারে ভালবাসা দাও,
দেবলোক হ'তে এলে দেবলাকে যাও।

কত সাধ হর মনে
মিলিরা তোমার সনে
ভ্রমি চরাচরমর করি নিরীকণ,
ভৌব-ন্তরে পরে পরে
ত্থ ডুঃথ কিবা ঝরে
ভীবের অনন্ত গতি কিসে সমাপন।

ফলিবে না সে আশা কি রুণা আবিঞ্চন, আমার বিযাস এই প্রণয়ের অন্ত নেই একবার প্রাণে প্রাণে প্রণয়ে বাঁধিকে; শ্বনন্ত কালেও শার
পার্থক্য নাহিক তার

ছই স্রোতোধারা যথা একত্র মিলিলে।

ভূল না ভূল না সথা

কথনো খপনে দেথা

দিও এই শ্বভাগারে কাতরে ডাকিলে:

ক্ৰালে কালেব ধেপা
অক্লে ভাসিরে ভেলা
ডেকে নিও নিজ-পাশে তাসিত হইলে।
কোথা ওহে মহাপ্রাণ কোথায় চলিলে?
প্রথন ক্রেয়র প্রায়
উজ্জ্বল করি ধরায়
এতদিন ধরাতলে স্কার্য্য সাধিলে,
দেশ অধ্বনার করি কোথায় চলিলে দ

मण्पृर्व ।

দশমহাবিদ্যা

গীতিকাব্য

নিম্পন্দ প্রনম্বন

দতীশৃত্য কৈলাদ।

नौर्च जिलनी।

चित्र देश्य मञीप्तर.**∗** শূক্ত হৈল শিবগেহ, वांमरत्व वित्रमवन्त । চাহেন কৈলাসময়. प्रत्थन किनाम नय. অন্ধকার বিধোর ভূবন। সতীমুখ-বিভাগিত, বে আলোক শোভা দিত, পুল্কিত কুম্বম-কানন। সুবর্ণ মণি উল্লগা, পেরে যে কিরণমালা সে আলোক নহে দরশ**ন** ॥ শুষ্ক কল্পডরু সারি ভঙ্ক মলাকিনী-বারি, শৃশ্বকোলে সতীসিংহাসন। নিক্ত্ম দৌরভ ভাণ, নিত্তদ্ধ জগৎ প্রাণ. কঠে ৰদ্ধ বিহন্দকুজন॥ कांन्सिट्ड दुवछवत्र, नम्ती चरत्र (त्रपूर्णत्र, প্রাণশৃক মূগেন্দ্র বাহন। मृत्त्र क्रांचि वांचायत्र, হেরিয়া ত্রিপুরহর বসিলেন মৃদি তিনম্বন। আনল-আলর যিনি. আৰি চিন্তাময় তিনি, ধ্যানে ধরি সভীদেহ-ছায়া। ছুড়ে ফেলি হাড়মাল. করে দিল ভশ্বজাল বিভৃতিবিহীন কৈলা কারা॥ মুথে "দত্তী--- দতী" স্বর বিনিৰ্গত নিরন্তর দিগম্বর বাহ্যজ্ঞানহীন। करत्र अभ्याना हत्न मूटथ वववम् वटन অক্ত শব্দ সকলি মলিন॥ মিলাইয়ে কিহ্নাজালা জলমগ্ন ফলিমালা লুকাইল জটার ভিতর।

অপ্রস্কৃট ঝরে রেণুপর॥ থামিল গঞার রব নিৰ্কাক প্ৰথম সং কৈলাস জগৎ অচেতন। কদাচিৎ "মা" "মা" নাদে व्यत्रःवि९ नन्ती कंति বম শক সহ স্মিলন ॥ কৈলাস অধ্যময় তারা স্ব্য অফুল ক্ষণকালে নিবিল সকল। তমঃচ্ছন্ন দিগাকাশ কেবলি করে উল্লাদ नौलकर्छ-कर्छत्र शत्र ग ধ্যানমগ্ন ভোলানাথ স্বন্ধে কভু তুলি হাত সভীরে করেন অন্বেষণ। পরশিতে পুনর্কার সুকুমার তহু তাঁঃ মমতার অভ্যাদ ধেমন। তথন নয়ন ঝরে পূর্বকথা মনে সর ঝরে যথা নদী-প্রস্রবণ। বিশ্বনাথ শোকময় निमौणिष (नवर প্রকৃটিরা করেন কলন॥ হারায়ে অর্দ্ধান্ত সতী कारमन देकनामनि কেবল সতীর কথা মনে। কাদিছেন হেরি শি জগতের জড় জীব কাঁদিতে লাগিল তাঁর সনে॥

নিরানন পুষ্পগ

महारमरबन्न विमाश ।

দীৰ্ঘ ভদ্জিপদী।

"রে সতি রে সতি" ≉ কাঁদিল প্রগাঁ — — পাগল শিব প্রমধেশ।

(—) চিহ্নিত বর্ণ দীর্ঘ এবং ক্ষকারাত প্রা

ক্ষেত্রেক্ত ক্ষ উচ্চারিত হইবে।

श्वमन्त हत्क हिन्न व्हेवांत्र शत ।

	-		
বোগ মগন হর	ভাপদ ৰত দিন	নিপুৰি ত্ৰিনয়ন	আফ্লাদে দেইকণ,
 ততদিন না	— ছিল কেশ।	 শ্ব'পরি	আসন মেলে॥
— শবহৃদি আসন	—- শ্মশান বিচরণ,	ৰীত কম লা পতি	বভনবর-পাত্তে,
—— জগত-নিরপণ জ্ঞানে ।		— নৰ-ভাবে প্ৰীত গিবিশ।	
— ভি কৃক বিষ ধব,	— তিরপিত অস্তব	—— পুষ্পকবাহন	— বাসব স্থ্যপতি, —
— আশ্রমবজি-নিরবাণে ॥		বৃষ্বর বহিন ঈশা। 	
— "রে সতি রে সতি"	— কান্দিল পশুপতি	"রে সতি অরে সবি —	হ," কান্দিল পত্পতি, —
বিক লি ত ক্ষু পরাণে।		প্ৰিল শিব প্ৰসংখশ !	
— ভিক্ক বিষধব,	— তিরপিত অস্তর,	্ৰোগ-মগ্ন হ র ,	তাপস হত দিন,
— 'আশ্রমবন্তি নিরবাবে।		— তত দিন নাছিল কেশ ∎	
— জলনিধি মন্তনে,	অমৃত উছ লিল ,	—— ভিক্ক আছ্রম	ঘ্ চিল অতঃপ ব,
— যভ সুর বাঁটিল ভাহে।		 তেব সহ মেলন শেষ ;	
 ভিশা- ভক ত হর,	— হ র ধিত অন্তর,	জুটাধর শক্ব,	নবমূপ পাগব
— গ্ৰাসিল গৱল প্ৰবাহে ॥		— পরিশেষ সংসারি-বেশ ॥ —	
— "রে সতি রে সতি"	— কাদিল পশুপত্তি	— হরু হ সুধাসম,	হ্নন্ম উচাটিত —
— · — বিকলিত কুৰ পৰাণে।		দ ম্প তি পবিণয় বাদে।	
— ভিক্ষক বিষধর	হ্বধিত অ্ন্ত ব	কত সুথে যাপন,	অহ্রত ব ৎস ব,
— সংসাররতি নিরবাণে ॥		— দক্ষ-তুহিতা ছিল পাশে ॥ ————————————————————————————————————	
 কারণবারিপরে	— হরি কম্ল†সন	 ষোগ-ধর্মপর	সৃহস্থরমে
— — ভুণা করি যে ক্ষণ হেলে ।		নিষ্গন এখন শভু;	

কি হেতু ভেয়াগিলি কেনই সমাপিলি. সবহি আগম পান-পিয়াসরত, সে সাধ এক দিন পরে॥ চারিবেদ সাগর অস্ব। "রে সভি অরে সভি কাদিল পশুপতি, "রে সতি অরে সতি" পাগল শিব প্রমথেশ।" পাগল প্রমথেশ শস্তু॥ ভাপদ ৰত দিন, বোগ-খগন হর কতবিধ খেলন. মুর্ভি-প্রকটন, তত দিন না চিল কেশ। ভূলাইতে শহর ভোলা. থাকিবে চিবদিন ক্রদিপটে অভন নারদের গান। ধীরললিত ত্রিপদী। সে সব বিলসিত লীলা॥ আানন্দ ধানি করি মুখে বলি হরি হ কুশা কেশিনীয়পে, রাজিলা বেই দিন, নারদ ঋষি রত স্থল**লি**ত নটনে। প্রবেশিল হেন কালে, বিভন্নী বাবে তাং বিচেত বিভূগানে ত্রিভূবন-ভ্রমণে॥ চারি হাতে বাদন ধরি. "কেবা হেন মতিমানু কে ধরে সেই জ শহা ভমুর বীণা কানিবে সুগভীর কগদীশ মরমে ॥ निर्नाहरन नाहिएन. অনন্ত পরমাণু বিকট বিষ্যুদ্ভ ত্রিভূবন চেতন হরি। উদ্ভব কোথা হ'তে কি হইবে চরমে। সচেতন জীবং হর হরি একান্ আদিতে ছিল কিবা জনমিল কারণে ? দ্রব হ'ল বাসব, দেবী অমর সব মানব কিরূপ ধন জড়েই কি বিশে অভ্সনে সঞ্চারে কিবা বিধি মননে ? অদ্ৰব বিধি প্ৰধীকেশ। স্থ কি জীবিতমানে ? কিবা অৰ্থ নিৰ্ম্বাণ বিসরিতে নারিব সেই দিন কাহিনী. কা হ'তে জনমিল জগতের যাতনা ? অভ্ড স্থান কার? নিরমিল বিধাত সে কাল রবে চিতলেশ। ষানদ হ'তে কি এ মলিনতা রচনা ? কিতি অপ তেজঃ নভঃ ভিন্ন কি এ সা পঞ্চ, কি আদিভূত অগণন গণনা ? "রে সতি অরে সতি" কাদিল পশুপতি, সেই ভল্ল নিরূপণ করিবারে কোন্ড পাগল শিব প্রমথেশ। সমর্থ দেব ঋষি মানবের ভাবনা ? হু**ল ভি সেই** গ গাও वौषा हति-शान নিক্ল মানি তারে পরিহর মানসে। সেই ৰোগ-সাধন কি হেতু ঘুচাইলে হরিৰাম লিখি প্রকাপ মনসূথে ভিকুকে বসাইলি ঘরে। সেই জানে জীবলোকে প্রকটিত হর্ষে। দ্ৰগৎ কি সুথধাম মধুর কি বিভূনাম গাও রে প্রেম্ভরে মনোহর বদনে। করার ঝন্ধার উল্লাসে বল আর ष्याञ्जाम मना किया माधुक्रन-क्षीयरन ॥ ধ্ব**ম ধ্রমপুর** আপন ক্রিয়াকব সংযত নিয়ম করি তাঁহাদেরি নিয়মে। योक्क अनि मात वांनी अना दब कांशांदब आयोगी স্থারে নাদ করি রঞ্জিয়া পর্মে॥ ত্রিণ্ডণে বে গুণময় ষা হ'তে এ সমুদয় উচ্ছাদে ডাক্ বীণা অবিরত তাঁহারে। দিবানিশি নাহি আন. সপ্তমে তুলি তান নারদ-মনোমত ধ্বনি বীণা বাজা রে "

> नांतरमत वीनांवामन । जन्मभनी भन्नात ।*

আনন্দ-গদগদ নারদ মাতিল। তন্ত্রী তুলিয়া তার মার্জিত করিল। मृद् मृद् ख्क्षन कश्रृति-सृद्रतः। সরিৎ প্রবাহিলা স্থলর বাদনে॥ কণু কণু নিকণ কোমলে মিলিয়া। ক্ৰমে গুৰু গৰ্জন সপ্তমে ছটিয়া॥ মিশ্রিত নানামুরে কভু উতরোল। স্বর-স্বিতে থেন খেলিছে হিলোল। চেতন আজি বেন ঋষিবর হাতে। বাণী ভাষিশ ধ্বনি মধুব ভাষাতে॥ রাগরাগিণী যত জাগ্রত হইল। রূপ প্রকাশিয়া ত্রিভূবন রাঞ্চিল। গ্রহ আদি ভাস্কর ছিল যত ভূবনে। বোধিল নিজ গতি সঙ্গীত প্রবৰে॥ স্ত্ৰবলোক মোহিত মোহন কুহকে। স্তম্ভিত বীণাপাণি স্থরতান পুলকে॥ কৈলাস-ভাষস বির্ভিত নিমিবে। মধ্যতভাতিল মনের হরিবে॥ আনন্দে তক্কুল মঞ্জরী হাসিল। আনন্দে তক্ল-ডালে বিহল সাজিল।

 হসন্ত চিহ্নাথাকিলে অকারার পদের হৈছিত অব এবং শুকুবর্ণ ঘণাবথ উচ্চারিত ইবে। শিক-শিবাবাহন বৃষ্ড কেশরী।
চঞ্চল চিত উঠে হববেতে শিহরি ॥
দে ধানি গশিল শিবহাদি ভেদিয়া।
জাগিল পশুপতি ঈবং চেতিয়া॥
বববম্ শবদ নিনাদি সদানন।
মেলিয়া ত্রিলোচন মুড্ মুড্ মন্দ॥
নির্থিলা নারদে প্রমন্ত বাদনে।
বৈহল শক্ষর ভকতের সাধনে॥
সাদরে তৃবি তাঁরে কাছে দিলা হান।
ভোর হইল ভোলা শুনে বীণাগান॥

শিবনারদ-সংবাদ।

লভিকাপদী। চেত্ৰ পাইয়া চেত্ৰানৰ নারদ-সঙ্গীত প্রবণে। ঈষৎ হাসিতে অধর মণ্ডিত ক্ৰেন স্থীৰ বচনে॥ "অহে ভক্তিমান ভ্ৰান্তি-বিলাদে শিবের প্রমাদ ঘটনা। অনাগৰ পিণী ভবপ্ৰদ্বিনী সভীবে নানবী ভাবনা ! আমারি এ ভ্রম ক্ষেহেতে বখন না জানি তথন ভূবনে; ভালবাদাময় জগতনিখিলে যমবাথা কত জীবনে! মমতা মায়াতে জগতেব লীলা খেলিছে আপনা স্থাপনি। মমতা মারাতে সকলি সুন্র প্র প্রানর অবনী ॥ ' জীবনে জীবন এ ডোববন্ধন ষদি না থাকিত জগতে। বিভ বিভাকর সকলি আঁধাব হইত অস∤র মরতে॥ বুঝি তথ্য সার কুহকেব হাব नातांत्रण कीर-भागतन । রচেন কৌশলে সোনার শিকলে পরাণী বান্ধিতে বন্ধনে !

শুন হে নারদ সে প্রমাদ নাই তোমার গভীর বাদনে। ১৯৯৯ কপিণী সভীৱে আবার নিব্ধিতে পাই নয়নে॥ পরমা প্রকৃতি পরমাণুমূল কারণ-কলাপ-মালিনী। চেত্ৰা ভাবনা মুম্ভা কামনা নিথিল অঙ্ররদ্বিণী॥ निविध आवाद नीमाविमामिनी ব্ৰহ্মাণ্ড কডাৰে বপুতে। ক্রীডারকে রত প্রমন্ত মহিলা নিবিড রহস্তমধুতে ॥" বলি বিশ্বনাথ জাহুবী-প্ৰপাত কটা হ'তে দিলা খুলিয়া। ব্বব্য-ধ্বনি উঠিল তথ্ন কৈলাস আকাশ পুরিয়া। হেরি মহাদেবে এ হেন প্রকৃতি নারদ চকিত মানসে। किकांतिल इटत कि मृत्रि ध'रित, দক্ষতা এবে নিবাসে॥ "হে শিব শঙ্কর মম ছঃথ হর কুপাতে কহ গো তনয়ে। দ্যাময়ী শিবা প্রকাশিলা দিবা উদিয়া কিবা সে আলয়ে॥ জননীর স্নেহ না জানি ভবেশ নাপশি কথন জঠেরে। ব্ৰহ্মার মানদে জনমে নারদ কননী কভু না আদরে॥ সে কোভ আমার ছিল না দেবেশ দাক্ষায়ণী-স্বেহ-সুধাতে। জননী পেয়েছি যথনি কেঁদেছি প্রাণের পিপাদা কুধাতে॥ কহি ত্রিপুরারি, কোথা গেলে তারি. **पदभन भूनः** लक्षित । সে রাজাচরণ মনের মতন, সাধনে আবার পুঞ্জিব॥" নারদে কাতর হেরি কন হর "অধীর হইও না ঋষি। (मथिटव এथनि महामामाकामा-ছারা আছে বিখে মিশি॥

বিশ্ব-আবরণ হবে নিবারণ
দেখিবে এখনি নিমিবে।
বিশ্বরূপধবা বিশ্বরূপহরা
থেলেন আপন হরিবে॥
দেখিবে এখনি অক্ত মূর্বতি
আপনার আনন্দে মাতিয়া।
বিজ্ঞারপ দশ ভ্বন প্রশ
করেছে আকাশ ভূজিয়া য়
মহাবোপী যায় দেখিতে না পায়
দে রূপ দেখিবে নয়নে।
এই ভবলীলা যেবা বিরচিলা
দেখিবে সে আদি কারণে॥"

শিবকর্ত্তৃক স্থৃষ্টি-আচছাদন অপসারিত। ত্রিপদী পদার। *

> মহাদেব মহাবেশ ক্ষণকাল ধবিল। ভীমরূপ ব্যোমকেশ পরকাশ করিল। বিদারিত রসাতল পদ্যুগে ঠেকিল। খোর ঘটা ভীম জটা আকাশেতে উঠিন। ছড়াইল क्षोडांकांल मिटक मिटक ছটিয়া। দীপ্ত যেন তাত্রশলা ভাতুকরে ফুটিয়া। हिममन्न धरामन शित्रि दयन উঠেছে। শৃন্তপুরী শিরে কবি বিশ্বপরে ধরেছে। মৌলিদেশে কলকল তরকিণী জাহনী। ঝরিতেছে ঝবঝর শতধারা প্রসবি॥ শশিৰত ধাক ধাক জলিতেছে কপালে। ত্রিনয়নে ভিন ভাতু জলে যেন সকালে। ব্ৰহ্ম-অণ্ড যেন খণ্ড মেকদণ্ড পডিয়া। বিশ্বনাথ উদ্ধৃহাত কৌতৃহলে পূরিয়া । ওঁকার তিনবার উচ্চারিয়া হরবে। ব্যোমকেশ বিশ্বতন্থ ধীরে ধীরে পরশে শাসরোধ করি ভীম শুনিলেন অচিতে। বিশ্ব অঙ্গ লুকাইল মহাকাল শরীরে।

প্রত্যেক পংক্তিতে তিন তিন পদ; প্রার্থ পদে আটি অক্ররের পর মধ্য বভি এবং শেষ পরে সর্ক্সানের পূর্ব বিত। শেব পদ কিছু ক্রতে উলারিব

এ কৈ একে জগতের আ বরণ ধসি ল ।		
চন্দ্ৰ-তারা-রশ্মি মে ৰ অ ভ্ৰসনে ভূবিল 🛭	পরতেক মণ্ডলে	ষহারপ-ধারিণী।
গিরি নদ পারাবার ছিল যত ভূবনে।	_	-
অহুক্ষণ অদর্শন মহাদেব-শোষ্টে।	লীলানিরত সভী	শ্বহর-ভামিনী॥
স্বৰ্গপুরী রদাতল হিমালয় ছুটল।	-	
ধারাহারা বস্থন্ধরা শিব-অঞ্চে মিশিল।	5ক্রজঠর-ভাগে	নীলবৰ্ণ আকাশে।
ঘুরে ঘুরে শুক্তপথে বিশ্বকারা ধার রে।	_	_
ঝড বেন অরণ্যের পল্লবেতে ছায় রে।	শত শত সুনার	ব্যোমরথ বিকাশে॥
জগতের আবিবণ নিবারণ পলকে।		_
দাঁডাইলা মহাদেব বিভাগিত পু ল কে॥	থেলিছে কতদিকে	কতমত ক্রীডনে।
বিশ্বমন্ন ঘোরতর অন্ধকার ঢাকিল।		_
শিবভাবে প্ৰজ্ঞনিত হতাশন জ্ঞানিল ॥	দামিনীলত। যেন	ঘনঘটা-মিলনে॥
দীড়াইলা মহেশ্বর করপুট পাতিয়া।	_	-
ধরিলেন বিশ্বরাজ প্রমাণু ভূলিয়া॥	চক্ৰগতিতে রেখা	গগনেতে পড়িছে।
গরাসিলা বীজমালা গভূষেতে ভ্রিয়া।		-
দাঁড়াইলা মহেশ্বর ত্তুফার ছাড়িয়া ▮	বক্র কিরণ ঋজু	কিরণেতে কাটিছে॥
মহাকাশ পরকাশ বিখণ্ঞ ভবনে।		_
শৃক্তময় ব্যোমগর্ভ নীল অভ্রবরণে॥	পূৰ্ণ বৰ্জুলাকার	কভুডিয়শোভনা।
শ তি স্বচ্ছ পরিষ্কৃত পারদের মণ্ডলী!	_	_
ছডাইয়া আছে ধেন দিক্চক্র উন্ধ লি ॥	স্থন্য নানাগতি	নানাৱেখা চালনা ॥
ভবদেব বিশ্বকায় আবরণ খুলিয়া!	***	_
कश्टिन नांत्ररमटत "ट्वि रम्थ हांश्या॥"	কণুকণু গুঞ্ন	রুথগতি স্বননে।
ব্যোমকেশরপ ত্যব্দি মহাদেব বসিল।	George Co.	-
মহাঝৰি চম কিত পূলকেতে পূরিল॥	কোটি নক্ষত্ৰ যেন	বিহারিছে ভ্রমণে ॥
——— নারদের মহাকাশ দর্শন।	चन स्ड পर्थ गणि	অনন্ত গণনা।
ফুভ ল লিত পয়ার।*	— মঞ্র মনোহর	ব্যাম বা ন খেলনা।
Arina stand		
হাঋষি নারদ পুলকিত হরবে।	नित्रशिना नात्रन	বিক্সিত মানসে।
		-
মনিমেষ লোচনে নির্থিছে অবশে॥	অন্ত স্ রব তারা —	সে গগন পরশে। —
—— — ফরেথাতে খুরি সারি সারি সাঞ্জিরা।	কিবা আলো উজ্জন	८गरे मन ज्वटन।
— — শদিকে শোভিছে দশপুরী হাসিয়া॥	নরলোকে সে আলে	— ানাহি জানে খপনে॥ ——
প্রভ্যেক পংক্তিতে ছুই চরণ, প্রভ্যেক চরণ	দিনমণি হেথা বায়	নেথা তার র জনী ।
পাঠ্য। (—) চিহ্নিত স্থানে দীর্ঘ উচ্চারণ এবং	नां जिट्ह मनभूती	নি নি রা অবনী॥
রাস্ত শব্দের অস্তেন্থিত (অ) উচ্চারিত হইবে।	नामध्य गण्डी	। नामना चपना

দশপুরী-ভিতরে। পরাণী কন্তই থেলে শীবকর্থে বিহরে। মধ্র কতই ধ্বনি বায়পথে শিঞ্জিত প্রাণিগণ-ভাষাতে। মধুকণ্ঠ ধারাতে॥ ভাসিছে তারা শনী শঙ্করে কহিলা। নারদ ঋষিবর রূপা যদি করিলা। "হে শিব, দাসামুজে বাসনা মম দেব কাছে গিয়া নেহারি। মোহন মারা ইহ কেবা আছে বিধারি॥" মুড হাসি রঞ্জিল महोराव-वादन। বিচলিত কৈলাস देकनाम हिनन ধীর মুত্রগতি শিবপুরী বসিল। মধ্য গগনভাগে দশপুরী রাব্দিত। কেন্দ্ৰ নিম্বিজ্ঞত দেথিল ঋষিবর সেই দশ ভূবনে ।

মহাশূতো দশব্রহ্মাণ্ডের স্থান-নির্দেশ। দীর্ঘ দণিড্রিপদী।

নিরখি নারদ ঋষি কতই আনন্দেরে। নবীন ভূবন এক প্রভালালে কড়িত। র্জনীতে তারকার ষেধানে গগন-গাঃ সিংহের আকার ধরি রাশিচত্রে ফিরিড. সেই খানে মনোহর, **অভিনব শো**ভাধন নবীন ভূবন এক-প্রভাকালে জড়িত-বিশাল জগতভাল দে গগনে ভাসিছে। कानक्रिभी कानौ तम ज्वत्म शामिरह । নির্থে নারদ ঋষি আনন্দে বিভোর রে! উদয় গগৰগায় মানবক্সার রূপে ধেথানেতে থাকিত, সে ভবন বামদেশে ব্ৰহ্মাণ্ড নবীন বেং উদয় হয়েছে শুন্তে দিক্চক্র শোভিত !— কন্তারাশি কোলে এবে ভবশোভা শোভিছে! তারা রূপিণী বামা সে ভূবন শাসিছে। নেহারি নারদ ঋষি কুতুহলে মাভিল। মনোহর নভপটে আকাশের সেই ডটে আগে যেথা ধহুক্সপে তারারাজি আছিল, त्मरेथात्न अराश्विव कुकूरता तम्थित । ভীম ব্ৰহ্মাণ্ডকায়া এবে দেখা ভাগিছে। ষোড়শী-রূপে বামা সে ভুবন হাসিছে। পুলকিত মহাঋষি পুনঃ হেরে প্রমাদে! বারিকুক্ত কাঁধে করি সেথানে গগনোপরি তারকাদ্ধপিণী যত সখীগণে থেলিত, সেধানে সে রাশি নাই বেরেছে ভাহার ঠাই-নিথিশ ব্রহ্মাণ্ড এক কিরণেতে ভাসিত। ष्मभक्रभ প্रভाমর বিশ্ব সেথা ফুটেছে।

বামা ভূবনেশ্বরী-রূপ তাহে সেক্ষেছে।

নেহারি নিকটে তার নারদ উন্মনা রে।

ফুটেছে অনস্ত শোভা কিবা ভার তুল্ল,

निहादि चिमिछ हरत, नात्रम छन्यना 🗁

বিচিত্ৰ জগত-কায়া

অনস্ত ধরেছে জায়া

রাশি-চক্রেতে ধথা মকর ভাসিত।

ভীমা ভৈরবী বিশ্ব সেথানে উদিত।

মহাঝৰি নিরখিল উচাটিত পরাণে—

রূব গগনকোলে বিপুল একাণিও দোলে
মহাকারা বিথারিয়া সেইমত বিধানে।
মহাঝৰি নেহারিল উচাটিভ পরাণে!—

মিপুন ডুবিছে শ্ভে সে ত্বন ছারাতে,
জগৎ ছলিছে বেগে ছিল্ল-ম্ভানারাতে॥

স্তম্ভিত মহাশ্ববি সহামারা-নটনে ! নবপে তুবন আর ঘোরতর রূপ তার, তারার কর্কট শোভা ছিল যথা গগনে, সেথানে সে রাশি নাই মহামারা-নটনে।— সেই ঠাঁই এক্ষণে সেই রাশি ডুবেছে।

ধুমাবতী-ক্লপিণী সে ভ্বনে বসেছে।

মহাম্নি নির্থিলা সে ভ্বন-পারশে, নহারিতে মনোহর সে মহা গগন'পর, কুলর শোভাযুক্ত মঙল ঝলসে, মহাম্নি নির্থিলা সে ভ্বন-পারশে !—

বাশিচক্রেতে বৃষ যেইথানে থাকিত। —

তীমা বগলাবিশ্ব এবে সেথা উদিত।

বিশোহিত অন্তরে মহাশ্ববি নেহারে, বিপুল একাণ্ডকারা কাছে তার বিহারে। কবা মনোহর বেশ ধরেছে গগনদেশ, নহাশৃক্ত বিভাগিত সে ভ্বন আকারে। নহাশ্বি নির্থিলা বিমোহিত অন্তরে॥—

মাত্ৰী ভূবৰ এবে সে আকাশে ফুটেছে।

भोनরাশি মজ্জিত কোন্থানে ডুবেছে।

नांत्रम निविधिमा घन घन नव्होन।

মণ্ডিতাকার থির মঞ্র গগনে !---

নির্থিলা নারদ,

कोठुक शमशम,

রমাপুরী বঞ্জিত স্থলর ববণে,

नांत्रप नित्रशिला यन धन नम्रत्न॥

খেত ৰারণ চারি বারি ক্তে ঢালিছে।

ক্ষলাত্মিকাবিশ্ব, মহাশুক্তে শোভিছে।

শিব-মারদ-বার্তা। ললিভ পরার।

मोर्वम ।---

নাবদ কাত্তর হেবি আতাশক্তি রদিমা।
শিবে কন, এ কি দেব, কিবা দেখি মহিমা॥
তত্ত্তিভা করি ফিবি ভবপুবি ভিতরে।
না দেখিস্থ হেন রুল কোন ঠাই বিহরে॥
এ কি মারা মহামারা জড়াইল অগতে।
এ দশ ভ্বন-মাথে লহ্দেব ভকতে॥
কুত্হলে বিকলিত প্রাণ উত্তলা।
হেরিব নিকটে গিয়া অনাতা মঙ্গা॥

শিব।-

ভূমি শিব কন ঋষি নিকটে না যাও রে।
কৌতুকে বিগাস বেগে এখানে জ্ডাও রে॥
বুঝিতে নিগৃত তত্ত্ব শিব বার্থ-বাসনা।
সে রহন্ত বুঝিবারে কেন চিত্তে কামনা॥
নারিবে হেবিতে সর্বা হেবিলে বা সেধানে।
মনোবাথা পাবে রুখা ও ভূবন-সন্ধানে॥
ভন্তমনী মানালীলা অসহ সে সহনে।
বিধি বিষ্ণু পরাজিত নাহি সহে কল্পনে ॥
সে রহন্ত নির্থিতে নিকটে না যাও।
অধানে বা পাও তাহে বাসনা মিটাও॥

नांत्रम ।-

পাব না কি সতীনাথ, সংস্বরূপা হেরিতে? ভক্তিমালা পারে দিরে জগদমা পৃজিতে? হে হর শঙ্কর, পূরিল না বাদনা! নারদের বুথা জন্ম বুথা ধর্ম-বাপনা!

শিব ।---

হবে না হবে না ঋষি বৃধা তব সাধনা।
ভজে কি বে ভজাধীন পাবে দিতে বেদনা।
ভবেতক্ত এই হানে জানিও বে গেম্বানী।
দিবাসকা। এইধানে সদা প্রাণি-মেলানি॥
মহাধিভা দশপুরী না কবি প্রবেশ।
ভগতের জটিলতা বৃশ্বং বিশেষ॥

ললিত দীর্ঘ-ত্রিপদী।

দেখিলা গগন-গার নারদ আনন্দ ভার আকাশ উত্তল করি প্রাণিগণ চলেছে। মানব-নয়ন গাঁধে বসন ভূষণ ছাদে বরণ অঙ্গের আভা জ্যোৎসা বেন ধরেছে ! ष्याकां में डेबन कति व्यानिशन हरनहि ॥ কঠোর মধুর ভাব প্ৰনে উভিছে বাস কঠোর মধুব রঙ্গে রসনাতে ভরেছে, ক্ষুদ্ধ দুৰ্পণচহায়া বদনেতে পড়েছে। আকাশ উজল করি প্রাণিগণ চলেছে। যেন বা শিরীয-ফুগ নানাবাকে বাধা চুল কিরণে কাহারও কেশ বিধরিয়া পড়েছে। विदिध-वद्रव शानी म्राप्ति करणाइ । নির্থিলা তপোধন ভার মাঝে অগণন িমানেতে প্রাণিগণ বায়ুপথে চলেছে। হ্বদয়-দৰ্পণক্ৰায়া বদৰেতে ফুটেছে।। हारम हारम शक्कात প্রতিজ্ঞান জনে তার নানাপাশ নানাফাসে গগদেশে পরেছে। বিবিধ শৃষ্ণলহার করপদ বেঁধেছে— কত প্রাণী হেন রূপে বাযুপথে চলেছে!

बार्गा-

খ্যিক ন মহাদেব এ কি দেখি যোজনা। কারা এরা কহ হেন সহে এত বাতনা ? এরপে শৃথালে বাবা, কে ইহারা কহ পো। ভবনাধ, তব দানে ভবধোরে রাথ পো। শিব ।---

জ্ঞানময় যত জীব সদানন্দ কন ।
সকল হইতে ছংখী এই প্রাণিগণ ॥
মাটার শরীর ধরে দেবের বাসনা ।
মিটে না মনের সাধ হৃদয়ের বেদনা ॥
আধভাদা সাধ যত পরাণে জড়ার ।
অসুথে কতই ছংখে জীবনে ধেলার ॥
দেবতুল্য বাসনার উর্জাদকে গতি ।
পশুতুল্য দিপাদার সদা দ্যমতি ॥—
মানবের নাম এরা জাবলোকে ধরে রে,
অসুখী পরাণী যত জগৎ ভিতরে রে ॥

नांद्रम् ।---

দরামর হব তবে দেই দব বন্ধনী।
মানবের পীড়া যার, দলা দিবা-রজনী ॥
হর তবে তাহাদের দেহকুপ পিঞ্জরে।
মন-শিখা বাধা মাহে ধরা হেন বিবরে।
ফেল তবে বড়রিপু-রজ্মালা ছিঁ ছিরা।
আশানল লহ, দেব হুদি হ'তে তুলিয়া ॥
হর তবে অককার জীবনের যামিনী।
হর গো কুহকুজাল আলো কর অবনী ॥
মানবের চিত্তনাঝে হেমমর মালবের।
ক্টিকের মৃত্তি যত চুর্ণ হয় অচিরে ॥
নিবার কালেরে, দেব, ভালিতে দে দব
ধরাতে তবে গো সুখা হইবে মানব ॥
শিব।—

नित कन ८१२ अदि घर नित ज्वरत।
(मशांत्म भूल ८३ और खोर-८११-वस्ता।
महाविछा-नमभूते १२३ खरे खाकारम।
खाछामक्तिक्रतभ मडो नोना यादर क्षकारम।

নারদের মহাকালীর ব্রহ্মাণ্ড দর্শন। ললিত ত্রিপদী।

শিব-বাক্যে ঋষি নারণ তথ্ন হৈরিল অনতদেশ! হৈরিলা গগন সে দেশ ভূধন অপুর্ব্ধ নবীন বেশ ॥

ৰুড়ি দশদিক আলে দশগুৰী

অভূত আভা তার।

অনস্থ উজল <u>নে আলো-ছটাতে</u> অনল নিবিয়া যায়॥ দেব-কাষিবর আভাশক্তি-নীলা দেখিতে তৃলিয়া আঁথি। স্থির নেত্রতারা গলক না পড়ে ক্ষণমাত্র শূদ্যে দেখি॥ বিশ্ব অন্ধকার দেখে তপোধন मृष्टिशां ठक्ष्रहः। গুরুন্ত কিরণে কাতর নারদ অন্ধের বাতনা সহে। বঝিয়ামহেশ ইবিতে তথন ললাট বিক্ষার করি। বাথিলেন নিজ সে বিষম **তেজ** ननाउ-(नाहरम धति॥ নিজেজ যথন সে ঘোর কিরণ मायुक्त कर्डन हर। "অই দেধ ঋষি অনাদি ভূবনে **শক্তিলীলা নির্ভর**॥" খভর হাদরে হেরিলানারদ শিব-বরে চক্ লভি। দেখিলা শৃষ্ণেতে ত্লিছে সঘনে ভীষণ বন্ধাওচ্ছবি ৷৷ তাদ্ৰবৰ্থ যথা দিবাকর-কায়া ভূবিলে রাহর গ্রাসে। দেখিতে তেমতি সে ভীম ব্ৰহ্মাণ্ড অঙ্গে আভা পরকাশে॥ ক্ধিব্রের ধারা চারি ধারে বঙ্গে বশ্বধারা ষেন ধার। জীবে নির্থিলে সে খোর জগৎ ত্তদর শুকারে যায়। দে জগৎ পুরি ংহিছে উচ্ছােদ, অম্বর বিদার করি। প্রণয়ের শ্বড বহে ষেন দৃরে चार्या नियोग छति॥ লক তুরীনাদ ^{কিং}বা **ষেন** হয় প্রিয়া শোকের তানে— েমনি প্রচণ্ড দারুণ উচ্ছাস নিনাদে ঋষির কানে॥ িনিদারুণ ধ্বনি मेरायब स्वि खबरन विवास खारन।

মৃৰ্চ্ছাগত হরে পড়ে শিবপদে को वव्य-त्नाक-शास्त ॥ চেতৰ পাইয়া চেত্ৰ-আনন্দ শিববরে পুনর্বার। নয়নে গলিভ দব অঞ্ধারা হৃদয়ে বেদনাভার **॥** নিরানন্দ-চিত্তে স্বান্দ্ৰ ঋষি কহেন কাতর মন। জীবে দয়াকর "হে শিব শঙ্কর নিবার ভব-ক্রন্ন॥ ঝষিদেহ ধরি कौरवत्र क्रमस्य क्षप्र (यमना भारे। জিলোক-ভিতরে না কাঁদে পরাণী নাহি কি এমন ঠাঁই ? ভমি আভতোষ তব ভক্ত আমি গৃঢ় ভত্ত নাহি জানি। बीद-कु:थ (मर्व) द्वांश किःवा लाक নিয়ত কাঁদে পরাণী॥ নারদের ঠাই ত্রিভুবনে তাই কোন থানে নাহি মিলে। বেড়াই ঘূরিয়া ত্রৈলোক্য যুডিয়া বিভূগান করি নিখিলে ॥ দতী শুভর্করী জননী আমার তুমি দেব পিতা সম। ঐ দীন পরাণে তব কি কারণ এরূপে আঘাতে মম।" (पर-श्रमीश्रद শুনিয়া কাত্তব মহেশ্ব কন বাণী।---না কাঁদে পরাবে "ভুন তপোধন ৰাহিক এমন প্ৰাণী॥ ব্রহ্মাও-ভিতর किंवा (मव नव कीवटमरु भटत (यह । রিপুর বাতনা ৰমের ভাডনা क्षमस्त्र भरत रह रमहे॥ সে দৃষ্ট বন্ধন ় बोरवत्र बीवन দেখিতে বাসনা বার। ৰমূহ যাভনা জ্বর-বেদনা পরাণে স্বাগিবে ভার।

শাভাশজিবলে বে নিরম চলে
শানাদি বাহার মূল।
নিরথিবে বদি হের দশরূপ
ভবার্থবে পাবে কুল॥"

মহাকালীর ব্রহ্মাণ্ড। লঘ্ডক পদ্ধার।

মহা ঋষি নিব্যিলা কালিকার জগতী। মহাশুল্ভে খুরিতেছে ভয়কর মুরতি॥ मलमल हेलमल আপনার ভ্রমণে। ছলে বেন চক্রনেমি ষতি ক্ৰত গমনে। হেন বেগে বিশ্ব ঘরে নাহি ঘুরে কল্পনা। গুমকেত ভীমগতি নহে তার তুলনা॥ আপনার বেগে ন্তিব মেরুদণ্ড উপরি। স্রোতোরপে খেলে ভাচে বেগধারা লহরী॥ সচেত্র অচেত্র ষত আছে নিথিলে। কৃমি কীট প্রাণিকায়া क्रमस्य स्म करलारम् ॥ বিশ্বরূপ প্রাণী জড় জন্মে যত সেথানে। ঘোররূপী মহাকালী श्रीरम पूथव्यामारन ॥ অঙ্গ হ'তে বেগে পুনঃ বেগধারা বিহারে। क्त्रान वनना कानी নতা কৰে ভন্নাৰ ঃ বুরে বুরে শৃক্তদেশে বিশ্বকায়া ফিরিল। বিভীষণ চিত্ৰ এক নেত্রপথে ধরিল ॥ অন্তহীন হিমরাশি হিমালর আকারে। ধবলের চূড়া বেন ধৃ বৃ ক্রে তুষারে ॥ নির্থিলা মহাঋ্ষি বিথারিত নয়নে। প্রলয়ের ঘোর বহিন হিম দহে দহনে॥ খণ্ড হ'লে হিমবাশি চণ্ডমৃর্বিধরিরা। ভীমশব্দে পড়িতেচে মহাশুলে থসিয়া ॥ ব্রহ্মাতের লয় যেন कांनारखन्न निनारमः। বিশ্বকেন্দ্রে বিশ্বনাথ পুরি কাঁপে भवम। অভিধানি খনখোর यशकार्य हुछिल। ममिरिक मम विश ঘন ঘুন ছুলিল।

(১) কালী মূর্ত্তি। জভ বনপদীজন। *

নারদ ঋষিবর কম্পিত ধর্থব विश्व विनावन छ्रुकात अवतन। মানস বিচলিত নেত বিকশিত **নং**যুত শ্রুতিপথ নির্ধিলা গগনে । নির্থিল অমরে অভানরভি ধবে চণ্ডিকা মহাপুরী পুনরপি ফিরিল। পুনরপি তঃসহ দতা ভয়াবহ শক্তি কেলিক্ৰমে প্ৰকটিত কৱিল ৷ দেখিল শ্রোতোময় **८थ** निष्ठ वी ि শোণিত অৰ্ণৰ কলকল ডাকিছে। শুক্তি শন্তক শাঁথ র**ক্তজনধিদেহ হেলি কেলি চলে**ছে। পদ্ৰগ সভীষণ ফলা প্রসাব উৎকট গর্জন তরকে ত্রিচে। কৰ্ম কম্ঠিকৃট दिश्वित्त क हेशी লোহিত ভ্ৰাত্ত্ৰ সংপুট খুলিছে ৷

কোলরসনা তিমি সিদ্ধতে তাগিছে

(--) এইরূপ চিহ্নিত স্থানে দীর্ঘ উচ্চাবী
পদের অত্যেহিত 'অ' স্পষ্ট উচ্চারিত হইবে।

थांशन किन जन्त

ললিত পরার।

নাবদ। দ্বাক্তিত অধি মহাদেবে কহিলা। এ কি দেব ঈশ্বর, যা আমার মহিলা॥ উৎকট ইহলীলা তাঁহাবে কি সম্ভবে ? সতী কি অশিব শিব, আছিলেন এ ভবে গ জীব-তঃথ তবে কি গো অনান্তারি রচনা? অদম্য তবে কি দেব পরাণীব ধাতনা ? জগৎ-স্জন-লীলা তঃল দিতে প্রাণীরে '? নাজানি কি ধর্ম তবে ধর দেবশরীরে। প্রচণ্ড বিভাত-ভাতি কেন দিয়ে পরাণে। কাদাইছ জীবলোক মায়াডোর বন্ধনে ? তত্ত্বাতত্ত্ব নাহি বুঝি তব ভক্ত ঈশ্বব। না বঝি তোমায় দেব কি কঠোর অন্তর ॥ ভক্তগণে দিয়ে কেশ নিজে কর ভঙ্গিমা। না জ্বানি জগদ্ধ এ কি তব মহিমা।" শিব। স্মরহর শহর কহিলেন নারদে--সর্ব্যন্থ দমনীয় মুক্তি আছে বিপদে॥ জানিবি রে নির্থিবি যবে অন্ত ভূবনে। বিরাজিতা সভী যাহে জীবছঃ ব হরণে।

ললিত-পয়াব।

হেন কালে স্থবিমল মহাঋষি নির্থিণ কালরূপিনী চণ্ডী কালিকার ভূবনে। বিথাপ্তিত নরদেহ পড়ে পচা শব সত ক্ষিরে মুধলধারা ধরা, বেন আবিবে॥

জনমিছে পুন: তায় পশু পকী নৱকায় সংগ্রামে পুনরার এ উহারে বধিছে। শীবন-ধারণ হেত ভবের **কলঙ্কতেত** কাহারও নাসিকা নাই কাহারও মুগু ঝুলিছে॥ কেছ নিজ মুপ্ত কাটে कोरत्र शुनः त्रक ठाएँ শাকিনীরূপিণী খোবা কালিকাবে ঘেরিয়া। অস্থি ঝরিছে অঙ্গে. মাংস ঝরিছে সংক কাঁদে জীব উচ্চনাদে তারা নাম ডাকিয়া॥ कालीव मिलनी बदल ছুটিছে তাদেব সঙ্গে খিলি খিলি হাসি মথে কি বিকট ভঙ্গিমা। মুখে মুগু চিবাইয়া করে করতালি দিয়া ডাকিনী ধাইছে কত---স্কণী ব্ৰজিমা। চলিছে ডাকিনীবুন্দ ৰুগতে ৰতেক হুদ্ ললাটে ঘোর ছটা উৎকট ছটিছে। তিনয়না ঘোৰ ভাষা কৃষির-বদনা বামা বহিন-বরুণ-বাযু সঙ্গে সঙ্গে ঘুরিছে॥ ব্দুডপ্রকৃতির চলে শবদেহ পদতলে---नुषु अपालिनो धनो छ इकावि नाहिए । বদনেতে বিদারণ সংহার নিরূপণ শিশুকর কডমডি চর্ববে গিলিছে ।

শতিকাপদী।

নারদ।--সদানক ঋষি নিবানক-মন কহেন তথন শঙ্কবে। "দেব আশুতোষ, নিধাব এ লীলা, ব্যথাবড বাজে অকরে ॥ এ যোব বৃহস্ত পাবি না স্হিতে. দেখাও আমারে জননী। ষিনি সতীক্তে সংসাব-পালিকা সর্ব্যকীবত: থহারিণী॥ শিব ৷--না হও নিবাশ, অবে ভক্তিমান্ ভূতেশ কল্মন নাবদৈ। তথেরি কারণ নহে জীবলীলা, মোচন আছে যে আপদে॥ কণামাত্র ভার হেরিলে নয়নে, আতার আদি বগতে। পূৰ্ব-ন্তুগ ইছ-জগত-ভাণ্ডাবে. দেখিতে পারিবে পশ্চাতে ॥

আছেত্ব বন্ধনে দশপুৰী,
ক্ৰমে জীব পূৰ্ব কামনা।
শোক হংগ তাপ সকলি দমন,
এমনি বিধানে বোজনা।
প্ৰ পৱ পৱ এ দশ জগতে
জীবের উন্নতি কেবলি।

অনস্ত অসীম কাল আছে আগে.
অনস্ত জীবিত্যগুলী ৷

নারদ।—ভনিয়া নারদ কহিলা শকরে, নারিব ধেরিতে নয়নে।

নারের হোরতে নরনে। প্রচণ্ড প্রতাপে আভাশক্তিলীলা নিগৃত্ এ সব ভূবনে॥ কছ কেমদ্বর, দাসে কমা করি,

বচনে জুড়ায় পরাণী। কোন্বিখমাঝে কিবারপে ধরি কৌড়াতে নিরভা ভবানী॥

শিব।—দেব আশুতে:ব কহিলা ঋষিরে "অহরে দেখ রে নেহারি।

পরে পরে পরে জগতীমওল রয়েছে গগনে বিধারি॥ ভিন্ন ভিন্ন রূপ ধরি শক্তিরূপা

। ভয় । ভয় দ্বাণ বার শাস্তেশা। জীবের নিস্তার কারণে। হের ঝবি অই তারার ভূবন

উঞ্লিছে কিবা গগনে।

(২) তারামূর্ত্তি। ধীর ধনপদীক্ষন।

ভীম লখেদিরা ব্যাত্তর্গ-পরা;

ৰটাত্রে উন্নভ পরগধারিণী ।

थएन कर्खदी करत क्यान छेर्यन धरत

इक्तिम द्रविक्ति पृत्र जिनवरत ।

বিরাজেন শঙ্রী সভী অই ভ্রনে।

(৩) ষোড়শী।

(৪) ভূবনেশ্বরী।

তা দ্বিনি স্থলর উন্নত শোভাধর

ভ্রনেশ্বরী শ্ববি, হের তার নিকটে।

পীনন্তনী বামা প্রভূর। ত্রিনরনা
প্রভাত-আভা দেহৈ, ইন্দু-ভাতি কিরীটে।

অঙ্গাভয়বর পাল-সম্মিত কর

সর্কমকলা সতী শীবহুঃথ বিনাশে।

সদা স্থাস্তম্ভা এধানে বিরাম্বিতা—

ল্পেহ জাগায়ে ভবে সভী মম বিকাশে।

(৫) ভৈরবী-মূর্ত্তি।

ভার উপর স্থার নেহার গ্রবিবর

কিবা শোভা মূলর জৈর ী-ভূবনে।

মাল্যে মূলোভিত মন্তক বিভূষিত,

রক্ত-লেণিত ভান, বুডা রক্ত বসনে ।

জান-সভর-দাআ জীব-উদ্ধারকর্ত্তী—

সহস্র মিহির ভূল্য শোভা দেহে ধারিণী।

রত্ত-কিরীটময় চন্দ্র উদর হয়

ভক্তি-বিধায়িনী ভৈরবী-ক্রপিণী।

(৬) মাতঙ্গী মূর্ত্তি।
স্থচাক্ষ মনোহর, হের নিকটে তার
অক্ত ভ্বন কিবা দোহল্য গগনে—
বীণা বাজিছে করে বাদন থরে থরে
ক্স্তল দলমল স্থলর বদনে॥
কলহংল শোভা সম খেত মাল্য নিকপম
ভামাদী শুদ্ধের মালা হুই করে পরেছে।
বীতি ভবতলে সর্বজীবহুঃখ দলে
মাতদীর রূপে স্থী পদতলে বংসছে।

(৭) ধুমাবতী।

কাছে তার দলমল যে ভূবন উজ্জাল আরও স্থনির্মল জিনি অন্ত ভুবনে ৷--मौर्घ। विज्ञन जम, কৃটিলনয়না বামা ধ্যাবভী ধরণে ॥ লম্বিত-পয়োধরা **ক্**ৎপিপাসাত্রা विमुक्त दिना वीमा कीव-ए: थ विनाटन। খ্ম ক্লান্তি প্ৰাণি কেশ যুচাইতে কৃক্ষ বেশ বিধবার ব্লপে নিত্য সতী হেথা বিকাশে। বিবৰ্ণা, অতি চঞ্চলা হত্তে স্থাপিত কুলা, রথধ্বজোপরি কাক্তিছ প্রকাশে। (৮।৯) বগলা ও ছিন্নমস্তা। मात्रिकानननीक्रण वर्गमात्र मतीरत्। टब्ब व्यात छेक्रांतरण यमानामानात द्वान ছিল্পতা ভরত্বী আত নিজ ক্ধিরে। বিকট উৎকট ক্ষি বিপরীত রতিমূর্ত্তি জগতের সর্বাপাপ নিজ অবে ধরিয়া p আপনার মুণাকর নগ্রবেশ বোরতার विश्वयव रमथारेट्स निववक छविवा ।

(১০) মহালক্ষী।

নেহার তাবপরি শোভে কমলার পুরী

রোগ শোক তাপ হরি, জীবিতের জীবনে ॥

কিবা বেশ স্থমোহন লীলারসে নিমগন

পরমাপ্রকৃতি সভী সর্কাশের ভূবনে ॥

স্বর্ণ বর্ণোত্তম কটিতে পিদ্ধন কৌম

স্বর্ণ-ঘটে চারি করী শিরে নীর ঢালিছে।

পদ্মাসনা, করে পদ্ম সভীসর্কাস্থবদ্যা

স্বাতে ভূবারে ভব জীব দুঃখ হরিছে॥

ললিত-দার্ঘ তিপদী। मित्रश्रीय वौषा धति আনন্দে হুদর ভরি তারে ভারে মিলাইয়া ঝকার তুনিলা। পানে জুড়াইয়া ক্ধা নিবিড রহস্ত-স্থগ মধুর সঙ্গীতস্রোতে মহাশ্ববি ভূবিলা। ছুটিছে ষেন নিঝর ছুটিল বীণার স্বর হুদর প্লাবন করি সুগভীর বাদনে। প্রকৃতির আদি লীলা ভবে কেবা নির্ধিশা মহাঋষি গাইলেন বিকলিত বচনে॥ কালেতে হইবে লয় "জগৎ অশুভ নয় জীবদুঃথ সমুদয় ত্রিগুণার ভজনে। এই কথা বুঝে সার আননেদ নিনাদ তার সত্যপথে রাখি মন অনাত্যের শ্বরণে। লিখি বুকে মোক্ষ নাম পুরা জীব মনস্বাম 'নিধিল নিস্তার পাবে' শিব কৈল আপনি। লক্ষ্য করি তারি পথ চল নিতা মনোরথ

জীবলন্মে ভয় কি রে ! — লগদদা জননী।

ডাক্ বীণা উচ্চে:স্বরে ডাক্ রে আনন্দভরে

নারদ ভ্লে না যেন সে তত্ত্ব এ জীবনে।

সকলের মূলাধার সকল সলর

নারদের চিত্ত যেন থাকে সেই চরণে।

জড জীবে দেহ মন বা ছইতে প্রকটন

অমুক্ষণ সেই রূপ হৃদিমাঝে জাগা রে।

পাই যেন পুনরায় পুলিতে সে রালা গায়

জগৎ মধ্ব কবি তারা নাম শুনারে!"

ভঙ্গদী পয়ার।

নারদের গানে শিব শঙ্কর মোহিল। বিদীর্ণ রসাতলে পদতল পশিল। ধীরে বিপুল দেহ ক্রমে বাডে সম্বনে। ধৰ্জটি জটাজট পুন: ছুটে গগনে।। চ্ছ প্রকৃতি-লীলা মিলাইয়া চকিতে। **অম্বে বায়ু মে**খে ছড়া**ইল অ**রিতে॥ উक्कन निममनि भूनः (পরে কিরণে। দেখা দিল ফুলর জগতের নয়নে। পুনঃ সে ঘাদশরাশি নিজ নিজ আলরে। মনোহর বেগ ধরে জগতের উদয়ে। ধীরে মলম্ব-বায়ু প্রবাহিত স্বপনে। ধর্ণী ধরিল শোভা সহাস্ত-বদনে॥ ক্ষে ফুটিল লভা ভরুকুল হরবে। ছুটিতে লাগিল পুনঃ স্লোতোধারা তর্গেঃ পতক কীট পভ পুনঃ পেয়ে চেডনে। গুঞ্জিল চিতস্থৰে প্ৰকটিত জীবনে॥ মিলাইয়া দশরূপ উমারূপ ধরিল। হরগোরীরূপে সভী হিমালয় উদিল ॥ ভালিল কৈলাসপুরী উমা হেরি নয়নে। কেশরী বৃষক্ত ছুটি লুটাইল চরণে॥ 'ৰবৰম বৰবম্' ধ্বনি শিব ধরিল। মহাঋৰি পুলকিত শিবশিবা পুঞ্জিল।

কবিতাবলী

ভারত বিষয়ক

ভারত-ভিক্ষা। 🛎

(আরম্ভ)

কি ভনি রে আজ পুরি আর্থ্যদেশ
এ আননদ ধানি কেন রে হয় ?
র্টিশ-শাসিত ভারত-ভিতরে
কেন সংব আজি বলিছে 'জয়' ?

গভীর গরজে ছুটিছে কামান জিনি বজ্ঞনাল, গিরি কম্পামান বিদ্ধ্য-হিমালয় চুড়াতে নিশান

"রূল বুটানিয়া" ব**লি উড়ায়।** শত শত শত উড়িছে পতাকা, ভবন-বিথ্যাত ঠিহু অঙ্গে আফা.

নগরে নগরে কোটি অট্টাণিকা শোভিয়া, হুচারু অনস্তকায়।

ভাসিছে আনন্দে ভারত বেড়িয়া দেব-অট্টালিকা সদশ শোহিরা,

ব্দর্ধন-ভরণী কেভনে সাজিয়া কৃষ্ণা, গোদাবরী, গলার গায়।

নদীনদকুল কেতনে সজ্জিত, কোট কোটি প্রাণী পুলকে প্রিত,

বি**বিধ বসন-ভ্**ষণে ভ্ষিত, চাতকের স্থায় তীরে দাঁড়ায়।

চাত্ত্বের হার তাবে । ম্কা-অন্তরীপ হ'তে হিমালয়

> কেন রে আজি এ আনন্দ্রর ? (শাখা)

ণাদিছে ভারতে বৃটন-কুমার,

তন হে উঠিছে গভীৰ বাণী;

্১৮৭৫ সালের ডিসেম্বর মানে প্রিক্ত আফ বিংস্ কলিকাভার আগমন করেন। তত্ত্পলক্ষে টিংবিতা লিখিত হয়:

যেই বুটানিয়া কটাক্ষে শাসিয়া व्यवाद्य मिथ्टि क्रमधि-क्रम. অত্র জিনিয়া পৃথিবী ব্যাপিয়া অমিছে যাহার সেনানীদল: সে বটনবাসী আসি এ ভারতে कांगात कांगिन वरळव निथा. ৰাব্ৰ দৰ্পতেজ ভারত-অঙ্গেতে অনল-অক্ষরে রয়েছে লিখা, বিনিল সমর যে ভীম-প্রহরী ক্ষিরবিক্ত ভারত-গড় মুদকি, মুলভান করি খান খান. শিখ-গলে দিল দুঢ় নিগড়; दिनाम उर्जनी नहेना प्रायाशा वांट्याबावा गाव कहांटक कांट्य. প্রচণ্ড সিপাহী-বিপ্লবে যে বহিং নিবাইল তীব্ৰ প্ৰচণ্ড দাপে। যার ভমে মাথা না পাবি তুলিতে हिमगिति (इँ विष्कात थान. পডিয়া বাহার চরণ নথরে ভারত ভুবন আজি দুটায়—

গগন ভেদিয়া, "জন ভিক্টোরিয়া

রাজবাজেগ**ী**, ভারতরাণী।"

(পূর্ণ কোরস্)

কুমার আদিছে জলবি-পথে,

ভারতবাদীরা দ।ড়ায়ে প্রে।

वांका द्वा चानत्म गठीत मुम्ब, भूवनी भृद्व स्टब्ट मात्रव,

সেই বুটনের বাঞ্কুল-চূডা

নির্ধিয়া তাম জুড়াইতে আঁ।বি,

বীণা পাথোগান্ত মৃত্ করতাল, মৃত্ল এপ্রান্ত লালিত রসাল, বাজা সপ্তথ্যরা মন্ত্রী মনোহরা, ভ্রমব গঞ্জিয়া বাজা রে সেতারা,

বেহাগ খাখাকে প্রিরা তান।

বুটনকুমার আদিছে হেথার সাজ পেশোরাজে পরীর শোভার, ভূতল-রদ্ধিনী মোহিনী যতেক, কিল্লর নিন্দিল্ল শুনাও বারেক — শুনাও বারেক মধুর স্কীত, আজি এ ভারতে ভূপতি অতিথ, ভান-লহ-বালে পুরাও গান।

(আরম্ভ)

চারিদিক যুডি বাজিল বাদন,
বাজিল বুটিশ দামামা কাঁডা,
অপ্কভ্মণ্ডল করি জোলপাড
ভারত-ভ্বনে পড়িল সাডা
—

"কোথা নূপকূল নবাব আমীর, রাজ দববারে হও রে হাজিব, করিয়া সেলাম নোয়াইয়া মাথা ছাডি সাঁচটা জ্ডা চুণি পায়া গাঁথা বিলাভী বুটেতে পদ সাজাও।

"জাজ পাতি ভূষে হইয়া হবিব প্রশি সন্ত্রমে কুমার বৃটিশ, ববাভয়প্রদ চাক কর্মজন, জুলিয়া জুক্তেত হইয়া বিহ্বল অধ্ব-ক্রেডেড বীরে হোয়াও।

"ভবে মোক্ষকল রাজ-দরশন, ভারতে দেবতা বুটন এখন, দেই দেবজাত মহিখাঁ-নন্দন দর্শনে পূর্ব্ধ-পাপ যুচাও।

"কোথা কাশীরাক কোথা হে দিক্কিলা ? কোথা হোলকার রাণী ভোপালিরা মানী উদিপুর বোধ মহীপাল ? হিন্দু ত্রিবাঙ্গ্র শিথ পাতিরাল ? মহম্মদ রাজা কোথা হে নিজাম ? কোথা বিকানীর কোথা বা হে জাম্ ? ধোলপুর রাণা; জাঠের রাও ? "পর শীত্র পর চাক পরিজ্বদ, অর্বোতে সাজাবে আজি রাজপদ ॥ কর দিব্য বেশ হীবা মুক্তায়, ভাবত-নকত্র বাঁধিয়া গলায় রাজধানী-মুধে ধাবিত হও । 'বোটকে চডিরা কের পাছে পাছে

"লোটকে চডিয়া দের পাছে পাছে
কিরণ ছড়ায়ে থাক কাছে কাছে,
ছারাপথ যথা নিশাপতি কাঙে,
থেরি চারিধার শোভা বাড়াও।
ক্র রাজতেট নবাব, আমীর,
রাজদরবারে হও হে হাজির—"
বাজিল বুটিশ দামামা কাডা,
করি ভোলপাড় নগর পাহাড়,

(백행)

ভারত-ভুবনে পড়িল সাডা।

মেদিনী উজাডি ছটিল উল্লাসে গাজেন্দ্র কেশরী যত, দাভাইতে পাশে, পারিষদ-বেশে শিরোগ্রাবা করি নত , দেপ রে ইক্সিতে ছটিল পাঠান আফগানস্থান ছাডি. ক্ষত্রির ভূপতি ছটিল কাশার হিমালয়ে দিয়া পাডি: দ্রাবিড, কম্বণ ভোট মালোবার. মহারাষ্ট্র, মহীশুর, মিথিলা, মগধ, কৰিক, উৎকল,

অবোধ্যা, হতিনাপুর .
বুনেলা, ভোপাল, পঞ্চনদত্তন.
কচ্ছ কোঠা, নিরুদেশ,
চাখা, কাভিয়ার, ইন্দোর, বিটোর,
অরবিল-গিরিশেষ,
ছাডি রাঞ্চণ ছটিল উন্নাদে,

রাজধানী-দিকে ধার, পালে পালে পতজের মা নির্থি দীপশোভার;

ছুটিল অধ্যেতে, রাজপুত্রগণ চন্দ্র-সূর্য্য-বংশ-বীর।

জলধি—বন্দর, হিমাজি ভ্^ধ দাপটে হয় অস্থির! কোথা বা পাণ্ডব কৈলা রাজস্ম হাপরে হন্দিনা-মাঝে। রাজস্ম বজ্ঞ দেগ একবার করিতে করে ইংরাজে!

(পূর্ব কোরস্)

অপ্র স্বন্ধ মোহন সাজ সাজে কলিকাতা পরিল ১াজ: দাবে দাবে দাবে গৰাক-গায় বঞ্জিত বসন চাক শোভায়, দ্বাবে থাবে থাবে গৰাক-কোলে তরুণ পল্লব প্রনে দোলে: ধ্বজ। উডে চুডে বিচিত্ৰকায় ঝক ঝক ঝলে কলস ভার , কোটি ভাবা ষেন একত্রে উঠে. (मोध-इएड-इएड न्याइ म्राहे ; গহ, পথ, মাঠ কিরণময়---নিশিতে ধেন বা ভাত্ন উদয়। উঠিছে আত্সবাজী আকাণে---সব ভাবা ৰেন গগনে ভাসে। পন্য কলিকাত। কলি বাজধানী। সুবপুৰী আজি প্ৰাজিলে মানি-হাদে দেখ নিশি লাজে প্লায়।

দেখ দেখ দেখ চতুবদ দলে
বাজীপৃষ্টে সাজি, বাণাপুজ চলে;
পাছে পাছে কাছে ঘোটকপব
চলে বাজগণ জলে জহব
শিব শোভা কবি উজলি তাজ,
তবকে তবকে পথিব মাঝ,
নগব দর্শনে কবে গমন,
ঝমকে ঝমকে বাজে বাদন,
বুটিশেব ভেবী শমন-দমনে,
"কল বুটানিয়া, কলে দি ওয়েভদ্"
সঞ্চীত তবকে নিনাদ ধায়।

(আগ্ৰহ্ম)

ঠ মা উঠ মা ভাবত-জননী মহিবীনন্দন কোলেতে এল; াধার রজনী এবাব ভোমাব বিধির প্রসাদে ঘুচিন্না গেল।

আদিবে ধব মা ক্মারে স্স্তাধি षानी सीम वांवी फेकावि मत्थ. বছ দিন হাবা হয়েছি আপন তন্ত্রে না পাও ধবিতে বুকে; অবৰ উঠিল তাজ শ্যা মাত: কিবৰ ছড়াতে তোমাৰ ভূমে. কেঁলো না কেঁলো না আব গোজননী আ চেচ্ন হইয়াশোকে ব ধ্যে। চিবছঃখী তুমি চিব-প্ৰদীনা. পবেব পালিতা আশ্রিত সদা. তুমি মাঅভাগী. অন্থা, চকলা, ख्क्रन-शक्रन-(याग-म्शन्।। মহিষী তোমান য়াহার আশ্রেষ জগতে এগন(ও) আছ মাজিয়ে, পাঠাইলা তব তঃগ ঘুৱাইতে আপন তন্ত্রে বিদায় দিয়ে . দেখাও জননী. ধবিলা গো ষত বিপু-পদ চিছ ললাট-ভাগে. দেপাও চিবিয়া. ক্ত বকঃস্থ দিবানিশি দেখা কি শোক জাগে। देत्र या देत्र या ভাবত-জননী, প্রসন্ধননে বাবেক কেব. মহিধীনক্ৰে কোলেতে কবিয়া প্রাতে শুক্রতারা উদিল, খেব !

(**41**91)

ভ্যুক্তি শব্যাভল ডাকি উচ্চে:বং নিবিভ কুন্ধল সরাথে অন্তনে, গভীর পাণ্ডুব বদনমণ্ডল, আলোক প্রকাশি, নেত্রে অশ্ভল, "কেন রে এগানে আসিছে কুমাব ?

ভাৰতের মুগ এবে স্করকাব।

কি দেগিবে স্মান্ত— খাছে কি দে দিন ?
ক্রন্তনী কবিয়া ছাটত যে দিন
ভারত-সন্ধান নৈর্থাত ইশান,
মুখে জয়ধননি তৃলিয়া নিশান,
ভাগায়ে মেদিনী গাহিত গাগা।

ভারত-কিরণে জগত কিরণ, ভারত জীবনে জগত জীবন, আছিল বধন শাক্ত-আলোচন,
আছিল বধন বড় দরশন—
ভারতের বেদ ভারতের কথা,
ভারতের বিধি, ভারতের প্রথা,
পুঁজিত সকলে,
ফিনিক, দিরীয়, য্নানী-মণ্ডলে,
ভাবিত অম্দ্য মাণিক যথা।

ছিল ববে পরা কির ট কুণ্ডল,
ছিল যবে দণ্ড অথণ্ড প্রবল—
আছিল রুধির আর্য্যের বিরাম,
অলস্ত অনল-সদৃশ শিথার,
অগতে না ছিল এ হেন সাহসী
বাইত চলিয়া এ দেহ পরনি,
ডাক্তিরখন 'জননী' বলিয়া
কেল্প্রে কেল্প্রে ধানি ছুটত উঠিয়া,
ছিলাম তথন অগধ-মাতা।

পাব কি দেখিতে তেমতি আবার, ক্রোড়েতে বদিয়া হাদিবে আমার, ডাকিবে ক্মার জননী বদিয়া, ইউরোপ, আমেরিকা উচ্ছাদে প্রিয়া,— ভারতের ভাগো, অহো বিধাতা দ

পূৰ্ব্ব-সহচহী হোষ দে আমার মরিরা বাঁচিয়া উঠিল আবার— গিরিশেরও দেধি জীবন-সঞ্চার। আমি কি একাই পড়িয়া রব ?

কি কেন পাতক করেছি ভোমার । বল্ ওরে বিধি বল্ রে আমার । চিরকাল এই ভয়নও ধরি, চিরকাল এই ভয়চ্ডা পরি, দাস-মাতা বলি বিণাাত হ'ব।

হা রোম,—তুই বড ভাগাবতী !
করিল যথন বর্ধরে তুর্গতি,
ছিম কৈল তোর কীর্প্তিন্ত যত,
করি ভয়শেষ রেপু সমাবৃত
কেউল, মন্দির, বহু, নাট্যশালা,
গৃহ, দর্ম্মা, পথ, সেতু, পরোনালা,
ধ্রা হ'তে বেন মুছিয়া নিলা।

মম ভাগ্যদোৰে মম বেজ্গণ,
কক্ষ, বক্ষ:, ভালে পদাস স্থাপন
করিয়া আমার, তুর্গ নিকেতন,
বাথিয়া মহীতে—কলক্ষ-মণ্ডিত,
কানী, গ্রাক্ষেত্র চণ্ডাল স্থণিত,
(শরীরে কালিয়া—দীনতা প্রতিমা)
ধরণীর অক্ষে যেন প্রীথিল

হার পাণিপথ গারুণ প্রান্তর,
কেন ভাগ্য সনে হলি নে অন্তর ?
কেন রে, চিতোর তোর হুথ নিশি
পোহাইল ববে, ধরণীতে মিশি
অচিহ্ন না হ'লি — কেন রে রহিলি
অগতে অণিত ভারত নাম

নিবিছে দেউটি বারাণদী তোর, কেন তবে আর এ কলক বোর, লেপিয়া শরীরে এখন রয়েছ পূর্মকথা কি রে সকলি ভূলেছ [।] আরে অগ্রান্, সঃযু পাতকী রাছ-গ্রাস-চিক্ সর্ম-অলে মাধি, কেন প্রকালিছ অবোধ্যাধাম

নাছি কি সলিল, হে যমুনে গলে, তো(মা)দের শরীরে— উথলিরা রলে, কর অপস্তত এ কলভরাশি, তরকে তরকে অস বস গ্রাসি,

ভারত-ভ্বন ভারাও কলে

হৈ বিপুল সিদ্ধু করিরা গর্জন
ভ্বাইলে কত রাঞ্চ, গিরি বন,
নাহি কি সলিল ভ্বাতে আতার ?
আত্মে করিয়া বিদ্ধা, হিমালর,
লুকারে রাধিতে অতল কলে?

(পূর্ব কোরস্)
কৌদ না কৌদ না, আর গো জননি
মহিবীনলন কোলেতে এল,
আধার রজনী এবার তোমা
বিধির প্রদাদে ঘৃতিরা গেল,
মহিবী তোমার, বাহার আশ্রেদ,
পাঠাইলা তব অঞ্চ মুছাইলে

कांशन मस्तर्न विशास हित्त,

ত্যজ শ্ব্যা মাতঃ, অরুণ উঠিল কিরণ ছড়াতে তোমার ভূমে; কেঁদ না—কেঁদ না আর গো জননি আছের হইরা শোকের ধ্যে।

(আরম্ভ)

"এলো কি নিকটে – এলো কি কুমার ?" বলিল ভারত-জননী আবার, "কই, কোথা, বংস, আয় কোলে আয়, অন্তর অলিছে দাকণ শিথায়—

পরশি বারেক শীত্রল কর, ভাক্ একবার, ডাকিন্ যে ভাবে আপনার মারে ঘুচা দে অভাবে— শতবর্ষে যাহা নহিল পুরণ, (ভারতের চির-আশা-আকিঞ্চন)

ভূলিয়া বারেক বুটিশ গর্জন,

ভারত-দজানে ক্রোডেতে ধর। কৃষ্ণবর্ণ বলি তৃচ্ছ নাহি কর, নহে তৃচ্ছ কীট—এদের অস্তর দরা, মারা, অেহ, বাৎসন্য, প্রণর, মান, অভিমান, জ্ঞান শক্তিমর— এদেরও শরীরে শিরার শিবার বহে রক্তপ্রোত,—বাসনা তৃঞ্চার

দ্বণা, লজ্জা, ক্লোভে হ্ৰবর দতে , এই ক্লফবৰ্ণ জাতি পূর্বের ববে, মধ্মাথা গীত শুনাইল ভবে, শুক্ত বস্ত্রুপ্রতা শুনি দেব-গান অসাড় শরীরে পাইল প্রাণ, পৃথিনীর লোক বিশ্বরে প্রিয়া, উৎসাহ-হিলোলে সেধনি শুনিয়া

দেবতা ভাবিরা অন্তিত রহে।
এই ক্লফবর্দ জাতি সে যথন,
উৎসবে মাতিরা কবিত ভ্রমণ,
নিধরে নিধরে জলধিব জলে,
পদাক অন্তিত করি ভূমওলে
জগত ব্রহ্মাণ্ড নথর-দর্পণে
খুলিয়া দেধাত মহল-সন্তানে,
সমর-ভ্রারে কাঁপিত অনল,
নক্ষর অর্থিব আবিশ্যাধ্যল—

ত্থন তাহারা ছণিত নতে;

বধন জৈমিনি, গর্গ, পতপ্তলি,
মম অকস্থন শোভায় উজ্জিন,
অনাইল বীর নিগৃত বচন,
গাইল বধন কৃষ্ণবৈপায়ন,
জগতেব তৃঃধে স্তক্পিলবজ্যে
শাকাসিংহ ববে তাজিলা গার্হস্থা,

ভখন(ও) তাহারা স্থিত নচে।
তাদেরই ক্ষিত্রে জনম এদেব,
দে পূর্ব-গৌবব দৌবভের ফের
ক্রদ্যে জড়ায়ে ধমনী নাচায়,
দেই পূর্ব পানে কড় গর্কে চায়---

এ জাতি কখন জবন্ধ নহে;
হে কুমাব মনে রেখো এই কথা,
বে ভারতে তুমি ভ্রমিতেছ হেথা,
পবিত্র সে দেশ—পৃত-কলেবর
কোটি কোটি প্রাণী ঋষি পুণাধর
কোটি কোটি জন শৃর বীর নব
কবি কোটি কোটি মধুর অন্তর,

রেণুতে তাভার মিশাবে বচে ।
ভান হে বাজন্। বনের বিহঙ্গে —
প্রিলে তাভারে যতনেব সঙ্গে,
নিজাবে থাকিলা দেই সুথ পায়।

প্ৰিলে ভাচারে যতনেব সংশ, পিল্লবে থাকিলা সেই সুথ পায় ৷ প্ৰাণের আননেক কড়গীত গাঁহ ৷ বনের মাতক যতনে বশ,

বিংনার মাওদ বভামে বন
কোকিলের অবে জগৎ তৃই,
বামসের ববে কেন বা কই দ
কি ধন বল সে কোকিলে দেয়,
কি ধন বল বা বামসে নেয় দ
একে মিইভাষা—হন্দ্য সরল,
আন্তে ত্তিই অৱ প্রাণে গবল,

धवा होत्र मवल क्रमत्व-वम ।

আমি বংগ ভোৱ জননীর দাসী, দাদীর সন্তান এ জাব চবাসী, ঘুচাও চু:থের যাতনা তাদেব, ঘুচাও ভবের যাতনা মাহেব,

শুনারে আখাস মধুর করে। কি কবে কুমার প্রনি-বক্ষ কাটে মনের বেদন। মুখে নাহি সূটে, দেখ দিবানিশি নয়ন করে। বুটিশ-সিংহের বিকট বদন, না পারি নির্ভরে করিতে দর্শন, কি বাণিজ্যকারী অথবা প্রহরী, জাহানী গৌরাদ, কিংবা ভেকধারী,

সমাট ভাবিয়া পুজিব স্বাবে। এ প্রচণ্ড তেজ নিবার কুমার, নয়নের জল মুছা বে আমার, ভারতসন্থানে লয়ে একবার,

ভাই বলে ডাক্ হৃদি জুড়ায়।
দেখ বৎস, দেখ কি উল্লাস আৰু,
নির্থি তোমারে এ তৃবনমাঝ,
কোটি কোটি প্রাণী করি উর্দ্ধংগত
মণিছে স্থনে কাজি সুপ্রভাত—

তপ্ত অশ্রধারা নয়নে ধার।
ফিরিবে বথন জননী-নিকটে,
বলো বাছা তাঁরে বলো অকপটে
ভারত-ব্রহ্মাও-প্রাণী এককালে
ভাকে তাঁরে নাম প্রাত:-সন্ধাকালে,
তাদের পরাণ যেন জডার।"

104 8 1811 64-1 9

(শাখা)

বলিয়া ভারত মুছিয়া নয়ন, তুষি আশীর্কাদে মহিষী-নন্দন ঢাকিয়া বদন অদুশু হয়।

(পূর্ণ কোরস্)

ভারতে আধি বে বিরাফে কুমার ভারতে অরুণ উদিল আবার, বাজিল বৃটশ-শিকা ঘনে ঘনে, "জয় ভিক্টোরিয়া-কুমাব জয়"!

ভারত-বিলাপ।
ভারু শব্দ গেল, গোধ্লি আইল,
রবি-কর জাল আকাশে উঠিল,
মেল হতে মেলে থেলিতে লাগিল,
প্রথম শোভিল কিরণজালে;
কোথা বা স্থন্মর ঘন কলেবর
নিন্দ্রে লেপিরা রাথে থরে থর,
কোথা ঝিকি ঝিকি হীরার ঝালর,
বেন বা ঝুলার গগন-ভালে।

সোনার বরণ মাথিরা কোথার
জলধর জলে, নরন জুড়ার,
জাবার কোথার তুলারাশি প্রার
শোভে বাশি রাশি মেবের মালা।
হেনকালে একা গিরে গঙ্গাতীরে,
হেরি মনোহর সে তট উপরে
রাজধানী এক, নব শোভা ধ'রে
ররেছে কিরণে হয়ে উজলা।
বিতলা, ত্রিতলা, চৌতলা ভবন
স্থানর স্থানর বিচিত্র গঠন

গোধূলি রাগেতে বঞ্জিত কার।
অদ্রে হুৰ্জ্জন হুৰ্গ গডথাই
প্রকাণ্ড ম্বতি, জাগিছে সদাই,
বিপক্ষ পশিবে হেন স্থান নাই;
চবণ প্রকালি জাহুনী ধার।

চবৰ প্ৰকালি জাহৰী ধাৰ ' গডের সমীপে আনল উন্থান, ৰতনে বন্ধিত অতি রমাস্থান, প্ৰদোৰে প্ৰত্যুহ হয় বাজগান,

নয়ন, আবণ, ততু জ্ডায়। জাহুবী-সলিলে ওদিকে আবার দেখ জলধান কাতারে কাতার ভাসে দিবানিশি—গুণবৃক যার, শালবুক ছাপি ধ্রঞা উডায়।

শালর্ক ছাপি ধ্বজা ডডার
আহে বঙ্গবাসী, স্কান কি তোমরা
অপকা জিনিয়া হেন মনোহরা
কার রাজধানী, কি জাতি ইহাবা,—

এ স্থধ-সোভাগ্য ভোগে ধরায়

এ স্থধ-সৌভাগ্য ভোগে ধরায়। নাহি যদি জান এগ এইথানে, চলেছে দেথিবে বিচিত্র বিমানে রাজপুক্ষেরা বিবিধ বিধানে — গরবে মেদিনী ঠেকে না পায়।

অদ্বে বালিছে "রল ব্রিটানির।" শকটে শকটে নেদিনী ছাইর। চলেছে দাপটে ব্রিটনবাদীর।—

ইন্দ্রের ইক্সত্ব আছে কোথার ? হার বে কণাল, ওদেরি মতন, আমরাও কেন করিতে গমন, না পারি সতেজে—বলিতে আপন বে দেশে জনম বে দেশে বাস। ভরে ভরে বাই, ভরে ভরে চাই, গোরাজ দেখিলে ভৃতলে লুটাই. ফটিয়া স্কোরি বলিতে না পাই--

এমনি সদাই কুদমে আস। কি হবে বিলাপ করিলে এপন, স্বাধীনতা-ধন গিয়াছে যথন, মনের মাহাস্থ্য হয়েছে নিধন

তথনি সে সাধ গিরাছে ঘুচে। সাজে না এখন অভিলাব কবা আমাদের কাজ সূধু পারে ধরা, মন্তকে ধরিয়া দাস্তের ভরা

ছুটিতে হইবে ওদেরি পাছে। হায়, বস্কুন্ধরা, তোমার কপালে এই কি ছিল মা, পড়ে কালে কালে বিদেশীর পদে জীবন গোঁয়ালে

প্রাতে নারিলে মনের আশা। রূপে অফুপম নিখিল ধরায়, করিয়া বিধাতা ক্লিলা তোমায়, দিলা সাজাইয়া অতল ভ্রায়--

তোর কি না আজি এ হেন দশা। হার রে বিধাতা কেন দিয়াছিলি হেন অলভার , কেন না গঠিলি মকভ্মি ক'রে অরণো রাখিলি.

এ হেন যাতনা হতো না তার। তা হ'লে এখানে করিত না গতি পাঠান, মোগল, পাবস্ত, দুর্ঘতি, হরিতে ভারত-কিরীটের ভাতি,

অভাগা হিন্দুরে দলিতে পার। এই ধে দেখিছ পুরী মনোহর শত গুল আহো শোভিত স্কার, এট ভাগীরথী করে থর থর

যাইত তথন কতই সাথে। গান্বিত তথন কতই স্থবে, এই সব পাথী তক্ত শোভা ক'রে, কতই কুমুম-পরিমল ভরে

ফুটিরা থাকিত কত আহলাদে। আগেকার মত উঠিত তপন, আগেকার মত চাঁদের কিরণ ভাবিত গগনে গ্রহ-তারাগণ

চন অংশভারাণ। মুরিত আনাননের ধরিয়া ধরা। বপন ভারতে অমৃতের কণা হতো বরিষণ বাজাইত বীণা ব্যাস বাল্মীকি বিপুল বাসনা

ভারত-হৃদয়ে আছিল ভরা।

ষ্থন ক্ষত্ৰির অভীব সাহসে ষাইত সমরে মাতি বীররসে হিমালর চূডা গগন প্রশে

গায়িত ধথন ভারত নাম।

ভাবতবাসীরা প্রতি ঘরে ঘরে গাইত যথন স্বাধীন অন্তরে ম্বদেশ মহিমা পুলকিত স্বরে জগতে ভারত অতুল ধাম !

ধন্স ব্রিটানিয়া ধন্স তোর বল এ হেন ভ্ভাগ ক'রে করতল, বাজত্ম করিছ ইলিতে কেবল — তোমার তেন্তের নাহি উপনা।

এখন কিঙ্কব হয়েছি তোমার মনের বাসনা কি কহিব আর ° এই ভিকা চাই কর গো বিচার অথর্ব্ব দাসেরে কর গো ক্ষমা।

দেথ চেয়ে দেথ প্রাচীন বয়সে, তোর পদতলে পড়িয়ে কি বেশে কাঁদিছে সে ভূমি প্রিত যে দেশে, কত জ্বনপদ গাহে মহিমা।

আনে ছিল রাণী ধরা-রাজধানী আরণে যেন গো থাকে দে কাহিনী, এবে দে কিকরী হয়েছে তুঃথিনী বলিরে দন্ত করো না গরিমা!

ভোমারো ত বৃকে কত শত বার রিপু-পদাবাত কবেছে প্রহার, কালেতে না জানি কি হবে আবার—
এই কথা সদা করিও ধ্যান !

ভরে ভরে লিখি কি লিখিব আর, নহিলে শুনিতে এ বীণা-ব্যুৱার, বাজিত গরজে--উধলি আবার উঠিত ভারত বাধিত প্রাণ।

ভারত-সঙ্গীত।

(ভারতবর্ধে যথন মোগল বাদসাহদিপের
অত্যন্ত প্রায়ুভাব এবং মোগল দৈছ গণ ক্রমে ক্রমে
ভারতভূমি আক্রম করিয়া মহারাট্ট অঞ্চল আক্রম
করে, তথন মাধবাচার্য্য নামে এক জন মহারাট্টার
রাজ্মণ অবদেশের হীনতার একান্ত হুংথিত হইরা
অবদেশের স্বাধীনতা রক্ষার নিমিত্ত নগরে নগরে
এবং পর্বতে পর্বতে ভ্রমণ করিয়া বীরম্ব এবং উৎসাহ-প্রাহ্ক গান করিয়া বেড়াইতেন। শিবামীর
সময় হইতে তাঁহার প্রশীত স্বীত মহারাট্টারদিপের
মধ্যে সর্ব্বত প্রতি এবং অত্যন্ত আদ্র্বীর হয়।
মাধবাচার্য্যের মৃত্যুর পর ক্রান্ত গায়কেরা দেশে
দেশে দেই গান করিয়া বেড়াইতেন। এই প্রবাদ
অবলম্বন করিয়া ভারত-স্বীত লিখিত হইয়াছে।)

"আর ঘুনাইও না দেখ চকু মেলি দেখ দেখ চেরে অবনীমগুলী, কিবা অসভিতে কিবা কুতৃংগী, বিবিধ-মানব-জাতিরে লয়ে। মনের উল্লাসে, প্রবল আবাসে,

মনের উল্লাসে, প্রথম আখাসে, প্রচণ্ড বেগেতে, গভীর বিখাসে, বিজয়ী পতাকা উড়ায়ে আকাশে,

দেখ হে ধাইছে অক্তোভরে।
কোথা আমেরিকা নব অভ্যানর,
পৃথিবী গ্রাসিতে করিছে আশার,
হয়েছে অবৈধ্য নিজ বীধ্যবলে,
ছাড়ে হছঙার, ভ্যওল টলে,
বেন বা টানিয়া ছি'ড়িয়া ভ্তলে,

ন্তন করিয়া গড়িতে চায়।
মধাছলে হেথা আজমপুজিতা
চির-বীধ্যথতী বীর প্রস্বিতা,
অনস্তরে বিনা যুবানী-মণ্ডগী,
মহিয়া-ছটাতে জগৎ উজ্লি

কোতৃকে ভাসিরা চলিরা বার।
আরব্য, মিনর, পারস্ত, তৃরকী,
ভাতার, তিবত—অস্ত কব কি ?
চীন, বৃদ্ধদেশ, নবীন জাপান,
ভারাও স্বাধীন ভারাও প্রধান,
লাস্ত করিতে করে হেরজান,
ভারত করেই স্থানের বর !

বান্ধ রে শিকা বান্ধ্ এই রবে, সুবাই স্বাধীন এ বিপুল ভবে, সুবাই স্বাগ্রত মানের গৌরবে, ভারত শুধুই ঘুমারে রুর।

এই কথা বলি মূথে শিলা তুলি শিবরে দাঁড়াবে গাবে নামাবলী, নয়ন-জোতিতে হানিয়ে বিজ্লী,

গারিতে লাগিল জনেক যুবা।
আয়তলোচন উন্নত ললাট,
স্থগোরাক ভন্থ সন্মানীর ঠাট
নিখরে দীড়ারে গায়ে নামাবলী,
নরনজ্যোতিতে হানিল বিজ্ঞনী,

বদনে ভঃতিল অতুল আংভা। নিনাদিল শৃক কৰিলা উচ্ছুান, "বিংশতি কোটি মানবেৰ বাস, এ ভারতভূমি যবনের দাস ?

আ ভারতভ্যে ববনের দান দু রুষেছে পড়িয়া শৃক্ষলে বাঁধা। অব্যাবর্ত্তজ্ঞী পুক্ষ বাহার। দেই বংশোন্তব জাতি কি ইহার। দ জন কত ভুণু প্রহুমী পাহার।

দেখিয়া নয়নে লেগেছে ধাঁধ। ধিক্ হিন্দুক্লে ! বীরধর্ম ভূলে আবাতা অভিযান ভূবাবে দলিলে

দিয়াছে সঁপিয়া শত্ৰ-করতলে সে,নায় ভারত করিতে ছার।

হীনথীর্য সম হয়ে ক্নডাঞ্জলি মন্তকে ধরিতে বৈরি-পদধূলি, ফাদে দেব ধার মহাকুতুহলী

ভারতনিবাসী যত কুলালার ৷

এদেছিল যবে আর্থাবর্গুন্ম দিক অন্ধকার করি তেজোধ্মে, রণ-রদ মন্ত পূর্ব পিতৃগণ . যথন তাহারা করেছিলা রণ, করেছিলা জর পঞ্চনদগণ,

তখন তাহারা ক'জন ছিল

আবার বংন জাহুণীর কুলে, এসেছিলা ভারা জয়ড়ন্তা তুলে, বমুনা কাবেরী, নর্মনা পুলিনে, ন্ত্ৰাবিড়, তৈলঙ্গ, দাকিণাত্য বনে, অসংখ্য বিপক্ষ পরাজরি রূপে,

তথন তাহারা ক'জন ছিল ? এখন তোরা বে শত কোটি তার, বদেশ উদার করা কোন্ ছার, পারিস্ শাসিতে হাসিতে হাসিতে, অমেক অবধি কুমেক হইতে, বিজয়ী পতাকা ধরার তুলিতে,

বারেক জাগিয়া করিলে পণ।

তবে ভিক্কপাতি শক্ৰপদতলে, কেন বে পডিয়া থাকিস্ সকলে ? কেন না হি'ডিয়া বন্ধন-শৃভালে,

স্থাধীন হতে করিস্না মন ?
আই দেথ সেই মাথার উপরে,
রবি, শশী, তারা, দিন দিন খোরে,
ঘ্রিত যেরপে দিক শোভা ক'রে

ভারত বধন স্বাধীন ছিল। সেই আর্য্যাবর্ত্ত এখন(ও) বিস্তৃত, গেই বিদ্যাগিরি এখন(ও) উন্নত, সেই ভাগীরথী এখন(ও) ধাবিত, পুরাকালে তারা বেরপ ছিল।

কোথা সে উজ্জ্ব হতাশন সম হিন্দু বীরদর্প বুজি-প্রাক্রম, কাঁপিত বাহাতে স্থ'বর জ্বম,

গান্ধার অবধি জলধি-সীমা ? সকলি ত আছে সে সাহস কই ? সে গন্তীর জ্ঞান নিপুণতা কই ? প্রবল তরক সে উন্তি কই ?

বল তরক সে ডয়তে কই ? কোথারে আজি সে জাতি-মহিমা!

হয়েছে শুশান এ ভারতভূমি, কারে উজৈঃবরে ডাকিতেছি আমি ? গোলামের জাতি শিথেছে গোলামি।—

আর কি ভারত সজীব আছে ?

সন্ধীর থাকিলে এখনি উঠিত, বীরপদভরে মেনিনী হুলিত, ভারতের নিশি প্রভাত হইত,

হার রে সে দিন ঘূচিরা গেছে।" এই কথা বলি অঞ্চিন্দু ফেলি, কণমাক্ষ্যা গ্লনাদ ভূলি, পুনর্কার শৃষ্ণ মূথে নিল তুলি,
গজ্জিরা উঠিল গন্ধীর স্বরে,
"এখন(ও) জাগিরা উঠ রে সবে,
এখন(ও) সৌভাগা উদয় হবে,
রবি-কর-সম দ্বিগুল প্রভাবে,

ভারতের মুখ উজ্জ্বল ক'রে। একবার ভার্ কাতিভেদ ভূলে, ক্সন্তিয়, আক্ষণ, বৈখ্য, শুদ্র মিলে কর দৃঢ় পথ এ মহীমণ্ডলে

তৃলিতে স্থাপন মহিমা-প্রজা। জপ তপ আর যোগ স্থারাধনা, পূজা, হোম, যাগ, প্রতিমা-স্পর্চনা এ সকলে এবে কিছুই হবে না,

ত্ণীব কপাণে কর প্রা। বাও সিদ্ধনীয়ে ভ্ধর-শিখবে গগনের এই তয় তয় ক'রে, বাযু উকাপাত বজুশিখা ধ'বে

স্বকার্য্য-সাধনে প্রবৃত্ত হও। তবে সে পারিবে বিপক্ষ নাশিতে প্রতিষ্দী সহ সমক্ষ হ'তে, স্বাধীনতারপ রতনে মণ্ডিতে,

ধে শিরে এক্ষণে পাছকা বও ছিল বটে আগে তপস্থাব বলে, কার্য্যাসিদ্ধি হ'ত এ মহীমণ্ডলে, আপনি আসিদ্ধা ভক্ত-রণস্থলে

সংগ্রাম করিত অমরগণ। এখন সে দিন নাহিক রে আব, দেব-আরাধনে ভারত উদ্ধার হবে না—হবে না—ধোল ভরবার,

এ সব দৈত্য নহে তেমন। অস্ত্র-পরাক্রমে হও বিশাবদ রশ-রদ-রদে হও রে উন্মাদ— তবে দে বাঁচিবে খুচিবে বিশদ

ৰূপতে যন্ত্ৰপি থাকিতে চাও। কিসের লাগিয়া হলি নিশেহাবা, সেই হিন্দুলাতি সেই বস্থন্ধরা, জানবুদ্ধিজ্যোতি: ভেমতি প্রথনা,

তবে কেন ভূমে প'ড়ে দুটাও। আই দেখ সেই মাধার উপরে, ম্ববি, শশী, তারা, দিন দিন ধোরে, ঘরিত ষেরপে দিক শোভা ক'রে. আৰত যথন সাধীন ছিল। দেই আগ্যাবৰ্ত এখন(ও) বিস্তৃত দেই বিদ্যাচল এখন(ও) উন্নত, সেই জাহুনী-বারি এখন(ও) ধাবিত, কেন সে মহত্ত হবে না উজ্জেল ? ৰাজ রে শিঙ্গা বাজ এই রবে, শুনিয়া ভারতে জাগুক সবে, সবাই স্বাধীন এ বিপুল ভবে স্বাই জাগ্রত মানের গৌরবে ভারত শুধু কি ঘুমায়ে রবে ?"

ভারত কামিনা।

অবে কুলাগার হিন্দু গুরাচার— **এট कि** তোদের দয়া—সদাচার ? চ্চে আহািরংশ অবনীর সার---

বমনী ৰধিছ পিশার করে ? এখনও ফিরিয়া দেখ না চাহিয়া. জগতের গতি—ভ্রমেতে ড্বিয়া চরণে দলিয়া মাতা স্থতা জায়া,

এখনও রয়েছ উন্মত্ত হয়ে ? কাধিয়া রেখেছ বামা রালি রাণি. অনাথা করিয়া গলে দিয়া ফাঁদী. কাডিয়া লয়েছ কবরী কল্প. হার বাজ বালা, দেহের ভ্রণ;

অনন্ত ছ:খিনী বিধৰা নারী। দেখ রে নিষ্ঠুর হাতে লয়ে মানা কুলীন-কুমাগ্নী অন্ঢ়া অবলা আনচ্চেপথ চেয়ে পতির উদ্দেশে অসংখ্য রম্বী পাগলিনী-বেশে কেহ বা করিছে বরমাল্য দান, মুমুধুর গলে হয়ে মিমুমাণ,

নয়নে মুছিয়া গলিত বারি। চারিদিকে হেথা ভারত যুড়িয়া সর্মীক্ষল বেন রে ছি'ড়িয়া-কামিনীমগুলী রেখেছ তুলিয়া কোমল জন্ম করেছ হতাশ, না দেখিতে দাও অবনী আকাশ.

कदा कांद्रावाम बगर्छ तरत ।

আরে কুলালার হিন্দু ছরাচার, এই কি ভোদের দ্বা সদাচার ? হয়ে আর্য্যবংশ অবনীর সার

বুমণী বধিছ পিশাচ হয়ে? এখন(ও) ফিরিয়া দেখ না চাহিয়া জগতের গতি--- ভ্রমেতে ডবিয়া চরণে দলিছ মাতা, স্থতা, জায়া-

ছড়ায়ে কলঙ্ক পথিবীমাঝে। দেখ না কি চেয়ে জগৎ উজ্জ্বল এই সে ভাবত হিমানী আচল. এই সে গোমুখী যমুনার জল

সিন্ধ গোদাব্যী সর্যু সাজে। জান না কি সেই অবোধ্যা কোশল এইথানে ছিল কলিক পাঞাল মগধ কনৌজ—স্বপবিত্র ধাম সেই উজ্জিমিনী নিলে যার নাম

ঘুচে মনস্তাপ কল্ব হুরে 🛚 এই রক্তমে করেছিল লীলা. चार्वहो, जानकी, ट्योनमी, म्नीना, খনা, লীলাবতী প্রাচীনা মহিলা

দাবিত্রী ভারত পবিত্র করে: এই আর্ঘাভূমে বাঁধিয়া কুন্তল ধরিরা কুপাণ কামিনী সকল, প্রফুর স্বাধীন পবিত্র অন্তরে निः भक्षकृतस्य ছুটिত সমরে খুলে কেৰপাশ দিত পরাইয়া ধফুদ তেও ছিলা আনন্দে ভাগিরা

ममत-উल्लाहम करेश्या रहा। কোথা সে এখন অসিভল্লধারী মহারাষ্ট-বামা রাজোয়ারা-নারী ঋরাতি-বিক্রমে পরাজিত হ'লে চিতানলে যারা তম্ব দিত ঢেলে

পতি পিডা স্থত সংহতি লয়ে। বীরমাতা যারা বীরাজনা ছিল, মহিমা কিরণে জগৎ ভাতিল, কোথা এবে তারা—কোথা সে কিবৰ আনন্দ-কানন ছিল বে ভূবন

निविष कठेवी श्राहर ध्राव আৰু কি বাজে সে বীণা সপ্তথয়া বিজয়-নিনাদে বস্তব্য ভরা

আর কি আছে মনের উল্লাস আনের মধ্যাদা সাহস-বিভাগ

সে সব রমণী কোথা রে এবে চ সে দিন গিয়াছে পশুর অধম হয়েছে ভারতে নারীর জনম মুশংস আচার নীচ হুরাচার ভারত-ভিতরে যত কুলাদার

পিশাচের হের হরেছে সবে।
তবে কেন আজও আছে ঐ গিরি
নাম হিমালর শৃঙ্গ উচ্চে ধরি ?
তবে কেন আজ(ও) করিছে হরার,
ভারত বেষ্টিরা জলধি তুর্কার ?
কেন তবে আজ(ও) ভারত-ভিতরে,
হিন্দুবংশাবলী শুনে সমাদরে
বাদ্য বাল্লীকি ? বারিধারা করে.

সীতাদ্মরতী সাবিতী রবে **ণ** গভীর নিনাদে করিয়া ঝডার বাজ্বে বীণাবাজ্একবার

ভারতবাসীরে তনাবে সবে। দেখ চেলে দেখ হেথা একবার প্রফুল কোমল কুমুম আকার মুনানী মহিলা হয় পারাপার

অকৃল জলবি অকুতোভরে ! ধার অথপুঠে অশ্বিভ চিতে, কানন, কলর উন্নত গিবিতে অপ্যবা-আকৃতি পুক্রদেবিতা দাহিত্য বিজ্ঞান সধীতে ভূবিতা

স্থাধীন প্রভাতে পবিত্র হয়ে। আবার ভারতে ওরূপে আবার হবে রে অঙ্গনা-মহিমা প্রচার পেয়ে নিজ্ঞ মান পরি নিজ বেশ জান দস্ত তেজে পুরে নিজ দেশ,

বীর-বংশাবলী প্রস্তি হবে ? এ হেন প্রকাণ্ড মহীখণ্ডমানে নাহি কি রে কোন বীরাত্মা বিরাজে, এখনি উট্টিয়া করে থণ্ড থণ্ড, নমাজের জাল করাল প্রচণ্ড

স্বন্ধাতি উজ্জ্বল করিরা ভবে। ১৩৯৯ গৌতম নাহি কি রে আর গায়ত-সৌভাগ্য করিতে উশ্বাস ? শ্বৰি বিশামিত রাঘৰ পাণ্ডব, কেন জমেছিলা মহাত্মা দে দব,

ভারত যদি না উণ্ণত হবে পৃথিক হিন্দুজাতি হবে আহ্যবংশ নরকঠহার নারী কর ধ্বংস ৷ ভূলে সদাচার দ্বা সদাশর. কর আহ্যভূমি পৃতিগন্ধনঃ,

ছভারে কলক পৃথিবীমানে। দেখ না কি চেতে লগৎ উজ্জল, এই সে ভারত হিমানী অচল, এই সে গোমুৰী যমুনার জল,

দিন্ধু, গোদাবন্ধী, সব্যু সাজে ?
জান না কি সেই অঘোধাা কৌশল,
এইখানে ছিল কলিপ পাঞাল ?
মগধ কনৌজ—সুপবিত্ৰ ধাম,
সেই উজ্জ্বিনী—নিলে যার নাম.

খুচে মনতাপ কলুম হরে ? এই রক্তুমে করেছিল লীলা, আাত্রেয়ী, জানকী, ডৌপদী, সুনীল', খনা, লীলাবতী প্রোচীন মহিলা মাবিত্রী ভারত প্ৰিত্র ক'রে।

আরে কুলালার হিন্দু ত্রাচার, এই কি তোদের দয়া, সদাচার, হয়ে আর্য্যবংশ অবনীর সার, রুমন্ত্রী বধিছ দিশাচ হয়ে?

এখন(ও) ফিরিয়া দেখ না চাহিয়া, জগতের গতি—ল্লেফেড ডুবিয়া চরণে দলিয়া মাতা, স্বতা, জায়া, এখন(ও) বয়েছ—উন্মত্ত হয়ে?

বিধবা রমণী।

ভারতের পতিহীনা নারী বৃথি আই রে।
না হলে এমন দশা নাবী আবে কই রে?
মিলিন বসনথানি আলে আচ্ছাদন,
আহা দেখ আজে নাই অদের ভ্রণ।
রমনীর চিরসাধ চিক্র-বদ্ধন,
হাদে দেখ দে সাধেও বিধি বিজ্পন।

আহা কি চাঁচর কেশ পডেচে এলারে। আহা কি রূপের ছটা গিরাছে বিলারে। কি নিডখ, কিবা উক. কিবা চকু কিবা ভুকু, কি যৌবন মরি মরি শোকে দগ্ধ হয় রে। কুমুম-চলনে আর নাহি অভিনায, তাম্ব-কর্পুরে আর নাছি সে বিবাস, ৰদনে সে হাসি নাই নয়নে সে জ্যোতিঃ. সে আনন্দ নাই আরু মরি কি চুর্গতি। হরিষ বিষাদ এবে তুল্য চিরদিন বসস্থ শরৎ ঋতু সকলি মলিন ! দিবানিশি এ কি বেশ, বারমাস সেই কেশ. বিধবার প্রাণে হায় এতই কি সয় রে ৷ হার রে নিষ্ঠর জ্বাতি পাষাণ-গুদ্ধ. দেখে ভানে এ বছণা তবু অন্ধ হয়; বালিকা যুবতী ভেদ করে না বিচার. नांत्री वंध क'रब जुड़े करत रमभानांत्र. এই যদি হয় হিন্দশাসের লিখন. এ দেশে রমণী ভবে জনোকি কারণ গ পুরুষ তদিন পরে. আবাৰ বিবাহ করে. অবলারমণী ব'লে এডট কি সয় রে। **टकॅ**रनिष्ट ज्यानक निम कैनिय ना कांव ; পুরাইব হৃদয়ের কামনা এবার ৷---ঈশ্বর থাকেন যদি, করেন বিচার, করিবেন দৌরাত্ম সমূলে সংহার, অবিলয়ে হিন্দুধর্ম ছার্থার হবে। হিন্দুকলে বাতি দিতে কেহ নাহি ৰবে! দেখ রে চর্মতি যত. চিরমেঞ্জ-পদানত, বিধবার শাপে হায় এ তুর্গতি হয় বে। হায় রে আমার যদি থাকিত সম্পদ্ মিটাভাম চির্দিন মনের বে সাধ: সোনার প্রতিমা গ'ডে বিধবা নারীর রাথিতাল স্থানে স্থানে ভারতভূমির; विरम्दान श्री शुक्त व रम्दान चात्रिक. পতিব্ৰতা ব'লে তাবে নয়নে ছেরিভ। • "कि श्रामाम कि श्रिमाम লিখিভাম নিমুদেশে রুমণী এমন আর ধরাতলে নাহি রে।" দে ধন সম্পদ নাই দরিদ্র কালাল, व्यमाथा विश्वा-छःथ द्रव्य हिद्रकान । আমার অন্তরে গাঁথা বথনই দেখিব. স্থান্ধ কুস্থমে কীট, তথনই কান্দিব,

রাছগ্রাদে শশধর নক্ষা-পতন, বধন দেখিব, হার করিব স্বরণ, বিধবা নারীর মূধ হার বে বিদরে গ্র ইচ্ছা করে ভয়শোধ দেশত্যাধী হই রে। ভারতের পতিহীনা নারী বুঝি অই রে॥

> ভারতে কালের ভেরী। [১২৮০ সালের হুভিক্ষ উপনক্ষে]

> > (3)

ভারতে কালের ভেরী বাজিল আবার !—
আই তন খোর খন ভীমনাদ তার !
ছটিছে তুম্ল রলে, আকুল অধীর বং
উঠিছে পুবিয়া দিক প্রাণি হাহাকার !
বাজিল অকাল-ভেরী বাজিল আবার !
(২)

চলেছে প্রাণীর কুল হের চারিধার;
চলে বেন প্রপাল করিয়। আঁধাব—
স্থবির বালক নারী, হা অন্ন হা অনু বাদ বলিতে বলিতে ধার চকে নীরধার!
ধ্রাতলে চলে ধীবে কালীর আকার।
(৩)

দেখ রে চলেছে আহা শিশু কড জন,
শীৰ্ণদৈহ চাহি আছে জননী-বদন ,
আকুল জননী তার, মুধ চাহি বাব বা
অনিবার বারিধারা করে বরিষণ—
ক্রমে বেন উন্নাদিনী অনের কারণ!
(8)

হের দেখ পথিধারে বসিরা ওখানে, পতির চরণে দৃটি আকুল পরাণে বলিছে কামিনী কেহ, "কই নাথ অন দে কালি আর চাহিব না রাথ আজ প্রাণে"— বলিরা তাঞ্জিল প্রাণ চাহি পতিপানে।

(৫)
ছুটিছে যুৰতী কন্তা কেলিয়া পিতায়;
মা বলি ডাকিছে বুক সকলি বুণায়!
কেবা কন্তা কেবা পিতা, কে জননী কেব^{ু হাই}
জ্মন্তা পিতা মাতা আজি বলালয়—
হেলু হেনু কুড জন আজি এ দশায়!

'(%)

হের কত জন আহা উদর-জালায়— জননী ফেলিয়া শিশু ছুটিয়া পলায়, লিয়া যুগল পাণি, শিশু ডাকে মা' মা' বাণী ফ্ধায় জননী তার ফিরিয়া না চায়— একাকী পড়িয়া শিশু পরাণে শুকায়॥

(9)

চলেছে প্রাণীর কূল এরপে স্থাকুল, নৃত্য. করে স্থানশন, মুক্ত কবি চুল, ত্য করে ভেরী-নাদে কল্পাল তুলিয়া কাঁদে, ধর্পর ধরিয়া করে করিছে ভ্রমণ— দেথ ব্দবাসী দেখ মুঠ্ডি কি ভীষণ।

(b)

ছুটিছে নয়নে বহি ক্লিক সমান,
কিরিছে উন্মার ভাব উলার প্রমাণ;
হ-বরবণে শক্ত,
করাল বিকট প্রাস মুখের ব্যাদান,
আাকাশে উঠিছে সক্তে কালের নিশান।
(১)

কতেই উৎসবপূর্ণ গৃহস্থ-আলর,
নদ্দিনী-নদ্দন রূপ প্রথপুপামর,
নাজি পূর্ণ কলরবে, অচিবে নীরব হবে,
শকুনি বারস কিংবা পেচক আাশ্রয়—
ধবিবে শ্রশান-:বশ মৃত অভিময়।
(১০)

কত সে জনভাপুৰ্ণ পণাৰীথি হায়,
এ রাক্ষস অনাচাবে হবে মকপ্রায়।
ভীষণ গছন সাক, ধরিবে পুরীর মাঝ,
পুরিবে বনের গুল্ল-পাদপ-লভার।
ভামিবে শাদি,ল শিবা আনন্দে দেগার।

(>>)

আজি হাসিভরা মূপ প্রফ্র যে সব, আজি সুখপুর্ব কু আশার প্রব, গলি আর নাহি রবে, শবদেহ হবে সবে, শৃগাল-কুকুরে মিলি করিবে উৎসব— কর্ণমূলে গুঞ্জ বসি শুনাইবে রব।

(32)

কেমনে হে বৰবাসী নিজা যাও কুথে ? ভাবিরা এ ভাব, চিত্ত ভরে না কি ছবে ? নক কুত পরিবার, না কানিছে জনাহার, ভাবিমে নাচাহ কি ১২ অসত্জেকর ম্থে— অফাভি-শোকের শেল বিদ্ধে নাকি বৃকে ?

(30)

প্রিয়ে বলি গৃহে আবাসি ধব মবে কব, হয় নাউদয় কি বে জদয়-ভিতব,— কত সতী অনাথিনী, পণে পথে কালালিনী, অমিছে হতাশ হয়ে তাজি শুলু ঘর,— নাহি লজ্জা কুলমান, কুধায় কাতর।

(38)

কোডে ধবি হেব ববে কয়া-পুলগণ,
ভাবিয়া জগৎ-মাঝে অম্লা রতন—
কভু কি পডে না মনে, সেই সব শিশুগণে,
অন বিনে মরে যায়া কবিয়া বোদন ?
ভাহাবাও অইন্প নয়ন-বয়ন।

() ()

হে বক্-ক্লকামিনি আব্যায়ত গ্ন জান যার পতি পুদ্র পিতা দে কেমন---ভাবি দেখ একথাব, বদন দে স্বাকাব, ঘরে যার। প্রাতঃসন্ধ্যা কবে দবশন, নির্ম্ন বিষ্ক্ষ পতি, জনক, নন্দন।

(35)

এক দিন অনশনে দিন যদি যায়।
আধান নাকি বজবাসীকি বাতনা তায়।
আবাজি সেই অনশনে, দায়ণ হতাশ মনে,
লক্ষ নরনারীশিও করে হায় হায়।
তবুও চেতনাকি হে নাহি হয় তায়?

(>9)

ভাব ওহে বদবাসী ভাব একবাব
কি কাল-রাজস আসি গেরিয়াছে ধার—
নাশিতে সে ভ্রাচার, বুটনের ভ্রমাণ,
বুটশ-কেশরিনাদ ভান একবাব,
ভ্রমাণ জা বিদ্যালী, ভ্রমাণ না আব,
ভারতে কালেব ভেবী বাজিল আবার।

চিন্তাক**স্থ**ম

মক্ষদাধন।

স্থক্ত ইংরাজ তোমার মহিমা. স্থপ্ত ভোমার স্থাবীর্য্য গরিমা, স্কাতি-গৌরব সাহস-ভঙ্গিমা.

অসীম ভোমার রদয়-বল। নিভীক হৃদয়—অ-নভগ্রাবায় কর পদাঘাত ধরণী-মাথায় ও ভজ-প্রতাপে না পরশ যায়

ধবাতে এ হেন নাহিক স্থল। জগৎবিজয়ী রোমক-সন্তান ভাতলে ভ্ৰমিত তলে বে নিশান. তেজোগৰ্কশিখা যাহে মৃট্টিমান

তোমাদেব(ই) স্বন্ধে ধরেছ তার। নিক্ষপ নিশ্চল (অচল মুবতি) সহল্লচভা, একতার গতি, অনিবাৰ্য্য বেগ যেন স্ৰোতম্বতী

উৎসাহ সাহস প্রলম্ফে ধায়। সে ভজ-বিক্রম কিবা ভয়স্কর. সে সাহস-বেগ কভই প্রথর, একতা-বন্ধন কিবা দ্যুত্র

তোমরাই আগে শিথালে সবে. শিখালে খদেশে কিবা দে প্রকারে প্রকাতে নিবারে রাজ-অত্যাচারে, বিদ্রোহ-অনল জালিয়া হস্কারে

রাজমগুপাত করিলে ববে---* শিথালে আবার অভ্রান্ত প্রথায় অসহা পীডনে উন্মাদের প্রার প্রকারা যথন, কিরুপে রাজায়

নিকেপে তথন চরণতলে। ৰে দৰ্পে কাটিলে প্ৰথম চাৰ্লসে বে দর্পে ভাড়ালে বিতীয় বেম্সে †

🎙 🛊 हेर ১৬৮৮-৮৯ সালে विजीव स्वयुत्र कर्तुक

বে তেজাগর্বেতে আজিও খদেশে বাজত করিছ আপন বলে ~ পুত্তলিকামত রাজ-সিংহাসনে সাহ্বায়ে রেথেছ রাজা এক জনে. স্বদেশে ঐশ্বর্য দেখাতে নয়নে

করিতে উজ্জল আপন মান, সেই দর্প তেজ নির্ভন্ন অন্তরে দেধাটাল আজি জলন্ত আকরে বাক্স-প্রতিনিধি পদপিষ্ট ক'রে

শিখালে ভারতে গ্রুসন্ধান . দিলে শিকাদান ভারত-নন্দনে দিব্যচক দিয়া-কি মন্ত্ৰসাধনে প্রাধীন জাতি, প্রাধীন জনে বাসনা সফল করিতে পার। শিখিবে ভাবত--শিখিবে এ কথা চিবদিন তবে, নাহবে অকথা---এক দিকে কোটি প্রাণি-কাতরতা

খেতাত্ব কজন বিপক্ষ তাৰ. তবও কজনে চরণে দলিল রাজপ্রতিনিধি, রাজমারদল— স্কাতি-গৌরব অক্র রাথিল

এমন তাদের অমিত বল। শেখ রে এখন ভারত-সন্তান, খে তাল-নিকটে তণের সমান-সমগ্র ভারত জাতি-কুল্মান,

বাজস্বতি গান সৰ বিফল। যে মন্ত্ৰ-সাধনে স্থাটু উহারা. সেই বীরব্রত-একতার ধারা, সে সাহস-উৎস--- সে উৎসাহ-ধারা,

হৃদয়-কন্দরে গাঁথিয়া রাথো---তবে অগ্রসর হৈও কতু আর ক্তবিত্ত একাপ স্থাতি উদার পৰে যদি দাও প্ৰাণ আপনার --

নতুবা যা আছে তাহাই থাকো। তন হে বিপণ-ভারতের লাট আমাৰ নাহি ক'ৱো এ তাওৰ নাট বিষময় ফল বিষম বিৱাট মতুষ্য-হাদয় সহিত থেলা।

উৎপীডिত हरेबा देश्वादम्बा जीहादम बामाछा ।

⇒বিরা ভাডাইয়া দিয়াছিল।

ইং ১৬৪৯ সালে ইংল্ণের ভূপতি ১ম চাল-সের দৌরাত্মো উত্তেজিত হটয়া বিদ্রোহী প্রজা-ইর্প তাঁহার মন্তকচ্ছেদন করিয়াছিল। ইভিহাস দেখ।

অতি হীনবল--ঘোর রুঞ্জার সে হাতিও যদি আশার দোলার হলে বহুক্ণ-- আশা না ভড়ার সে নিরাশাঘাত হোধে না বেলা। সুধাচ্চলে তুলে দিলে হলাহল সম্প্রীতি করিলে সহ নিজ দল বাডালে তাদের শত গুণ বল "পুটোরীর গার্ড^{*} (১) রোমেতে যথা। ছিল কি অতুল প্রতাপ(ই) তাদের সে তেকোগরিমা কোথা অসুরের। পরিণামে ভার(ই) কি হইল ফের ভূলোনারে কেহ সে গুঢ় কথা। না হৈও নিরাশ-ভাবত-সন্থান, সাহদ উৎদাহে সে গ্ৰা নিৰ্কাণ কবিলে অনাৰ্য্যে – আজও সে বিধান এ মহামল্লের সাধন-প্রথা।

জয়মঙ্গল গীত

অভিষেক

(অর্দ্ধ কোরস্)

কাছে এস ভাই করি আশীর্মাদ চিরস্থে হর কাল। তোমার কল্যাণে ভারত বিপিনে উদিল চক্রিকাস্কাল॥

(পূৰ্ণ কোরস্)

উল্লেখ আজি হে বালালীর নাম
উল্লেখ ভারত-ভূমি।
বলের প্রধান বিচার-আসনে
আজি হে প্রধান ভূমি॥
কাছে এস ভাই করি আশীর্কাদ
বিপুল ভারত যুড়ে,
জন্ম জন্ম জন্ম
তব কার্টি-ধ্বলা উড়ে।

(অর্দ্ধ কোরস্)

আৰি রে এ রবে কে বা ঘরে রবে আনন্দে বাজিছে ভেগী। ঋষিতৃলা নর ভারত-ভিতর এত দিন পর হেবি॥ চল সবে ধাই দিয়া করতালি নিকটে তাঁহারে ঘেরি। "রিপণের জয় রিপণেয় জয়" व्यानत्म वाक्षिष्ट (वरी ॥ বটিশের বেশে अविञ्ला नद **ा (मर्ल्स जेम्ब्र यरव**। ফিবিবে আবার ভারতের লক্ষী ভারতে উদয় হবে॥ আননেদ বীজ্রে मुनक मुत्रको আনন্দে বাজ রে ভেরী। "রিপণের জয় রমেশের জর্গ मध्दन निर्मात कति॥

(পূর্ণ কোরস্)

ফুলদাজ আজ পরাব।

আনো আনো আনো

রিপণের গলে

কৈ বরণ-ডালা

আগে দিব তলে

পরে প্রিয়জনে সাজাব। (পূর্ণ কোরস) আনো বরণডালা বাটি বাটি বাটি সুগন্ধ তাহাতে থাকিবে, গোটা গোটা ফুল ভোর-বেলা তুলি পরিপাটী কোরে রাখিবে, ছিটা দিয়া ভার অগুক্ত-চন্দ্ৰ माक्रवाविशास्त्र श्रीवर्ष । আনো বরণভালা, আনো আনো আনো ফুল-সাজে আজ সাজাব। আগে দিব তুলে রমেশের গলে পত্তে ব্ৰিপণেৱে পরাৰ। আনো বরণডালা আনো আনো আনো ফুলসাজে আজ সাজাব॥ (সকলে একত্রে)

আরদা চলার ইবর সারথি। শেরিল চৌধর দেশী বিলাতী।

⁽১) রোমক সম্প্রদারের পতনদশার ইংরাই নর্কেস্কা হইরা উঠিয়ছিলেন! ইংরা অভি ন্ত্রান্তবংশোদ্ভব এবং প্রথমে সমাটদিগের দেহ-বক্ষকস্বরূপ ছিলেন।

"টুইডেল" সঙ্গে আৰ্মাণি "গ্ৰিগৰি" কৌতুক রঙ্গে। মিলিল সকলে অন্বের রামা। স্বারতি হেরিয়া স্থনরী বামা॥ হৃশুধ্বনি দিল ঈশ্বর সার্থি। অবদা চলব দেশী বিলাভী 🛭 (होिनटक (चित्रन मिल স্থুখে সবে চন্দন ভাবে, দিল সুথে সবে দুৰ্কার দলে তণ্ডলে গাঙ্গের চালি। অভিবেক দিল হোমভব্মেতে ननारहे (हाञ्चारत जानि॥ (অর্দ্ধ কোরস্) আ ওয়ল স্থাগণ গাওয়ল পেয়ারে। ভাগ লছ্মী আজু বাঢ়ল জোয়ারে। তৃষা সবে মো সবে বেবি বেরি মেলি। পাঠ পচ**হ**ঁ কতি কতনহি খেলি॥ অবহ' তুহারে চাহি প্রীত ভগবান্। হাম সৰ আশিসে তুয়াভগবান্। कन्ट् क्ट्जन क्राजाति वानी। করল সেলাম কন্ত পরশর পাণি 🛭 হিন্দী পারসিক আংবেজি ভাষা। খৎ ভেজন কন্ত চন্দন মাথা।। হলাহল ঢাকল ত্ৰমন যেহি। ক্ষীর উগাল পদবজ: শেহি 🛚 ভেটন স্থাগণ গাওল পেরারে। ভাগ লছমী আজু বাঢ়ল জোয়ারে। **ठम्मन** जारन ; भएंड (मन पूर्य কুসুমমালে সভে **দেল সু**পে তওলে গাঙ্গের বারি। **অভিষেক দেল** হোম ভদ্মে কপালে ছোঁরাই ভারি ॥ মালভীমাল (অর্ক্ক) তুলিল সঙ্গী গব্ধে মোদি**ল দেহ**। (百春春) (অর্দ্ধ) তুলিল মল্লিকা বৃথিকা-জাল পরাণি জাগিল স্বেই॥ (একক) মালতী মাল (এक क) भौषिन (पर মলিকাজাল মোদিল দেহ भाषिन निम भूदत ! রিপণের জন্ন," ্রবিপণের জর त्रशी वाकिष्ट मूद्र ॥

স্থায়া শিউলী (অর্দ্ধ) তুলিল সঙ্গী সোহাগে হদদে দে। (একক) (আর্দ্ধ) তুলিল যতনে রজনীগন্ধা প্ৰনা মাতিয়া গে**ল** ॥ (একক) (অর্দ্ধ) আগাননে তুলিল গুলাব-ওচ্ছ চিকণ গাঁপনি হারে রুমেশের জয়," "রিপণের জয় वःनी वां किट्ह मृत्त्र ॥ (পূর্ণ কোরস্) भाषिण भूती দেঁ উতি হার কামিনী ভার মোদিল পুরী গুলাব-গুচ্ছ মোদিল পুরী চিকণ গাঁথনি হারে। "রমেশের **জ**র রমেশের জয়" বংশী বাজিছে দূরে॥ (नकरन এकर्व) বংশী বাজিছে রমেশের জয় আৰু রে হৃদয়ে বড় স্থােদর— করি অশীর্কাদ কাছে আয় ভাই চিরস্থা হর কাল, ভারত-বিপিনে তোমার কল্যাণে উদিল চন্দ্ৰিকা-জাল। উৰল আৰি হে বাজালাব নাম উজন ভারতভূমি। বিচার-আসনে বজের প্রধান আজি হে প্ৰধান তুমি॥ मृत्र मृत्री আনন্দে বাজ্রে আনন্দে বাজ্রে ভেরী, সবে **বল মূথে** জন্ম জন্ম জন্ম সন্ধনে নিনাদ করি। মুদক মুরলী বাজ্রে আৰন্দে

মদন-পূজা।

আনন্দে ৰাজ্বে ভেরী॥

কি দিরে বদন, প্জিব তোমার অনদ তুহারি নাম। বদস্ত-স্থীর, নিশোরাস তোর, কুম্ম লাবণ্য-ঠাম। শ্ববাগ্য-এখার. সঙ্গীত-উছ্†স, বচন তুহার মানি, হিয়ার মাঝারে, প্রেমেব নিঝ'ব, তুহাবি পরাণ জানি। **क्याल यहन.** পূজিব জোমারে, তৃহারি ধন্তর ভয়ে. নম্বন-দিঠিতে. দিঠি জডাইয়া. দাঁডাই অধীৰ হয়ে। বলি বলি বলি. শুনি শুনি শুনি, থমকে চমকে চাই. জাগি দিবানিশি. তুহারি তরাদে, জুড়াতে নাহিক পাই। পূজিব কিরুপে, তোমায় মদন, তুহার পূজার প্রথা, কেহ নাজানিল, কেহ না শিথিল, সে গৃঢ় রহস্য-কথা। মূনির ধ্যানে, জানীর জানে, তুহার আকার-ভেদ, মুজন প্ৰেণিক. খাখিতে কেবলি, প্রকাশ তুহাব বেদ। পুজিব তুহাবে, ভাহারি বিধানে, ना जानि ना गानि जान, একমেৰ বাণী. বদনে উচারি, जुशां अरम मिर श्रीन। পূজিব তুহারে, বিহানে মধ্যাক্তে. পূজিব সাঁজেরই বেলা. আঁধার ভুবাতে, ইন্দ্রিয়-কাননে প্রেমের জোছনা খেলা। পূজিব তুহারে— চরণে বিথারি, জীবন-জাহ্বী-জল. পূজিৰ তুহাৰে— মানস-ব্ৰহ্মাণ্ড, করিয়া তীরথস্ল। কুল পদ মান. তুহারি পূজাতে, व्यवनी উৎসর্গ দিয়া, प्तिथिव जानत्म, তুয়া ধ্যান ধবি, হিয়াতে প্রতিমা নিয়া। মৃরতি গঠিব, সে দেহ গঠনে, সে হছ নয়নে আঁখি। ভুক্যুগে টান, তেমতি সুটানে (मथिव मानरम जाँकि।

ৰলন চলন. कि छेक्टरम স্কলি তেমতি ঠাম, দিব সাজাইয়া. অনঙ্গ তুহারে, সেই নামে ত্যা নাম। ठीरनव चारमारक, আবতি করিব, পরাব বাসনা-ফল, অনক তুহারি, বদন হেবিব, নিখিলে নাহিক ভুল। পুজাপাঠবিধি এই সে তৃহার, একহি প্রেমিক জানে. নাহি কালাকাল, त्मम शत्रतमम, তুষা বেদ এহি মানে। কি দিয়া পূজিব. মণন তোমায়---আর না আনিব মুখে, শিৰিফ শিৰাব, তৃগা পূজাবিধি. কিয়া ত্রথ কিয়া ছথে। এ বিধি বিধানে, যে জানে পৃজিতে তৃষা দবশনে তেঁহ, কঁহু নাহি জানে, কি তাহে প্রভেদ निर्मि, पिया, यम, श्र्ह। চিনেছি এখন যদন তোমায় অনন্ত কেবলৈ নাম, বসন্ত-সমীর, তুয়া নিশোয়াস, ক্ষুণ লাবণা ঠাম। স্থবাত্য-ঝন্ধাব, দলীত-উছাদ. ৰচন তুহারি মানি, অন্ধ তুহারে অবহি পুজিব তুহ সে প্ৰন প্ৰাণী।

চিন্তা।

হে চিছা উদয় তোর কেন বে ?

কি হেতু মানব-মনে,
এসো যাও কণে কণে হেন রে ?
কোথা হ'তে এসো, বল, ফিবে কোথা যাও ?
মানব-জ্পদের তুমি কভই বেলাও।

বেলার দামিনীলতা আকাশে যেমন,
চিক্ত মেবের কোলে চিক্প-চরণে দোলে
মানবের হদিতলৈ তুমিও তেমন!

কি থেলা খেলাতে এস কি খেলাৰে যাও থেলা সাক হ'লে পুনঃ কোথায় লুকাও ? দুকাতে কতই ধেন আনন্দে মগন। বালক বালক সনে খেলে যথা প্ৰীত মনে ত্মিও মানব-মনে খেলাও তেমন! এই আছ, এই নেই, ফিরে কণকাগ ঈষৎ চঞ্চল-ভাবে থাকিয়া আডাল. pि pि (नश मिट्य **ठक्षण कतिया हिट्य.** আবার লুকাও কোথা তব লীলা-জাল ! মেথাও কতই রঙ্গ লহরী তুলিয়া, কত বেশে দেখা দাও তুলারে ভূলিয়া। উধাও গগন-কোলে উঠিয়া কথন। সঙ্গে করি ল'রে চল দেখাও কত উজ্জ্বল কতই নক্ষত্ৰ-মালা কতই ভূবন। এই দীপ্ত-প্রভাকালে অড়িত করিয়া অনন্ত হাদয়ক্ষেত্রে অনন্তে তুলিয়া, দেখাও কতই লীলা কতই লহরী। ভূবন ঘুরিয়া রকে তপনের সঙ্গে সঙ্গে কত ভঙ্গিবার ভঙ্গে, হে চিস্তা স্থলরী। আবার ধরণীধামে নামায়ে, চপলে ঘুরায়ে পৃথিবীময়[দাগর অচলে কভরূপ ধরি চিস্তাকর রে ভ্রমণ— নগর তটিনী বন কান্তার মঙ্গ ভূবন চিত্রিত করিয়া চিত্তে কর রে রঞ্জন ! নিশাকালে পুনরার উল্লাসে অবশা নিদ্রাগত ভাববুনে জাগায়ে সহসা বিরাজ হাদয়কেত্রে, ওলো সুরঞ্জিণি কথনও উজ্জল হাস কথনও বা পরকাশ ভরত্বরী কালিমার ঘোর কলঙ্কিনী। কথনও বা দিবাভাগে জাগ্ৰতে স্বপনে সজ্জন পদান্ধ-লেখা লিখিয়া কিরণে আনন্দে নাচায়ে মন, ছুটিয়া বেড়াও। ভথনি মুছিয়া ভায় কুপথের দোলনার ইন্দ্রিয়-থেলন ল'য়ে আনন্দে খেলাও। কথনও নুপতিভাবে বসাও আসনে কথনও-সুৰশোষাল্য সহাক্ষ বদৰে গ্রীবাতে পরায়ে দাও-পুন: কতক্রণ। ধীরে ধীরে পান্ন পান্ন সঙ্গে করি নিরাশায় আসিয়া দেখাও ভয় ওলো কুলকণে।

কথনও সহসা আসি হও লো উদয় লইয়া শাসন-ব্লীতি নানা লীলাময় কত ভবিষ্যের পট প্রসারিত রয়, উৎস্থক নয়ন-পথে তোল কভ মনো াথে **জ**ডিত কভই আশা কত থেদ ভয়। কার রাজ্য কেন হয় কিসে হয় যায়। উদয় অন্তের গতি কিন্নপে কোথায়. কতবার কানে কানে ওনাইলে হায়. হে চিস্তা তরকবন্তী. মানবের তঃথ-গতি ফেরে নাকি ফিরাইলে নৃতন প্রথার ? কত জান ও স্থলরী, খেলার ভঙ্গিমা----কত নৃত্য, বাস্থ্য, গীত, কতই রঙ্গিমা---ভূলাতে ধর গো তুমি কতই মহিমা। এই আপনার তরে পরাণে কেমন ক'রে স্মাবার হৃদয়পরে পরের প্রতিমা। ভধু কি আমার চিত্তে এরূপে খেলাও কিংবা সকলেরি মন এমনি তুলাও বাঁধি স্বতম ডোরে---হাসাও কাঁদাও? वन नौनामश्री हिस्स স্বারি কি মন-এরে এমন ভাবন-ফুল নিয়ত ফুটাও ? অন্ধকারে আততান্নি সুকারে যথন আপন নিরীক্য জনে করে দর্শন যথন সে ভীম অস্ত্র করে উত্তোলন, থাক তুমি সেইক্র তথনও কি ভার মনে ভনাও তাহার কানে তোমার ক্রন্দন ? কি বল রে, চিস্তা, তুমি তাহার শ্রবণে নন্দন শুইয়া যার মৃত্যুর শয়নে হেরে পিভামাতা-মূথ যেন বা অপনে কি বল রে সে পিতার, সে মারেরে কি প্রথার দেখা দাও বছরপী, কি রূপ ধারণে 🕈 किकार वा रमवा मां वनवीन क्षान्त्री দম্পতি'নিকটে তুমি, ববে মারাময়ী স্থাবে শহরী চলে মৃত্মনদ বহি। অথবা নিকটে যবে শিশু আসে হাসুর্বে হে চিম্বা, তথন তুমি কিবা শীলাময়ী ? অনস্ত আকাশ প্রায় অনস্ত তুই রে চিন্তা অকুল কালের মত বহ তুমি অবির্গ স্বাদি কোণা কে জানে রে তো

অনস্ত আকাশ প্ৰায় অনস্ত তুই ৱে চিস্তা ? জানি নারে কভ কাল ধরার স্জন. জানি নাকভই যুগ মনুষ্ঞীবন চলেছে এ ধরাতলে- কিরুপে কেন বা চলে জানি কিছু চিন্তা তুই করিস ভ্রমণ, এইরপে চিরকাল মনের মন্দিরে. शामात्त्र कामात्त्र ताका किवा तम वसीता: না জানিস জাতিভেদ, না মানিস বেদাবেদ কাফের, মোগল, হিন্দু সবে তোর বন্দী রে ! কালাকাল নাহি তোর, স্থানাপ্থান জ্ঞান পৃথিবী, পর্বাত, নদ, আকাশ, গীর্বাণ সকলি আভায় তোর নিশি, সন্ধ্যা, দিবা, ভোর চপলার মত খেলা প্রদীপ্ত নির্ব্বাণ। ce िखा. देकरकशी निकटि यदव आनि मनत्रथ পূর্ব কৈল সভ্যব্রত পরি মনোবর্থ, চিল করি মারাদামে অরণ্যে প্রেরিলা রামে তখনও যেমন তুমি এখনও তেমন ? কুঞ্জের মায়ার জালে পাণ্ডব-মহিলা সভাতে আইলা যবে ভীতা লজ্জাশীলা, ফেলিলা নেত্রের জল कैं। नारत्र शाख्यमन তধনও যেমন তুমি এখনও তেমন। ৰখন "কাৰ্থেজ ভুলো" বুলি "মেয়ারদ" * ছেরিলা অভল-তলে অন্তগত যশ আশাইচ্চাতিরোভাব বোষক ব্ৰহ্মাণ্ড লাভ তথনও যেমন তুমি এখনও তেমন!

• সল্লা এবং মেয়ারস্ একসময়ে রোমক-এলাণ্ডের
সর্কনিম্নস্তা ছিলেন । উহাদের প্রস্পানের প্রতিবোগিতানিবন্ধন মেয়ারস্ রোম হইতে পলাইয়া
বান এবং জন্মীভূত কার্থেল নগরীর জন্মরাশির
বংগা উপবেশন করিয়া আপনার বিলুপ্ত এখর্যা ও
কার্থেলের অন্তগত তেল এবং এখর্যা পর্কাগেলাচনা
করিয়া ক্ল আন্তঃকরণকে শান্ত করিভেছিলেন ,
এমন সময়ে প্রদেশীয় পীটের অর্থাৎ সর্কপ্রধান
শাসনকর্তার প্রেরিত এক জন চর তাঁহাকে ধরিবার নিমিন্ত দেখানে উপস্থিত হওয়ায় মেয়ারস
তাহাকে এইরপ উত্তর করেন—তোমার প্রভ্রেক
ভবালিতে উপবিষ্ট দেখিয়া আসিয়ায়।

ববে "এণ্টবিনেট" ৽ ভূলি রাজস্ব-স্থপন এক ত্রিজামার কালে ত্রস্ত উবেগজালে বৌৰনে পলিত কেশ করিলা ধারণ !

হে চিন্তা, অনস্ক অত্ত তোর লীলার বিভব কণকাল নহ কান্ত মূহত্তেক নহ প্রান্ত মানব-ব্রুদয়-ভটে ধেলায়ে ভরদ -ব্যুক্তনী রূপ ধবি করিতেছ বঙ্গ।

ইউরোপ এবং আদিয়া।

আবার উঠিছে অই বণ্বাছ বোষণা।
শোন হে ভাবতবাসী কি উল্লাস পরকাশি
হিন্দুকুশ † চুডে আজি বুটিশের বাজনা॥
এ.নর দামামা ভলা ঝাঁমবির ঝন্থনা
আভকে "আসিয়া কাঁপে, বাজিছে সমর দাপে—
নাচারে বীরের পদ ঢালিয়া উৎসাহ মদ
বাজিছে 'বুটিশ ব্যাওে' বিজ্ঞারেব বাজনা।

উড়িল পাঠান বাজ্য ইংবাজের দুৎকারে —
সমস্ক্রম জন্মছার অর্দ্ধেক 'বালাহিদার'
"মুত্তরগর্জান"—শিরে "হাইলন্দর" বিহারে ৷
"নের আলি" "ইয়াকুব" "দোরালী" আফগান
"বিলিজি" "হেরাটী" দল পদে দলি ছোটে বল—
অ্যারোহী, পদাতিক "আইরিশ" গুর্থা, শিঝ,
পাহাড় পর্বাত ছিঁড়ে দৌডে তোলখানা ৷
ইংরাজ আফগানে থালি নহে এই যোঝনা!
আনহ ভারতবাসী "ইউরোপ" 'আসিয়া" আসি
এ বণতবঙ্গে ভাসি কৈল শক্তি তুলনা।

* অষ্টাদশ শতাকীর রাজবিপ্রবের সময় বিজোষী প্রজাবা তথনকাব ফরাদীনুপতি "বোড়শ লুরের" এবং উাহার লাবব্যবভী যুবভী ভার্য্যা "মেরি এউয়িনেটের" শিরশেহদন করে, মৃত্যুর পুর্বে তাহারা ছই জনেই কাবান্ধর হন। কারাবাদের সময় রাজা এটয়িনেট এয়প উৎকট ভিষার দয় ইইয়াছিদেন যে, এক রাজেব বাধ্যই উাহার কেশকলাপ জরাজীবের সায় অয়বর্ণ হয়।
† আফগানস্থানের উত্তরসীমান্থিত পর্বছলোন।

তুলনা করিল শক্তি পুনরায় ছ'জনে হের তুরম্বের গায় "প্লেভানা" হুৰ্গ (১) যেথায় শিরে বাঁধি যশোজ্জল চকমকি ধরণীতল লুটাইল "আবাসমান" (২) ক্রসিয়ার চরণে। नुष्ठोहेन "जुनुबाक" (७) পশুরা**জ** বিক্রমে। তৰ্জন্ব সমর-পণে ব্ৰিয়া ইংরাজ সনে ঘুচাইল বক্তজাতি 'আফ্রিকার' বিভ্রমে! লুটে "গোলন্দাজ" পায় এখনও "সভায়"(৪) "আচিনী" (৫) সমর প্রিয় হারায়ে অর্কায় বীয় লুটিয়াছে বার বার ব্ৰহ্ম, পারশিক আর চীন, খাম, আরবীয়, ইউরোপের পায়। পূৰ্বে যথা হিমালয় অধিবাদী দেবতা ঐশবিক প্রতিভায় কবিল অসুরে জয় ষার তরে আর্য্যন্তাতি-খ্যাতি আৰুও নাগ্রত। সেই ঐশবিক তেন্দে, এ ধরণীমণ্ডলে উন্নত উন্নতি-পথে. সদা সিদ্ধ মনোবথে তুৰ্জয় হ্যতি প্ৰকাশে, বিজ্ঞান বিহ্যতাভাগে bcece इंडेटवानवामी छेनशाम अbce! বেঁধেছে পৃথিবী-অদ লোহপাত প্রসারি প্ৰনে শকটে বাধি हत्तरह छेजात यानि ফেলেছে ধরণী-পৃষ্ঠে লভা যেন বিথারি। শুক্ত হ'তে টানি আনি উন্মাদিনী দামিনী আজাবহা কবি তায় পুরাইছে বসুধায় (थनाইছে দে नजांध किवा निवा-पामिनी। খুলিতে বাণিজ্যপথ মিলাইছে সাগরে অন্ত সাগরেব কল ভেদ করি মহীতল ভূধর বালুকামাঠ- দূর করি অন্তরে। ननीत जेलदा ननी मनतीत जुलिया **हत्नराह् रन्थंरिय १०० कोथा वा रम ख्रीत्रथ!** উপরে অর্থবেপাত ধারাবাহী বহে শ্রোত জঠরে প্রশন্ত পথ ছুই কৃল খুরিয়া।

(১) পূর্বের ক্রমিয়ার ও তুর্কিদিসের সহিত এই-থানে শেষ যুক্ষ হয়। (২) তুর্কিসেনাপতি। (৩) দক্ষিণ আফিকার "জুলু" নামক অসভ্য জাতির রাজ-থিতাব। (৪) বব্দীপ। (৫) বহুকাল যাবত গোলন্দাজদিগের সহিত যুক্ষ্ করিয়া সম্প্রতি পরা-জিত হইরাছে।

कि शए ह. ८ विनाह, ध मत्वत्र जुनना । দেবতার শিল্পী তুমি হের দেখ মন্ত্যভূমি নির্ভয়ে চলেছে তব স্বর্গে দিতে লাম্থনা। শোন হে গৰ্কিত বাণী কি বলিছে ৰদনে শৃক্ত পথে বাযু স্রোতে চালাবে মাক্ত-পোতে জলে ষ্থা জল্মান শৃত্যে তথা ভ্ৰাম্যমাণ কর্ণিও পাল তুলি গগনে গহনে। না দিবে থাকিতে বোদ ধরাতল আকাণে না কাটি "পানেমা" চল (১) সসজ্জ তরণীদল "অতনন্ত" সিকু (২) হ'তে উর্কে তুলি বাতানে নামায়ে "শান্তদাগরে" পুৰ্বভাবে ভাগাং স্থির করি চপলায়. নগর-নগবী কায় ফুটায়ে স্থ্য-আকারে, घुडारम निभि चाँगधारत, ইচ্ছামত ক্ষণপ্রভা দামিনীরে হাসাবে। বল হে "আমিয়াধণ্ড" অধিবাদী যাহাব অৰ্দ্ধভাগ ধরাতল তোমাদের বাদস্থ--কোন পথে—কি উদ্দেশে চলেছ হে তোমবা। "ইউরোপ" ত্রন্ধাণ্ডভ্রমী যে বীর্য্যের ধারণে শবীরে কিবা অস্তবে কোন অংশ তার ধ'বে বিরাঞ্চিত এ জগতে ? সাধিতে কোন্ ব্ৰতে ? চ'লেছ কালের সঙ্গে কি চিন্তার মগনে ? অদৃষ্টে নির্ভর করি নামিতেছে পাতালে ৷ "**ইউরোপ" বাঁধিতেছে** সিঁডি আকাশ ভূধর ছিডি---কেবল উদ্ধেতে গতি দিবা সন্ধ্যা সকালে।

⁽১) উত্তর দক্ষিণ স্থামেরিকার ^ম যো**জক**।

⁽২) ইউরোপ এবং উত্তর আমেরিক। বন্দ মহাসাগর। (৩) আমিরা এবং উত্তর আমেরি মধ্যক্ষ মহাসাগর।

তোমাদের দিবা সন্ধ্যা প্রাতঃকাল রজনী সকলি সমান জ্ঞান ৷---আছে কি না আছে প্ৰাণ. অন্ধ অথর্কোর প্রায় ডাক থালি বিধান্তায়, विनित्न अमर्छ द्यांची जुछ इत्व ज्यनि ! কি দোষ রে বিধাতাব-কিবা দোষ প্রাক্তনে. কি নাবল, দিলাবিধি গ করিতে ধরাব নিধি বিধাকার সাধ্য যাহা দিয়াছে এ ভুবনে। দিয়াছে এতই এরে কখন স্বপনে "ইউরোপ" না হেরে তায় বল হে কোথা সেগায় এমন পর্বাত নদ. এমন দাক, নীরদ, এত থনি-জাত গাত, এত শস্য বতনে? কোথায় সেখানে হায়, হেন বশ্মি পতনে ? এত জাতি ফুল ফল এমন নিশি শীতল. দেখেছে পাশ্চাত্য কোথা হেন শশি-কিবণে ? সকলি দিয়াছে বিধি অভাব যা কেবলি---আমাদের হদিতলে দে স্থোত নাহিক চলে আমাতার করিয়া যায় পাশ্চাতা আগুনে ধায়---রাচিতে -- মবিতে ভাষ, জানি নাবে কেবলি। অই দেখ জানে যারা করিতেছে ঘোষণা— শোন তে "আগিয়া" বাসী কি উল্লাস প্ৰকাশি "হিন্দুৰ্শ"-চডে বাজে বৃটিশেব বাজনা। এ নয় দামামা ডল্লা ঝাঁঝরির ঝননা, আতত্তে মেদিনী কাপে-বাজিছে সমব-দাপে--নাচায়ে বীরের পদ ঢালিয়া উৎসাহ-মদ -

वाक्षित्र "वृष्टिम वृष्टा विकास वर्षा वा

যমূনাতটে।

(5)

আহা কি স্থানর নিশি, চক্রমা উদয়,
কৌমুনীরাশিতে যেন গৌত ধরাতল
সমীরণ মৃত্ মৃত্ ফুলমগু বয়,
কল কল করে ধীরে তরঙ্গিনী-জল।
কুস্থা,পাল্লব, লতা নিশাব তুষারে
শীতল কবিয়া প্রাণ শবীব জ্ডায়,
জোনাকির পাতি পোতে তর্মশাথাপবে
নিবিবিলি ঝি ঝি ডাকে অগত ঘ্যায়,—
হেন নিশি একা আদি,
হানুনাব তটে বদি,
হেরি শশী হলে গুলে জলে ভাসি যায়।
(>)

(১)
কৈ আছে এ ভ্মগুলে, যথন প্ৰাণ
কীবন-পিখুৱে কাঁদি ঘ্যাব তাডনে,
যথন পাগল মন ভাতে এ খাশান
ধায় শক্তে দিবানিশি প্ৰাণ অধ্যৱণে,
ভখন বিজন বন, শাভ বিভাবনী,
শাভ নিশানাথজাোতি বিমল আকাশে,
প্ৰশন্ত নদীর এই প্রতিউপতি,
কার না ভাপিত মন জ্ডায় বাডাসে।
কি সুথ যে ফেনকালে, গৃহ ছাভি বানুন গেলে,
সেই জানে প্রাণ যাব পুডেছে হুভাশে।
(৩)

ভাসায়ে অকুল নীবে ভবের সাগবে
জীবনেব দবতাবা ভুবেছে যাগার,
নিবেছে স্থের দীপ বোব অন্ধকারে,
ত্ত ক'রে দিবানিশি প্রাণ কাঁদে বাব,
সেই ভানে প্রকৃতির প্রাগ্রল মূবতি,
ত্বিলে বিরলে বাস গভীব নিশাণে,
ভানিলে গভীর ধ্বনি প্রনের গতি,
কি সাভ্না ২য় মনে মধুর ভাবেতে।
না জানি মানব-মন, হয় ১২ ২২ন কি কাবন
অনন্ত তিয়াব গামী বিঞ্ন ভূমিতে।
(৪)

হার রে প্রকৃতি সনে মানবের মন
বাধা আছে কি বন্ধনে ব্ৰিতে না পারি,
নতুবা যামিনী দিবা প্রতেদে এমন,
কেন হেন উঠে মনে চিস্তার লংগী?

কেন দিবসেতে ভূলি থাকি সে সকলে শমন করিয়া চুরি নিয়াছে বাহার ? কেন রজনীতে পুনঃ প্রাণ উঠে জলে, প্রাণের দোসর ভাই প্রিয়ার ব্যথার ? কেন বা উৎসবে মাতি থাকি কভু দিবারাতি আবার নির্জ্জনে কেন কাঁদি পুনরার ? (() বসিরা যম্নাতটে হেবিয়া গগন. ক্ষণে ক্ষণে হলে। মনে কত যে ভাৰনা. मानष, त्रांखष, धर्म आंधारकुछन, ব্বরা, মৃত্যু, পরকাল, ধ্মের ভাভনা। কত আশা, কত ভয়, কতই আহলাদ. কতই বিবাদ আসি হৃদয় পূরিল, কত ভালি, কত গড়ি, কত করি সাধ, কত হাসি কত কাঁদি প্ৰাণ জুড়াইল। রজনীতে কি আহলান, কি মধুর রসাম্বাদ, বুস্কভাঙা মন ধার সেই সে বুঝিল।

হতাশের আক্ষেপ।

()

অধবার গগনে কেন স্থাংশু উদন্ত রে।
কাঁদাইতে অভাগাবে, কেন হেন বাবে বাবে,
গগনমাঝাবে শশী আসি দেখা দেয় রে।
তারে যে পাবার নদ, তুবু কেন মনে হয়,
অশিল যে শোকানল, কেমনে নিবাই রে।
আবার গগনে কেন সুধাংশু উদন্ত রে!

(?)

আই আশা আইথানে এই স্থানে তৃই জানে, কত আশা মনে মনে কত দিন করেছি। কতবার প্রমদার মুখচন্দ্র হেরেছি। পরে সে হইল কার. এখন কি দশা তার, আমারি কি দশা এবে কি আখানে রয়েছি।

(0)

কৌমার যখন তার বলিত সে বারংবার, সে আমার আমি তার, ক্ষল তারো হবো না। ববে ছট দেশাচার কি করিলি অবলার কার ধন কাবে দিলি, আমার সে হলো না। (8)

লোক-লজ্জা-মান-ভরে, মা বাপ নিলয় হয়ে আমার জনর-নিধি আন্ত কারে সঁপিল। অভাগার বত আশা অন্যশোধ ঘূটিল r

(()

হারাইছ প্রমদার ত্বিত চাতক-প্রায়,
ধাইতে অমৃত আদে বুকে বক্স বাজিল—
স্থাপান ক্ষতিলার অভিলার(ই) থাকিল।
চিন্তা হলো প্রাণাধার প্রাণতুল্য প্রতিমার
প্রতিবিম্ব চিত্রপটে চিনাহিত রহিল,
হায় কি বিজ্বেদ-বাণ হুলরেতে বিধিল।

(७)

হান্ন, সরমের কথা, স্মামার স্লেহের লডা, পতিভাবে অন্তল্পনে প্রাণনাথ বলিল ; মরমের ব্যথা মম মরমেই রহিল।

()

তদবধি ধ্বাদনে, এই স্থানে শৃষ্টমনে থাকি প'ড়ে ভাবি সেই স্থাহের ভাবনা , কি যে ভাবি দিবানিশি তাও কিছু জানি না । সেই ধ্যান, সেই জ্ঞান, সেই মান অপমান— আরে বিধি তাবে কি রে জনাস্তরে পাব না গ

(b)

এ যন্ত্ৰণা ছিল ভালো, কেন পুনং দেখা হলো দেখে বুক বিদাবিল, কেন ভাবে দেখিলাম। ভাবিতাম আমি হুংখে প্রেয়মী থাকিত লুখে দে প্রম ঘুচিল, হার, কেন চক্ষে দেখিলাম।

(2)

এইরূপে চন্দ্রোদর, গগন ভারক ন্র নীরৰ মলিনমুখী অই তরুতলে রে; একদৃষ্টে মুখপানে, চেরে দেখে চন্দ্রানান অবিরল বারিধাবা নরনেতে করে রে, কেন সে দিনের কথা পুনঃ মনে পড়ে বে?

(>)

সে দেখে আমার পানে, আমি দেখি তার পারে চিতহারা ছই জনে বাক্য নাহি সরে তে . কডকণে অক্ষাৎ "বিধ্বা হয়েছি না' ধ'লে ধারতমা জুমে বুটাইরা পড়ে রে! (35)

वतन हुवन क'रत .ताथिनाम ट्रंकारण व'रत्न,
जीननाम मृद्द चरत थीरत थीरत वरन दत—
"हिनाम ट्रामांत चानि, जूमिर चानात चामी,
किरत करम व्यागनाथ, शारे राग ट्रामांत ।"
जावात शरान ट्रमां व्याश्च जेनस दरा

কালচক্র।

বারেক এখনও কি রে দেখিবি না চাহিয়া—
উন্নত গগন'পরে
ব্রহ্মাণ্ড উজ্জল ক'রে
উঠেছে নক্ষত্রে কত নব জ্যোতিঃ ধরিয়া!
মানবে দেখারে পথ
চলেছে ভড়িতবং
প্রস্তাতিয়া তবিষ্যৎ ভূমণ্ডল ভাতিয়া।

হেরে সে নক্ষত্র-ভাতি দেথ রে মানজাতি ছুটেছে তাদের সনে আমনদ-উৎসাহ-মনে

নিজ নিজ উন্নতির জয়পত্র বাঁধিয়া।

চলেছে চাহিয়াদেথ বোদ্ধাযোদ্ধাএক এক কাল পরাজয়করি দেবমৃধীধরিয়া।

জনধি, পৃথিবী, মেক, প্রভাপে হয়েছে ভীক, অবাধে পরিছে পাশ পদতকে পড়িয়া।

চলেছে ব্ধমগুলী নবে করি কুত্হলী, চন্দ্র সূর্য্য এহ তারা হিডিয়া আনিহে তারা শৃক্স হ'তে ধরাতলে জ্ঞান-ডোরে বাধিয়া।

আকাশ পাতাৰ গত পঞ্চতৃত আদি বত প্ৰকৃতি ভৱেতে ক্ৰত দেখাইছে খুলিয়া। দেবতা অস্থরগণ ক্রুমে হয় নিদর্শন ঈশ্বরের সিংহাসন উঠিতেছে কাঁপিগ্রা।

সরস্বতী কুতৃহলা, সাহিত্য-দর্শন কলা সহত্যে সহস্রমালা দিতেছেন তুলিয়া,

কমলা অজ্ঞ ধারে ভান্দিয়া নিজ ভাণ্ডারে ধনরাশি অুপাকারে দিতেছেন ঢালিয়া।

কবিকুল কোলাহলে মূথে জয়গননি ব'লে উএতি তর্ক সকে ছুটিছে অশেষ রঙ্গে, অফাতি-সাহস কীর্তি উচৈঃখরে গাহিয়া।

ক্ষই দেখ অগ্রে তার পরিয়া মহিমা-হাব চলেছে ফ্রাসীঞ্চাতি ধ্রা গুরু ক্রিয়া।

অস্থির বাসনাবলে— স্থাপিত অবনী তলে সমাজ শৃত্যালমালা নবস্ত্রে গাঁথিয়া।

চলেছে রে দেখ চেরে শতবার প্রসারিরে অর্দ্ধ স্পাগরা ধরা অলফারে ভূষিয়া।

আমেরিকাবাসীগণ নদ গিরি প্রস্রবণ জনমিধি, উপকৃল গৌহস্কালে বাঁধিয়া।

আই শোন খোরনাদে প্রাতে মনের সাধে পুরুবিয়া মন্তবেশে উঠিতেছে গর্জিরা।

বিনতা-নন্দন সম ধ'রে নিজ পরাক্রম দেখ রে আসিছে রুস বস্থমতী গ্রাসিরা !,

ইভালি উত্তৰা হলে ' অ-কিন্তীট শিবে লবে আবার কাগিছে দেখ হহকার ছাড়িয়া। বিশুবিদ্বা তে**জো**রাশি দেথ বে বুটনবাসী আচ্চন করেছে ধরা, মক্ষীপ সদাগবা, বত দুর প্রভাকর-কর আহে ব্যাপিয়া।

প্রকাশি অসীম বল, শাসিছে জলধিতুল, শিরে কোহিত্র বাঁধা মদগর্কে মাতিলা। তবুও বাবেক কি রে দেখিবি না চাহিলা—

হতভাগ্য হিন্দুশ্বতি ? শোভে কি নক্ষত্ৰ ভাতি উন্নত গগনপৰে ধৰাতল ভাতিয়া ?

ছিল সাধ বড মনে
ভারত(ও) ওদেবি সনে
চলিবে উজলি মহী করে কর বাঁধিয়া;

স্বাবাব-উজ্জ্বল হবে নব প্রজ্ঞলিত ভাবে ভারত উন্নতি-স্রোতে চলিবে রে ভাসিয়া।

জ্ঞানিৰে পুক্ষগণ, বীৰ যোদ্ধা অগণন, রাথিৰে ভাৰত নাম কিতিপুঠে আঁকিয়া।

সে আশা হইল দ্ব, নীরব ভারতপূব; এক জন (ও) কাঁদে না রে পূর্বকথা ভাবিয়া।

এ ফিতিমওলমাঝ, আর্য্য কি রে নাহি আব্দ শুনায় দে রব কেই উচ্চৈঃখরে ডাকিয়া।

সে সাধ খুচেছে হার !
আর মা জননী আয়,
লয়ে তোর মৃতকার
মিটাই মনের সাধ মনে মনে কাঁদিরা।



উন্মাদিনী।

.

আৰু মাথা ছাই, বলিহাবি বাই,
কে রমনী অই পথে পথে গাই,
চলেছে মধুর কাকলী ক'বে।
কিবা উবাকাল, দিবা বিপ্রহর,
বীণা ধ'বের করে ফিরে ঘরে ঘর,
পরাণে বাধিয়া মিলায়ে স্ভান,
গায় উচ্চস্লরে স্বলালত ভান.

উতলা করিয়া কামিনী নরে। অকে মাথা ছাই বলিহারি যাই, কে রমণী অই পথে পথে গাই,

চলেছে মধ্র কাকলী ক'রে।
নয়নের কোণে চপলা খেলিছে,
নিতম্বে নীচে চিকুর ছলিছে,
ককণা মাধান বদনের ছাদ বেন অভিনব অবনীর চাঁদ,
কটি, কর, পদে ছভান মাধ্বী
গেকুলা বসনে তত্না আবিবি

চলেছে সুন্দন্ধী ভাবনা-ভরে। বলি হারি বাই। অংক মাথা ছাই, কে রমণী অই পথে পথে গাই, চলেছে মধুর কাকলী ক'রে।

()

আই শুন গার, প্রাণের জালার —

"পাব না, পাব না, পাব না কি ভার,
নাহি কি বিশাল ধরণী-ভিততের,
যেখানে বিদিরা স্নেছের নিঝর্তির,
মিটাই পিপাদা জুডাই পরাণ,
দেখাই কিরূপ নারীর পরাণ,
প্রণরের দান হৃদর পরে!

বেথানে বহে না কলজের স্থাস,
কালাতে প্রণরী যুচাতে উল্লাস,
বার্তে, ভকতে, মাটাতে, আকালে,
বেথানে মনের সৌরত প্রকালে,
মরের, পরের, মানের ভাবনা,
লোকের গঞ্জনা, প্রাণের বাতনা,
বেথানে থাকে না স্থার তবে!

(0)

*কিবা সে বসস্ত, শরৎ, নিদাব, নরনে নয়নে নব অন্তরাগ ওঠে নিতি নিতি ফোটে অভিলাব, নিশিতে বেমন কাননে প্রকাশ,

কলিকা-কম্বমে ফটাতে শনী॥ भिया. मण, भन. **अ**ভाত, यामिनी वाव, जिथि, मान, नक्कज, स्मिनी, থাকে না প্রতেদ, প্রণয়-প্রমাদে হেরি পরম্পর মনেব অবাধে. জীবনে পরাণে মিশিয়া চক্রনে নেহাবি আনন্দে স্থথের স্থপনে---নয়নে নয়ন, গণ্ডে গণ্ডতল, করে কব্যুগ, কণ্ঠে কণ্ঠস্থল, যেন প্ৰিমল প্ৰন-ছিল্লোলে. যেন ভক-লভা ভক্ল-শাখা কোলে. ষেমন বেণতে বাণীব সূত্র. ষেমন শশীব কিরণে অন্বর. তেমনি অভেদ তজনে মিশিবা. তমুমন প্রাণ, তমুমনে দিয়া, ডলে বাহজান তাজে নিদ্ৰা কুধা. পান করি স্থাথ আনন্দের সুধা, অগাধ প্রেমেব সাগরে বসি।

(8)

"ত্যজে গৃহবাস হয়ে সয়াসিনী,
জ্ঞানি পথে পথে দিবস-যামিনী,
আকাশের দিকে অবনীর পানে,
দেখি অনিমিয়ে আকল পরাণে,
জবাসম রবি, খেত স্থাকর,
মৃত্ মৃত্ আতা তাবকা স্থার,
তরু, সরোবব, সিরি, বনস্থল,
বিহল, পতল, নদ, নদী, জল,
যদি কিছু পাই খুঁজিয়া তাহাতে,
স্মেহেব অমিয়া রুদরে মাধাতে,
মিদি কিছু পাই তাহাবই মতন,
হেরিতে নরনে ক্রিতে আবণ,

দেবতা মানব নারী কি নরে। স্থে থাকে তারা স্থে থাকে ঘরে, পতি-পদতল ৰক্ষঃস্থলে ধ'বে, বিবাহিতা নারী — দধ্বের খেলনা,
ধার দার পরে নাহিক ভাবনা,
জানে না, ভাবে না প্রণয় কেমন,
প্রাণের বল্লভ পতি কিবা ধন,
ইহারাই সভী — বিঘত-প্রমাণ
আশা, কচি, সেহ ইহাদেব প্রাণ—
নারীর মাহাত্ম্য রম্পীর মন
কত যে গভীব ভাবে কত জন,
প্রথম কি ধন নারীব তরে হ

(4)

"আমি মরি ঘূবে পৃথিবী-ভিতবে,
প্রাণের মতন প্রাণনাথ তরে ,
কই—কই পাই প্রাতে বাসনা ?
পেরে নাহি পাই হাব কি বাতনা !
আবে মত্ত মন, সে অনিত্য আশা
ত্যজ, ধৈর্য ধর মূগে ভালবাস।
ব'রে শৃহ কর ক'বে পবিণর
না থাকিবে আর কলকেব ভদ্ধ,
পাবি অনারাদে পতি কোন জন,

তবে মিছে কেন এত বিবাদ ?
অলিতে না হয় পুডিয়া পুডিয়া,
পরাণ ক্রদয় প্রথম স্মরিয়া,
সাহারাব মক তপনে বেমন,
কিংবা অগ্লিগিবি-গর্ভে হতাশন,
অ'লে অ'লে পুডে উঠিবে ঘথন,
হৃদম পাবাণে রাখিব চাপিয়া,
মবিব না হায় মব্রমে ফাটিয়া.

ভবুত প্রিবে লোকের সাধ। স্থাথে থাকে তারা জানে না কেমন প্রোণের বল্লভ স্থা কিবাধন,

মনের সুথেতে থাকে রে ঘরে !" বলিতে বলিতে কাঁদিরা কাঁদিরা, চলিল সুক্রী নয়ন মুছিয়া,

গাহিয়া মধ্ব মূত্ল করে !

(৬)
"কেনই থাকিব কিনের তরে,
তমু বাধা দিরে গৃহের ভিতরে ?ে,
কারাবন্দী সম চির-হতামাস,
কেনই তাজিব এমন বাতাস,

এমন আকাশ রবির কিরণ, বিশাল দরণী, রসাল কানন, প্রাণি-কোলাছল বিহলের গান, সাধের প্রমাদ—কাধীন পরাণ;

কেনই ত্যজিব ? কাহার তরে ? ত্যজিতাম যদি পেতাম তাহায়, যারে খুঁজে প্রাণ ত্বন বেড়ায়, যাহার কারণে নারীর বাভার করেছি বর্জন, কলকের হার

পরেছি হৃদরে বাসনা ক'রে।
"কোথা প্রাণেখর, কই সে আমার কিসের কলক—সুধার আধার— সুধার মওলে সুধারই শশাভ, এসো প্রাণনাধ—নহে ও কলফ

তোমা লরে সুথে থাকি হে কাছে।
তবুও এলে না ?—বুমেছি বুথেছি;
এ জীবনে আর পাব না জেনেছি;
বখন তাজিব মাটীর শিকল
ভামিব শৃষ্টেতে হইয়া মুগল,
হরিহররপে তহু আধ আব,
তথনি মিটিবে মনের এ সাধ,
রবির মওলে চাঁদেব আলোকে,
কৈলাস-শিখরে শিব-ত্রন্ধ লোকে,
করুণের বারি, পবনের বায়্
এই বস্থুন্ধরা প্রাণী, পরমায়,
হেরিব স্থেতে পুলকে শ্রমিয়া,
ভাধনি মিটিবে মনের সাধ!—
ভখন পৃথিবী সাধিদ্ বাদ,

ज्ञिन् कनक बडहे बाह् !"

এই কি আমার দেই জীবনতোষিণী ?

(১)
এই কি আমার সেই জীবনভোবিণী ?
বৌবনের স্থামত্ত্র স্থাতর স্পিণী ?
এই কি সে করতল শিরীব-কোমল,
ধরিতে হৃদদে বাহা হরেছি পাগল ?
এই কি সে প্রাণহারা চোরা প্রির আঁবি ?
সাধ্য নাহি ছিল বারে ক্লেবে ধ'রে রাধি।

এই কি রে সেই তমু খর্ণ কিনি বার

শাবণা ঝরিত অবে—এই সে আমার ?

শাবক-উপরে নারী পার্যদেশে বসি তারি
ধীরে কোন প্রোচ্জন বলে;

অবকার কেশগুলি ধীরে ধারে করে তুলি

যরে দীপ ধিকি ধিকি জবে।

(२)

সাধের সামগ্রী ষত, সকলি হেথার
এইরূপে কণজিত কালের মলার।
সোনার বিগ্রহে যদি পুঞ্জ এক দিন,
সেও রে পরশ-দোবে হয় রে মনিন!
হীরকে কাটিরা কর চিকণ দর্পণ,
তাতেও কালের ছায়া কালেতে পতন!
কত শোভা পল্মদলে জলে যবে ভাসে,
পরশ বাবেক ভারে—ভারে। শোভা হাসে।
সংসারের স্থপল্য নারীও উকার সল
পুক্ষেব দরশ পরশে।
বলে আর ক্ষিরে কিরে নেহাবে নেহারে বীরে

নারী-**আন্ত নি**জার **সর**সে। (৩)

প্রবেশি স'সারে যবে— কি স্থেপর কাল।
প্রাকৃতির বুকে যেন স্থবর্ণির জাল
যতনে ছডান ছিল, জড়ান তাহাতে
কত মোহকর চিত্র নথন জুড়াতে।
কিবা নিস্তা কি যপন কিবা সে জাগিয়া,
সকলি নির্থি বুক উঠিত নাচিয়া,
ছুটিয়া বেড়াত প্রাণ আশার থেলায়,
ভাবিয়া মানসে এই তরুণী লতায়,
কেবেছিফু সমুদ্র পৃথিবীর স্থাম

নবতক রোপেছি আনিরা। বে নবীন তক এই হার রে আমিও সেই কোথা গেল সে আশা ভাসিরা।

(৪)

"কেন নাথ কেন কেন" বলিয়া তথন
উঠিল রমণী সেই তাজিয়া শহন ;
তুলিলা পরিয়া গলে বিগলিত হার
বলে "নাথ হের দেখ এথনও বাহার,
চারা গাছে পাতা ছিল এবে কুল তার

ফুটেছে কেমন দেখ পাতার পাতার,

কে বলেছে ফ্রায়েছে সে সাধের আশা,
সেই তৃমি সেই আমি সেই ভালবাসা।
মন দিয়ে থেল নাথ ফিরে হবে বাজি মাত
সেই থেলা আবার থেলিব,
সেই পুঁজি, সেই পণ, সেই প্রাণ, সেই মন,
প্রাণনাথ সকলি সে দিব।"

(t)

'কি দিবি রে পাগলিনি, পাবি কি কোথার ?
সাধের বাগান ভালা চেরে দেথ হার!
ছারা ক'বে ছিল তাহে হেই ভুটি তক,
বিসভাম তলে যার ঘবে ভার গুরু,
একটি তাহার হার, সমূলে ভালিরা
গিরাছে কোথার চ'লে সদিনী ছাভিরা।
বিশ্বীকেতে জরজর নীবস শরীর
সেও হার গভ-প্রার বজাহত শির!
রোপিরু যে এত সাধে কল-তরু কাঁদে কাঁদে
ক'টি তরু আছে বল ভার ?
ক'টি বল ফুটে আছে

()

পাগলিন কোথা পাবি সে শোভা আবার ?
সে ফ্লের মধু, বাস, এখন আবার !
"কোথা পাব ? এস নাথ দর্পণের কাছে,
দেখাই সে শোভা তব, এবে কোথা আছে ।
কেন নাথ নাই কি হে ?—এই ত সে সব
সেই চারু চাদম্থ, প্রাণের বল্লভ,
সেই ত অমিরমাধা এখন(ও) তোমার,
নয়ন, বচন, হাসি—দর্পণ মায়ার !
সেই বাছলতা এই অধবে সে তিল এই
তথ্নও হা ছিল নাথ, এখনও ত সেই,

বেই আমি সেই প্রাণ, হ্রণয়েতে সেই গান,
তথ্ন এখন কই প্রভেদ ত নেই।"

(9)

"প্রভেদ কি নাই, — হার হার রে কণ্টা— দেখ দেখি একবার নয়ন পালটি। বৌবনের কুঞ্জবন কত ছিল তার সারী, ভাষা, শুক শিক পাতার পাতার। বতনে ডাকিলে কাছে হরিবে আসিয়া, বদরে মাধার, কোলে পড়িত দুটিয়া. এখন(ও) কি সেই পালী আছে কি সে সব ?
সেইব্লপে কাছে এদে কৰে কি বে বব ?
কত উড়ে গেছে তাব উড় উড় কত আর্ম্ন
কত হাম নীৰবে বদিয়া.
অস্থে শাখীতে লুটে, ডাকিলে আসে না ছুটে
কাদে বিদি সদীত ভূলিখা।

(b)

এখন বাজে না জার সে কুহক বানী।
মোহিনী মারার মুখে—সকলি রে বাসী
নির্গন্ধ জগতে এবে, নির্গদ্ধ জ্বদ্ধ,
বসন্তের বাসন্ত ফনীব আলর।
বা ছিল সেহের মণি দিয়াছি বিলায়ে,
এখন ভিখারী কাচ না পাই ক্ডামে।
ভেলেছে প্রেয়সি, সেই আলাব আরমী!
হাসিয়া, কাদি, খেলি বটে তব্ও উদাসী।"
"তব্ও উদাসী নাথ, কর দেখি দৃষ্টিপাত
বারেক এ শিশুর বদন।"
বলে তুলে আনি স্বথে বাধিল হামীর বুকে
পুনঃ মারা-নিগতে বন্ধন।

কামিনী-কুস্থম।
(১) ·

কে খোঁজে সরস মধু বিনা বহু-কুম্মে ৽
কোথায় এমন আব
কোনল-কুম্ম হার
পরিতে দেখিতে ছুঁইতে আছে এ নিখিল ভূমে ৽
কোখা হেন শতদল
কদে প্রি পরিমল,
থাকে প্রিয়ম্থ চেয়ে মধুমাথা সরমে ?
বঙ্গনারী-পূজা বিনা মধু কোখা কুম্মে ?
(২)
কি জুলে ভূলনা দিব, বল চূত্মুক্লে গ
কোথায় এমন স্বল
খুঁজিতে এ ধরাতল
সেধানে এমন মৃহু মৃহ কবে বসালে গ
বেধানে এমন বাস,
নব রসে পরকাশ,

নব রসে পরকাশ, নবীন যৌবনকালে মধু ওঠে উথলে । ৰক্ষুক্ৰালা বিনা মধু কোণা মুকুলে ? (0)

মধ্ব সৌরভময় ভাব দেখি চামেলি
চালে কি অতুল বাস,
ফ্লম্থে মুছ হাস
তরুকোলে তরু বেথে, অলিকুলে আকৃলি।
কি জাতি বিদেশফ্ল
আছে তার সমতুল,
রাখিতে হৃদয়-মাঝে প'রে চিত্তপুত্লি ?
বলকুলনারী এর তুলনাই কেবলি!

(8)

কি আছে জগতে বেল-মতিষার তুলনা !
সরল মধুর প্রাণ,
সুধাতে মিশারে দ্রাণ
ভূলার মূনির মন নাহি জানে ছলনা,
না জানে বেশ-বিস্থাস,—
প্রস্থাতিত মূবে হাস
অবরে অমিয়া ধরি হলে পূরি বাসনা—
বঙ্গের বিধবা সম কোথা পাব লদনা ?
(৫)

কে দেয় বিলাতী 'লিলি' নলিনীতে উপমা ?
দেশে যে কৃম্দ আছে
আন্মক তাহারি কাছে
তথন দেখিব বুঝে কার কত গরিমা।
বিধ্র কিরণ-কোলে
কুম্দ বথন দোলে,
কি মাধুরী মরি তার কে বুঝে সে মহিমা ?
কোণায় বিলাতী "লিলি" নলিনীর উপমা ?

(৬)
কি ফুলে তুলনা তুলি বল দেখি চাপাতে ?
প্রগাঢ় স্থবাস বার
প্রেমের পুলকাগার,
বঙ্গবাসী রঙ্গবদে মত্ত আছে বাহাতে।
কেগোর ঈরাণী 'গুল,'

এ স্লের সমত্ল ? কোথা কিকে 'ভাষোলেট' গন্ধ নাহি ভাহাতে। কি ফ্ল তুলনা দিতে আছে ৰল চাঁপাতে ? (৭)

ক্তুই কুমুন আরো আছে বন্ধ-আগারে— মালভী, কেতৃকী, জাতি, হানুলী, কারিনী পাতি, টগর মল্লিকা নাগ নিশিগদ্ধা শোভে রে,
কে করে গণনা তার—
অশোক, আতস আর,
কত শত ফ্লকুল লোটে নিশি ত্যারে—
স্থার সহরী বালা বন্ধগৃহ-মাঝারে।

(৮)
কিবা সে অপরাজিতা নীলিমাব লহরী!
লতারে লতারে যার,
অমরে তুবি সুধার,
লাবে অবনতমুখী, তহুখানি আববি ,
তাই এত ভালবাদি,
মেবেতে চপলা হাদি—
কে খোঁকে বে প্রকাপতি, পেলে হেন ভ্রমরী,
মবি কি অপরাজিতা নীলিমার লহরী।

(৯)

এ মাধুরী হৃধারস কোথা পাব ক্সনে,
কোথায় এমন স্থার,
কোমল কুস্ম-হার,
পরিতে, দেখিতে, ছুঁতে, আছে এ নিপিল ভূমে
কোথা হেন শতদল
ক্রদে পুরি পরিমল,
থাকে প্রিয়ম্ধ চাহি মধুমাধা সরমে—
বন্ধনারী-পুশা বিনা মধু কোথা ক্রমে ?

চাতক পক্ষীর প্রতি।

(১)
কে তুমি রে বল পাখী,
সোনার বরণ মাথি,
গগনে উধাও হলে,
মেবেডে মিশিয়া রলে,
এত ফুখে মধুমাথা সদীত শুনাও দ

()

বিহৰণ নহ তুনি;
তৃত্ত কৰি মৰ্ত্তাভূমি;
আনম আনল আৰে,
উঠিবা দেখেব গায়,
আনীয়া অসলপ্ৰেণ অ্বায় আন্তাপি দু

(0) দৌরভে স্কায়ে বয়, व्यक्श-जेनम्-कारन যথন প্ৰন ব্যু, সন্ধ্যার কিরণজালে স্থান্দ উথলি উঠি বানুরে কেপার। দূর-গগনেতে উঠি (>) গাও মুখে ছুটি ছুটি, সেইরপ তুমি পাখী, স্থের ভরত্বে ধেন ভাসিয়া বেড়াও ? অদৃশ্য গগনে থাকি (8) কর স্থথে বরিষণ আকাশের তারা সহ সুধাস্বব অহুক্ষণ মধ্যাকে লুকায়ে রহ, ভাসাইতে ভূমওল স্থার ধারায়। কিন্তু শুনি উচ্চৈ:শ্বরে (>>) শূক্তে সঙ্গীত ঝরে. কেবা তুমি জানি নাই, **ষানন্দ প্ৰ**বাহ চেলে পৃথিবী জুড়াও। তুলনা কোথায় পাই, (() व्यवसङ्ग हुर्ग करव, একাকী তোমাব স্ববে পডে ৰদি শূক ব'য়ে, জগৎ প্লাবিত করে, তাহাও অপ্র্র, হেন নাহিক দেখায়। শরতেব পূর্ণ-শৃশী (><) বিমল আকাশে বসি. ষৰ কিছুভূমণ্ডলে কৌম্দী ঢালিরা যথা ব্রহ্মাণ্ড ভাসার, সুন্দর মধুব বলে---() নবীন মেধের ঞ্ল— কবি যথা লুকাইয়ে মৃক্তা-মাথা তৃণদল--তোমার মধুর স্ববে পরাঞ্চিত হয়। क्तरय कित्रन लट्य, উন্মন্ত হইদ্বে গায়, (50) পৃথিবী মাতিকে তার পাথী কিংবা হও পরী, আশা, মোহ, মারা, ভর, অক্তরে জ্ডার। বল রে প্রকাশ করি, কি সুথ চিন্তায় তোর (9) রাজাব কুমারী যথা षानत्म श्राहर (जात ? এমন আহলাদ আহা প্রের দেখি নাই ! পেয়ে প্রণম্বের ব্যথা, (38) গোপনে প্রাসাদ'পবে স্থা প্রণম্বেব গীত বিরহ সাত্তনা করে, মধুর প্রেমের মত মধুব গাথায়। প্রাণ করে পুলকিত— তারো স্থললিত পর, (6) নহে এত মনোহব, যেমন থজোৎ জলে এত সুধাময় কিছু না হেরি কোথায়। বিরল বিপিনতলে, (50) ক্ষুম ভূণের মাঝে বিবাহ-উৎসব রব, আত্দী আলোক দাজে, বিজয়াব জয়-স্তব---ভिक्तिमा निभित्र-नीरत जांधात्र निभाग्। তোর খুর তুলনার ष्मात (पश्चि हत जाइ-भाजाम निक्क गांधा ब्बटि मा बरमत नाथ शूर्व माहि इत । **6गानान जन्छ रवा**

(>6)

তোর এ আনন্দমর স্থ-উৎস কোথা রয়. বন কিংবা মাঠ গিরি গগন হিল্লোলে হেরি---কারে ভালবেলে এত ভুল সমুদর ?

(>1)

তুমিই থাক রে স্থথে জান না ওলাতা চথে বিরক্তি কাহারে বলে. জ্ঞান না রে কোন কালে. প্রেমের অরুচি ভোগে হলাহল কত।

(36)

আমরা এ মর্ক্তাবাসী কভু কাঁদি কভু হাসি, चारा পाছে দেখে बाहे, यमि किছ नाहि পारे. অমনি হতাশ হয়ে ভাবি অবিরত।

(50)

ৰত হাসি আপাণ ভ'রে. ষাত্তনা থাকে ভিতরে, এ ছঃখের ভূমগুলে শোকে পরিপূর্ণ হ'লে মধুব সঞ্চিত হয় কতই মধুর।

(२)

ঘুণা ভয় অহকার দূরে ক'রে পরিহার পাথী রে তোমার মত यमि ना कांमिए इ'छ মা জানি পেতাম কত আনন্দ প্রচুর।

(25)

গহনবিহারী পাখী জগতে নাহি রে দেখি গীতবাত মধুরর হেন কিছু মনোহব তুলনা হইতে পারে তোমার বাহার। (22)

বে আনলে আছু ভোৱে tatata faram catra

পাথী তুমি কর দান, তা হ'লে উন্মন্ত প্ৰাণ कविजा-जत्रक जानि तमथारे धवाय।

প্রলয়। *

())

কিরে কি আসিছে প্রলম্বের কাল নাশিতে পৃথিবী ? ফিবে কি করাল, বাৰিবে বিষাণ ভীষণ নিনাদে ? অবস্ত আকাশে বিপুল প্রমাদে

ফিরে কি উঠিবে খাদশ রবি ?

(2)

ভর্ত্তর কথা--- ব্রহ্মাণ্ড-বিনাশ করিতে আদিছে প্রচণ্ড হতাশ— ভামর মণ্ডলে তাডিতের শিধা. গিরি-চ্ডাকৃতি, বায়ুপথে দেখা,

দিয়াছে অন্তত অনলচ্ছবি। স্থির বায়ু ভেদি তডিত-কিবণ-রাশি স্তুপাকার করিছে গমন, পুথিবীর দিকে—আফুতি ভীষণ দেখিতে অন্ত অনলচ্চবি।

জনস্ত আকাশে বিপুল প্ৰমাদে किरत कि छेडिर वामन त्रि ?

(0)

আসিছে অনল ব্লাও উজলি. (দেখেছে শৃন্থেতে পণ্ডিতমগুলী) জগত-ব্ৰহ্মাণ্ড করিবে গ্রাস। এ কি ভয়ন্তর-বিশ্বচরাচর , দোম, শুক্র, বুধ, মহী, শানৈশ্চর, विद्युष-चनत्व इत्व विनाम ।

* ১२৮२ नात्न मण्यूर्व ज्र्षाश्चर्वात्न हे हैं-রোপীর পণ্ডিতেরা দেখিয়াছিলেন বে, স্থ্যম^{ড্রা} হইতে এক অন্তত বিহাতাকৃতি জ্যোতী খে নিৰ্গত হইয়া পৃথিবীর দিকে আসিতেছে, ^{১ বি} আর্থেক পথ অভিক্রেষ করিরা আসিয়াছে 👯 যেরপ বেগে আদিতেছে, তাহাতে অনতিবি^{ংগ} পৃথিবীকে আছের করা **নম্ভব।** সেই উপ^{্রক} केंद्र। जित्रदिक क्रमेश्राटक ।

আকাশের গ্রহ, নক্তরমগুলী অনলে পুডিয়া পড়িবে সকলি , অধিল ত্রন্ধান্ত হবে শৃত্তমন্ত্র, সমূত্র, পবন, প্রাণী সমূদ্য,— এমন পুথিবী হবে বিনাশ।

(8)

হইবে বিনাশ এমন পৃথিবী ? অথবা যেমন চন্দ্রমার ছবি, প্রাণিশৃক্ত মক হয়ে চিরকাল, ভ্রমিবে শৃক্তেতে হিমানীর ভাল—

মানব বিহল কিছু না রবে 🕈 না রবে জলধি, নদনদীজ্ঞল, অগাধ সাগর হবে মকতল, শীত, গ্রীম ঋতু জুরাবে সকল,

মানব পতক কিছু না রবে ?
না রবে মানব—বিপূল্ মহীতে,
মানবের মুথ না পাব দেখিতে,
পাব না দেখিতে জগতের সার
রূপের প্রতিমা, স্থেথর আধাব
রুমণীর মুথ—ভবের ভূষণ
বিধাতার চাক মানস-স্কন—

চিরদিন তরে বিলীন হবে ?

বিহলের খর, তবল-নিঝার,
কুমুনের আভা ড্রাণ মনোহর,
বালকের হাদি, আধ আধ বোল,
ঘনষটাচ্ছটা জলের কলোল,
টাদের কিরণ, তডিতের ধেলা,
ভাহর উদর ভ্ধরের মেলা,

দেখিতে ভনিতে পাব না আর ?
এত বে সাধের এত বে বাসনা
আশা অভিলাষ, কিছুই রবে না,
আনন্দ বিষাদ, ভাবনাকলাপ,
প্রথমের সুথ প্রতাপের তাপ,
ধনের মর্যাদা, মানের গৌরব,
আনের আখাদ, প্রথমের সৌরত,

किছू कि तरव न। तरव न। जात ? (७)

বিরলে বসিরা এ মহীমগুলে, উলানে ভাসিরা কালের হিলোলে, আব কি পাব না সে ভাবে ভাবিতে, আর কি পাব না সে সব দেখিতে, নয়নে কাঁদিয়া অপনে ড্বিয়া, মানসে ভাগিয়া প্লকে পুরিয়া,

বে সবে দেখিতে বাসনা হয়। শিশু-বাল্যকাল, হোবন সরল, (কথন অয়ত কথন গরল,) কৃটিল প্রবীণ মানব জীবন, লহরী লুকায়ে হবে অদর্শন,

এ জীব প্ৰবাহ— হবে প্ৰলয় ?

(9

এত যে সহস্ৰ জীবের বতন—
দেবের সদৃশ মহামতিগণ,
মৃগে যুগে যুগে প্রাণ স'পিরা
আকাশ. জলধি, পৃথিবী বুঁজিরা
জ্ঞান সঞ্চারিল, মানবজাতিতে,
আনল নিম্মির অজস্র করিতে,

সকলি কি হায় বুধায় থাবে 🕈 ভবে কি কারণ বুধা এ সকল, এ মানবজাভি, এ মহীমঙল, এমন তপন, ভারা, শশধর, এড সুণ, ভৃঃথ, রূপ মনোহর

বিধির সঞ্জন কেন কি ভাবে 🕈

(+)

নাহি কি কোন অভিসন্ধি তাঁর, জীবাত্মা, জীবন, সকলি অসার, এত যে যাতনা বাতনাই সার—

ভধুই বিধির সাধের পেলা ? তবে ভগ্মদাৎ হোক্রে এখনি, দেহ, পরমায়, আকাশ, অবনী, আঁধারে তুবিয়া হোক্ছারধার, কিবা এ ব্যদাও ফীবফক্স আর—

চিবদিন তরে যাক এই বেলা। এ মানব-জাতি, এ মহীমগুল, বুধা এ সকল— সকলি নিম্ফল—

এই কি বিধির সাধের থেলা!
বিধাতা হে আব করো না স্কল,
এমন পৃথিবী, এমন জীবন—
কর যদি প্রভু, ধরা পুনর্কার
মানব স্কল করো না'কো আর,

আর বেন দেব, না ২য় ভূগিতে এই দেহ, মন ধারণ করিতে, এরপ মহীতে কথন আর।

আমায় কেন পাগল বলে পাগলে ?

লোকে করে যা আমি করি না, লোকে ভাবে যা আমি ভাবি না, পাঁচের মতনই হ'তে পাবি না, পারিলাম(ও) না এ ভতলে। আৰু যত সবে কত স্বথে ধায়, কত আশা ক'রে কত দিকে চায়. তুথ-শুলে বাঁগা--তবু সুগময় ভাবে সকলে। जातां कारन ना-भत्रत्वननां, কভ ভাবে না---নিজে যাতনা---

হদি তাডনা---সহে বাসনা---কু-ছলে।

আমি হেরি যত চাহি তত পথ, হেবি ছায়াময় সব মনোর্থ, যত আশাচ্যুত কিছু মনোমত নহে ভৃতলে।

সবি তৃথময় সদা জ্ঞান হয়, ভব সমুদ্ধ যেন ঢাকা রয়,

ছেডা-- জরা আঁচলে। ধত খুঁজি আমি খুঁজি কতবার(ই), খুঁজি পাই কট কিবা নরনারী ষত পরিবার নাম জানি তার, ভাবে নিজ নিজ ভোর বেবা ধার আমি যে ভিথারী আশা-ঝুলি সার আৰ-ভৃতলে।

ভেবে ভেবে হিয়া হাদে মনে, ভবে দেখে যত ভব-কেপা জনে, পাচে কালে খেলে মিশে ভব-রণে व्यामि कैंपि वरन व्यक्तल। আমায় কেন পাগল বলে পাগলে ? किया भिन्न मुवा-किया महाठात्री হেন নির্মালে ?

নাহি ছায়া-রেখা যার হিয়াপরি, गांद्र क्षिमांद्य शृद्ध शृक्षा कति, হিয়া-মুকুরেতে যারে দিলে ধরি সদাউজ্জলে ! কোথা পাই হেন ভব-চরাচরে হিয়া দিলে বারে হিয়া দেয় পরে, যিনি কোন ছলে। স্থা স্থা বলি কত সাধে বলি, দিছি কতবাব(ই) হিয়াতলে দলি, শৃষ্ক তবু প্রাণ জীর্ণ আশা-কলি তবু কপালে।

দূর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে। শীতাংশু ঢালিছে সুথে সুধাংশু গগন-বুফে জগৎ শীতল হয়ে দে আলোকে ভিজিছে, সুধীর সমীর বয় ত্ৰিছে পল্লবচয় উভানে রজনীগন্ধা নিশিমুখে ফুটিছে। দূর-কাননের কোলে পাগী এক ডাকিছে। স্বপনে ছুটিছে জোর স্বভাবের ভাবে ভোর পরাণ হৃদয় মম কত স্রোতে ডুবিছে, বিশ্বপ্রাণে যুক্ত প্রাণ অসাড ইন্তিয়-জ্ঞান, মধুর মুরলী গানে বেন শুধু শুনিছে। দূর-কাননের কোনে পাথী এক ডাকিছে। সহসাভূলি তথনি त्म चन्न भूत्रनी-श्रन রমণী-কণ্ঠের স্থর কানে যেন পশিল---এবে দে ব্ৰত উদ্ধার, "শেষ দেখা এইবার, এখন বৈরাগ্য-পথে স্থি তব চলিল।" রুমণীর ছারা এক তক্তলে পড়িল। कांधा वा कित्र हेम् मग्रत्न अविन विन्त् (योवन-नोनांत्र मिक् चुिल्रिश (थनिन, এইরূপে চক্রোদয় মনে হ'লে সমৃদর यत এই उक्र उत्न आंभारत तम विन --দূর-কাননের কোলে পাখী এক ডাকিল। इरव भूनः इरव रम्था, वनिन "क्लाल लिथा, चाक्कि হ'তে শেষ এই" ব'লে ফিরে চলিল। ষত থেদ তত হ ফুরায়েছে যত বর্ষ मिन—तम नव(है) आंक चुिलिए बिनिन ; मृत-कानत्नत्र कारम शाबी अक डाकिन !

াছবি জদহে ধ'রে ফিরেছি ভবন'পরে. এসেছি বদেছি বরে ক'টি তার জাগিছে ? কাশার মোহের ছল. বাহতে দিয়েছে বল এবে তার কাছে ক'টি-ক'টি তারা ফটিছে ? দুর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে। ট্রদাসে দেখিত ভার, সে কান্তি কোথা রে হার, সে কান্তি কল্পনাপথ আলো ক'রে শোভিছে. এই কি সে নিক্লপমা. প্ৰতিষাজিনিয়ারমা কিংবা এ তকর(ই) **ছাম্বা—প্রতিবিম্ব ছলিছে**। সে যে এই - বিধা হলে কিছুতে না ঘুচিছে। চেমে দেখ যতবার. হিয়া কাঁদে ভতবার সে মুখেব সনে ধেন কত যুগ(ই) ফিরিছে। দাও" বলিবারে তাবে, রসনা জড়াতে নারে, कि रगन काथां अर्थिक कर्श आति रवाधिए । দুর-কাননের কোলে পাথা এক ডাকিছে! াপ প্রাণীর প্রায় "বাও" শেষ দিমু সায়, অমনি নয়ন-তটে বারিধারা বহিল, চণেক নাথাকে জ্বার "এই শেষে"—শেষবাব ব'লে অপাঙ্গের কোণে একবার চাহিল-थीरत थीरत बजनीत छात्र। मरन मिलिन। াক্ষ রমণী ছাঁচে. প্ৰভেদ কি এত আছে? এ কি সাধ ছ'জনার হাদিতল মথিছে, ক বাঁচে, মরে আরে. এ কি লীলা বিধাতার পাৰাণে কুন্তম হান্ত কেন বিধি গাঁথিছে ? দুর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে। ব ময়ে দীকা নিয়ে. জগতের স্থা পিয়ে, জেগেছি জগতীতলে—দে কোথায় কাঁদিছে ? ামি সেই তক্তলে. ভ্ৰমি সেই ভ্ৰমছলে হিয়া-মাঝে তার ছারা কতবার বসিছে? দুর-কাননের কোলে পাখী এক ডাকিছে। মুধাংশু উঠিছে মুখে ারার গগন-বকে जन्द भौजन हरत (म चारनारक जिक्हिह, ধীব সমীর বয়, তুলিছে পন্নবচয়, উভানে রজনীগন্ধা নিশিমুথে ফুটিছে; কঠিন পুক্ষ-প্ৰাণ সকলি ত সহিছে! ।র-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে।

কাশী-মাহাত্ম্য

গঙ্গা ।

কোথার চলেছ তুমি গদে

শাল পিয়ালা তাল
তমাল তক রসাল
ব্রতভী-বল্লরী জটা
স্বলোল-ঝালর-ঘটা
ছারা কবি সুশীতল
চেকেছে তোমাব জল
চলেছে অলবাজি নীর-ধাবা অলে,
কোথায় চলেছ তুমি চেন রূপে গকে
দু

কল-কল-কল স্বব

গাৱা-জলে নিরস্তর

বিশাল বিস্কৃত ধাবা

সমতল তৃণ-হারা

ধরণী চলেছে রজে

হধারে নিবিড রজে

বট বেল নারিকেল

শালি খ্যামা ইকু বেল

অবণ্য নগর হাট

গবাদি রাখাল মাঠ

প্রস্কুল কলেছে কুল নীবণারা সজে—

কোখায় চলেছ তৃমি হেন রূপে গলে ৮

পাটিকেলে হথ্য পট
কুলগারে সারি সারি
ধারাঞ্চালে নর-নারী
চাকিয়ে সোপানক্ল—
ঘাটে ঘাটে কুটে কুল ?
কল কল নর-ভাষা
হুদিকোর-পরকাশা
হাস্তার অভি-গানে
তুলেছে ভোমার কালে
নগর পালীর রুপ বিমল ভরকে

মন্দির দেউল মঠ

ৰাণিক্স বেসাতি পোত
ভাসারে চলেছে স্রোত
ভরি ডিঙা ডোঙা ভেলা
বৃক্তে করি করে থেলা
নাচারে চলেছে ক্ষক
ধবল ধীরে তরক
ছলিয়া ছলিয়া স্থেধ
নর, নারী গ্রাবা মুধে
ছড়ারে চিকুর-কাল ভ্রমিডেছে রকে,
কোধার চলেছ ড্রমি হেন রূপে গকে দ

ফুলদাম ফুলথর,

ত্বীপরাজি হৃদিপর
আকাশ অদকমালা
হৃদয়-মুক্রে ঢালা
অফণ করণ-ভাতি,
শশধর, জ্যোৎস্মা-পাতি,
বাযুগন্ধ পরিমল,
পানিবক, মীনদল,
শৃধ্য, শুক্তি কোলে করি কোলা যাও রংশ,
কোলায় চলেছ তুমি বেগবতী গলে গ

वाषांनात्र खांगे नारे श्रापि प्लरह खाप नारे प्राप्त नारे, भित्रा नारे, प्राप्त नारे, भ्रज्जा नारे, प्राप्त नारे, भ्रज्जा नारे, प्राप्त नार्वे नारे, प्राप्त नार्वे नार्वे नारे, भीवन प्रभाज-होन नत-नात्री वरण। प्रभादन हत्सार्थ (य प्राप्तारण शरण ?

কে ব্রিবে বিফুপনী
পুণাডোরা তুমি নদী
কেন ছাড়ি নিজ ফল
নামিলে এ ধরাতল ?
বিজ্ঞারি গভীর জল
কেন কর কল কল ?
কি পাপে ভারিতে এলে,
কি পাপ তারিরে গেলে,
কে ব্রিবে এবময়ি, সে মহিমা-রজে,

ভাগীরথে দিয়ে কুল
উদ্ধারিলে পিতৃক্ল
এই কি শিখালে গতি
ভবে এসে ভাগীরথি ?—
দিয়ে তিল তব জলে
চালিলে অমৃত ব'লে
দেহাল্লন নাহি রহ
সর্কাপাপে মৃক্ত হয়
পতি পুত্র পিতা মাতা—তিলোদক সঙ্গে,
এই কি শিখালে তুমি, ভবে এসে—গঙ্গে স

পরহিত্ত্ত্ত করি,

দ্রব হ'লে দেহ হরি,
বারিরুপে সুমন্সলে,
শিখাইছে প্রতিফল—
ত্যাগ-শিকা পুণ্যকল,
দরা-করুণার রেখা
তোমার শরীরে লেখা,
পরহিত-চিস্তা-ত্রত তর্মিলী তোমাগত,
তাই পুণ্যম ধারা
হে গলে, পাতক হরা!
পতিত্রপাবনী তোমা সবে বলে রঙ্গে,
কোধার চলেছ তুমি হেনরূপে গলে ?

পবিত্র তোমার জল,
পবিত্র ভারততল;
সর্জভংগবিনাশিনী,
সর্জপাপসংহারিণী,
সর্জপোশতাপহরা,
মৃক্তিগতি নীরধারা,
নিভারিণী ভাগীরথী
অ্থদা মোক্ষদা সতা
শগকৈব পরমা গতিশ উদ্ধার পো বদে,
কোথার চলেছ তুমি হেন রূপে গদে ?

উদ্ধার বঙ্গেরে মাতা শিথাইয়া এই কথা তাজে স্বার্থ আরাধনা
সাধুক নিজ-সাধনা;
তাজে জ্ল তিল কল
তুলুক তোমাব জ্ঞল
কাষ এক্ষণ করি
তোমার দীকালহরী,
চলুক তোমার গতি—
শ্রোত্মতী—বেগবতী
বকেব চিস্কার ধারা,
ঘূচুক চিত্রের কারা;
উক্কার উরোর প্রেগা জীব দিয়া বঙ্গে,
কোধার চল্ছ তুমি হে পাবনী গঙ্গে দ

গঙ্গার মূর্ত্তি।#

শ্বেতবরণা শ্বেভভূষণা কাহার বচিতা মূরতি অই ? চন্দ্ৰ-বিভাগ বদন-মণ্ডলে कर्शृद्र (यन भनी (थनहें १ ণাস্ত-নয়নে শান্তি উপলে ওঠ অধরে হিজুল-রাগ, শঙ্খ-লাঞ্ছিত শুভ্ৰ কণ্ঠেতে ঈষৎ বেখাতে ত্রিবলদাগ, দক্ষিণ বামেতে উৰ্দ্ধ বিভূঞ স্বৰ্ণ-কল্স কমল তায়, 'সধঃ হুই ভূজে দক্ষিণ বামেতে করতলে ধৃত বর শভয়; রজ্জ-রাজীব চরণ-প্রতিমা শুত্র মকরে আসীনা স্থাবে, শস্তি-নয়না শান্তবদনা প্রসাদ-প্রতিমা শরীরে মৃথে !--কে তুমি বরদে বরাজ-ধারিণি ? কোথা হ'তে এলে মরত'পরে ? কে গোবসিয়া ওভাবে ওথানে কাহারে দিতেছ অভয়-ববে ?

েরামনগরে কালীরাজভবলে খেত-প্রথার ^{মু} ক'টি মুন্দর মূর্টি স্থাপিত মারেছে।

আছ কত কাল এ মর-ভবনে কিরপে কোথায় পাতকী ভার ? भौरङ भीरतन যে জালা পরাণে দে জালা তুমি কি জ্ডাতে পার **?** পরকালে বদি পাতকী তবাবে তবে কেন এলে অবনীপবে, কত পাপি-প্রাণ পাপের জরাতে ধবাতে তাপিয়া জবিয়া মবে। মানবের ব্যথা ব্যথে কি ও হাদি ? তবে কেন এত প্ৰশাস মুখ ? দেবের প্রাবে পশে কি কথনও কলুৰে তাপিত মানৰ ছথ ? বল গো বরদে বল গো সে কথা, হৃদয়-মণিতে গাঁথিয়া বাখি, না জানি কথন শমন ডাকিবে कथन् উড়িবে পরাণ-পাখী। সাস্থনা বিলাতে দেবের স্ঞ্ন না ধদি বলিবে--কিরূপে ভবে, চপল-হাদয় মানব-মণ্ডলী পাপের পীড়নে ধরাতে রবে ? কেন নিক্লন্তর ? হে বববর্ণিনি, পীড়িত প্রাণীবে নিদয়া হও ? বল বল যেন মুখেব ভক্ষি তবুকেন মৌন ধবিয়া রও ? অথবা তুমি সে কেবলি পাষাণী অসাড অহৃদি মমতা-হীন, সদা অচেত্তন বাবি বাযুমত জ্ঞান না চেতন প্রাণীর ঋণ। • কালেব প্ৰভা**বে** কিবা সে এখন অভীব হয়েছ- অজীব মথা--ननोशी भनानी সৌন্দর্য্য-ভূষিত দেহেতে শ্বড়ালে বিনাশলতা। মৃত বদি তুমি তবে কেন এত ও মুখম তলে লাবণ্য-মাথা---জীবন-চন্দ্ৰমা এগনও ধেন দে সর্ব-অঙ্গবে করেছে রাকা। শ্বতির ধারণায় নাহি কি ভোমার -নাহি কি ভোমাৰ বিনাশগতি গ নাহি কি পবাণে ক্ত-কালকারা माहि मिर्द्रकामान खरिया गांकि १

হার বে পাবাণী পারিতাম যদি
দিতে এ পবাণী ও দেহ-মাঝ,
কানিতে তা হ'লে এ ভ্রমণ্ডলে
কিবা সে পার্থিব মানবরাজ।

कानी मुन्गा ।

আই দেখ বাবাণদী বিবাজিছে গগনে বিশাল সলিলবাশি সম্বাথ চলেছে ভাগি জাহ্নবী-কোলেতে যেন হাসিতেছে খপনে ! (मांक्टिह मनिवादकारन मानि मानि मानिया. শত সৌধ চূড়া মালা কপালে কিবণ ঢালা অন্তৰ্গতে অন্তৰণ গ্ৰাক গ্ৰাকপ্র কাঁধে কাঁধে বাঁধা বেন শ্রুদেশ যুভিয়া । উঠেছে সলিল-গর্ভে বারিদর্প নিবারি কত শিলাময় মঠ. কত অট্রালিকাপট. জলা, কটি, স্বরদেশ অর্দ্ধনীবে প্রদারি ! শোভিছে পাষাণময়ী কাশী হের সোপানে-विवादीश उत्व कत्व সোপানের শ্রেণী চলে. উर्দ्राप्त त्रोधत्यनी নিয়ে সোপানের বেণী **চলেছে সলিলবকে সরীসপ-বিধানে।** না উঠিতে ববিচ্ছবি প্রাচীতের আকাশে. কলববে কলকল কবে জাহনীর জল দিগল সে কলবৰ উঠে নিশি বাতালে। প্রাণিময় যেন কুল নরদেকে চিত্রিত। ঘাটে বাটে ছত্তলে. প্रथ मार्फ करन, करन, কত বেশে নারী নর আদে বার নিরস্তব, কোলাহলে কাশী বেন দিবানিশি কাগ্ৰত।

ওই দেখ উডিতেছে "মাধোনীর ধরারা" শুক্ত ভেদি কাছে তার चहे त्मश उट्ठ चात्र विष्ठा अनुकीत * चहे. जानभगीत शाहाता । অংই দিলীখরচ্চায়া—তলে এই নগ্ৰী. এই উচ্চ শিলা ঘাট এই পাহাড়ের পাঁট, শতচূড়া অট্টালিকা. কুত্ৰ যেন পিপীলিকা, অগাধ সলিলে কিংবা ক্ষুদ্র যেন সফরী। হের হে দক্ষিণে তার আবদা বর্তমান. হিন্দ্ৰ উন্তিচ্ছারা মানমন্দিরের কারা, মানদিংহ-রাজ-কীত্রিখাত সর্বস্থান। অঙ্কিত কতই রূপ দেহেতে উহাব. গ্ৰহাদি-নক্ত-গতি গণনার সপদ্ধতি গ্ৰহণ-অধন-চক্ৰ পূৰ্ব ও ব্ৰেখা বক্ৰ.

বস্তুতঃ চারিচ্ড়া, কিন্তু হুইটি অব্যুচ্চ, ই
 লক্ষ্য এবং সহসা দৃষ্টি আব্বর্ধন করে।

ভারতের "গ্রীনউইচ" অই আগেকার।

পডেছে ফুর্য্যের আলো সুবর্ণের কলনে.

স্থবৰ্ণ-মণ্ডিত চূড়া দেউলের পরশে।

ঝকিছে দেখ রে তার বেন সূর্য্য শত-কার.

া গুৰ্দান্ত মোগল-সমাট্ আওপদজীব কাৰ্ব আনেক হিন্দুমন্ত্ৰির বিনই কবিয়া তাহাব স্থান ক জীল নির্মাণ কবাইয়াছিলেন। তন্মধ্যে এই কা প্রধান মস্জীল এখনও দেদীপ্যমান আছে। স্থানে পূর্বে হিন্দ্দিগেব এক মন্ত্রির অভি নিকটে একণে আর এক মন্ত্রি স্থাপনা হইয়াছে, তাহাকে "মাধোজীর বার্বিল। বেখানে এখন মস্জীদ, পূর্বের বি মাধোজীর ধরাবা ছিল, সেই জন্ত কেহ সেই মস্জীদকেই মাধোজীর ধরারা বলিয়া বিদিন। কাশী-মধ্যস্থলে অই স্থবৰ্ণের দেউটি।
অই বিশ্বের-ধাম,
ভারতে জাগ্রত নাম,
হিন্দুর ধর্ণের দিথা
অই মন্দিরেতে লেখা,
অমহ কালেব কোলে জলে অই দেউটি।

চলেছে তাহাব তলে বনরান্ধি-উপরে অর্দ্ধবপু উর্দ্ধ ক'রে যেন বাযুক্তর ধ'রে তুর্গা-মন্দিরের ১ চড়া বিরান্ধিছে অন্তরে।

চলেছে তাহাৰ তলে বনবাদ্ধি-কালিমা—
শৃঁল কোলে বেখা মত
তৰুশ্ৰী সারি বত,
স্বভাবের চিন্তক্রা,
স্বভাবের শোভাধ্রা
হবিত বরণে ঢাকা স্বভাবে প্রতিমা।

উঠেছে অদ্বে তার এবমন্ত্রী দলিলে স্থাপাকার সৌধরাশি, যেন দলিলেতে ভাসি, কোলেতে গঙ্গার মৃত্তি নিন্দা করে ধবলে।

পুরাণের ব্যাসকাশী ছলে অই ভ্বনে,
অই চইতের গড়। ।
ব্যুদ্ধ-গগুজ-ধর
স্থান্ত প্রস্তার চাকা,
ব্যাসমূত্তি চিত্তে আঁকা
কাশীরাঞ্জ-নিকেতন অই "দিংহ" ভবনে!

হে ত্রে তুর্গতিহরা, কাশীখব-শুহিণী ভিথারী শিবের তবে ভাপিলে কি মর্ত্ত্যপরে এ স্থব্দর বারাণসী, ওগো শিব-মোহিনি ?

***রামনগ**ব তৃর্গামন্দির।

কাশীবাজ চইত সিংহ লাট ওয়ারিণ হেষ্টিংসের শাসনকালে ইংরাজদেব সহিত যুদ্ধ কবেন
এবং যুদ্ধে পরাজিত হইর। সশস্ত্র অন্তরবর্গপরিবেষ্টিত হইয়। নিজ-ভবন এই গড় পরিত্যাগ করিয়া
বান। এই কেলা বর্তমান কাশীরাজের নিকেতন।

বিশাই গঠিব কি না ঞানি না এ নগবে,

দেখি নাহি ফু াসিপুৰী ,

পোবিস' বর্গস্পুনী,

কিন্তু বা দেখেছি চণে

এ ভ্ৰবে—কাবো বণে

এত শোভা দেখি নাই—নিন্দা কবে ইহাবে !

যাই থাক্ ভৱ মনে, ১০ নগেজবালিকে,

মনোবাঞ্চা পূর্ণ ভব,

একত্র করিলা ভব

কাশীতলে দ্যামধী দীনছঃবিপালিকে।

হিমাজি ভ্রৱ হ'তে ক্মারিকা ভিতরে

নাহিক এমন প্রাণী,

নাহিক এমন প্রাণী,
হেন জাতি নাহি জানি,
কি বাণিজা ব্যবসার
ভক্তি মুক্তি কি বিভাব
আশা ক'রে যে না আসে অএপর্ণা-নগরে।
আমিও ভিবারী এই ভব বাজ্য-ভিতরে,
কে দিবে আমারে ভিকা
পাব কি আমার দীকা
প্রবেশিলে অই পুবে জ্ঞান্ধ অগবে ?—
ভ্যারে বকণা অসি, অই কানী বারাণমী,
বিরাজে গঙ্গাব ক্লে প্রজা তুলে অসরে।

মণিকণিকা। 🕸

কোনকালে—এই কথা শুনি লোকমুখে—
শিব শিবা তপজায় ভ্ৰমিছেন বনে,
এক দিন শিবা স্বাসি দীডায়ে স্মূপে
বলিলেন গীবে খীবে মধুব-বচনে—

* কানীব 'মণিকণিক।" কুণ্ড সম্বন্ধে নানাপ্রকার
প্রধান প্রচলিত আছে। ইহাতে যে বিবরণ নিথিত
হইগ,তাহা এক জন পাণ্ডাব নিকট শুনিয়াছিলাম,
তাহা অবিকল গ্রহণ কবি নাই, তুলভাগটিমার
গ্রহণ কবিণাছি। পাণ্ডাব নিকট গে বিবরণ
শুনিয়াছিলাম, তাহা এই:—মহাদেব শিবা
নীর সহিত ভপভাগ নিরত ছিলেন। এই
দিন শিবানী তাহাকে জিজ্ঞানা কবিলেন বে, মান্ত্র

হেমচক্রের গ্রন্থাবলী

"বিবেখর, তব পুরী ধরা ধক্ত কাশী
মানবের মোক্ষধাম তোমার কথার,
বল,দেব, কিবা মোক্ষ লভে কাশীবাসী
কাল পূর্ণ করি ভবে মরিলে সেথার ?
দেখেছি জান্মতে প্রাণী, দেখি নাই কভ্
মরিলে কি হয় পরে, কোথার নিবাস,

দেখোছ জামতে প্রাণী, দৌধ নাই কভ্ মরিলে কি হয় পরে, কোথায় নিবাস, অনস্ত কালের কোলে কিবা করে, প্রভ্, মোকপ্রাপ্ত জীব যত—মনে কি উল্লাস ?

জীবরূপে কাল-সঙ্গে খেলে কি ভাহারা, ধেলে যথা প্রাণিরূপে থাকিয়া ধরায়, অথবা মুক্তির ফল—ভ্যকে দেহ-কায়া "লান হয় প্রাণিগণ ভোমার প্রভায় ?"

শুনিয়া শিবাব বাণী কহিলা ভবেশ "হে প্রকৃতি, মানবের পরকাল-প্রথা ভূর্ব্বোধ—ভূক্তের্ম অতি অপার—অশেষ। সে কথা শ্রবণে, শিবে, মনে পাবে ব্যথা,

জ্বপ কর, তপ কর, শঙ্কর-সাধন, নিতাবত শুদ্ধচিতে কর মহামায়া, দূরগত পরকাল-প্রণালী কেমন, বাসনা করো না চিতে ধরিতে সে ছায়া;

সুপের অবনীতল তৃ:ধ যত তায়---ভাবিলেই তৃ:ধে সুধ, সুধে তৃ:ধ হয়।

মরিলে পর কি হয় ? শিব উত্তর করিলেন, সে কথা স্থীলোকের শুনিবার ঘোগ্য নহে, তাদের পকে তপম্বপ-অতাদি বিধেয়। তাহাতে মহাদেবী ক্রুদ্ধ
ছওরায় শিব উাহাকে সাস্থনা করিবার জক্ত কাশীতে
মাসিয়া, পূর্কে যেথানে চক্রতীর্থ নামে বিফুর তীর্থমান ছিল, সেইখানে মণিকর্ধিকা স্থাপন করেন।
শিবশিবা ছই জনেই গবিজবেশে মাস্থ্যের রূপ ধার্ম
করিয়াছিলেন। শিবানীর কুঠাপ্রিত পদ্বর দর্শনে
গঙ্গাপ্র ও পাণ্ডারা তাহাদিগকে প্রথমে কৃপে
আন করিতে দের নাই: পরে লক্ষ্মী আসিয়া মহাদেবীর পাদোদক পান করিলে সকলে চমৎকৃত হইয়া
ক্রীহাদিগকে কৃপে নামিতে দিল। মানের সময়
শ্রেমানীর কর্প হইতে কর্ণিকাম্বল এবং শিবের
বিজ্ব হইতে মণি ঐ কৃপের সলিকে পত্তিত হয়,

স্কাৎ স্থানিত, শিবে সরল প্রথায় সরল ভাবিলে ভব সর্বাস্থ্যময়।

মৃত্যু শোক বলি লোকে হৃঃথ করে চিতে, দেখে না ভাবিয়া তত আফ্লোদের ভাগ— মানবের মৃত্যু শোক মানবেরি চিতে, আগে স্থধ—হৃঃথ পরে জগতে সজাগ।

দিবানিশি কাল-অংক অভিত বেমন, আসে বার লীলাময় তুলিয়া লহরী এই দিবা, এই নিশি, আবার তপন, কে আগে—কে পরে, কেহ না পায় বিচারি:

কে জানে নরের মাঝে সে নিগৃত কথা কিন্তু শিবে, না থাকিলে ধরাতে শর্বরী দিবার আদর এত হতো না কো সেথা — সেইক্রপ স্থথ তৃঃথ বুঝহ শঙ্করি!"

শুনিয়া শিবের বাক্য নগেন্দ্রবালিকা হাসিলা ঈষৎ মৃত্ন, কহিলা তথন— "ব্যিলাম বুঝাবে না বিধির সে লিথা, তপক্রায় থাক, প্রভূ, যাই অক্য বন।"

"হয়ে না মলিনমনা নগরাজবালে । তপস্থা নহিলে শেষ সে গৃঢ় বচন ব্ঝিবে না ক্ষেমজরি—ব্ঝাইব কালে, এখন চল লো, শিবে, আলয়ে আপন—

ধরা-ধক্স কাশীবামে চল গিরিবালা, স্থাপিয়া পুণ্যের কৃপ পুবাও বাসনা, স্থপথে লইতে নবে নাশি চিন্তুজালা, ভবের মঞ্ল-দেতু করহ স্থাপনা,

রত যাতে থাকে জীব নিতা সদাকাল ভক্তির স্থপথে থাকি ভূলে শোক-ভাপ, ঘূচায়ে মনের মলা মারাব জঞাল, পরমার্থ-লথে পশি কবে সদালাপ।"

এত বলি নিব-নিবা ছাড়ি তপোরপ, উপনাত কালীকেন্ত্রে চক্রতীর্থ নামে বিফুর চক্রে অন্ধিত বেথা শুদ্ধ কুপ দান্তে মুক্ত লোক বাবে শুদ্ধি মানে। গিবিশ গিবিশ-জারা আসিরা সেথার বসিলেন কুপপার্যে ধরি নরক্রণ— শিবের ভিক্কবেশ, শিবানী মারার ধরিলেন জরা-দেহ যেথা সিদ্ধ কুপ ।

কটির উপরিভাগ অভি মনোহর নাসিকা নয়ন ভূক স্থচাক গঠন— পরিধানে চীরবাস উবস উপব চরপ-যুগল কুঠে কুৎসিত-দর্শন,

ক্ষত-গলে মফিকায় করিছে বিব্রত, অক্ষেতে দারিদ্রা-মলা চেকেছে কিবণ, নিকটে বসিয়া শিব চিস্তায় নিরত মক্ষিকুল চুই করে কবেন ভাডন।

অতি কটে উঠি ধীরে চলিলা কুপেতে কুণ্ডের পবিত্র জলে করিবারে স্থান, সোপানে চবণতল স্থাপন নহিতে নিবারিলা রক্ষকেরা করি অস্থান .

"অপবিঅ হবে কুও না টোবে অপরে দ্যিত হইবে বারি কহিলা সকলে • স্থানিত করিয়া কত স্থা। তুচ্ছ করে;— ছঃধে নিবা চাহিলেন শিব-মুথ তুলে,

ভিক্নেণী বিধনাথ বলেন স্বায়—
"চক্রতীর্থ শুনি ইহা—এ কুণ্ডের জলে
সকলেরি অধিকার শাস্ত্রের কথার; কি্দরিদ্র, কিবা বেগগী বলিষ্ঠ হুর্বলে।

কেন নিবাবিছ এবে গুপুণ্য-হস্তারক বে হয়, তাহার নাই পরকালে গতি, অসজ্জন সেই জন পরণে পাতক ছঃবিত পতিত নিত্য সেই পাগমতি;

দরিত এ নারী এবে, রাজার হুহিতা ছিল আগে হিমালয় যেথানে উদর নূপতি, কুপণ ধনী স্বার সেবিতা ও চরণ-সরোজিনী স্বরের আগ্রয়,

পবিত্র হবে এ কুগু ও অন্নপরশে আর্য্য-মান্ত ধীর ধন্ত আসিবে সকলে ভরিবে ভারতস্থল এ কুপের বশে নামিতে ইহারে দাও এই কুগু-মানে। ভিশাবীর বাক্যে সবে কৈলা উপহাস, বাতৃল বলিয়া করে কতই লাঞ্চনা, ধূলি ভত্ম ছডাইয়া পূবে জটাপাশ বঙ্গী লয়ে অবশেষে কবিল ডাডনা।

তথন কাতর খবে যাচিলা মহেণী বিনয় মিনতি কবি স্ততি কৈলা কত, দরিন্ত ক্রন্দন করে প্রচিত্ত-৫়েণী উড়াইলা উপহাদে শিবা বলে যত।

বিশুর কাকুতি স্তুতি বিনয়ের পর বিরক্ত হইরা পথ ছাডি দিলা শেষে, শিব-শিবা প্রবেশিল কুণ্ডের গহরর, স্নান করি স্থাবিত্র কৈলা কুপদেশে।

উঠিলে কুণ্ডের তীরে আবার তথন বেবে চারিধারে লোভী আকাঞ্জী বান্ধণ, বলে "মানে নাহি ফল পাইবে কথন, মানের দক্ষিণা দান নহে যতক্ষণ।"

"কি দিব দক্ষিণা, কাছে নাহি কপদিক," বলিলা শিবানী চাহি শিবের বদন ; "যা ছিল শ্রবণে 'কণি' ভাত্রের ঘালক কুপের সনিলগতে হয়েছে পতন।"

বলিলা ভিক্কবেণী দেবদেব ঈশ, "আমারও মাথার মণি পডেছে দলিলে খুলিফু বথন সানে জটার বডিশ",— শুনে বাদ করে সর্ব্ব বাচকেরা মিলে।

দেখি বিশ্বনাথ ধরিলেন নিজ বেশ "বজ্ত-গিরি-সন্নিড" শরীবের ছটা, কপালে চন্দ্রমা-ভাতি, গলদেশে শেষ, শিবে কল্লোলিনী গদা বিভাগিত জটা।

ধরিলেন বিশ্ববমা মূর্ত্তি আপনার মন্তকে মুকুটছেটা স্থচারু শোভন, শ্রবণে কুওল, গলে মণিমর হার, চারু রশ্মিমর মূথে ভাসে তিনরন।

চাহিরা যাচকর্লে সর্কাশবধাম কহিলেন সদানল বিক্রপাক্ষরণ— "আজি হইতে ঘূচে এর চক্রতীর্থ নাম 'ম্বিক্র্ণিকার' নামে থ্যাত হবে কুণ, । এত বলি প্রবেশিলা মন্দিবভিতরে অদৃশ্য করিয়া রূপ ভবেশ ভবানী; তদবধি ভক্ত যত পরিত্র অন্তরে, স্থান করে দেই কুণ্ডে মহাতীর্থ মানি।

বিশ্বেশ্বরের আরতি ।

(আকারাদি দার্থ স্বর্বর্ণের প্রকৃত্তরূপ উচ্চারণ

এবং অকারান্ত পদের শেব 'অ' উচ্চারণ

কবা আবেখ্যক]

জয় দেব জয় দেব জয় দিব, গিরিজাপতি
শিব, গিরিজা-পতি দাদে পালহ নিত্য,
শিব, পালহ দাসে নিত্য জগদীল রুপা কর হে। ১
জয় দেব জয় দেব কৈলাস-গিরি-লিথরে
কয়জম-বিপিনে শিব, কয়জম-বিপিনে
গুয়রে মধ্কর-পুঞ্জে কোকিল ক্জরে
ক্রবন গছনে ধেলয়ে হংসাবন ললিত
শিব,হংসাবন ললিত প্রসারে কলাপ কলাপী
নাচয়ে অতি স্থিত য়ঽ

জন্ন দেব জন্ম দেব তব স্থলনিত দেশে মণিমন্ত্ৰ স্থাজনে বিদ্যা হয় নিকটে বিদ্যা স্থাজনে বিদ্যা স্থাজনিক দৈশে মণিমন্ত্ৰ কিন্তু বিজ্ঞানিক দিশে সেবে ব্ৰহ্মা আদি দেবতা শিব, চৱণ ধন্ধি শিবদে ॥৩

* কাশার শীদুক প্রদেশ্যন্ত চৌধুবী কোং কর্তৃক বিশেশবের আরতি বাদালা অফরে মুদ্রিত ও প্রকাশিত হইরাছে। তদবলগনে এবং যে সকল আন্ধানেরে আরতি করিয়া থাকেন, তাঁহাদের মধ্যে এক জনের সাহায্যে এই অক্রাদ করিয়াছি। প্রার্থ অনেক হলেই মুলের শব্দগুলি ঠিক ঠিক আছে। তবে বাদালা ভাষার পঠন ও ভাবগৃহণ হইতে পারে, তজ্জ্ঞ যেথানে ধেরূপ পরিবর্ত্তন আক্রাক ইইরাছে, ভাহাই করিয়াছি। হিন্দাভাষাতেও বিশেশরের আরতি মুদ্রিত হইরা বিক্রম্ব হইতেছে। কিছ্ক প্রীযুক্ত প্রদান করিয়াছিল। ইন্দালার স্বার্থ করি করিছাছিল। এই সকলনকার্য্যে কলিকাতা শোভাবাজাবের পরাধাকান্ত দেব বাহাত্রের জ্বানাতা পরলোক-প্রায় অমৃত্লাল মিত্র মহেশ-শ্বাহায় করিয়াছিলেন।

May.

অতি স্থৰিত শিব, হৃদয়ে অতি স্থতি। কিন্নর করমে গীতি সংখ্যার সহিত रेथ रेथ नामरत्र मनक निव, नामरत मुक्क जाःविक जाःधिक : जाः नवरम. ৰীণা বাদৰে অতি ললিত কণু কণু কণ নিনাদে॥ 9 क्ष (न र क्ष प्र (नव । कृतुसूत् कृतुसूत् कृतुसूत् हत्रात नित, नृश्व ममुद्धन अधात मछान मछान শিব, মণ্ডলে মণ্ডলে তাং ধিক তাং তাং ধিকতা চথচ্ধ লুপুচুপু লুপুচু চথচ্ধ তালধ্বনি করতালে নিব, তালধানি করতালে অঙ্গুলি অঙ্গুষ্ঠ ঘন নাদে॥৫ अब एनव अब एनव. नामरब मध्य निनामरद बाह्य वी শিব, নিনাদয়ে ঝল্লবী আরতি করয়ে বদা। বেদধ্বনি পাঠে ধরি জদি-কমলে তব মত চরণ-সবোজ অবলোকয়ে তব রূপ শিব, অবলোকয়ে তব রূপ নিজ পরমেশ্রর জ্ঞানে ॥৬ क्रम (भव क्रम (भव ৰূৰ্পবিচাতি গৌর ধারণ আনন পঞ শিব, জানন পঞ বিষ কঠে গ্ৰহিত সুন্দর জটাকলাপ শিব, পাবক্যত ভাগ পাৰকয়ত ভাল, বাম বিভাগে গিরিকা তব রূপ অতি ললিত॥৭ कात्र तमय कात्र तमय ত্রিশল বজু খণা গাবণ পর্ভ শিব, গারণ পর্ভ পাশ বরাভয় অক্ষশ নাদয়ে ঘন ঘন ঘণ্টা মন্তকে শোভয়ে গঙ্গা উপনীত স্বরতটিনী শিব, শিরে উপনীত সুরতটিনী উপবীত পরগ কদ্ৰাকালম্বত ব**র্ব**ক্ষে। জায় দেব জায় দেব মনসিঞ্জভাত্মবিভ্ষিত আজ শি ভশ্ববিভ্ষিত অঙ্গ ত্রিভাপনাশন সাযুজ্যপ্রাপণ ধ্যানে ধারণ করে যে ভকার করে যে ভকতে ধারণ শ্রুতিতে

জয় দেব জয় দেব নাচয়ে সুর্বনিতা স্ত্রদর্যে

এই তব ব্যত্থ্যজ্জ রণ ।

ওঁ জয় দেব জয় দেব

জয় শিব জয় গিরিজাপতি দানে পালহ নিত্য

শিব, পালহ দানে নিত্য জগদীশ রূপ।

কর হে ।

শিব শিব শঙো ॥

বিদ্ধাগিরি।

উঠ উঠ গিরিবর—অগন্তা ফিরেছে: ভারতে ইংরাজরাজ মধ্যাতে দেজেছে: সে দিন নাহি এখন. ভারত নহে মগন অজান-তিমির-নীরে. ভারত জাগিছে ফিবে.--তুমি এখনও ভাষে দেখিছ স্বপন ? উঠ উঠ গিরিবর, করো না শরন।

উডেছে নব নিশান. ছুটেছে আলো-তফান, পুন: তেজে তোল মাথা পুন: বল দেই কথা. সে কালে জাগায়ে নাম ওনালে বেমন. উঠ উঠ গিরিবর, করো না শল্পন।

সে দিন নাহি এখন. ভারত নহে মগন অজান-তিমির-নীরে ভারত জাগিছে ফিরে. তুমি কেন বিদ্যাচল থাকিবে অমন.-নীল-অজগর-কারা কর উত্তোলন।

> স্বর্যাপথ রোধিবারে উঠেছিলে অহল্বারে. সে শক্তি আচে কি আর ? ধর দেখি একবার

যে সূৰ্য্য ভারতাকাশে উদয় এখন!

* এইরূপ প্রাচীন প্রবাদ আছে, বিদ্যাপর্বত ইত হইয়া এককালে এত উচ্চ হইয়াছিল বে. টাদির গতিবোধ আশস্কায় দেবতাদিগকে তাহার কিগন্তা ঝবির শ্রণাপ্র হইতে হইয়াছিল। ^{ইাতে} অগস্তা বিশ্বের নিকটে উপস্থিত হইলেন। দর্শনে বিদ্ধা তাঁহাকে প্রণাম করিবার জন্ত টিংইলে ঋষি কহিলেন,—মাবং আমি দক্ষিণ-ট্টতে না আসি, তাবৎ তুমি এই ভাবে ি তিনি আর ফিরিলেন না, এবং **গুরুর** ^{টি} খতিশ্ৰুত হইয়াছিল বলিয়া বিক্যা তদৰ্ধি খণত অবস্থাতেই আছে। অগন্তায়াত্রা বলিয়া ^{ক্থা} প্রচলিত আছে, তাহাও এ প্রবাদ-মূলক।

অর্দ্ধপথে উচ কোর তবে বৃঝি অহলার। এ আলো সে আলো নয়, এ রবি সে রবি নয়. --এ জ্যোতি: ভারতে কভূ হয় নি পতন। এই জ্যোভি: ধর গিবি ভারতে প্রভাত কবি. ধকক নতন জ্ঞান. ধক্ক নৃতন প্ৰাণ নৃতন সপনে সবে দেখুক স্থপন।---নীল অঞ্গরকায়া কর উত্তোলন। উঠ উঠ গিরিবর অগন্য ফিরেছে. উডেছে নব নিশান. ছটেছে আলো-তুফান नवद्रविष्ट्रवि एतथ शशन शरद्राष्ट्र।

কে বলেছে এই ভাবে ভারতের দিন যাবে ? 'নিশির প্রভাত নাই रय वरल रम कारन नाहे. ভারতের ভাবী বেদ পড়ে নি কথন.--

জানে না সে জগতের কিবা গতি, কিবা ফের, ফের এ ভারতবাসী জ্ঞানের তরকে ভাগি হাসিবে অপূর্ব হাসি লভিয়া জীবন-

চলিবে নৃতন পথে সাধিবে নৃতন ব্ৰুতে, ফিরাতে নারিবে ভাষ এ তরক নাহি বার একবার জদিতটে খেলিলে কিরণ---

गारत चारश-सारत महा অস্থান্তিবে কথা চিবদিন এই বীভি: कौरानत्र वहे नौडि. জাগিলে নাহিক নিড়া চির-জাগরণ !

> দিয়াছে সে রশ্মিতেজ ভারতে আদি ইংরেজ:

ধ'রে তাপ পথ ছারা
আবার তোল বে কারা,
আবার শিধরে শৃক্ত কর রে ধারণ—
উঠ উঠ গিরিবর কোরো না শরন।
এই সে জীবনারস্ক

এই সে জীবনারস্ক উদয়ের মৃশন্তক্ত— কত না জলিতে হবে কত বা ভাবিতে হবে সে জালা—সে বেগ—কেবা জানিবে এখন!

> ভূলিতে হবে আপন, ভূলিতে হবে অপন, জাগাতে হবে জীবন তবে দে পারিবে;

ছুটিতে ওদের সংক, লিখিতে কালেব অংগ, খেলাইতে এ তরঙ্গে তবে সে পারিবে;

জানের শক্তি লভে, জগতে ব্ঝিতে হবে তবে দে আপন পাবে, সম্ভ্রমাবিবে।

জেনো সত্য জেনো কথা ইংরাজ-শিকিত প্রথা ভারত উদ্ধার-পথ, ত্যজ ক্ষক্ত মনোরথ— ভূলে যাও আগেকার পূরান কথন।

না থাকিলে এ ইংরাজ ভারত অরণ্য আরু, কে দেখাত, কে শিথাত, কেবা পথে লরে বে'ত— বে পথ অনেক দিন করেছ বর্জন !

মূথে বল স্বর জর, ধর অবলা শিলামর, ছিড়ে ফেল পূর্ববেদ ভোলো সে প্রাচীন ভেদ— স্কই—ভারতের গতি রেখো রে শ্বরণ— হে ভারতব্যাপী গিরি, রেখো রে শ্রুণ,
ভবিষ্যৎ পারাবার
পার হ'তে অক্ত আর
ভারতে নাহি ভেলা,
ভাবত জীবন খেলা
একতা ওদেরি সঙ্গে—উদ্ধার, পতন!

বল হে গুরুর জয়,
তেলি মাথা বিদ্যালয়,
ভোল সে পুরান কথা
ধর নর গুরু-প্রথা—
নীল অজগরকায়াকর উত্তোলন,
উঠ ডিঠ গিরিবর করো না শরন।

কুগুলুমা বে অগজ্ঞ *
সে কি তোমা কৈলা জুল্ত
অই ভাবে থাকিবানে,
বলিলা কি সে তোমারে
চিত্র-ভরে থাকিবাবে / ভ্যুল সে বচন!

আমি তোমা দিল বব পুন: উঠ গিবিবর, ভাবত-সভান নাম আফুক এ ধ্যাধাম মুত ভারতের নাম জানিত যেমন !

উঠ উঠ বিদ্যাগিরি অগতা ফিরেছে,
ভারতে ইংরাজ-রাজ মধ্যাহে দেজেছে,—
দে দিন নাহি এখন,
ভারত নহে মগন
অঞ্জান-ভিমির-নীরে,
ভারত সাগিছে ফিরে;
উভেছে নব নিশান,
উঠিছে আলো-ভূফান,
ভূমি কেন বিদ্যাচন থাকিবে অমন ?

জাগাতে তোমারে হের অগন্ত্য ফিরেছে: ভারতে ইংরাজ-রাজ মধ্যাহে সেলেছে।

নীল অঞ্গরকায়া কর উত্তোলন!

প্রবাদ আছে, অগতা কৃত্ত হইতে উৎপদ ই

গঙ্গার উৎপত্তি।		সহত্র বৎসর	Chronica Mileson
			অজয় অমর বিমহিমা গায়।
(>)		(३)	
হরিনামামৃত	পানে বিমোহিভ	সেই হিমগিরি	শিখব-উপরি
সদা আন	न्ति नांद्रम अधि,	অপিরাদি যত মহর্ধিগণ	
গান্বিতে গান্বিতে	অ মরাবতীতে	শাগিত প্রত্যহ	ভক্তির সৃহ
षारेन धकना উজनि निन ।		ভ ঞ্জিতে ব্ৰহ্মা	াণ্ড-আদিকারণ।
(?)		(>•)	
হর্ষ অন্তরে	মহা সমাদ্বে	হেরিত উপরে	নীলকান্তি ধরে
	ংতি অমনপতি।	শ্রু ধৃ ক্রে	ছিডায়ে কায় ,
ক্রি গাতোখান	করিয়া স্থান	হেরিত অযুত	
সাদর সস্তাবে তোষে অতিথি।		নক্ষত্র ফুটিয়া ছুটিছে তায়।	
(•)		(>>)	
পাত্ত অৰ্ঘ দিয়া	মুনিরে প্রিয়া	মণ্ডলে মণ্ডলে	শনি-চক্র চলে
চন্দ্রাগ্নি প্রভৃতি	ত অমবগণ;	ঘুরিয়া বেরিয়া	৷ আকাশময়,
	কহে "ঋষি∙পতি,	হেরিভ চন্দ্রমা	অতুল উপমা
ক্হ কুপা করি, করি শ্রবণ,—		স্মৃত্ল উপমা ভামু উদয়।	
(8)		(><)	
	হলো ভাগীরখী	চারিদিকে স্থিত	দিগস্ত-বিস্থৃত
	প্ৰাচীন কথা,	হেরিত উল্লাদে	
দেবের উক্তি		বিশ্বরে প্লাবিত	
অমৃত-লহ রী-সদৃশ গাণা।"		জনাদি পুকুষে আনলে ভাদি।"	
(@)		(>0)	
	ম্নি সে নারদ		আনন্দ-বারিতে
ললিত পঞ্চমে		(मर्वार्य इहेल (द्यामांक-कांग्र,	
আনন্দে ডুবিয়া	নয়ন মুদিয়া	ঘন ঘন খর	গভীর প্রথর
তুষ বাজাইয়াধরিল গান।		তানপ্বা-ধ্বনি বাজিল তায়।	
(🌣)		(>8)	
*হিমাজি অচল	দেবলীলাস্থল	গায়িল নারদ	ভাবে গদগদ
ষোগীন্দ্ৰবাঞ্ছিত	পবিত্ৰ স্থান ;	"এমন ভঞ্জন না	
অ্মর কিলর	যাহার উপর	ভূধর-শিথরে	ভাকিয়া ঈশবে
নিসর্গ নিরখি জ্ডায় প্রাণ।		গান্বিতে অনম্ভ মহিমা তাঁর।	
(1)		(>e)	
	সদা শোভা করে		ভঞ্নের স্থান
ষ্ণসীম স্থানস্থাররাশি ,		कि আছে मनित क्रशक-मात्य।	
শাহার কটিতে	ছুটিতে ছুটিতে	অংশ-গৰ্জন	
জলদ-কদম্ব জুড়ায় আসি !		जिल्लाक हमिक (संशादन वाटका ।	
()		(86)	Sand Franks
	মহীকৃহ দ্ত	কিবা সে কৈলাস	বৈকুণ্ঠ-নিবাস
প্রণত উন্নত শিধর কার;		কলকা আমরান	गार्क ठार,

स्य नावायन বলিয়া বেমন नहनही-छण व्हेन अठन ভূবনে ভূবনে ভ্রমিতে পাই।" नियंत्र ना अरत् कृषत्र कृष्टि । 🌁 ()9) (२৫) নারদের বাণী ভনি অভিযানী দেখিতে দেখিতে পুন: আচম্বিতে व्यमतः मखनौ विभवं रुवः; गगत्न इहेन किंद्रत्नां मध् , আবার আহলাদে গভীর নিনাদে ঝলকৈ ঝলকে অপূর্ব আলোকে প্রিল চকিতে ভ্বনত্র। সনীত-তরক বেগেতে বয়। (36) (२७) ঋবি কয়জন সন্ধ্যা সমাপন শক্তে দিল দেখা কিরণেয় রেথা कत्रि এक मिन विभागी शास्त्र; তাহাতে আকাশে প্রকাশ পায়; দেবী বস্থন্ধরা মলিন কাত্রা ব্ৰহ্ম স্মাত্ৰ অত্ল-চরণ সলিলনিঝ'র বহিছে তায়। কহিতে লাগিল আসি সেখানে। (२१) (66) বিন্দু বিন্দু বারি পড়ে সারি সারি "রাথ ঋষিগণ সমূলে নিধন ধরিয়া সহস্র সহস্র বেণী। মানব-সংসার হলো এবার. কমণ্ডলুকরে দাঁড়ায়ে অখরে হলো ছারখার ভূবন আমার আনন্দে ধরিছে কমল ফেণী। অনাবৃষ্টি তাপ সহে না আর।" (२৮) (२०) হায় কি অপার আনন্দ আমার ভনে ঋষিগণ করি দুঢ়পণ ব্ৰহ্মসনাতন চরণ হ'তে, বোগে দিল মন একান্ত-চিতে. ব্ৰহ্ম-কমুপ্তলে জাহুবী উথলে কঠোর সাধনা ব্ৰহ্ম-আরাধন, পড়িছে দেখিত্ব বিমান-পথে। করিতে লাগিলা মানব-ছিতে। (22) (25) গভীর গর্জনে দেখিন্থ গগনে মানব-মকলে ঋ্যিরা সকলে ব্ৰহ্মকমণ্ডলু হ'তে আবাৰ কাতরে ডাকিছে করণাময়, জলযন্ত্ৰ ধাৰ রজতের কাম মানবে রাখিতে নারায়ণ চিত্তে महाद्वदश वायु कति विनाय । रुरेन चनीम करूरणान्य। (२२) (00) ভীম কোলাহলে দেখিতে দেখিতে হলো আচ্হিতে নগেন্দ্র অচলে সেই বারিরাশি পডিল আসি, গগনমগুল ডিমিরময়. মিহির নক্ষত্র তিমিরে একতা ভূধরশিপর সাঞ্জিয়া সুন্দর मुक्टि श्रविण जिलावानि । অনল বিহাৎ অবশ্য হয়। (२७) (0) ব্ৰহ্মাণ্ড ভিতর অন্তের গঠন নাহি কোন খর রব্ধত-বরণ অবনী অম্বর শুভিতপ্রায়; অনন্ত গগন ধরেছে শিরে, নিবিড আধার জলধিত্তকার হিমানী-আবুত হিমাদ্রি পর্বত চরণে পড়িরা রয়েছে ধীরে। বায়ু বজ্ঞনাদ নাহি ওনার। (88) (७२) রাশি স্ত,পাকার নাহি করে গতি গ্রহদলপতি চারিদিকে তার चवनीयथन नाहिक छूटि, कृषिता क्रुष्टिक भवन कथा,

ঢাকি গিরিচডা হিমানীর গুঁড়া সদৃশ থসিছে সলিল কণা ! (00) ভীষণ আকার ধরিরা আবার তরক ধাইছে অচল-কার: নীলিম গিরিতে হিমানীরাশিতে ঘরিয়া ফিরিয়া মিশায়ে যায়। (98) रहेन ४४० न হিমাজি অচল বেগেতে বহিল সহস্রধারা, পাহাডে পাহাডে তরক আছাডে ত্রিলোক কাঁপিল আতক্ষে সাড। ! (00) ছটিল পর্ব্বতে গোমুখী পর্বতে তবঙ্গ সহস্র একতা হয়ে. গভীব ডাকিয়া আকাশ ভালিয়া পডিতে লাগিল পাৰাণ লয়ে। (00) ছিঁ ডিয়া পৰ্বত পালকের মত কদিয়া চলিল ভাঙ্গিয়া বাঁধ: তরঙ্গ ছুটিল পৃথিবী কাঁপিল ভাকিয়া অসংথ্য কেশবিনাদ। (09) স্রোতম্বন্ত ধায় বেগে বক্রকায় যোজন অন্তরে পড়িছে নীচে; নক্ষত্রের প্রায় ঘেরিয়া ভাহার খেত ফেনরাশি পড়িছে পিছে। (40) তরজ-নির্গত বারিকণা ধ্র হিমানী চ্ৰিত আকার ধরে; ঢাকিয়া ভাহায় ধুমরাশি প্রায় জলধন্য-শোভা বিচিত্র করে। (৩৯) জলের নির্ঘোষ শত শত কোশ मियम-त्रक्रनी कतिरह श्वनि, প্রতিধ্বনি দিয়া অধীর হইয়া পাষাণ থদিয়া পডে অমনি। (80) শেবেতে আবার ছাডি হরিবার

इक्रांतंत्रं अफिल विमल शाहा,

শেত স্থীতগ শ্রোতস্থতী জাল
বহিল তবদ পাবাব পারা।
(৪১)
অবনীনমগুলে সে প্রিত্র জাল
হইল সকলে আনন্দে ভোর,
"জায় সনাতনী পতিতপাবনী"
ঘন ঘন ধানি উঠিল বোর।

অন্নদার শিবপূজা। গীতি। (**অা**রস্তু)

(3)

দাও করতানি "জর জর" বলি
প্রিরা অঞ্জলি কুমুন লং;
আই বে প্রাচীতে হাসিতে হাসিতে
উদর অকণ উবার সহ।
বল সবে "জয়" তিলুবনমর,
অন্নদা আসিছে পুলিতে হরে;
মর্জ্যে নিবধাম মোক্ষতীর্থ নাম
কানী বারাণমী অবনীপরে।

(শাখা)

(?)

নামে দখী জয়া আকাশ হইতে
হাতে হেম-থালা ভূলার জল ,
মকরন্দ-মাথা কুমুমের থর,
আনদেন ববিষে দেবের দল ,
প্রস্ন-নিখাদে পুরিল আকাশ,
মুবাজ-নিজগ বিমানপথে ,
ভ্যাঞ্জিয়া কৈলাদ কৈলাদ-কামিনী
উরিলা মুকর পুষ্ণক-রথে !

(পূৰ্ব কোবস)

(0)

দাও করতালি "জয় জয়" বলি
প্রিয়া অঞ্জলি ক্রম লহ;
*হাসিতে হাসিতে অই যে প্রাচীতে
উদিল অঞ্জণ, উষার সহ।

(আরম্ভ)

(;)

चहे (य मन्दित মুছল গন্ধীরে जानत्म প্রবেশে जानमम्बी, কোথা কাশীবাসী শঙ্খ ঘণ্টা কাঁসী थअनी बांयती वांनती करे ? বাৰা রে উল্লাসে নিৰুণ উচ্ছাদে ত্রৈলোক্য-ভূবন মোহিত কর, "হুর হুর হুর" বল নির্ক্তর "वस् वस् वस्" मधुत चत्रः। বাজা রে উল্লাসে ভক্তি উচ্চাসে मिला अर्वात वानकम्भी। শহা ঘণ্টা কাসী কোথা কাশীবাসী থঞ্জনী ঝাঁঝরী বাশরী কই ?

(শাখা)

(?)

প্রবেশে মন্দিরে জগত-জননী গললগ্রবাস যুডিয়া কর; প্রণত হইগ্না মৃদিত নগ্ধনে চরণে অর্পিনা প্রস্থান-থর। আনন্দ-শরীরে "থয়ডু" বলিগ্না ডাকিল আনন্দে জগতমাতা, দেব সিদ্ধ নব ত্রিলোকপুরীতে উঠিল উচ্ছান আনন্দ-গাধা।

(পূর্ণ কোরস্)

(0)

জর জর জর জন শানাদি দখর
জর বিখনাথ এক পরাৎপর,
জর মৃত্যুঞ্জর একাও-ধারী;
জর সর্বরেপ জর গুণনর,
কর দীননাথ জর দরামর.
কর জর দেব পাতকহারী;
শকর হর জর ব্যোমকেশ,
পিনাকনিনাদী আনাদি মহেশ,
বোগীন্দ্র চিন্মর নিত্তারকারী।

(আরম্ভ)

শাচিমা নাচিমা "মুরস্তু" বলিয়া ে দেবদল-দলে গগনতল ;

করে সিকুম্রে ; ৰুদ্ব শস্কু শুনি উথলে গভীর অতল জল; শ্বয়ন্তু সন্দীতে আনন্দ-ধ্বনিতে জীমৃত মন্ত্রে গগনপরে, পৰ্বত কানন উচ্ছাদে পবন স্বয়ন্ত্রকীর্ত্তন আনন্দস্বরে। "अन्त्र अन्त्र अन्त्र জন্ন বিশ্বনাথ ত্রন্ধাণ্ডধারী, জন্ম ব্যোমকেশ শঙ্কর হর যোগীল চিন্ম নিস্তারকারী।" বলিয়া নাচিয়া শ্বন্তু ডাকিয়া দেবদল-দলে গগনতল; জয় শভু শুনি গায় সিন্ধুমণি উথলে গভীর অতল-জল।

(শাথা)

(२)

"আহে বিশ্বনাথ প্রাও বাদনা" বলিয়া অগ্রদা অঞ্জালকরে; ফ্রেলা যে দিন জগত-এজাও দেখিতে সে দিন বাদনা করে, নিখিল ব্রক্ষাও সকলি স্ফলর, দেব থক নর আনন্দে ভরা; পীড়া ব্যাধি শোক বাডনা কেমন জানিত না কেহ মরণ জরা; অপ্র্র মাধুরী জীবন প্রকাশ জীবের বদনে অপার স্থ, নব চারু মুচ্ লাবণ্য-লেণিত মধুর স্কলর প্রকৃতি-মুধ।

(পূৰ্ব কোরস্)

(0)

"দেখাও আবার বাসনা আমার
তেমতি তরুণ অরুণ কার,
সেই মনোহর চারু সুধাকর
ফুটিছে নবীন গগন-গার,
ছুটিছে পবন ফুটিছে কানন
তেমতি নবীন হিলোপ বাসে,
ডেমতি করিয়া উল্লাসে ভরিয়া
প্রাণিবৃদ্ধ সহ অগৎ হাসে;

তেমতি করিবা ব্রহ্মাও জুড়ির। পশুপকী কথে ছুটিরা ধার, তেমতি করিবা প্রধােদে মাতিরা সকলে তোমার মহিমা গার।

(আরম্ভ)

(5)

জর জর জর অনাদি এক্ষন্
জর বিধনাথ সত্য সনাতন,
জর বিধরপ এক্ষাওধারী;
শব্ধর হর জর ব্যোমকেশ,
পিনাকনিনাদী অনাদি মহেশ,
ধোগী চিন্মর নিস্তারকারী।

(শাথা)

(>)

"আহে বিখনাথ তব বিখধামে
কত দিন আর শমনেব নামে
শমনের দৃত দেখাবে ভর;
কত দিন ভবে হা হা রব
নরকুল আদি পশুপকী সব,
কাঁদিরে জীবন করিবে কর;
আর ধঞ্জ প্রাণী আর কত দিন
জগতের শোভা করিবে মলিন—
জীবন থাকিতে জীবিত নর!
দরিদ্র কালাল কত দিন আর
জঠর-আনলে করে হাহাকার,
করিবে জগৎ কলহম্ম?
করে বিখনাথ ভবে সর্বজন
আবার তোমার মহিমা কীর্ত্তন
করিবে আনদেশ বলিবে জর?

(পূর্ণ কোরস)

(0)

জয় জয় জয় ত্রিপুর-দিখর জয় বিখনাথ এক্ষপরাৎপর জয় বিখনপ-এক্ষাওধারী; জয় মৃত্যুঞ্জয় জয় গুণময় জয় দীননাথ জয় দ্বাময় জয় জয় জয় কয় পাতকহারী। (জারন্ত)

(5)

বিষল ভরকে আহ মাগজে कांगीशास चानि उन्य २७: কলকল-নাদে এ শুভ সংবাদে জগৎ-সংসারে আনন্দে কও---জগৎ-জননী আবাজি গো আপনি ব্দগতের তঃখ বলিছে শিবে পুরিবে বাসনা আর কি ভাবনা রোগ শোক তাপ ঘচিবে জীবে: গিয়া ঘাটে ঘাটে বল নাটে নাটে কাশীমাঝে আজি এ শুভ বাণী: আবার শুন না 'প্ৰাও বাসনা' গাইছে ওই যে ভবের রাণী।

(শাখা)

(?)

"প্রাও বাসনা ওহে বিশ্বনাথ
জীবের বাতনা ঘুচাও দুরে
তেমতি করিয়া স্পিলে যে দিন,
দেখাও আবার জগৎ প্রে;
তেমতি প্রনে ছুটিছে কাননে
তেমতি নবীন হিলোল-বাসে,
তেমতি করিয়া উল্লাদে ভবিরা
প্রাণিবৃদ্ধ সহ জগৎ হাসে।

(পূर्व (कांवम्)

(0)

আনল-ধ্বনিতে আয়দা-বাণীতে
গারিতে গারিতে জাহ্বী ধায়,
আর কি ভাবনা পূবিবে বাসনা
ক্ষাত্ত-জননী আপনি গায়।
"জয় শছু" ব'লে দাও করভালি,
লও রে অসুলী প্রিয়া পানি,
আভ্বনময় সবে বলে জয়
"শঙ্কর হর" মধুর বাণী।

রহস্য-বিষয়

বিশ্ব-বিন্তালয়ে।

(বন্ধরমণীর উপাধিপ্রাপ্তি উপলক্ষে)

٠,

কে বলে রে—বালালীর জীবন অসার ?
সৌরতে আনোদ দেখ আল কিবা তার।
বালালীর হৃদয়ের যতনের ধন,
তার মাঝে দেখ অই তৃইটি রতন,
রজনী করিতে ভোর উজলি গগন,
আশার আকাশে উঠি জলিছে কেমন!
ধক্ত বলনায়ী ধক্ত সাবাদি তৃহারে!
ভাসিল আনন্দ-ভেলা কালের জুহারে!

(२)

কি ক্ল ক্টিল আজি বংদর মকতে
কোটে কি রে হেন ক্ল কোন সে তক্তে।
কোন নদী, কোন হুদ, পাহাড় উপরে
ক্টন্ত ক্স্ম হেন আনল বিতরে।
রে বামিনী তারা-হারা কিবা আভরণ
আছে বল তার বুকে দেখিতে এমন।
এত দিনে বুজিলাম সে নছে খপন,
ভারত-বিপিনে বীল হয়েছে বপন।
ধন্ত বলনারী ধন্ত সাবাসি তুহারে।
ভাসিল আনক-ভেলা কালের জ্রারে।

(0)

এত দিনে জাগিল রে জীবনে বিখাস,

স্কৃতিল রদয় হ'তে কালের হতাল।

বালালীর কামিনীর রদয়-কমলে

গালাত্য সাহিত্য-রূপ দিনমণি জলে।

সমপাঠে সহযোগী কুরল-নয়নী,

স্কুটেছে যুবক সলে যুবতী রমনী।

পরেছে উপাধি-হার স্থনীল বসন

সেজেছে অবেতে কিবা চারু দয়নন।

ধস্ত বঙ্গনারী ধস্ত সাবাসি তুহারে।
ভাসিল আনন্দ-ভেলা কালের জুয়ারে।

(8

কবে রে দেখিব বল এ বিপিন মাঝে, আর(ও) হেন কুরকিণী এ মোহন সাজে ? সে দিন হবৈ কি দিবে এ দেশে আবার,
নারী হবে পুক্ষের জীবন-আধার ?
গৃহত্বপ কমলের কমলা-আকারে,
ছড়াইবে অথবাশি চাহিন্না সবারে।
হবে কি সে দিন দিরে যবে এ বাঙ্গালী
অলকা পাইবে হাতে অভাগা বাঙ্গালী!—
কি আশা জাগালি হদে কে আর নিবারে,
ধক্ত বঙ্গনারী ধক্ত সাবাদি তুহাবে!

(৫)
হরিণ-নয়না শুন কাদখিনী বালা,
শুন ওগো চন্দ্রম্থী কৌমুদীর মালা,
ভোমাদের অগ্রণাঠী আমি এক জন,
আই বেশ ও উপাধি করেছি ধারণ।
যে ধিকারে লিধিয়াছি "বাদালীর মেয়ে"
ভারি মত স্থ আজি ভোমা দোহে পেয়ে।
বৈচে থাক স্থেথ থাক চিরস্থথে আর।
কে বলে রে বাদালীর জীবন অসার?
কি আশা জাগালি হুদে কে আর নিবারে?
ভাসিল আনন্দ-ভেলা কালের জুয়ারে!
ধক্ত বলনারী ধক্ত সাবাসি তুহারে।

সাবাদ হুজুগ আজব সহরে।

टिनाम. टिञ्नल् ठाठा, आफ्टा मका निटल । ভোঞ্চ দিয়ে ভোটাং খুলে মিউনিসিপাল বিলে। ক্যাক্ট বলি, সহর যুড়ে ভারী আভম্ব। আয়াক্ট জারি হবে নৃতন পয়লা সেপ্টেম্বর 🛭 বলি হারি স্থবেদারী স্থদভ্য কেতায়। **ভেল্কিবাজি ইংরেজের হন্দ মজা হার॥** ফুরার আগষ্ট নিশি একত্রিশা বাসরে। সহরে পড়িল চকা, পর্কাঘরে ঘরে ॥ শব্যা ছাড়ি রাতারাতি না হইতে ভোর। वानार्ष् वानिन। दवस्रा, दवका करत्र दनात्र ॥ প্রাতঃকালে জারি হবে নৃতন আইন। ফ্রেম বাঁধা "ফ্রান্চাইদে" নেটিব স্বাধীন॥ কেরাণী, কারিনা ক্লার্ক, মুচ্চুদী দেওয়ান। মোলা, মৃদি, মিউনিসিপাল বেঞ্চে পাবে স্থান। সহর খোঁড়া কলের কাঠী নেটিব প্রজার হাতে দেশ্বো জারী বাহাছরী কলা দিবা প্রাতে।

দর্শ ক'রে হপুর রেতে "ক্যাঞ্চিডেট" বড।
বাজ হ'রে বজা খুলে, সজ্জা করে কজ।
বনেদী বাবুর বাড়া টোটাবাজি জলে।
গ্যাস লাইটে ফাইন আলো আধুনী মহলে॥
উকাল এটনী ম্বি পোদারের ঘরে।
রেডির ডেলে আলো জলে,

ি পিরান পোষাক পরে ॥ থোষ পোষাকে সজ্জ। করি বাহাল ভবিরং। স্বৰ্ণ চাঁপা স্মরণ করেন, সভা তরিবং॥ তুৰ্গা. কাণী. শিব নাম শিকেয় তুলে রাখি। সিদ্ধ হ'ন ফুলকুমারী, কিরগ্রথী ভাকি॥ বিল্পতা বিনিমরে "বটন" হোলে আঁটো ? শ্রীমতীর কুন্তলের বাসী ফুলের বোঁটা। হদ জপ পদামুখে গন্ধ তাঁক স্থাধ। মদ যান "মৌনী শিশাল" হ'তে, ছাতি ঠুকে॥ কোন বা বাবুজী, বালা-সহিত বাগানে। চক্ষু রাঙ্গা, ওঠেন ঝেডে ভোরের কামানে॥ চোগা, ঘড়ী, টুপি, টাকিয়া চাপকান! গড়াগড়ি পায়ে ধরি, নাছোড় বিবিজ্ঞান ৷ ছাদন-দড়ী বাহুলতা, ছেদন কঠিন। বাবুজী ভয়েতে ভেকে। বদন মলিন। তঃৰ দেখে মায়াবিনী বাঁধন দিল খুলে। টপ্পা গেপ্তে তেরিয়ান উঠিলেন ফুলে॥ ক্ষালে মৃছিয়া মুথ ঝাডিয়া চাপকান। "দেহি পদ পল্ল**"—-বলিয়া প্রে**ভান ॥ কোথাও কর্কশ কথা বিষম ব্যাপার। কর্ত্তাটি বলেন, "ক্ষেপি, তলব রাজার॥ প্রত্যুবে হাজির যদি না হইতে পারি। সর্বনাশ হবে, ক্ষেপি, পর্ব্ব আজি ভারি॥ म्ब्रोल माना 'त्राल' ह'एए याएक टकारत काँक। কম্বক্তি ওক্ত গেলো, তক্ত যাবে ফাঁক॥" वल, खाँठन भूल এक मान्दि

পগার হলো পার।
বোষজা খুড়ী অবাক ভেবে ভোটের ব্যাপার ।
পাববন্ধ, রামগোবিল নব্য ভোটর বন্ধ।
শান্চাইসের" ফ জানে না হর বৃদ্ধিহত ॥
শানারাত্রি ব'সে জাগে ভোটের রগড়ে।
ইন্স ভারিবং পার মশার কামড়ে॥
ইন্সের ত্কুম শক্ত, সমর যদি বর।
গাক্তিক করিবে লাল, সদা প্রাণে ভর।

পরিবার পুত্র কন্থা হাহাকার করে।

মাবাস হন্ত্রক আজ আজন সহরে।

মবাই তৃফান ভাবে ভয়ে হবু গুবু—

কবি বলে, "মাধন" বিনে সভ্যতা কি কন্তু ?

"ভোটীং হলে" মিটাং এবার যোটে কত **লোক।** কেহ গোরা, কেহ ছথে, কেহ ক্লফ জোক । বাঁকা টেরি. হাতে ছড়ি একমেটে গড়ন। কামিজ আঁটা নধরবাবু নাগর কোন জন ॥ कह वा त्नास्मरि शाना, कह व्यं हेबाल । माथाइंछि। (मर्रेषि (कर. (कर निम्न जान ॥ গাড়ী গাড়ী নামে বাব বণিক কেরাবী। কাঁড়ি কাঁড়ি ক্যাণ্ডিডেট ফ্রেণ্ডের কোম্পানী। কেই চড়ে জুড়ি কেটীন কেই আঞ্চিদ ধানে। কেরাঞ্চি কাহারো ভাগে কাবো বা ঠনঠনে॥ কেছ বা আড়ানি তোলা "ব্লাকবুটের" **ছাল।** কারো শিরে "প্যারাসল" বিবিয়ানা চাল ॥ 'अनता' टिंग 'इरन' ट्रांटक ट्रम्था नाम मार्। ইংরেজী ধরণে গতি সাবাস ক্যাবাৎ॥ 'মার্চ্চ' করে পিছে পিছে, 'ভোটর' টায়ারা। আগে আগে যষ্টিধারী ফুলিস্ পাহারা॥ কেঁদে বলে হু সিয়াব ভোটব-সে কোনো। ছেছে দেও দণ্ডবিধি কাণ্ড কি তা শোনো। বরে আছে পাঁচটি ছেলে একা রোজগারী। আমার ওপর বিনি দোষে

'পরব' কেন জারি ?'
'ফরেণ চীজ' চাই না বাবা ছেডে দেও যাই।
ঘবের থেয়ে, বনেব মোষ কি হেতু ডাড়াই n
তার সদে অন্ত কেহ বলে কিল্ক হয়ে।
ঘমের ঘরে আমাদের কেন বাও ল'য়ে॥
আমীর উজীর ওরা, কেহ বা মনিব।
ওদের সাথে পার্ব কিসে আমরা গরিব n
ভোটের লড়াই এমন ধারা আলে জানে কেটা।
তা হ'লে কি ধরা দিয়ে ভূগি এত লেটা ?
কায়াকাটি অটাপটী, কত করে সোর!
'হগের' পুণ্যে কত পিণ্ডি পুনিসের জোর॥
'বাটন' গুঁতোর চোটে ভোলে ভোটের কলোঁ
মর্ম 'হীটে' চর্ম ফাটে, তাসে ঘর্ম-জলে॥
বার থাড়া হুই দল 'হলেব" ছ্ধারে।
মধান্থদে মধাবর্তী 'পাইন' ইাকারে॥

'ইংলেক্টব' ক্যাণ্ডিডেট হবে ক্লোকার্জোকি।
পল্লীবাস ক্রেণ্ডদের গাত্র ক্লাণ্ড কি ॥
কোথার ঈশর গুপ্ত তুমি এ সময়।
চত্ব রাসকরাজ চিত্র-রসময়॥
দেখিলে না চর্মচকে হেন চমৎকার।
বঙ্গের গোগৃহ-রস বাদের বাজার॥
কিছুকাল যদি আর থাকিতে হে বেঁচে।
'লিবার্টিব' জন্ম দেখে কমল নিতে কেঁচে॥
সাজাতে কতই বঙ্গে নবা ডন্ত্র সঙ।
ভসর, গবদ, গজে ঢাল্ডে কত বঙ্গ।
বস্তে কেমন পাকার্গোপে

কলপ শেডা পায়।
বিশিহারি জরির টুপি বুডোর মাধায়॥
বুঁটীদার মোডাসার আহা কিবা ঘটা।
বায়ান্তরে শিরে ভাজ, কুরুক্তেত্রছটা॥
ঘুণধবা বনেদি বুডো শিরে ত্যান্ডা টুপি।
লেস-বসানে। বেলাক্ ক্যাপে কোলে শিক্তর্থণী॥
অপরূপ শোতা, আহা বাবরি ছাটা চুলে।
মাশানশামী কান্ত হেরি কালা যাবে ভুলে॥
সামলার অ্কার্ণিস মোডাসার ফেব।
মোগলাই ধৃষ্ঠিব মাধাধরা ঘের।
র্যাক ফাট, 'ফেন্ট' টুপী, বোঘারে লঠন।
লাইনবাধা সারি সারি 'জানই' কেমন ॥
বাঙ্গালী বাবুৰ সাজ আমার চবে বালি।
নকলে মজবুৎ বন্ধ আসলে কারানী॥

কৰ্দ হাতে মধাস্থলে মধাস্থ লাঁডায়।
মেশ্বৰ বাছনি জলে ব্যাটন হেলায়॥
ভোটৰ ধৰে "আশ্ব" কৰে তৃমি কাৰে চাও ?
কোন জন বলে, সাহেব ঐটি আমায় লাও॥
কেঁড়ে কেতাৰ উতে কীঠি বগলে বাহার।
এলেমভরা, "ভি এল" মারা পছল আমার,
"ৰাইট" বলে "ব্যাটন" তৃলে বাছনার চায়।
"ইলেক্টর" অল জনে ইদিতে ওধায়॥
দে জন বলে পরিপক ধানা কালোলাম।
"নিগারস্কলে" কালাটাদ ঐটি লেব হাম॥
এক তুরূপে টেকা মেবে

"ব্যোম" ক'রে ব্সেছে। "অবল" থেকে "অনারেবল"

আর কে অমন আছে ?

হেসে পুন: "অফিসার" "ব্যাটন" ধরে তুলে 1 বৈষ্ণব স্থোটর বলে মনের কথা খুলে॥ আমি লবো রাজা অই মুরলী রুসিক। রসভরা মুথথানি, হাসি ফিক ফিক॥ মাথা খুরে পড়ে হেরে নয়নের ঠার। অমন কুলার ছেলে কোথা পাব আর ? বলিছে ভোটর কেন অই যে ও সেরে। ছাটা গোঁপ কাঁচা পাকা ঘটা ক'রে ফেবে॥ (मार्शका ८० हाता थाता, ८०११। विकाद । টাকার আণ্ডিল উটি 'দণ্ডের' ভাঁডার॥ দানাদার দাতা তবু 'পদ[্] নহে "লুদ"। ঈ**শপের উপক্রাদে অই** সে "গোল্ড গুদু**"।** शिनि कांगे थाँ। दिनाना चाह्य "हेक विः"। प्तरथ अपन निर्ण करना, "जाउँ केक नि थिः" । কেই বলে. আমি চাই আই সুব্ৰাহ্মণ। পাকা দাড়ী,—সাদা চুল ঋষিটি যেমন। বিভের আহাজ বুডো, বুদ্ধের নবীন। গ্রীষ্টানের মুখপাত, চোখানো সঙ্গিন্।। আমার পছন অট গৃথ ভেকধারী। সাপোটে দিলাম ভোট, জিতি আর হারি॥ "হোরণ দিয়ে হেনকালে, ঢোকে দেখি **"হল"**। ভঙ্গীতে ব্রিত্ম তাবা উকীলের দল।। চমকে চমকে ভা**ৰে "টী**ট" হ'তে নামি। "এন্ট্রান্স" আটক ক'রে দাডাই গিলে আমি॥ সকলের আগেে এক মর্দ্ধ দিল সাডা। দিগ্গৰুছ হাত যেন তালের কাঁডি খাড়া॥ আদ্পাকা চুলেতে তেড়ি, বুরুদে বাগানো। "পার্কিউমে" ভবা কেশ ক্ষালে ছভানো॥ সথের প্রাণ, সাদাসিদে, বল্ছে যেন হাসি। "দেশদারিতে" খ্যাতি আমার আর সকল বাসি। "দেকেন" ক'রে ছাড়ি তারে অক্ত কথা নাই। হীরে বাঁধা জদর্থানা ঐটি আমি চাই ॥ এবার টিকিট হেরে হাসি নাহি ধরে। লেখা তাতে গোটা গোটা ছাপার অকরে। গণিত গায়ক, গাড়ী "চটকে মুসুর"। হিন্দুয়ানি হেক্ষত হদ্দ বাহাত্য ॥ বাবে। মাদে তের পর্ক বাই থেমটা নাচ। **"হেল্থ" ভাল 6িরকাল ঢালাই করা ছা**চ ৷ রাই বৃজে "কাষ্ট" খ্যাতি, ডকা মারা নাম ৷ সর্বাঘটে অধিষ্ঠান বর্ণচোরা আম।

ছই "পাদ" একেবাবে শৃত্যেতে উত্থান। ওঁইবার রক্ষাকর মৃস্কিল আসোন ॥ ছই বাঙ্গালে এক সঙ্গে "হলে" যেতে চায়। কারে রাথি কারে ছাডি পডি ছোব দায়। এক বাহাত্র 'হল্কে' ভারী ২ল্ক ফাঁপা পেট। হাল্পা দেহ কঞ্চিকাটী অন্য ক্যাণ্ডিডেট॥ ছিপ ছিপে বালাল বাবু রাগেতে ফেঁপায়। মুদো পেটা ভূঁদো দাদা মজবৃৎ কথায়। রাকাতে বাকাতে ওঠে কোন্দলেব ঝড। হাঁকাহাঁকি চেঁচাটেচি বেহদ বেগড। বিধকটে বাঙালে গোঁদা বড়ই বালাই। আহেনী বেলাতি বোল আনুকোরা ঢাকাই॥ গ্রম গ্রম আহাড়াবকম ইংরাজী কোডন। ভাস্ছে তাতে সাধু ভাষা মিষ্ট বিলক্ষণ। ভোটিং গেল ভ্যান্ত। হয়ে 'ফ্রেন্সিপ কুল।' কবি বলে হজনাই "ডাউন রাইট ফুল"॥ 'অনর' বজার কত্তে হ'লে, ঘুদি সাফাই চাই। 'ভঙ্গাব' ব্যবস্থা কেন কথার লডাই ? আলিপুর জ্ড়ি যুড়ি গাডিতে ছঃলাপ। চোপদার, চাপরাশি, ভৃত্য, কটিকদা ছাপ। পেগম্বর জনিদাত, খোস্ক রদি রাজা। সিম্ব সাটিন, গ্ৰদ, চেলি চাপকানেতে ভাঁজা। গলবস্ত সেকেটারী দাহেবানে থেরে। 'পাইমেন্ট' পাদ পাইতে ঘারে ঘারে ফেরে॥ কেহ বলে খোদাবন তুই লক আয়। কেহ বলে 'ভারত-তারা' আমার গলায়। কেহ বলে আমার 'ফনে' ব্যাক থাডা আছে। ক্ষেত্ ংলে 'ফ্যামিন ফনে' অনেক টাকা গেছে। "মাবাপ' সাহেব তুমি রক্ষা কর মান। रेनल घरत किरत रागल र्याको इरव कान। ষ্বতি বৃদ্ধ পিতামহের খেলাৎ তুলে কেই। বলে সাহেব স্বাব আগে আমায় পাস দেই 🏾 কেছ বলে কৃঞ্দাস আমাব প্রতিবাসী। খোশাবন্দ ফেল কল্লে পাড়া শুদ্ধ হাসি। মৌলভী বলেন আমি মুসলমানের চাই। ছজুর যেন ইয়াদ থাকে. বান্দাব দোহাই ॥ নবাৰ বলেন আহি নগু^{দি} উজার। ংকিয়তে আমার ২ক্ভিদ্বিহাজির । किमान करत, कल मिर्स यांथा कुरहे किन। थरक धरक (करवन मस्य व्यवभवा दर्वस्य ।

ৰাঙাশায় বন্দনীয় যক অৱতাৰ। ৰশিহারি বঙ্গবাসী ভাবিপ ভোমাব॥

নগর ভিজরে হেখা নাগরীর হাট।
নবীন তরঙ্গে তুলে কবে কত নাট॥
বাছনি 'ভোটিং হলে' নাচনি পাছার।
বাঙ্গভরা বামান্তরে প্রবণ জুডার॥
বিবিয়ানা তেডিকাটা তকণ তরুণী।
তেকেরা সাজীতে বেডা গাঙ্গের উডানি॥
'কুল্ল' মাথা মুখ্থানি পাথা নিয়ে হাতে।
গরবে গলেন্দ্রপতি ঘুরিছেন ছাতে॥
উল্লেশে কাহারে বলে ভাল বুকেব পাটা।
মিউনিসিপেল ক্মিশনাব হবে আবার সেটা॥
মেপের হাতে বঁডা কলি
প্রের বডাই খালি।

বাগিচা বাগান বোট নাই একটি মালী। সে আবার হ'তে চায় ভোটেব মেম্বার। পোড়া কপাল কালামুগ, ধিকৃ ধিক্ ছার 1 বাডীর নিকট ছাতে সাড়ী কালাপেড়ে। আঁচলে চাবির থোবা ঝোলে গলা বেড়ে॥ বসিয়া জনেক বামা 'উলেন' বিনায়। সিঁথিতে সিন্দুর ছটা চাঁদেব শোভাষ। শুনে কথা মরালেব মত মাথা তুলে। বলে হার হাসি পায় যম আছে ভুলে। কডিতে কি জোটে মান বডিতে থিচুডি। গুডেতে কি থাকা হয় এক আঙ্গুলে তুডি। আঞ্চী ঘড়ীর চেন বানবে কি সাঙ্গে ? আমার ভাতার হ'লে পালাতাম লাজে। হরপের এক অক্ষর যার-পেটে নাই। সে হবে মেশ্বর গ তাব মেগেব মূথে ছাই॥ কোন গ্ৰাফের কাছে রুম্ণা আহলাদে। **শক্ষা করি অনু জনে কথা করে** চাঁদে। কিপ্টে ভাতার কেয়াকাটা কুমডা ব্লিদান। মুখমিষ্টি মধুপক সকলি সমান॥ সে বলে তলানি জানি পুক্ষ বড দাতা। , লম্বা কোঁচা পরেব কাছে ঘরে ছেঁডা কাঁথা। বল্লে—পাল্টা গেয়ে আল্ভা মাথা পা হ্থানি তু**লে**।

भावना टकरन कामना भिष्य हरता त्थाना हरन ।

कवि कहा किरमन बाहा है इब यमि कथन। বাছনির বাহাত্রী দেখাব তথন। পোলিং শেষে হাজরে ডাকা পরক ভারী দড। বাছাই করা মেম্বরেরা কাউলেলে জড। কাগল হাতে হগ বাবালী হাকিম ধরণ। একে একে ভাকেন সবে জ্যাভা উচ্চারণ। নবাব নমূদ আলী খানসামা গোলাম। রার রাজেন্দ্র শ্রীরাম যুগী ? উত্তর--- সেলাম। কুমার ভেকেন্দ্র কুট কানাই নাজির। সাহেবজাদা দেকেন্দর ? উত্তর-হাজির। নাপিত নদেরটাদ পদা বাহাত্র. हिनाम मानी श्रीधत मृति १-- शांखत . इक्त ॥ রামভদ্র চেত্রকী নবি বরকলাঞ্চ। खनाद्ववल भिष्ठेमांत्र ? - 'श्रविव नमाक ॥' প্যাগদ্বর 'সি এস আই' পরেশ তৈনৎ। এবান মন্তপি 'হার' ?—"সাহেব দণ্ডবৎ ॥" মৌশভী তাল্লিম মিয়া, ইন্দ্রের পিরাশী। ষড়েল সাবুই বাগ ?—হাজির ছজুরালী। ডিপুটী নফর বক্স সৈয়দ নবিজ্ঞে বো হুকুম শির পাঁচা ?—আপ কি ওয়ান্তে। হলা দিয়ে ছুটলো পাছে তাকুই মাছের ঝোল। হাকরে ডেকে সাহেব গেল যাত্রাভঙ্গ গোল। কোলাকুলি গলাগুলি 'দেকেনের' ধম । মিউনিদিপেল মক্স দেখে আকেল গুড়ম।

হায় কি হলো ? (১)

হার কি হলো ?—কলম ছুতে হাদি এলো ছথে। তেবেছিলুম মনের কথা লিথবো ছাভি ঠুকে। এলো হাদি—হাদিই তবে ঢেউ থেলিয়া চ'লে। ছটাক্থানিক রদের কথা—"হারকি হলো ব'লে!

(২)
হার কি হলো দেশের দশা রিপণ রাজার ভূরে ?
নালাকালো সমান হবে—সবার মৃত্ বুরে ॥
আসদ কথা রইল কোথা কেউ না দেটা থোঁজে।
কথার লড়াই কথার বড়াই—হওরার সজে বোঝে॥
পুর্গকেল-কালা মিশ থাবে না—সমান হওয়া পরে।
নিষ্যিত্ব পুতুল হর কি মাধুব তুলে উ চু ক'রে।

(0)

হায় কি হলো—পেটের কথা বেরিরে গেল কও।
ইন্ডক সে লাট টমসন্—বেরাল ইন্দুর যত —
"রাষ্ট্র ক'রে ব'লে দিলে গুপ্ত প্রেমের কথা"॥
উচ্চপারা, নেটিডদিগের সেটা কথার কথা॥
ধর্মভাতু এদেশীর তাদের ভিতর ছিল!
স্পাই কথা ব'লে দিয়ে—"পুরস্কারী" দিল॥

(8)

হায় কি হলো —কত লোকের ভ্রমটা গেল ঘ্চে। বিলেত-কেরা এ দেশীতে প্রভেদ নাইক ছুচে॥ বতই বলুন, বতই শিথুন, তাদের চলন-চাল— ইংরাজেরা ভোলে না তার—হার রে কলিকাল।

(()

হার কি হলো—কপাল পোডা উমেদারের পেস। পড়লো চাপা জাতার তলে—সাহেব বড় গোঁসা। অন্ধ গেলো বাঙালীঃই. আর কি হলো তার। এপোডা ছাই "ইলবার্ট বিল" কেন হার হার।

(.)

হান্ন কি হলো—দেশের দশা বিলাতে গেলে রবা তিন দিন না বেতে বেতে গ্রীষ্ট ভব্নে, ও মা। পুরুষ পাছে মেয়ে আগে স্ফল তাতে ফল্বে না। চাই এ দেশে, আর কিছুদিন এ "দিনী জানানা"।

(9)

शम् कि इत्ला-कथात्र लात्य

হার কি হলো?—বন্দদেশের কপাল গেলো ফিং গুলী পুরে গোরা ফউন্স দীড়িরে বারাকপুরে ' আদৃছে স্থরেন বরে ফিরে এই কথা সাদা। এতেই এতো আড্মরি? ইংরেন্স কি গাধা?

(6)

বোঝে যারা "হায় কি হলো" ভাদের কাছেই বা

"ভাসানেল কনের" ব্যাপারটা নর কি চলাচলি

পরের অধীন দাসের জাতি

"নেদেন" আনবার তারা। তাদের আনবার "এজিটেণন্"—নকন উঁচুকবা॥

(>0)

হার কি হলো - দলাদলি বাধলো ঘরে ঘরে। পার্টি থেলা চেউ তৃলেছে ভাবত রাজ্য'পরে॥ সবাই "লীডর"—কর্তা ত্বয়ং—আপনি বাহাছুর। কতাই দিকে তুলচে কতো কত্ত তরো সূর।

হার কি হলো---আকাল এলো আবাব ধ্বজা তুলে। রাজার পুণ্যে প্রজার কুশল – লেখাই আছে মূলে। হার কি হলো ভাদেব আবাব — কম যাদের ঘরে? জমীলারের গলা টিপে খড় চুরি করে। "টেনেন্দিবিল" নামে আইন হচ্চে ভৈরার করা। গরা গলা গলাধর ভূষামী প্রজাব।!

(><)

হায় কি হলো— 'বদদৰ্শন' বৃদ্ধিম দেছে ছেডে, হায় কি হলো—দেশটা গেছে "সাপ্তাহিকে" জুড়ে ! হায় কি হলো—ভূদেব গেল ছেড়ে গুকুগিবা। হায় কি হলো--হেম,নবীনেব,নাইকো জাবিজুরি!

(00)

স্বার চেমে হায় কি হলো—ওই ষে হাসি পায়, "হেষ্টি-পিগট" মিষ্ট কথা—"মিষ্টিরি" তলার। কি কাওটা ছি ছি ছি "ন"জ্ঞার কথা বড়! পাদরী হ'মে উদয় দলে—রগড় এত দড় ৮

(38)

হার কি হলো আধথানা মাঠ জুবাট নেচে থেবে।
বিষয়টা কি, ব্যতে নাবি কাণ্ডথানা হেরে।
আদেক বাড়ী সহবমাঝে হ'চেচ মেরামং',—
তনতে ভালো "একজিবিসন"- একজনার কিসমং।
দেশের শিল্পী কারিগুরি শিখবে বিলাতীরা—
অমাভাবে ছদিন বাদে মর্বে এদেশীরা?
গাস্বো কত—"একজিবিসন" দেশের ভাল করে?
পেতে অন্ধ নাইক বাদের—এ কি তাদের তবে?

(>0)

ার কি হলো দাড়াই কোথা ৮—ইংরেজে ইংবেজে, ডুমুল কাঁও বেধে গেছে—সবাই হল্পাজে! বগচে বত "কলোনিরা" আমরা হিজে চাই, 'মষ্ট্রেদিরা' ভাগ বদাবে অঞ্চ কথা নাই! এ দেশী ইংরাক্স যত বাগছে স্বাই দল,
রাগবে ভারত নিজের হাতে—দেখিয়ের বাছবল !

"ইংলিশমানের" কবেল সাহের কচে — "কম্যাণ্ডারী
পেছন থেকে পাইগুনিয়াল হাকচে হা ওলারি।
বাপ রে বাপ কি চেহারা "ভলটিয়াবগণ,"
দাভিয়ে গেছে সন্দিন হাতে — কাপ্ চে কলাবন ?
আর কি থাকে বানীর রাজা।——নালকর, চা-কর,
সাসিন থাবা দিছে সাড়া— উঁচিয়ে হাতিয়ার।
ছেডে দিবে ছব্রা-ভবা—পাখী মাবা "গন্—"
উড়ে যাবে ত্লাথ সেণাই— আর্থা--'সেলব"-গণ টু
ভাই ত বলি "হার কি হলো"— রাজ্য আলমানিরি !
একেই বলে দেশোয়তি— সাবাস বিশ্রার।
ব্রুবে বদি "হার কি হলো"— প্রসা ক'টি দিও,
ব্রু ক'রে বস্দর্শন' কাগজ্ঞানি নিও।

"নেভার—নেভার"।

()

গেল রাজ্য. গেল মান. **डाकिल हैः निमगान.** ডাক ছাড়ে ব্রান্দন্ কেণ্ডল্লিক-মিলার---"নেটিবেৰ কাছে থাড়া নেভাৱ—নেভাৱ্!" "নে ছাব" সে অপমান—, হতগান বিবিজ্ঞান নেটিবে পাবে সন্ধান, আমাদের "জান না" । বিবিজান! দেহে প্রাণ কথনও তা হবে না # হিপ্হিপ্ হিপ্ ছৱে, হাট কোট বুট প**রে,** সরা ভাবে জগভেরে—ভাদের বিচার **निष्टित्र कार्छ १८**० १—त्निष्ठाद् रनष्ठाद् ! "নেভার"—দে অপমান হতমাৰ বিবিজান, त्निष्ठित शास्त्र महान चार्यात्तव "बान ना" ? **८५८रू** প्रांग विविद्यान । कथरना छ। इरद ना ॥ ()

কাপিল মেদিনাতল, পরা যায় বদাওল,
আম্মে কেলি উদ্ধানে "ভলেন্টিয়াব" ছুটিছে,
কাগজ কলম ধ'বে কামিনীবা উঠেছে।
হবে হিপ্ হুরে হো শিঙে ব'দে ভোঁ ভোঁ ভোঁ
বুটন স্বাধীন সদা "ফ্রাডম্—এভার।"
(৩)

বিলাতী ব্যবর বব কামিনী কেপিল সৰ্ব বল্পতের কাছে গিলা কানে দিল পাক, পুদ্ধ তুলে নৃত্য করে অতৃল আননলভারে ভাকিল বৃটিশ-বুর শাক্ গাক্ ডাক ৪ हरत हिन् हरत रहा, निर्छ वारख रखा रखा रखा रखा दुष्टेन चारीन नहा—"क्षीण्य अखात ।" "त्नाचात्र"—रत्र खन्यान, रुण्यान विविकान त्निष्टित नारत नहान चामारहत "खानाना !" रहरह श्रान, विविकान, कथरना छ। हरन ना॥

(8)

সিদ্ধপারে চ'লে যাই আর রে ফিরিলি ভাই সেখানে "লিবার্টি হল" আমাদের সভা। পাত্র মিত্র যত জন সকলেই গবা!--আছিলাম এতকাল ৰুঝাইব থাঁটি হাল হিন্দেশে ভালবেসে হিন্দুর সন্তানে, সিংহ যেন মুগ কোলে অর্গের উদ্ভাবন 🛚 লাৰি কিল পটাপট জ্বতো চড় চটাচট "লিভার" পীলে ফটাফট আপনি ষেভো ফেটে। মলম মাথায়ে গায় আমরাই করণার রাখিতাম কোলে ক'রে হিন্দুর সন্তানে সিংহ বেন মুগ রাথে অর্গের বাগানে! হুরে হিপ্ হুরে হো শিঙে বাহে ভোঁ ভোঁ ভোঁ বুটন স্বাধীন সদা "ফ্রীডম্ এন্ডার"।

(•)

ক্রিয়ার ইলবাট দেখ হে রিপণ লাট—
সাহেব-রক্ষণী সভা সংগঠিত হরেছে।
ছপৌচ তেপৌচ মিলে, লক টাকা দেছে ত্লে,
চামড়া কাটা কতগুলা "এক্ষিবয়স্" যুটেছে —
ছিপ্ হিপ্ হিপ্, হরে লাট কোট বট পরে,
ভাদের বিচার করে এ কগতে কেটা ?
আর রে ফিরিলি ভাই, সবরাঙা ডাকে সবাই—
দিল্পারে দেখে আলি ইংরাজের সভা।
পালে চুকে মিশে যাব, আকু পিজু নাহি রব
সিংহদলে স্থান ব্রেছে নেবে কেবা।
ছরে হিপ্ ভ্রে হো, শিঙে বাজে ভৌ ভোঁ—
এ দিশী "বুটন" মোরা গোরাদের ব্যটা।

শ্বের জর বৃটনের" জগৎ পেরেছ টের—
ভারত উদ্ধার হবে আমাদের "মিসনে।"
সে বাসনা বত কাল, পূর্ব নহে তত কাল
আমরা থাকিব হেথা কি করিবে রিপণে ?
ভারত উদ্ধার হবে, আমাদেরই "বিসনে"!
বিশ্বিশ্বরে, জাট কোট বুট প'বে

বেড়াৰ শীকার ধারে যেখা পাব তুবনে—

কি করিবে আমাদের "টেনেটর" রিপণে।

শক্র যদি করে গোল, ধরিব ব্যক্ত বোল,

উক্তভানে তুনাইব নিছক থেউড়।

সাবাস ইংরেক জাতি সাবাস বুকের ছাতি,

লাকুল বেণেছে ভাল সভ্যতা নেজুড।

হরে হিপ হরে ১০ শিকে বাজে ভোঁ ভোঁ ভোঁ—

বুটন খাধীন সদা "জীডম্—এভার"

হরে হিপ্ হিপ্—হরে, ছাট কোট বুট প'রে

সারা ভাবে অগতের তাদের বিচাব,

নেটবের কাছে হবে ?—"নেভার—নেভাব্"

(1)

কলববে কুত্হলি নেটবের দল।
স্থানবলে দেখাইল শিং ভালা কল।
দেখাইল বাড়ী গাড়ী জুড়ী বাছাবাছা।
"ম্যালো ফিশ" মনোহর আনন্দের থাঁচা।
ছড়া ছড়া পরিপক তাজা মর্ত্রমান।
দেখিলে ইংরাজ যাহে সভা মুগ্ধপ্রাণ।
দেখাইল রড়গর্ভা বাজালার স্থা।
মাজাজ বোছাই নেশ চক্ষ্মনোলোভা।
রড়্মঞ্চ "রেসিডেলি" দেখাইল কত,
আলাছে ভারত জুড়ে মাণিক পর্বত!
চলেছে ভারার তলে এ দেশী রাজারা,
পৃষ্ঠপরে বেডকার রাগীর প্রজারা!!
ভরে হিণ্—ছরে হো,শিতে বাব্ধে ভোঁ ভোঁ ভি

(٢)

হঠাৎ পড়িল ডাক সামাল সামাল।
বলি শোন্ ওরে ভাই ইংরাল ছাবাল।
এ রাজিব ছেড়ে আর কোথা যাবি বলু ?
চ্রিনিকা বুটনের পৃথিবীর লুট—
ভারত ছাড়িরা বাবো—টুট টুট টুট !!
ধূপছারা ভারারা, সবে শোন তবে বলি,
আারমেনিয়া যাও হে কেহ—কেহ চুণাগলি।
ন্দুর্ট কথা বলা ভাল বিম্ন বড় ভারি.
"মিলক্ কাউ" ইণ্ডিরারে ছেড়ে বেভে নাবি।
স্বাই নিলে "আ্যা হেম" বলে প্রেট পানে চায়,
বিজ্ঞান্তম শীরে গাইন ছালা খুরে গার—

তের হিপ—ছরে হো শিতেঁ বাইল'ভেঁ; কুটা টেন 🔌 ,রুটন স্বাধীন সদা—"বুহুগাংসরেভাব"।। 'চপ্ হিপ্—ডিপ্ ছরে, হৈথা চেডে সাব কিবে, 🏲 "ড্যাম দি নেটিব বিল" দেভাব নেভাক্ষী 🎺

. বাজি-মাৎ।

াচে থাকে। মৃথুয়ের পো, খেলে ভাল চটে। গমার খেলার নী কণ্মে হর গোলরে শংলুক ফুটে 🛊 'কফ্র'' দানে, এক ভাডাতে, কলে প্রিয়াং। াছ, কাড়বে ভেকো হলো কেয়াবাং কেয়াবাং। াবাস ভবানীপুৰ সাবাস তোদায়। -থালে অভূত কীৰ্ষি ব্ৰুলতলায়। ্ ्षा विन विदय त्योवं वीकावाक्रकाटमः। কা খুলে কুলবালা সম্ভাৱে ইংবাছে। ांशांस देकभूवी नग । विकासाधव Cartel ? ধ্যোব কাৰ্চুপিজে মুথ হৈল ভোঁতা। বন্ধ-নথেন্দ্ৰ পোটা সাকুৰ পিলালি ! **খায়ে** বাঁক্ডাবাসী কৈল ঠাকুরালি 🛭 ক্স মুখুখ্যের বেটা বলিগ্রি যাই। া দৰে যত মৰী কিনে নিলে ছাই ! । যতীন্দ্র, কুঞ্দাস। একবার দেখু 🕻 চয়ে। ক্লডলায় প্ৰেব ধারে কটে শত মেনে -ালো ফিকে, গৌর, সোনা হাতে গুলা পান। এপৰ ভালি থুলে বন্ধি পৈতেছে নিকোন॥ शमस्य श्राक्षभावितम् माठे माटहर ख स्थात -ার্বেল্ মারা গিল্টি হলো, একবার দেগ চেয়ে দ বলবেছুছতে খানা ছিলে গেটে ছালে বুন। ्यूश्रंत्रे भिष्मत रमथ वर्षक छिलाव छन ॥ ६ ब्रार्ट्स्सर मान क्रिक्टित भूपि (चेंटि हैंपैंटि। শবে, আইনপেঞ্জীর পেঞ্জিরিতে মানটা গেল বেঁটে ড'হে মৃথ্বৈয় জীয়া বলিঁহারি বাই। 5 **স্থাপ**টা দয়ে মাৎ করিলে থেতাপু "দি এস আই" হল ও সহরবাসী, আরু কি হাসি কাসবে রেড়ো বলে দি লোচেয়ে বকুক্তলীয়ে গাড়িখে রাণীব ছেলো। हे पुक्रिटाङ मरक क'रत्र क्लोमा स्थान दिस्य। िरिक्षि (स्थात मार्ट्य वाद्र्व नार्यव ॥ गात (कुर्में ह्या (पापडेंगिरियान कृतित कथा ब्राहुश गारेक" दर्भार बारक" र'ता भाव रखना में इका 🗷 কৈ তাতে, গজা কি তার কাল বদনবানি।

करनी जुरम (संक्षेत्र वा केंग्सरा कर्रांचे कर्र रमकरत कुछी, कर्बनाउ चिन्छ । यो शा<u>दि</u>क ॥ আর এয়োগণ কর্বি বরণ । চর্বাসিং — कू निद्वय विश्व निश्व टना रेडा स्वत्व ज्ञारका मान्। " এগিনে এম বছ ডাকরণ, সত্তে পেচানীর মান ভক পাবেন জৈঃমাব ভিনি ভার ফ কান মাণ শৈনিক পাৰে হীবেৰমালা ভাতে লকাই নৃ্তি, নজৰ দিয়ে, দেশান্ত খুলে বউ বি**ন্ত্ৰী**না পুতি। বিভিনা বুজ 🖟 চন্দ্ৰমে গলায় কাপড় থিছে। 🧸 বাজপুৰাটি বলে ভাল, ফুলের মান্ধা নিষে 🗗 কোন পাত্রে লেখে বল বামনের মেরে হয়ে। বাজাব ছেলের পা প্রিকার ফলের সাজি ল'য়ে। এখন--দীড়াও স'বে বুড দিলি,হাসিপ তল কাজ 🖧 দেখাৰা আমি ভাল ক'ৰে আৰু এলেদৰ শক্ষ্যা আয় না লোনৰ একে এনে গোলাগা কাঞ্চন। দেশি জোৱেৰ কলেৰ ভটা ঘটকালী কেমন। ভয় কৰো না এক া আধি দেখতে নাহি চাই। রাজার ছেলের ভাষড'লে ত উ[°]কি মারুর **ভীই**র व्याम्- यामनाभी व्यापः। १५८०

লক্ষ্য হ'তে পারে ব

বিদেশবাসী রাজান পেত্র শত্তা কি লো তারে ॥ ব বল্তে গথা বাছা বাছা কদম দলেব কাছ।
 বেলে আনি বাজক্যারে জুইছলো কবিব ঘাড় ।
 ইারার ঝলস, সোনার কলস, হাত্রামকার বেলি।
 চল্ ভলু উলুর, ধরনীন শীবের প্রথমেল হ
বারাগ্যীন প্রথমানি উঠলো মহাব্যে।

মার্বেলেতে মলের ঠনক বাজলো জনম কলো।
 কবি বৈল হতজোহা হিচর পুনী ফাক।
 পালিরে বেলে প্রথমিন বা বোরে জানুব চাক ছ
বাজালাছ বিলে পুরীর বছ পুনীকিন।

বাজালী কুলকামিনী ইইল'বাবীন।

সে নিশিতে শিল্পংর কিন্ধু পরীয়ানে।
নিজা নাহি ধাব কেন্দ্র প্রেব আবারে ।
গৃহিনী বাহার দবে ভাবি কান্ত্রানাট ।
গারানিশি গঞ্জনার চোটে চট্টেট ঘাটা ॥
কন্তে কোন-বাজনারী বিনারে বিনারে।
শর্ম-গৃহের পাশে পতিকে শুনারে ॥
খাশি সাটানের সাল, দেটান হাঁকানো।
ক্বল সেলাম বাশি, লেবিতে বেড়ানো।

736.

ি নি লাও চ্যে প্র চার্ম বালা ।
ক্রিম চার্টেড, ডাউন ভাল, মান্ত্রী নিত্র চার্টিড, ডাউন ভাল, মান্ত্রী নিত্র চার্টিড।
ক্রিম ন আলার নিত্র বিজ্ঞান আলা ।
ক্রিম ন আলার নিত্র চার্টিড। আজমান ।
ক্রিমা না আলার চার্টিড। আজমান ।
ক্রিমা না আলার চার্টিড। নার্টিড। নার্টিড।

বিজ্ঞান হয়ত এই।শ্রিকা ভেত্তার আনার মান-প্রাদে কোনে রফা কাবেন এছার ৪ ্^{ক্ষা}ৰে ক্ষকি প্ৰেড তেমুখ্যনা নাই মূখে। িবুৰ ও কন্মুলে লগে ভূটিৰ জ্ঞান্ত এলে ইয়েছে 🔊 ্বিভিণ্ট্রিক চন্দ্রতেশ রেলকে গোল করিদ সংখ্য কচিত। क्षिण्ड भुरूर्य र का (भारा) इंटर्वय अमीसका ० ॥ শিশ্বটতে গারি, এনতে পাবি ইংগালী ভাগতে ৷ ট্রিক-স্যোদের আভাতে পার্কিইংরাকী প্রথায় । 🎬 🕵 নতাইটেন' হয়।র ভাগে, কওঁ। বিলাভ যান। दिलामात ५८० छत्यनि साक्काल रम मान ॥ म्१८६ इते. Cक्रश्टर श्री य, भगांत्र दमानाच ६६म (ឆ 🕸 মাওচাল। আরেধালিতে হন না শুধুকেম 🛭 **প্রিপ**ালোর নামে পালি ২৪ নাকে: রা**রতে**ওঁ ! টিটিম পেয়ে বাচট নেলে ভিট চাই ট্রেট । শ্বিক 🛵 জ, যাবের বিক্রণ তোমার হিরাক্তবি বুক। মুক্ত কিনিট্ট প্রিয়ে কেমন লাগিছে দিলে মুক্।।" **র্মাটা** বেংগ্র জনোনুরে পত্তি ভার চায়। ক্ষেপ গুলুমান হারানিনি যার ব

ক্ষিক কোন গনাচেব প্রতিমানী নারী।
ক্ষুনীম বছ কাঁক, বোঝা পৈছে কাবি।
ক্ষুবার টেনে ফেল টাকা দিও পরে।
ক্ষিত্রে সাডালে না একটা কিছু হ'বে।
বি বোসনাই আলো সংকি গেল ফেসে।
বৈ ক্ষুবাত্র নামটাও ছি, না পাইলে শেবে।
ক্ষিত্র ক্ষুবাত্র আগ্রনাম ক্ষে কাবি।
ক্ষিত্র কেওল আওস্বাধি মন্দ্র্মি ভাবি।
ক্ষিত্র কেওল আওস্বাধি মন্দ্র্মি ভাবি।

গৃহিণী কন ভাগো ৰণিবতি। প্ৰস্কু অনাৱেবল, প্ৰসুধিনাৰতি। ছোটদাটের স্থাফাকারী জোন্তাতে দেখি,
লক্ষ্পণ বহু লোক ৰদ দেখি ছৈ কি ।
ক্রিট্রীনিলে বাজা কেছে দাহেব পাছায়—
প্রেমিরি কোটের উকীল তোমাকে কারার।
ছি, ছি, ডি, ছি, ছেজে দাও এবন চাকরি।
ছবু খালি মার্কা মারা পেবেদার 'লববি'নে
ভাবতেম ব্যি কেইবেট ভূমি এক জন—
ভ্যাকিছ রাজা কিবো লজার বাবন '
ভুমা খামা পোড়া ভাগিনে, উকীলেব ওঁচা।
ভাজালাতে প্রেমা গি এনে নাগ্র গোছা।
ব'লো, কোন্কা মেরে অভ্যাইনা বামান্তার বান
নিক্রারার হালি মের ভারতে উত্ত মান।

পোলা পুঁটি বদনা চেনা পিনী আৰু ৰভ।
পাছায় গাঁডায় কেঁদে বেডান গে কক।
ক্ষেত্ৰ নিল আমাত্ৰ কঠাটি দে নৃথপদি।
ফ্যাটা বেঁদে যান বালি এই বিলা বুলি॥
বাপেত কামানে। টাকা বিলাকী লাগক।
দিয়া নিজে ভুজু হ'লে ডোকে। লাটেছ।
জীৱ টাকা জীৱ কটি জীবি গোল ছল।
মান থেকে লুটি আৰু কুটেল বনল।
শেষে যাবে হোমে বান্ত বজন পতে।
বাজার মেনান ইনি চোকেন জীবিলে॥
এই তো 'এলেন' জীৱ িয়াব প্ৰদান।
ভা হ'তে আমান্ত আই কি হুটিব বোন্ধ'

বংগ দালালের মাস 'থাবালি বাাপাতে।
কানে বটে চের কডি নিত্র বোলগারে ।
পেটেনে কডিটি ভোল আন আন্তঃ নাই।
কে কেননে বাদপুল আনে বল ভাই।"

কাগ্ৰেৰ অভিটারি ক'বে মবে থাবা।
ভাষ্যানৰ কামিনীরা কেঁলে কেঁলে সারা"বা বি দিন এক খাটে তার লো কাছাব।
হপ্তান মিনিট পাঁচ হয় না সাক্ষাব।
এত লিখে এক পড়ে এক ছাপা ছালে।
তব্ পদ নাছি পার অভাগ্রির পাপে ॥"
কবি বলে কামিনীরা ক্লফ মান কর।
ফিরিবে ভোবের ভাগা শুন অভাগর॥

ভিপৃটির ভার্ষ্য। কন "আমানের তিনি। চৌকদারীর কাকে পটু, মকবলে "গিনি" । মহরে টাকার করে চলা বেথি ভার। এ বলবো,কি হুলা ওলো বিদ্ধি অনুষ্ট আমার। খুরে থুরে দেশে দেশে শবীর হ'ল কালি।
সাতশো টাকা মাইনে হলে। হদ—ঠাকুরালী॥
মদ্ধ বড তব্ এতে চোকরাঙানি কত—
ঘুঁটের চিপি ভাবে দিদি দেখিলে পর্সাত॥
হতাম যগপি কোন উকিলেব নাগ।
বাভিত আমাৰ আৰু কত অভ্বাগ॥

সে রুমণী বলে 'বোন এপিট ওপিট। একি ভাঁচে ঢালা ডুই সমান টিকিট॥ ষে টাকাটি মানে মানে কবে উপাৰ্জন। চৌদ্ধ ভতে প'ডে কবে অৰ্দ্ধেক ভোজন। কপালে প্রভাত মুন্টা এম্বলাসে এম্বলাসে। দিন তেবটি লাগি খেয়ে ঘবে ফিবে **আগে**॥ বেখাবে বেহল পেশা কথা বেটে খায়। পদেৰ আবাৰ মান সহাম কোথায় ॥ আমি উকীলের মাগ কথা শোন বোন। মুখুয্যের সঙ্গে আবি করোনা ওজন।।" "বটে বোন ৰটে বটে মানি তোব কথা।" बाल शीरत शीरत कक मांदी 'आरम रमशं । "আমাৰ কণ্ডাটি দেখ সৰকাৰী উকীল। মধুৰোব 'দিনিয়ব" উকীল দিবিল। বয়েসও হয়েছে কিছু বৃদ্ধিও পেকেছে। ছোট বড কৰ্ম কাজ অনেক কবেছে। পাকা হিন্দু প্ৰতিদিন তুৰ্গানাম কৰে। জবৰ বাণীৰ ছেলে চকলো না লো ঘৰে॥"

ভাজাবেৰ নাৰী কহে "ভাৰী ত মদানি। নাজী টিপে জাৰি কত ঘৰেতে শাসানি। পাৱেন কেবল পাড়ায় পাড়ায় পিটিতে ধ্যল। মৱণ কালে শৰণ "চিবৰ" পাৰ্টিল স্থল। মৱেন ঘ্ৰে পথে পথে বোদে ধ্ৰে ধ্ৰে — দৱে হুতে এলে এবাব খেলবা দিব বুকে।"

কেরাণীর নামী যত পাদাবে কোপাস।
মাষ্টারের "নিস্ট্রেসেরা" গোসা ঘবে যায়।
কবিব কিবিতে ঘবে হৈল বড দায়।
অনেক ভাবিয়া শেষে প্রবেশে সেথায়।
কাল্য আসি হাজ্মবে বলে কই দেখি!
কি পাইলে কাব্য লিখে সোনা কিংবা মেকি।
বড জালাতন কর জেগে সারা রাভি।
জালি ফেলে কাগজ হিতে পুডিয়ে মোমেব বাজি॥
শবনে সোয়ান্তি নাই বিবাম নিজায়;
শত রাকাড়ে সাডা নাই বাবা নিজায়।

দেও দেখি গুণমণি কৈ পেলে শিরোপা।
বুলুবিবন, চাকি চাক্তি, কিংবা জরিব থোপা॥
কবি কহে পায় কিবা কি দেখাবে ধনী।—
না বলিতে বালা ঠোঁট ফলায়ে তথনি॥
ধাকা দিয়ে গরবিগী গর্গবিয়ে যায়।
কাঁফবে পড়িয়া কবি ক্যাপ্ চায়॥

দেশালাইযের স্তব।

নমামি বিলাতী অগ্নি দেশালাই-রূপী,
দেহথানি চাঁচা ছোলা শিবে বাঁধা টুপী।
বেমন তেপুটা বাবু একহাবা চেচারা,
মাথায় শালেব বেড় বাগে দেহজর।
নমামি গদ্ধকগদ্ধ মুখ্ট গোলালো,
দৰ্শ্বজাতিপ্ৰিয় দেব গৃহ কব আলো।
শাস্ত্ৰ সভ্য অতি ধার--চাপে যতক্ষণ,
ধাপে উঠে চ'টে লাল—গোৱাদ্ধ বেমন।

ন্মামি স্ক্রিগামা দাক অবতার, ट्रीया-विध-विनासन करेष कीकात । নিদ্রিতের গুপ্তচর পাচিকার প্রাণ লগাদাডি কাবুলীব শিবে যাব স্থান। নমামি খাজোৎশিখা নয়নবঞ্জন. লালেতে নীলের আভা দিব্যদরশন। পোয়াতিব প্রিয়সথা বালকের অরি. বিবাক হে কাষ্ঠদের কত রূপ ধবি । প্রণমামি জালামণ শুল দেশালাই. সাহেব গোলাম তব কি কব বাদশাই। সোনাটিন রূপা ভাষা গায়ে বাঁধা দিতে. লাটের পকেটে পঠো লেডীব মাঁপিতে। নমামি সহজ্লাল ব্ৰধাদমন, আঁচতে কিবল ধব সংখব জলন। আখা জলে বিনা ফুয়ে বিনা চ'থে জল. দিয়াকাটী তোব ত্তবে মাগাবা পাগ**ল।** নমানি কলিব কার্ত্তি কার্ষ্টেব চকম্কি. জোমার চমকে বিশ্বকর্মা গেছে ঠকি। विज. थाल, वन, जग, (यथारनई माई, भित्व छांडा मना भना तमिश तमहे हैं। है। ন্মামি ন্মামি দেব পাইন-ন্দন. তোমাব প্রসাদে হয় সাগবে রন্ধন।

সভা জগতের তমি সোহাগের বাতি, চকুট-ভক্তেব মোক পদার্থ বিলাতী। ন্মামি ফফ বিশক্ষ নাসিকাপীডন. ধনীর নিকটে তৃচ্ছ কাঙ্গালের ধন। সন্ধ্যার সোনার কাটা জোছনার ছবি, ব্ৰহ্মার পঞ্চম মধ ব্ৰাইয়ণ্টের রবি ! নমামি কিবণদও কোপন-স্থভাব, রাজগুতে চালাবরে সমান প্রভাব। निकुक्टल, পথে, मार्ट्स, गांधी, वांड़ा, दब्दल, সকলে তোমায় পুজে স্থ্য শশী ফেলে। ভিথানী কটাবে সুখী, ভীকতে সাহসী, ত্তব বলে খোঁডা খাডা বুডিরা ষোড্নী। বাঞ্চল্লভক তমি সাহস-ভারণ, দীনবন্ধ ভব গুণ কে করে কীর্ত্তন ? প্রণমামি থকাদেহ অন্ধকারহারি! নমামি অশেষ রূপ অবনী-বিহারি ! নমামি মোমের ডাটি "ফক্রে"তে মলা. উন্তিংশ শতান্ধীর অনলের শলা। তব গুণে, গুপ্ত তাপ, তৃপ্ত জগজ্জন, প্রাণমামি দেশালাই দেবের ইরুন।

বাঙ্গালীর মেয়ে

কে যায়, কে যায়, অই উ কি ফু কি চেরে ?
হাতে বালা পায়ে মল, কাকালেতে গোট,
তাম্বলে তামাকু রস—বালা বালা ঠোঁট;
কলালে টিপেব কোটা—বোপা বালা চূল,
কেশেতে বসনা ভৱা—গালে ভবা গুল.
বলিহাবি কিবা সাটি ছক্লে বাহার,
কালাপেড়ে শান্তিপুরে কলো চূডিশাব,
অহলারে ফেটে পড়ে চলে যেন ধেয়ে—
হার হার এই যার বালালীর মেরে!

হার হার অই বার বালালীর মেয়ে—
মুথের সাপটে দড—বিপদে অজ্ঞান,
কোঁদলে ঝডের আগে কথার তৃকান,
বৈহল স্থের সাধ—পা ছডারে বসা,
আঁচলের খুঁটট তৃলে অলমলা ঘবা!
নমন্ধার তাঁর পার—পাডার বেডানী,
পেটটিভরা কুজডো কথা, পরনিলালানি।

কথার আকাশে তোলে হাতে দের চাঁদ,
ধার থার, বার পবে, তারি নিন্দাবাদ,
বসনা কলেব গাড়ী চলে রাত্রি দিন,
বাড়েতে পড়েন যার—বিপদ সঙ্গীন,
বেয়ে যান, নিয়ে ধান, আর ধান চেয়ে—
হার হার অই বার বাসালীর মেরে।

হায় হায় অই যায় বাঙ্গালীব মেয়ে—
ধারাপাতে মৃর্ট্রিমান, চারুপাত পড়া,
পেটেব ভিত্তব গজে দামুরায়ের ছড়া।
চিত্রিকাকে চিত্রগুপ্থ—পিডিতে আলপনা।
হল বাহাছুবী—"ছিবি" বিচিত্র কাবথানা,
অঙ্গপাস্থে বরক্চি গ্যালিলো নিউটান,
গণ্ডা কড়ি গুন্তে হ'লে জানের বাড়ী মান,
পান্তাডে পড়োব মত অক্ষবের ছাঁদ,
কলাপাতে না এণ্ডতে গ্রন্থ লেখা সাধ;
ক্ষীরপুলি, পারেস, পীঠা মিটায়ের সীমা,
বলিচারি বঙ্গনারী তোমার মহিমা।
জলো তথে পুটদেচ ভেলে জলে নেরে—
হার হার অই যার বাঙ্গালীর মেরে।

হায় হায় অই বাষ বাদালীর মেরে—
স্থমুপে ত্থের কড়া—কাটাতে বোটন,
থোলা চূলে চূলো জেলে পোঁয়াতে জলন।
তপ্তভাতে ভবা হাড়ী, বেডী ধরে তোলা,
ঝাড়া বড়ী, শাক্ পাড়ালে বিলক্ষণ টান,
কালিরে কাবাব বেঁধে দেমাকে অজ্ঞান!
শাঁথেতে পাড়িতে ক্ক চূডান্ত নিপুণ,
হুলুপনি কোলাহলে চতুদুধি খুন।
রামাঘরে হাওয়া থাওয়া গাড়ী মূদে বাওয়া,
দেশভদ্ধ লোকের মাঝে গলাঘাটে নাওয়া।
বাসরঘরে ক্যুব কবি চোথের মাথা থেকে,
প্রভাত হ'লে পিসখাভাড়ী ঘোষটা মূথে চেরে

সাবাস্ সাবাস্ তোরে বালালীর মেরে—
ব্রতকথা উপকথা সেঁজুতি পালন,
কালীবাটে যেতে পেলে খর্মে আরোহণ!
মেরে ছেলের বিয়ে পর্স্কে গান্ধনের গোল,
বাব্রা সঙে নিজাত্যাগ—ছেলে ভরা কোল,

ভ্ত পেরেতে দিনে ভর, অগ্ধকারে কাঠ, শক্তরোগে রোজা ডাকা, অগ্তারন পাঠ, তীর্থহানে পা পড়িলে আফলাদে পুতৃল, হাটবাঞ্চারে লজ্জাহীন ঘরে কুঁড়িদল। ও ডিকাঠ মুডিশিলা ভক্তিপথে নেয়ে। হায় হায় অই যায় বাদালার মেয়ে।

হার হার অই যার বাদালীর মেরে।
রসের মরাল ধেন জলটুক ছেডে —
ত্থটুকু টেনে স্থান আগে গিরে তেডে ,
চিনের পুতুলে সাধ, বাকস টিনে পেটা।
রয়াকেল বাধা ছবিওলা ধবে ঘোনে ঘাটা,
ধেলার দিগগ্জ কেঁরে, চোবের সদ্ধার,
কুকোচুরি যমের বাডা—ম্পাই করে ঠার।
আবেস থালি খোপা বাধা, নম বিননো ঝারা
হন্দ হলো কচি ছেলে টেনে এনে মাবা।
কার্পেটে কার্চুপি কাল, কাক নব্য চাল,
ঘরকরার জলাগুলি ভাত বাবিতে ভাল!

নিজে বাটে, অন্তে দোবে মৃগসাপটে দড, হুজ্জে হাবিলে কেঁদে পাড়া কবে জড়, বাসালী মেৰেব ও৭ কে ফরাবে পেয়ে— হায় হায় অই বায় বাসালীর মেয়ে ।

হায় হায় অই বায় বাঙ্গালীব মেথে—

মৃত্ব মৃত্ হাসি টুক অধবে রঞ্জন,

সাবাস্ সাবাস্ নাক চোকের গছন,
কালো চুলে কিবা ঘটা চোথে কাল তাবা,
দেখে নাই বারা কভু, দেখে যাক্ তাবা।
ভাষা ভাষা খাষা চোগ তুলি দিয়ে খাকা,
তা উপরি কিবা সফ ভুক্ষ্ণ বাকা।
থমকে থমকে গিব গতি কি ফুন্দর,
হাসি হাসি মুখ্থানি কিবা মনোহব!
আহা আহা লজ্জা ঘেন গায় ফটে আছে,
কোথা লজ্জাবটী তুই এ লভার কাছে

চুক্ষ্ ঘদি থাকে কাবো ভবে দেব দেৱে—

হায় হায় এই যায় বাগালীর মেয়ে।

অ-পূৰ্ব্ব প্ৰকাশিত কবিতা

পদ্মফুল

যতবার হেবি ভোবে কেন ভূলি বল.
থেরে শতদল পদা ?
কি আছে ও গেত বর্ণে কি আছে ও নীলপরে,
যথন নির্থি—আমি তথনি শীতল।
যতবার হেরি তোবে কেন ভূলি বল
ওবে প্রফ্টিত পদা গ

যথন জুর্ব্যের বৃশ্মি মাথিয়া শৃগীবে, হাসিটি ছভারে মূথে ভাসোনীল বারি বুকে টল টল ভন্নথানি কভই দ্রখী বে---হেরিলে ভগন কেন আমিও গাসিবে ওয়ে মোহকর পল ?

আমাৰও অধ্বে হাসি অমনি মণুৰ কোটে রে আপনি আসি. তোমারি হাসিব হাসি প্রকাশে স্থিতিলে—আহা কি মধুর ' কেন, বা না হেবে ভোবে কদ্য বিপ্ব

আবাৰ ষথন' আহা, শিশিৱেৰ জলে ভিল্লিঃ। মনের থেদে. গোট করি কেঁদে কেঁদে, দলগুলি মোদ, ফুল গুঠনের তলে— তথন হেরিলে কেন মম হৃদি গলে ওরে রে মৃদিত পদ্ম।

দেখিলে তথন তোবে আমিও হ্রদয়ে
পাই রে কতই ব্যপা
মনে পডে কত কথা
ফৃটিত হাবছে যাহা জীবন উদয়ে---থেলাত চঞ্চল মনে উত্যাদিত হয়ে।
তবে আফোদিত গল দ

কি যে কোমলভা ভোব থবে থবে থবে পত্ৰদলে, শতদল, কদি ভোব কি কোমল, সেই জানে কোমলভা হ্ৰদে বাব থবে। আমি ভিন্ন কেহ আব জানে কি অপৱে চে কমলবাসী পদ্ম ৪

কোটে ত রে এত ফ্ল তলাগের কোলে
তানীল লাল আলালা,
কাহাব শ্বীর প্রা
কাহ ত আমাব মনে ওরপে না পোলে
এত স্থাধে চিত্ত কই দেখি না ত দোলে
বেধ চিত্ত মাদক পদা ৫

দেখ্ছি ত পুপা তোবে আংগতে কতই
সকালে থেলেছি যবে,
সথারা মিলিয়ে সবে,
তুগমগ ইনতীরে বিহলেত হই…তথম এ গাঢ়ভাবে তুবিনি ত কই
প্রে ভাবময় পল ৪

এত যে লুকানো তোতে আগে ত জানিনে।
হৌবনেতে সুথোদর,
হায় রে সকলে কয়—
প্রোঢ়-মুথ কাছে আনি সে সুথ মানি নে!
পরিণত মুথ বিনা সুথ কি জানি নে
ওরে মনোহব পদ্ম 🕈

যে বাস তোমাতে, হায় সে বাস কি আর, আছে অন্ত কোন ফুলে १ অমন বাডাস ছুলে ছোটে কি স্থরতিগন্ধ মূই মল্লিকার ? তোরি বাসে কেন ক্দি মুগ্ধ রে আমার রে কুন্দলাঞ্চন পদ্ম ;

গোলাপ. কেডকী, টাপা, কামিনার থরে,
এডকি শোভে বে বন দ
এড কি মোচে বে মন দ
হৈরি যবে ডোবে ফুল হদেব লহবে
কি যেন পেলে বে বদে হদম-নিকবি

কথাটি ত নাহি মূথে--জান নাত বাণী তব্ ওবে শতদল, কেমনে প্রকাশে, বল্ যে কথা ফ্রম্মে তোব --কেমনে বা জানি ওৱে ওথ হাবী পদা ?

কেছ কি দেখে না আবি এতোব স্বল মাধুরী-প্রতিমাখানি ? কেছ কি শোনে না বাণী তোব কমল-মৃথে ? -আমিট পাগল ? আমিই একাকী মত্ত পিষে ও গ্ৰথল 'ববে উন্যাদক প্রা ?

কেন বল এই এপে গুবি নিবত্ব যেথানে তোমাৰ দল ফুটিয়া সাজায় জল, না দেখিলে কেন হয় এগণ অত্ব—-কেন দেখি শ্রু মহী যেন বা গচ্বব বল ক্রদিগ্রাহী পদা গ

ঘুরি ত কতই স্থানে --কড় দেগি হায়,
বাজগুহ, বন্ধ-গেহ,
পাইত কতই মেহ,
তবু কেন বল্, চিন্ত ভোবি দিকে ধায়—
বল বে নিকটে ভোৱ ধায় কি আশায়
ভবে চিত্ৰচোব প্লা?

ধন, মান, বিভবের সৌবভ-শোভায় এত ত মোহে না স্কৃদি থাকে না ত প্রাণে বিধি এমন সুরভি শোভা সংসার-কীলায়। ভ্রমেছি ত এতকাল খেলায়ে সেথায় কৌড়াকুশল পর্যা কতবার কবি মনে ভূনিব বে তোরে, ধরিব সংসাবি সাজ ভাজিয়া হৃদয় ভাজ অক্ত সাধ হৃদে ধবি বৃরি মন্ত্র-খোরে-— ভূলে যাই শুরুবর্ণ—ভূলে যাই তোবে হায় মোহকায় প্রা!

না পশিতে চিত্ততে সে করনা-মূল শুকান্ব সে পাধ-লতা ভূলি নে সে দ্ব কথা, ভূলিতে না পাবি কিন্তু একমা এ ভূল — কি মাধুৱী-ডোব তোব চায় বে, অভূল 'ওবে মধুমন্ন পল।

সন্ত্য কি বে ভোবি দেগে এত শোভা বাস ?
কিংবা সে আমাবি নন
প্রমোদে ৬য় নগন,
ভাবে আপনাব প্রভা ভো'তে পবকাশ—
চেতন ভাবিয়া তোবে শোনে নিজ্ঞায
বিবে জড়দেহ প্রা।

ষাই হোকে. যে বিধানে আমাৰ ফ্ৰয় বিশুল মাধুগ্য তোৰ. হ'লে জীবনেৰ ভোব, তবুও স্পনে ভূই হবি বে উলয— ভূলিব না তবু তোৰে, বে সুখ্যাময় সুধ্য-নিবাস পলু।

ভাবি ঋধু কেন বিধি কবিনা এমন--এত শোভা বাস ধাব
পদ্ধেতে জনম তাব,
পদ্ধজ বলিয়া ভাবে ডাকে সাধুজন।
জানি না বিধিধ হায়, বহল্প কেমন
'পুৰে ঋদুচেতা পদ্ম ।

ায়, বিধি, এ মনও কি তেমতি বিধানে, বাদিলা এ দেহ-পুটে ? কলুষ পঙ্কেতে ফটে, চাই এত কিপ্ত মন, ডোবে ভাগে বানে ? ংক্ষেতি বে শৃতদল ক্ষজেন্ত-বৰ্মনে।

> তাই তুই আমি বাধা, এক সলে হাসা কাঁদা,

তাই ওবে পদাফল,—এ মিল তৃজনে। ভূলিব না তোৱে পদা, ভূলিব না—ভূলিব না—জীবনে মবণে।

দেব-নিদা।

(5)

কোন মহামতি মানক স্থান,
বৃক্তিতে বিধিন শাসন, বিধান,
অধীব হইলা বাসনানলে , –
অবনী ত্যাজিয়া অমর আালয়ে
প্রবেশি দেখিবে দেবতানিচয়ে -দেব প্রদর, ববি, ততাশন,
বাযু, হবি, হর, মবালবাহন,
দেখিবে ভাসিছে কাবশ-জলে।
(২)

(২)
দেখিৰে কাৰণ সলিংল ভাসিয়া
চলেছে কিন্তুপে নাচিয়া নাচিয়া
প্ৰমাণ্ড বেণু সময় বয়ে।
দেখিৰে কিন্তুপে বান্য সঞ্চাৰ,
দেহেৰ প্ৰকৃতি, কালেৰ আকাৰ,
ক্যোভি: অন্যকাৰ, ভগৎখন্তপ,
নিয়ভি-শুভাল দেখিৰে কিন্তুপ—
ভাবিতে বাহিন্তা অধীৰ হয়ে।
(৩)

শুলার বে মানব সংসা অমনি
প্রি শৃভাদেশ হলো বৈবস্থান—
বাজিল জুদ্ভি. নাদিল অংশনি.
ধূলিল অম্ব-আল্যুদ্ধি,
জুটিল আলোক বিবোক প্রিয়া
অপুর্ব সৌনভ ব্রহ্মাণ্ড ব্যাপিয়া
উচ্চুদ্ধি বহিল,— শ্রেণ ভবিল,
মানুর অমন সঙ্গীতভার।
(3)

(৪)
মানব-নদন অন্বভবনে
প্রেশি তথন পুলকিভ-মনে,
দেখিল নিবপি অম্বালয়,
গ্গন্মগুলে অঞ্চ কেবলি,
মধুর নিমাদে জ্যোতিক্মগুলী

দেখিল ছুটিছে,— আশে পাশে তাব, পরীকলাগণ করিয়া ঝঙ্কার সাধিছে বাণন মাধুরীময়।

(c)

তপনমণ্ডল গগনপ্ৰালণে.
কিৱণ-সমূত্ৰ যেন বা শোভনে,
শিখাৱ তৱক ছুটিছে তাৱ।
দেখিল আনকে সে কিৱণ উঠি,
অনন্ত আনত যোজনেতে ছুটি
করিছে ত্ৰমণ— পভিছে ভাতিয়া
কিবণেব বজ্ঞ্যনে বা গাঁথিয়া,
সহস্ৰ সহস্ৰ গ্ৰেহৰ প্ৰায় !

(.)

আনিত্য বেনিয়া চলেছে ব্রিয়া,
বিধ্র মণ্ডল দেখিল আসিয়া,
দেখিল তাহাতে স্থাব হুদ;
সে হুদ-স্থাতে পিপাসা মিটাতে,
প্রথম-বিধ্র, হৃদয়-ব্যথাতে,
অসংখ্য গরুর্জ, দানবমগুলী,
কুলেতে বিদিয়া অতি কুত্হলী,
আনদে ভুঞ্জিছে মধুন মদ!

(૧) স্থাপে নিদ্রাধায় দেবতা সকলে,

গিরি, উপবন, কানন, কমলে,
ত্রিদশ-মণ্ডলে সৌবভ বর;
জ্মার নীবব, নাহি কলবন,
শ্রেতে কেবলি মধ্ব সুরব।
স্কীত ঝরিছে, ত্রিদিব পুরিছে,—
"শান্তি শান্তি শান্তি" শবদ হয়।

(b)

দেব জটালিকা চন্দ্রাতপতলে, দেব জাথগুল পারিষ্কাত গলে, অতুল মহিমা বদনে ভাতি; অপূর্ব্ব শয়নে মুথে নিদ্রা বায়, পদতলে ইন্দ্র মাতক ঘুমায়, চৌদিকে ঘেরিয়া দামিনী খেলায়, পুদ্ধর প্রভৃতি মেঘেতে ভাতি। (&)

মহা তেজ্বর প্রচণ্ড ভারর,
ঘূমায় অম্বনে থুলিয়া সুন্দর
সহস্র কিরণ কিরীট-ভূষা!
অনুহ'তে মরে অপূর্ব স্থমা,
অলধর-তহ্ জিনিয়া উপমা,
নিকটে স্থনন, অরুণ উধা।

(>)

থুলে মুগচিছ, অত্লিত শোভা,
অমল কুনাৰ তছু মনোলোভা,
শুণান্ধ ঘ্নার কিবণজালে।
দে তছু পেথিতে কিন্তুৰ-কুমার
কত শুত দল, অপূর্ব আকার,
ব্য়েছে দাঁডায়ে বিশ্বরে প্রিয়া—
সুধার সুগরে আনলে মাতিয়া,
উড়িছে চকোর অযুত পালে।

(>>)

শ্ৰিতমুক্তটা পডিছে উথলি,

পেব-ক্রীডাবন নন্দন উজলি,
মেব, মন্দাকিনী, তরু চূডায়;
কৃস্ম-আকৃতি অপ্যরা. কিন্নবী,
কব, বন্ধ, ক্রোড়ে বাগুযন্ত্র ধরি,
ভবে সারি সারি অতা-পুস্পদ্বে,

পারিজাত-ফুলে শচী ঘুমায়।

(><)

বিমল চন্দ্রমা-কিবণে বিহরে---

ত্রিদিব ভ্ডিয়া দেবতা নিদ্রিত,—
মাধব-কুমার সভবে চকিত,
শুনিল গঞীর জীম্তনাদ।
দেবিল আতক্ষে নয়ন ফিরায়ে
গগনপ্রান্তে একত্র জডাধে,
থেলিছে অসংখা বিজলী-ছাদ।

(00)

আবোদেশে তার, অনন্ত বিস্তার কাবণ-জ্বলধি পবি বীচিহার, উথলিছে রঙ্গে প্রসারি ধারা , গহনুরে গহনুবে উপকূল-ধারে প্রচণ্ড ছন্ধারে মাকৃত প্রহাবে

ভাঙ্গিতে যেন বা বন্ধন-কারা

(58)

উপকুল ধাবে অনল কুণ্ডেতে,
শিপর প্রমাণ শিপার শুণ্ডেতে,
অনল উঠিছে গগনভাগে,
বেন প্রবাবত ছুটিয়া প্রনে,
বোর আকর্ষণে গন্তীর গর্জনে,
অলন্তন্ত ধবি শুণ্ডেতে উগানি,

ফে**লিছে তুলিছে জল**দন্ধালে॥

(>4)

কাবৰ-সাগৰে প্রমাণ্-কৰে
অনাদিপুক্ষ বনি গানিভবে
ছাডিছে নিখাস—জনিয়া তাগ,
অসংথা অসংখ্য ব্লাও ফুটীয়া
অসীম অনস্ক আকাশে উঠিয়া
ছুটিছে অনল-ফুলিল-প্রায়।

(24)

কত স্থা তাবা কত বসুমতী,
স্থা মৰ্ত্য কত অফুট-মূরতি
ভাসিয়া চলেছে কাবণ-জ্বলে—
কত বসুজরা রবি শনী তাবা
জগতব্রসাও হরে রপহারা
পসিয়া পডিছে সনিলে ভূবিছে
কাবণ-বারিধি-অভল তলে।

()9)

সে বাৰিধি হ'তে চলেছে ছটিয়া দেখিল মানব পূলকে প্ৰিয়া, কালেব ভৱদ বিপুলকায়, বহিছে বিধারে বিবিধ প্রকারে এক ধারাপরে মানব-আকারে কতই পরাণী ভাসিয়া যার।

(34)

অমল কমলে ভাগিছে সকলে
ধক্ষারী কেহ, কার করতলে
লেখনী পুস্তক বিস্তৃত রয় ,
জিদিব জুড়িয়া দেবতা নিদ্রিত
অগতে শুবুই ইহারা আগত
মাতৈ: মাতৈ: —গভীর উচ্ছাদে,
স্ফাতি ডাকিয়া চলেছে উল্লাদে —
অ্কালে তর্ম্ব ক্রিয়া লয় ।

(55)

সে নরমণ্ডলে মানব ক্মাব, স্বজাতি হেরিল কত আপনাব,

পুলকে পৃথিব মোহিত হয়ে --বান্ধিল হুলুভি সহসা অমনি, সূদ্ৰ-গগনে হলো দৈবৰাণী,—

"দেশ বে সানব এ দিকে চেয়ে।" (২•)

प्तिश्वन हमिक अन्न धारा-छीटन, गंडीत हिलांब भन टकलि धीटन,

চলেছে পরিষা প্রবাহ-ধাবা, প্রাণী করন্ধন পুলকিত-চিত, `মাভৈ' নিনাদ শুনিয়া গুম্ভিত,

८५ विष्ट्रिकेट विश्व विषया चित्र । (२५)

পশ্চাতে জাঁদেৰ করি জয়ধ্বনি, চলেছে কতই মানৰ প্ৰাণী ভেবী-শন্ধনাদে কবি ঘোৰ ধ্বনি

সাগব হুশ্ধারে উৎলে গীত , উৎলে সঙ্গীত-নিনাদ গভীব— "হোক না কেন সে মাটীর শহীর, মানবেব জাতি কংনও লীন, হবে না সমূলে কিতি যত দিন—

তবে রে পরাণী, কেন ভাবিত ?" ডাকিছে আবার আনন্দ আরাবে— "সমব-বিজয়ী প্রাণী বারা সবে, গাও রে উল্লাসে অমব-গীত।"—

(২০)

"দেব-অংশে জন্ম, পৰ দেব-মালা,
কৰ মৰ্ত্তাভূমি জগতে উজ্লা,
দম্জাবি-তেজে অবনী-অংগতে.

জাণ্ডক অগতে মানব-নাম ; জাণ্ডক অদিবে দেবতামণ্ডলী, দানব গৰ্ক্ষ হয়ে কুত্হলী, দেশুক চাহিন্না ভবিদ্য খুলিনা,

কর সিংহনাদ বিজয়-শভোতে,

ত্রিলোক উজ্জেশ মানব-ধাম। (২৩)

সে গীতের সহ ঘন ঘোর খবে, বাজে শৃদনাদ, শুনিল অন্তবে, দেখিল চাহিয়া নরকুমার--- শত শত দলে পরাণী সকলে করি সিংহনাদ মহাগর্ম্বে চলে, বলে উচ্চৈম্বেব ধ্বণীমণ্ডলে— "একতার সম কি আছে জাব ?"

(28)

"একতাব গুণে বিজিত অমরে , কত কাল দৈত্য মুঝিলা সমবে । দৈত্যকুলে নাশ করি, মুওমালা পবে মহাকালী দফ্জারি-বালা,

নিলৈ ত্য কৰিয়া অমৱ-ৰাস ! একতা সাধিতে এ মৱ-ভবনে, কত মহাজন প্ৰাণ দিয়া বণে, পেল সৰ্গো চলি দিয়া নৱবলি। অধনী-দানৰে কৰিয়া নাশ।"

(२৫)

"এ মন্ত্ৰপুৰীতে সেই বছ জাতি, একতাৰ জ্যোতিঃ বদনেতে ভাতি, তেজাগৰ্ম ধরি থাকে নিজ বাদে, হেবে পুত্ৰ দাবা প্ৰাণেব হববে.

হাসিতে কাঁদিতে কবে না ভন্ন;
করে না কথন পাত অর্ঘ্য দান,
পর-পদতলে হয়ে ঘ্রিমাণ,
কৃতাঞ্চলি-কবে ভীকতাব স্বরে,
বলে না কথন ঘাতকের জয়।"

(25)

"একতাই মর্ট্যে মানব-সংখল, একতা বিহনে পরেরি সকল, দারা পুত্র গৃহ ধা আছে তোব,

সে ধন বিহনে আলয়-বিপিনে, জীবন-আশ্বাদ পাবিনে পাবিনে — দিবস-শর্কাবী সকলি ঘোর।"

(२१)

হর্ষিত-তমু কদম্বের প্রায় মানব-নন্দন দেখে পুনরায়,

দেইরপ জ্যোতির্মন্ন আরুতি; প্রাণীক্ষ জন প্রফলনমন, প্রকৃতি-প্রতিমা করিয়াধারণ, করিয়াধারণ বাযু, জলধারা, শ্রিন, শুক্র, বুধ, বুহস্পতি, তাবা, বাছ, ববি, কেতৃ, শশীর পরিধি, অথবা পৃথিবী, অতল জল,— গায়িছে ব্রহ্মাও সঞ্জন-গীতি!

"তেজ্ঞ:পিওবং ধ্ম-বাপ্শম, ছিল এ ধরণী ধাতৃ-শঙ্খালয়, ক্রমেতে মুগ্রয়,মীন-কূর্মবাস, তৃণ, তক, মুগ, মতুব আবাস,—

তৃণ, তৃণ, মৃগ, মৃত্ব আবাস,—
সাজিল ধবণী অপূর্ক-কায়।
চল চল মাই পৃথিনীর সনে
দিবাকর-পাশে দেখিব গগনে,
এই শশ্বন, আবো কত কিন্তি,
চাবি চন্দ্র-শোভা ঘোবে বুহস্পতি,
ক্যোভিঃ-উপনীত প'বে মনোহর,
ল'য়ে সপ্ত শনী লমে শনৈন্চব;
ন্মে কেতুমালা প্রনে বৈভিয়া,
আমস্ত গগনে প্রিকি-ন্দ্রেম ভান তায়।

বিকা-কণ্ডম ছডান তায়। ^

(55)

"কিবাৰ বেগেতে প্ৰনেৱ গাঁত, ভৱল বাযুতে শ্বদ-শ্কতি বাধিব স্থাপিয়ে দেখিব খুলিয়া,

বনির কিবণ-গঠন প্রথা; আনিব নাণায়ে ভীষণ অর্শনি পৃথিবী উপবে—বাসব-শিঞ্জিনী,

বাধিব হুন্দর দামিনী-লভা চল চল ঘাই পৃথিৱীৰ সনে, দিবাক্তর-পাশে দেখিব গগনে,

ভারকা-কুমুম ছভান ভার !' গামিতে গামিতে চলেছে সকলে এই মহাগীত, ভাম কোলাগলে — নিয়তি-শুখাণ ছিডিয়া পায

नग्रा७-नृञ्चगाश (ऋप्रम्पृर्ग)

সুহৃৎ-সমাগম।

ৰসন্ত পঞ্চমী তিথি আজি বলে, বাজু দেখি বীণা আনন্দেব সঙ্গে, ভাষা দেখি হলে স্থেগ্র তবজে, নাচামে তাহাতে আশার ফুল ভনিলা প্রাচীন "অফেল্ল্ল্স" গান পাইল চেতন অচল পাষাণ. খামের বাণীতে ধ্নুনা উজান বহিল উলাদে রসালে কুল।

তুই কি নারিবি চেতন পরাণে, স্থানং-সঙ্গমে এ স্থাবে দিনে, উথলিয়া স্রোত ঈষং প্রমাণে ভিজাতে প্রণয়-তুকর মূল 👂

"কোথা বাল্য-সথা"—বলি একবার ডাক্ দেখি স্থাপ মিলাইয়া ভার, "এস হে শৈশব-স্থৃহং আধার আশার কাননে থেলাতে যাই।"

গাও বীণা গাও "নবীন জীবনে থেলিতে আনন্দে যাহাদের সনে, হাসিলে, কাঁদিলে, ভেটিলে স্বপনে, আজ কি তাদেব স্বরণ নাই দ

"শ্ববণে কি নাই সে সৌরভমর, শৈশবের প্রিয় পাদপনিচয়, তডাগা, প্রাসণ, সেতু, শিক্ষালয়, জডা'লে যাহাতে শৈশবমায়া।

"ভূলিলে কি সেই উৎসাহ-সহনী, ভানাতে যাহাতে জীবনের তরী, তবঙ্গ তৃফান হেয় জ্ঞান কবি, উভাতে নিশান বিচিত্র-কায়া ?

"পড়ে না কি মনে কত দিন, হায়, 'মা' 'মা' ব'লে প্রবেশি আলয়, কত সুৰে থেতে স্থায় স্থায় জননী তুলিয়া দিতেন ধাহা,

"দেইরূপে পুন: করিয়া উৎসব জীবন-মধ্যাহে দেই সথা সব লভি এক দিন—ৰে স্থপ ছল'ভ সংসার-তৃফানে ডুবেছে আহা!

"নবীন প্রবীণ এস সবে মেলি পরাণে জড়াই পরাণ-পুতনী, যে ভাবে শৈশবে যৌবনেতে কেলি করেছি প্রাণেব কপাট খুলে। "লপু আশা হান্ত, লবু ত্বা লয়ে, শিশুকালে যদি উন্মন্ত হয়ে, বাঁধিতে পেরেছ গুদমে কুদমে স্বার্থ, হিংসা, ধেষ সকলি ভূলে,

তবে কি এখন নারিবে মিলিতে ? গাঢ় চিস্তা, আশা, যথন হদিতে তুলেছে তর্ম পবন-গতিতে— বাসনা-শটিকা বহিছে যবে ?

"কবিলে যে আনগে এত সে কল্পনা, ধরিলে যে হৃদে এতই বাসনা, শুধুকি সে সব প্রলাপ-জ্ঞানা— ছিল্ল তৃণবং বিফল হবে দ

'চেয়ে দেখ সথে রয়েছে তেমতি পাঠগৃহ, মাঠ, সরোবব, পথি,' তেমতি স্থান সুঠাম নুবতি দেই স্তম্ভপ্রেণী হাসিছে হার।

"আমবাও তবে না হাদিব কেন ? হাদিতাম স্তগে আগে সে বেমন অইথানে যবে করেছি ভ্রমণ ভান্ন, বৃষ্টিধারা ধবি মাথায়।

"অই গৃঠ, মাঠ, পথ, সবোবৰ, অংহ কত দিন ১০ব কত বাব, ভেবেছ কি কভূ কত রড় তার কবাল ফুডান্ত কৰিল চুরি ৪

''কোথা সে আজি রে ক্ষণজন্ম। ধীর অতুল্য 'ধাবিক' বদেব মিহির। কোথা 'অফুক্ল' মলগ্ৰ-সমীর। 'দীনবন্ধ' বদ-সাহিত্য-ফ্রী দ

'শ্ৰীমধুত্দন কোথায় এখন। ভার ভবে ভার কে করে জন্দন সহপাঠী ভাবি ? এবে অদর্শন বংলব প্রবীপ্র প্রভাত-ভারা।

"কিছু দিনে আর আমরাও সবে, ক্রমে ক্রমে গীন হইব এ ভবে, নাম, গন্ধ, শোভা কিছুই না রবে— কালেতে হইব সক্লি হারা। "বাঁচি যত দিন, এস একবার সংবৎসবে সুথে মিলি হে আমাবাৰ, সহাত্য-বদনে হৃদয়েব দ্বার

খ্লিয়া দেগাই দেখি আনন্দে। "আব কত কাল বাচিব তা বল— বাগালীব ক্ষুত্ৰ জীবনস্থল কৰে যে ফ্ৰাবে—ছাডিয়া সকল,

ভূলিতে হইবে এ মকবন্দে।

'এ শোকেব ছায়। হায় রে যগন—
পতে নাই ঢাকি হণ্য-দর্পণ,
স্তথপূর্ণ মঠা, স্তথপূর্ণ মন—
স্কলি সূক্ষর মাধুরীময়।

'প্ৰবে সপ্যভাব—না ছিল বিচাব কিবা সে কাপাল, বাজপুত্ৰ আবি, একই আসন পঠন সংবৰ— সুদাই হুদয় আনক্ষময়।

"সেই সুপময় সুক্ধের মেলা, পেনেছ আবার কর সবে পেলা, সুথেব সাগারে ভাগাইয়। ভেলা পেলাইতে ষথা শৈশবকালে।"

বাজ্বীণা আজে দিলে সব তাব, করিয়া মৃতল মৃত্ল ঝঙ্কাব, প্রগঃ-ক্সুম ফুটাবে সবাব,—

বাজ রে মধুর জলদ- শালে।

বস্থ পঞ্চমী তিথি আজি বলে, জাগ্ বীণা জাগ্ আনন্দের সলে, পেলাইয়া জ্লে স্থেব তবলে, নাচায়ে তাগতে আশার ফুল।

শুনিয়া প্রাচীন 'অফিবদ" গান উঠিল চেতিয়া অচল পাষাণ ,

ভামেব বাণীতে যমুন। উজান ছুটিল উলাদে রদায়ে কুল।

তুই কি নারিবি চেতন-প্রাণে, সূত্রং-সঙ্গমে এ স্থথের দিনে, উথলিয়া স্রোত জ্ঞলপ প্রমাণে

ভিজাতে প্রণয়-ভরুর মূল ?

হুৰ্গোৎসব।

()

সাজা বঙ্গে আজি রুপে নানা জাতি ফুলে; তুলে আমান টাপাফুল রতির শ্রাবণ তুল জবাদল রক্তিম হিপুলে; কুম্দ ভডাগ-শোভা আনু ডুলে মনোলোভা মনোলোভা মলিকা-মুকুলে; নিশিগন্ধা মধুমুখী রসময়ী চিরস্থগী অরবিন্দ অপুর্ব পাকলে, সুভকু অপবাজিভা কৃঞ্চুড়া **আনন্দিত**া আনুবদৰতী কেয়া-জুলে; নানা কলে সাজা অস আজি প্রস্টিত বল শাবদ পার্ব্বণে ছঃথ ভূলে। মুকুতা কহলাব মত আমি কলবণ যত हारमनी रशालाश वाकि हरन ; वृति (वन, जिनश्वी---* প্ৰসাটীনীলাম্বরী,

দিগম্বতী ৷ চিত্র কবা কলে ;
মুচিক্ষণ বাবাণদী কটিতে বান্ধিয়া কসি

বাঙা কৰ অধর তাগুলে; কচি মুগে হ্যবা হাসি অবিরল প্ৰকাশি বিকাশিণা ঘৌৰন-মুক্লে,

শরতে টাদের সংগ বংগে আলো কর রংগ ভাবংকর মন যাহে ভূলে।— সাজা বংগে আজি রংগে নানা জাতি ফলে॥

(>)

আজি কি স্থেপের দিন শারদ পার্কাণ ,
এসো গো প্রাণীন যাবা, লয়ে কডি ফ্ল-ঝাবা,
কোটা ঝাঁপী চিফণী দর্পণ;
সাঁথিতে দিন্দুর ভাজ ধর আরতির সাজ্পর খুলে পাটের বসন ,
দিবি গুল-লাড়ু সুধা আখাদন ,
গুচুক চক্ষের পাপ গুচাও ভংখীর তাপ
ধই লাড়ু কর বিতরণ,
দাও স্থে হাতে তুলে চির-ছংখ যাক্ ভূলে
পুরাতন অজীব বসন।

রাঁধ অল্পালি পালি পাতে দাও ঢালি ঢালি প্ৰিপাটী মধুৰ বন্ধন। "দেও আল দেও এনে পেট পূবে খাই মেনে" আহা শোন বলে ছঃখী জন . দ্বিদ্রের মনোব্য প্ৰাতে সহজ পগ হেন আব পাবে কদাচন. দেও অন্ন দেও ঢালি এ মুখ রবে না কালি দশভূজা ত্যজিলে ভবন।---শরতে স্থথের কাল আধিন কেমন। (0) হাস বে শবত-চাঁদ কিবণ বিস্তাবি। পথে. মাঠে কি বাছার চেবে দেখ একবাৰ পদব্ৰজে পথিকেব সাবি । उरे ग्रह (प्रथा गांग বলিতে বলিতে ধাৰ আশার কৃহকে বলিহারি। আশায় মানস সটে হাদিব তবজ ছটে বদ্দে আত্মি বদ্দ দেখি ভারী . হাসারে বিনোদ শশী বিনোদ গগনে বদি প্রাচীন কিশোর গুরা ধনালা ভিখারী, বিপুল বন্ধের মাঝে স্থব-বিমোহন সাজে পাতিয়াছ ভাল নাহকবী। करन करन हरन उनी তবন্ধ বিদাব কবি মনস্থপে দেখি আঁথি ভবি. পূজা ধেন জলময আলোমাণা ত্ৰীচয় एडएम याहे नमी-नामाश्रीत , করে থেলা দলে দলে ভাকই ভেচেদা গলে পড়ে দাঁচ বাপ বাপ করি. ধীরে তবী আগগান উচ্চে হয় সাবিগান শ্রতিমূলে প্রধাবৃত্তি কবি, আনন্দে বিহাণ মন ভাগে ঋণে কত জন বদে আজি কি প্রথ-লচ্বী। হাদ রে শবত চাঁদ কিবণ বিস্তাবি। (8) হাস রে আকাশে বসি ক্মুদ্রঞ্জন। ৰাণ ধুপ জাল ধুন। শভা-ঘটা-বৰ চনা কর বলবাদী যত জন। প্ড মন্ত্ৰ দ্বিজগণ জবা বিল্ল অগণন वृष्टि कंद्र सांशार्य हल्लन , मंडिक्न पुर्वावन পঞ্চপ্ৰা সিদ্ধৰল স্বাহা সাহা বল অমুকণ;

টাল চক্র. টাল প্রবা অঞ্চল অঞ্চল প্ৰা क्त दशस्य स्वा विश्वन ,--শার ডঃখ-নিবারিণা আর্যাকল নিস্তারিণী बद्भ वामा छेन। এशन । নৌৰতে মনৰ বোল. কাড়া বছ কড় বোল भौगीरिये मधुद्र निक्रम, মুদ্দ গঞ্জীৰ ভাল করতাল স্বাধাল বেণ্যম ললিভবাদন, পারপ মুছল-প্রবা বোৰ বৰ ভানপৰা এদ্বাজ মধুব-গড়ন, বেহালা স্থপবিশাটী জল-তবদেব বাটি बौषां उथौ त्यां किलवायन, আজি রধে বাজা বধে গভীব দামামা সঙ্গে वाकि ल खरवत फिन मादम-भार्त्तव।

প্ৰিয় ব্যদ্যেৰ মূহ্য।

গীবনের বন্ধ মম আবি এক জন কাল-রূপ মহাসিদ্ধ-স্বিপে ভূবিল এত কাল ছিলে সংখ ভতল-রতন,— এখন এ ভবে তব কি চিহ্ন বহিল। হায়। না দেখিব আবি সে প্রিয় মুবতি। সে ভোলা পাগল মন আপনা বিশ্বতি, সে পাণ্ডিতা একাগ্ৰতা সে প্ৰগাঢ় শ্বতি. অন্ত কালেব মত হয়েছে নিভত। প্রকৃতি, স্থা হে তব কি মনুব (ই) ছিল, वशनि दश्विक शिंगा श्वरत का भिक्र. জানিতে না গাবনেব প্রথা কি জটিল অবিবত জ্ঞানপুৰা-পানে বিম্পেছিত। পভিলে কতই বত্ত বিজাব ভাওারে। মে জ্ঞান-পিপাদা হায়, জনছে ক'জানার **ু** व्याकीतन शराउन वालीत विदादन, ভক্ত চড়ামণি দণা ছিলে শারদাব। হৃদয়ে বড়ই ব্যুগা বৃহিল আমার g'अदन करला ना दमथा दमरवर दम मिन, ছুড়াইতে তব নেত্রে নিবিদ্ আঁধাৰ,

(य किस भमन करत व दिश्व मौल्म!

আঁধার এ ভব-রাজা তোমাব নয়নে,
চিরদিন তবে রবি শশী দুকাইল ;
ভবের কি কিছু তবে ভেগেছিলে মনে ৷
অধবা দে তমোজাল মান্দ (৩) ঢাকিল ৷

কে পারে ছাডিতে এই প্রাক্ত অবনী— স্থার রবিব কবে এ মহী মণ্ডিত ? মুম্র্ পরাণী নবে কে আছে এমনি, পরাণে না হয় যাব বাদনা উথিত ?

কোন্ প্রিষজন-বক্ষে নিবস রাথিতে, পরাণেব দাহ যত জ্ডাবার তবে ? কোন্ প্রিষ-জন হতে অঙ্গ মূছাইতে,— উদ্ধলে নয়নে যাহা গত মনে করে ?

মোহমর এ ধরার মৃত্যুব (9) শবার পারে কি ভূলিতে মোহ মানবেব মন ? বিন্দুমাত্ত খাস(9) ববে বতে নাসিকার তথ্যনপ্ত এ দেতে রতে মারার ফ্রন্ন।

হৃদয়কন্দরে, সথে, কি ভাবিলে হায়, অনস্ত নিজায় ধবে নধন মূদিলে ? প্রিয়ন্তন কার(ও) পানে কোন্বা স্থায় কটাক্ষ ক'রে কি অশু-কণা ফেলেছিলে?

মনে কি পডিল স্থা সে দিনেব কথা, বিভার সমরক্ষেত্রে যৌবন প্রথম, ব্ৰেছি কলনে য'ব — সহপাঠি প্রথা প লভিতে বিজয়-কেতুক্ত বা উভ্যম প

মনে কি পডিরাছিল পূর্পের সে সব ? দরিদ্র-বাসনা শত হুদি হ'তে লীন ? আশার আখাসপূর্ণ বাঁশবীর রব। স্থদ্রে মধ্ব কিবা আকাজগাব বীণ ?

মনে কি পড়িল, হার, সংলার-সোপানে উঠিতে কতই ক্লেশ—হবিষে বিশাদ; হাসি কালা সে কালের বাসিলে নির্জনে রহস্ত-কৌতুক কত অমৃত আখাদ।

দরবিগলিত অঞ্চ নরনে আমার সেই সা ভাব আ'লি হৃদয়ে উঠিছে , বিভাবনী-কোলে বেন সত তারকার শ্বন্ধ বীয়া ধীরে গীবে জাঁধারে ছুটিছে ! কোৰায় গিয়াছ ভাই কিছই জানি না. অজ্ঞাত সে দেশ—নরে জানে না কেহই, প্রবৈশিয়া কেহ তার কভু ত ফেরে না, প্রবেশ করিছে পান্ত অঙ্গল্ম কতই ? যেখানে থাক, সথে, থাক যেই ভাবে ত্যেব আঁধার ফিবা দিবার কিরণে, আমাদের চিত্তমাঝে নিতা বিবাজিবে चा किरन धरगी भरत (धक्म भर्ता । সাক্ষ না হইল হায় জীবনের বত ডুবিল দেহেৰ তগী দুগাল সকলি ৷ ভাগিতে সাগর-নীরে তবঙ্গ তাডিত, সমণাঠী এবে ছুটি রহিন্তু কেবলি ? অব্ধ জ্বগৎস্থা -- ধ্বণী-ভূষণ মানৰ বাহাৰা তাৰা তুল ক্যা মহীৰ ' ষ্পের কিবণ কবে মুক্টে ধারণ, চক্রী, চাটুকার, ভগু কত অবনীব ! অন্ধ এ জগৎ তোমা চিনিবে কি গ হায়, চিনি ত আমবা —ছিলে ভবের ভূষণ। আমানাস্থাতে, স'ব পূজিব ভোমায়. জদয়-মন্দিরে করি প্রতিমাস্থাপন। প্রাণের বিগ্রহ ছেন রাথিব যতনে. জালি শ্বতিরূপ দীপ কবিব অর্চন, প্রণয়ের ভব্তিসহ বিহ্বলিত মনে দিব অহা প্রেম-পূজা সঞ্জল নগন।— মধুব পবিজ্ঞাতাৰ বন্ধুৰ স্মৰণ !

ইক্রালয়ে সরস্বতী পূগা

(প্রয়োগ)

(2) 全

ক্র-পশ্চিমে - ছাডিয়া গান্ধার, ছাডিয়া পারজ, আরব-কান্তাব — সাগর, ভ্ধর, নদী-নদ-ধাব, দেখি কি আনন্দে বসেছে যেরে;

(क) अधान विषय मध्यक अधान शायत्कत छैनि

বীণাৰন্ত কৰে বাণী-পুত্ৰগণ ছাডিছে সঙ্গীত জভাৱে প্ৰবণ, পুৰিছে অবনী প্ৰিছে গগন —

মধ্ব মধুব মধুব স্বাব।

(শাগা) থ

আনে তম্বী ডুঈ – বীণাব অধ্য, ডুইও বাজিতে কব ৰে উভায়, বাঁশবী বেমন বাধাল-অধ্যব। বাজ ৰে নীবৰ ভাৱত ভিতৰে—

বাজ বে আনন্দক্ষ্বিত স্বাব।

(পূৰ্ণ কোবদ্) গ

প্রভাতে অকণ-উদয় যবে,
তথনি ক্ষণ্ঠ বিহুগ সবে,
বঞ্জিত গগনে বিভাগ বেবে,
আপিয়া শিথব পল্লব থেবে,
গাহিষা ভাস্তব-বিমান-আপে,
ক্ষর লহবী ছভাষে বাগে;
গোপ্লি-আকাশে তথ্যা-বেগা
প্রভিলে তাদেব না ষায় দেগা।—
প্রভাত অকণ-উদয় যবে,
তথনি বিহুল ভাপত বে সবে,

তথনি কানন পরে স্বরে।

(?)

(প্রায়োগ)

কবি-বপভূমি এই না সে দেশ ? অবিবাক্যরূপ লহনী অশেষ বহিছে যেগানে—সেগানে দিনেশ অতুল উবাতে উদয় হয় ? যেগানে স্বসী-ক্ষলে নলিনী, যামিনী ভূলায় সেথা কুমুদিনী,

বেগানে শবৎ চঁ দেব চাঁদিনী গগনললাট ভাষায়ে বয় ? (শাখা)

তবে দিছে ভয় তাজ রে সংশয়. গাও বে আননেদ, পূবায়ে আশয়— যেকপে মায়ের কমদ-আসনে দিয়া শন্তদল বাতুলচবণে,

অমর পৃজিলা নক্ন-বনে।

(পূৰ্ণ কোবদ্)

কেন রে সাজাবি কুত্বম-হার ?
ভাবতে সারদা নাহিক আগ ।
অলোধাা নীবৰ বাজে না সে বীন,
বাজে না সে বীশী—নীবৰ উজীন,
নাহি দে বসত প্রবভিদ্রাণ,
গোকুলে নাহি সে কোকিল-গান,
গোজ-নিকুজে স্থান্ধ উঠে না ,
নাই পিক এক ভাবত-গলে,
গিয়াছে সকল বাণীৰ সন্দে—
কেন বে সাজিবি ক্ষুম্ব বনে ?

(0)

(প্রয়োগ) খেত শতৰল তেমতি স্থন্দব বাধ পৰে থৰে মুণাল-উপর, আবস্কে কমল, নীল পদ্মথৰ, মিশাও তাহাতে চাতুৰী ক'বে,

কাককাৰ্য্য করি রাপ মঞ্চতলে, কেন্তকী-কৃত্বম পারিজান্তদলে, ঝালব কবিতে মূলাও অঞ্চলে

রসাল মঞ্জবী গাঁথি লহুবে।

(শাণা) পেৰি চাৰিধংৰ মাধবীলতায়, চামেলী গোলাপ ব ধ তাৰ গায়, কস্তুৰী-চন্দনে ক্ৰিয়া মিলন মাতৃক স্তৰ্গকে স্থৰ-ভবন ।

(পূর্ব কোরস্)

বচিল আদন অমবগণে;—
কলপ আইল বডলতু সনে;
আপনি অমল মলগু বাধ,
মুগদ্ধ বছিয়া ইবংশ ধাঁয়,

⁽খ) গাবক-সংশ্লিষ্ট ছই কিংবা ভিন জনেব উদি।

⁽গ) অন্তব হইতে অল ক্ষেক জন শুনিতে টনিতে যেন আমাদিগের মনের ভাব প্রকাশ করি-জিলে, **এইরূপ অন্তব ক্রিতে র্টবে**।

ত্যঞ্জিয়া কৈলাস-ভূধৰ শৃপ্প,
মহেশ আইলা দেখিতে বদ,
শ্রীপতি আইলা কমলা সনে;
অমর-আলয়ে প্রদল্পনন,
দেবেক্স-উবনে আনন্দকায়
দেবিধি কিয়ব গদ্ধধি ধায়,—

শচী সহ ইব্দ স্থে দাডায়।

(8)

(প্রয়োগ)

শোভিল স্থলৰ ক্ষম-আসন, মনেৰ আহ্লাদে বিধ'তা তথন, তাজি ব্ৰহ্মলোক কৰিলা গমন,

ধ্যানেতে ব্যিলা আসন-পাশে , যথা পূর্ব্বদিকে — অকণ উদয়, আক্ষমুহুর্ত্তে করে দিকু শিথানয়, ক্রমে চতুর্মুথ সেইরূপ হয়— দেহেতে অপূর্ব্ব জ্যোতিঃ প্রকাশে। শোথা)

দেখিতে দেখিতে ব্ৰহ্মকু ফুটে ব্ৰহ্মার লগাট হ'তে ক্ষ্যোতিঃ ছুটে, অপরূপ এক সুশুদ্ধ গা, অমরী উবিল হাতে কবি বীণা—

> মুথে নিত্যস্তথে বেদ-ঘোষণা। (পূৰ্ণ কোৱস্)

ফিবে কি আবার সে দিন হবে দ মুনিমতভেদ ঘূচিবে যবে। শুনে বেদগান বাগীব স্থের হবে জ্ঞাবনি ম্মনপুবে /— নামে বে যথন তপন রথ মলিন গগনে কে রোবে পথ / ধদিলে গগনে — তারকা হায়, পুনং কি উঠি স আকাশে গায়, উজানে কগনো ছটে কি জল / কিরে কি যৌধন কবিলে বল দ

বিহনে সামগ্য আশা বিফল।

বেদমাত। বাণী আনন-উপবে, মনের হবিবে পুঞ্জিলা আমনে; উলোদে মহেশ উবার অব্দের,

शक्तमूर्थ दबन कविना शान ।

আপনি বিধাতা ইইলা বিহ্নল, আনন্দে তুলিয়া ধেত শতদল, দিলা খেতভুলে দেবতা সকল, ইইলা হেরিয়া মোহিত প্রাণ।

(취임)

পেব জ্বন্ধনে উঠিগ অমনি, বেদেব সঙ্গীত মিশিয়া তথনি বীশাধ্যনি-সহ প্রবাহ বহিল— ভাবত আনন্দে কতই শুনিল, কত স্থবত্বী ভাসায়ে দিল।

(পূৰ্ণ কোবদ্)

কে বলিল পুন: পাবে না তাম ?
হাবান মানিক পাওয়া হায় কি না হায়?
হায়, হায়, আসে মায়ার ভবে,
রাছগ্রহ-ছায়া ক'দিন রবে ?
এ জগত-মাঝে করে৷ না ভয়,
সাহস হাহাব তাহারি জয়,
দেখো না দেখে৷ না দেখে৷ না পাছে.
আগে দেগ চেয়ে কত দ্ব আছে ,
অই দেগ দ্বে ভাবতী-মান্দরে
উডিছে নিশান ভারত-ভিমিরে—
আব কি উহারে পাব না ফিবে?

(4)

(প্রযোগ) ক্রমে যক কাল বহিতে পাগিল, পারদা পৃঞ্জিতে মানব ছুটিল কবি-নামে গাাত ধরাতে হইল

মধুব-রূদয় মানবগা, আইল প্রথমে আগাকল-রবি, জগত-বিখ্যাত শ্রীবাল্মীকি কবি — দিলেন সারদা ককণার ছবি হাতে তলে উার, প্রকুল মনা

(শাখা)

সে ছবি হেবিবা আর কত জন
আগিল পুরিতে মারের চরণ,
আদিল হোমর যুনানী-নিরাসী,
গুদ্দে ধৈপায়ন - নির্থিল আগি
অপুর্ব কোনও, কুপাগরালি।

(পূৰ্ণ কোবদ)

বাজায়ে আনন্দে সমর-ত্রী,
বাও কবিষয় অবনী-পুরী
তনারে মধ্ব অমব-ভাষ,
ঘূচাও মানব মনেব আস;
দেগাও মানবে ভ্বনত্রয়
ভ্রমিয়া আনন্দে— করো না ভব।
না যায় কেবল প্রক্রান্তনামে—
যোহানা মিল্টন ডানটি নামে,
আসিবে পশ্চাতে শ্ব ত্ই জন,
দেপুরী খুলিয়া দেখাবে তথন ,
দেশাবে তাহার অনলম্য
অসীয় বিঝাব অনল জ্য—

হেবিবে আতঙ্কে ভূবনত্তয়।

(1)

(প্রয়োগ)

পৰে অবদ্ভূত প্ৰাণী তুই জন আইল পুজিতে সাৱদাচরণ — কিতি, ব্যোম, তেজঃ, সমূদ্ৰ, প্ৰন, সকলি ভাদেৰ কথায় বশ।

ভাকিয়া সারদা আনন্দে ত্জনে, বসাইলা নিজ ক্স্থ-আসনে; অম্ল্যু বীণাটি দিলা এক জনে,

দিলা **অ**ক্ত জনে নবণা বস।

(41 위)

যাত্কব-বেশে চমকি ভূবন নিজ নিজ দেশে ফিরিলা চজন, এক জন তাব দে বীপার সরে, মেবে কবি দ্ত প্রিয়া-মন হবে, এক জন বসি এভনেব তীরে অমৃত বিতরে অমব-নয়ে।

(পূর্ণ কোরদ্)

বিজন মকতে সাজায়ে হেন

এ ফলমালিকা গাঁথিলে কেন দ

আার কি আছে সে স্বরতি আল,
আাব কি আছে সে কোকিল-গান দ

' আব কি এপন স্থান্ধমন্ধ
গউড় নিকুল্লে মণার বন্ধ দ

মুকল, ভাবত, প্রসাদে শেষ ,
ভাকায়ে গিয়াছে স্থার বেশ ,
আালি বে এ দেশ গহন বন,
গহন কাননে কেন বা এ ধন

রাবিলে ভূলাতে কাহার মন দ

(প্রযোগ)

কেন বা রাবিব, এই না সে দেশ ?
কবি-রপ ছমি— এচবী অশেষ
বহিছে যেগানে -- যেথানে দিনেশ
অত্বা উবাতে উদর হয় ?
যেথানে সরসী-কনলে নলিনী
বামিনী ভূলায় বেথা কুম্দিনী,
যেথানে শবৎ চাদেব টাদিনী,
গ্যান-ল্লাট ভালায়ে রয় ?

বিবিধ কবিতা

(টেনিসনের অনুকরণ)

নববর্ষ।

প্ৰভাত নিশিতে ঐ বাবে হোরা বিগত বংসর তাম, নবীনে হেবিয়া किरव रहरत्र रहरत्र অতীতে মিশিতে যায় ৷ ভক্ন-'শাখা'পবে ভরা মধু-ঋতু শোভে কচি পাতা-থব,---পুৰাতনে সবা ঐ বাজে হোরা नवीरन जामरत धता ঐ বাজে হোরা নিয়ে অশ্ধারা প্রাচীনে বিদায় দেও, বাজে সুখ-হোরা আনি আএঝারা নৃতনে ডাকিয়ে নেও; গত-আযু প্ৰায় গত বৰ্ষ ধায় যাক--দেও গত হ'তে, অসত্য নিবারি क्षपत्र-मन्दित শিখহ পূজিতে সতে। ঘুচাইতে ফিরে ঐ বা**লে হো**রা মান্ধ যাহাতে জরে, অবনী-ভিতরে নির্থিতে ফিরে হদিপুষ্প ধাহে ঝরে! হোৱা বাজে ঘন ধনাচ্য নিধ্ৰ কলহ করহ দূর, দৌরাত্ম্য আচার ধ্রণীয় শেল ভাবিয়ে করহ চুর। অমুখের ভরা ৰাজে সুধ-ছোৱা, ডুবারে অতীত নীরে— সুরাগত ষত ষ্ ভকল্প — হত, কু-ব্রতে মানব ফিরে, কটু মতামত পুরাগত ষত কু-আচার আদি পালে-

আনি অভিনৰ ঘুচাবে সে সব ডুবায়ে অতীত কালে; স্থ-আচার আবো ধর সাধুতর জটিল কুবিধি হর; ঐ বাজে হোরা পুবাতনে সরা नवौदन व्यापदत धव। ক্চিন্তা-প্সরা ঐ বাজে হোৱা ভাগে বে কালেব জলে. অনাটন-তাপ, কলুষকলাপ, ত্যজ অলীকতা ছলে; ধৰা হ'তে **সরা** সুথে বাজে হোবা এ মম ডঃথের গীতি, পূর্ণমধুময় নবীন গায়ক ডাকিয়ে কর অতিথি। পদ-দর্প হর, হোৱা বাজে খর, কলম্পদ্ধা কব ছেদ. সত্যে গেঁথে ডোব, সভ্যেরে পালিতে भिश्रह नवीन (वह) ধবণীর বিষ হৰ হিংসাবিৰ, পর-ছঃথে কর থেদ; ঐ বাজে হোরা. পুবাতনে সরা च्ठा ८त व्यवनी-८इन। कौरल ८७८० (५९ বাজে সুখ হোৱা, कमर्या (वांश्वर कांबा, ধরামাঝে নাশি ক্তুধনত্যা কুপণে শিখাও হায়া। উৎকট বিগ্ৰঃ সহস্র বৎসর উত্তাপে ধরণী বরা, শাস্তির সলি সহস্র বংগর শীতল হউক ধরা। कृषि वौर्या-४ ঐ বাজে হোরা অভয় পরাণী যেবা,

भवाद भदीद শভাবে উদাব কর বে তাদেরি সেবা। ঘুচায়ে আবাব পথিবী আঁধার জনুক তক্ষণ ভাতি, সুধর্ম প্রভায় নরকল তায় পোহাক বিঘোর রাতি! ঐ বাজে হোরা প্রভাত-নিশিতে. বিগত বৎসব ভাষ. নবীনে হেরিয়া किटव ८ उद्य ८ उद्य অতীতে মিশিতে বায়! তরুশাধাপরে ভরামগুঝতু, শোভে কচি পাতা-ধর;— ঐ বাজে হোবা পুশ্বাতনে সরা नवीरन जानरत्र धव । यदव शीरव शीरव দেখা দিও কাছে कोवत्नद्र कांत्नां कतन, যবে শিরে শিবে भीरत भीरत फिरत সভয়ে শোণিত চলে; मश मश ज्ञी যবে স্বায়ু-নলী শলা যেন ফুটে গায়. শিথিল চুর্বাল, যবে হৃদিতল শরীর বিকল প্রায়। যবে যাতনায় मिथा निष्ठ कार्ष्ट ভূতময় দেহ পেয়ে, কুঠার আঘাতি আলম্ভ-খুটিতে আখাদ-আধারে শোষে; উন্মন্ত করাল যবে ইহকাল टोनिटक डेड़ांब श्रान, রাক্ষদের পাশে জীবাযু হতাশে জ্ঞালায় ষ্থন চুলি। জীবনেব আলো (मथा मिख कांट्र यत्व भीत्व भीत्व खल, थीरत धीरत फिरत यदव निदंब निदंव সভয়ে শোণিত চলে। দপ দপ জলি যবে স্বায়্-নলী শলা যেন ফুটে গায়, শিথিল তুর্বল, যবে হাদিতল শরীর বিকল প্রায়। পরাণেব শোক ছোট ছোট যত কথার প্রকাশ হয়,

শাত শাত কৃদ্ ভাৰবাসারতে যে শোক পাঁথিয়া রয়। গ্ৰীর আপালয়ে দাস-দাসী বত যে শোক তাদেবই মত. প্রভূমবে ষেই কথায় নিবারে মনের উদ্বেগ যত। মত জনে হেবে क्रिंप क्रिंप वरण ঘুচাতে মনেব ভাব. খুঁজিলে আবাব পাব না কোথাও এ হেন চাকুবী আর! শোকেব লহরী লঘুত্ৰ ৰত আমারো হদরে ধার, তাদেরি মতন প্রবোধ-বচনে তেমনি সান্তনা পায়। শোক-বারিধারা কিছ গুক্তাব বহে যাহা হৃদিতলে, নিঝ'বের মুবে তুষারেব মত না ঝবে না পডে গ'লে। গৃহস্থ মবিলে গুহীৰ আবাদে পুত্ৰ-কলা তাঁব যথা---অদাত ইক্তিয় শ্যাপানে চেয়ে অসাড পবাণ তথা---না পারে তুলিতে না পায়ে ফেলিতে খাসবাণ নাসামূলে, আদে ধায় ধেন প্রেত্যোনি প্রায় অশব্দে চবণ ফেলে। না কবে কথার প্রকাশ আলাপ শূক গৃহপানে চায়. মনে মনে ভাবে কি দয়া কি স্বেহ, ফুবায়ে গেছেন হায়। বলিতে বলিতে প্রাণের বেদনা পালেধৰ আশিকা হয়, আধ্ধানি ধোলা কথাস্টি ৰথা আধথানি ঢাকা রয়! শুড়াদ ভাষায় তব্ও—তবুও উত্তলা পরাণ মন, যথা সুস্তাব, করে শান্তি লাভ, मानटक (मरु-८वनन ! শেকি জরজর এ মম অস্তর তাই সে কথায় ঢাকি,

শীতে থরতর যথা বাঁচে নর
হীন বস্ত্র গারে বাথি।
কিন্তু বে বৃহৎ শোকের প্রমাদ
পরাদে উথলি ধায়,
লিথি থালি তার ছায়ার আকৃতি
ভাষাতে ধরে না তায়।

শিশুর হাদি।

कि मधु-माथारना, विधि, शामिष व्यमन দিয়াছ শিশুর মুখে ? মুর্গেতে আছে কি ফুল মক্ত্যে যার নাহি তুল, তারি মধু দিয়ে, কি হে, করিলে স্ঞ্জন ? . গুজিলে কি নিজ স্থপে ? कि॰वा, विधि, नत्रश्रःथ মনে ক'রে—ও হাসিটি কবেছ অমন ? জানি না তুমিই কি না আপনি ভূলিলে, স্জনের কালে. বিধি। গড়েছ ত এত নিধি, উচার মতন, বল, কি আবে গডিলে ১ নবনীর সব ছাকা, যুন্দর শরৎ-রাকা , তকণ প্ৰভাত কি হে কোমল অমন ? কাবে গডেছিলে আগে, কারে বেশী অমুবাগে एक्न कविटल, विधि, एक्टिल यथन १ ফলের লাবণ্য, বাস অথবা শিশুর হাস कारत, विधि, श्वारण धारन कतिरल धात्रण? ছিল কি হে নরজাতি স্জনেব আগে, এ কল্পনা তব মনে ?

ছিল কি হে নরজাতি স্জনেব আগে,

এ কলনা তব মনে ?

অথবা শশি-কিরণে
গড়িলে যথন—এরে গড় সেই রাগে?
দেখায়েছিলে কি উটি স্জিলে যথন,

অযুক্ত-পিপাস্ম দেবে,

কৈ বলিল ভারা সবে

দেখিল যথন অই হাগিটি মোহন ?

অমৃত কি ওহে বিধি, ভাল ওর চেয়ে ? তবে কেন ছাড়ে ভাগা স্থা-অন্ধ দেবভাগা— অমৃত অধিক মধুও হাসিটি পেয়ে?

কিবা চেমেছিল তারা তুমিই না দিলে; দিয়াছ এতই, হায় চিরস্থা দেবভায়, ছ:খা মানবের তবে ওটুকু বাথিলে?

দেখিলে শিশুর হাসি জীবিত বে জন, কেনা ভাসে, কেনা চায় আবার দেখিতে তায় ? একনাত্র আছে ওই অথিল নোহন—

জাতি-বেশ-বৰ্ণভেদ, ধৰ্মভেদ নাই, শিশুৰ হাসির কাছে, সবি প'ডে থাকে পাছে, ধেথানে যখন দেখি তথনি জ্ভাই!

নাহি পর আপনাব, নাহি ছঃথ স্থ্ধ, দেৰিলে তথনি মন মাধুৱীতে নিমগ**ন,** কি ষেন উথলি উঠে পূৰ্ণ করে বুক।

আয় আয় আয়, শিশু, অধরে ফুটারে
আই অবগের উষা,
আই আমবের ভ্যা
ভূলিয়া রুদয়ে—দে রে মানবে ভূলায়ে।
হে বিধি, নিয়াছ সব, করেছ উদাসী
এক হৃদরের আলো,
উহারে ক'রো না কালো,

অতুলনা দাপ ওটি—নিও নাও হাসি!

চাহি না শীতল বায় মুকুল অমিন,
চন্দ্ৰকর বারি-কোলে
নাচিয়া নাচিয়া দোলে,
তাও নাহি চাই, বিধি,—ও হাসিটি দিও!

ভাস রে টাদের কর—হাস রে প্রভাত, ডাক্ পাথী প্রিন্ন মূবে, দোল্ পাতা সুন্নে সুন্নে, পিঠে করি প্রভাকর-কিরণ-প্রপাত, উঠিক মানব-কঠে লগিত সঞ্চীত, বাজুক 'অগনি' বালী, তরল তালেব রালি, ছুটুক নর্ত্তকী পাল কৰিয়া মোহিত ,— কিছুই কিছুই নয় 'ও হাদির তুলনায়, জগতে কিছুই নাই উহাব মতন। কি মধু-মাথানো বিধি, হাদিটি অমন দিলাছ শিশুব মুখে ?

রেল-গাড়া।

এসো কে বেডাতে যাবে — শীঘ কব সাজ। প্ৰাতে পুশক্ষণ এনেছে ইংবাজ।

শীঘ্ৰ উঠ-- ওয়া কবি, বাঞ্চ, ব্যাগ, তগ্নি ধবি; এখনি বাজিবে বাশী ঠ°--ঠ'--ঠ- কামী

বাজিবে ইম্পাত বোলে, ছাতিবে নিশান-দোলে

স্থাপ্ত ব নিশান-পোলে,
শীষ্ট উঠ- লগতে থাক ঘটা, ছড়ি, ভাজ ;—
ধরাতে পুশাকবথ এনেছে ইংরাজ।
অই শুন টিকিটেব ঘবে কিবা গোল।
মাহুষেব গানি যেন — ঠেকাঠেকি কোল।

ठंकम हेकम् नारम वात्वा हिकिहे हैं। एम, रालादब रालादब दहारहे, माजै, बुक्ति, काहे-दकारहे दिकादिक — कूटहे यात्र, दक कारव ना व्यान, शारिता शारिता मुर्थ दवान,

আয়া, নে বে থেগল তোল্। তেব চলে ফানাকানি কিবা লাট, বাঞ্চা, রাণী।

ওই ফুকাবিল বানী, ঠ°—ঠ° - শেষ কাঁদী.

গাডীতে পড়িল চাবি— স্মাব নাহি গোল, ছলিল সবুজ-রঞা পতাকার দোল। চিৰ্বল পূশ্যকৰথ ফুকাৰে ফুকাৰে,
এখন নিখাদ ছাভি দেখ হে ত্থাৰে,
হবিত-বৰণ মাঠ,
ধান্ত, নীল, ইফ, পাট,
আকাশ চেকেছে হেথা
দিগতে বিস্তৃত সেথা।
দেখ হে ত্থাৰে চেনছে খেয়ে,
মাবি সাবি নাবিকেল,
তাল, বট, আমা, বেন,
জালাল, পগাড, বান,
বেড, বাড়ী, নানা ছাঁদ,
সোধামিনী-বাধা-ভাব,
উভিয়া চলেছে ব্য

বেগেতে কাঁপিছে পথ —
পক্ষী মৃগ দূৰে পতি মানিতেছে লাজ —
ধরাতে পূপকৰথ এনেছে ই রাজ।
চলুক চলুক রথ—যে যাব ভাবনা
ভাবো ব'সে নিক্ষেগে ছুটায়ে ক্রনা,

স্বভাবের প্রিয় যার।
তের সিবি বাবিধার।
নিবিড ভ্ধব-গায়
তেব ধেলা ক্যাসায়,
নিশিতে নক্ত্র-পাতি
তের চক্তমার ভাতি

দেগ হে অন্ধ দুখা ছড়ান মাথায়— দেথ দিগতেব কোলে কি শোড়া থেলায়। হেব হেব তীর্থ-মনে চলেড়ে ফাগাবা, পথেব চুধানে জীর্থ-শীঘ্র নানো ভাবা,

বেলন বিল্লা— বেলা বধ্ গেল চ'লে—গেল বধ্ আই বৈজ্ঞানত ব্ ভুছাতে সবে না দেৱী, কাজ নাই স্থী হেবি, দেখিতে দেখিতে মাবে সীতাক্ত আগে পাবে, কিছু দ্ব আগে তাব বাকিপুর —গ্যাধাব, দণ্ড কত থাক বান, প্রাণ অবোধ্যা ছাড়ি পাবে অগ্রবন—
মথ্রা তাহার পরে হের বৃন্দাবন!
মানব-জনম হার সার্থক হে আব্দল—
সাবাস্ বাজ্পায় রথ—সাবাস্ ইংরাজ।

াস্ বাব্দার রথ—সাবাস্ ইংরাজ।
আবো দ্বে যাবে যারা
শীল্র রথে উঠ তারা,
হরিষার, গলাঝবি,
পুলর, মারকা পুরী,
নর্মদা, কাবেরীনদ,
কুফা-গোদাবরী-পদ
ইলোরা বৌদ্ধ-গল্যর,
দেত্বন্ধ রামেখর,
ভামিবে নক্ষত্রগতি,
পর্বত-শ্রেতে পথি.

হেরিবে বিমানে চড়ি— ত্রেতায় বেমন, দীতারামে ইন্দ্ররেথ দিক্দরণন। এদো হে কে যাবে চল ভারত-ভ্রমণে, ছয়ারে পূপাক রথ ছাডিছে নিখনে।

আর কেন বলবাগী

পারে বেধে রাথ ফাঁসী,—
বাদাণীব ধে ছন শম,
দ্বাদের সাথ হে কাম,
ন্থার ধেন দ্রৈণ ব'লে
বাদাণীরে নাহি বলে,
এবে পরিকার পথ,
বাও যথা মনোরও,
বোধাই কিংবা কলিক,
শিলং, চুক্টরলিক,

সাধিতে পার হে পণ, পুশাক্ষিমানে চ'ডে সেইখানে যাও, বালালীর লজাকর ছনমি ঘুচাও। ভারত-অমণে চলো নীল্ল কর সাল, ছুয়ারে পুশাক্রথ বেঁধেছে ইংরাজ।

শিমলা পাহাড-পাট.

কাশীর মারহাটা ঘাট,

যেখানে ক'রে গমন.

ধক্ত রে বিমান ধক্ত। ধক্ত হে ইংরাজ ধক্ত। কলো জ্বানিয়াছ কাল, জ্বানারে জ্বানায়ে জ্বান. বহিরে বেঁধেছ রথে,
পবনের মনোরথে
তৃক্ষ করি, কর থেলা
কি নিশি মধ্যাহ্-বেলা,
বেঁধেছ ভারত-অন্দ—
লোইজালে করি রদ,
অস্ত্র-অসাধ্য কাল সাধিছ জগতে।
ভতে প্রাণ দিতে পার দেবের দর্পেতে,
পার না কি বাচাইতে নিজীব ভারতে ?

"রিপণ-উৎসব" ভারতের নিদ্রাভঙ্গ ।

ভাৰিল কি তবে---এত দিন পৰে ভাঙ্গিল কি ঘুম ভারত-মাতা ? ভৱাজীৰ্ণ শীৰ্ণ শরীরে তোমার ফিরে কি জীবন দিল বিধাতা ? উঠ-উঠ মাতঃ ডাকিছে তোমায় তোমার সন্তান যে ধেথা আৰু। কিবাবদ শিশু কিবা যুবজন কি দরিদ্র আর কিবা অধিবাজ। ডাকিছে তোমায় ডাকিছে পাবসী পঞ্জাবী শিখ. ডাকিছে তোমার বীবপুত্রগণ রাকোয়ারাময় যত নিভীক। তোমার নক্র মহম্মদীগণ---বাছবলে যার ধ্বণী টলে. ডাকিছে তোমারে সবে একস্বরে জাগোমা ভারত—জাগোমা ব'লে। একাবজ নয় হিমালর হ'তে কুমারীর প্রাস্ত যেখানে শেষ. আৰি একপ্ৰাণ হিন্দু মুদ্লমান---কাগাতে তোমায় কেগেছে দেশ। "আর ঘুমা'ও না" ব'লে কত দিন কেঁদেছি—কেঁদেছে কত সে আর, আমাজি জ্বনভূমি জীবন সার্থক তোমার কর্ষে এ মিলন-হার। কতবার মাতঃ উদাদীর মত দেখেছি তোমার ভূবনময়।

স্থাবর জ্বস্ম কত দিকে কত অরণ্ট যেমন ছড়ায়ে রয়। দেখেছি তোমার গিরি-উপত্যকা শস্তক্ষেত্র, ভূমি, নগর, দেশ, প্রাণিবন্দ যত ছায়ামাত্র ভার কালেব কালিতে ক'লিম-বেশ। জীবনের বিন্দু না হেরি কোথায় সব শৃন্তময়-সকলি থালি, চারিদিকে যত নৱান্তি-কন্ধাল চারিদিকে ধুধু করিছে বালি। উঠ গো অননি দেখো চক্ষ মেলি সেই অস্থিতলি নডিছে ধীবে, মছল হিলোলে দেখো কি নিখাস সে শব-পঞ্জবে বহিছে ফিরে। মিলিত ভাৰত একমাত্র খাদ---নাসিকারক্ষেতে ছাডিল বেই. কি মহা উৎসব বছিল উচ্ছাদে ভারতে যাহাব তলনা নেই। "আবাব সুমা'ও না" ডাকি মা আবাব ভাবী আশাফল ভাবিয়া দেখো, দোনাৰ অফৰে "বিপণ উৎসন" क्रमस्यत्र भारतः निथिशं दवस्था। নেমেছে প্ৰন শ্রতল হ'তে বহিছে তোমার ভূবনময়, করিতে তোমাবে নব পল্লবিত ফটাতে জীবন মঞ্জীচয়। নে বাগু উঠিছে এ ধীর হিলোলে কাব সাগ্য আর নিবারে তাবে, কেবা বোধে ভারে অগ্রদর গতি কেবা আর তাবে বাঁধিতে পারে ? নৰ প্ৰভাবাশি নৰ শিখাময় ভাবত ভত্মেতে মিশিছে ফেব, কাদিল ভারত যে অস্তি-কোলেতে সঙ্গীৰ হবে দে শিখাতে এব जोवनम प्रिनो এ দহন শিখা ভারত অন্তরে ধরেছে ধীবে, হয়েছ উদ্ভৰ— নারায়ণ-মুপে ভারতের বুকে থাকিবে স্থিবে। যাবে কত কাল, ত্মলিবে আবো এ জ্ঞানের আলোক--বিহাৎছটা,

मटम ना नगटन. দমিলে বিভণ ধরে থবতব তেক্ষেব ঘটা। "বিপণ-উৎসব" ভূলো না ভাবত ছিডো না যে ডোবে মিলেছ আৰু. এক বাণী ধর ভারত-সন্তান ষেখানে যে থাকো –পবো যে সাজ। নিভতে -উৎসবে মনে ক'বো সবে "বিপণ-বিদায়" নহে এ খালি, ভাবত-অহরে সম আংশা ভয় এ মিলন ভাব প্রকাশ ডালি। নতে আক্সিক দৈৰ স্থৰটনা বহুদিন হ'তে অস্ব এব, ব্ৰুড়ায়ে ব্ৰুড়ায়ে শিক্ষে শিক্ষে বেঁধেছে ফেব। জ্বাজি প্রকটিত श्रुष्ठ मिर्छ मिथा তক্ষ্ল কেনে পল্লব্ময়. ধবণীব গর্ভে शेरव शेरत्र (वरफ ফলে ফলে **পেষে সাহি**য়াবয়। ভাৰতেৰ আশা ভারত-প্রত্যাশা — জীবন-উন্তি ইহাবই সাব। দে সৰ লভায় শ্ববাবি-দেচক "বিপণ" কেবল লক্ষ্য বে ভাব। সেই আশাপথে হবে অগ্রসর তিলেক ভাছাতে নাহিক সংশয়. বে পথ উহাব দিয়াছে দেখারে হবে পরিদব কব নিশ্চয়। দেখারে দে আলো দিয়াছে যথন मिम्राटक यथन दमशाटम थय, আজি আর কালি তাহাতে পশিব मावशास्त्र भूवारवा श्व-मरनावश । পাবো বে সক্লি--আজি আর কালি আব এ ভারত নিদ্রিত নয়, সৰ পুত্ৰ ভাৰ সম ত্যাত্র এক(ই) পথ-পানে চাহিয়া বয়। চাহে মহারাই এক (ই) পথপানে bice (म शावमी-शाकांवी-निय, বীরপুত্রগণ-চাহে ভারতের রাজোগাবাময় যত নিভীক। মহম্মণীগণ--. ভাবতনন্দন

তাহারাও আজি জাগে মা ব'লে;

একদত্তে চাহে সেই প্রপানে সাধনা সাধিতে সে পথে চলে। क्षेत्र देश राजः ডাকিছে তোমায় তোমার সন্তান যে যথা আজ, কিবা যবাদল কিবাবদ শিশু কি দরিদ্র **আ**র কিবা অধিরাজ। হিমালয় হ'ভে এক বিজন য ক্মারীর প্রাস্ত যেথানে শেষ, হিন্দ মুসলমান আজি একপ্ৰাণ জাগাতে তোমাবে জেগেছে দেশ। क्षेत्र क्षेत्र मातः ছাডো নিজা ঘোর পরিয়া নিখাস ফেল গো মাতঃ. দেখি কি নাহয় অকণ-উদয় — ত্তকণ চটাতে প্ৰভাত প্ৰাতঃ।

মদন-পারিজাত।

(একাদশ খুষ্টাব্দে ত্রাসীদেশে আবেলার্ড নামক একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত ছিলেন। তিনি ভৰ্কশাল অন্যাপনা ক্ৰাইয়া প্ৰভূত বৃশ্বী হন। অভ্যান্ত শিষ্যের ভাগ ইলাইজা নাগ্নী এক স্থাক-রংশীয় জলা জাঁচার নিকট অধায়ন কবিতেন। এই কামিনী অংতাজ রূপবতী ও বৃদ্ধিনতী ছিলেন। ক্রমে গুক-শিষ্যের ভাষান্তর হইয়া উভয়েব প্রতি উভয়ের আমাজিক লন্মে এবং সেই কলফ দেশমধ্যে প্ৰচাবিত হয়। তাহাতে ইলাইজাৰ পিতৃব্য অস্য বোষপ্রতন্ত্র হট্যা ইলাইজাকে একটি কন-ভেণ্টে আবন্ধ কবিয়া বাথেন এবং আবেলার্ডকে ফতেদের কবিয়া অব্যানিত কবেন। কাণ্লিকনিগের মধ্যে সংসার্থিবাগী ধর্মাকাজ্ঞী স্ত্রী কি পুক্ষগণ যে আখেমে বাস কবেন, ভাহাব নাম কনভেন্ট। ইলাইজা সেই আশ্রমে অবক্স হইয়া বলকটে দিনপাত কবিত এবং আবেলার্ডও প্রাঞ্জক-ক্রপে অবমানিত চইবাব প্র, সংসাব্ধিরাগা হইয়া অবজ্ঞা এক আমাশ্রম প্রায়ান কবেন। ইংহাদিগের প্রস্পাবের প্রণয়ণটিত উপাধান ইউবোপীয় নানা আধায় লিখিত আছে। আলেকজন্ত পোপ নামক স্তপ্রসিদ্ধ ইংবাজ-কবি এই উপাথ্যান অবলম্বনে একটি কবিতা লেখেন, ভদ্নতে "মদন-পাবিজাত" নাম দিয়া নিমোকে কবিজা লিখিত হইয়াছে।)

জাজিয়ে সংসার্থণ তপ্রিনী হয়েছি. মাধামোতে আশাভ্যগ বিস্কৃত্য দিয়েছি। পরিয়ে বঙ্গল সাজ্ঞ কমণ্ডল কবে. ধবেচি কঠোৰ বজ কানন ভিতবে। দিবাস্ক্রা প্রাধান দেব-আবাধনা. কবি, তব মনে কেন হয় সে ভাবনা ? যাব জব্যে দেশত্যাগী, কেন পুনবায় অশান্ত জনয় হেন তারি দিকে ধায় ? কেন বে উন্মাদ মন কেন নিলি তুলে. যে বাসনা এত দিন আছিলাম ভূলে ? জালাতে নির্মাণ-বহ্নি কেন দিলি দেখা অবে ভ্রধাময় লিপি, দ্যিতেব লেখা ! আয় তোৱে বকে বাঝি বহুদিন পৰে পেয়েছি নাথেব লেখা অমৃত অক্ষবে। এ জগতে ভালবাদা ভলিবার নয়. মদনেব পাবিজাত রক্ষাও ঘোষয় ৷ ক্ষাকর যোগী ঋষি জিতে ক্রিয় জন. ক্ষাক্র সহী-সাধনী তপ্রিনীগণ। অ চি শাহ অপে নিল আ আইমম ওল. তক, বাবি, লতা পত্ৰ যথায় নিৰ্দাল. নিজাপ নিজাম চিন্তা ষ্ণার নিয়ত. প্ৰমাণ-গানে মগ্নানন্দ জাগত. ক্ষাক্ৰ এ দাসীৰে কল্য চিভায় কল্ষিত কবিলাম জোমা স্বাকায়। আমাসিলাম যবে তেথা ক'বে মহাত্ত. ভাবিলাম, হব শীঘ তোমাদেবি মত; ধবল শিলাব সম স্বেদ কেন্থীন. প্রল শিলার সমুমুম্ভারি**হীন**। কট হলো । অসাধ্য সে প্ৰিত্ৰ কামনা। की বিত থাকিতে নাথ যাবে না বাসনা। অৰ্ণ্ধেক দিনেছি প্ৰাণ ঈশ্বৰ সেবিতে. জ্যাৰ্দ্ধক বেখেছি হায়। নাথেরে পঞ্জিতে অনাহাবে জাগবণে হলো দেহক্ষ. ত্ত্ব দেখ স্বভাবের গতিবোধ নয়। কাটালাম এত কাল সমাপে সহাপে. সে নাম দেখিবামাত্র তব চিত্র কাঁপে। কাঁপিতে কাঁপিতে নাথ! খুলি এ লিখন. প্রতি ছতে করিছেছি অশ বিস্জন। ষেখানে ভোষার নাম দেখি প্রাণেশ্র, সেইখানে কেঁলে উঠে আমাৰ অন্তর।

কতই আনল আৰু কতই বিষাদ,
আছে ও মধুৰ নামে কে জানে আখাদ দ
কতবাৰ ধীৰে ধীৰে কৰি উচ্চাৱন,
কতবাৰ দিবে দিবে কৰি নিরীকন।
ফেলি কত দীর্ঘখান সে সৰ আৰিয়ে,
আছি হেখা একাকিনী যে সৰ তাজিয়ে।
যথানে আমাৰ নাম দেখিবাৰে পাই.
সেইখানে আনাৰ নাম দেখিবাৰে তাৰ,
আছল কোন আমদল সদে থাকে তাৰ,
আমদল হেতু নাথ, আমি হে তোমাৱ!
না পাৱি পডিতে আৰু, সহে না ২৮%;
শোকের সম্ভু হেবি ৮০ দিকম্য়।

অদৃষ্টে কি এই ছিল, সেই ভালবাদা, এইরূপে হলো শেষে শেষ এই দশা। সে যশঃ-লিপাদা আর সে ৮েন প্রণয় পত্রেব কুটারে হলো এইরূপে লয়।

ষত পার হেন লিপি লিখ, তবে নাথ, করিব তোমার সধে শোক-অশ্রপাত. মিশাইৰ দীঘৱাদ তোমাৰ নিৱাদে. কাঁদিব তোমার সঙ্গে চিত্তেব উনাসে . ঘচাইতে এ ষন্ত্ৰণা সাধ্য নাই কার(ও), তাই নিবেদন করি, লিখ যত পার। অনাথা তঃখীর তঃখ কবিতে সাভ্না, হয়েছে লিপিব সৃষ্টি বিধির বাসনা। বুঝি কোন নিৰ্কাসিত পুৰুষ প্ৰেমিক. অথবা রমণী কোন প্রেমেব পথিক. ঘচাতে বিচ্ছেদজালা আরাধন ক'বে, শিথেছিল এ কৌশল বিধাতার ববে। প্রাণ ভোৱে অন্তরের কথা প্রকাশিতে এমন উপায় আব নাই এ মহাতে। নাসা. কণ্ঠ, চকু কিংবা ওঠে যাহা নয়. লিপিব অক্ষরে ব্যক্ত হয় সমুদয়। খুলে দেয় একেবাবে প্রাণেব কপাট. ধরে নালজ্জাব ধার থাকে নাঝগ্লাট।

উদয়-ভূধর হ'তে অস্তাচলে বায়, প্রণন্থী জনের কথা গোপনে জানায়। জান ত হে প্রিয়ন্তম। প্রথমে কেমন স্থাভাবে কত ভক্তি করেছি যতন। জানি নাই, কথন দে প্রেমের সঞ্চার— ভাবিতাম যেন কোন দেবের কুমার.

ঈশ্বৰ আপনি ধেন স্বহন্তে কবিয়া নিশাণ কবিলা তোমা নিজ-বশ্মি দিয়া: মুধাংশুর **অ**°শু বেন ক'বে একল্রিজ সহাত্য নয়নে তব কবিলা স্থাপিত। নেত্রে নেত্র মিলাইবা ন্থিবদ্র হয়ে দেখিয়াছি কতবাব পৰিত্ৰ ফ্ৰয়ে ৷ গান্ধিতে যথন তমি অমব শুনিক কি মধুর শাস্থালাপ বদনে ক্ষবিত। সে প্রস্থাবে কাব মনে নাহয় প্রভায়— প্রেমেতে নাহিত পাপ ভাবিত নিশ্চয়। ভক্তি চি'ডে পডিলাম ইন্দ্রিধনহকে ভজিত নাগৰ-ভাবে প্রাণেব পুলকে। দেবপুত্ৰ ভাবিতাম, তা হ'তে অধিক প্রিয়তম হ'লে নাথ হইয়ে প্রেমিক। তোমা চেন কান্ত যদি মতাভূমে পাই শ্যি হয়ে স্বৰ্গস্থৰ ভঞ্জিতে না চাই। যে ভাবে অধিক স্থুথ সে যাক সেথানে। আমি ধেন তোমা লয়ে পাকি এ ভূবনে।

অঘি নাথ। কত দিন, আছে ত শ্বণ, বলেছিলে পতিভাবে কবিতে বৰুণ. তথনি দিয়াছি শাপ হোক বজাঘাত. পরিণয়-সংশ্বাব ষাক রে নিপাত। হাতে সূতা বেঁধে কভু প্রেমে বাঁধা যায়, বন্ধন দেখিলে প্রেম তথনি প্রার। স্বাধীন মকবকেত্ত স্বাধীন প্রবয়, না বঝে অবোধ লোক চাতে প্রিল্য। প্ৰিণয়ে ধন হয়, নাম হণু যুশু, প্রণয় নছেক ধন বিভবের বশ। ভমগুল-পতি যদি চবণে আমার ধ'বে দেয় ভূমগুল, সি হাদন তার, তচ্চ ক'রে দরে ফেলি মনে যদি ধরে ভিথারীৰ দাসা হয়ে থাকি ভাব ঘৰে ! যে বমণী সে দোভাগ্য ভুঞে চিবকাল, কত ভাগাবতী সেই হার রে কপাল ? কিবা স্থময় সেই স্থথের সময়, স্মথের সাগব যেন উদ্ধৃদিত হয়। পরাণে প্রাণ বাধা প্রণম্বের ভরে. পবিপর্ণ পবিভোষ প্রেমীর অন্তরে। আৰাৰ থাকে না কোভ, ভাষাৰ যোজনা, जनस्य जनस्य कथा **अकार्य जा**लना ।

দেই স্বথ--স্থপ যদি থাকে মহীতলে --পাবিজাত মদনের ছিল কোন কালে।

সে ক্ষের দিন এবে কোথায় গিরাছে, কোথা পারিজাত কোথা মদন রয়েছে! কি হ'লো হায়, এ কি সর্কনাশ, নাথের চুর্জ্ঞশা এত, ক'রে নগ্রবাস, কে করিল জ্ঞাছাত চু কোথায় তথন ছিল দাসী পারিজাত জ্ঞানী চুর্জ্জন চু সেই দণ্ডে প্রাণনাথ, তীক্ষ জ্ঞায় ধ'রে নিবারণ করিতাম পাষ্ড বর্করে। চুজনে কবেছি পাপ চুজনে সহিব, লজ্জা করে, প্রাণনাথ, কি জ্ঞার বলিব। জ্ঞা-বিস্ক্জনে এবে মিটাই সে সাধ, দগ্ধ বিধি ঘটাইলি বোর প্রমাদ!

আনিল আমায় হেথা যে বিষম দিনে. বসাইল ধরাতলে পবিত্র অভিনে. প্রাইল বৃক্ষছাল দণ্ড দিল হাতে. ভাব কি সে দিন আমি ভূলেছিত্ব নাথে ? পাৰেশ্ব চাবিদিকে ঋষিগণ যত করে মন্ত উচ্চাবণ, আমি ভাবি কভ তোমার বদন-ইন্দ তোমার লোচন. মনে মনে করি তব গুণের কীর্ত্তন : নয়নের কোণে মাত্র দেবী-পানে চাই মনে শুধু কিসে পুনঃ ফিরে কাছে যাই। যৌবন রূপের ঘটা তখনো অতুল, হেরে চমৎকৃত হলো যত ঋষিকুল সংশয় বিশ্বয়ে ভাবে এ হেন বয়সে রমণীইজ্লায় কভু আমাশ্রমে কি আনসে ? সভা ভেবেছিল তারা মিখ্যা কথা নয়— যুবতীর যোগধর্ম মিথ্যা সমূদর ! যাই হোক নাই হবে গতি-মুক্তি মম, বারেক নিকটে এদ অহে প্রিয়তম ! সেইরূপে নয়নের বিষাক্ত অমুত করি পান মনসাধে হবে বিমোহিত, অধরে অধর দিয়ে হয়ে অচেডন মটোভাবে বক্ষঃস্থলে দেখিব স্থপন।

না না না, ত্রস্ত আশা হও রে অসর ! এস নাথ, ধর্ম-পথে লও হে স্বর , পুণ্যধামে পুণ্ডান হে আনন্দ পার, শিধাও এ অভাগীরে সিঞ্জি কর কার।

আহা এই শুদ্ধ শাস্ত আশ্রম-ভিতরে কত্ট প্ৰাতাজীৰ আনন্দে বিহবে: তক্ষ লতা আদি হেথা, সকলি নিৰ্মাল, সকলেই ভজিবনে সদাই বিহলে। পৰ্বত-শিখবগুলি সুন্দৰ কেমন উঠিয়াছে চারি ধারে মেঘের বরণ: শাল তাল তমালের তরু সারি সারি শুনাইছে মৃত্যুর দিবস-শর্মবী: পূর্য্যকরে দীপ্ত হবে স্রোত:কল যত শিপরে শিপরে আহা ভ্রমে অবিবত , করে কল-কল ধ্রনি গিরিপ্রস্তরণ 'গুহাৰ ভিতরে **আহা ম**ধুৰ **প্ৰ**বণ। সান্ধ্য-সমীরণে এই ত্রদের উপবে তবঙ্গ খেলায় যবে কিবা শোভা ধরে। হেন স্নিগ্ধ তপোবন-ভিতরে আমাব ঘচিল না এ জনমে ইন্দ্রি-বিকার। হে বিশ্ব-ত্রগ্রাণ্ড পতি ককণা-নিদান, করুণা-কটাক্ষপাতে কব পবিত্রাণ। দাও দেব দেখাইয়ে মুক্তির আলয়, ভক্তিভাবে লইলাম তোমাৰ আগ্ৰয়।

শুকু ঈশ্বরচন্দ্র বিভাসাগয় মহাশয় কুলা দিগের বহুবিবাহ নিবারণ জ্ঞারে আইন লিলিব করাইবার উভোগ করেন, এই কবিভা সেই উপার্থ লিখিত হয়।

কেন বল আমাদের হুর্গতি এমন ? এখনো মা ঘুচিল না অঞ্বিদর্জন।"

আষ আষ সহচরি, ধবি গে বুটনেখবী, করি গে তাঁহার কাছে হ্বংথেব বোদন , এ জগতে আমানের কে আছে আপন দ বিম্থ নিষ্ঠর ধাতা, বিম্থ জনক ভ্রাতা বিম্থ নিষ্ঠর তিনি পতি নাম বার— আশ্রম ভারতেখরী ভিঃ কেবা আর প

আন্য আন্য সহচ্চি ধরি গে এটনেশ্বরী করি গে তাঁহার কাছে ত্রুথের রোদন; এ জগতে আমাদের কে আছে আপন ? "দাত শত বৰ্ষ, মাতঃ, পৃথিবী-ভিতবে এইরূপে অহরহঃ অশ্রধার। ঝরে মাতা-মাতামহী-চকে জনাজনাকাল . আমাদেরো সে ছর্মণা হার রে কপাল। কত বাজা হলো গেল, কত ইন্দুগাত, নক্ষত্ৰ থসিল কত ভ্ৰৱ-নিপাত, হিন্দু বৌদ্ধ মুদলমান মেচ্ছ অধিকার শাস্ত্রধর্ম মতামত কত্ই প্রকার উঠিল ভাবতভ্যে হইল পতন. আমাদের ড: ব আবাব হ'ল না মোচন : সেই সে দিনাতে **চটি প্ৰাঃ** আহাৰ নিশিতে কাঁদিয়া প্রথ দেখি অনিবার।"

আর আর সহচবি ধরি গে রুটনেখরী
করি গে উটাহাব কাছে ছ:থের বোদন
এ কগতে আমাদের কে আছে আপন /
বিমূধ নিষ্ঠর ধাতা বিমূধ জনক ভাতা
বিমূধ নিষ্ঠর তিনি পতি নাম বাব—
আশ্রের ভাবতেখনী ভিন্ন কেবা আব
শ্বার আর সহচরি, ধরি গে রুটনেখরী
করি গে উটাহার কাছে ছ:থের বোদন,
এ জগতে আমাদের কে আছে আপন
শ

"ডেকেছি মা বিধাতারে কত শতবাব,
পূজেছি কতই দেব, সংখ্যা নাহি তাব,
তবু গো ঘুচিল না ভ্রদমের শূল,
অমরাবতীতে বুঝি নাহি দেবকুল!
বাবেক বৃটনেখরী আয় মা দেগাই
প্রাণের ভিতরে দাহ কিবা দে সদাই;

কাজ নাই দেখায়ে মা তুমি রাজ্যেষ্বী, क्षमद्य वाश्विदव उव वाशा खब्रह्मवी। চিল ভাল বিধি যদি ৰিপ্ৰা কবিত. কাদিতে হতো না. পতি থাকিতে জীবিত. পতি, পিতা, ভ্রাতা, বন্ধু, ঠেলিয়াছে পায়, टिंदला ना मा वासमाछा इःशी बनावाम ।" শায় আয় শহচবি, ধরি গে বটনেশ্বরী করি গে তাহাব কাছে ছঃধেয় রোদন . এ জগতে আমাদের কে আছে আপন গ বিমুখ নিষ্ঠর ধাতা বিমুখ জনক ভ্ৰান্তা, বিমুখ নিষ্টুর তিনি, পতি নাম গাব— আশ্রম ভাবতেখরী ভিন্ন কেবা আর **গ** "कि जानाव अनित (गा अभरप्रत वाथा--দাসীর(ও) এ হেন ভাগ্য নাহয় স্ক্রেখা। कि स्थां ज्या ताना, किवा श्रवीमा द्रमती, প্রতিদিন কাঁদিছে মা দিন দণ্ড গণি। কেহ কাঁদে অল্লাভাবে আপনাব ভৱে. কাবো চক্ষে বারিধাবা শিশু কোলে ক'রে. কত পাপ-প্রোত মাতা প্রবাহিত হয়. ভাবিতে রোমাঞ্চ দেহ, বিদরে হুদয়, হা নূশ স অভিমান, কৌলীক আপ্রিত। হা নূশ'দ দেশাচাব রাক্ষদ-পালিত। আমাদেৰ যা হবাৰ হয়েছে জননি--কৰ ৰক্ষা এই ভিক্ষা, এ সৰ ননিননী।"

থায় স্বায় সংচবি, ধরি গে বুটনেশ্বরী.
করি গে উহির কাছে হুংথের রোদন,—
এ জগতে স্বাস্থানের কে স্বাছে আপন
রিমুথ নিষ্ঠা বিনি গতি নাম বাব —
স্বাশ্রম ভাবতেখারী ভিন্ন কেবা স্বার।
স্বায় স্বায় সহচবি, ধরি গে বুটনেশ্বরী,
কবি গে উহির কাছে ছুংথের রোদন—
এ জগতে স্বামাদের কে স্বাছে স্থাপন ?

পরশ-মণি

()

কে বলে পরশমণি অলীক স্থপন ? স্থাই যে অবনীতলে, পরশমণিক জলে বিধান্তা নির্মিত চাক মানব-নয়ন ৷ পরশম্পির সনে, লোই-অঙ্গ প্রশ্নে
সে লোই কাঞ্চন হয় প্রবাদ-বচন —
এ মণি প্রশেষায় মাণিক ঝলসে তায়,
ববিষে কিরণধাবা নিখিল ভ্রন।
কবিব কল্লিত নিধি, মানবে দিয়াছে বিধি,
ইহারি প্রশৃগুণে মানব-বদন
দেবতুলা রূপ ধবি আছে ধরা আলো করি,
মানীব অলেতে মাণা সোনার কিবণ!

()

পরশ-মাণিক যদি অসীক হইত,
কোথা বা এ শশবর, কোথা বা ভাহ্যব কব,
কোথা বা এ শশবর, কোথা বা ভাহ্যব কব,
কোথা বা নক্ষত্র শোভা গগনে কটিত।
কে রাধিত চিত্র ক'বে চানের জ্যোৎস্না ধ'রে
ভরদের মেঘের অন্তে রহেতে মাথারে দু
কোবা এই স্থনীতল বিমল গগার জল
ভাবত ভূষণ কবি বাধিত ছভায়ে দু
কৈ দেখা'ত তককল নানা রকে নানা ফুল
মবাল হবিন মুগে পৃথিবী শোভিষা দু
ইন্দ্রধন্য আলো ভূলে সাছায়ে বিহন্ধকূলে
্ক হাধ্য শিথিপুছে শশান্ধ আঁকিয়া দু

(0)

্ৰিয়াছে বিপাতা ঘাই এ পরশম্পি -হয়েছে এ মধীতল মুর্গের উপমান্তল স্থেব আকব তাই হয়েছে ধরণী। নয়ন-মণির সংক কি আছে ধ্বণী-অঞ্চে ना इब्र गानव-हिट्ड व्याननमागिनी, मनीकरत भौन (थरत. বিউপীতে পাতা হেলে চবেতে বালুকা ফটে তৃণেতে হিনানী. পিপীলি-শ্রেণীতে ধায় পঞ্চিপাপা উচ্চে যায় কম্বরে তুষাব পবে ঝিল্পকে চিরুণী। অরণ্য ক্জ্ঝটিময় তাতেও আনন্ত্য ৰুল্ভ বিহাৎলতা তমিস্ৰারজনী।

(8)

ইচাই প্রশ্মণি পৃথিবী-ভিত্তবে ইচারি প্রশ্ববে স্থায় স্থার গলে প্রায় প্রেমের হাব প্রদল্প অন্তরে, শিকাষে ক্রেমের বেদ গুচার মনের ভেদ
প্রথম আহিক করে স্থেব সাগবে।
দক্ত এই ধরাতল, প্রেম ভোগবতী-জল
পবিত্র করেছে যারে খুলিয়া নিম'রে,
যুগল নক্ষত্র তুটি যে স্থানে বেডার ছুটি,
স্বারূপে মন্থ্রে পথিবা-উপবে।
কোন্পুণ্যে হেন নিধি মানবে পায় রে বিধি—
গেল চ'লে চিরদিন অই আশা গ'বে!

(t)

অপ্র মাণিক এই প্রশ-কাঞ্ন! ফুটার মণি অতুল, স্থেক্সপ কত দল ইহার প্রশেধ্বা আন্দ-কান্ন মৰি কি ককণা-সিন্ধ, জননী-বদন-ইন্দ দয়াল পিতার মথ, জায়ার বদন, চাক্ল ইন্দীবর আঁকা শত শশি-বশ্মি-মাথা পত্তের অধ্ব ওঠ নলিন আনন, স্থসা-মুখ নিরমল সোদরের স্থকোমল পবিত্র প্রাণয়পাত্র হীবক কাঞ্চন— এই মণি প্রশনে. হয় সুথ দ্বশ্নে. মানব-জনম দাব সফল জীবন।---কে বলে প্ৰশন্ধি আলীক স্থপন ?

জীবন-মরীচিকা।

জীবন এমন ভ্ৰম আগে কে জানিত বে! হয়ে এত লাকায়িত কে ইহা যাচিত রে। প্রাফল বেমন হয়, প্রভাতে অকণোদয় মনোহবা বশ্বরা কুহেলিকা আঁধাবে। ধরিয়ে অপূর্ব বেশ. বারিদ ভ্ধর দেশ, বিতরে বিচিত্র শোভা ছায়াবাঞ্জী আকারে। ব্ৰহ্মাণ্ড ভরিয়ে রয়, কুমুমিত তক্লচয়, প্রাণে মৃথ্য সমীবণ মৃত্যুত্ সঞ্চারে। প্রেমানদে অনর্গল, কলায়ে বিহল্পল. মধুময় কলনাদ করে কত প্রকারে। মন মুগ্ধ মায়াজালে. দেইরূপ বাল্যকালে, কত লুক আশা আসি, করে শ্লিম্ব আত্মাবে : নিতা সুথে পরিপ্ল,ড "পথিবী ললামভত হয় নিত্য এই গীত পঞ্চুত-মাঝারে !

ব্ৰগাও সৌবভ্যষ মঞ্জু কুল মনে ১য় मदन क्य मगुम्य स्थामस मः मादत । ম্বাকে তাহার প্র প্রচণ্ড রবির কর. থেমন দে মনোহর মধুরতা সংহারে। না থাকে কুহেলি অন্ধ না থাকে কুন্ম-গন্ধ, ना ডাকে বিহদক্ল সমীরণ ঝঙ্কাবে। সেইরপ ক্রমে যুক্ত শৈশৰ যৌবন গাত মনোমত দাধ তত ভাঞ্চে চিত্র-বিকারে। স্থৰ্থ মেখেৰ মালা नत्य त्रोमाभिनौ जाना. আশার আকাশে আব নিতা নাহি বিহরে। ছিন্ন ত্যারের কায় वाला-वाङ्ग मृद्य यात्र. তাপদগ্ধ জীবনেব ঝগাবাযু-প্রহারে। পড়ে থাকে দরগত জীৰ অভিলায় ধত ছিন্ন পতাকাৰ মত ভগ্ন গ্ৰগ প্ৰাকাৰে। জীবনেতে প্রিণ্ড এইরূপে হয় কন্ত. মন্ত্র্যাদি-মনোবথ, গ নগ্ধ বিধাত বে। ধর্মনিষ্ঠাপর†ষণ স্থচাক পবিত্র মন, বিমল স্বভাব সেই মূবা এবে কোথা রে ৷ অসভা কর্ষলেশ, বিধিলে প্রবণদেশ, কলঙ্কিত ভাবিত ধে আপনাব আহাবে। বামাশজিক বামারার শ্ৰনিলে শত ধিকাৰ জলিত অথরে যার সে তপদ্বী কোথা বে ৪ কোথা সে দয়া দ্-চিত্ৰ সভল যাহার নিতা পরতঃথ-বিমোচন এ ছবল সংসারে ১ অত্যাচার উৎপীচন করিবারে সংযমন, না কবিত যেই জন ভেদাভেদ কাহাবে। না মানিত অকুনোগ না জানিত টোধামোদ, সে তপন্তী মহোদন্ধ-বাঞ্চা এবে কোথা রে। কত যুৱা যৌৱনেতে চডি আশা-বিমানেতে. ভাবে ছডাইবে ভবে যশঃপ্রভা-আভা বে। ত্লিবে কীৰ্নিব মঠ. স্থাপিবে মন্দ্রঘট প্রণত ধবণীতল দিবে নিত্য পূজা বে। কেই বা জগতে ধল वीतवरम अधनना इस्त्र हार्ट्ड हनर्गट्ड नामिनार्व धना दव। यरमणहिटेख्यो त्कृ .. ভাবিয়ে অসীম ক্ষেহ, কত কবে প্রাণ দিতে স্বঞ্চাতির উদ্ধারে। ারি চিত্তে অভিলাষ হয়ে সারদাব দাস. পিশে হ্রথে চিবদিন জমরতা-মধা বে। ार्वित कतान त्यारक. कारम भरत जीतर नरक **धरे मर आंगानुक अांगे थाएक कांथा दर।**

কিশোৰ গাঞীবধাৰী व्यायमधा देव बाङ्गती. ক্ষদ ক্ষুদ্ৰ কালিদাস কন্ত ভোৱে পাথাৱে। কতই যুবতী বালা. গাঁথে মনোমত নালা পাজাইতে মনোমত প্রিণতম প্রধাবে। সুদয় মাজি**ত ক'**বে. মাচা কর প্রেমভবে. প্রিষ্মতি-চিত্র ক'বে বাথে চিত্ত-আগারে। নববিবাহিত কত পেয়ে পতি মনোমত. ভাবে জগতেৰ স্থপ ভবিয়া ভাপাৰে। এই স্ব অম্বলাব কিছ দিন পরে আব দেখ, মৰ্মভেদী শেন দেয় কত বাথ। রে। দেখ গে কেচ বা তাব. হথেছে প্রব্দার. শুদ্ধ হয়ে মাল্যদাম শ্লে আছে গাঁথা বে। মনোমত নচে পজি মবমে মবমে সঙা. উদ্যাপন কবিয়াছে পতি-মুগ আশা বে। কতাকেব আশান্দালে দিবা-নিশি কেচ কাঁদে विषय देवववा-मभा-भिशटण्डल वादा द्वा দারুণ অপত্যতাপে, দেখ হে কেঃ বিলাপে অলাভাবে জননীৰ কোথা ৰক্ষঃ বিদৰে। আগে গদি জানিতাম. পথিবী এমন ধাম. তা হ'লে কি পড়িতাম আনায়ের মাঝারে। কোথা গেল সে প্রথম বালাকালে সনময়, যে স্থাতা-পাশে মন বাবা ছিল সদা বে। সমপাঠা কেলিচব অভেদায়া হবিহ্ব. এবে তাহাদের সঞ্চে কতবার দেখা বে। প্ৰস্পালের মূত ক্ষাঞ্চেত্রে অধিবত, স্বকার্য্যসাধনে রক্ত কেবা ভাবে কাহাবে। আহাপুনঃ কত জন. কবিয়াছে প্লায়ন. মউলভূমি প্রিহ্রি শ্মনের প্রহারে। গগন-নফলবৎ ভাষাবাই অক্সাৎ প্রকাশে কচিৎ করু মুত্রশ্মি মাথা রে। ८० विटल अर्विभा-नाम, আমারে চিল কভ সাধ. হেরিতে নক্ষর শোভা নালনভঃ-মাঝারে। দিন দিন কতবার গাগত নিগিতাকাৰ. স্বপ্নে স্থান নিতাম নদ ২দ-কাস্থাবে। ব্যন্ত ব্ৰহাকালে পिकवव, स्ववद्यातन, হেরিতে দামিনীলতা, কি আনন্দ আহা রে। দে সাধ তর্ত্তকল. এবে কোথা লকাইল. ্কে ঘড়ালে জীবনেব হেন বম্যধাধাবে। রিশ্বদ্ধ প্রবিক্সন. স্বৰ্গবাদী সিংখাসন, পঞ্জিল করিল কে বে দয়টিতা অন্নারে দ

অশোক-তরু

(5)

কে তোমারে তক্বন, ক'বে এত মনোংর,
রাধিত এ ধরাতলে ধ্বা ধল্ ক'বে ?
এত শোভা আছে কি এ পৃথিবী-ভিত্বে ?
দেখ দেখ কি স্কর, পুপ্পগুছ্ থরে থর
বিবালে শাধার পর সদা হাজভরে—
সিন্দ্রের ঝাবা হেন বিট্পী উপবে।
মরি কিবা মনোলোভা ভুভায়ে রয়েছে শোভা
আভা বেন উথলিয়া প্ডিছে অধ্বে।—
কে আনিল হেন তক পৃথিবী-ভিত্বে ?

(+)

বৰ্গ বৰ্গ তক্বৰ, তৃমি যে এত ফ্ৰন্থৰ
অন্ধৰণ তেপাৰ কি হে ইহাবি মতন ?
কিংবা শুধু নেত্ৰ-শোভা মানন যেমন ?
আমি ছ:বী তক্বৰ, তথাপি মম অন্ধৰ
না জানি মনেৱ স্থা, সংখোষ কেমন ,
তক্বৰ, তৃমি বৃমি না হবে তেমন ?
আবে তক্ব খুবো বল, শুনে হই স্থাতল
ধৰণীতে সদানক আছে এক জন—
না হয় সন্তাপে ধাবে কবিতে ক্ৰন্তন।

(0)

(8)

তুমি তক্ল নিরন্তব আনন্দে অবনীপর, বিরাজ বন্ধুব মান্সে সঞ্জন-সোহালে, তক্লবর, কেই নাহি তোমাবে বিবাগে। পরণী করান পান, স্বরস স্থা স্থান দিবানিশি বাবমাস সম অন্তবালে— প্রন তোমার ভবে যামিনীতে জাগে। স্রোভোধারা পরি পার, ক্লু ক্লু করি ধার, আপনি বর্ষা নীরে ঢালে শিরোভাগে, ভক্রে বস্তু ভোবে স্বেহ্ করে আগে।

(1)

কলক স মধ্মাদে, তোমাবি নিকটে আংদে শুনাতে আনদেল ব'দে কৃছ কছ বব ;
তক্বন তোমার কি স্থবেব বিভব।
তলদেশে মথমল, ত্ৰ কবে চল চল,
পতঙ্গ তাহাতে স্থবে কেলি কবে দব,
কতই স্থবেতে তক্ল শুন ঝিল্লীবব।
আসি স্থবে পাতি পাতি, ছভাৱে বিমল ভাতি,
বলোহ যথন তব দালার পলব—
কি আনন তক্ল তোর হণ অঞ্ভব।

(')

তক বে আমান মন, তাপদগ্ধ অফ্থণ,
কেহ নাই শোকানৰে ঢাবে বাবিধারা;
আমি তকু জগতেব থেহসুখহাবা।
জায়া, বকু, পরিবার, সকলি আছে আমাব,
তবু এ সংসার যেন বিগতুল্য কারা;
মনে ভাল কেহ মোরে বাসে না তাহাবা।
এ দোষ কাহাবো নয়, আমিই কলক্ষ্ম,
আমান অন্তর হার, কলক্ষেতে ভ্রা—
আমি, তক, বত পাপী, তাই ঠেলে তাবা।

(1)

বড় ছ: থী তক আমি, জানেন অন্তবধানী.
তোমার তলায় আদি ভাদি অশুনীবে,
দেখিয়া জীবেব স্থপ ভবেদ মন্দিরে।
এই ভিন্ন স্থ নাই, তক তাই ভিক্ষা চাল,
গাই যেন এই কপে কাদিতে গঙীরে,
যত দিন নাহি ধাই বৈতদ্পী-তীরে।
থক ভিক্ষা আছে আব, অন্ত যদি কেছ অ
আমাব মতন ছ: খী আসে এই স্থানে,

তক, তারে দয়া ক'বে ত্র্যিও পরাণে।

নানা বিষয়

- --

লজ্জাবতী লঙা।

(3)

ছ ৰো না ছ ঁযো না উটি লজ্জাবতী লভা।

একাম সক্ষেচ ক'বে, এক ধাবে আছে স'বে
ছুঁয়ো না উহার দেহ, বাথ মোর কথা,
তকলতা যত আর, চেবে দেপ চারি ধাব,
বেরে আছে অহলাবে— উটি আছে কোলা ?
আহা, ওইথানে থাক, দিও নাক ব্যথা।
ছুঁইলে নথের কোণে, বিষম বাজিবে প্রাণে,
ছুঁযো না ছুঁযো না উটি লজ্জাবতী লভা।

(২)

লজাবতী লতা উটি অতি মনোহব।
বিদিও স্থলর শোভা, নহে তত মনোবোভা,
তব্ও মলিন নেশ মরি কি স্থলর।
বার না কাহাবও পাশে, মান-মর্গাদাব আনে,
থাকে কাদালীব বেশে একা নিবন্ধন—
লজ্জাবতী লতা উটি মরি কি স্থলর।
নিখাদ লাগিলে গায়, অমনি শুকায়ে যায়,
না জানি কতই ওব কোমল অফব।
এ হেন লতার হায়, কে জানে আদির?
(৩)

হায় এই ভ্মজালে কত শত জন. मण्ड मण्ड कुट्टे डेटर्र. व्यवनीय खल लाहि. ভনায় কতই রূপ যশের কীর্ন। কিন্ত হেন গ্রিয়মাণ, সদা সক্ষচিত প্রাণ. বমণী পুক্ষগণে কে কৰে যতন ? প্রকৃতিটি স্বগস্তীব, পভাব মুতুল ধীর, वित्रत्न मधुवडांगी मानमवलन, কে জিজ্ঞাসি তাহাদেব কবে সন্থানণ ? সমাকের প্রাক্তভাগে. তানিত অন্তবে লাগে. মেঘে ঢাকা আভাহীন নক্ষত্ৰ যেমন। इंद्या ना जेशांत्र त्मर कृति निवांत्रण, লজাবতীলতাউটি মানস্-রখন ৷

জীবন-সঙ্গীত 🖟 🔅

বলোনা কাত্তব করে ব্রথাজনা এ সংসারে जोवन निर्भात चलन. দারা প্রত্র পরিবাব, তমি কার কে তোমাব. ব'লে জীব কবোনাক্রন্ন, মানব-জনম সাব, এমন পাবে না আর. বাহদখে ভ্লোনারেমন: কাৰ যতুহৰে ভায়, জীবাত্মা অনিতা নয়, অতে জীব কৰ আনকিঞ্ন। কৰোনা স্থের আশ্ পরোনা চ্থেব ফাঁস. कोरत्नव डेल्म् छ। नग्न. সংসাবে সংসাধী সাজ, কবো নিতা নিজ কাজ, ভবের উন্নতি যাতে হয়। দিন যায় ক্ষণ যায়, সময় কাহাবো নয়, ८०८ण भाष्र नावि तरह श्वित. সকলি ঘুচায় কাল, সহায় সম্পদ বল, व्यानु रमन देनवादलब भीता। যুদ্ধ কৰ দুচুপুৰে, সংসাব-সমবাঞ্চনে, ভয়ে ভীত হই(ও) না মান্ব; यात्र याद याक् श्रांत, কৰ যদ্ধ ৰীৰ্ঘ্যৰান. মহিমাই জগতে চল্লভ। মনোহর মৃত্তি হেরে. ওচে জীব অন্ধকারে. ভবিষ্যতে ক'বো না নির্ভন্ন , ষ্পতীত স্থাবের দিনে, পুন: আব ডেকে এনে, চিন্তাক'রে হইও নাকাতব। श्रीध कार्या हु वह, সাধিতে আপন বৃত্ একমনে ডাক ভগবান. नवाज्य की विवरत. সকল সাধন হবে, সময়ের সাব বর্তমান।

ল°ফেলো-র্নিত "পাম আদক লাইফ"এর
আইকরণ।

হয়েছেন প্রাভঃমারণীয়,

মহাজানী মহাজন.

যে পথে ক'রে গমন.

সেই পথ পকা ক'বে, স্থীয় কী ব্রি-প্রকা ধ'রে,
স্মানবাও হব বরণীয়।
সময়-সাগর-তীরে, পদাল অভিত ক'বে,
সামরাও হব হে অমর;
সেই চিহ্ন লকা ক'বে, অন্ন কোন জন পবে,
যশোধাবে আসিবে সত্তব।
ক'বো না মানবগণ, বুগা কয় এ জীবন,
সংসার-সমরাজন-মাঝে,
সলল্ল করেছ যাহা, গাধন কবহ তাহা,
রত হয়ে নিজ কাজে।

পদোর মূণাল।

(5)

পলেব মুগাল এক সুনীল হিগোলে,
দেখিলাম সরোববে ঘন ঘন দোলে—
কথন ত্বায় কায়, কভ ভাসে পুনবায়,
হেলে ছলে আন্দেগাশে তরত্বেব কোলে —
পরের মুগাল এক সুনীল হিলোলে।
উলটি পালটি বেগে স্রোতে ফেলে তোলে—
পদেরর মুগাল এক সুনীল হিলোলে।
একদৃষ্টে কভক্ষণ, কৌতুকে অবশ মন
দেখিতে শোকের বেগ ছুটিল কলোলে—
প্রের মুগাল এক তর্বেব কোলে।

()

সহসা চিন্তাব বেগ উঠিল উপলি . প্য, হুল, জ্লাশ্য ভ্লিয়াস্কলি, অদ্ধের নিবন্ধন. ভাবিয়া ব্যাক্ল মন, অই মূণালের মত হায় কি সকলি গ বালা বাজম্মিলীলা বলবীগা সোতঃশিলা সকলি কি ফণস্বামী দেখিতে কেবলি গ অই মৃণালের মত নিত্রে সকলি। व्यन्ते विद्यांती वात. নাহিক নিস্তাব তার. কিবাপশুপকী আর মানবমণ্ডলী ? লতাপত কীট সম মানবেৰো প্ৰাক্ৰম कान त्कि यद्भ-तल तीश कि नकलि ? . कहे मुगाला में में का कार्य कि नकति ?

(0)

কোথা সে প্রাচীন ব্লাচি মানবের দণ,
শাসন করিত যাবা অবনীমণ্ডল ?
বলবার্থ্য-পবাক্রমে তবে অবলীলাক্রমে
ছডাইত মহিমার কিরণ উজ্জ্ল—
কোথা সে প্রাচীন কাতি মানবের দল ?
বাবিষে পাষাপজ্প অবনীতে অপরূপ
দেখাইল মানবেব কি কৌশল বল —
প্রাচীন মিসরবাসী - কোথা সে সকল ?
পড়িয়া বয়েছে ন্তুপ, অবনীতে অপরূপ
কোথা তাবা, এবে কাবা হয়েছে প্রবল,
শাসন করিতে এই অবনীমণ্ডল ?

(8)

জগতের অলমার আছিল যে জাতি,
আলিল উন্নতিদীপ অকণের ভাতি ,
অত্ল অবনীতলে, এখনও মহিমা জলে,
কে আছে দে নব বল্ল ক্লে দিতে বাতি ?
এই কি কালেব গতি এই কি নিয়তি ?
মাারাথন্ থাম পলি, হয়েছে শাশান হলী,
গিবীশ বাধানে আজ পোডাইছে বাতি,
এই কি কালেব গতি এই কি নিয়তি ?
যার পদচ্চিত্ন থবে অল জাতি দ্য কবে,
আকাশ প্যোধিনীবে ছভাইত ভাতি —
জগতের অলমাব কোথায় দে জাতি ?

(()

দোদিও প্রতাপ যার কোথায় দে রোম ?
কাঁপিত যাহার তেজে মহা সিদ্ধ বোম ?
ধরণীব সীমা যার, ত্তিল রাজ্য অধিকার,
সংল বৎসরাবধি একাদি নিয়ম—
দোদিও প্রতাপ আজি কোথায় দে রোম।
সাহস ঐম্যোয়ার ত্রিভুবন চমৎকাব সে জ্বাতি কোথায় আজি কোথা সে বিক্রম,
এমনি অবার্থ কি বে কালেব নিঃম ?
কি চিক্ত আছে রে তাব ? বাজপথ তুর্বে যা
পৃথিবী বন্ধন ছিল কোথায় সে বোম ?—
নিয়তির কাছে নর এত কি অক্ষম ?
(৬)

আরবের পারত্তের কি দশা এখন ? সেতেজ নাহিক আর নাহি সে তর্জন!

সৌভাগ কেব্ৰুজালে উহাবাই কোনকালে. কবেছিল মহাতেকে পথিবী শাসন। আরবের পাবস্তোর কি দশা এখন। শশ্চিমে হিম্পানীশেষ পর্কে সিন্দ ভিন্দদেশ कारकत यवनतुरम कतिल प्रमन. উলাসম অক আংং চইল পতন। ান ব'লে মহীতলে. ষে কাণ্ড করিলা বলে, (म पिटनर कथा এटर इटाइट अपन। আরবেব উপকাস অন্তত যেমন।

আজি এ ভাবতে হায়, কেন হাহাগলনি কলম্ব লিখিতে কাব কাঁদিছে লেখনী ? এবলে ভবলে লভ প্রমণালের মৃত পডিযা পরের পায় লটায় ধরনী। আজি এ ভাবতে কেন হাহাকারগানি গ **এগতেব চক্ষ ছিল**ু কত বশ্মি ছড়াইল. সে দেশে নিবিড আজ আঁধার বজনী -পর্ণগ্রাদে প্রভাক্ব নিভেজ যেমনি। कि वीर्गा वालवरन সুধকু জগভীতলে. ছিল যাবা আৰু তারা অসাব তেমনি। আজি এ ভাবতে কেন হাহাকাবদান।

(b)

टकांशा वा दम डेक्सांनग्न दकांशा दम टेकलांभ. কোথা সে উন্নতি আশা কোথা সে উল্লাস ১ #ধ্রে বন্ধরুবাপরে বেডাইত তেজভৱে আজি তারা ভয়ে ভীত হয়েছে হতাশ---(काथा वा दम हेन्सानंब दकाथा दम देकनाम १ কত যত্নে কত যুগে বনবাদে কট ভূগে. কাৰজ্ঞী হলো ব'লে কবিত বিশাস---হায় রে দে ঋষিদেব কোণা অভিলাষ ? গে শাস্ত্র সে দবশন. সে বেদ কোথা এখন গ প'ড়ে আছে ইন্দ্রালয় ভাবিয়া হতাশ--काथा वा तम हिमालब काथा तम किलाम ? (a)

নিয়তির গতিরোধ হবে না কি আবে খ উঠিবে না কেচ কি বে উঞ্জলি আবাৰ ? নিধর পারস্য ভাতি গিবীক রোমীয় জাতি ভারত থাকিবে কি বে চিব-অন্ধকাব? শাপান জিলতে নিশি পোহাবে এবার ?

মত্র স্থাপ। প্রিশ্রের খজিয়া নিয়তি কুমে উঠিয়া প্রবল হ'তে পাবে না কি আবে. অই মূণালের মত সহিবে প্রহার ১ না জানি কি আছে ভাবে তাই গোমা এ কালালে মিশাইছে অশ্রুণারা ভব্মেতে ভোমার. ভাবত কিরণময় হবে কি আবোৰ ?

()0)

তোৰ তবে বাদি আয় ফ্ৰামী-জননি, কোমলকুমুম-আভা প্রজ্ল-বদ্নী। এত দিনে বৃদ্ধি সৃতি, দিবিল কালেব গভি হ'লে বঝি দশাখীন ভাবত যেমনি। সভাজাতি-মাঝে তমি সভাতার থনি। **ংলো** যবে মহীতলে রোম দগ্ধ কালানলে. তমিই উজ্জল ক'ণে আছিলে গরণী. বীবমাতা প্রভামনা প্রচিন্যোবনী। ঐগর্যাভাগ্রাব চিলে কভাই যে প্রাসবিলে. শিল্প নীতি নতাগীত চবিত অবনী— তোর তরে কাঁদি আয় ফ্রাদী জননি। বঝি বা পড়িলে এবে কালের হিলোলে, প্ৰাপ্ত মণাল যথা ভব্লের কোলো।

স্বৰ্গারোহণ ৷:

(>)

"থোল থোল দ্বাব পোল জন্তগতি হির্নায় জ্যোতি: যাব" বলিল কভাল. ভাকি অস্কুচবে মুখেতে প্রীতিব ভাব। "সংবরি সংসার. লীলা আপনার. শামগস্দন আদে. সন্তাষি আনেবে. লও রে ভাগাবে, वानी-अल्लान-भारम । পবিত্র কান্ম. কবি-কঞ্জধাম, অমর-ভবনে ধাহা. নিবজন স্থান সদামধ্যর ' দেগা ও উহাবে তাহা;--

মাইকেল মধুস্দন দত্তের মৃত্যু উপলক্ষে।

নয়ন বিস্ফারি অতুল আনন্দে ষাও যাও সবে শাও জভগতি কবি-কুঞ্জপানে চায়। হৃথে বংশীধ্বনি কর, চাবিপাশে বামা কলকণ্ঠ স্ববে স্থলৰ মালিকা কুমুমে গাঁথিয়া মধুব কীর্ত্তন করে, মন্তক-উপরি ধর; ভ্রাণে স্থ্বাসিত আকাশে প্রনে সংসার-কারাতে ভূঞ্জি বহু ছঃধ মধ্র সঙ্গীত ঝরে। শ্রীমধু ছঃথেতে আদে, কবি-কুঞ্জ ধামে যবে উত্তরিলা যশোগীত গাও, ত্বাক্বি যাও শরীরে রোমাঞ্ধরি, জি ল্ও ক্বিকুজবাদে।" শ্ৰীমধুস্দ্দন" "কবি ধল তৃমি (२) ধ্বনিল কানন ভরি। উত্তর-তোরণ খুলিল ছবিতে (8) স্কীত ঝন্ধারে ধায়, ক্ৰিক্জ সেই স্দামধুময় দেবদূত সঙ্গে দিগঙ্গনাগণ সুমিষ্ট সকলি তায়, রঙ্গে যশোগীত গায়। সকলি সুন্দর স্বভাবের গুণে "এস এস স্থংখ বাণী-বরপুত্র ক্ষণে রূপভেদ পায়,--বকের উজ্জল মণি, তহু মনোহর এই ইন্দ্ৰয় হুধাতে পালিত স্বভাবেব শিশু গগন উজ্ঞল কবে, কল্পনা-হীবার ধনি , ক্ষণপরে এই ঝলকৈ ঝলকে স্থমন্ত্রে দীক্ষিত বাল্মীকি হোমর মধুর স্তত্ত্বীধারী, মধুর স্তত্ত্বীধারী, মক্তল-তত্ত্ বিজলী স্হাস ধরে। শরতের শশী অকাল-কোকিল সভত হাদাব স্নীল অম্বে ভাবে. অ-নীর দেশের বারি, কুন্ত্মেব রাশি সভত সুনার ক্ৰিকুঞ্জ-ধামে এস ভাগ্যবান্ ভক্-কোলে কোলে হাসে। চিরস্থথে কাল হর, কুকুমের নীব স্বভাবের গুণে, চির-আকাজ্ঞিত, চিরজীবী হয়ে কীর সম শোভা পায়, জন্মাল্য শিরে পর।" नमी नम वाबि অমৃত সঞ্চাবি, ঘেরিয়া সকলে বলিতে বলিতে প্ৰবাহ ঢালিয়া যায়; নিল মণ্ডলী করিয়া আসি, কম্ম নিবথি জগতে, মধুময় যত দিগক্ষনাদল কুস্থমের দামে, नक नि (मथान करन, শীৰ্য সাজাইল হাসি। আতপ অনল, অশোক বাসনা, (0) গিরি তক বায়ুজলে। কবি-কুঞ্জবনে স্থীগ্ৰ চলে (0) কলকণ্ঠ ঝরে স্থরে, লীলা সাঞ্চ করি হ'লে অব্স কুসুম-বাসিত स्थम यगद ু সুগন্ধ বিতরে দূরে। ঘন-কৃত্ধবনি অহে বঙ্গকুল-রবি, ষত দিন ভবে থাকিব বাঁচিয়া ভ্রমর-ঝঙ্কার ভাবিব তোমার ছবি ;---খামার হুন্দর তান , অফুট কাকলী আকৰ্ণ-পুরিত বেণু-বীণা-শ্ৰুত সেই নেএছ পুলকিত করে প্রাণ। স্ত্ৰংরঞ্জন ভাণ, ভূলে মঠ্যশোক মধুমত্ত কবি মধুচক্র সহ মধুর ভাঙা মধু সে আহাদ পায়, সবল কোমল প্রাণ;

আ'নন-লহবী ভাষার নিঅব শোভিত আশার ফলে. উৎসাহ-ভাগিত বদন-মণ্ডল পঞ্জ-বান্ধব কুলে; বীর অবয়ব. বীরভাষা-প্রিয় গউড়-সন্ততি-দার, প্রিয়ংবদা স্থা প্রণয়ের তক কামিনী-কণ্ঠের হার; সiহিত্য-ক্সমে প্ৰমন্ত মধুপ. বঙ্গের উজ্জ্বল রবি: তোমার অভাবে দেশ অন্নকার শ্ৰীমধুস্দন কবি।

(%)

গেলে চলি মধু কাঁদায়ে অকালে পাইয়া বছল কেশ. কিপ্তগ্ৰহ**প্ৰা**য় ধরাতে আসিয়া জলিগা হইলা শেষ: ছিলে উদাদীন. र्गाल डेमानीन. জন্মাল্য শিরে পরি. অনাথ ছটিরে কার কাছে বল গেলে সমর্পণ করি: ভেবেছিলা জানি তুমি গত যবে গউড়-বাসীরা সবে. অনাথপালক. তোমার বালক অক্তে তুলিগা লবে; हरव कि रम मिन এ গৌড-মাঝে পুরিবে তোমার আশা ? বুঝিবে 奪 ধন দিয়াছ ভাণ্ডারে, উজ্জল করিয়া ভাষা! হার মাভারতী চিরদিন তোর কেন এ কুখ্যাতি ভবে। रा अन रमविदव ও পদযুগল (मई (म पत्रिज इत्त ।

বিভাসাধর।

(রচম্বিতা কর্ত্তক পরিবর্ত্তিত

(5)

ফুরাল বন্ধের লীলা-মাহান্ত্র্য দক্তি—
হরিল বিভাগাগরে কাল মহাবলী।
হারালে যা বদভূমি, পুলবত্ত্ব আজ,
বিশীর্ণ বিমর্থ ভ্রংবে বঙ্গের সমাজ!
কি মহা প্রাণ ল'ঙ্গে জ্লেছিল ধীব,
কিবা বিভা—বুদ্ধি-প্রভা—করণা গভীর।
বিভার সাগব গ্যাতি—আবো মনোহব
বিশাল উদাবিভিত্ত দ্যার সাগর।—
তেমন সন্তান মা গো কে আর তোমাব গ্

কাঁদিছে হের গো তাঁবে করিয়া অরণ,
দরিত্র কাশাল হংথী কত শত জন;
কো আর দিবে আর—কে ঘৃচাবে হুণ,
দরিত্র হংথীরে হেরে কে চাহিবে মুধ!
কত রাজা রাণী আছে এ রাজ্য-ভিত্তর,
কাশালে করিবে আর কেবা সে আদর!
মানব-দেহেতে সেই দরা মূর্তিমনে,
সার্থক তাঁহারই জন্ম বশঃ কীর্তিমান্—
প্রাতে নিত্য অরণীয় যাঁব গুণগান!

(৩)
আপনার বেশ-ভ্বা সামাত আকার,
দেখিলে পরের হুঃখ নেত্রে জলভার !
সমাজ-পীডিত জনে করিতে মোচন
জীবন উৎসর্গ নিজ করিল যে জন,
সমাজ-পীড়িত জনে করিতে উদ্ধার;
আপনি সহিলা নিলা কত তিরস্কার;
ঋণে বদ্ধ অবশেষে তবু দৃঢ় পণ,
সকল-সাধন কিংবা শরীর-পতন—
এ হেন মুপুরুষ-সিংহ জ্বেম্ম মা ক'জন দ

(৪) অবিতীর বাকালা-ভাষার শিক্ষা-গুরু-— বর্ণমালা হ'তে বক্স-সাহিত্যের তরু অহন্ত-অর্জিত ধার, ধার প্রতিভার উজ্জ্বল বাকালা ভাষা প্রথব প্রভার।

वालक दृष्कत मृत्थ नाम सदत सदत, भीव**स स्**ठित कौर्खि त्रदव सांत्र शदत । উপাধি উল্লেখ যার নাম পরিচয় , ধন্ম বঙ্গমাতা গর্ভে ধর এ তন্য় !— কর্ডিফ্ কার এত কালবক্ষোময় ? (৫)

খাধীন খতস্ত্র চিত্ত কাহার তেমন ?
দর্প নিতীকতা বীর্যা— যে কিছু লক্ষণ
তেজীয়ান পুরুষের সবই ছিল তীর।
তৃণজ্ঞান পদমান অবজ্ঞা যেথায়—
খেতাল-প্রমাদ(ও) গর্বের ঠেলিত হেলার!
হেন পুত্র হার মাতঃ, হারালে কোথার?
হারালে কোথার পুত্র হেন পুণ্যতম,
আাল্লা বীর সত্য আর সাধুতা-আশ্রম—
হদর বাহার দরা—সাগরের সম।

প্রচণ্ড উত্তাপ-দম্ম ভারত-গগন
সকলি অসাভ তার নিম্পান বেমন,
ছক্ষর কলির দর্শে – ধন উপার্জ্ঞন।
আর পদ-অবেষণ, শুধুই এখন
কার্য্য ভূ-ভাবতমাঝে — তবুও বে আজি
তাহার ভিতরে দীপ্ত করিছে সমাজ,
মহাপ্রাণ—ছই এক—বিহাৎ বেমন
চকিতে চমকি দিক্ করায় দর্শন,—
বে বিধাত: সে কি ওহে ভাবী ফুলফণ দ

এ হেন অদিনে অনি অতি হ: থিকুলে,
আপনার কীর্ত্তিধজা নিজ হত্তে তুলে,
পবিত্র করিয়া তায় জগৎ-পূজায়,
স্থাপিলে শিধর-পরে সমাজ-চূডায়,
অসামান্ত থিজবর!—তব দেব-দেহ
মহণেও বঙ্গবাসী ভূলিবে না কেহ।
অমর তোমার সেই থর্ব দেহ-ঠাট,
সেই দ্যাপূর্ব নেত্র—বিশাল ললাট!
বলের ক্রদয়ে নিত্য করুণার পট!
দ্রিদ্র-সন্তান হ'য়ে জিনিলে স্মাট্।

কোন একটি পাখীর **এ**তি।

ডাক্রে আমার পাথী ডাক্রে মধুর। শুনিয়ে জুড়াক প্রাণ, তোর সুল্লিড গানু, আন্মেতর ধারা সম পড়িছে প্রচুর। আবাৰ ভাক বে পাণী ভাক বে মধুর। বলিয়ে বদন তুলে, বসিয়ে রদাল-মূলে দেখিত উপরে চেচেয় আশায় আত্র! ভাক বে আবার ভাক সুমধুব স্থর।

(?)

কোধার ল্কায়েছিলি নিবিড় পাতার,
চকিত চঞ্চল আঁথি না পাই দেখিতে পাথী,
আবার শুনিতে পাই সনীত শুনার।
মনের আনননে ব'দে তকর শাধার।
কে তোরে শিথালে বল এ সদীত নিরমল?
আমার মনের কথা জানিলি কোধার
ডাক্ রে আবার ডাক্ পরাণ কুড়ার!

(0)

অমনি কোমল খবে দেও বে ডাকিত,
কথন আদৰ ক'বে কড় অভিমানভৱে,
অমনি ঝকার ক'বে নুকারে থাকিত,
কি জানিবি পাথী তুই কত সে জানিত!
নব অফুরাগে যবে ডাকিত প্রাণবল্লভে
কেডে নিত মন প্রাণ গাগল করিত;
কি জানিবি পাথী তুই কত সে জানিত!

(8)

ধিক্ মোরে, ভাবি তাবে আবার এথন!
ভূলিয়ে সে নব রাগ ভূলে গিয়ে প্রেমরাগ,
আমারে ক্ষীর ক'রে আছে সে থথন,
ধিক্ মোরে ভাবি তায়ে আবার এথন!
ভূলিব ভূলিব করি তবু কি ভূলিতে পারি
না জানি নারীর প্রেম মগুর কেমন;
তবে কেন সে আমারে ভাবে না এথন!

(()

ডাক্রে বিহগ তুই ডাক্রে চতুর,
ভাজে শুর্ দেই নান, প্রা তোর মনস্থ ন
শিবেছিদ্ আর যত বোল স্থম্বুর,
ডাক্রে আবার ডাক্ মনোহর স্থর!
না শুনে আমার কথা, তাজে কুস্মিত ল:।
উড়িল গগন-পথে বিহগ চতুর;
কে আর শুনাবে মোরে দে নাম মধুর?

প্রিয়ত্তমার প্রতি।

প্রেম্বাস রে. অধীনেরে জনমে কি তাজিলে? কত আশা ভালবাসা সকলি কি ভলিলে ? ष्यहे (मथ नवघन, গগনে আসিয়ে পন: মৃত্যুত্ত গরজন ওক ওক ডাকিছে. দেখ পুনঃ চাঁদ আঁকা. ম্যর খলিয়ে পাখা. কদম্বের ভালে ভালে কুতহলে নাচিছে। পুনঃ সেই ধরাতল, পেয়ে জল স্থাতিল. মেছ ক'বে তণদল বকে ক'বে রাখিছে. হের প্রিয়ে পুনরায়, পেয়ে প্রিয় ব্রষায়, যমুনা-জাহুবী-কামা উথলিয়া উঠিছে। চাত্তক তাপিত-প্রাণ, পুলকে করিয়া গান. দেখ রে জলদ-কাছে পুনরায় ছটিছে। প্রেম্বসি রে স্থগোদয়, অধিল ব্ৰহ্মাণ্ডময় কেবলি মনের হঃথে এ পরাণ কাঁদিছে। (2)

অই পুন: জলধরে বারিধাবা ঝরিল। লতায় কুমুমদলে, পাতার সবসী-জলে. নবীন তণের কোলে নেচে নেচে পডিল। শ্রামল স্থানর ধরা, শোভা দিল মনোহবা. শীতল সৌরভ-ভরা বাসে বাযু ভরিল। মরাল আনন্দ-মনে. ছটিল কমল-বনে. **क्ष्म मुनान मन शीद्य शीद्य जनिन.** বক হংস জলচর. ধৌত করি কলেবব কেলি-হেতু কলরবে জলাশয়ে নামিল। मामिनी स्मापत कारन বিলাসে বদন খোলে ঝলকে ঝলকে রূপ আলো ক'বে উঠিল। এ শোভা দেখাৰ কারে, দেখায়ে সস্তোষ বারে. হার সেই প্রিয়তমা অভাগারে ত্যজিল।

(0)

তাজিবে কি প্রাণস্থি তাজিতে কি পারিবে ?
কেমনে সে ক্ষেহলতা এ জনমে ছিঁ ডিবে ?
সে বে ক্ষেহ সুধামর
প্রকৃতি পরাণ মন কিনে তাহা ভূলিবে ?
আবার শরৎ এলে, তেমতি কিরণ চেলে,
হিমাংভ গগনে কি রে আর নাহি উঠিবে ?
বসন্তের আগমনে, সেরপ সন্ধার সনে,
আর কি দকিণ হঁতে বাগু নাহি বহিবে ?

আর কি রজনীভাগে, সেইরপ অহ্বাগে কামিনী রজনীগদা বেল নাহি ফটিবে ? প্রাণেষরি ! পুনর্কার, নিশীথে নিজন আর ধরাভল সেইরপে নাহি কি রে থাকিবে ? জীবজন্ধ কেহ কবে কথন কি কোন রবে, ভূলে অভাগার নাম কঠেতে না আনিবে ? প্রেয়সি বে মুধামম্ব সেহ ভূলিবাল নয়, কাদালি কাদালি শুরু পরিধামে জানিবে ।

অই দেখ প্রিয়তমে বারিধারা ঝরিল। শরতে অন্দর মহী স্থামাথি বসিল। হরিৎ শক্তের কোলে मिथ दब मक्षती (मोरन তমুচ্ছটা তাহে কিবা শোভা দিয়ে পডেছে। বহিলে মুত্ৰ বায়, ঢালিয়া ঢালিয়া তায়. তটিনী তরঙ্গ-লীলা অবনীতে খেলিছে। গোঠে গাভী বুষ দনে, চবিছে আনন্দ-মনে হরষিত তঞ্লতা ফলে ফুলে সেঞ্ছে; সরোবনে সবোকহ. কুম্দ কংলার সহ শরতে স্থন্দর হ'য়ে শোভা দিয়ে ফটেছে। আচ্মিতে দরশন, ঘন ঘন গরজন, উডিয়ে অম্বরে মেব ডেকে ডেকে চলেছে। প্রেয়সি রে মনোহরা এমন স্থাবের ধরা, বিহনে তোমার আজি অন্ধকার হয়েছে।

()

আহা কি সুন্দর বেশ সন্ধ্যা অই আইল। ভাঙ্গা ভাঙ্গা মেঘগুলি ভামুর কিরণ তলি পশ্চিম-গগনে আসি ধীরে ধীরে ছাইল। অন্তগিরি আলো করি. বিচিত্র বরণ ধরি বিমল আকাশে ছটা উথলিয়া পডিল। গোধলি-কিরণ-মাথা গুহচ্ডা ভকশাখা প্রেম্বসি মে মনোহব মাধুবীতে পূরিল। कानश्विनी शीवि शीवि হয়, গজ, তক, গিরি আঁকিয়ে স্থলর করি ছডাইতে লাগিগ। দেখ প্রিয়ে সূর্য্য-আডা গঙ্গাজলে কিবা শোভা স্বর্ণের পাতা বেন ছড়াইয়া পড়িল। কুষক মঞ্চেব পরে, উঠিল আনন্দ-ভরে. চঞ্গুটে শস্তাধ'রে নভশ্চর ফিরিল। এ সুগ-সন্ধায় প্রিয়ে, मार्थ जनाक्षमि पिरम् শ্র-মনে নিরাসনে এ অভাগা রহিল।

()

আজি এ পূর্ণিমা-নিশি প্রিয়ে কারে দেখাবে. কার সনে প্রিয়ভাষে দেহমন জুড়াবে ? পূর্ণবিম্ব মনোহর, এখনি যে সুধাকর. পুর্বাদিকে পবকাশি স্থারাশি ছড়াবে। এখনি যে নীলাম্বরে. খেতবৰ্ণিরে থরে. আসিয়া মেথের মালা স্থাক্তে সাজাবে। তক গিরি মঙীতল. শিশির আকাশ জল ठांटनर कोमुनीमाथा कादत आखि टनथाटत. প্রেম্বসি অঙ্গুলি তুলি কুমুম-কলিকাগুলি, শিশিরে ফটিছে দেখ কারে আজি স্থাবে— "অই দেখ চক্ৰবাক. ডাকে অমঙ্গল ডাক" ব'লে স্থাইবে কারে কে বাসনা পুরাবে ? करत्रिक (गरे कन. তহ্ন মন সমর্পণ. তারে কাঁদাইলে, হায়, প্রণয় কি জুডাবে?

কুহুসার।

অই কুছরিল পিক ললিত উক্তাদে। হিমশ্বতু অবসান, সাক্ল পাখীর প্রাণ হৃদয়ের বেগ তার হৃদি-তটে রয় না।— হায় বদ-হৃদি কেন অইরপে বয় না।

কি কুছ ডাকিল পাথী বলিতে না পারি! প্রকৃতি কুন্তল মাজি, নব কিশলয়ে সাজি, হাসির তরক তোলে, অধ্রেতে ধ্রে না!— অমনি হাসিতে বক্ষবাসী কেন হাসে না?

ভনিতে সে মধুমর কোকিল-কাকলী, অচেতন মলয়-বায় সেও রে ছুটিল হায়! ছুটিল কুকুম-রেগু, সেও ধৈগ্য মানে না। অমনি আবেগ-স্বোত বঙ্গে কেন ছোটে না?

তৃমিও কি সরোবর অই কুছখরে
চলেছ লহরী তুলে, মুগুরিত তকমুলে,
উত্তলা প্রাণের কথা জানাতে তাহার ?—
বলের নাহি কি আশা জানাতে কাহার ?—

কল কল কল খবে তুমি, প্রবাহিণি,
ছুটেছ সাগর-পাশে, মাতিয়া কি অই ভাবে,
বলোনা লোকি আমাবেদ গুবলোদে কাহিনী,
শুনায়ে আচল বলে কর চিরঞ্জী।

ক্ষডে চেতনের ভাষা বুঝিয়া চেতিল
কি বলিছে কুছখরে কে বুঝারে দিবে নরে,
ধরণী চঞ্চল করে কি কথা এমন কৈবনের পাথীব খবে চকিত ভ্বন
নাহি কি এ বলে হেন কোন প্রা
স্থারি আশায় লতা, ভনায় অম
অমনি নিগুচভাবে ?—নাহি কি
হৃদর-ক্ষেপানো ক্যা কাহার(ও)
হালি কালা কি উলাস নাহি কি
কাহার (৩) হৃদরমাঝে, অমনি ধ্বনিতেবা।
বদের অস্তর ভেনি উচ্ছাস তুলিয়া ?

হাদে, কাঁদে, ভাসে বদ উৎসাহে ডুবিষ
কে আছে হে ক্বিক্লে গভীর-দৃদ্ধ :
গাও একবার শুনি, জীবন নার্থক :
অমনি মধ্র খরে গভীর উচ্ছাদ,
ঘুচায়ে এ গউডের প্রাণের হতাশ!

উচ্চতানে বদপ্রাণে মিশাইরা প্রাণ, প্রাচীন যুবক জনে, সাও হে আশার বৃদ্ধ উন্মত্ত করিয়া গানে কুহক দেখাও ;— প্রভাতের জ্যোতি বদ-নিশিতে বিশাও।

বধির বলের শ্রুতি শুনাও বিদায়ি,—
পরস্পারে রাখি ভর পাষাণে পারাণ ব
কিরুপে "মিশর-শুন্ত" মিলনের জোরে
বিরাজে অনন্ত কোলে বিনা অস্ত ভোগে

ভ্ধর করিছে চ্ব সিন্ধুর সলিল ক্রিন্ট বল হে কিসের বলে, সে সলিলক্ষ্ট চলে, দিন দিন পলে পলে—না হয় শিধিল! জলে জলকণা বাঁধে কি গভীর বিল!

কার হৃদে বদে হেন তরক থেলায় ? ৄ দেখাও হৃদর খুলে, গউড় ঘাউক খুল সে তরক-মোত মিলে ভাস্কক ডেমড়ি ভনে ও কোকিলগনি প্রকৃতি বেম

না যদি ভাসাতে পার উৎসাতে কো হাসাও হে বলে তবে, নিগৃচ বছর বজ-হদরের বিলা করি উল্লোচন । হাসিলে পাসরে ব্যথা গোলামেব ধে রসে হাসাতে পার হাসাও উচ্চেতে;
বেন সে হাসিব সনে, হাসে সব জলাননে
হাসে যথা ক্তম্বরে মহী পাগলিনী—
কে জানো হে বৃদ্ধ-কবি, গাও সে কাহিনী।
বে হাসি-মণুতে নাই বাসির আঘাণ,
সৌরভে পরাণ ভবি, হোটে জীবনের তরী
বে হাসি-ডবলে ভাসি কালের পাথাবে।—
ভাসিত বে হাসি "রোম" "হরেসের" তারে।

বে হাসিতে প্রভাকর উজলি গগন, প্রাবৃটের কাল ঘন করে প্রিয়দরশন করে চাক গুলা তক গহরে কানন— তেমতি হাসিতে ফুল কর বঙ্গ-জন।

না য'দ হাদাতে পার সে গভীর বেংগ, গাহিলা করুণ ববে, পরাণে কাঁদাও দবে বদবালার বৃদ্ধ যুবা শিখুক কাঁদিতে— হুদি ভ'রে জীবনের উচ্ছাদ তুলিতে।

ভেবো না হে বঙ্গনারি নিবারি তোমায় পাতিতে সে চাক্টাদ—নেত্র-কোণে অর্দ্ধ-ছাদ অন্ত অর্দ্ধ ওঠাধরে মধুব মেলানি! সে হাসির অমিয়তা ভেবো না না জানি।

ভেবো না তকণ যুবা কিবা হে প্রাচীন, নিবারি ভোমায় তাহা নিতা তুমি হাস যাহা সে হাসি হাসিয়া তব পরাণ জুড়াও, যুবতী প্রামীণ। কিবা কিশোবে ভূলাও।

তেব না জানি না জামি কিবা সে মধুব শিশু, অধরতলে হাসিব অমিয়া ছলে ঢালে যাহা ধরাতলে জীবন জীয়াতে। ঢেলেছি দে সুধারাশি ভাগিত হিয়াতে।

জেবো না জানি না বদ্দ কাঁদে নিরস্তর। জাপন জাপন তরে ক্ষুদ্র শৌক-ভাপভরে ব্যরে ব্যরে ভাগা ভাগা কত নীর-হার! বঙ্গেতে আছে হে জানি শৌকের স্থার।

া না চাহি সে কারা হাসি সে উৎসব-রোলে,
মাদকতা নাহি তার বহুগার না চলার
স্কন্য-পাথার তার উথলিত হয় না !
দেবথাতে বিনা গ্রীমে স্লিঞ্চ নীর বয় না।

অসার নিঃশ্রোভ এই বদের ছদম ! হাসিতে কাদিতে প্রাণে গভীরতা নাহি লানে না লানে উৎসাহ্বাণে প্রাণের প্রলয়। জগৎ-ভাসানো বেগ বদেতে কোথায় ?

বহে যদি সে তরঙ্গ কাহারও গ্রুদের, গাও হে তবে সে গীত ভনারে কর জীবিত, নিঃমোত বধের স্কদি মোতেতে ডুবাও— বহস্ত রোদন কিংবা উৎসাহে ভাসাও।

এস ভ্রাতঃ কবিকুলে আছ কোন্জন!
ভন হে গণ্ডীর খর কি ঝরিছে মনোহর
কোকিলের কুহুরবে !—জমনি কীর্ত্তন
না শিথিবে খত দিন ছেডোনা বাদন।

হে কামিনীকুল, মৃত ব**দের পী**যৃষ ! কব পণ শিথাবারে পতি-পুত্র তনন্নারে সফল করিতে এই কবির স্বপন— রেখো মনে ভৌপদীর বেণী-বাধা পণ।

তুলো না ও রুহুষর তুলো না আমার ! জনরে সাথিয়া মালা দিলাম বৈশাখী ডালা বাদি ব'লে অনাঘাত ফেলো না ইহার।— হার বে নবীন দাম বঙ্গেতে কোথার !

হে বসদর্শন-প্রিয় ভামিনী বতেক ! কারে সমোধিব আর লইতে এ উপহার বাকা টাদ থাকা যার হৃদর-রাকার সমর্পিব ভাবই করে অরিয়া সবার — ভূলোনা ও কুত্রব—ভূলোনা আমামায়!

कमल विलामी ।

काहा मित्र किया प्रमिश्च समय

स्थ्य स्थान-लहती !

नवीन প্রদেশে नवीन গগন,

स्थ्य मध्य भीडल थयन,

मत्राम मत्रम नीतन-वहन,

मत्राम स्वार विहति ।

কত সরোজিনী সরোবরপবে, পরিমলময় সদা নৃত্য করে, ফুটে ফুটে জলে শত থরে থবে, অপুর্বা সুবাস বিতরি।

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

সবোবর-ভীরে ভাগেতে বিহন্তর. ভ্ৰমে কত প্ৰাণী হেরে সে কমল. পরাণ শরীর স্থবাদে শীতল বাজায়ে বাজায়ে বাশরী।

ল্মে কত সুথে কত সে আনন্দ. ্যন মাতোয়ারা লভিয়া স্থাক, সরোবরে পশি পিযে মকরন্দ---চিন্তা শোক তাপ পাসবি।

ভাঙ্গে পদাকলি ভাঙ্গে পদানাল, ঢালে পদ্মধু পূর্ণ করি গাল; ভথবে সুরুস নবীন মুণাল কতই বতনে আহরি।

আনন্দে বিঘোর মধুমত মন ভ্যান্তে বারি পুনঃ উঠে কতকণ তীবে বসি ধীয়ে সেবে সমীরণ— জদয়ে স্থাথের লহরী।

পুন: গিয়া জলে ভোলে প্রদল. কোরক বিকচ নলিনী অমল: মকরন ল'য়ে ঢালে অবিরল পুরিয়া পুবিয়া গাগরী।

भून: উঠে তীরে মৃত্ মন বার, ধীরে ধীরে সব তরুতলে যায় নিকুঞ্জ ছাডিয়ে তথন সেথায প্রবেশে কতই সুন্দরী।

মধমাঝা হাসি বদনে বিকাশ, পলমধু বাদে পরাণ উলাদ, পদামণ পিয়ে মিটায়ে পিয়াস-কবলয়ে বান্ধে কবরী।

বিছায়ে কোমল কমল-পাতান. সুশীতল শ্যা ভূতলে সাজায, চাক্র মনোহর উপধান তার .গথিত নলিনী-মঞ্জরী।

তক্তলে তলে হেন মনোহর কমলের শ্যা কোমল স্থার ঃ চুগুফেননিভ সুচাক অব্বর (धन (त (मिनी-शति । এরপে পাতিয়া কুমুম-শ্যন, হাসিয়া হাসিয়া বিলাসিনীগণ. হ্বদয়বল্লভ পারশে তথন

ছডায় বিলাদ-লছকী

কেহ বা পুলিয়া গ্রীবার ভ্ষণ, হেমময় মালা জড়িত রতন, পরায়ে প্রিয়েরে করিয়া যতন. থেলাৰ ন্যন-মুক্ত

অলকার চল কেহ বা থুলিয়া জড়ায়ে জড়াযে বিননি গাঁথিয়া. ব্যুবে বাধ্যে সোহাগে গলিয়া. অধরে হাসির মাধুরী;

কেহ বা আপন নয়ন-অঞ্জন তুলিয়া বিলাদে করে বিলেপন প্রিয়-আঁথিপরে - সলজ্জ বদন, **ठक्षण वमान मःवद्धिः**

কোন বা ললনা ছলিয়া চাত্রে. রাঙ্গা পদ তুলি প্রিন্হদিপরে, অলজনাস্থনে দেহে চিচ্চ করে. জানাতে প্রেমের চাকরী।

এক্লপে বসিয়া যভেক ললমা 😹 হাব ভাব হাসি প্ৰকাশে ছলঞ্চী কেছ বা শিবরে কোন বা অঙ্গনা. চরণ-পারশে এই হী।

বসিয়া এ ভাবে যতেক স্থল মধর ললিত মধুর বাঁশরী সুরেতে বাধিয়া আলাপ আ পুরিছে পল্ল

সে সুরতরক মিলিয়া তথম উঠিল সঙ্গীত পুরিয়া কানম খ্যামা কলকণ্ঠ শারী অগণন "বউ কথা কও'

উঠিল ডাকিয়া পুরি চারিদিক জগৎ সংসার করিল অবলীক. বেণু-বীণা-রব হ'তে সমধিক মধুব গীতের শ্লুছা বালতে বালিছে—"কিবা সে সংসাব" কোকিলা ভাষিছে—"সে সব মিছার" "খ্ৰম আশা অম—সকলি অসার" প্ৰতিধানি উঠে কুহরি;—

"কি হবে জীবনে প্রেমের আ্লামোনে, পরাণ যদি না মাতে। রসের বাগান — সংখ্র স্পেনী— নারীকুল কুটে তাতে।

বে জন মথিবে এ স্থ-জলধি
দেই দে পীমূল পাম,
সধ্যের বাগান— স্থবের মেদিনী
বদের বেসাতি তার।

"হার সে পীযুব! কিবা তার সম
ভাব রে ভাবক মনে।
হার, ধন, মান, ধশ—প্রাণেব নিগড়,
কণ্টক আশাব বনে।

এ যে স্বথের ধরণী! ভাবনা হতাশ ইহাতে নাহিক সাজে, হেথা প্রাণের সাবস্ব, প্রমোদে মাজিলে তবে সে আনন্দে বাজে।

শুধুরসিক যে জান রসের ধরার দেই সে হরব পাল, ভূবে নারী স্থাক্পে, লভে প্রেমফ্ধা, বিজ এই গীত গাল।"

> বিহণ, বিটপী, বাঁশরী, বীণাতে , এই গীত শুধু বরিষে প্রণাতে ; প্রকৃতি বা যেন মাতিল তাহাতে বিস্থাদি বেশের চাতুরী।

চাক কিশলর হইল বিকাশ; তক্ষরাজি-কোলে মৃত্ন মুহ শ্বাদ কুম্ম-চূধিত মলয়-বাতাদ লতিকা উঠিল শিহরি;

তুনিয়া কলাপ মদন-বিধুর নাচিতে লাগিল উন্মন্ত ময়ুর; নবীন জলদ নিনাদি মধুর গগন রাথিল আবরি। গাঢ়তর আবেৰা বাজিল বাদন, গাঢ়তর আবেরা গীত বরিষণ, গাঢ়তর বেশ আবেরা সে ভূবন— আঁখারিল ষেন শর্মবী।

যত তক্ষ ছিল পড়িল লুটিয়া, বিটপে বিটপে লতা বিনাইয়া, করিল মণ্ডপ, কুম্বনে ড্বিয়া নীরে নালে যুতু মর্মবি।

মণ্ডপে মণ্ডপে মৃগল মৃগল, স্বতন্ত্রা অলমে শরীর নিচল, পড়িল পরাণী—অসাত সকল — স্বিল চেতনা সংবরি 1

একাকী তথন ভ্ৰমিছ সে দেশ; চাঝিদিকে খালি হেরি চাক বেশ কমল-সরসী, কোমল প্রদেশ রাজিছে ভতল-উপরি।

পাতিয়া নলিনী যত প্রাণিগণ সরোবরতীরে স্থেপ নিমগন, কেবল নিরপি, যতই ভ্রমণ করি দে অপূর্ব্ব নগরী।

यडक्षड् भीरत जरम आरम योज— প্রাবৃটের কোলে নিদাঘ জ্ডার, প্রাবৃট আবার শবতে লুকার, হাসিল শাবদ শর্করী।

শিশিরের কোলে হিম-ঋতু আদে, নিশি-অঞ্জলে তকদল ভাদে , তথন(ও) উন্মত অচেত বিলাদে যতেক নাগব নাগরী।

বত দিন কুণা জঠবে না জলে দেইভাবে তারা পড়িয়া ভূতলে অচেডন-চিতে থাকয়ে বিহ্বলে জগত-সংসার পাসরি।

বদন্ত ফিবিষা আইলে আবার, জাগিনা করত্বে মূণাল আহার, কমল-পীযুৰ পিনে পুনৰ্কার গড়মে চেতনা সংবরি। কত যে আনন্দে প্রকৃতি থেলায ঋতুতে ঋতুতে ঘটনাছলায়।— নাহি জানে তারা—দিবস নিশায খভাবের কত চাতুরী।

মাহি জানে কিবা খোরতর স্ব^থ! খোরতর ষবে প্রকৃতির মুথ খনঘটাজালে—পতন উন্মুখ বিজ্ঞাী বেড়ায় বিচরি।

না ব্ঝিতে পারে কি তেজ তথন। গগনের কোলে যবে প্রভঞ্জন চলে দম্ভ করি ছাডিয়া গর্জন— নাচায়ে প্রকৃতি সুন্দরী।

তথন হৃদয়ে সে ভাব গভীর করে আন্দোলন, অধীর শরীর,— না জানে তাহারা, না ভাবে মহীর কত সে ঐষ্ধ্য-লংৱী।

বে ভাৰ প্রশে প্রাণে পুষ্প ফুটে থাকে চিরকাল প্রাণিচিত্তপুটে নিত্য পরিমল নিত্য বাহে উঠে জগতে স্ঞারি মাধুমী;—

ষে ভাব পরশে মানবের মন, বেড়ায় জগৎ করি বিদারণ, করে তেজোজালে পৃথিবী দাহন, মৃত্যুর মূরতি বিশ্ববি;—

না পরশে কভ্ তাদের পরাণ, জীবন কাটার করি মধুপান , নারীগত মান— নারীগত প্রাণ— নারী-পাস ধরা চাকরী।

এইব্লপে হেরি সে চারু অঞ্চল ; গেল কত কাল ভ্রমেতে কেবল , শেষে যেন প্রাণ হইল বিকল ভাবিয়া সে ঘোর শর্কারী।

ভাবিষা হদমে উদর ধিকার নরজাতি বৃঝি নাহি হেন আর ? ধৃ ধৃ করে শৃ**ডে পু**রাবৃত্ত বার— হেরে উঠে প্রাণ শিহরি। কালচিত্ৰপটে যদি ফিরে চার গুফুৰত্ত ধন কি দেখিতে পার ? কিবা সে সম্ভেত আছে বে কোথায় ভ্রমিতে সংসার-ভি∰ি

পিতৃকুলগত কোন্মহাভাগে দিয়েছে সুমন্ত্ৰ গুনে অনুরাগে পুনঃ জীয়ে প্রাণ, পুনঃ ছুটে আকে ভবিষ্য তরকে উঠির ট

নরজাতি ষত হেব ধরামাঝে সকলেব চিহ্ন কালবক্ষে সাজে নির্থিলে তায় হৃদি তন্ত্রী বাজে, কুধা তৃষ্ণা যায় পাসেয়ি 🎉

এ ছার জাতির কি আছে তেমন, কালেব কণালে সঙ্কেত লিখন ? অপূর্ব্ব কিবা সে নৃতন কেতন উড়িছে ভবিষা-উপন্ম

ভাবিতে ভাবিতে কত দ্র(ই) বাই বি পুরী-প্রান্তভাগ নির্বিতে পাই— তেমতি সরস কোমল সে ঠাই, সজ্জিত পল্লবেল্লরী

প্রাণিগণ দেখা করিয়া বিলাস, তেমতি আকৃতি প্রকৃতি আভাস, সেই নিল্রা ঘোর তর্মতলে বাস, সেইক্সপে নার্মীপুর্মারী

সেখানে রমণী আবো অচত্রা, ই জানে কত আবো ছলা মধুরা, সদা মনে ভন্ন পাছে সে বঁধুরা ছাড়িয়া পলায় নাগ্রা।

কাছে কাছে আছে দোনার পিপ্লব, সূবৰ-শিকলি শতেক লহব, বদি কেহ উঠে তনে অন্ত খব বিলাস-প্রমোদ শুর্মির

তথনি তাহারে বাধিরা শৃত্যলে,
অমনি পিলরে পুরে কত ছলে,
কত কাদে প্রাণ তাসে চকু লগে,
তবু নাহি ছাড়ে স্বলে

দেখ কাঁপে প্রাণ ভেবে সে প্রথায়, ভাবি কেন হায় প্রবেশি কোথায়, কিন্ত্রপে বাঁচিব করি কি উপায়, কিন্তুপে ছাড়ি সে নগরী।

হেন কালে দেখি বিজ্ঞারি নয়ন, বিজ্ঞারে বিমুদ্ধ সেই প্রাণিগণ, আমারি খনেনী—নহে সে খপন !— ধেলিছে বলের উপরি !— আহা মরি কিবা দেখিত ফুলর অপুর্ব্ধ খণন-লহনী !

সংগার

সংসার, তোবে বে আমি ভাবি কি প্রথায় ? সংসার অসার এই সংসারে কিছুই নেই সংসার বিবের তক হুংখঘলমর ! কেছ বলে এই নার এই ছাড়া নাই আর এই কয় অক্ষরেই লগত জুড়ায়! সংসার, তোবে বে আমি ভাবি কি প্রথায় ?

গোর সকলি তুল সংসার পাণের মূল সংসার ত্যজিলে জীব মুক্তিপদ পায়; নি কোন শালুমুথে, কোন বা শালের বুকে, সংসার, প্রথব লেখা সোনার পাতায়! সংসার ডোবে রে আমি ভাবি কি প্রথায় ?

ধাতার বত লীলা, তোরই কোলে ছডাইলা তুই নাথাকিলে ফ্টিজডণিঙ্মর। ংবিনা এ আবালা শৃত থালি পরকাশ এ ফ্রানক্ষত টাদ প্রাণ্যুক্ত হয়! ৪০ স্বানক্ষত টাদ প্রাণ্যুক্ত হয়!

ানে রে তোর ঘটা সেথানেই দেখি ছটা এই মাঠ এই বন এই মরু-গাম! রে নগরতলে, তোরই সে তুফান চলে নর-কল্পানের কামা কত ভাসে ভার. ংসার, তোরে রে বল্ ভাবি কি প্রথাম? তোরই ষড় রস-জলে ধবণী ভাদিয়া চলে তোবই ফলে ফলময় আকাশ ভ্তল। তুই বে মোহন বাঁশী তুই বে প্রকৃতি-হাসি जुरे रव अकारे अहे की वन-मधन। কি ভাবে সংশার তোবে স্থাই রে বল গ তুই নরকের পথ তুই পুনঃ স্বৰ্গপথ ইহ-পরলোকে তুই নিত্যের স্বরূপ, সদসং যত আব তড়িচ্ছটা কলনাব. তুই বে স্থার হুদ তুই বিষক্রপ। সংসার, তোরে রে আমি ভাবিব কিরূপ ? ভাজিয়ে সংসার তোরে কি নিয়ে এ ভবঘোরে হাসিবে কাঁদিবে প্রাণী হেরিবে কি আর গ

ভাজিয়ে সংসার তোরে কি নিয়ে এ ভবংঘারে হাসিবে কাঁদিবে প্রাণী হেরিবে কি আরে ? হাসি কালা নাহি যায় কি লাভ হেরিয়ে তায় সংসার বিহনে এক্ষরণই নিরাকার! জীব-জবতের চক্তৃ তুই রে সংসার।

স্থামারে চবণতলে মধিদ যতই বলে যতই গবল তুই করিদ্ উদ্গার, সংসার, তোরই ও মুখে চাহিলা থাকিব সুখে তোমা ছাড়ি এ জগতে কি দেখিব আরে দ তুই এ একাও মাঝে সতোর দাকাব।

সংসার তোরই ও মূণে, হেবিব আবার স্থে হেবিব যেরূপ ভাবি আবাপাপথ চাই। "আমি বার সে আমার" এই বাক্য যবে সার হবে এই ভবতলে সবার সবাই। সংসার হোতেই আমি এফরূপ পাই।

इत्स्त युशालान

(3)

এক দিন দেবদেব প্রকাব
বামে শচীসতী নন্দন-ভিতর
বালল গদ্ধস্বস্থারে ডাকি;—
যাও চিত্রবথ, সুধাভাও ভরি
আন স্থান কবি পীযুষ-লহরী
আনহ বাদিত্রবাদকে ডাকি;
আনি বাদিত্র সুধাভরকে
যত দেবগণ বসিল রকে
অমর মাতিল সুরেশ গলে।

(२)

সুবর্গ-মঞ্চেত সুর আবিওল
চারিদিকে বত অমরের দল
বিজ্ঞলীর মত করে বলমল
শোভে পারিজাত-হার গ্রীবাতে,
বামে দৈত্যবালা রূপে কবে আলো,
কোথা সে চঞ্চল ভড়িৎ উজ্জল ?
কোথা বা উমাব রূপ নিরমল ?
পলকে পারে জগতে ভুলাতে।
আহা মরি মরি কিবা ভাগ্যধন,
যার কোলে হেন নাবী মনোহন,
কত সুধ ভার হর রে।
বীর বিনা আহা রমনী-রতন
বীর বই আব রমনী-রতন
কারে আর শোভা পার রে ?

(চিভেন)

আহা মরি মরি কিবা ভাগ্যধর গান্ত্রিল যতেক কিল্লরী কিন্তুব কত সুথ তার হল রে। বীর বিনা আহা রমণী-রতন বীর বই আর রমণী রতন বীর বিনা আর রমণী-রতন কারে আর শোভা পায় রে ?

(0)

এলো চিত্রবধ মনোরথ গতি
অবপাত্তে মুধা, সদে বিহারথী
উঠিল সু-রব "জর শচীপতি"
অমরমণ্ডলী মাঝেতে,
দেব পুরন্দর দেবল সহ
মুধা সোমরদ পিয়ে মুংমূহ, কর্মা লোকিব মাকত-প্রবাহ
গগন কাঁপিল বেগেতে –
বায়ু মাডোয়ারা রবি শশী ভারা,
অরুণ বরুণ দিক্পাল যারা
সবে মাডোয়ারা মুধাণানেতে।
হলো ভয়য়র কাঁপে চরচির,
আকাশ পাতাল মহী মহীধর,
অলখি চ্ছারে বেগেতে।

(চিতেন)

বায়ু মাতোরারা রবি শশী তারা, অকণ বরুণ দিক্পাল যারা সবে মাতোরারা স্থাপারে

(8)

বসিয়ে উন্নত আসন-উপরে ,
গুণী বিধাবসু বীণা নিল করে ।
দেবের গরজে গভীর ঝকারে
মোহিত করিল অন্মর্গণে।
দেবাসহ-বন গায়িতে লাগিল.

দো। হত কারণ অমরগণে দেবাস্থ্র-রণ গায়িতে লাগিল, কিরূপে অস্তরে অমরে নাশিল, কিরূপে বাস্ব দেববাল হলো,

ভনাইল বীণা বাজায়ে পদে,
"পুলোম-তৃহিতা তোমারি গৃহীত
আহে দেবরাজ তৃমিই দেবতা,
রূপ রূপে পরাক্ষর করি বাত্বলে
এ অমবপুরী নিলে করতলে,
সমৃত্ত মথিয়া অমৃত লভিলে-্

অহে দেব ভব অসাধা ক্লিডা।"
হলে৷ প্রভিন্দনি—"প্লোমন" ইতা,
অহে দেবরাজ তোমারি গৃহঁ
ভব বন ঘোর হগভীর ব্যরে ই
কাননে, বিপিনে, নদী, সরোবঙ্গে,

উঠিল নিনাদি যতেক দেবতা ' ভাবে গদগদ মূদিয়া নম্বন, 🐉 উঠিমা গরজি গরজি স্বন

ছাড়িল হস্কার দ**হুজ্বা**ত।। (চিতেন)

হলো প্রতিধানি, "প্লোম-হবিতা।
আহে দেবরাজ তোমারি গৃহীতা
খন খন থোর ফুগভীর খরে
কাননে, বিপিনে, নদী, সরো

উঠিল নিনাদি যতেক **ক্রিক্টা** (৫)

অতি অ্লণিত মৃত্ মধুবরে, আবার গারক বীণা নিল কর্মী

সাজাইল স্বরশনী। দেখ দেখ চেয়ে নাগরের বেশে, চোথ চুলু ভুলু আসে হেগে হেংগ, আড়ে আড়ে কথা, নাহি অভিমান, সদা আন্ততোৰ খুলে দেৱ প্রাণ, প্রে স্থা প্রোর নাই তুলনা। সদা সেবে যারা দোমরস স্থা, কোভ, লোভ, লোক, থাকে নাক ক্ধা, রণজয়ী যেই স্থাপায়ী সেই, শুর বিনে স্থাথাদ জানে না।

(চিতেন)
"স্থার প্রেমেতে বাজুবে বীণা,
বলু স্থা বই ধন চাহি না,
অমন মণুর নাই পিপাদা!
স্থা কিবা ধন স্থা সে কেমন,
দাধক বিনে কি জানিবে চাষা ?"

দৈত্য-অরিদল দত্তে কোলাহল, করে আফালন করি কত বল, মত্ত মধুণানে দিভিস্তিত্যণে, কিরশে কোথায় করেছে হত ! তথন আথার বীণা-বাত্তকর বীণা নিল করে, সক্রণ স্বর,

অমর-দর্প করিল চ্র, ভিজে লোচন ঘন গরজন, জেমে জমে সব হ'লো অদর্শন, সুজর হইল অমরপুর ! সুকরণ খরে বীণা করে ধ'রে

गारेन, "वथन क्षणप्र हरत,
यथन केमान हत हद त्यारंन
वाकारत रिवान पन त्यात त्यारंन,
करन कनमत्र हरत विक्रतन,
ना त्रत जननमनेत कितन,
करान कार्य जननमनेत कितन,
करान मां प्रतिक्रान,
करान मां प्रतिक्रम,
करान मां प्रतिक्रम,
करान मां प्रतिक्रम,
करान मां प्रतिक्रम,
विक्रित्रमं निक्रम,

তখন কোথ। এ বিভব রবে ? এই স্থরপুরী এ সব ফুলরী, এ বিপুল ভোগ কোথায় বাবে!" অতি ক্ষা-মন যত দেবগণ, ঘন ঘন শাস করে বিসর্জান,

ভাবিয়ে অধীর প্রলয় যবে, এই সুরপুরী এ সব স্থলরী, এ বিপুল ভোগ কোণায় রবে! (চিতেন)

এ বিপুল ভোগ কোথার রবে, বলিয়া কিরর গাইল সবে, জগত-মণ্ডল কারণ-বাবিতে ইিডিয়া পড়িবে ত্রিলোক সহিতে, তথন কোথা এ বিভব রবে।

(9) গুণী বিশ্বাবম্ব সঙ্গীতের পতি. वौषा-गरम्र भूनः मध्य ভारूजी. গারিতে লাগিল প্রেমের গাথা, বিলাপ ঘূচিল প্রেম উপজিল, রুসে ডগমগ তমু শিহরিল, এক(ই) সৃত্তে প্রেম করুণা গাঁথা। মূহল মূহল ভাজ বে ভাজ* মুছল মূছল নও বে নও. ৰাজিতে লাগিল মধুর বোলে. শ্ৰবণে শীতল ৰতেক শ্ৰোতা। "সংগ্ৰামে কি সুথ সকলি অসুথ मिन-बां नांहे लांग धुक् धुक्, मान-मर्गाना कथात कथा। र्षाष्ठा-मष्ठवष्ठि, व्यनि-सनसनि, कांगिकांगि, रशान, जीव-धन्धनि, কানে লাগে তালা করে ঝালাপানা.

কানে লাগে তালা করে ঝালাপালা, দেহ হয় আলা সমর-স্রোতে ; গতি অবিরাম নাহিক বিবাম,

সমরে কি স্থপ নাবি বুঝিতে! তিরদিন আরে দছজ সংহার ক'রে কত ভার সহিবে দেব; বামে শচীপতি, হের স্বর্পতি,

কর স্থপভোগ রাধ ব্কেডে।"
বাধানিল যত কিন্তর-কিন্তরী,
বাধানিল যত স্বর্গ-বিভাগরী,
বাধানিল দেববাণ প্লকে।
রভিপতি-জন্ম হলো স্বরপ্রে,
লালত মধুর বীধার স্থরে;
সন্তীতের জন্ম হলো ত্রিলোকে।

দেবতারাই সদীতের স্টিক্র্ডা, স্বতরাং
লক্ষোই সূর দেবতাদিগের মধ্যে প্রচলিত থাকা

সন্তব।

স্ম'রে জরজর দেহ থব থব,
হেরে ঘন ঘন দেব পুরন্দর,
কুদরে বামারে রাধিতে চার;
নিমেধে হেরিছে নিমেধে ফিরিছে,
নিমেধে নিখাস বহিছে তার।
শেষে প্রাজিত অচেতন চিত,
শচী-বক্ষঃত্বে ঘুমারে বর।

(চিতেন)

গান্ত্রিল কিন্নর,—"শ্বরে জরজন, দেব পুরন্দর হলো পরাজর, নিমেবে হেরিছে নিমেবে ফিরিছে, নিমেবে নিখাস বহিছে তার। শেবে পরাজিত অচেতন-চিত শচী-বক্ষঃস্থলে ঘুমান্তে রম।"

()

"বাজ্রে বীণা বাজ্রে আবার, ঘন ঘোর হবে বাজ্এইবার, আবো উচ্চতর গভীর সুরে, যাক্দ্রে যাক্কামের সুহক; মেধের ডাকে ডাক্রে পুরে। "অহে সুবরাজ ছি ছি এ কি নাজ,
দেখ দেখ আই দছজ-সমাজ,
রগনাজ ক'রে আসিছে ফিরে,
শিরে ফনী বাঁধা বরে উত্থাপাত,
কর সুবনাথ দছজ-নিপাত,
দেখ চরাচর কাঁপিছে ডরে।
জলদ-নিনাদে করে হত্ত্তার,
এ সমরপুরী করে ছারথার;
পূরণ আহতি করিতে এবে।
কর দন্ত চ্র, স্ত্র ধর, শ্র,
রাথ হে ব্রজাও, বাঁচাও দেবে।
ভবে ব্রজাধ ব্রোবজ্ব খবে,
কড় কড় ধনি গ্রজে অথবে,
ভবে হিম্গিরি টালিল।

(চিতেন)
বেগে বজ্ৰণৰ গাৰিল কিল্লন,
"কড কড় নাদে গৰ**লে অ**থৰ,
ভৱে হিমগিরি টাণিল। তথ্ন উল্লাসে বিদ্যাণ্ডী হেসে

বীণাষ্ট্ৰ পাশে রাথিল।

তখন উল্লাসে, বিভাধরী হেলে,

গ্ৰন্থাবনী সম্পূৰ্ণ।



Recd. on. 3. 6. 80 R. R. No. 78 20 G. R. No. 28 9 20

